महाभारतकोश

डॉ० रामकुमार राय

(द्वितीय भाग)

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला

९८

महाभारत-कोशः

(महाभारतस्य नाम्नां विषयाणां च व्याख्यात्मिका अनुक्रमणिका)

रामकुमारराय:

द्वितीयो भागः

कंस से दृषद्वत् तक

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

Publisher : The Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1
Printer : Vidya Vilas Press, Varanasi—1
Edition : First, 1966
Price : Part Second. Rs. 20.00

THE
CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES
WORK NO. 98

MAHABHARATA-KOSHA

(A Descriptive Index to the Names and Subjects in the Mahābhārata)

Ramkumar Rai

PART TWO

From **Kaṁsa** to **Dṛshadvat**

THE
CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
Post Box 8. VARANASI-1 (India) Phone : 3145
1966

कं

कंस, मथुरा के राजा का नाम है जो उग्रसेन का पुत्र और श्रीकृष्ण का शत्रु था। इसके वध का उल्लेख (१. २, ८२)। यह कालनेमि नामक असुर का अवतार था (१. ६७, ६७)। इसने अस्ति और प्राप्ति नामक जरासन्ध की पुत्रियों से विवाह किया (२. १४, ३०)। श्रीकृष्ण और बलराम ने कंस तथा उसके भ्राता सुनामन् का वध किया (२. १४, ३४)। कंस की विधवा पत्नी ने जरासन्ध से मथुरा पर आक्रमण करने का आग्रह किया (२. १४, ४६)। कृष्ण के द्वारा अपने जामाता कंस के मारे जाने पर कृष्ण के साथ जरासन्ध का वैर बहुत बढ़ गया (२. १९, २२)। कृष्ण ने बताया कि सेवकों सहित कंस की मृत्यु हो चुकी है (२. २०, १)। 'यस्य चानेन धर्मज्ञ भुक्तमन्नं बलीयसः। स चानेन हतः कंसः इत्येतन्न महाद्भुतम् ॥', (२. ४१, ११)। अन्धकों, यादवों और भोजों ने कंस का साथ छोड़ दिया जिसके पश्चात् श्री कृष्ण ने उसका वध कर दिया (२. ६२, ८)। 'कंसविद्रावणकरीम्', (४. ६, ३)। 'कंस चैवु च माधवः', (५. ६८, ४)। 'उग्रसेनसुतः कंसः परित्यक्तः स बान्धवैः ज्ञातीनां हितकामेन मया शस्तो महामृधे ॥', (५. १२८, ३८)। 'कंसमेकं। परित्यज्य कुलार्थे सर्वयादवाः', (५. १२८, ४०)। 'निहतः कंसः', (५. १३०, ४७) 'कंसभृत्ये', (५. १६०, ६४)। 'तथा कंसो महातेजा जरासन्धेन पालितः', (७. ११, ६)। 'भ्राता कंसस्य वीर्यवान्', (७. ११, ७) 'कंसदासस्य दायादः', (९. ६१, २७)। 'प्रादुर्भावः कंसहेतोर्मथुरायां भविष्यति', (१२. ३३९, ९०)। 'कंसस्य पुण्डरीकाक्षो ज्ञातित्राणार्थ कारणात्', (१३. १४८, ५७)। 'यथा कंसस्य केशी', (१४. ६९, २३)। 'केशिनं यस्तु कंसं च विक्रम्य जगतः प्रभुः', (१६. ६, १०)। 'कंसश्चैवोग्रसेनश्च', (१८. ५, १७)। तु० की० **भोजराज उग्रसेन सुत।**

कंस-केशिनिसूदन = कृष्ण (३. १४, १०)।

कंसनिसूदन = कृष्ण (३. २६३, ८)।

१. क = ब्रह्मन् (ये अण्ड से प्रगट हुये थे) : १. १, ३२।

२. क = दक्ष (१२. २०८, ७)।

३. क = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

ककुत्स्थ., अयोध्या के एक प्राचीन राजा का नाम है। सञ्जय द्वारा वर्णित विभिन्न राजाओं के साथ इनका उल्लेख (१. १, २३२)। ये शशाद के पुत्र तथा अनेनस् के पिता थे (३. २०२, २)।

ककुभ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कक्ष, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९,)।

कक्षक, वासुकि के कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, ६)।

कक्षसेन, एक या एकाधिक राजाओं का नाम है। ये परिक्षित् के प्रथम पुत्र थे (१. ९४, ५४)। युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित होने का उल्लेख (२. ४, २२)। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, १८)। इनका आश्रम पश्चिम दिशा में असित नामक पर्वत पर स्थित था (३. ८९, १२)। इन्होंने वसिष्ठ को सर्वस्व समर्पण करके स्वर्गलोक गमन किया (१३. १३७, १५)। प्रातः सायं स्मरण करने योग्य राजर्षियों के साथ इनका उल्लेख (१३. १६५, ५९)। ये न्यायोपार्जित धन के दान और सत्यभाषण के द्वारा परम सिद्धि को प्राप्त हुये थे (१४. ९१, ३५)।

कक्षीवत्, पूर्व में स्थित महेन्द्र गुरुओं में से एक ऋषि का नाम है (१३. १५०, ३०; १६५, ३७)।

कक्षेयु, रौद्राश्व और मिश्रकेशी अप्सरा के पुत्र का नाम है (१. ९४, १०)। प्रातःसायं स्मरणीय राजाओं के साथ इसका उल्लेख (१३. १६५, ५६)।

१. कङ्क, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३३)।

२. कङ्क, वृष्णिकुल के एक महारथी का नाम है। यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, १९)। वृष्णि वंशी सात महारथियों में से एक (२. १४, ५९)। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में इसकी उपस्थिति का उल्लेख (२. ३४, १५)।

३. कङ्क, युधिष्ठिर का एक नाम है जिसे इन्होंने अज्ञातवास के समय ब्राह्मण के रूप में विराट की नगरी में निवास करते समय धारण किया था। (४. १, २४)। 'युधिष्ठिरस्यासमहं पुरा सखा वैयाघ्रपद्यः पुनरस्मि विप्रः। अक्षान् प्रयोक्तुं कुशलोऽस्मि देविनां कङ्केति नाम्नाऽस्मि विराट विश्रुतः ॥" (४. ७, १२)। 'कङ्को यथाऽहं विषये प्रभुस्तथा', (४. ७, १५)। 'सभायां देविता राज्ञः कङ्को ब्रूते युधिष्ठिरः', (४. १८, २५)। ४. २१, ३३. ३४; ३१, २१; ६८, ३०. ३३. ५७. ६६; ७०, ६। तु० की० **वैयाघ्रपद्य।**

४. कङ्क, एक पक्षी का नाम है जो सुरसा की सन्तान है (१. ६६, ६९)।

५. कङ्क, युधिष्ठिर को भेंट लाने वाले एक जाति के लोगों का नाम है (२. ५१, ३०)। असभ्य और निम्नकोटि की जातियों के साथ इसकी गणना (१२. ६५, १३)।

कङ्कणा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १६)।

कच, एक ब्राह्मण का नाम है जो बृहस्पति का पुत्र था। "जनमेजय के यह पूछने पर कि ययाति ने किस प्रकार देवयानी को प्राप्त किया, वैशम्पायन ने कहा : "देवों और असुरों के बीच हुये अनेक युद्धों में बृहस्पति आङ्गिरस देवताओं के और उशनस् काव्य (शुक्राचार्य) असुरों के पुरोहित थे। उन युद्धों में देवगण जिन असुरों का वध करते थे उन्हें शुक्राचार्य अपनी संजीवनी विद्या द्वारा पुनः जीवित कर देते थे। इसके विपरीत असुर जिन देवताओं का वध करते थे उन्हें पुनरुज्जीवित करने में बृहस्पति सफल नहीं होते थे। इससे खिन्न होकर देवताओं ने बृहस्पति के ज्येष्ठ पुत्र कच के पास जाकर उनसे कहा, 'आप शुक्राचार्य की आराधना करके उन्हें तथा अपनी सेवाओं से उनकी पुत्री देवयानी को प्रसन्न करके संजीवनी विद्या प्राप्त करें।' देवताओं का निवेदन सुनकर कच तत्काल दानवराज वृषपर्वा के नगर में जाकर शुक्राचार्य से मिले। कच ने शुक्राचार्य से कहा, 'आप मेरे गुरु हैं। मैं आपके समीप रहकर एक सहस्र वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा। इसके लिये आप मुझे अनुमति दें।' शुक्राचार्य ने कच की प्रार्थना स्वीकार कर ली। कच नवयुवक थे और गायन, नर्त्तन तथा विभिन्न प्रकार के वादनों द्वारा वे देवयानी को संतुष्ट रखने लगे। ५०० वर्ष व्यतीत होने पर दानवों को यह पता लग गया कि कच कौन हैं, और उनका उद्देश्य क्या है। इस पर क्रुद्ध होकर दानवों ने कच का वध कर डाला। कच को मारने के पश्चात् दानवों ने उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके उसे शृगालों और कुत्तों को बाँट दिया, परन्तु देवयानी के आग्रह पर शुक्राचार्य ने अपनी संजीवनी विद्या से कच को जीवित कर दिया। कुछ दिनों के पश्चात् जब कच वन में देवयानी के लिये पुष्प लाने गये तब दानवों ने उन्हें पीस कर समुद्र के जल में घोल दिया। इस बार भी देवयानी के आग्रह पर शुक्राचार्य ने कच को जीवित कर दिया। तत्पश्चात् असुरों ने तीसरी बार कच को मार कर उनके शव को आग में जला दिया और उसकी राख को मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को ही पिला दिया। जब देवयानी ने अपने पिता से कच को पुनः जीवित करने का आग्रह किया तब उसके पिता उशनस् (शुक्राचार्य) ने इस प्रकार कहा, 'मैंने अपनी विद्या से कच को कई बार जीवित किया किन्तु प्रत्येक बार उनका वध होता रहा अतः अब मैं क्या करूँ। तुम्हें तो वेद, ब्राह्मण, इन्द्र सहित समस्त देवता, वसुगण, अश्विनी कुमार, दैत्य तथा सम्पूर्ण जाति के प्राणी मेरे प्रभाव से तीनों सन्ध्याओं के समय मस्तक झुकाकर प्रणाम करते हैं; अतः तुम जैसी शक्तिशालिनी स्त्री को किसी मरने वाले के लिये शोक नहीं करना चाहिये।' देवयानी ने जब पुनः अपने पिता से आग्रह किया तब उन्होंने कच को पुकारा। जब शुक्राचार्य ने संजीवनी विद्या का प्रयोग करके कच को बुलाया तो उनके उदर में बैठे हुये भयभीत कच ने धीरे से कहा : 'असुरों ने मुझे मारकर मेरे शरीर को जलाया और चूर्ण बनाकर उसे मदिरा में मिला दिया। आपने उसी मदिरा का पान किया है जिससे मैं आपके उदर में स्थित हो गया हूँ।' शुक्राचार्य ने तब कच को संजीवनी विद्या का उपदेश किया जिससे वे

शुक्राचार्य का उदर फाड़कर बाहर निकले और फिर संजीवनी विद्या से ही शुक्राचार्य को जीवित कर दिया। उस समय शुक्राचार्य ने यह घोषणा की कि जो ब्राह्मण मदिरा-पान करेगा वह धर्म से भ्रष्ट होकर ब्रह्महत्या का भागी बनेगा। कच ने एक सहस्र वर्षों तक गुरु के समीप रहकर अपना व्रत पूर्ण किया (१. ७६)।" "जब कच अपना व्रत पूर्ण करके देवताओं के पास लौटने लगे तब देवयानी ने उनसे कहा : 'मैं आपसे प्रेम करती हूँ अतः आप मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार करें।' जब कच ने देवयानी को अपनी बहन मानते हुये उसके आग्रह को अस्वीकृत कर दिया तब क्रुद्ध होकर देवयानी ने कच को यह शाप दिया, 'तुम्हारी संजीवनी विद्या कभी सिद्ध नहीं हो सकेगी।' कच ने उसके शाप को स्वीकार करते हुये कहा : 'कोई भी ऋषिकुमार तुम्हारा पाणिग्रहण नहीं करेगा। साथ ही, मेरी संजीवनी विद्या चाहे सफल न हो परन्तु जिसे मैं यह विद्या पढ़ा दूँगा उसकी विद्या अवश्य सफल होगी।' इस प्रकार देवयानी को शाप देकर कच शीघ्रतापूर्वक इन्द्रलोक चले गये जहाँ देवताओं ने उनका स्वागत करते हुये उन्हें यह आशीर्वाद दिया : 'तुमने हम लोगों के हित के लिये अत्यन्त अद्भुत कार्य किया है, अतः तुम्हारे यश का कभी लोप नहीं होगा और तुम यज्ञ का भाग प्राप्त करने के अधिकारी होंगे।' (१. ७७)।" इन दोनों अध्यायों में तथा अन्यत्र कच के नाम के लिये देखिये : १. ७६, ११. १७. १९. २१. २२. २७. ३०-३४. ३७. ४१. ४४-४६. ५०. ५४. ५६-५८. ६१. ६२. ६५. ७०. ७२; ७७, ६. १०. १२. १६. १७. २१. २२; ७८, १; ८०, ४; १२. ४७, ०; १३. २६, ८। तु० की० **आङ्गिरस पौत्रः, आङ्गिरस, और बृहस्पति सुत।**

कच्छ (बहु०), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५६)।

कच्छपी, नारद की वीणा का नाम है (९. ५४, १९)।

कटंकट = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कटङ्कट = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कठ, एक ऋषि का नाम है (१. ८, २५)। युधिष्ठिर की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ४, १८)। वसु उपरिचर के यज्ञ के समय उपस्थित सदस्यों में से एक यह भी थे (१२. ३३६, ९)।

कणिक, धृतराष्ट्र के मंत्री का नाम है (१. १४०, २. ३. २५. ४९. ९३; १४२, १)।

कणिकवाक्यम्—"जब धृतराष्ट्र ने अपने मंत्री कणिक से परामर्श किया तो उसने नीति-सम्बन्धी अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने के पश्चात् शृगाल, सिंह, चूहे, भेड़िये और नेवले की कथा का वर्णन किया और अन्त में यह परामर्श दिया कि पाण्डवों का विनाश कर देना चाहिये (१. १४०)।"

कणिकोपदेश—"सौवीरराज शत्रुंजय ने ऋषि भारद्वाज कणिक से धनार्जन इत्यादि के सम्बन्ध में प्रश्न किया और कणिक ने उन्हें उपदेश देते हुए बताया कि राजा को सर्वदा दण्ड देने के लिये उद्यत रहना चाहिये, और सदैव ही पुरुषार्थ प्रकट करना चाहिये, इत्यादि। कणिक के उपदेशों को प्राप्त करके राजा शत्रुञ्जय ने समृद्धि प्राप्त की (१२. १४०)।"

कण्टकिनी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १६)।

कण्डरीक, एक ब्राह्मण का नाम है। 'कण्डरीकोऽथ राजा च ब्रह्मदत्तः प्रतापवान्। जातीसरणजं दुःखं स्मृत्वा पुनः पुनः॥ सप्त जातिषु मुख्यत्वाद्योगानां संपदं गतः। पुराऽहमात्मजः पार्थ प्रथितः कारणान्तरे॥', (१२. ३४२, १०५-१०६)। तु० की० हरिवंश १२५६।

कण्डूति, स्कन्द की अनुचरी मातृका का नाम है (९. ४६, १४)।

कण्व, एक ऋषि का नाम है। 'महर्षेराश्रमपदे कण्वस्य च तपस्विनः', (१. २, ९५)। 'महर्षिं काश्यपं द्रष्टुमथ कण्वं तपोधनम्', (१. ७०, ३१)। 'ऋषिं कण्वमुपासितुम्', (१. ७१, ८)। शकुन्तला ने दुष्यन्त को बताया कि वह कण्व की पुत्री मानी जाती है (१. ७१, १५)। 'कण्व उवाच' (१. ७१, २०)। इन्होंने एक ब्राह्मण को दत्तक शकुन्तला के जन्म की कथा का वृत्तान्त बताया (१. ७२, १)। 'सुतां कण्वस्य मामेवं विद्धि त्वं मनुजाधिप', (१. ७२, १८)। 'कण्वं हि पितरं मन्ये पितरं स्वमजानती', (१. ७२, १९)। 'कण्वोऽप्याश्रममागमत्', (१. ७३, २४)। 'कण्वो दिव्यज्ञानो महतपाः', (१. ७३, २५)। 'कण्व उवाच', (१. ७३, ३३)। 'कण्वः शिष्यानुवाच', (१. ७४, ५)। 'कण्वाश्रमनिवासिनः', (१. ७४, ७)। 'कण्वः शिष्यानुवाच', (१. ७४, १०)। 'कण्वाश्रमपदम्', (१. ७४, १८)। जब शकुन्तला ने भरत को जन्म दिया तब कण्व ने इन्हें दुष्यन्त के पास भेजा। महर्षि कण्व ने आचार्य होकर भरत से 'गोवितत' नामक अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान करवाया जिसके फलस्वरूप भरत ने इनको १,००० पद्म स्वर्ण-मुद्रायें दक्षिणा के रूप में समर्पित कीं (१. ७४, ३६. १२९. १३०)। 'कण्वोऽपि भगवानृषिः', (५. ९७, १)। इन्होंने दुर्योधन को समझाते हुये मातलि का उपाख्यान सुनाया (५. ९७, २)। 'कण्व उवाच', (५. ९७, १८; ९८, १; १०३, १८. २२; १०४, १२. १८; १०५, १. १८. ३३)। दुर्योधन ने इनके वचन की अवहेलना की (५. १०५, ३९)। 'नारदश्च कण्वः', (६. २३, २७)। भरत ने कण्व को १,००० पद्म स्वर्ण मुद्रायें दक्षिणा के रूप में प्रदान कीं (७. ६८, ११)। रामानारदकण्वाद्यैर्हितमुक्तं समातले', (८. २, ७)। युधिष्ठिर को देखने के लिये आये हुये ऋषियों में से एक यह भी थे (१२. १, ४)। 'सहस्रं यत्र पद्मानां कण्वाय भरतो ददौ', (१२. २९, ४९)। पूर्व दिशा के ऋषियों में से एक (१२. २०८, २७, तु० की० २. बर्हिषद्)। वसु उपरिचर के सदस्यों में से एक यह भी थे (१२. ३३६, ९)। अन्य ऋषियों के साथ यह भी भीष्म को देखने के लिये पधारे थे (१३. २६, ७; ६६, २३)। इन्हें मेधातिथि का पुत्र और पूर्व दिशा में रहने वाला बताया गया है (१३. १५०, ३१; १६५, ३८, तु० की० २. बर्हिषद्)। पूर्व के देवताओं के अन्तर्गत इनका उल्लेख (१३. १६५, ३८)। वृष्णियों ने विश्वामित्र, कण्व और नारद को छलने का प्रयास किया जिससे इन लोगों ने शाम्ब इत्यादि का शाप दिया (१६. १, १५)।

कण्वाश्रम, एक तीर्थ का नाम है जहाँ प्रवेश करने मात्र से मनुष्य पाप-मुक्त हो जाता है (३. ८२, ४५)।

कथक, स्कन्द के एक योद्धा का नाम है (९. ४५, ६७)।

कथित = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कद्रु = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कद्रू, दक्ष की पुत्री का नाम है जो कश्यप-पत्नी और नागों की माता थी। "इसने कश्यप के साथ विवाह करने के पश्चात् एक सहस्र नागों को पुत्र के रूप प्राप्त करने की इच्छा की। बहुत समय के पश्चात् इसने एक सहस्र अण्डे दिये जिनसे ५०० वर्षों के पश्चात् एक सहस्र नाग उत्पन्न हुये (१. १६, ६. १२. १३. १५)।" "एक समय कद्रू और विनता ने उच्चैःश्रवा नामक अश्व के रंग के सम्बन्ध में आपस में बाजी लगाई और यह वचन दिया कि इसमें जिसकी हार होगी वह दूसरे की दासी बन जायगी। विनता ने कहा कि वह घोड़ा सर्वथा श्वेत है, जब कि कद्रू ने कहा कि उसकी पूँछ काली है। कद्रू ने अपने एक सहस्र पुत्रों को आज्ञा दी कि वे काले बाल बनकर उस घोड़े की पूँछ में लग जाँय। उस समय जिन सर्पों ने उसकी आज्ञा को स्वीकार नहीं किया उन्हें इसने यह शाप दे दिया कि वे सब जनमेजय के सर्पयज्ञ में भस्म हो जायेंगे। इस शाप को ब्रह्माजी ने भी सुना, परन्तु सर्पों की बढ़ती हुई संख्या देखकर प्रजा-हित की दृष्टि से उन्होंने कद्रू के शाप का अनुमोदन किया; सम्पूर्ण देवता भी इससे सहमत हुये। इसके पश्चात ब्रह्मा ने कश्यप को बुलाकर इस प्रकार कहा: 'तुम्हारे सर्प-पुत्रों को उसकी माता ने शाप दे दिया है अतः तुम उस पर क्रोध मत करना। यज्ञ में सर्पों का नाश होने वाला है, यह पुराण-वृत्तान्त तुम्हारी दृष्टि में भी है।' ऐसा कहकर ब्रह्मा ने कश्यप को सर्पों का विष उतारने की विद्या प्रदान की (१. २०, २. ४. ६. ९. १३)।" प्रातः काल कद्रू और विनता उच्चैःश्रवा नामक अश्व को निकट से देखने के लिये गईं (१. २१, १)। "नागों ने अपनी माता की आज्ञा के अनुसार उच्चैःश्रवा की पूँछ को काला कर दिया। इसी बीच कद्रू और विनता भी समुद्र-दर्शन करती हुईं उच्चैःश्रवा की ओर चलीं (१. २२, ५)।" उच्चैःश्रवा के पास

पहुँच कर जब विनता ने देखा कि उसकी पूँछ काली है, तब उसने हार मानकर कद्रू की दासी बनाना स्वीकार कर लिया (१. २३, १. ३)। "कुछ समय के पश्चात् कद्रू ने विनता से कहा : 'समुद्र के भीतर एक निर्जन प्रदेश में अत्यन्त रमणीय तथा मनोहर नागों के निवास स्थान हैं, वहीं मुझे ले चल।' तब गरुड़ की माता विनता ने कद्रू को अपनी पीठ पर बैठाया और माता की आज्ञा से गरुड़ ने सर्पों को वहन करना स्वीकार किया। गरुड़ सूर्य के अत्यन्त निकट होकर चलने लगे जिससे संतप्त होकर उनकी पीठ पर बैठे नाग मूर्च्छित हो गये। अपने पुत्रों को इस दशा में देख कर कद्रू ने इन्द्र की स्तुति की (१. २५,३.७)।" स्तुति से प्रसन्न होकर इन्द्र ने वर्षा कराई जिससे सन्तुष्ट हुये नाग अपनी माता के साथ रमणीक द्वीप में आ गये (१. २६, १)। कद्रू के प्रमुख पुत्रों की गणना (१. ३५, २)। कद्रू के पुत्र शेष ने कद्रू का साथ छोड़ कर कठोर तपस्या आरम्भ की (१. ३६, २)। देवों ने बताया कि क्रूर कद्रू को छोड़ कर और कौन स्त्री अपने पुत्रों को शाप दे सकती है (१. ३८, ७)। सम्पूर्ण नागों की माता के रूप में कद्रू का उल्लेख (१. ५४, ५)। दक्ष-कन्या और कश्यप की पत्नी के रूप में कद्रू का उल्लेख (१. ६५, १३)। सुरसा ने नागों को और कद्रू ने पन्नगों को जन्म दिया (१. ६६, ७०) ब्रह्मा की सभा में इसकी उपस्थिति का उल्लेख (२. ११, ४१) कद्रू ने सूक्ष्म रूप से एक गर्भवती स्त्री के उदर में प्रवेश करके गर्भ की हत्या कर दी और उस स्त्री से एक नाग का जन्म कराया (३. २३०, ३७)।

कद्रूज, बहु० (कद्रू के पुत्र) = नाग) १३. १६५, १८)। तु० की० बहु०, **काद्रवेय**, बहु० **कद्रू पुत्र**।

कद्रूपुत्र = नाग। 'द्वौ पुत्रौ विनता वव्रे कद्रूपुत्राधिकौ बले', (१. १६, ९)। 'ततः पञ्चशते काले कद्रूपुत्रा विनिःसृताः', (१. १६, १५)। 'नाना पक्षिरुतं रम्यं कद्रूपुत्र प्रहर्षणम्', (१. २७, ९)। 'कद्रूपुत्रान्', (१. ३४, १२)। तु० की० बहु० **काद्रवेय**, बहु० **कद्रूज**।

कध्मोर, प्रातः और सायं स्मरण करने योग्य एक राजर्षि का नाम है (१३. १६५, ५३)।

कनक = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कनकध्वज, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १४)। यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, ३)। भीमसेन ने इसका वध कर दिया (६. ९६, २७)।

कनकपर्वत, सुवर्ण पर्वत महामेरु का नाम है (१२. ५९, ११९)।

कनकाक्ष, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७४)।

कनकाङ्गद, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०५)। तु० की० **कनकध्वज**।

कनकाङ्गदिन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कनकापीड, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६६)।

कनकायुस्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९९)। तु० की० **करकायु**।

कनकावती, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, ८)।

कनखल, एक तीर्थ का नाम है, जहाँ स्नान करके तीन रात उपवास करने वाला व्यक्ति अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है (३. ८४, ३०; ८५, ८८; ९०, २२; १३. २५, १३)।

कनिष्ठ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कन्दरा, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, ९)।

कन्दर्प = **काम**, व० स्था०।

कन्यकागुण, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५२)।

कन्या, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १३७)।

कन्याकूप, एक तीर्थ का नाम है। कन्याकूप और बलाका तीर्थ में तर्पण करने वाला पुरुष देवताओं में कीर्ति पाता है और अपने यश से प्रकाशित होता है (१३. २५, १९)।

कन्यातीर्थ, एक या एकाधिक तीर्थों का नाम है। यहाँ स्नान करने वाला व्यक्ति सहस्र गोदान का फल प्राप्त करके पाप से मुक्त हो जाता है (३. ८३, ११२; ८५, २३)। युधिष्ठिर ने तीर्थयात्रा के समय इसका दर्शन किया था (३. ९५, ३)।

कन्याभर्तृ = स्कन्द।

कन्याश्रम, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, १८९)।

कन्यासंवेद्य, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १३६)।

कन्याह्रद, एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, ५३))।

कप, दानवों के एक वर्ग का नाम है। "वायु ने कहा : जब इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता मद के मुख में पड़ गये तब च्यवन ने उनके अधिकार की समस्त भूमि का अपहरण कर लिया, और कपों ने उनके स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया। ब्रह्मा ने इन्द्र सहित देवताओं को ब्राह्मणों की शरण में जाने के लिये कहा। तदनन्तर ब्राह्मणों ने कप-विनाशक कर्म आरम्भ किया। यह समाचार सुन कर कपों ने ब्राह्मणों के पास धनी नामक दूत भेजा। धनी ने ब्राह्मणों से कहा : 'समस्त कप नामक दानव यज्ञों का अनुष्ठान करते हैं; सबके सब सत्य-प्रतिज्ञ और महर्षियों के तुल्य हैं...... इस प्रकार कप-गण अनेक गुणों से सम्पन्न हैं, अतः आप अपने कार्यों से निवृत्त हों, क्योंकि निवृत्त होने से ही आप लोगों को सुख मिलेगा।' परन्तु ब्राह्मणों ने धनी की बातों को अस्वीकृत कर दिया जिस पर क्रुद्ध होकर कपों ने ब्राह्मणों पर आक्रमण किया। फिर भी ब्राह्मणों ने अग्नि को उत्पन्न करके दानवों का संहार कर डाला, किन्तु उस समय उन्हें यह नहीं मालूम हो सका कि कपों का विनाश हो गया या नहीं। उस समय नारद ने ब्राह्मणों को बताया कि कपों का भी विनाश हो गया है। तदनन्तर देवताओं के तेज और पराक्रम की वृद्धि होने लगी और उन्होंने तीनों लोकों में सम्मानित होकर अमरत्व प्राप्त कर लिया (१३. १५७, ४. ६-९. १४. १६-२०)।"

कपट, कश्यप-पत्नी दनु के पुत्र, एक दानव का नाम है (१. ६५, २६)।

१. कपर्दिन् = शिव; व० स्था०।

२. कपर्दिन् = विष्णु (१२. ३४०, १०६)।

३. कपर्दिन् (बहु०) = रुद्र (१२. २८४, २०)।

कपर्दिसुता = सिनीवाली (३. २१८, ५)।

कपालमालिन् = शिव (१०. ६, ३४; १४. ८, २४)।

कपालमोचन, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने वाला व्यक्ति सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है (३. ८३, १३७; ९. ३९, ४.८. २२)।

कपालवत् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कपालहस्त = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कपालिन् = शिव, व० स्था०।

१. कपालिन्, स्थाणु के पुत्र एकदश रुद्रों में से एक का नाम है (१. ६६, ३) अर्जुन के जन्मोत्सव पर अन्य रुद्रों के साथ ये भी उपस्थित थे (१. १२३, ६९)।

कपि = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कपिञ्जल, एक प्रकार के पक्षी, जो मरे हुए त्रिशिरा के वेदपाठी मुख से उत्पन्न हुये थे (५. ९, ४०)।

कपिञ्जली, एक नदी का नाम है (६. ९, २६)।

कपिध्वज, कपिकेतन = अर्जुन व० स्था०।

कपिप्रवरकेतन = अर्जुन, व० स्था०।

कपिराजकेतु = अर्जुन (६. ६०, ७. २१. २७. २८)।

१. कपिल, एक ऋषि का नाम है जो सांख्य-दर्शन के प्रवर्त्तक थे। 'कपिलो नाम देवोसौ भगवानजितो हरिः॥ येन पूर्वं महात्मानः खनमाना रसातलम्। दर्शनादेव निहताः सगरस्यात्मजा विभो॥', (४. ४७, १८-१९)। सगर के पुत्र जब यज्ञाश्व को ढूँढ़ते हुये पाताल में पहुँचे तो अपनी आज्ञा का उल्लङ्घन कर देने के कारण कपिल ने उन समस्त राजकुमारों को भस्म कर दिया (३. १०७, २९-३२)। "अंशुमान ने समुद्र में प्रवेश करके महात्मा कपिल तथा यज्ञाश्व को देखा। अंशुमान ने कपिल का दर्शन करके

उन्हें प्रमाण किया। उनसे प्रसन्न होकर कपिल ने उन्हें यज्ञाश्व प्रदान करते हुये यह आशीर्वाद दिया कि स्वर्ग से गंगा के अवतरण तथा उनके जल से पवित्र होकर सगर के समस्त भस्म पुत्र स्वर्गलोक चले जायेंगे (३. १०७, ५०-५७)।" 'कपिलेन महात्मना', (३. १०८, २)। 'एवमुक्तः प्रत्युवाच राजा हैमवतीं तदा। पितामहा मे वरदे कपिलेन महानदि ॥', (३. १०८, १६)। 'कपिलं देवमासाद्य', (३. १०८, १८)। 'कपिल प्रभुः', (३. २०४, २७)। 'कपिलं परमर्षिं च यं प्राहुर्यतयः सदा। अग्निः स कपिलो नाम सांख्ययोगप्रवर्त्तकः ॥', (३. २२१, २१)। 'अत्र चक्रधनुर्नाम सूर्याज्जातो महानृषिः॥ विदुर्यं कपिलं देवं येनार्ताः सगरात्मजाः।', (५. १०९, १७-१८)। 'सिद्धानां कपिलो मुनिः', (६. ३४, २६)। कृष्ण को कपिल के साथ समीकृत किया गया है (१२. ४३, १२)। भीष्म को घेर कर खड़े होने वाले अन्य ऋषियों के साथ यह भी थे (१२. ४७, ८)। 'यमाहुः कपिलं सांख्याः परमर्षिं प्रजापतिम्', (१२. २१८, ९)। 'कपिलभिर्वैत्य मैथिलः', (१२. २१९, ५२)। 'कपिलश्च गोश्च संवादम्', (१२. २६८, ५)। १२. २६८ ७। 'कपिल उवाच', (१२. २६८ १२; २६९, १. २०. ४०; २७०, १. ३५. ३८)। 'शृणु में त्वमिदं सूक्ष्मं सांख्यानां विदितात्मनाम्। विहितं यतिभिः सर्वैः कपिलादिभिरीश्वरैः', (१२. ३०१, ३)। 'कपिलस्य शुक्रस्य च', (१२. ३१८, ६०)। 'ऋषिश्रेष्ठश्च कपिलः', (१२. ३३६, ८) 'विद्यासहायवन्तं च आदित्यस्थं समाहितम्। कपिलं प्राहुराचार्याः सांख्यनिश्चितनिश्चयाः ॥', (१२. ३३९, ६८)। ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में इनकी गणना (१२. ३४०, ७२)। 'विद्यासहायवन्तं मामादित्यस्थं सनातनम्। कपिलं प्राहुराचार्याः सांख्या निश्चित निश्चयाः ॥', (१२. ३४२, ९५)। 'सांख्यस्य वक्ता कपिलः परमर्षिः स उच्यते', (१२. ३३९, ६५)। 'ऋषिभिः कपिलादिभिः', (१२, ३५०, ६)। 'महानृषिश्च कपिलः', (१३. ४, ५६)। 'सांख्यानां कपिलो ह्यसि', (१३. १४, ३२३)। 'कपिलश्च ततः प्राह सांख्यर्षिर्देवसंमतः', (१३. १८, ४)। 'अनन्तः कपिलश्चैव सप्तैते धरणीधराः', (१३. १५०, ४१)। सुवर्णधारिणा नित्यमवशप्ता द्विजातिना', (१३. १५३, ९)।

२. कपिल, एक नागराज का नाम है जिनका कपिलतीर्थ प्रसिद्ध है। कपिल के उस तीर्थ में स्नान करने से सहस्र कपिला-दान का फल होता है (३. ८४, ३२)।

३. कपिल, सूर्य का एक नाम है (३. ३, २४)।

४. कपिल = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

५. कपिल = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)। तु० की० **१. कपिल**

कपिलवट, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, ३१)।

कपिलस्य केदार, एकतीर्थ का नाम है। 'केदारे चैव राजेन्द्र कपिलस्य महात्मनः', (३. ८३, ७२)

१. कपिला, दक्ष की पुत्री तथा कश्यप की पत्नी का नाम है (१. ६५, १२)। अमृत, ब्राह्मण, गायें, गन्धर्व, अप्सरायें ये सब पुराण में कपिला की सन्तति बताई गई हैं (२. ६५, ५२)।

२. कपिला, अग्नियों की माता नदियों में से एक का नाम है (३. २२२, २५)। भारतवर्ष की नदियों में इसकी गणना (६. ९, २८)।

३. कपिला = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ४।

४. कपिला, आसुरि नामक एक ब्राह्मण-पत्नी का नाम है। पञ्चशिख कपिला के स्तनों का दुग्धपान करने के कारण कापिलेय कहलाये (१२. २१८, १५)।

कपिला गाय की उत्पत्ति तथा दान का वर्णन (१३. ७७; १३०, १९-२०)।

कपिलाचार्य = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कपिलातीर्थ, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ४७)।

कपिलाश्व, कुवलाश्व धुन्धुमार के द्वितीय पुत्र का नाम है (३. २०४, ४०)। ये पृथिवी के उन प्राचीन शासकों में से एक हैं जो पृथिवी का परित्याग करके स्वर्गलोक चले गये थे (१२. २२७, ५१)।

कपिलाह्रद, वाराणसी के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है (३. ८४, ७८)।

कपिवरध्वज = अर्जुन, व० स्था०।

कपिष्ठलस्य केदार, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ७४)।

कपिश = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कपीन्द्र = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कपीन्द्रपुत्री = जाम्बवती (१३. १४, ४२)।

१ कपोत, गरुड की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, १३)।

२. कपोत = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कपोतरोमन, एक या एकाधिक राजाओं का नाम है जो यमराज की सभा में उपस्थित होते थे (२. ८, १७)। ये शिवि औशीनर के पुत्र थे (३. १९७, २७)। 'कपोतरोमाणं शिबिनौद्भिदं पुत्रं प्राप्स्यसि', (१. १९७, २८)। कलिङ्गराज चित्राङ्गद की पुत्री के स्वयंवर में इनके पधारने का उल्लेख', (१२. ४, ६)।

कपोत-लुब्धक-संवाद—"मुनि ने कहा : एक समय की बात है, किसी महान् वन में एक निर्दय लुब्धक जब वन में विचर रहा था तब चारों ओर से बड़ी भयंकर आँधी उठी और भयंकर वर्षा से वन के समस्त मार्ग जल के प्रवाह में डूब गये। बहेलिये के सारे अंग जाड़े से ठिठुर रहे थे जिससे वह न तो चल पाता था और न खड़ा ही हो पाता था। उसी समय उसने शीत से व्याकुल भूमि पर गिरी हुई कबूतरी को देखा और उसे उठाकर अपने पिंजड़े में डाल लिया। बादलों के हट जाने के पश्चात् उस व्याध ने एक सघन वृक्ष के नीचे ही रात्रि व्यतीत करने का निश्चय किया। तदनन्तर उसने हाथ जोड़ कर प्रणाम करके कहा : 'इस वृक्ष पर जो-जो देवता हों मैं उनकी शरण लेता हूँ।' ऐसा कहकर उसने पृथिवी पर पत्ते बिछा दिये और एक शिला पर सर रखकर वहीं सो गया (१२. १४३)।" उसी वृक्ष की एक शाखा पर बैठा हुआ एक कबूतर अपनी भार्या के खो जाने पर विलाप कर रहा था। (१२. १४४)। पिंजड़े में बन्द कबूतरी ने विलाप कर रहे अपने पति, उस कबूतर से शरणागत बहेलिये की सेवा करने की प्रार्थना की (१२. १४५)। "कबूतर ने उस बहेलिये का आतिथ्य सत्कार किया। बहेलिया शीत से ठिठुर रहा था अतः कबूतर ने वहाँ अग्नि प्रज्वलित की। बहेलिया बहुत भूखा था, अतः उसकी क्षुधा की तृप्ति के लिये उस कबूतर ने स्वयं अग्नि में प्रवेश किया। कबूतर ने ऐसा करने के पहले बहेलिये को बताया कि ऋषियों, देवताओं, पितरों तथा महात्माओं ने भी आतिथ्य सत्कार को महान् धर्म कहा है। कबूतर को आग के भीतर प्रविष्ट हुआ देखकर व्याध अत्यन्त चिन्तित, और अपने क्रूर कर्मों पर लज्जित होकर अनेक प्रकार से विलाप करने लगा (१२. १४६)।" कबूतर के इस आत्मत्याग को देखकर बहेलिये को अत्यन्त वैराग्य हुआ और उसने पिंजड़े में बन्द कबूतरी को भी मुक्त कर दिया (१२. १४७)। अपने पति के वियोग में कबूतरी ने विलाप करते हुये अग्नि में प्रवेश किया और अन्त में कबूतर और कबूतरी दोनों स्वर्गलोक चले गये (१२. १४८)। "बहेलिये ने कठिन तपस्या आरम्भ की। उपवास के कारण अत्यन्त दुर्बल बहेलिये ने घोर वन में प्रवेश किया किन्तु घुसते ही कटीली झाड़ियों में फँस गया। इधर उस वन में भयंकर आग लग गई, जिससे बहेलिया उसमें जल गया। थोड़ी ही देर में उसने देखा कि वह बड़े आनन्द से स्वर्गलोक में विराजमान, तथा अनेक यक्ष, सिद्ध और गन्धर्वों के बीच इन्द्र के समान शोभा पा रहा है (१२. १४९)।"

१. कबन्ध, एक राक्षस का नाम है (३. २७९, २८)। राम और लक्ष्मण द्वारा इसका वध कर दिये जाने पर इसके मृतक शरीर से विश्वावसु गन्धर्व प्रगट हुआ जो एक ब्राह्मण के शापवश राक्षसयोनि में आ गया था (३. २७९, ३९. ४०)।

२. कबन्ध, राहु के स्कन्ध का नाम है : 'कबन्धान्तर्हितो भानुरुदयास्तमने तदा', (३. १९०, ७९)। 'अत्र मध्ये समुद्रस्य कबन्धः प्रति दृश्यते', (५. ११०, ११)।

१. कमठ, युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित होनेवाले कम्बोजराज का नाम है (२. ४, २२)।

२. कमठ, एक ऋषि का नाम है जिन्होंने तपस्या द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी (१२. २९६, १४)।

कमण्डलुधर = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कमण्डलुनिषङ्ग = कृष्ण (१२. ४७, ७९)।

२. कमण्डलुनिषङ्ग = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कमला, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९, ४६, ९)।

१. कमलाक्ष, कौरव पक्ष के एक योद्धा का नाम है जिसे दुर्योधन ने अर्जुन पर आक्रमण करने लिये शकुनि के साथ भेजा था (७. १५६, १२३)।

२. कमलाक्ष, एक असुर का नाम है जो असुरों के त्रिपुरों में से सुवर्णमयपुर का अधिपति था (७. २०२, ६५)। यह तारक का द्वितीय पुत्र था (८. ३३, ५) । रजतमय पुर का अधिपति था (८. ३३, २२)।

कमलाक्षी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ६)।

१. कम्प, एक वृष्णिवंशी राजकुमार का नाम है जो मृत्यु के पश्चात् विश्वेदेवों में मिल गया था (१८. ५, १६)।

२. कम्प = शिव (सहस्र नामों से एक)।

कम्पन, एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजमान होता था (२. ४, २२)।

कम्पना, एक नदी का नाम है। इसमें स्नान करने से पुण्डरीक यज्ञ का फल प्राप्त होता है (३. ८४, ११६)। भारतवर्ष की एक नदी के रूप में इसका उल्लेख (६. ९, २५)।

१. कम्बल. एक नाग का नाम है (१. ३५, १०)। ये वरुण की सभा में विराजमान होते हैं (२. ९, ९)। मातलि के उपाख्यान में ये कश्यप के वंशज कहे गये हैं (५. १०३, ९)।

२. कम्बल, एक तीर्थ का नाम है (३. ८५, ७६)। तु० की०

३. कम्बल, कुशद्वीप के चौथे वर्ष का नाम है (६. १२, १३)।

करंजनिलया, वृक्षों की माता अनला या वीरुधा का नाम है जो करंज नामक वृक्ष पर निवास करती है। यह वरदायिनी तथा प्राणियों पर कृपा करनेवाली है, अतः पुत्रार्थी मनुष्य करंज वृक्ष को इसके उद्देश्य से प्रणाम करते हैं (३. २३०, ३५–३६)।

करक, भारत के दक्षिण दिशा में स्थित एक जनपद का नाम है (६. ९, ६०)।

करकर्ष, चेदिराज के भ्राता, शरभ के छोटे भाई का नाम है। यह अपने भ्राताओं के साथ पाण्डवों की सहायतार्थ आये थे (५. ५०, ४७)। इन्होंने युद्ध के मैदान में आगे बढ कर चेकितान को अपने रथ पर बैठा कर उनकी रक्षा की थी (६. ८४, ३२–३३)।

करकाश, कौरव पक्ष के एक योद्धा का नाम है जो द्रोणनिर्मित गरुड-व्यूह के ग्रीवा-स्थान में खड़ा किया गया था (७. २०, ६)।

करकायुस्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है। यह अपने भ्राताओं के साथ द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, २)। तु० की० **कनकायुस्।**

करट (बहु०) , भरतवर्ष के दक्षिण में स्थित एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६३)।

१. करण (किसी मिश्रित जाति का एक व्यक्ति) = युयुत्सु (१. ६३, ११८; ११५, ४३)।

२. करण (बहु०) , उन जातियों में से एक का नाम है जो ब्राह्मण आदि चार वर्णों से अनुलोम तथा विलोम वर्ण की स्त्रियों के साथ परस्पर संयोग होने से उत्पन्न होते हैं (१२. २९६, ९)।

१. करण (म्) = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

२. करण (म्) = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

करतोया , एक नदी का नाम है। अन्य नदियों के साथ वरुण की सभा में इसकी उपस्थिति का उल्लेख (२. ९, २२)। यहाँ तीन रात्रि उपवास करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है (३. ८५, ३)। भारतवर्ष की नदियों में से एक (६. ९, ३५)। 'करतोयां कुरङ्गे च', (१३. २५, १२)। अन्य नदियों के साथ इसका उल्लेख (१३. १६५, २०)। तु० की० **करतोयिनी।**

करतोयिनी , एक नदी (= करतोया) का नाम है (१३. १०२, ४५)।

करन्धम , मरुत के पितामह (= सुवर्चस्) एक प्राचीन राजा का नाम है। यम की सभा में इनकी उपस्थिति का उल्लेख (२. ८, १६)। 'करन्धमस्य पुत्रस्तु कृतात्मामरुतस्तथा', (१२. २३४, २८)। 'करन्धमस्य पौत्रस्तु मरुत्तोऽविक्षितः सुतः', (१३. १३७, १६)। इनका मुख्य नाम सुवर्चस् था। इनके करका धमन (हाथ को बजाने) करने से एक विशाल सेना प्रगट हो गई थी, इसीलिये ये करन्धम कहलाये (१४. ४, १६)। अङ्गिरा पहले करन्धम के पुरोहित थे (१४. ५, ८)। 'संकल्प्या मनसा यज्ञं करन्धमसुतात्मजः', (१४. ६, ३)।

करभ , एक राजा का नाम है जो जरासन्ध के आगे नतमस्तक रहता था (२. १४, १३)।

करभञ्जक , भारतवर्ष के उत्तर-पूर्वी जनपद का नाम है (६. ९, ६९)।

करम्भा , कलिङ्गराजकी पुत्री, अक्रोधन की पत्नी तथा देवातिथि की माता का नाम है (१. ९५, २२)।

१. करवीर , एक नाग का नाम है (१. ३५, १२; ५. १०३, १४)।

२. करवीर , द्वारका के समीपवर्ती एक वन का नाम है (गी० सं०, २. ३८, २९ के बाद, पृष्ठ ८१३ कालम १)।

करवीरपुर , एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से मनुष्य ब्रह्मरूप हो जाता है (१३. २५, ४४)।

करहाटक , दक्षिण भारत के एक देश का नाम है जिसे सहदेव ने अपनी दिग्विजय के प्रसङ्ग में विजित किया था (२. ३१, ७०)।

१. कराल , अर्जुन के जन्मोत्सव पर उपस्थित होने वाले एक देवगन्धर्व का नाम है (१. १२३, ५७)।

२. कराल , शिव (७. २०२, २९; १४. ८, १३)।

३. कराल = कृष्ण (विष्णु) : १३, १५८, १४।

४. कराल = करालजनक (१२. ३०८, ३८)।

करालजनक , एक राजा का नाम है। 'वसिष्ठस्य च संवादं करालजनकस्य च', (१२. ३०२, ७)।

करालदन्त , इन्द्र की सभा में विराजमाम होने वाले एक महर्षि का नाम है (२. ७, १४)।

करालाक्ष , स्कन्द के सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१)।

कराली = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ६।

करीति , एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४४)।

करीषक , एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५५)।

करीषिणी , एक नदी का नाम है (६. ९, १७. २३)।

करुणान्वित = सूर्य (३. ३, २७)।

१.करूष , एक देश का नाम है। अर्जुन चेदि, काशि तथा करूष देशों को विजित करेंगे (१. १२३, ४०)। 'अलर्कमाहुर्नरवर्यं सन्तं सत्यव्रतं काशिकरूषराजम्', (३. २५, १३)। युधिष्ठिर के मित्र-राष्ट्रों में से एक (५. ६२, ५)। 'चेदिकाशिकरूषाणां नेतारं दृढविक्रमम्', (५. १९६, २)। 'चेदिमत्स्यकरूषाश्च', (६. ९, ४०)। 'चेदिकाशिकरूषेषु', (६. ४७, ४)। चेदिमत्स्यकरूषाश्च भीमसेनपदानुगाः', (६. ५४, ८)। युद्ध में धृष्टकेतु का अनुगमन करते हैं (६. ५६, १४)। 'चेदिपाञ्चालकरूषमत्स्याः', (६. ५९, १२९; ९७, ३९)। अन्य लोगों के साथ भीष्म द्वारा करूषोंका वध (६. १०६,

१८; ११६, ७५)। अन्य वात्स्य, गार्ग्य आदि देशवासियों के साथ ये भी कृष्ण द्वारा पहले ही विजित कर लिये गये थे (७, ११, १५)। इन लोगों को कर्ण ने युद्धभूमि में आगे बढने से रोका (८. ५४, १६)। महाभारतयुद्ध में भीष्म द्वारा इनका वध (८. ७३, २९)। तु० की० बहु० **कारूष।**

२. करूष, करूष देश के अधिपति का नाम है : 'वक्रः करूषाधिपतिर्मायायोधी महाबलः', (२. १४, १२)।

३.करूष, एक प्राचीन राजा का नाम है। कार्तिक मास में मांसभक्षण न करने वाले राजाओं के साथ इनका उल्लेख (१३. ११५, ६४)। तु० की० **१. कारूष।**

करूषक ये लोग युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में पधारे (५. २२, २५)।

करूषराज, इन्होंने शिशुपाल का सम्मान किया (५. २२, २७)।

करूषाधिपति, युधिष्ठिर के सभा-भवन में उपस्थित रहने वाले करूष देश के राजा का नाम है (२. ४, २९)। ये जरासन्ध के समक्ष हाथ जोड़े खड़ा रहता था (२. १४, १२)।

करेणुमती, चेदिराज शिशु की पुत्री, नकुल की पत्नी तथा नरमित्र की माता का नाम है (१. ९५, ७९)।

कर्कखण्ड, पूर्वीय भारत के एक जनपद का नाम है जिसे कर्ण ने दिग्विजय के समय विजित किया था (३. २५४, ८)।

कर्कर, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, १६)।

१. कर्कोटक, कश्यप और कद्रू की संतानों में प्रमुख एक नाग का नाम है (१. ३५, ५)। यह अर्जुन के जन्मोत्सव पर उपस्थित हुआ (१. १२३, ७१)। वरुण की सभा में विराजमान होता है (२. ९, ९)। 'नाग' कर्कोटकम्', (३. ६६, ४)। 'नागः पुनः कर्कोटकोऽब्रवीत्', (३. ६६, १०)। इसका राजा नल को डस कर उनका रूप विकृत करना, (३. ६६, १४)। नल के शरीर से कलियुग प्रगट हुआ जो कर्कोटक नाग के तीक्ष्ण विष को अपने मुख से बार-बार उगल रहा था (३. ७२, ३०)। 'कर्कोटकस्य नागस्य', (३. ७९, १०)। अन्य नागों के साथ इसे भी शिव के रथ के घोड़ों के केश बाँधने की रस्सी बनाया गया था (८. ३४., २९)। बलराम जी के स्वधाम-गमन के समय स्वागत के लिये यह भी उपस्थित हुआ (१६.४,१५)।

२. कर्कोटक, एक जाति के लोगों का नामहै जिनका धर्म दूषित होता है (८. ४४, ४३)।

१. कर्ण, कुन्ती के गर्भ से सूर्य द्वारा उत्पन्न पुत्र का नाम है जिसका सूत अधिरथ तथा उसकी पत्नी राधा ने पुत्र के रूप में पालन-पोषण किया, और जो बाद में दुर्योधन का मित्र बन गया (१. १, ११०. १४१. १६७. १७६. १७९. १९७. १९८. २००. २०५)। 'कर्णः परबलार्दनः', (१. २. ३१)। 'ज्ञेयं विवादपर्वात्र कर्णस्यापि', (१. २, ६४)। 'शल्यकर्णौ' (१. २, ११४)। 'कर्णप्रोत्साहनात्', (१. २, १४७)। 'कर्णस्य परिमोक्षोऽत्र कुण्डलाभ्यां पुरंदरात्', (१. २, १६६. २०१)। 'कर्णदुर्योधनादीनाम्', (१. २, २३५)। 'कृष्णेन यत्र कर्णोऽनुमन्त्रितः', (१. २, २३६)। 'कर्णपर्व', (१. २, २७०) 'संवादः कर्णशल्ययोः', (१. २, २७२)। 'ततो दुर्योधनः क्रूरः कर्णश्च सह सौबलः', (१. ६१, ८)। "कुन्ती के गर्भ से सूर्य के अंश द्वारा कर्ण की उत्पत्ति हुई। वह बालक जन्म के साथ ही कवच और कुण्डल से युक्त था (१. ६३, ९८)।" "सूर्य ने कुन्ती के उदर में एक ऐसा गर्भ स्थापित किया जिसने बाद में कवच और कुण्डल के साथ ही जन्म लिया। उस समय कुन्ती ने पिता-माता तथा अन्य बान्धवों के भय से उस यशस्वी कुमार को एक पेटी में रख कर जल में छोड़ दिया। जल में छोड़े हुये उस बालक को राधा के पति अधिरथ सूत ने लाकर राधा की गोद में दे दिया और उसे अपना पुत्र मानते हुये उसका नाम वसुषेण रक्खा। बड़ा होने पर वह बालक अत्यन्त बलवान्, अस्त्र-शस्त्रों के संचालन में प्रवीण और वेदाङ्गों के अध्ययन में पारंगत हुआ। जिस समय वह जप में लगा होता था उस समय उस महात्मा के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं थी जिसे वह ब्राह्मणों को माँगने पर दान न दे दे। इन्द्र ने अपने पुत्र अर्जुन के हित के लिये ब्राह्मण का रूप धारण करके कर्ण से उसके दोनों कुण्डल तथा शरीर के साथ ही उत्पन्न कवच माँग लिया। विस्मित इन्द्र ने भी कर्ण को एक शक्ति प्रदान की और कहा : 'दुर्धर्ष वीर ! तुम देवता, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, नाग, और राक्षसों में से जिस पर भी इस शक्ति का प्रहार करोगे उसकी मृत्यु हो जायगी।' कवच और कुण्डल से रहित हो जाने के कारण कुन्ती का यह पुत्र उस समय से वैकर्तन कर्ण के नाम से विख्यात हुआ। कर्ण दुर्योधन का मित्र बन गया (१. ६७, १३७–१५०)।" 'कर्णः सर्वलोकेषु विश्रुतः', (१. १११, १९)। 'स्वशरीरात्समुत्कृत्य कवचं स्वं निसर्गजम्। विप्ररूपाय शक्राय ददौ कर्णः कृताञ्जलिः॥', (१. १११, २८)। 'कर्णो वैकर्तनश्चैव कर्मणा तेन सोऽभवत्', (१. १११, ३१)। 'दुर्योधनः कर्णः', (१. १२९, ४०)। 'सूतपुत्रश्च राधेयः', (१. १३२, ११)। "जब अस्त्रदर्शन का अधिकांश कार्य समाप्त हो गया तो उसी समय द्वार की ओर से किसी का अपनी भुजाओं पर ताल ठोंकने का भारी शब्द सुनाई पड़ा जो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वज्र आपस में टकरा रहे हैं। आश्चर्यचकित द्वारपालों ने जब उस व्यक्ति को भीतर जाने का मार्ग दे दिया तो शत्रुओं की राजधानी पर विजय प्राप्त करने वाले कर्ण ने उस विशाल रंगमण्डप में प्रवेश किया। जन्म के साथ ही उत्पन्न दिव्य कवच और कुण्डल को धारण किये हुये कर्ण ने वहाँ पहुँच कर द्रोणाचार्य और कृपाचार्य को प्रणाम किया। तदुपरान्त कर्ण ने अर्जुन से मेघ के समान गंभीर वाणी में कहा : 'तुमने इन दर्शकों के समक्ष जो भी कौशल दिखाये हैं मैं उनसे भी अद्भुत कर्म करूँगा। अतः तुम अपने पराक्रम पर गर्व मत करो।' कर्ण के इन वचनों को सुन कर दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। द्रोणाचार्य की आज्ञा लेकर कर्ण ने उन सब अस्त्र-कौशलों का प्रदर्शन किया जो अर्जुन कर चुके थे। उस समय अपने भ्राताओं सहित दुर्योधन ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कर्ण को हृदय से लगा लिया। कर्ण ने अर्जुन के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने की इच्छा प्रगट की जिस पर अर्जुन ने भी उसकी चुनौती को स्वीकार किया। द्रोणाचार्य ने इस द्वन्द्व की स्वीकृति प्रदान की। उस समय बक-पंक्तियों के व्याज से हास्य की छटा बिखेरने वाले मेघों ने बिजली की चमक, गड़गड़ाहट और इन्द्रधनुष के साथ समस्त आकाश को आच्छादित कर दिया। अर्जुन के प्रति स्नेह होने के कारण इन्द्र को रङ्गभूमि का अवलोकन करते देख सूर्य ने भी अपने समीप के मेघों को छिन्न-भिन्न कर दिया जिसके कारण अर्जुन तो मेघ की छाया में छिपे हुये दिखाई देने लगे, जब कि कर्ण सूर्य की प्रभा से प्रकाशित रहा। उस समय कृपाचार्य ने कर्ण से इस प्रकार कहा : 'अर्जुन कुरुवंश के रत्न हैं जो तुम्हारे साथ द्वन्द्व-युद्ध करेंगे। इसी प्रकार तुम भी अपने कुल का परिचय दो। तुम्हारे कुल का परिचय मिल जाने पर ही इसका निश्चय होगा किअर्जुन तुम्हारे साथ युद्ध करें या नहीं, क्योंकि राजकुमार नीच कुल और हीन आचार-विचार वालों के साथ युद्ध नहीं करते।' कृपाचार्य की बात सुन कर कर्ण का मुख लज्जा से झुक गया परन्तु उसी समय दुर्योधन ने कहा : 'शास्त्रों के अनुसार राजाओं की तीन योनियाँ होती हैं—उत्तम कुल में उत्पन्न पुरुष, शूरवीर, तथा सेनापति।' यह कह कर दुर्योधन ने कर्ण को अङ्गदेश के राज्य पर अभिषिक्त कर दिया (१. १३६, १. ३. १२. १३. १५. १७–१९. २२. २५. २६. ३४. ३७. ४१)।" "तदन्तर काँपता हुआ अधिरथ रङ्गभूमि में आया। अपने पिता को देख कर कर्ण सिंहासन से नीचे उतर आया और अधिरथ के चरणों में सर रख कर प्रणाम किया। अधिरथ ने भी कर्ण को हृदय से लगा लिया जिसे देख कर भीमसेन ने सूतपुत्र कह कर कर्ण का तिरस्कार किया। भीम की बातों को सुन कर क्रोध से मदोन्मत्त दुर्योधन ने इस प्रकार कहा : 'क्षत्रियों में बल की ही प्रधानता है ; बलवान् होने पर हीन क्षत्रिय से भी युद्ध करना चाहिये। शूरवीर और नदियों की उत्पत्ति के वास्तविक कारण को जानना बहुत कठिन है। जगत् को व्याप्त करने वाला अग्नि जल से प्रगट हुआ; दानवों का संहारक वज्र दधीचि की हड्डियों से निर्मित हुआ, और स्कन्द देव को अग्नि, कृत्तिका, रुद्र, तथा गंगा का पुत्र कहते हैं। अनेक ब्राह्मण क्षत्रियों से उत्पन्न हुये और विश्वामित्र आदि क्षत्री अक्षय ब्राह्मणत्व प्राप्त कर चुके हैं। आचार्य द्रोण का जन्म कलश से हुआ है और कृपाचार्य की

उत्पत्ति सरकण्डों के समूह से हुई।' सूर्य के अस्ताचल की ओर चले जाने पर दुर्योधन, कर्ण का हाथ पकड़ कर उसे रङ्गभूमि से बाहर ले गया। दिव्य लक्षणों से लक्षित अपने पुत्र अङ्गराज कर्ण को पहचान कर कुन्ती मन ही मन बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु उसने अपना भाव प्रगट नहीं किया। कर्ण को मित्र के रूप में पाकर दुर्योधन का भी अर्जुन से होने वाला भय शीघ्र दूर हो गया (१. १३७, २. ८. २०. २२. २४. २५)।" उन समस्त राजकुमारों तथा द्रोण के अन्य शिष्यों में कर्ण भी एक था जिन्होंने द्रुपद की राजधानी पर आक्रमण करके उन्हें बन्दी बनाया (१. १३८, ६. २१)। 'दुःशासनश्च कर्णश्च', (१. १४१, १)। 'कर्ण शकुनिश्च', (१. १४१, २१)। 'दुर्योधनश्च कर्णश्च', (१. १४२, २)। १. १४९, ९; १५१, ३९। 'सह हि सृष्टो मघवता शक्तिरीदृतोर्महात्मना। कर्णस्याप्रतिवीर्यस्य प्रतियोद्धा महारथः॥', (१. १५५, ४६)। दुर्योधन आदि कुरुवंशी कर्ण के साथ द्रौपदी के स्वयंवर में पधारे (१. १८५, १३; १८६, ४)। १. १८७, १५. २१। 'अर्कपुत्रम्', (१. १८७, २२)। द्रौपदी ने सूतपुत्र कर्ण का वरण करने से इन्कार कर दिया (१. १८७, २३)। १. १८८, १९; १९०, ५. ७। 'कर्ण वैकर्त्तनम्', (१. १९०, १०. १४)। १९०, १६. २०। 'राधेयो युद्धात्कर्णो न्यवर्तत', (१. १९०, २२)। 'पातिते भीमसेनेन शल्ये कर्णे च शङ्किते', (१. १९०, ३०)। १. २००, ९; २०२, १; २०४, १३. २७; २०५, ३. २९। दिग्विजय के अवसर पर भीमसेन ने कर्ण को विजित किया (२. ३०, १८–२०)। ये युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में पधारे (२. ३४, ७)। 'तं च कर्णमतिक्रम्य कथं कृष्णस्त्वयार्चितः', (२. ३७, १६)। 'वङ्गाङ्गविषयाध्यक्षं सहस्राक्षसमं बले। स्तुहि कर्णमिमं भीष्म महाचापविकर्षणम्॥', (२. ४४, ९)। दुर्योधन के सहायकों में इनकी गणना (२. ४८, ११)। इनके द्यूतक्रीड़ा में सम्मिलित होने का उल्लेख (२. ५८, २३; ६५, ४४)। २. ६७, ४५। कर्ण ने कहा कि द्रौपदी भी जूये में जीती हुई मान ली जाय (२. ६८, २७)। कर्ण ने द्रौपदी को दासी घोषित करते हुये दुःशासन से उसे घसीटने के लिये कहा (२. ६८, ८९)। कर्ण द्रौपदी से अन्य पति चुनने के लिये कहते हैं (२. ७१, १)। 'कर्ण उवाच', (२. ७२. १)। २. ७४, ५। अर्जुन कर्ण का वध करेंगे (२. ७७, २६)। २. ८०, ३६. ३७; ८१, १७; ३. १, १४। कर्ण ने पाण्डवों के वध का परामर्श दिया और दुर्योधन आदि के साथ इसकार्य के लिये प्रस्थित भी हुआ परन्तु मार्ग में व्यास ने इन सबको चेतावनी दी (३. ७, २. १२. १४. १५)। ३. १२, ५. १२६. १३४. २३, १०. २७, ८; ३६, ९. १८; ३७, ४; ४०, १०। अर्जुन कर्ण का वध करेंगे (३. ४१, २२)। ३. ४८, ९. १०. ४९, ३. १४। 'ये चास्य सचिवाः मन्दाः कर्णसौबलकादयः', (३. ४९, १७)। ३. ५१, २९; ५२, १२. १८। 'कर्णः सूतपुत्रः'; (३. ८६, ९)। 'संरब्धः शरधाराभिः सुदीप्तं कर्णपावकम्। अर्जुनोदीरितो मेघः शमयिष्यति संयुगे॥', (३. ८६, १३)। ३. ९१, २०. २३; १२०, ११, १७४, ३; २३६, ३१; २३७, १. २३; २३८, १. ३. १०. १७. १८; २३९, २३; २४०, ३; २४१, १९. २७; २४२, १. २४५, ३; २४६, ३; २४७, ९. १६; २४९, १२. २३. ३६; २५०, १. १३। घोषयात्रा के समय गन्धर्वों से पराजित होकर कर्ण भाग गया; पाण्डवों की सहायता से दुर्योधन आदि जब मुक्त हुये तब इसने दुर्योधन के संसार से विरक्ति की भावना की भर्त्सना की (३, २५१, २. १२)। 'हतस्य नरकस्यात्मा कर्णमूर्तिमुपाश्रितः', (२. २५२, २०)। इन्द्र कर्ण के कर्ण-कुण्डल और कवच प्राप्त करेंगे (३. २५२, २२)। ३. २५२, ३२। 'कर्णोऽप्याविष्टचित्तात्मा नरकस्यान्तरात्मना', (२. २५२, ३४)। नरकासुर की अन्तरात्मा से आविष्टचित्त होकर कर्ण ने दुर्योधन को अर्जुन के वध का परामर्श दिया (३. २५२, ३८)। इन्होंने अर्जुन के मारने की प्रतिज्ञा की (३. २५२, ५०)। ३. २५३, २. ८. ९. १२ १७. २४. २७; २५४, १. ११. १४. २४. २६. २८. ३१। कर्ण ने दुर्योधन के लिये पृथिवी को पराभूत किया (३. २५४, ३६)। ३. २५५, २. ४. ७. ११. २२; २५६, ५. २७; २५७, १३. १६। दुर्योधन को राजसूय यज्ञ का परामर्श देते हुये कर्ण ने यह शपथ ली कि वह स्वयं अर्जुन का वध करेंगे (३. २५७, १८)। 'अभेद्य कवचं मत्वा कर्णमद्भुतविक्रमम्', (३. २५७, २३)। 'सूतपुत्रेण कर्णेन', (३. २५७, २६)। ३. २६२, ४. ६. १८. २५. २६; ३००, ३. ५. ६. ९. १८. २०. २१. २३; ३०१, १. १५. १८। "स्वप्न में कर्ण के सम्मुख उपस्थित होकर सूर्यदेव ने कर्ण को अपना अक्षय कवच और कुण्डल इन्द्र को देने से विरत करने का प्रयास किया; परन्तु जब कर्ण ने सूर्य की इस आज्ञा को अस्वीकार कर दिया तब सूर्य ने कर्ण को इन्द्र से शक्ति लेकर ही उन्हें कवच और कुण्डल देने का परामर्श दिया (४. ३०२, १. ४. १६. १८. २०)।" "जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने इस गुप्त रहस्य का वर्णन किया जिसे सूर्य ने कर्ण पर प्रगट नहीं किया था। वैशम्पायन ने बताया कि वासुदेव की बहन और वृष्णि सूर की पुत्री पृथा को, जिसे राजा कुन्तिभोज ने गोद लिया था, कुन्तिभोज ने एक क्रोधी ब्राह्मण की सेवा करने की आज्ञा दी। अपने पिता कुन्तिभोज की इस आज्ञा का पालन करते हुये पृथा (कुन्ती) ने उस ब्रह्मर्षि की चर्या आरम्भ की (३. ३०३-३०४)।" एक वर्ष के पश्चात् कुन्ती की सेवा से सन्तुष्ट होकर उस तपस्वी ब्राह्मण ने कुन्ती को एक ऐसे मन्त्र का उपदेश किया जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन कर सकेगी (३. ३०५)। "उस ब्राह्मण के चले जाने पर कुछ दिनों के पश्चात् कुन्ती ने अपने शरीर में ऋतु का प्रादुर्भाव देखा। तदनन्तर एक दिन जब उसने प्रातःकालीन उगते हुये सूर्य को देखा तो उसकी दृष्टि दिव्य हो गई। उसने उस समय कवच और कुण्डल से विभूषित सूर्य को देखा और कौतूहल वश ब्राह्मण के मंत्र की परीक्षा लेने के लिये उसने सूर्य का आवाहन किया। इस समय सूर्य ने अपनी योग-शक्ति से अपना दो स्वरूप बना लिया। एक स्वरूप से वह आकाश में तपते रहे और दूसरे से कुन्ती के सम्मुख प्रगट हुये। सूर्य को इस प्रकार अपने सम्मुख देखकर कुन्ती भयभीत हो गई परन्तु सूर्य ने उसे आश्वस्त किया (३. ३०६)।" "कुन्ती ने सूर्य से अपने स्थान पर चले जाने के लिये अनेक प्रकार से प्रार्थना की परन्तु सूर्य ने उससे कहा: 'मेरे साथ समागम करके तुम कन्या ही बनी रहोगी और तुम्हें एक ऐसा महायशस्वी पुत्र प्राप्त होगा जो ऐसे कवच और कुण्डल से विभूषित होगा जिसे माता अदिति ने मुझे प्रदान दिया है।' सूर्य के इस आश्वासन पर कुन्ती ने अपनी स्वीकृति दी। सूर्य ने भी अपनी योग-शक्ति के द्वारा कुन्ती के भीतर प्रवेश करके अपना तेजोमय वीर्य स्थापित कर दिया। इस प्रकार कुन्ती का कन्याभाव अछूता ही रहा (३. ३०७)।" "वह घटना वर्ष के ११ वें मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को घटित हुई। कुन्ती की एक धाय के अतिरिक्त अन्य किसी को भी इसका पता नहीं चल सका। उसे बालक पैदा हुआ तो उसने अपनी धाय से परामर्श करके बालक को एक पिटारी में बन्द कर अश्व नदी में छोड़ दिया। उस समय उसने उस बालक की रक्षा के लिये आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव, इन्द्र सहित मरुद्गण, दिक्पालों सहित दिशाओं, तथा समस्त देवताओं आदि की स्तुति की। बालक को लेकर वह पिटारी अश्वनदी से चर्मण्वती नदी में गई, और उससे यमुना तथा गंगा में होकर चम्पापुरी के निकट अङ्गों के देश में पहुँची (३. ३०८)।" "उस समय धृतराष्ट्र का मित्र अधिरथ सूत, जो सन्तान-हीन था, अपनी पत्नी राधा के साथ गंगा नदी के तट पर आया। नदी की धारा में पिटारी को देखकर राधा ने उसे कौतूहलवश अपने सेवकों के द्वारा पानी से बाहर निकलवाया। पिटारी के बालक को उस सूत-दम्पति ने अपना पुत्र बना लिया और उसका वसुषेण और वृष नाम रक्खा (कर्ण नाम बाद में पड़ा)। कर्ण को गोद लेने के पश्चात् अधिरथ को अन्य पुत्र भी उत्पन्न हुये। बड़ा होने पर कर्ण को अधिरथ ने हस्तिनापुर भेजा, जहाँ द्रोण, कृप, और परशुराम से चारों प्रकार की अस्त्र-विद्या सीखकर वह महान् धनुर्धर के रूप में विख्यात हुआ। कर्ण, दुर्योधन का मित्र बन गया और सदैव अर्जुन के साथ स्पर्धा रखने लगा। युधिष्ठिर इससे भयभीत रहते थे। दोपहर के समय जल में खड़े होकर जब कर्ण भगवान् सूर्य की स्तुति करता था तो उस समय बहुत से ब्राह्मण धन के लिये उसके पास आते थे। उस समय उस अवसर पर उसके पास ऐसी कोई वस्तु नहीं थी जो ब्राह्मणों को अदेय हो (३. ३०९, २०. २१. २३)।" "एक ब्राह्मण का वेश बनाकर

इन्द्र ने कर्ण के पास आकर उससे उसका कवच और कुण्डल माँग लिया और बदले में उसे एक अमोघशक्ति दी। इन्द्र ने बताया कि वह अमोघशक्ति दैत्यों का संहार करते समय शत्रुओं का वध करके पुनः उनके पास लौट आती है। कर्ण से उन्होंने कहा : 'यह शक्ति तुम्हारे हाथ में जाकर किसी एक तेजस्वी, ओजस्वी, प्रतापी तथा गर्जना करनेवाले शत्रु को मार कर पुनः मेरे ही पास आ जायेगी। फिर भी, इस समय तुम जिस शत्रु को लक्ष्य करके यह शक्ति माँग रहे हो उसका यह वध नहीं कर सकेगी। क्योंकि वह श्री कृष्ण के द्वारा रक्षित है।' इन्द्र का यह वचन सुन कर कर्ण ने अपने शरीर से काटकर कवच कुण्डल इन्द्र को दे दिया। इन्द्र ने कर्ण को यह वरदान दिया कि कवच और कुण्डल के कट जाने पर भी उसका शरीर वीभत्स नहीं होगा। जब कर्ण ने कवच और कुण्डल देने लिये अपने शरीर को काटना आरम्भ किया तो उस समय देवता, मनुष्य और दानव सिंहनाद करने लगे। कर्ण के इस कर्णन (कर्तन) रूपी कर्म से उसका नाम कर्ण पड़ गया। पाण्डवों को इस समाचार से अत्यन्त प्रसन्नता हुई परन्तु धार्तराष्ट्र अत्यन्त दुःखी हुये। वैशम्पायन ने कहा : 'द्रौपदी को पाकर तथा जयद्रथ को काम्यकवन से भगाकर ब्राह्मणों सहित समस्त पाण्डवों ने मार्कण्डेय जी के मुख से पुराण कथा और देवताओं तथा ऋषियों के विस्तृत चरित्र सुनते हुये इस कथा को भी सुना था।' (३. ३१०, ६. ७. १३. १९–२३. २६. २९. ३१. ३२. ३४. ३६–४०)।" ३. ३१५, ६; ४. २१, ६; २५, ६; २६, ८। कर्ण ने पाण्डवों का गुप्तचरों द्वारा पता लगाने की सम्मति प्रदान की (४. २६, १५)। ४. ३०, ३. ७. १४। 'वैकर्तनस्य कर्णस्य क्षिप्रमाज्ञापयत् स्वयम्', (४. ३०, १९)। ४. ३५, २। 'कर्णं वैकर्तनम्', (४. ३६, ६)। ४. ३८, ८. १३; ३९, १४; ४७, २। इन्होंने अर्जुन का वध करने की प्रतिज्ञा की (४. ४८, १)। ४. ४९, ११. १७. २१; ५०, १; ५१, १. ५. १७; ५२, १८। दुर्योधन की सेना में कर्ण कवच धारण करके आगे रहे (४. ५२, २३)। ४. ५३, १२; ५४, ७. २३. २५. २७। 'वैकर्तनं पूजयतां कुरूणाम्', (४. ५४, २६)। ४. ५४, ३१. ३२। अर्जुन द्वारा पराजित (४. ५४, ३४)। ४. ५५, ३७. ३८। अर्जुन ने उत्तर को बताया कि जिसकी ध्वजा के अग्रभाग पर हाथी या उसकी सांकल के चिह्न से युक्त पताका फहरा रही है, वही विकर्तन पुत्र कर्ण है (४. ५५, ५२)। ४. ५९, ७. १६. १८। अर्जुन ने कर्ण पर धावा किया (४. ५९, २०)। ४. ६०, १. २. ८. ९. १७. १८. २१. २२। अर्जुन ने प्रज्वलित बाण द्वारा कर्ण के वक्षस्थल पर आघात किया। (४. ६०, २५)। ४. ६३, १. ४; ६६, ३। अर्जुन ने इसको मूर्च्छित कर दिया और उत्तर से कहा कि वह इसके शरीर के पीले रंग के वस्त्र को उतार ले (४. ६६, १३)। ४. ६८, ८। 'पदं पदसहस्रेण यश्चरन्नापराध्नुयात्। तेन कर्णेन तात कथमासीत् समागमः ॥', (४. ६८, ६९)। 'सगणः सह कर्णेन', (४. ७०, २६)। 'गान्धारराजं च ससूतपुत्रम्', (५. २, ५)। ५. ३, २०। 'राधेयसौबलौ', (५. ४, २)। शल्य युधिष्ठिर से कर्ण की शक्ति का ह्रास करने की प्रतिज्ञा करते हैं। जब कर्ण और अर्जुन के द्वैरथ-युद्ध का अवसर प्राप्त होगा तो वे (शल्य) कर्ण के सारथि का पद ग्रहण करेंगे (५. ८, ४३)। ५.१८, १४. २३; २१, ८; २२, ७; २३, ११। 'राधेयगुप्तान् सह भूमिपालैः', (५. २५, ११)। ५. २६, २१. २२; २७, २५; २९, ४४. ५२; ३०, ३०; ३३, १४; ३५, ७६; ३७, ४४; ४७, ९। 'दुरात्मनः सूतपुत्रस्य', (५. ४८, ४)। धार्तराष्ट्रान् सकर्णान्', (५. ४८, ९७)। रामेण चैव शप्तस्य कर्णस्य', (५. ४९, २७)। ५. ४९, २८. २९. ३३; ५२, ४. ५; ५५, ४३. ५४। 'विकर्तनः कर्णः', (५. ५५, ६३) 'अर्जुनस्य तु भागेन कर्णो वैकर्तनो मतः', (५. ५७, १५)। ५. ५७, ३७. ५०। 'सूतपुत्रम्', (५. ५७, ५८)। ५. ५८, ९. १२. १५; ५९, ११। "ब्राह्मण के रूप में रामजामदग्न्य से ब्रह्मास्त्र प्राप्त करने के कारण उन्होंने कर्ण को शाप दिया। कर्ण के पास इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति तथा एक सर्पमुख बाण भी है जिसकी वह पुष्प मालाओं से पूजा करते हैं। कर्ण के दर्पयुक्त वचन को सुन कर जब भीष्म ने उसकी भर्त्सना की तो उसने यह शपथ ली कि जब तक भीष्म शान्त नहीं हो जायेंगे वह युद्ध नहीं करेगा (५. ६२, १. ७. १०–१२. १८)।" 'वैकर्तनः कर्णः', (५. ६३, ५)। ५. ६६, ४। 'शकुनिः सूतपुत्रश्च', (५. ७१, ८)। ५. ८३, १३; ९०, ८२; ९१, ५. १३; ९२, ७. ८. १०. २५; ९३, ९; ९४, ३४. ४८; ९५ १९; १२४, ४५. ४९; १२७, १४; १२८, १२. ४८; १३०, ३. ३३; १३७, २६. २९; १३८, ९; १४०, ३. ७. ९। 'विजयं वसुषेणस्य घोषयन्तु च पाण्डवाः', (५. १४०, २७)। 'कर्ण उवाच', (५. १४१, १)। 'नाम वै वसुषेणेति कारयामास वै द्विजैः', (५. १४१, १०)। ५. १४२, १. २. १६। कर्ण और कृष्ण का वार्तालाप जिसमें कर्ण, यह जानते हुये भी कि वह कुन्ती का पुत्र है, पाण्डवों से युद्ध करना चाहता है (५. १४३, १. ४६. ४८. ५०)। ५. १४४, ६. १५. १८. २९; १४५, १। 'कौन्तेयस्त्वं न राधेयो न तवाधिरथः पिता। नासि सूतकुले जातः कर्ण तद्विद्धि मे वचः ॥', (५. १४५, २)। ५. १४५ ४। अद्य पश्यन्ति कुरवः कर्णार्जुनसमागमम्', (५. १४५, ९)। कुन्ती कर्ण को यह बताती हैं कि वह उनका पुत्र है (५. १४५, १०. ११)। ५. १४६, १–३. २३. २५। कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं (५. १४६, २७)। 'राधेयम्', (५. १५०, १२)। ५. १५३, ८; १५४, ३. ९. १२; १५५, ३३। 'सूतपुत्रः', (५. १५६, २४)। ५. १५६, २५. ३५; १५८, २३; १६०, ४. ५। 'सूतपुत्रम्', (५. १६०, ९५)। 'कर्णशल्यझषावर्तम्', (५. १६०, १२२)। 'सूतपुत्रम्', (५. १६१, १३)। ५. १६०, ४० (=५. १६०, १२२)। 'सूतपुत्रस्य', (५. १६२, २१)। 'सूतपुत्रे', (५. १६३, २१)। ५. १६३, ५४. ५६. ५७। 'अर्जुनं सूतपुत्राय', (५. १६४, ५)। 'कर्णो वैकर्तनः', (५. १६८, ४)। भीष्म ने कहा कि कर्ण न तो अतिरथी है और न रथी ही, जिस पर क्रुद्ध होकर कर्ण ने यह शपथ ली कि वह तब तक युद्ध नहीं करेगा जब तक भीष्म जीवित रहेंगे (५. १६८, ५)। ५. १९३, ६। इस बात का प्रण किया कि वह पाण्डव-सेना का पाँच रात्रि में विनाश कर देगा (५. १९३, २०)। ६. १४, ६९। 'स तु वैकर्तनः कर्णः सामात्यः सह बन्धुभिः। न्यासितः समरे शस्त्रं भीष्मेण भरतर्षभ ॥', (६. १७, १३)। ६. २५, ८ 'सूतपुत्रः', (६. ३५, २६)। ६. ३५, ३४। शल्य युधिष्ठिर को यह आश्वासन देते हैं कि कर्ण की शक्ति को कम करने का प्रयास करेंगे (६. ४३, ८६)। 'श्रुतं मे कर्ण भीष्मस्य द्वेषात्किल न योत्स्यसे। अस्मान्वरय राधेय यावद्भीष्मो न हन्यते ॥', (६. ४३, ९०)। 'कर्ण उवाच', (६. ४३, ९२)। 'कर्णस्य मतम्', (६. ४९. १२)। 'कर्णोऽपि न्यस्तशस्त्रः', (६. ५२, ३७)। ६. ५८, ३९। 'कृष्णस्य मतम्', (६. ७९, ६)। 'क्षत्रिया निर्धनं यान्ति कर्णदुर्मन्त्रितेन च', (६. ९६, ७)। ६. ९७, ५. ७. १४. १६। कर्ण उस समय तक युद्ध नहीं करेगा जब तक भीष्म युद्ध करने से अवकाश नहीं ले लेते (६. ९७, ४२)। 'सूतपुत्रे च राधेये पर्याप्तं तन्निदर्शनम्', (६. ९८, ८)। ६. १२०, २१; १२२, ९। कर्ण ने दुर्योधन के लिये कन्या लाने के निमित्त अकेले ही काशीपुर में जाकर धनुष की सहायता से ही वहाँ गये हुये समस्त राजाओं को परास्त कर दिया था; जरासन्ध भी युद्ध में इसकी समता नहीं कर सकता था (६. १२२, १७)। 'कर्ण उवाचः कौन्तेयोऽहं न सूतजः', (६. १२२, २३)। जब भीष्म शान्त हो गये तब कर्ण ने उनसे क्षमा माँगी (६. १२२, ३४, ३८)। ७.१, ३२. ३३. ३५. ३६. ४१. ४३. ४६. ४८, ४९ (वैकर्तनं कर्णम्)। कर्ण ने दस दिनों तक युद्ध नहीं किया ; जब भीष्म घायल होकर युद्धभूमि में गिर पड़े तब कौरवों ने कर्ण पर ही अपनी आशा केन्द्रित कर ली (७. १, ५१. ५२)। ७. २, १. २. ४. ८। 'इन्होंने युद्ध के लिये प्रस्थान किया (६. २, ३६)। ७. ४, ५. ७. ९। 'ययौ वैकर्तनः कर्णः समीपं सर्वधन्विनाम्', (७. ४, १५)। भीष्म ने कर्ण के कौशलों की गणना कराई (७. ४, १८)। ७. ५, १. ३. ६. ९। इन्होंने द्रोण को सेनानायक बनाने का परामर्श दिया (७. ५, १३)। ७. ६, १। 'ययौ वैकर्तनः कर्णः प्रमुखे सर्वधन्विनाम्', (७. ७, १८)। ७. ७, १९. २१। (कर्णो हि समरे शक्तो जेतुं देवान् सवासवान्) २३. २४. ३२. ३३; १२, ५। 'वैकर्तनं तु समरे विराटः प्रत्यवारयत्', (७. १४, ३८)। 'तत्र पौरुषमभूत् तत्र सूतपुत्रस्य दारुणम्', (७. १४, ३९)। ७. १६, १५।

द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित गरुड़-व्यूह के पुच्छ भाग में अपने पुत्र, जाति के लोगों, तथा बान्धवों सहित खड़े थे (७. २०, ११ । । ७. २२, १०. १६. १८ । 'अस्त्रैः समत्वं संप्राप्य रुक्मिकर्णार्जुनाच्युतैः', (७. २३, ७०) । इन्होंने केकयों के साथ युद्ध किया (७. २५, ४२. ४४) । ७. २७,१६; ३२, १;३. ५ । (भीमसेन के साथ संघर्ष) ३८. ५१. ५६, ६०. ६१ (अर्जुन द्वारा इनके ज्येष्ठ भ्राता का वध) ६४. ६५. ६७. ६९ । 'कर्णमेवाभ्यधावन्त त्रास्यमानाः प्रहारिणः', (७. ३२, ७१) । ७. ३४. २०; ३७, ५. २४. २७. २९ । अभिमन्यु के साथ संघर्ष करते हैं (७. ३७, ३१) । ७. ३९, ५. १५; ४०, २५. २८. ३२–३६ । अभिमन्यु द्वारा इनके ज्येष्ठ भ्राता का वध (७. ४१, ५) । ७. ४१, ६. ८; ४६, ६. १९; ४७. ४. १०. १८; ४८, १. ३. ५. १७ (वैकर्तनः) २४. २६. ३१ (वैकर्तनः) । द्रोणकर्णमुखैः षड्भिर्धार्तराष्ट्रैर्महारथैः', (७. ४९, २२) । ७. ७२, ४९; ७३, १०; ७४, ४७, १५ (वैकर्तनः); ७५, २६; ७९, २९; ८५, २६ (कर्णस्यमतम्), ४३. ५२ । 'दुर्योधनस्य कर्णस्य शकुनेश्चान्वमा मतम्', (७. ८६, ९) । ७. ८७, १२ । 'द्रोण द्वारा निर्मित चक्रशकट व्यूह में इनकी स्थिति का उल्लेख (७. ८७, २६) । 'कर्णेन विजिताः पूर्वं संग्रामे शूरसंमताः', (७. ९१, ४०) । सूतपुत्र कर्ण जयद्रथ के बायें चक्र की रक्षा करते थे (७. ९५, ४९) । ६. ९६, २२. १०४, ४. २५. २७ । अर्जुन के साथ संघर्ष (७. १०४, ३०) । "अधिरथ पुत्र कर्ण का ध्वज हाथी की सुवर्णमयी रस्सी के चिह्न से युक्त था । वह संग्राम में आकाश को भरता हुआ दिखाई देता था । युद्धस्थल में कर्ण के ध्वज पर सुवर्णमयी माला से विभूषित पताका वायु से आन्दोलित हो रथ की बैठक पर नृत्य सा कर रही थी (७. १०५, १२. १३) ।" 'कर्णमुखाः', (७. १११, २९) । ७. ११२, ११. २३. २४. ३९; ११३, ३८ । 'दक्षिणतयाश्च वहवः सूतपुत्रपुरोगमाः', (७. ११३, ४१) । ७. ११३, ४३. ४५ । 'जलसन्यमहाग्राहं कर्णं चन्द्रोदयोद्धतम् ॥ गते सैन्यार्णवं भित्त्वा तरसा पाण्डवर्षभे ।', (७. ११४, १५–१६) । ७. १२९, १०. ११. १३. १४. २०–२५. २८. ३०. ३२. ३४ । भीमसेन से युद्ध किया और उसमें रथहीन हो गये (७. १२९, ३५) । ७. १३१, ३. ४. ६. ८. ११. १२. २२. २४. २६. २९. ३१. ३४–४१. ४६. ४८. ५०. ५२. ५३. ५५. ५६ । भीमसेन से युद्ध करते हैं और पुनः रथहीन हो जाते हैं (७. १३१, ५७) । ७. १३२, १. २. ४. १५. १८. २१. २२. २६. २८. २९ । इन्होंने पुनः भीमसेन के साथ युद्ध किया (७. १३२, ३२) । 'यत्कर्णं योधयामास समरे लघुविक्रमम्', (७. १३३, १) । 'त्रिदशानपि वा युक्तान्सर्वशस्त्रधरान्युधि । वारयेद्यो रणे कर्णः सयक्षासुरमानुषान् ॥', (७. १३३, ३) कर्ण और भीमसेन के बीच घमासान युद्ध; कर्ण पुनः रथ-विहीन हो जाते हैं (७. १३३. ५–८. १५. १६. २४. २७. ३६. ३७. ३९. ४३. ४४) । ७. १३४, १. ३. ५. १४. १८. १९. २३. ३३ (भीमसेन द्वारा विजित); १३५, २. ३. ६. ७. १०. ११. १७. १९. २९. ३५. ४०; १३६, १०. ३. ५. ७. १०. १३. १७. २३. २९. ३६–३९ (कर्ण का भीमसेन के साथ लगातार संघर्ष); १३७, ४–७. ११–१३. १८. ४३; १३८, ४–६. ११–१३. १९. २९; १३९, १. ३. ४. ९–१२. १४. २२. ३०. ३६. ३८. ४४. ४९. ५४. ५७. ६१. ६३. ६६. ६७. ७१. ७३–७५. ७८. ८२. ८६–८८. ९०. ९२. ९३. १०६. १०९. ११०. ११३. ११५. ११६. ११८. ११९ (कर्ण और भीमसेन के युद्ध की समाप्ति; कर्ण ने उन्हें विजित किया किन्तु उसका वध नहीं किया); १४०, २. ९; १४३, ५३. १४५, ९. १२. १३. १६. १८. २३. ३३. ४२. ५५. ६२–६५. ७०. ७४. ७६. ८१ (अर्जुन के साथ युद्ध); १४६, ५४. ७४. ९५. ९८; १४७, ३३. ३४. ३६. ३७. ५६–५९. ६२. ६५. ६८. ७०. ७३. ७८. ८९ (अपने पुत्र वृषसेन की सहायता प्राप्त करते हुये कर्ण ने सात्यकि से युद्ध किया) । अर्जुन कर्ण को फटकारते तथा वृषसेन के वध की प्रतिज्ञा करते हैं (७. १४८, २. ४. ७. ८. ३१) । ७. १४९, ५७; १५०, ८. ९. ३१; १५१, २०. २२; १५२, २. १५ । भीमसेन पर आक्रमण करते हैं (७. १५५, २५) । ७. १५५, २९. ३०. ३८; १५६, १८. ७१. १२० । 'कर्णस्य दयितं पुत्रं वृषसेनमवाकिरत् । ततो वृकरथो नाम भ्राता कर्णस्य विश्रुतः ॥', (७. १५७, २१) । ७. १५८, १. २. ५. १२–१४. १६. १७. २०. २३. २५. ३४. ४७ । कर्ण ने उस अमोघ शक्ति से अर्जुन का वध करने का वचन दिया जिसे उसने इन्द्र से प्राप्त किया था (७. १५८, ४९) । ७. १५९, २. ९. ११. १४. २०. २१. २३. ३३. ३७. ३९. ४१–४४. ४८. ४९. ५१–५४. ६०. ६१; १६०, ४; १६३, ३; १६४, २९; १६५, ७; १६७, १. ३–६. ८–१०. १४. १९. २१ (सहदेव के साथ युद्ध); १७०, १३. १५. २५, २७. ३२. ३३. ३५–३८. ४०–४१. ६१ (इन्होंने धृष्टद्युम्न और सात्यकि के साथ युद्ध किया); १७१, ५४; १७२, २. १२.–२२. २४. ३१. ३३. ३४; १७३, १. ४. ६. ८. ९. ११. १२. १४. १६. २०. २१. २३ (धृष्टद्युम्न और पाञ्चालों को पराजित किया). २५. २६. २८.३०–३२. ३४. ३५. ४१. ४७. ४८. ५६. ५८. ६१–६३. ६६ । अर्जुन के कहने पर घटोत्कच कर्ण की ओर बढ़ा (७. १७३, ६८) । ७. १७४, १–५. ९. १३. २०. ४३. ४४ (घटोत्कच के साथ युद्ध); १७५, १. २०. २३. २५. ३२. ३४. ४१. ४३. ४७. ४९. ५१. ५२. ५४. ५६. ५७. ६६. ६९–७१. ७३. ७४. ७७. ७९. ८२–८६. ९८. १००–१०२. १०५. १०८. ११०. १११. ११४ ।'कर्णराक्षसयोर्मृधे', (७. १७६, १) । 'कर्णराक्षसयोर्नक्तं दारुणप्रतिदर्शने', (७. १७७, ४) । ७. १७७, ७–९. १२. १४. १६. ३५. ३८; १७८, ३. ४. ९. १०. १२; १७९, ३. १८. २२. २९. ४३. ४५. ४८. ५०. ५१. ५६ । कर्ण ने इन्द्र द्वारा प्रदत्त अमोघ शक्ति से घटोत्कच का वध कर दिया (७. १७९, ६४) । ७. १८०, १२. १३. १५. १६. १९–२१. २४. २८; १८१, २५. ३०; १८२, ८. ९. ११. १३. १८. २१, २६. ३१.३३–३७. ३९. ४६;१८३, १. ३. ५. ८. ११. १६. १९. २३. ३५. ३८. ४३. ४७. ५०. ५८; १८४, १. ३०; १८५, २२. ३२. ३३; १८६, ७. १२. १४. ४८; १८७, २६. ३४ (भीमसेन के साथ युद्ध किया); १८८, ९–११. १४. १७–१९. २१; १८९. ५०. ५१. ५३. ५५; १९१, ४६. ४७; १९२, २. ४. ४३; १९३, ३०;२००, ५०. ५१ । 'द्रौणिकर्ण कृपैर्गुप्ताम्', (७. २०२, २०) । ८. १, ११. १५. १९. २१; २, १. २०; ३, १० । 'कर्णं चक्रे सेनापतिं तदा', (८. ३,१७. १८) । 'अर्धं निहत्य सैन्यस्य कर्णो वैकर्तनो हतः', (८. ५, ६) । इसके पुत्र वृषसेन का वध हो चुका था (८. ५, २३) । 'कर्णार्जुन समागमे', (८. ५, ५४) । -कर्णः प्रहरतां वरः', (८. ५, ५८) । 'तेजोवधं सूतपुत्रस्य संख्ये प्रतिश्रुत्याजातशत्रोः पुरस्तात्', (८. ७, १०) । ८. ८, १. ३. ७. १४. २२. २३. २५. २७; ९, ३. ७–९. १३. १८. ३५. ४१. ५३. ७१. ७९. ८३ ८५. ८७.८९. ९०. ९५.९७; १०, १६. १८. १९. २२. ३८–४० । 'सैनापत्येन सत्कर्तुं कर्णं स्कन्दमिवामराः', (८. १०, ४३) । ८. १०, ५५. ५६; ११, १. ३. ११–१३. १५. २२. २३ । 'एको ह्यत्र महेश्वासः सूतपुत्रो विराजते', (८. ११, २५) । ८. ११, ३४. ३९, ४१; १३, १. २. ४ । नकुल ने आक्रमण किया (८. १३, ५)८. १७, २४; १९, २३; २०, ३. ६. ३७; २१, १. ५. १०. १८–२०. २४. २५; २२, ३०; २४, १. २. १०. १२. १३. १५. १८. २०. २६. २९. ३४. ३८. ४४. ४८. ५४. ७३. ७४; २८, ८. ४८; ३०, १. २३–२६. २९–३३; ३१, ८. १९. २०. २२. २३. २६. ३४ । कर्ण ने कहा कि या तो वे स्वयं ही अर्जुन का वध कर देंगे अन्यथा अर्जुन द्वारा मारे जायेंगे; अपना सारथि बनाने के लिये शल्य से प्रार्थना करते हैं (८. ३१, ३५. ७०–७२) । ८. ३२, ३. ६. ७. ९. १६. १७. १९. २३–२५. २७. २८. ३३. ५५. ५९–६१ । शल्य कर्ण के समक्ष शर्त रखते हैं कि वे अपनी इच्छानुसार कर्ण से वार्तालाप कर सकते हैं (८. ३२, ६५) । ८. ३४, १२१, १२३–१२५. १५७. १५८. १६०. १६२; ३५, ३. १३. २६. ३१–३४. ३७. ३८. ४३. ४४; ३६, १. ५. ६. ८. १०. ११. १४. १५; ३७, १. ३. ७. ३३. ४२. ४३; ३८, १. २२ । कर्ण की शक्ति का ह्रास करने के पक्ष में शल्य अर्जुन की प्रशंसा करते हैं (८. ३९, ११. १३. १७. २०. २२. २३. २५. २७. २८. ३१) । मद्रदेश के निवासियों की निन्दा करते हैं (८. ४०, २) । ८. ४०, ५६; ४१, १. ५. १० । शल्य का कर्ण को हंसकाकीयोपाख्यान सुनाना (८. ४१, ४८) । ८. ४१, ७१, ७२, ७६–७८, ८३ । कर्ण का शल्य से अपने को परशुराम द्वारा और

ब्राह्मण द्वारा प्राप्त हुये शापों की कथा सुनाना (८. ४२, १)। ८. ४३, ६। कर्ण के द्वारा मद्र आदि बाह्रीक देशवासियों की निन्दा (८. ४४, १–३)। ८. ४५, १. ४०. ४२. ४६. ४७; ४६, १. ५. १६ (अपने पुत्र सहित व्यूह के मुहाने पर बीचो-बीच खड़े थे). २९. ३०. ४२. ४४. ४५. ४८. ५१. ५३. ५५. ५६. ७०। शल्य अर्जुन की प्रशंसा कर्ण की शक्ति का ह्रास करने के लिये करते हैं (८. ४६, ७४)। युधिष्ठिर पर आक्रमण करते हैं (८. ४७, १. २१) ८. ४८, २. ३. ९. १०. १४. १८. (सुषेण और सत्यसेन के पिता). १९ (वृषसेन के पिता) .२६ (भानुसेन के पिता). ३१. ३३. ३५. ४९. ५०. ५२. ५७. ६५ (पुत्रों सहित कर्ण पाण्डवों पर आक्रमण करते हैं। ८. ४९, १. ४. ५. ७. १०. ११. १४. २०. २३. २९. ३२. ३५. ३७. ३९. ४१. ४६. ४७। कर्ण के दोनों हाथ वज्र, छत्र, अङ्कुश, मत्स्य, ध्वज, कूर्म और कमल आदि शुभ लक्षणों से युक्त थे (८. ४९, ५०)। ८. ४९, ५३. ५९। कर्ण द्वारा युधिष्ठिर की पराजय और तिरस्कार (८. ४९. ६२)। ८. ५०, ४. ५. ७. ११. १५. १६. १८. ३०. ३३. ३५. ३६. ३८. ३९. ४२. ४५. ४६. ४८ (भीमसेन द्वारा पराजित हुए), ५१, १. २. २३. २५. २७. २९. ३२–३७. ३९. ४२–५९. ६३. ६४. ६८ (ये भीमसेन तथा युधिष्ठिर के साथ युद्ध करके उनको विजित कर लेते हैं) ८. ५४, १. १६; ५६, २. ३. ५. ३७. ४०. ४१. ४३. ४६. ५१. ५२. ५७–६१. ६३. ६६। इनका हाथी की रस्सी के चिह्न से युक्त ध्वज है; पाञ्चाल इत्यादि का वध करते हैं (८. ५६, ८५–८७)। ८. ५७, १. २; ५८, १. ३. ४५. ४७; ५९, २. ४–६. १२. १४. १६. १९ ६१ (धृष्टद्युम्न इत्यादि के साथ युद्ध करते हैं); ६०, १३. १४. १८. २१. २५. २७. २९. ३०. ३४. ३६. ४०. ४२. ४५. ४९. ५६. ७४; ६१, ५. ११. १६. १७. १९–२४ (शिखण्डिन् के साथ युद्ध करते हैं); ६२, ९. १९. २१–२३. २७. २९ (युधिष्ठिर के साथ युद्ध करते हैं); ६३, १–४. ८. १८. २०. २४। कर्ण, युधिष्ठिर तथा नकुल-सहदेव के साथ युद्ध का परित्याग करके दुर्योधन की रक्षा के लिये दौड़े (८. ६३, ३१. ३२)। ८. ६४, ३५. ४०. ५३. ५४. ५९. ६३. ६६. ६७ (कर्ण द्वारा भार्गवास्त्र से पाञ्चालों का संहार); ६५, ४. ५. ७. २०; ६६, २. ८. १२. १७–१९. २१. २३. २७. २८. ३०. ३७–३९. ४२. ४३. ४७; ६७, १२–१४. १६. १७. २०. २१; ६८, १. २. ४. ५. १७. १८; ६९, ७६–७९. ८८; ७०, ३६. ३७ (अर्जुन कर्ण के वध की प्रतिज्ञा करते हैं); ७१, ९. १७. २२. २३. २५–२८. ३१. ३५–३८. ४०; ७२, ९. १०. १५. २६. २८. ३४. ३९. ४०; ७३, १. ५५. ६२. ६५. ६७. ६८. ७०. ७१. ७६. ७७. ८१. ८३. ९०. ९२. ९४–९६. १००. १०२. १०४. ५,१०१. १०८. १२२. ११३. ११५. ११६. ११८–१२१. १२४. १२५ (श्रीकृष्ण का अर्जुन को कर्ण वध के लिये उत्तेजित करना); ७४, २. ४–८. १३. १६. १८. २२. २४. २६. २७. २९. ३०. ३३. ३५. ३७. ३९. ४२. ४८. ५०. ५२. ५८ (अर्जुन द्वारा कर्ण-वध की प्रतिज्ञा); ७५, १. ९. ११ (धृष्टद्युम्न ने कर्ण पर आक्रमण किया) : १४ (उत्तमौजस् ने कर्णपुत्र सुषेण का वध कर दिया); ७७, ९. ७६. ७८; ७८, २. ४. ६. ८. ९. १४. १७. १९. २७. ३१. ३३–३७. ३९. ४०. ४३. ४६. ४९. ५४. ५८. ६०; ७९. ७. ८. १२. १४. १८. १९. २१. ३१. ४३. ४९. ५३. ५४. ५५. ७०, ७४; ८१, ३. ४ (संशप्तकों द्वारा रक्षित). ४३. ४५. ४७. ४८. ५०–५३. ५५. ५६; ८२, १. ५ (कर्ण ने केकय राजकुमार विशोक तथा उग्रकर्मन् का वध कर दिया). ७ (कर्ण-पुत्र प्रसेन का वध). ८. १०. १४. १६. १७. २३–२५; ८३, १६. ४०; ८४, ७. ९. २०. २२. २३. ३६; ८५, ३०. ३१. ३९ (अर्जुन द्वारा कर्ण-पुत्र वृषसेन का वध); ८६, ३. ५. ६. ९. १२. १६. १८. १९. २३; ८७, २. ६. ९. १२. २३. २९. ३१. ३८. ४५. ४७. ५४. ५७–५९. ६१. ६२. ६५. ७०. ८२. ८९. ९०. ९३. ९५. १००. १०२. १०५. १०६. १०८. ११२. ११४. १५० (कर्ण और अर्जुन का युद्ध आरम्भ हुआ; कुछ देवताओं ने कर्ण का और कुछ ने अर्जुन का पक्ष लिया; ब्रह्मा ने कहा कि कर्ण अवश्य मारा जायगा किन्तु उसे भी वसुओं और मरुतों का लोक प्राप्त होगा); ८८, १२. २७. ३२. ३३; ८९, ८. १०.–१२. १५–१७. १९. २२. २५–२७. ३०. ३२–३५. ४०. ४३–४५ ५२. ५६. ६२. ६३. ६५. ६७. ६८. ७३. ७९–८४. ८६. ८७. ८९. ९१–९३. ९६. ९७; ९०. २. ४. ६. ११. १३–१५. १९–२१. २५. २६. २८. ४३–४५. ४७–४९. ५६. ५८. ६०. ६२, ६६–६८. ७२–७४. ७६. ७७. ७९. ८१. ८५. ९०. ९३. ९४. ९६. ९८–१००. १०४. १०६ (कर्ण के बाण में अश्वसेन नामक नाग प्रविष्ट हो गया; रामजामदग्न्य के शाप के कारण कर्ण ब्रह्मास्त्र का स्मरण नहीं कर सका, और रथ का पहिया भी एक ब्राह्मण के शाप के कारण पृथिवी में धँस गया); ९१, २. ४. ७. १०. १५. २०. २३. २९. ४०. ४७. ४९. ५४–५६ (अर्जुन ने कर्ण का मस्तक काट दिया). ५९–६३. ६५–६७; ९२, १. ३. ५। 'हते कर्णे त्रासयन् धार्तराष्ट्रान्', (८. ९२, ६)। 'कर्णो हतः', (८. ९२, ८)। ८. ९२. ११; ९३, १. ३ (कर्णे हते). ४. १८; ९४, ११. २४. २८. २९. ४०. ४२ (सपुत्रः समरे कर्णः). ४४ (हतौ वैकर्तनः कर्णः सपुत्रः). ४९. ५२ (हते कर्णे). ५३. ५४. ६५. ६७; ९५, १ (हते वैकर्तने). २ (निहतम्). १३ (निपातितम्). १४. १६ (हते कर्णे); ९६, १ (निपातितते कर्णे). २ (हतः). ३. ५ (वधं कर्णस्य). ६. १६ (कर्णस्य निधनम्). ३२. ३३ (हते). ३६. ३७. ३९. ४३ (हते राधात्मजे). ४८ (निहतम्). ५५ (कर्णस्य निधनम्); ९. १, १ (निपातिते). ४ (हते कर्णे). ५. २४ (कर्णस्य निधनम्); २, २६. ५९ (हतः कर्णः सूतपुत्रः). ६४ (कर्णे निपातिते); ३, ३. ५ (हते कर्णे). १९; ४, ११ (हते). ३९; ५, ४०; ६, ४ (कर्णे हते); ७, २१. २९. ४०. ४५; ८. १९. ३५; १६, १६; १९, २७; २४, २४ (निहते...... राधेये); २७, १४ (कर्णो वैकर्तनो हतः); ३१, ३१. ४७ (निहते); ३२, २०; ३३, ४७ (हतः कर्णः); ५४ २६ (हतो वैकर्तनः कर्णः पुत्राश्चास्य महारथाः); ५६, ३४ (हतः); ६०, ४५ (राधेयः शकुनिश्चैव हताः); ६१, ३५. ३७ (पतितः समरे कर्णश्चक्रव्यग्रोऽग्रणीर्नृणाम्). ४१ (कर्णश्च निहतः). ५९; ६२, १३ (द्रोणकर्णाभ्याम्). २८ (प्रमुक्तं द्रोणकर्णाभ्यां ब्रह्मास्त्रमरिमर्दन); ६४, ७. १२. ३१; ६५, १५; १०. ३, ३३ ;५, २० (कर्णश्च पतिते चक्रे रथस्य रथिनांवर। उत्तमे व्यसने मग्नो हतो गाण्डीवधन्वना ॥); ९, ५४; १०. १६; ११. १, १६ (कर्णस्य विपर्ययम्). २७ (दुर्योधन का परामर्श दाता); ८, ३१ दुर्योधन का परम सखा; १४, १६; १६, २१. २८; १८, २१; २०, १८; २१, २ (वैकर्तनम्). १० (कर्णस्य पत्नीं त्वं वृषसेनस्य मातरम्). १२ (सुषेण का पिता). १४ (इसकी मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया); २५, ३० (वैकर्तनात्); २६, ३६ (इसके शव को जलाया गया)। २७, १४. २० (कुन्तीसुतात्), २२. २४. २७ (कुन्ती ने बताया कि कर्ण उसका पुत्र था) १२. १, ३४ (हते). ३८–४०. ४२। "जब द्रोण ने कर्ण को ब्रह्मास्त्र की शिक्षा देना अस्वीकृत कर दिया तब कर्ण ने रामजामदग्न्य की शरण में जाकर अपने को एक ब्राह्मण बताया और उनसे शिक्षा ली। जब कर्ण ने अनजान में एक ब्राह्मण की गाय का वध कर दिया तो उस ब्राह्मण ने कर्ण को यह शाप दिया कि अर्जुन से युद्ध करते समय उसके रथ का पहिया भूमि में धँस जायगा (१२. २, २. ९. १२. १७. २१. २९)।" "कर्ण ने रामजामदग्न्य से ब्रह्मास्त्र की शिक्षा ली, परन्तु जब उन्हें यह पता लगा कि वह ब्राह्मण नहीं है तब उन्होंने यह शाप दिया कि उसे मृत्यु का समय निकट आ जाने पर ब्रह्मास्त्र का स्मरण नहीं हो सकेगा (१२. ३, १. ३–६. ९. १२. २४. २६. २७)।" "कलिङ्गराज की पुत्री के स्वयंवर में इसने साथ जाकर दुर्योधन की सहायता की (१२. ४, १. ४. १४. १६. १७. १९. २१)।" "कर्ण ने जरासंध को पराजित किया और जरासन्ध ने उसे मालिनी (= चम्पा)नगरी प्रदान की। अङ्गराज कर्ण ने तब दुर्योधन की इच्छानुसार चम्पा नगरी पर भी शासन करना प्रारम्भ किया (१२. ५, १. ४–७. १४)।" १२. ७, १; १४, २०; २७, १९ (अघातयं च यत्कर्णं समरेष्वपलायिनम्); ४२, ३ (कर्ण इत्यादि के लिये युधिष्ठिर ने पर्याप्त धन का दान किया); १२४, ७ (कर्ण सहितं दुर्योधनम्); १३. १४८, ६१; १४. १, १३; २, १३; १४, १५ (महादानानि विप्रेभ्यो ददामौर्ध्वदेहिकम्। भीष्म कर्ण पुरोगाणां कुरूणां कुरूसत्तम ॥); ५२, २० (कर्णवधोपायः); ६०, ३. १९.

२२; ६१, १३. १८. २२; १५. ३, ६; १०, २८. ३०. ३५; ११, १८; १६, ११. १२ (सूर्यजम्). १३ (सूर्यजः). १४ (सूर्यजस्य); २१, १२; ३०, १५ (कर्ण के जन्म का वर्णन किया गया है); ३१, २. १४ (कर्ण आदित्य का एक अंश था); ३२, ९ (उन मृत-योद्धाओं में से एक जो व्यास के आवाहन पर गंगा नदी से प्रगट हुये थे); ३३, ४. ५; १८. १, २३ (कौन्तेयम्); २, १ (राधेयम्), ६. ८. ४०. ४३; ३, १९. ३८; ४, ६. १६ (अयं ते पूर्वजो भ्राता कौन्तेयः पावकद्युतिः। सूतपुत्राग्रजः श्रेष्ठो राधेय इति विश्रुतः ॥); ५, २० (मृत्यु के पश्चात् सूर्य में प्रविष्ट हो गये)।

तु० की ० कर्ण के निम्नलिखित पर्याय :

* **अङ्गराजन्** : ३. २४७, १६।

* **अङ्गेश्वर** : १. १३७, २३।

* **अर्कपुत्र** : १. १८७, २२।

* **आदित्यतनय** : ३. ९१, २२; १८. ३, २०।

* **आदित्यनन्दन** : ६. १२२, २२।

* **आधिरथि** , व० स्था०।

* **कुरूद्वह** , (केवल कलकत्ता संस्करण में), **कुरुपृतनापति, कुरुवीर, कुरुयोध,** व० स्था०।

* **कौन्तेय, कुन्तीसुत** , व० स्था०।

* **गोपुत्र** , व० स्था०

* **पार्थ** , व० स्था०।

* **पुरुषर्षभ** : ८. ३६, ३१।

* **पूषात्मज** : ८. ८९, ७६।

* **रविसूनु** : ७. १७९, १७; ८. ९०, ४८।

* **राधात्मज** : ८. ९६, ४३।

* **राधासुत** : १. १९०, ३२; २०५, ३; ८. ८६, ४।

* **राधेय** : १. १३२, ११; १८८, १९; १९०, ११. २२; २००, २७; २०१, ३. १३. १७. २०; २०२, २२; २. ४८, ११; ६८, २६; ७१, १२; ३. २३९, ३. ८; २४१, १२. १३; २४८, १; २५४, ५; ३०१, ११; ३०२, २१; ३०९, २५; ३१०, ९; ४. ३९, १५; ४९, १; ५५, १. ५३; ५९, १७; ६०, ४. ६. १५. २३; ५. ४, २; २१, १६. १८; २५, ११; १३७, ३०; १४०, २. ५. ६; १४३, ५१; १४५, १. २; १५०, १२; १६८, १०; १९३, २२; ६. ४३, ८९–९१; ९८, ८; १२२, २. ५. ९. ३९; ७. १, ३४. ४९; २, ९; ७, २४; २२, ११. २९; ३२, ५६. ६०. ७०; ४०, २३. २७. ३०; ४८, २. २९. ३८; १२९, ३९; १३१, २. ४. १९. २०. ४२. ४५; १३२, ७; १३३, २१. २२. ३८; १३४, १४. १६. २८; १३५, ३३; १३६, ४. ५. १९; १३७, १. १९. ३६; १३९, २६. ६०. ६५. ७६. ८४. ९४; १४४, १; १४५, ११. १९. २४. ८०; १४७, २८. २९. ४९. ५०; १४८, ९; १५०, ५; १५२, ४; १५८, १३. २१. ४८; १५९, १५. २४. ३२. ३७. ६६; १६७, २. १५; १७०, २४. ३०; १७३, १३. २९. ३९; १७५, २३; १८२, ४०; १८७, ३६; १८८, १२. १५. २२; ८. ३, १५; ५, ४७; ७, ३; ८, २१; १०, २१. २५. ४८. ५०. ५३. ५४; २१, २१; २४, ४५; ३०, २२; ३१, १७. ७०; ३२, ६. ८. ३३; ३२, ५९. ६४; ३४, १२०; ३५, ५. २९.३९; ३६, ५. १७. २०. २१. २४. ३०; ३८, २६; ३९, २. २९; ४०, १. ५६; ४१, ३३; ४३, १; ४५, ४७. ४८; ४६, ५. १०. ३४. ५२. ७२; ४८, २१. ६०. ६२. ६४; ४९, २५. ५०-५०, १०. १८. १९. २७; ५१, ३–५.५८, ६२; ५६, ४७. ६४. ७०; ५९, ७. ३७; ६०, १५. ३२. ३७. ४४. ५०; ६१. ६. ४२; ६२, ११. १२. १५; ६३, ३. ७. ९. ११. १५. १८. २२. २७. २९; ६४, ४३; ६६, २६; ६८, २७; ७०, ५४; ७१, ३५; ७२, ३२; ७३, ११४. १२२; ७४, २५. ४१; ७८, ४. ६. १७. २०. २२. ३७. ४६. ४७. ५३; ७९, १३. ३१. ४१; ८३, ४७; ८४, ९. १६; ८६, ८; ८७, ४८. १११; ९०, ९५. १०४. १०५. १०७; ९१, १. ६. ८. १०. २५; ९४, ३३; ९६, १४. ४२; ९. ८, १३; २४, २४; ६०, ४५; ११. १; २७, ८; १२. १, २३; ३, २७; १८. २, १; ४, १६।

* **वसुषेण** : १. ६७, ४१. ४७; ३. ३०९, १३. १४; ५. १४०, २७; १४१, १०; ७. १३३, २८; १३५, ४; ८. ३०, ११; ४९, ३५; ५६, १४५।

* **वृष** : १. ६१, १७; १३६, ३९; ३. ३०२, १९; ३०९, १४; ५. १४४, ३१; ६. १२२, ४; ७. ३७, ५३; १३९, १०३; १४५, ८०; १४७, ३२; १७५, ७७; १८०, २२. २४; १८२, ४; ८. १, १६; ८, २२. २८; ३४, ६२; ४१, ३; ४८, १४. ३२; ४९, २; ५०, ३६; ८१, ५४; ९०, ३६. ५९. ९८; ९१, ३३; ९४, ४५; ९६, २८; १४. ६०, १४।

* **वैकर्तन** : १. ६७, १४७; १११, ३१; १९०, १०. १४; २४१, २०. २६; २५२, ३८; २५३, २; ४. ३०, १९; ३६, ६; ५४, १८–२१. २६. २८. २९. ३६; ५५, ५२; ६१, १; ६८, ४१; ५. ३०, ३०; ५५, ६३; ५७, १३; ६२, १७; ६३, ५; १२८, २४; १४४, ३१ १६८, ४; ६. १७, १३; ५२, २३; ७. १, ४९; ४, १५; ७, १८; १४, ३८; ४८, १७. ३१; ७४, १५; १२९, १२; १३१, ४८; १३२, ८; १३३, १७. १८. २०. ३६; १४०, ९; १४५, १२. ६५; १५९, ४९. ५१. ५२; १६५, ७; १६७, १. ७; १७४, ४; १७५, १. ७७. ११४; १७७, ९. १२. ३८; १७९, ९–११. १३. ५४; १८०, १९; १८१, ३०; १८२, ९; १९१, ४३; ८. ३, १०; ४, १५; ५, २. ६; ८, २२; ९, ७२. ८१. ८६. ८८; ११, १; २४, १. १६; ३१, १६. १८; ३२, २८. ६५; ३४, १६२; ३५,१३. ३०; ३७, ११; ४८, १४; ४९, ७; ५०, ३६; ५४, १६; ५६, १; ६२, ९; ७२, ४०; ८९ १. ६०; ९१, ५१; ९४, ३८; ९५, १; ९६, २०; ९. २७, १४; ५४, २६; ११. २१, १. २; २५, ३०; २६ ३६; १२. ५, १४।

* **वैवस्वत** , व० स्था०।

* **सावित्र, सावित्रिन्, सूर्यज, सूर्यपुत्र, सूर्यसम्भव,** व० स्था०।

* **सूत, सूतनन्दन, सूतपुत्र, सूतसूनु, सूतसुत, सूततनय, सूतात्मज,** व० स्था०।

* **सौति** , व० स्था०।

२. कर्ण , धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९५; ११७, ३)। धृतराष्ट्र के उन पुत्रों में से एक का नाम है जिन पर भीमसेन ने आक्रमण किया (६. ७७, ८)।

कर्ण-दिग्विजय—"जब दुर्योधन हस्तिनापुर चले आये तब भीष्म ने, जैसा कि वे पहले भी कह चुके थे, दुर्योधन से कहा : 'मैं इस राजा से प्रसन्न नहीं हुआ हूँ, और मैं चाहता हूँ कि तुम पाण्डवों से सन्धि कर लो।' भीष्म के ऐसा कहने पर दुर्योधन हँस पड़ा और शकुनि के साथ वहाँ से अन्यत्र चला गया। कर्ण तथा दुःशासन आदि ने भी दुर्योधन का अनुसरण किया। इन सबको वहाँ से प्रस्थान करते देखकर भीष्म लज्जित हुये और अपने आवास स्थान को चले गये। भीष्म के चले जाने पर दुर्योधन पुनः उसी स्थान पर लौट आया और अपने मन्त्रियों के साथ गुप्त मन्त्रणा करने लगा। कर्ण ने पाण्डवों की प्रशंसा तथा कौरवों की निन्दा करते रहने का भीष्म पर आरोप करके दुर्योधन के लिये दिग्विजय करने का प्रण किया। दुर्योधन ने कर्ण की बात को स्वीकार करते हुये शुभ लग्न में उसे दिग्विजय के लिये विदा किया। (३. २५३)।" "अपनी विशाल सेना के साथ कर्ण ने सर्वप्रथम राजा द्रुपद तथा उनके अनुयायियों को अपने अधीन करके उन सब से कर वसूल किया। तत्पश्चात् उसने उत्तर दिशा में राजा भगदत्त तथा हिमवत् प्रदेश के अन्य राजाओं को विजित किया। उसने पूर्व में अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, शुण्डिक, मिथिला, मगध, कर्कखण्ड, आवशीर, योध्य, और अहिच्छत्र आदि देशों को विजित किया। वत्स भूमि को जीतकर उसने केवला, मृत्तिकावती, मोहन, पत्तन, त्रिपुरी, तथा कोसला को विजित किया। दक्षिण में उसने रुक्मिन्, पाण्ड्यपर्वत, केरल, नील, वेणुदारिपुत्र, शिशुपाल, अवन्ति और वृष्णि आदि पर अधिकार किया। पश्चिम में उसने यवन, बर्बर आदि को पराजित करके उनसे कर लिया। इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, इन सब दिशाओं को

समस्त पृथिवी को विजित करके कर्ण म्लेच्छ, वनवासी, पर्वतीय, भद्र, रौहितक, आग्नेय, मालव, शशक, नग्नजित् आदि को अपने अधीन करते हुये हस्तिनापुर लौटा। उस समय कर्ण को आया हुआ जान कर पिता, माता, भ्राताओं और बन्धु-बान्धवों सहित दुर्योधन ने कर्ण की अत्यन्त प्रशंसा की (३. ३५४)।"

कर्णनिर्वाक, वानप्रस्थ धर्म का पालन करके स्वर्ग को प्राप्त हुये एक मुनि का नाम है (१२. २२४, १८)।

कर्णपर्वन्, महाभारत के ८ वें पर्व का नाम है—'कर्णपर्वसितैः पुष्पैः', (१. १, ९०)। 'कर्णपर्व ततः ज्ञेयम्', (१. २, ७१. २७०)। 'एकोनसप्ततिः प्रोक्ता अध्यायाः कर्णपर्वणि', (१. २, २७८)। "द्रोणाचार्य के मारे जाने के पश्चात् दुर्योधन आदि राजाओं का मन उद्विग्न हो गया और वे सब एक साथ आकर अश्वत्थामा के चारों ओर बैठ गये। अश्वत्थामा को सान्त्वना देने के पश्चात् रात्रि होने पर ये समस्त भूपाल अपने-अपने शिविरों में चले गये। अपने शिविरों में भी ये युद्ध-जन्य घोर विनाश का चिन्तन करते रहे जिसके कारण इन्हें नींद नहीं आई। कर्ण, दुःशासन, शकुनि आदि दुर्योधन के शिविर में ही रहे। प्रातःकाल होने पर शास्त्रोक्त विधि के अनुसार शौच, संध्यावंदन आदि कार्य पूर्ण करके कौरवों ने कर्ण को अपना सेनापति बनाया और युद्ध के लिये बाहर निकले। कर्ण ने दो दिन तक भीषण संग्राम किया परन्तु अन्त में अर्जुन के हाथ से मारा गया। तदनन्तर संजय ने हस्तिनापुर में जाकर धृतराष्ट्र को कर्ण की मृत्यु का समाचार दिया। जनमेजय ने कर्ण की मृत्यु के इस समाचार, और धृतराष्ट्र की दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के लिये कहा (८. १)।" "वैशम्पायन ने कहा कि कर्ण के मारे जाने पर अत्यन्त दुःखी होकर संजय उसी रात हस्तिनापुर जा पहुँचे। हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र और संजय का, युद्ध और उसके परिणामों से सम्बन्धित संवाद हुआ। धृतराष्ट्र ने संजय से पूरा वृत्तान्त कहने का निवेदन किया। (८. २)।" "संजय ने द्रोणाचार्य की मृत्यु के पश्चात् कौरव-सेना के हतोत्साहित और विषादग्रस्त हो जाने का वर्णन करते हुये बताया कि दुर्योधन ने अपनी सेना को उत्साहित करने का प्रयास और कर्ण को सेनापति बनाकर युद्ध का निश्चय किया। परन्तु दूसरे दिन अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया (८. ३)।" "युद्ध में कर्ण की मृत्यु का समाचार सुन कर धृतराष्ट्र व्याकुल हो पृथिवी पर गिर पड़े जिससे महल की स्त्रियों ने उद्विग्नता के कारण घोर विलाप आरम्भ किया और गान्धारी सहित सभी मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ीं। तदनन्तर विदुर ने जल छिड़क कर धृतराष्ट्र को होश में लाने की चेष्टा की। इस प्रकार धृतराष्ट्र और अन्तःपुर की स्त्रियों की मूर्च्छा दूर हुई। होश में आने पर धृतराष्ट्र ने सञ्जय से पूछा कि दुर्योधन अभी जीवित है अथवा नहीं। सञ्जय ने बताया कि कर्ण का वध तो हो ही गया, भीमसेन ने रणभूमि में दुःशासन को मार कर क्रोधपूर्वक उसके रक्त का पान भी कर लिया (८. ४)।" "धृतराष्ट्र के कहने पर सञ्जय ने उन योद्धाओं का नाम बताया जो युद्ध में मारे जा चुके थे तथा जो अब भी जीवित थे। इन सब वर्णनों को सुन कर धृतराष्ट्र पुनः मूर्च्छित हो गये (८. ५–७)।" "पुनः चेतना लौटने पर धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों तथा कर्ण आदि के वध पर विलाप किया (८. ८)।" "धृतराष्ट्र ने विलाप करते हुये कर्ण-वध का विस्तृत वृत्तान्त पूछा और सञ्जय ने उन्हें सान्त्वना दी (८. ९)।" युद्ध का सोलहवाँ दिन : "द्रोण की मृत्यु के पश्चात् कौरव-सेना ने जब पलायन किया तो दुर्योधन ने उसे पुनः उत्साहित करके बहुत देर तक पाण्डवों के साथ युद्ध किया। सन्ध्या होने पर कौरव-सेना अपने शिविरों में लौट आई। रात में दुर्योधन ने अपने परामर्शदाता राजाओं से भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में परामर्श किया। अश्वत्थामा ने कर्ण को सेनापति बनाने का प्रस्ताव किया जिसको सुन कर दुर्योधन ने कर्ण का इस पद के लिये अभिषेक किया। सेनापति का पद स्वीकार करते हुए कर्ण ने यह वचन दिया कि वह पाण्डवों का वध कर डालेगा। तदनन्तर शास्त्रीय विधियों के अनुसार विविध सामग्रियों द्वारा ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, तथा सम्मानित शूद्रों ने कर्ण का अभिषेक किया। अभिषेक सम्पन्न हो जाने पर कर्ण अपनी प्रभा तथा रूप से दूसरे सूर्य के समान प्रकाशित होने लगा। कर्ण ने सेनापति का पद प्राप्त करके समस्त कौरव-सेना को सूर्योदय के समय युद्ध के लिये तैयार होने की आज्ञा दी (८. १०)।" "सेनापति के रूप में कर्ण को देख कर कोई भी कौरव, भीष्म, द्रोण तथा अन्य महारथियों के मारे जाने के दुःख का अनुभव नहीं कर रहा था। कर्ण ने अपनी सेना को मकर व्यूह में व्यवस्थित किया। मकर व्यूह के मुख भाग में स्वयं कर्ण, नेत्रों के स्थान पर शकुनि और उलूक, शीर्ष स्थान में अश्वत्थामा, ग्रीवा भाग में दुर्योधन के समस्त भ्राता, कटि प्रदेश में विशाल सेना सहित स्वयं राजा दुर्योधन, बायें पैर के स्थान पर नारायणी सेना के गोपाल तथा कृतवर्मा, दाहिने पैर के स्थान में त्रिगर्तों और दाक्षिणात्यों सहित कृपाचार्य, इत्यादि खड़े हुये। युधिष्ठिर ने अर्जुन से भी अपनी सेना का व्यूह रचने का आग्रह किया जिस पर अर्जुन ने पाण्डव सेना को अर्द्ध चन्द्राकार व्यूह में व्यवस्थित किया। युधिष्ठिर ने कहा कि कौरवों की सेना में कर्ण अब भी विराजमान है, और उसे देवता, असुर, गन्धर्व, किन्नर, नाग तथा चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों के लोग भी मिल कर नहीं जीत सकते। पाण्डवों के चन्द्राकार व्यूह में बायें भाग में भीमसेन, दाहिने में धृष्टद्युम्न, मध्य में युधिष्ठिर और धनञ्जय, तथा युधिष्ठिर के पृष्ठ भाग में नकुल और सहदेव खड़े हुये। युधामन्यु और उत्तमौजा अर्जुन के चक्ररक्षक बने और इन लोगों ने एक पल के लिये भी उनका साथ नहीं छोड़ा। तदनन्तर दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ (८. ११)।" "दोनों ओर से भयंकर संहार हुआ जिसका विस्तृत वर्णन है। भीमसेन के नेतृत्व में पाण्डवों ने कौरव-सेना का भीषण संहार किया। कौरवों की ओर से क्षेमधूर्ति ने भीम का सामना किया परन्तु भीमसेन के हाथ मारा गया (८. १२)।" "दोनों ओर से घोर युद्ध हुआ : नकुल और कर्ण, भीमसेन और अश्वत्थामा, राजा चित्रसेन और श्रुतकर्मा, प्रतिविन्ध्य और चित्र, दुर्योधन और युधिष्ठिर, अर्जुन और संशप्तक, धृष्टद्युम्न और कृप, शिखण्डी और कृतवर्मा, श्रुतकीर्ति और शल्य, सहदेव और दुःशासन का भीषण युद्ध हुआ। सात्यकि ने विन्द और अनुविन्द का वध किया। इन दोनों का वध करके सात्यकि युधामन्यु के रथ पर चढ़ गये और केकयों की विशाल सेना का संहार करने लगे जिससे समस्त सेना रणक्षेत्र से भाग गई (८. १३)।" "द्रौपदी-पुत्र श्रुतकर्मा और प्रतिविन्ध्य ने क्रमशः चित्रसेन और चित्र का वध किया; कौरव सेना ने पलायन किया; अश्वत्थामा और भीम का भयंकर युद्ध हुआ (८. १४)।" "अश्वत्थामा और भीमसेन का अद्भुत युद्ध हुआ जिसमें देवता, सिद्ध, चारण और महर्षि दोनों की प्रशंसा करने लगे। युद्ध में दोनों ही एक दूसरे के प्रहार से मूर्च्छित हुये और उनके सारथिगण उन्हें युद्धभूमि से दूर हटा ले गये (८. १५)।" "अर्जुन का संशप्तकों के साथ भयंकर युद्ध हुआ जिसमें सिद्धों, देवर्षियों और चारणों ने अर्जुन के पराक्रम की सराहना की। संशप्तकों के साथ युद्ध करते हुये अर्जुन पर जब अश्वत्थामा ने भी आक्रमण किया तब अर्जुन (+कृष्ण) ने उसके साथ भी अद्भुत युद्ध किया (८. १६)।" "अश्वत्थामा को पराजित करके अर्जुन पुनः संशप्तक-सेना की ओर बढ़े। उस समय कलिङ्ग, अङ्ग, वङ्ग और निषाद देशों के वीरों ने गजसेना के साथ अर्जुन पर आक्रमण किया। परन्तु अर्जुन ने उनके हाथियों के कवच, चर्म, सूँड़, और ध्वजा आदि को काट डाला। तत्पश्चात् अर्जुन ने अश्वत्थामा को बाणों से ढक दिया परन्तु अश्वत्थामा ने अर्जुन तथा कृष्ण पर दस उत्तम नाराचों से प्रहार करके उन्हें आहत कर दिया। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से अश्वत्थामा का वध कर देने के लिये कहा। अर्जुन के प्रहार से विदीर्ण अश्वत्थामा को उसके अश्व रणभूमि से बहुत दूर भगा ले गये। अश्वत्थामा तदुपरान्त कर्ण की सेना में प्रविष्ट हो गया और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पुनः संशप्तकों की ओर बढ़े (८. १७)।" "मगधराज दण्डधार ने पाण्डव-सेना का भयंकर संहार आरम्भ किया। श्री कृष्ण के कहने पर अर्जुन ने गजारूढ़ दण्डधार के साथ युद्ध करते हुये उसका वध किया। तदनन्तर अर्जुन (+कृष्ण)

का दण्डधार के भ्राता दण्ड के साथ युद्ध हुआ जिसमें दण्ड मारा गया। दण्ड और दण्डधार का वध हो जाने पर उनकी सेना ने पलायन किया और अर्जुन एक बार फिर संशप्तकों की ओर बढ़े (८. १८) ।" "अर्जुन ने संशप्तकों का संहार किया। उग्रायुध के पुत्र ने अर्जुन के साथ युद्ध किया परन्तु अन्त में मारा गया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से शेष संशप्तक सेना का शीघ्र वध करके कर्ण की ओर बढ़ने के लिये कहा। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बुलाकर युद्धस्थल का दृश्य दिखाते हुये उनके पराक्रम की प्रशंसा की। पांड्य नरेश ने कौरव-सेना के साथ युद्ध किया। (८. १९)।" "पांड्य नरेश अपने को भीष्मादि योद्धाओं से भी श्रेष्ठ मानते थे, और इस समय वे कर्ण तथा पुलिन्दों इत्यादि की सेना का संहार कर रहे थे। अश्वत्थामा और पांड्य के बीच भयंकर युद्ध हुआ। उस समय अश्वत्थामा रूपी मेघ द्वारा की गई बाण-वर्षा को पांड्यराजरूपी वायु ने वायव्यास्त्र से छिन्न-भिन्न कर डाला। दूसरी ओर कर्ण ने पांडवों की गज सेना का संहार आरम्भ किया। अश्वत्थामा द्वारा रथहीन कर दिये जाने पर पांड्य एक महावत रहित हाथी पर बैठ गये और अश्वत्थामा के साथ युद्ध करते हुये उनके मुकुट को काट डाला। तदनन्तर अश्वत्थामा ने पाँच उत्तम बाण मार कर पांड्य के हाथी के छः टुकड़े कर दिये और फिर तीन बाण से राजा के भी चार टुकड़े कर डाले। इस प्रकार दोनों मिल कर दस भाग में विभक्त हो गये। जिस प्रकार पितरों को प्रिय चिताग्नि मृत शरीर को पाकर प्रज्वलित हो उसे भस्म करती है तथा अन्त में जल का अभिषेक पा शान्त हो जाती है, उसी प्रकार पांड्य नरेश, उनके घोड़े, हाथी और मनुष्यों के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें प्रचुर मात्रा में राक्षसों के लिये भोजन देकर अन्त में अश्वत्थामा के बाण सदा के लिये शान्त हो गये। उस समय दुर्योधन ने अपने सुहृदों सहित आकर अश्वत्थामा का पूजन किया (८. २०) ।" "कृष्ण ने अर्जुन से कहा : 'मैं युधिष्ठिर को नहीं देख रहा हूँ; युद्ध से हटे हुये अन्य पाण्डव भी नहीं दिखाई पड़ रहे हैं; कर्ण ने सृञ्जयों का संहार कर डाला।' कृष्ण की बात सुन कर अर्जुन ने अपने रथ को शीघ्र बढ़ाने के लिये कहा। उस समय भीमसेन के नेतृत्व में पाण्डवों, तथा कर्ण के नेतृत्व में कौरवों के बीच भयंकर युद्ध हो रहा था जिसमें कर्ण ने पाण्डवों, सृञ्जयों, और पाञ्चालों का भयंकर संहार किया। उस समय पाञ्चालराज धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र तथा नकुल, सहदेव और सात्यकि ने कर्ण पर आक्रमण किया; दोनों दलों के बीच भयंकर युद्ध हुआ (८. २१) ।" "धृष्टद्युम्न और अङ्ग, वङ्ग इत्यादि देशों के बीच युद्ध हुआ जिसमें पाण्डव तथा पाञ्चालगण धृष्टद्युम्न की सहायता के लिये उपस्थित हुये। नकुल इत्यादि अपने हाथियों पर प्रचुर मात्रा में अस्त्र-शस्त्र रख कर युद्ध में आये। सात्यकि ने अङ्गराज के हाथी और उसके महावत को मार डाला। पुण्ड्र के साथ युद्ध करते हुये सहदेव ने उसके हाथी का वध कर दिया और उसके बाद अङ्गराज की ओर बढ़े। अङ्गराज का नकुल ने वध कर दिया। अङ्गों + मेकलों इत्यादि की गजसेना ने नकुल पर आक्रमण किया; उस समय पाण्डव इत्यादि नकुल की रक्षा के लिये दौड़ पड़े। सहदेव ने आठ और नकुल ने अनेक हाथियों का वध किया। धृष्टद्युम्न इत्यादि ने अपने हाथियों पर प्रचुर मात्रा में आयुध रख लिये। शत्रुसेना के पलायन करने पर पाण्डव योद्धा कर्ण की ओर बढ़े (८. २२) ।" "सहदेव और दुःशासन के बीच भयंकर युद्ध हुआ जिसमें पराजित दुःशासन को उनका सारथि रणभूमि से दूर भगा ले गया। सहदेव ने दुर्योधन की सेना को भी पराजित किया (८. २३) ।" "कर्ण और नकुल के बीच भयंकर युद्ध हुआ। सोमकों और कुरुओं दोनों का भयंकर संहार हुआ। कर्ण से पराजित होकर नकुल पैदल ही भाग चले। कर्ण ने नकुल का पीछा किया और उनके गले में प्रत्यञ्चा सहित अपना धनुष डाल दिया, परन्तु कुन्ती को दिये गये अपने वचन का ध्यान करके कर्ण ने नकुल का वध नहीं किया। अत्यन्त लज्जित नकुल जाकर युधिष्ठिर के रथ में बैठ गये। मध्याह्न के समय कर्ण ने पाञ्चालों और सृञ्जयों की सेना का भयंकर संहार करते हुये उसका पीछा किया (८. २४) ।" "उलूक और युयुत्सु का युद्ध हुआ जिसमें पराजित होकर युयुत्सु ने पलायन किया और एक दूसरे रथ पर बैठ गये। उलूक ने पाञ्चालों और सृञ्जयों का वध किया। धृतराष्ट्र-पुत्र श्रुतकर्मा और शतानीक के बीच भयंकर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ही रथविहीन होकर युद्धभूमि से हट गये। श्रुतकर्मा विविंत्सु के और शतानीक प्रतिविन्ध्य के रथ पर बैठे। शकुनि और सुतसोम का भयंकर युद्ध हुआ जिसमें शकुनि ने सुतसोम को रथविहीन कर दिया। उस समय सुतसोम पैदल ही रथारूढ शकुनि के साथ युद्ध करने लगे जिस पर सिद्धों आदि ने उनकी अत्यन्त प्रशंसा की। तदनन्तर सुतसोम श्रुतकीर्ति के रथ पर चले गये। शकुनि ने पाण्डवसेना का भयंकर विनाश किया (८. २५) ।" "कृपाचार्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध हुआ जिसमें व्याकुल होकर धृष्टद्युम्न ने अपने सारथि से अपने को भीमसेन के पास ले चलने के लिये कहा। उस समय कृपाचार्य ने उसका पीछा किया। भोजराज, कृतवर्मा और शिखण्डी के बीच भी भयंकर युद्ध हुआ जिसमें मूर्च्छित शिखण्डी को उनका सारथि युद्धभूमि से दूर हटा ले गया। उस समय पाण्डवसेना ने भी पलायन किया (८. २६) ।" "अर्जुन और त्रिगर्तों इत्यादि का युद्ध हुआ। अर्जुन ने श्रुतञ्जय, सौश्रुति, और चन्द्रदेव का वध किया। राजा सत्यसेन ने श्रीकृष्ण को आहत किया परन्तु अर्जुन ने सत्यसेन का वध कर दिया। तदनन्तर अर्जुन ने चित्रवर्मन्, सहस्रों संशप्तकों और मित्रसेन का वध करते हुये सुशर्मन् को आहत किया। समस्त संशप्तकों ने एक साथ ही अर्जुन पर आक्रमण किया। उस समय अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र का आवाहन किया जिससे समस्त शत्रुसेना भाग खड़ी हुई (८. २७) ।" "दुर्योधन और युधिष्ठिर का युद्ध हुआ जिसमें दुर्योधन रथहीन हो गया। उस समय कर्ण आदि दुर्योधन की सहायता के लिये दौड़ पड़े; पाण्डु के पुत्रगण युधिष्ठिर को घेर कर खड़े हुये। पाञ्चालों और कौरवों का युद्ध हुआ। कर्ण ने पाञ्चालों का, अर्जुन ने त्रिगर्तों का, तथा भीमसेन ने कुरुओं तथा उनकी गजसेना का संहार किया। इस प्रकार सूर्यदेव के अपराह्नकाल में जाते-जाते कौरवों और पाण्डवों ने एक दूसरे का अत्यधिक विनाश किया (८. २८) ।" "दूसरे रथ पर बैठ कर दुर्योधन ने पुनः युधिष्ठिर से युद्ध किया। दुर्योधन आहत होकर मूर्च्छित हो गया परन्तु भीमसेन ने युधिष्ठिर को दुर्योधन का वध करने से रोका। अपराह्न में कृतवर्मा और भीमसेन का युद्ध हुआ (८. २९) ।" "कर्ण के नेतृत्व में कुरुओं तथा सात्यकि सहित पाण्डवसेना के बीच युद्ध हुआ। उस समय कर्ण की सहायता के लिये अनेक कौरव आये किन्तु द्रुपदकुमार के नेतृत्व में युद्ध कर रही पाण्डवसेना के सामने से भाग खड़े हुये। अपना दैनिक जप और भव की उपासना करने के पश्चात् अर्जुन और कृष्ण ने कौरवों का विनाश आरम्भ किया। दुर्योधन और अर्जुन के बीच युद्ध हुआ। अर्जुन और अश्वत्थामा + कृप इत्यादि का युद्ध हुआ। सात्यकि ने कर्ण के साथ युद्ध किया परन्तु पराजित हुये। तदनन्तर अर्जुन ने कर्ण के साथ युद्ध किया। कौरवसेना ने पलायन किया। सन्ध्या समय दोनों सेनायें अपने-अपने शिविर में चली आईं और युद्धभूमि में राक्षस तथा पिशाच जा पहुँचे (८. ३०) ।" "धृतराष्ट्र ने अर्जुन के पराक्रम की प्रशंसा की। दुःखी कौरवों ने एक दूसरे से परामर्श किया। कर्ण ने दुर्योधन को यह आश्वासन दिया कि वह प्रातःकाल अर्जुन का वध करेगा। प्रातःकाल कौरवों ने देखा कि युधिष्ठिर ने बृहस्पति और उशना के मतानुसार अपनी सेना का दुर्जय व्यूह बना रक्खा है। दुर्योधन तथा उसकी सेना का कर्ण के पराक्रम में पूर्ण विश्वास था। उस समय धृतराष्ट्र अत्यन्त दुखी हुये, परन्तु सञ्जय ने उन्हें उनके पापकर्मों का स्मरण दिलाते हुये, उनकी भर्त्सना की। प्रातःकाल कर्ण ने अर्जुन के वध की अपनी प्रतिज्ञा को दुर्योधन के सम्मुख पुनः दुहराते हुये कहा : 'मेरे तथा अर्जुन के पास दिव्यास्त्रों का समान बल है; अस्त्रकौशल तथा शारीरिक बल में अर्जुन मेरे समान नहीं हैं; मेरे धनुष का नाम विजय है जिसकी विश्वकर्मा ने इन्द्र के लिये रचना की थी। इन सब दृष्टियों से तो मैं अर्जुन से बड़ा हूँ परन्तु अर्जुन मुझसे इस-लिये बढ़ कर हैं कि श्रीकृष्ण उनके सारथि हैं, उनके पास अग्नि द्वारा प्रदत्त

दिव्य रथ है; उनके घोड़े मन के समान वेगशाली हैं, और उनकी ध्वजा पर अद्भुत वानर आरूढ़ है। श्रीकृष्ण जगत् के सृष्टा हैं और वे अर्जुन के रथ की रक्षा करते हैं।' कर्ण ने शल्य को (जो कृष्ण से श्रेष्ठ थे) अपना सारथि बनाने की इच्छा प्रगट की; दुर्योधन ने शल्य से इसके लिये प्रार्थना की (८. ३१)।" "दुर्योधन की प्रार्थना सुनकर शल्य ने इसका घोर विरोध किया परन्तु जब दुर्योधन ने उनको श्रीकृष्ण के समान बताते हुये उनकी प्रशंसा की तो उन्होंने इस आधार पर कर्ण का सारथि बनना स्वीकार किया कि वे जो चाहेंगे कर्ण के सम्मुख उसका उच्चारण करेंगे (८. ३२)।" "दुर्योधन ने शल्य को वह त्रिपुराख्यान सुनाया जिसका मार्कण्डेय मुनि ने धृतराष्ट्र को वर्णन किया था। (८. ३३)।" "दुर्योधन ने कहा कि देवताओं के आग्रह पर जब रुद्र दानवों के वध के लिये रथारूढ़ हुये तब स्वयं ब्रह्मा ने रुद्र का सारथि बनना स्वीकार किया। अतः उसने शल्य से भी कर्ण का सारथि बनने की प्रार्थना की। दुर्योधन ने कहा : 'कर्ण युद्धक्षेत्र में रुद्र के समान हैं और आप भी नीति में ब्रह्मा के तुल्य हैं।' तदनन्तर दुर्योधन ने परशुराम की एक कथा का वर्णन किया जिसे एक धर्मज्ञ ब्राह्मण ने धृतराष्ट्र को सुनाया था। दुर्योधन ने कहा कि, 'स्वयं परशुराम ने कर्ण को धनुर्वेद की शिक्षा दी है और मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि कर्ण सूतकुल में उत्पन्न हुआ है। मैं कर्ण को क्षत्रिय कुल में उत्पन्न देवपुत्र मानता हूँ, जिसे, मेरा विश्वास है कि उसकी माता ने अपने गुप्त रहस्य को छिपाने के लिये शिशु-अवस्था में सूतकुल में छोड़ दिया होगा।' (८. ३४)।" "उक्त उपाख्यानों को सुनाते हुये दुर्योधन ने कहा : 'सर्वलोक-पितामह भगवान ब्रह्म ने सारथि का कार्य किया जब कि रुद्र रथी थे, क्योंकि सारथि उसे ही बनना चाहिये जो रथी से श्रेष्ठ हो। जिस प्रकार देवताओं ने ब्रह्मा का वरण किया था उसी प्रकार हम लोगों ने कर्ण से भी अधिक बलवान होने के कारण आपका सारथि-कार्य के लिये वरण किया है।' शल्य ने कहा : 'मैंने भी देवश्रेष्ठ ब्रह्मा और महादेव के इन अलौकिक उपख्यानों को सुना है, और श्रीकृष्ण को भी यह विदित होगा जिसे जानकर ही वे अर्जुन के सारथि बने हैं। यदि अर्जुन का वध हो गया तो श्रीकृष्ण स्वयं ही युद्ध करेंगे।' दुर्योधन ने कर्ण की प्रशंसा की, और शल्य को (नाम की व्युत्पत्ति बताते हुये) कृष्ण से श्रेष्ठ बताया। शल्य ने अपने प्रण और शर्त को पुनः दुहराया। दुर्योधन ने कर्ण का आलिङ्गन किया और शल्य की स्वीकृति मिल जाने पर अत्यन्त प्रसन्न हुये। दुर्योधन का आलिङ्गन करते हुये शल्य ने कहा कि वे उन शब्दों के लिये क्षमा चाहेंगे जो वे कर्ण के भले के लिये कहेंगे। शल्य ने कर्ण से कहा : 'मैं तुम्हें विश्वास दिलाने के लिये जो अपनी आत्म प्रशंसा कर रहा हूँ उसका कारण यह है कि मैं सावधानी, अश्वसंचालन, ज्ञान, विद्या, चिकित्सा आदि सद्गुणों की दृष्टि से इन्द्र के सारथि-कर्म में नियुक्त मातलि के समान हूँ। मैं तुम्हारा सारथि अवश्य बनूँगा। (८. ३५)।" "दुर्योधन ने कर्ण से कहा : 'मद्रराज शल्य तुम्हारा सारथ्य करेंगे। देवराज इन्द्र के सारथि मातलि के समान ये श्रीकृष्ण से भी श्रेष्ठ-संचालक हैं।' प्रातःकाल होने पर दुर्योधन ने एक बार पुनः शल्य से कर्ण का सारथि बनने के लिये उनकी स्वीकृति ली। तदनन्तर कर्ण ने पुरोहितों द्वारा पहले से ही अभिषिक्त अपने रथ की विधिपूर्वक पूजा और प्रदक्षिणा की और फिर शल्य के साथ उस पर आरूढ हुआ। उस समय दुर्योधन ने पुनः कर्ण को सम्बोधित किया। कर्ण ने शल्य से कहा : 'महाबाहो ! मेरे घोड़ों को बढाईये जिससे मैं अर्जुन आदि का वध कर सकूँ।' शल्य ने पाण्डवों की प्रशंसा करके कर्ण में भय उत्पन्न करने का प्रयास किया (८. ३६)।" 'कर्ण और कौरवयोद्धाओं के प्रस्थान करते ही अनेक अपशकुन प्रगट हुये। फिर भी, कर्ण तथा कौरव-योद्धाओं के उत्साह में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कर्ण ने अपने सम्बन्ध में अहंकारोक्तियाँ कीं और शल्य ने उसका उपहास करते हुये अर्जुन की प्रशंसा की। तदनन्तर श्वेत घोड़ों से युक्त और शल्य द्वारा संचालित कर्ण का वह विशाल रथ अन्धकार का विनाश करने वाले सूर्यदेव के समान शत्रुओं का संहार करता हुआ आगे बढ़ा। व्याघ्र-चर्म से आच्छादित और श्वेत अश्वों से युक्त उस रथ के द्वारा कर्ण अत्यन्त प्रसन्नता के साथ प्रस्थित हुआ। उसने सामने ही पाण्डवों की सेना को खड़ी देख बड़ी उतावली के साथ धनञ्जय का पता पूछा (८. ३७)।" "पाण्डव-सैनिकों को देखकर कर्ण प्रत्येक से यह पूछने और कहने लगा : 'जो आज मुझे अर्जुन को दिखा देगा उसे अभीष्ट धन दूँगा।' दुर्योधन तथा उसके सैनिक अत्यन्त प्रसन्न हुये। उस समय शल्य ने कर्ण का उपहास करते हुये हँसकर उससे कहा (८. ३८)।" "शल्य ने कहा : 'तुम अवश्य ही अर्जुन को देखोगे, और इसके लिये तुम्हें कोई विशेष प्रयास करना नहीं होगा। यदि तुम कल्याण प्राप्त करना चाहते हो तो व्यूह रचनापूर्वक खड़े हुये समस्त सैनिकों के साथ सुरक्षित होकर अर्जुन से युद्ध करो।' कर्ण ने अर्जुन के साथ युद्ध करने के अपने निश्चय को पुनः दुहराया, और शल्य ने एक लम्बा भाषण देते हुये कर्ण का अपमान किया (८. ३९)।" "कर्ण ने शल्य को फटकारते हुये मद्रदेश के निवासियों की निन्दा की और शल्य को मार डालने की धमकी दी (८. ४०)।" "कर्ण को उत्तर देते हुये शल्य ने अपनी तथा अपने सारथ्य-कर्म की प्रशंसा करते हुये एक हंस और कौये (हंसकाकीयोपाख्यान, देखिये व० स्था०) का उपाख्यान सुना कर कहा : 'पूर्वकाल में जिस प्रकार सबका जूठन खाकर पले उस कौये ने अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों को नगण्य समझा था, उसी प्रकार धृतराष्ट्र के पुत्रों के जूठन पर पले हुये तुम अपने समान तथा अपने से श्रेष्ठ पुरुषों का भी अपमान कर रहे हो।' (८. ४१)।" "कर्ण ने कहा कि वह कृष्ण और अर्जुन से भलीभाँति परिचित होते हुये भी उन लोगों से भयभीत नहीं है। फिर भी, उसने बताया कि परशुराम के शाप से वह अत्यधिक चिन्तित है। उसने कहा : 'कुछ समय पूर्व दिव्यास्त्र प्राप्त करने की इच्छा से मैं ब्राह्मण का वेष बनाकर परशुराम के पास रहने लगा था। उस समय जब मेरे ऊरुओं पर अपना सर रखकर परशुराम सो रहे थे तो इन्द्र ने एक कीड़े के भयंकर शरीर में प्रवेश करके मेरे ऊरु को काट कर उसमें बड़ा घाव कर दिया। ऊरु में घाव हो जाने के कारण मेरे शरीर से गाढ़े रक्त का महान् प्रवाह बह चला परन्तु गुरु के जागने के भय से मैं तनिक भी विचलित नहीं हुआ। जागने पर परशुराम ने मेरे धैर्य के कारण यह जान लिया कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। इस पर क्रुद्ध होकर उन्होंने मुझे शाप दिया कि मैं अपनी मृत्यु के समय को छोड़ कर अन्य अवसरों पर ब्रह्मास्त्र का स्मरण नहीं कर सकूँगा। मैं उस अस्त्र का स्मरण नहीं कर सकता किन्तु इसके विपरीत भी अर्जुन का वध करूँगा।' कर्ण ने शल्य पर पाण्डवों का गुप्त हितैषी होने का संदेह किया। उसने बताया कि यदि उसके रथ का पहिया पृथिवी में न धँस गया तो वह ब्रह्मास्त्र का अवश्य प्रहार करेगा जिससे अर्जुन किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। कर्ण ने बताया कि वह दण्डधारी यमराज, पाशधारी वरुण, गदाधारी इन्द्र अथवा अन्य किसी की शत्रु से भयभीत नहीं हो सकता। उसने कहा : 'एक समय शस्त्रों के अभ्यास के लिये घूमते हुये अपने विजय नामक धनुष से मैंने अनजान में ही एक ब्राह्मण को होमधेनु के बछड़े को मार डाला, जिस पर क्रुद्ध होकर ब्राह्मण ने मुझे यह शाप दिया कि जिस समय युद्धक्षेत्र में युद्ध करते हुये मैं अत्यन्त संकट में होऊँगा उसी समय मेरे रथ का पहिया पृथिवी में धँस जायगा। उस समय मैंने ब्राह्मण को एक सहस्र गायें और छः सौ बैल देना चाहा परन्तु उसका कृपाप्रसाद प्राप्त न कर सका। इत्यादि।' (८. ४२)।" "कर्ण ने आत्मप्रशंसापूर्वक शल्य को फटकारते हुये कहा कि उसमें भय का संचार करना व्यर्थ है (८. ४३)।" "कर्ण ने कहा कि धृतराष्ट्र के समीप आकर ब्राह्मण विभिन्न प्राचीन काल के देशों और राजाओं के सम्बन्ध में जो अनेक प्रकार के विवरण देते थे वे इस प्रकार हैं : एक वृद्ध ब्राह्मण ने वाहीक और मद्र देश के निवासियों की निन्दा करते हुये कहा था कि जो प्रदेश हिमालय, गंगा, सरस्वती, यमुना और कुरुक्षेत्र की सीमा के बाहर हैं और सिन्धु तथा उसकी सहायक नदियों के बीच स्थित हैं उन्हें वाहीक कहते हैं और वहाँ के निवासियों को धर्म-बाह्य और अपवित्र होने के कारण त्याग देना चाहिये। कर्ण ने कहा : 'मैं

अत्यन्त गुप्त कार्यवश कुछ दिनों तक वाहीक देश में रह चुका हूँ और इसलिये वहाँ के निवासियों के आचार-व्यवहार के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानता हूँ। वहाँ शाकल नामक एक नगर और आपगा नामक एक नदी है जहाँ अत्यन्त निन्दित चरित्र वाले जरतिक नामक वाहीक निवास करते हैं (एक ऐसे वाहीक का उदाहरण दिया गया है जो कुरुजांगल देश में निवास करता था, और एक ऐसी राक्षस स्त्री का जो शाकल नगर में रहती थी)। शतद्रु इत्यादि नदियों का क्षेत्र, जो हिमालय की सीमा से बाहर है, आरट्ट नाम से विख्यात और वहाँ के लोगों का धर्म-कर्म नष्ट हो गया है। देवता, पितर, और ब्राह्मण ऐसे पतित लोगों से कोई भी द्रव्य ग्रहण नहीं करते जो शूद्रों द्वारा अन्य कन्याओं से उत्पन्न होते हैं। ये लोग उन वाहीकों से भी कुछ ग्रहण नहीं करते जो विधर्मी, अपवित्र तथा यज्ञादि कर्मों से रहित होते हैं।' कर्ण ने तीन अपवित्र स्थानों का उल्लेख किया। उसने बताया कि विपाशा नदी में बहि और हीक नामक दो पिशाच निवास करते थे और वाहीक उन्हीं दो पिशाचों की सन्तान हैं। ब्रह्मा ने इनकी सृष्टि नहीं की है। कारस्कार, माहिषक इत्यादि देशों के लोगों का भी, आचार-व्यवहार दूषित होने के कारण, त्याग कर देना चाहिये। किसी राक्षसी ने तीर्थयात्री के घर में एक रात रहकर उससे कहा था कि जहाँ वेद-विरुद्ध आचरण करने वाले नीच ब्राह्मण निवास करते हैं वही आरट्ट नामक देश हैं और वहाँ के जल का नाम वाहीक है। इन अधम ब्राह्मणों को न तो वेद-ज्ञान है न वे यज्ञादि ही करते हैं। प्रस्थल, मद्र, गान्धार, आरट्ट, खश, वसाति, सिन्धु तथा सौवीर नामक देश अत्यन्त निन्दित हैं (८. ४४)।" "वाहीकों (गान्धारों और मद्रकों) की हीनता का वर्णन करते हुये कर्ण ने बताया कि आरट्टों को एक सती स्त्री ने शाप दिया था। कौरव इत्यादि सनातन धर्म को जानते हैं। पञ्चनद निवासियों की ब्रह्मा जी ने सत्ययुग तक में निन्दा की थी। कर्ण ने कल्माषपाद नामक एक राक्षस द्वारा राक्षसों के उपद्रव से त्रस्त अथवा विष के प्रभाव से मृत लोगों के निवारण के लिये बताये गये कथन का उल्लेख किया। कर्ण ने पाञ्चालों इत्यादि, तथा अङ्ग इत्यादि का भी वर्णन किया। शल्य ने अङ्गों की निन्दा की। दुर्योधन ने कर्ण तथा शल्य का बीच-बचाव करते हुये दोनों को शान्त किया (८. ४५)।" युद्ध का सत्तरहवाँ दिन : "धृष्टद्युम्न के नेतृत्व में व्यूह-बद्ध पार्थों की सेना को देखकर कर्ण स्वयं भी आगे बढ़ा। उसने युधिष्ठिर को घायल करके दाहिने कर दिया। धृतराष्ट्र द्वारा अपने पक्ष की सेना के सम्बन्ध में पूछने पर सञ्जय ने कौरवों की व्यूह रचना का वर्णन करते हुये उसके दाहिने, वायें, मध्य आदि भागों तथा उन की रक्षा करने वाले योद्धाओं की गणना कराई। उन्होंने बताया कि अपने पुत्रों सहित कर्ण व्यूह के मुख भाग में, दुःशासन पृष्ठभाग में, और उनके पीछे मद्रकों और केकयों से रक्षित भ्राताओं सहित दुर्योधन स्थित हैं। उनके पीछे अश्वत्थामा तथा गजारूढ़ म्लेच्छ सैनिक हैं। सञ्जय ने बताया कि कौरवों का व्यूह बृहस्पति के अनुसार निर्मित है। कर्ण की सेना को देख कर युधिष्ठिर ने अर्जुन को कर्ण के, भीमसेन को दुर्योधन के, नकुल को वृषसेन के, सहदेव को शकुनि के, शतानीक को दुःशासन के, सात्यकि को कृतवर्मा के, पांड्य को अश्वत्थामा के, द्रौपदेयों सहित शिखण्डी को शेष धार्तराष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध करने का आदेश देते हुये स्वयं कृपाचार्य से युद्ध करने का निश्चय किया। शल्य ने कर्ण को अर्जुन का रथ दिखाते हुये उसका वर्णन किया। साथ ही उन्होंने उस समय प्रगट होनेवाले अपशकुनों का भी वर्णन किया। शल्य ने कर्ण से अर्जुन के संशप्तकों के वध का वर्णन करते हुये कहा : 'अर्जुन को कोई भी विजित नहीं कर सकता, अतः तुम उनके वध का विचार त्याग दो।' शल्य और कर्ण जिस समय इस प्रकार की बातें कर ही रहे थे, उसी समय कौरवों और पाण्डवों की दोनों सेनायें गंगा और यमुना के समान एक दूसरे से जा मिलीं (८. ४६)।" "धृतराष्ट्र ने सञ्जय से अर्जुन, संशप्तकों, और कर्ण के विषय में पूछा। सञ्जय ने कहा कि अर्जुन ने धृष्टद्युम्न के नेतृत्व में अपनी सेना की व्यूह-रचना की है और धृष्टद्युम्न के साथ ही और द्रौपदेय भी हैं। अर्जुन संशप्तकों से युद्ध कर रहे हैं। पांचाल इत्यादि कुरुओं से, कृप इत्यादि कोशलों से संघर्षरत हैं। वह युद्ध क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के शरीर, पाप, और प्राणों का विनाश करने वाला, संहारकारी, धर्मसंगत, स्वर्गदायक तथा यश की वृद्धि करने वाला है। उस युद्ध में कर्ण अपने तीक्ष्ण वाणों से युधिष्ठिर को त्रस्त करने लगा। इस प्रकार मनुष्यों, अश्वों और हाथियों का विनाश करने वाला कौरवों तथा सृञ्जयों का युद्ध देवासुर संग्राम के समान भयंकर था (८. ४७)।" "धृतराष्ट्र ने कर्ण और युधिष्ठिर के युद्ध के सम्बन्ध में पूछा। सञ्जय ने कहा : कर्ण ने पाञ्चालों (प्रभद्रकों और चेदियों) पर आक्रमण करके घोर संहार किया। अन्य के साथ-साथ उसने पाँच पाञ्चाल भानुदेवों का भी वध किया। कर्ण के रथ के पहियों की रक्षा उसके दो पुत्र, सुषेण और चित्रसेन, कर रहे थे। कर्ण के ज्येष्ठ पुत्र वृषसेन पृष्ठ-रक्षक थे। धृष्टद्युम्न इत्यादि तथा कर्ण+कर्ण के पुत्रों का युद्ध हुआ। सुषेण और भीमसेन का युद्ध हुआ। भीमसेन ने कर्ण के पुत्र भानुसेन का वध कर दिया। भीमसेन और कृपाचार्य, भीमसेन और सुषेण+कर्ण, सुषेण और नकुल+सहदेव के बीच युद्ध हुये। सात्यकि और वृषसेन का युद्ध हुआ जिसमें रथहीन होने पर वृषसेन दुःशासन के रथ पर बैठ कर युद्धभूमि से अलग चला गया और पुनः दूसरे रथ पर बैठ कर द्रौपदेयों से युद्ध करने लगा। युयुधान और दुःशासन का, और कर्ण और धृष्टद्युम्न का युद्ध हुआ। कर्ण ने अपने शत्रुओं को पराजित किया और उसके बाद युधिष्ठिर तथा चेदियों से युद्ध करने लगा (८. ४८)।" "कर्ण ने द्रविणों के साथ युद्ध करके उन्हें पराजित किया। कर्ण और युधिष्ठिर का भीषण युद्ध हुआ जिसमें युधिष्ठिर ने क्रोधपूर्वक कर्ण को सम्बोधित करते हुये कहा : 'आज तुम्हारे पास जितना बल हो, पराक्रम हो उसे दिखाओ। आज मैं तुम्हारे युद्ध के हौसले को मिटा दूँगा।' युधिष्ठिर के वार से कर्ण को मूर्च्छा आ गई किन्तु मूर्च्छा दूर होते ही उसने युधिष्ठिर के रथचक्र के रक्षकों, पाञ्चाल राजकुमार चन्द्रदेव और दण्डधार का वध कर दिया। युधिष्ठिर ने सुषेण और सत्यसेन पर प्रहार किया। सात्यकि और कर्ण का युद्ध हुआ जिसमें उसने ब्रह्मास्त्र का आवाहन किया। कर्ण ने युधिष्ठिर को रथहीन कर दिया जिससे वे सफेद रंग और काली पूँछवाले घोड़ों से युक्त एक अन्य रथ पर बैठ कर रणभूमि से विमुख होकर अपने शिविर की ओर चले आये। उस समय कर्ण ने युधिष्ठिर का पीछा किया और अपने हाथ से उनके कन्धे का स्पर्श करके उन्हें बलपूर्वक पकड़ने का प्रयास करने लगा। उसी समय उसे कुन्ती को दिये हुए वचन का स्मरण हो आया, और शल्य ने भी उससे युधिष्ठिर को हाथ न लगाने के लिये कहा। फिर भी, कर्ण ने युधिष्ठिर का अपमान करके ही जाने दिया। चेदियों की सेना ने भी युधिष्ठिर का अनुगमन किया। कर्ण ने पाण्डव-सेना का भयंकर संहार किया। युधिष्ठिर ने भीम और सात्यकि के नेतृत्व में कर्ण के विरुद्ध अपनी सेना को अग्रसर होने का आदेश दिया। कौरवसेना ने पराजित होकर पलायन किया (८. ४९)।" "दुर्योधन ने भागती हुई सेना को रोकने का निरर्थक प्रयत्न किया। शकुनि+कर्ण ने भीमसेन के साथ युद्ध किया और भीमसेन ने सात्यकि तथा धृष्टद्युम्न को युधिष्ठिर की रक्षा करने को कहा। शल्य ने कर्ण को भीम को दिखाया। कर्ण ने शल्य का उत्तर दिया। युद्ध में कर्ण मूर्च्छित हो गया जिसके कारण शल्य उसे युद्धभूमि से बाहर हटा ले गये (८. ५०)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय ने बताया : दुर्योधन के कहने पर अनेक कौरव-योद्धाओं ने भीमसेन पर आक्रमण किया। भीम ने छः धृतराष्ट्र पुत्रों का वध किया। धृतराष्ट्र के अन्य पुत्रों ने पलायन किया। कर्ण और भीमसेन का घोर युद्ध हुआ जिसमें कर्ण ने भीम को रथहीन कर दिया। रथहीन भीम ने गदा हाथ में लेकर अनेक हाथियों और मनुष्यों का वध किया। भीम ने शकुनि के बावन हाथियों तथा ३,००० अश्वारोहियों का संहार किया। तदनन्तर एक अन्य रथ पर बैठ कर भीमसेन कर्ण के साथ युद्ध के लिये बढ़े। कर्ण और युधिष्ठिर का युद्ध हुआ जिसमें युधिष्ठिर का सारथि-रहित रथ रणभूमि में इधर-उधर घूमने लगा और कर्ण भी वाणों की वर्षा करता हुआ उनका पीछा करने करने लगा। युधिष्ठिर पर कर्ण को आक्रमण करते देख भीमसेन

ने कर्ण के साथ युद्ध आरम्भ किया; सात्यकि ने भी कर्ण से युद्ध किया। शकुनि, कर्ण, और कृपाचार्य इत्यादि को देख कर कौरव-सैनिक फिर लौट आये और दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध होने लगा (८. ५१)।" "दोनों सेनाओं का घोर युद्ध और कौरव-सेना का व्यथित होना (८. ५२)।" "अर्जुन और संशप्तकों का, तथा अर्जुन (+ कृष्ण) और सुशर्मन् का युद्ध हुआ। अर्जुन ने नागास्त्र का बारम्बार प्रयोग करके संशप्तकों के पैर बाँध दिये; सुशर्मन् ने सौपर्णास्त्र का आवाहन किया जिससे अनेक गरुड़ पक्षी प्रगट होकर नागों का भक्षण करने लगे। सुशर्मन् के प्रहार से आहत होकर अर्जुन रथ के पृष्ठ भाग में बैठ गये। चेतना लौटने पर अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र का आवाहन किया; घोर युद्ध होने लगा (८. ५३)।" "कृतवर्मा इत्यादि ने भयंकर युद्ध आरम्भ किया। कृपाचार्य और शिखण्डी (+ सञ्जयों) का युद्ध हुआ; शिखण्डिन् रथहीन होकर निष्क्रिय हो गये। धृष्टद्युम्न कृपाचार्य के विरुद्ध युद्ध के लिये बढ़े। कृतवर्मा और धृष्टद्युम्न का युद्ध हुआ। कृपाचार्य के रथ की ओर बढ़ते हुये युधिष्ठिर और अश्वत्थामा का युद्ध हुआ। दुर्योधन और नकुल तथा सहदेव का, कर्ण और भीमसेन इत्यादि का, चित्रकेतु के पुत्र सुकेतु और कृपाचार्य का, युद्ध हुआ। शिखण्डी पराजित होकर हट गये। कृपाचार्य ने सुकेतु का वध किया और उसके सैनिक भी भाग गये। कृतवर्मा और धृष्टद्युम्न का युद्ध हुआ जिसमें कृतवर्मा पराजित हुये (८. ५४)।" "अश्वत्थामा और युधिष्ठिर इत्यादि के युद्ध का वर्णन; प्रतिविन्ध्य और अश्वत्थामा इत्यादि का युद्ध हुआ। सात्यकि के सारथि का वध हो गया। अश्वत्थामा को छोड़ कर युधिष्ठिर दूसरी ओर चले गये; अश्वत्थामा ने भी वह स्थान छोड़ दिया (८. ५५)।" "कर्ण और भीमसेन का युद्ध हुआ जिसमें कर्ण से बचते हुये उन्होंने कौरव-सेना पर आक्रमण किया। अर्जुन और संशप्तकों, भीमसेन और कौरवों, कर्ण और पाञ्चालों, दुर्योधन और नकुल तथा सहदेव, नकुल तथा सहदेव को बचाने के लिये धृष्टद्युम्न और दुर्योधन के बीच युद्ध हुआ। दुर्योधन के भ्राताओं ने दुर्योधन की रक्षा की और दण्डधार उसे अपने रथ पर बैठा कर दूर हटा ले गये। सात्यकि को पराजित करके दुर्योधन की रक्षा करने के लिये उत्सुक कर्ण और धृष्टद्युम्न + सात्यकि (जो कर्ण का पीछा कर रहे थे) + पाञ्चालों का युद्ध हुआ। मध्याह्न के समय दोनों दल की सेनाओं के बीच भयंकर संग्राम प्रारम्भ हुआ। कर्ण और व्याघ्रकेतु, युधिष्ठिर इत्यादि और कर्ण के युद्धों का वर्णन। भीमसेन ने कौरवों तथा वाह्लीकों का वध किया। कर्ण ने भीषण युद्ध आरम्भ किया जिसे देख कर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कर्ण के पराक्रम की प्रशंसा की। संशप्तकों को पराजित करके अर्जुन और श्रीकृष्ण कौरव सेना के बीच घुस गये। दुर्योधन ने एक बार पुनः संशप्तकों को अर्जुन के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उत्साहित किया। १०,००० क्षत्रियों का वध करने के पश्चात् अर्जुन संशप्तकों की सेना के दूसरे छोर पर पहुँच गये जिसकी रक्षा काम्बोज-गण कर रहे थे। अर्जुन ने काम्बोज के सुदक्षिण के भ्राता का वध किया। अन्य काम्बोज सैनिक भी मारे गये। अश्वत्थामा और अर्जुन (+ कृष्ण) का युद्ध हुआ जिसको देखने के लिये सिद्ध और चारण वहाँ उपस्थित हुये। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से अश्वत्थामा को न छोड़ने के लिये कहा; मूर्च्छित अश्वत्थामा को उनका सारथि युद्ध-भूमि से बाहर हटा ले गया। अर्जुन ने कौरव सेना का वध किया। अर्जुन ने संशप्तकों का, भीमसेन ने कुरुओं का, और कर्ण ने पाञ्चालों का संहार किया। अपने घावों के कष्ट से व्यथित युधिष्ठिर युद्धस्थल से एक कोस पीछे हट गये (८. ५६)।" "दुर्योधन ने कुरुसेना के नायकों से वार्तालाप किया। अश्वत्थामा ने प्रतिज्ञा की कि वे धृष्टद्युम्न का वध किये बिना अपना कवच नहीं उतारेंगे : तदनन्तर दोनों पक्षों में भीषण युद्ध होने लगा जिसे देखने के लिये देवताओं तथा अप्सराओं सहित समस्त प्राणी वहाँ एकत्र हो गये। उस समय अप्सराओं ने दिव्य पुष्पहारों, रत्नों, और विविध सुगन्धित पदार्थों की वर्षा की (८. ५७)।" "अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि पाण्डव-सेना पलायन कर रही है, कर्ण उनके योद्धाओं का संहार कर रहा है और युधिष्ठिर भी कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। उस समय दिन का तृतीयांश अभी शेष था। अर्जुन, युधिष्ठिर (+ सृञ्जयों) की ओर बढ़े। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से युद्धभूमि का वर्णन किया। भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ (८. ५८)।" "कर्ण के नेतृत्व में कौरवों तथा युधिष्ठिर के नेतृत्व में पार्थों और सृञ्जयों का युद्ध हुआ। संशप्तकों की थोड़ी सी सेना ही बच रही। धृष्टद्युम्न + पाण्डव तथा उनके पक्ष के समस्त राजाओं का कर्ण के साथ युद्ध हुआ। सात्यकि और कर्ण, अश्वत्थामा और पाञ्चालों इत्यादि के बीच हुआ। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न को आहत कर दिया परन्तु अर्जुन ने धृष्टद्युम्न की रक्षा करके अश्वत्थामा के साथ युद्ध किया। सहदेव अपने रथ पर बैठा कर धृष्टद्युम्न को पुनः युद्धभूमि में लाये। अश्वत्थामा अपने रथ पर ही मूर्च्छित हो गये जिससे उनका सारथि उन्हें युद्धभूमि से दूर हटा ले गया। अर्जुन संशप्तकों की ओर बढ़े (८. ५९)।" "कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि दुर्योधन के नेतृत्व में अनेक धार्तराष्ट्र युधिष्ठिर का पीछा कर रहे हैं, जब कि पाञ्चाल-गण युधिष्ठिर की रक्षा के लिये जा रहे हैं। श्रीकृष्ण ने कहा कि यद्यपि सात्यकि और भीम ने कौरवों को रोक रक्खा है तथापि युधिष्ठिर महान् संकट में हैं क्योंकि दुर्योधन इत्यादि पर्वतों को तोड़ देने में भी समर्थ हैं। श्रीकृष्ण ने कहा : 'युधिष्ठिर उपवास करने के कारण अत्यन्त दुर्बल हो गये हैं; वे ब्राह्मबल में स्थित तथा क्षात्रबल प्रगट करने में समर्थ नहीं हैं। कौरव महारथी, स्थूणाकर्ण, इन्द्रजाल, पाशुपत तथा अन्य प्रकार के शस्त्र समूहों से युधिष्ठिर को आच्छादित कर रहे हैं। कर्ण ने नकुल-सहदेव इत्यादि के देखते-देखते ही युधिष्ठिर के ध्वज को काट डाला। पाण्डव-सेना का विनाश करते हुये कर्ण भीमसेन की ओर दौड़ रहा है। पाञ्चालों का वध करके दुर्योधन से रक्षित कर्ण जब तुम्हारे पास आये तब तुम अवश्य मार डालना।' पाञ्चालों का उन्मूलन करने की इच्छा से कर्ण धृष्टद्युम्न की ओर बढ़ा। कृष्ण की शंका के विपरीत भी युधिष्ठिर जीवित थे। भीम (+ सृञ्जय और सात्यकि) तथा पाञ्चाल वीर अब पलायन कर रहे कौरवों को विजित कर रहे थे। कृपाचार्य और कर्ण इत्यादि दुर्योधन के नेतृत्व में पाञ्चालों को रोकने का प्रयास कर रहे थे। युधिष्ठिर के विरुद्ध युद्ध के लिये बढ़ रहे गजारोही निषाद राजकुमार का भीम ने वध किया। भीम ने दुर्योधन की तीन अक्षौहिणी सेना को रोक दिया। अर्जुन ने अपने बचे हुये शत्रुओं को भी नष्ट कर दिया। संशप्तकों ने पलायन किया (८. ६०)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय ने कहा : कर्ण इत्यादि और भीमसेन + पाण्डव इत्यादि, शिखण्डी और कर्ण, धृष्टद्युम्न और दुःशासन, नकुल और वृषसेन, युधिष्ठिर और चित्रसेन, सहदेव और उलूक, सात्यकि और शकुनि, द्रौपदेयों और कौरवों, अश्वत्थामा और अर्जुन, कृपाचार्य और युधामन्यु, तथा कृतवर्मा और उत्तमौजा के बीच युद्ध हुये। कर्ण द्वारा शिखण्डी रथ विहीन होकर पराजित हुये; धृष्टद्युम्न तथा अनेक पाञ्चालों का दुःशासन के साथ युद्ध हुआ जिस पर सिद्धों और अप्सराओं ने आश्चर्य प्रगट किया। कर्ण ने धार्तराष्ट्रों की पलायन करने वाली सेना को पुनः सन्नद्ध करने का प्रयास किया। कर्ण के चले जाने पर नकुल ने कौरवों पर आक्रमण किया। कर्ण का पुत्र नकुल के साथ युद्ध बचाते हुये अपने पिता के रथचक्रों की रक्षा के लिये चला गया। सहदेव द्वारा सारथि-विहीन कर दिये जाने पर उलूक ने त्रिगर्तों की सेना में शरण ली। शकुनि को उलूक अपने रथ पर बैठा कर सात्यकि से दूर हटा ले गये जिसके पश्चात् सात्यकि ने कौरव-सेना का संहार किया। दुर्योधन और भीमसेन का युद्ध हुआ जिसमें रथ और धनुष से रहित होकर दुर्योधन ने पलायन किया। सम्पूर्ण कौरव-सेना ने भीमसेन पर आक्रमण किया परन्तु छिन्न-भिन्न हो गई। युधामन्यु ने अपने रथ को स्वयं हाँकते हुये पलायन किया। उत्तमौजा को उनका सारथि दूर हटा ले गया। सम्पूर्ण कौरव सेना ने भीमसेन पर आक्रमण किया। दुःशासन और शकुनि की गजसेना के साथ भीमसेन का युद्ध हुआ जिसमें भीमसेन ने दुर्योधन को पराजित करके अपने दिव्यास्त्रों के आवाहन द्वारा सम्पूर्ण गजसेना को छिन्न-भिन्न कर दिया (८. ६१)।" "कृष्ण के साथ रथ पर आरूढ़ अर्जुन वहाँ आ पहुंचे। युधिष्ठिर को बन्दी बनाने की इच्छा से अपनी आधी सेना को लेकर दुर्योधन ने युधिष्ठिर को चारों ओर से घेर लिया। शत्रुओं की इस दुर्भावना को जान कर एक अक्षौहिणी सेना

के साथ पाण्डवगण युधिष्ठिर की रक्षा के लिये दौड़ पड़े। कर्ण ने उस समय पाण्डव-सेना को रोक दिया। सहदेव और दुर्योधन का युद्ध हुआ। कर्ण ने युधिष्ठिर और धृष्टद्युम्न के सैनिकों का संहार करके उन्हें पलायन करने के लिये विवश किया। कर्ण और युधिष्ठिर का युद्ध हुआ जिसमें युधिष्ठिर ने अपने सारथि को युद्धभूमि से दूर हट चलने का आदेश दिया। दुर्योधन और धार्तराष्ट्रों ने युधिष्ठिर का पीछा किया परन्तु १,७०० कैकेय सैनिकों तथा पाञ्चालों ने उन्हें रोक दिया। दुर्योधन और भीम के बीच युद्ध हुआ (८. ६२)।" "कर्ण से युद्ध में पराजित होकर कैकेय सैनिकों ने भीमसेन की शरण ली। नकुल और सहदेव द्वारा अपने रथचक्रों की रक्षा में युधिष्ठिर जब धीरे-धीरे पाण्डव शिविर की ओर जा रहे थे तब कर्ण ने उन पर आक्रमण किया। नकुल तथा सहदेव और कर्ण के बीच युद्ध हुआ जिसमें कर्ण ने युधिष्ठिर तथा नकुल के दोनों घोड़ों को मार डाला। फलस्वरूप युधिष्ठिर तथा नकुल सहदेव के रथ पर बैठ गये। इन दोनों के बचाने की दृष्टि से शल्य ने कर्ण को अर्जुन के साथ युद्ध करने के लिये ललकारा, परन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। शल्य ने एक बार फिर कर्ण को अर्जुन का स्मरण दिलाते हुये बताया कि भीमसेन के साथ युद्ध कर रहे दुर्योधन के लिये जीवन का संकट उपस्थित है। इस पर युधिष्ठिर, नकुल तथा सहदेव को छोड़ कर कर्ण दुर्योधन की रक्षा के लिये दौड़ पड़ा। लज्जित युधिष्ठिर सहदेव के रथ पर बैठ कर अपने शिविर में लौट आये और वहाँ से उन्होंने नकुल तथा सहदेव को भीमसेन की सहायता के लिये भेजा (८. ६३)।" "अश्वत्थामा और अर्जुन का युद्ध हुआ जिसमें अश्वत्थामा ने ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग किया परन्तु अर्जुन ने भी इन्द्र द्वारा रचित एक अन्य शक्तिशाली अस्त्र से उसका निराकरण कर दिया। सारथि का वध हो जाने पर अश्वत्थामा ने अपने रथ को स्वयं हाँकते हुये युद्ध किया परन्तु पराजित होकर युद्धभूमि से हट गया। पाँण्डवों ने बार-बार कौरव-सेना पर आक्रमण किया जिससे भयभीत होकर धार्तराष्ट्रों के देखते-देखते ही उनकी सम्पूर्ण सेना भाग खड़ी हुई। दुर्योधन ने कर्ण से अपनी सेना को पुनः सन्नद्ध कराया। भार्गवास्त्र के प्रयोग से कर्ण ने पाञ्चालों और चेदियों का संहार आरम्भ किया। कर्ण के इस भयंकर संहार से त्रस्त सञ्जय-गण बार-बार अर्जुन और वासुदेव को पुकारने लगे। उस समय अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कर्ण के पराक्रम का वर्णन किया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युधिष्ठिर से मिलने का स्मरण दिलाया (८. ६४)।" अर्जुन ने भीमसेन से मिलकर उन्हें युधिष्ठिर का समाचार प्राप्त करने के लिये कहा, परन्तु युद्धभूमि से हट जाने पर कायर कहे जाने के भय से भीम ने अर्जुन से स्वयं जाकर युधिष्ठिर का समाचार प्राप्त करने के लिये कहा। संशप्तकों के रोकने का भीमसेन द्वारा आश्वासन पाकर अर्जुन स्वयं युधिष्ठिर से मिलने के लिये पाण्डव-शिविर की ओर गये। वहाँ जाकर अर्जुन और श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को शय्या पर पड़े देखा। उनकी उपस्थिति से कृष्ण ने कर्ण को मृत समझा (८. ६५)।" "कर्ण का वध हुआ जान कर युधिष्ठिर ने भी श्रीकृष्ण और अर्जुन को बधाई दी (८. ६६)।" "अर्जुन ने युधिष्ठिर से अपने शिविर में आने का प्रयोजन बताते हुये यह शपथ ली कि वे कर्ण तथा समस्त कौरव-सेना का उसी दिन वध कर डालेंगे (८. ६७)।" "युधिष्ठिर ने यह सोचकर कि भीम को अकेले युद्धभूमि में छोड़ कर अर्जुन ने पलायन किया है, अर्जुन की तीव्र भर्त्सना और अनेक बार उनसे गाण्डीव धनुष दूसरे को दे देने के लिये कहा (८. ६८)।" "अपनी शपथ के कारण कि जो कोई उनसे गाण्डीव धनुष दूसरे को दे देने के लिये कहेगा उसका वे वध कर डालेंगे, अर्जुन ने युधिष्ठिर का मस्तक काट देने के लिये अपनी तलवार निकाल ली। उस समय श्रीकृष्ण ने बलाक और कौशिक की कथा का उदाहरण देते हुये अर्जुन को सत्य की प्रकृति का उपदेश दिया। अर्जुन ने कहा कि वे अपने प्रण का अवश्य पालन करेंगे। इस पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि युधिष्ठिर को 'तू' कह कर अपमानजनक सम्बोधन मात्र में ही यह मान लिया जायगा कि उन्होंने युधिष्ठिर का वध कर दिया (८. ६९)।" "भगवान श्रीकृष्ण के कहने पर अर्जुन ने एक लम्बे भाषण द्वारा युधिष्ठिर का अपमान किया किन्तु उसके बाद अत्यन्त खिन्न होकर अपना सर काट देने की ही इच्छा प्रगट की। कृष्ण ने अर्जुन को आत्म-प्रशंसा करने के लिये परामर्श देते हुये बताया कि आत्म-प्रशंसा आत्म-विनाश के ही तुल्य होती है। अर्जुन ने आत्म-प्रशंसा करने के बाद युधिष्ठिर से क्षमा माँगी और कर्ण का वध तथा भीम की रक्षा करने का प्रण करके उन्हें सन्तुष्ट किया। युधिष्ठिर ने दुःख प्रगट करते हुये कहा कि भीमसेन ही राजा होने के योग्य हैं। श्रीकृष्ण ने उन्हें सान्त्वना देते हुये अर्जुन तथा स्वयं अपनी ओर से क्षमा माँगी (८. ७०)।" "अर्जुन को श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया; अर्जुन और युधिष्ठिर एक दूसरे से प्रसन्नतापूर्वक मिले; अर्जुन ने कर्ण-वध की प्रतिज्ञा करके युधिष्ठिर का आशीर्वाद प्राप्त किया (८. ७१)।" "युधिष्ठिर से विदा लेकर अर्जुन और श्रीकृष्ण कर्ण के वध के लिये रणभूमि की ओर अग्रसर हुये। दारुक ने उनके रथ को अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित कर दिया था। मार्ग में अनेक शुभ शकुन प्रगट हुये। श्री कृष्ण ने अर्जुन को प्रोत्साहित किया (८. ७२)।" "भीष्म और द्रोण के पराक्रम का वर्णन करते हुये अर्जुन के बल की प्रशंसा करके श्री कृष्ण ने कर्ण और दुर्योधन के अन्याय का स्मरण दिलाया तथा अर्जुन को कर्ण-वध के लिये उत्तेजित किया (८. ७३)।" "श्रीकृष्ण का भाषण सुनकर अर्जुन ने वीरोचित उद्गार प्रगट किये (८. ७४)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय ने युद्ध का वर्णन किया: अर्जुन ने अनेक योद्धाओं का वध किया। कृपाचार्य और शिखण्डी, सात्यकि और दुर्योधन, श्रुतश्रवा और अश्वत्थामा, युधामन्यु और चित्रसेन, उत्तमौजा और कर्णपुत्र सुषेण, सहदेव और गान्धारराज शकुनि, नकुल-पुत्र शतानीक और कर्ण-पुत्र वृषसेन, नकुल और कृतवर्मा, पाञ्चालराज धृष्टद्युम्न और कर्ण, संशप्तकों सहित दुःशासन और भीम, के बीच भीषण युद्ध हुये। उत्तमौजा ने सुषेण का वध किया। कर्ण और उत्तमौजा का युद्ध हुआ जिसमें उत्तमौजा के रथाश्व मारे गये और वे शिखण्डी के रथ पर बैठ गये। उत्तमौजा ने कृपाचार्य को भी रथ-विहीन कर दिया था अतः शिखण्डी ने उन पर वार नहीं किया। अश्वत्थामा ने कृपाचार्य की रक्षा की। भीम ने अपने बाणों से कौरव-सेना को सन्तप्त किया (८. ७५)।" "भरत-सैनिक भीम के सामने से पलायन करने लगे। भीम ने अपने सारथि, विशोक, से कहा कि वे युधिष्ठिर और अर्जुन के लिये चिन्तित हैं। भीम के कहने पर विशोक ने उनके रथ में रक्खे हुये अस्त्र-शस्त्रों के परिणाम का अनुमान करके बताया। भीम ने एक बार पुनः अपने सारथि, विशोक, से कहा कि वे उसी दिन या तो समस्त कौरव-सेना का वध कर देंगे अथवा स्वयं मृत्यु को प्राप्त होंगे। विशोक ने भीम को बताया कि अर्जुन युद्धभूमि में लौट रहे हैं। विशोक से अर्जुन के आगमन का समाचार सुन कर भीम अत्यन्त प्रसन्न हुये और इस शुभ संवाद को सुनाने के कारण उन्होंने विशोक को चौदह ग्राम, सौ दासियाँ तथा बीस रथ पारितोषिक के रूप में देने का वचन दिया (८. ७६)।" "अर्जुन और भीम ने मिल कर कौरव-सेना पर आक्रमण किया। अपनी सेना का भीषण संहार होते देख कर दुर्योधन ने सैनिकों से भीम का वध कर देने के लिये कहा। दुर्योधन के कहने पर अपने भ्राताओं सहित शकुनि ने भीम से युद्ध किया परन्तु पराजित हो गया। दुर्योधनादि धार्तराष्ट्र सेना सहित भाग कर कर्ण के आश्रय में चले गये (८. ७७)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय ने कहा: अपराह्न में कर्ण ने सोमकों पर और भीम ने पाञ्चालों पर आक्रमण किया। शिखण्डी इत्यादि का कर्ण के साथ युद्ध हुआ जिसमें कर्ण विजयी हुआ। चेदियों और मत्स्यों को भी कर्ण ने रोक दिया। देवता, सिद्ध और चारण कर्ण के पराक्रम से अत्यन्त प्रसन्न हुये। पलायन करती हुई पाण्डव-सेना पर धार्तराष्ट्र धनुर्धरों ने आक्रमण किया। दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने अनेक पाण्डव-योद्धाओं का वध किया। इसी प्रकार पाण्डव-योद्धाओं और धृष्टद्युम्न ने कौरवों का भी संहार किया (८. ७८)।" "अर्जुन ने कौरव-सेना का विनाश करके खून की नदी बहा दी और अपना रथ कर्ण के पास ले चलने के लिये श्रीकृष्ण से कहा। श्रीकृष्ण और अर्जुन को आते देख शल्य ने कर्ण को सम्बोधित किया और कर्ण ने उनका उत्तर दिया। कर्ण के रहने पर दुर्योधन इत्यादि ने अर्जुन तक पहुंचने

के लिये कर्ण को मार्ग देते हुये अर्जुन पर आक्रमण कर दिया। अर्जुन ने कौरव सेना का विध्वंस किया। अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने मिल कर कृतवर्मा और अर्जुन से युद्ध किया परन्तु पराजित हुये। शिखण्डी इत्यादि भी अर्जुन की सहायता के लिये बढ़े। सृञ्जयों और कौरवों ने एक दूसरे का भीषण संहार किया। (८. ७९)।" "कर्ण को बचाकर अर्जुन भीम की रक्षा के लिये बढ़े। कौरवसेना भाग खड़ी हुई। अर्जुन ने भीम को बताया कि युधिष्ठिर सुरक्षित हैं। तदनन्तर अर्जुन युद्ध करते हुये आगे बढ़े। दुःशासन से छोटे दस धार्तराष्ट्रों ने अर्जुन को घेर लिया परन्तु अर्जुन ने उन सबका वध कर दिया (८. ८०)।" "कर्ण के रथ को ओर बढ़ते समय अर्जुन पर नब्बे संशप्तक वीरों ने आक्रमण किया परन्तु अर्जुन ने उन सबको मार गिराया। अनेक कौरव वीरों ने अर्जुन पर आक्रमण किया, परन्तु उन्होंने उन सबका विनाश कर दिया। तदनन्तर दुर्योधन के नेतृत्व में १,३०० गजारोही म्लेच्छों ने अर्जुन पर आक्रमण किया परन्तु अर्जुन ने उनका भीषण संहार किया। कौरव-सेना के बचे हुये सैनिकों को छोड़ कर भीमसेन अर्जुन की सहायतार्थ बढ़े और अर्जुन के पीछे-पीछे चलने लगे। कर्ण के सैनिकों ने कर्ण का साथ छोड़ दिया। परन्तु तदनन्तर धार्तराष्ट्र भाग कर कर्ण के रथ के पास आ गये। कर्ण ने पाञ्चालों पर आक्रमण किया (८. ८१)।" "कर्ण ने जनमेजय के सारथि और रथाश्वों को गिरा दिया और सुतसोम तथा शतानीक के धनुष को भी काट दिया। कर्ण और धृष्टद्युम्न का युद्ध हुआ। कैकेय सैनिकों के सेनापति उग्रकर्मा और कर्ण-पुत्र प्रसेन का युद्ध हुआ जिसमें कर्ण ने उग्रकर्मा का वध कर दिया। सात्यकि ने कर्ण-पुत्र प्रसेन का वध किया। सात्यकि+शिखण्डी और कर्ण का युद्ध हुआ। कर्ण ने धृष्टद्युम्न के पुत्र का वध करके सुतसोम पर आक्रमण किया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्ण का वध करने के लिये कहा। भीमसेन को साथ लेकर अर्जुन आगे बढ़े। उत्तमौजों और कर्ण का युद्ध हुआ जिसमें कर्ण ने उन सबको पराजित किया। सात्यकि और दुर्योधन+कृप, तथा दुःशासन और भीम का युद्ध हुआ (८. ८२)।" "कर्ण इत्यादि को सम्बोधित करते हुये भीम ने दुःशासन का वध करके दुर्योधन और कर्ण के देखते-देखते ही उसका रक्तपान किया। कर्ण के भ्राता चित्रसेन तथा अन्य उपस्थित जन भीम को एक राक्षस जान कर वहाँ से भाग खड़े हुये। युधामन्यु ने चित्रसेन का पीछा करके उसका वध कर दिया। कर्ण और नकुल का युद्ध हुआ। दुःशासन का रक्तपान करते हुये भीमसेन ने कृष्ण और अर्जुन को सम्बोधित करते हुये शीघ्र दुर्योधन का वध करने की शपथ ली (८. ८३)।" "दस धार्तराष्ट्रों ने भीमसेन पर आक्रमण किया परन्तु उन्होंने उन सबका वध कर दिया। उस समय कर्ण अत्यन्त भयभीत हुआ परन्तु शल्य ने उसे प्रोत्साहित किया। कर्ण-पुत्र वृषसेन और भीम+नकुल का युद्ध हुआ जिसमें वृषसेन ने नकुल के रथ के घोड़ों का वध कर दिया। रथहीन नकुल अर्जुन के देखते-देखते भीमसेन के रथ पर आरूढ़ हो गये। भीम और नकुल के कहने पर अर्जुन वृषसेन की ओर बढ़े (८. ८४)।" "हिमवत् क्षेत्र के गजारोही कुलिन्द वीर और ग्यारह योद्धाओं ने कृतवर्मा के साथ युद्ध किया। कृपाचार्य ने कुलिन्दराज के पुत्रों का वध किया। भोजराज कृतवर्मा और शतानीक का युद्ध हुआ। अश्वत्थामा ने तीन हाथियों का वध किया। कुलिन्दराज के छोटे भाई से भी जो छोटा था उसने दुर्योधन के साथ युद्ध किया जिसमें कुलिन्द राजकुमार का हाथी मारा गया। उस कुलिन्द राजकुमार ने दूसरे हाथी पर बैठ कर क्राथ पर आक्रमण किया परन्तु क्राथ ने उस हाथी का भी वध कर दिया। इसी प्रकार कौरव वीरों और कुलिन्द राजकुमारों में भीषण युद्ध हुआ जिसमें कुलिन्दों और उनके हाथियों का संहार हुआ। कर्ण के पुत्र वृषसेन और शतानीक+अर्जुन का युद्ध हुआ। उस समय अर्जुन ने कर्ण तथा दुर्योधन और अश्वत्थामा सहित समस्त कौरव-वीरों को सम्बोधित करते हुये कहा कि वे सर्वप्रथम वृषसेन का वध करेंगे और उसके पश्चात् कर्ण का। अर्जुन ने वृषसेन का वध किया। कर्ण और अर्जुन (+कृष्ण) का युद्ध हुआ (८. ८५)।" "कृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधित किया और अर्जुन ने भी उनका उत्तर दिया (८. ८६)।" "कर्ण और अर्जुन का द्वैरथ युद्ध में समागम हुआ। दोनों की जय-पराजय के सम्बन्ध में संसार के समस्त प्राणियों ने संशय प्रगट किया। देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग और राक्षस, इन सबने कर्ण और अर्जुन के युद्ध के विषय में पक्ष और विपक्ष ग्रहण कर लिया। आकाश की अधिष्ठात्री देवी कर्ण के और भूदेवी अर्जुन के पक्ष में हो गईं। पर्वत, समुद्र, नदियाँ, वृक्ष तथा ओषधियाँ अर्जुन के, और असुर, यातुधान तथा गुह्यक कर्ण के पक्ष में आ गये। मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़, पक्षी, रत्न, निधियाँ, उपवेद, उपनिषद, रहस्य, संग्रह, इतिहास-पुराण सहित सम्पूर्ण वेद, वासुकि, मणिक, सम्पूर्ण सर्पगण, कद्रू की वंशजों सहित समस्त सन्तान, विषैले नाग, ऐरावत, सौरभेय और वैशालेय सर्प, ये सब अर्जुन का, तथा छोटे-छोटे सर्प कर्ण का साथ देने लगे। विभिन्न प्रकार के मृग, सिंह तथा व्याघ्र, वसु, मरुद्गण, साध्य, रुद्र, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, इन्द्र, सोम, पवन और दशों दिशायें अर्जुन के, तथा अन्य आदित्यगण, वैश्य, शूद्र, सूत तथा संकर जाति के लोग कर्ण के पक्ष में हो गये। गणों और सेवकों सहित देवता, पितर, यम, कुबेर और वरुण अर्जुन के, तथा प्रेत, पिशाच, मांसभोजी पशु-पक्षी तथा जलजन्तु कर्ण के पक्ष में हो गये। देवर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि, तुम्बुर आदि गन्धर्व अर्जुन के, तथा अन्तकाल में विपरीत भाव का आश्रय लेने वाले पुरुष में मृत्यु की घड़ी निकट आने पर जो भाव प्रगट होते हैं वे तथा रिष्ट कर्ण के ओर हो गये। इत्यादि। इन्द्र ने कहा कि अर्जुन विजयी होंगे। सूर्य ने कहा कि कर्ण अर्जुन को पराजित करेगा। देवताओं ने ब्रह्मा से कहा कि अर्जुन और कर्ण दोनों को समान रूप से सफलता मिलनी चाहिये जब कि इन्द्र ने अर्जुन और कृष्ण के विजय की कामना की। ब्रह्मा और ईशान ने यह बताते हुये कि अर्जुन की विजय निश्चित है, कहा : 'पुरुषप्रवर वैकर्तन कर्ण, द्रोणाचार्य और भीष्म के साथ वसुओं और मरुद्गणों के लोक में जाय अथवा स्वर्ग लोक प्राप्त करें'। ब्रह्मा और महादेव के ऐसा कहने पर इन्द्र ने सम्पूर्ण प्राणियों को बुलाकर उन दोनों की आज्ञा सुनाई। अर्जुन की ध्वजा का महान् वेगशाली वानर अपने स्थान से उछल कर कर्ण की ध्वजा पर बैठे हाथी की साकल पर प्रहार करने लगा। श्रीकृष्ण और शल्य ने एक दूसरे की ओर तीक्ष्ण नेत्रों के दृष्टिपात किया। अर्जुन और कर्ण ने भी ऐसा ही किया। कर्ण ने शल्य से हँसते हुये पूछा : 'यदि आज रणभूमि में अर्जुन मुझे मार डालें तो तुम क्या करोगे।' शल्य ने कहा : 'तब मैं एक मात्र रथ के द्वारा श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों का वध कर डालूँगा।' अर्जुन ने भी उसी प्रकार श्रीकृष्ण से पूछा, परन्तु श्रीकृष्ण ने बताया कि कर्ण अर्जुन का वध नहीं कर सकता, और यदि ऐसा हो गया हो संसार उलट जायगा और वे स्वयं अपनी दोनों भुजाओं से युद्धभूमि में कर्ण तथा शल्य को मसल डालेंगे। अर्जुन ने कहा कि उसी दिन कर्ण की पत्नियाँ विधवा हो जायेंगी (७. ८७)।" "उस समय आकाश में देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, अप्सरायें, ब्रह्मर्षि और गरुड, सभी एकत्र थे। युद्ध आरम्भ हुआ। दुर्योधन इत्यादि ने अर्जुन (+कृष्ण) पर आक्रमण किया परन्तु अर्जुन ने सबको पराजित कर दिया। उस समय आकाश से पुष्प-वर्षा हुई। अश्वत्थामा ने दुर्योधन को संधि करने का परामर्श दिया परन्तु निष्फल हुआ। दुर्योधन ने अपने सैनिकों को युद्ध करने का आदेश दिया (८. ८८)।" "अर्जुन और कर्ण के युद्ध का वर्णन : अर्जुन ने आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया जिसका कर्ण ने वारुणास्त्र द्वारा मेघ उत्पन्न करके निराकरण किया। अर्जुन ने वायव्यास्त्र द्वारा उन मेघों को विसर्जित कर दिया। अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र तथा कर्ण ने भार्गवास्त्र का प्रयोग किया। पाञ्चालों और सोमकों ने कर्ण पर आक्रमण किया परन्तु उसने उन सबका वध कर दिया। कर्ण द्वारा अर्जुन के अस्त्रों को नष्ट हुआ देख कर भीम ने तथा श्री कृष्ण ने भी अर्जुन से अपना पराक्रम दिखाने के लिये कहा। अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया परन्तु कर्ण ने उसको भी नष्ट कर दिया। भीम के कहने पर अर्जुन ने पुनः एक अन्य दिव्यास्त्र का प्रयोग किया जिससे शत्रु-सेना का भीषण संहार आरम्भ हुआ। कर्ण और भीमसेन इत्यादि का युद्ध हुआ। अर्जुन ने कर्ण

और शल्य पर प्रहार तथा सभापति का वध किया। कौरवों ने कर्ण से अर्जुन का वध करने के लिये कहा। कर्ण और अर्जुन के इस युद्ध को देखने के लिये युधिष्ठिर भी युद्धस्थल में पधारे। युद्ध में अर्जुन के धनुष की प्रत्यञ्चा सहसा टूट गई। इस अवसर का लाभ उठा कर कर्ण ने अर्जुन पर सौ वाण मारे। कर्ण ने श्रीकृष्ण को मार डालने की इच्छा से उनके शरीर में प्रज्वलित सर्पों के समान पाँच वाण घुसा दिये। वे वेगशाली वाण कृष्ण के कवच को विदीर्ण करके वेगपूर्वक धरती में समा गये और पाताल-गंगा में स्नान करके पुनः कर्ण की ओर जाने लगे परन्तु अर्जुन ने उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। ये पाँच वाण नहीं, तक्षक पुत्र अश्वसेन के पक्षपाती पाँच विशाल सर्प थे। तदनन्तर अर्जुन ने वाण-समूहों का एक ऐसा जाल बिछाया जिससे सूर्य की प्रभा और कर्ण का रथ कुहरे से ढके हुये आकाश की भांति अदृश्य हो गया। दुर्योधन के द्वारा प्रोत्साहित २,००० सैनिकों का भी अर्जुन ने वध कर दिया। अर्जुन के पराक्रम से भयभीत होकर समस्त कौरव-योद्धा कर्ण को अकेले छोड़ कर युद्धभूमि से भाग गये (८. ८९)।"

"अर्जुन कर्ण का वध करने के लिये जिन-जिन अस्त्रों का प्रयोग करते थे कर्ण उन्हें काट देता था। दोनों ही योद्धा एक दूसरे पर घोर वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय घमासान युद्ध में पाताल-निवासी अश्वसेन नामक नाग, जो अर्जुन के साथ वैर रखता था और खाण्डवदाह के समय जीवित बच कर पृथिवी के भीतर घुस गया था, वाण का रूप धारण करके कर्ण के तरकस में प्रवेश कर गया। कर्ण और अर्जुन के युद्ध के समय आकाश में खड़ी हुई अप्सराओं ने दिव्य चँवर डुला कर दोनों को चन्दन के जल से सिंचित किया। तदुपरान्त सूर्य और इन्द्र ने अपने-अपने कर कमलों से क्रमशः कर्ण और अर्जुन के मुख पोंछे। अर्जुन के प्रहार से संतप्त कर्ण ने सर्पमुख वाण का संधान किया। कर्ण ने अर्जुन को मारने के लिये दीर्घकाल से सोने के तरकस में चन्दन के चूर्ण में लिप्त इस वाण को सुरक्षित रक्खा था। उसने धनुष पर चढाकर इस वाण से ही अर्जुन पर प्रहार किया। यह प्रज्वलित वाण ऐरावत कुल में उत्पन्न अश्वसेन ही था। धनुष पर उस नाग का प्रयोग होते ही सैकड़ों भयंकर उल्कायें गिरने लगीं और इन्द्रसहित सम्पूर्ण लोकपाल हा-हा कार कर उठे। कर्ण को यह पता नहीं था कि उसके इस वाण में अपने योगवल से अश्वसेन नामक नाग ही प्रवेश कर गया है। उस समय शल्य ने कर्ण को उस वाण का पुनः सन्धान करने के लिये कहा जिस पर क्रुद्ध होकर कर्ण ने उत्तर दिया: 'कर्ण दो वार वाण का सन्धान नहीं करता। मेरे जैसे वीर कपटपूर्वक युद्ध नहीं करते।' उस प्रज्वलित वाण को बड़े वेग से आते देख कृष्ण ने अर्जुन के रथको अपने पैर से दबाकर पृथिवी में थोड़ा धँसा दिया जिससे वह वाण अर्जुन के उस किरीट में जा लगा जिसे इन्द्र ने उन्हें प्रदान किया था। कर्ण के उस वाण ने अर्जुन के मस्तक से उस किरीट को नीचे गिरा दिया जो सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि के समान कान्तिमान् तथा ब्रह्मा जी द्वारा तपस्या और प्रयत्नपूर्वक देवराज इन्द्र के लिये निर्मित था। अश्वसेन ने कर्ण के सम्मुख उपस्थित होकर पुनः उसी वाण का प्रहार करने के लिए कहा परन्तु कर्ण ने दूसरे की सहायता लेना तथा एक ही वाण को दो बार चलाना अस्वीकार कर दिया। कर्ण की बात सुनकर उस सर्प ने स्वयं ही अर्जुन पर प्रहार किया। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा: 'खाण्डव वन में जब तुम अग्नि देव को तृप्त कर रहे थे तो उस समय यही सर्प अपनी माता के मुख में रक्षित होकर आकाश में उड़ गया था। तुमने उस समय केवल एक ही सर्प जानकर इसकी माता का वध कर दिया था। उसी वैर का स्मरण करके यह आज तुम्हारे ऊपर आनुमण कर रहा है।' अर्जुन ने उस सर्प को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये और श्रीकृष्ण ने अपनी दोनों भुजाओं से अर्जुन के धँसे रथ को पुनः ऊपर कर दिया। एक बार जब अर्जुन के वाण से मूर्च्छित होकर कर्ण निष्क्रिय हो गया तो सत्पुरुषों के व्रत में स्थित रहनेवाले अर्जुन ने कर्ण को मारने की इच्छा नहीं की। उस समय श्रीकृष्ण ने कहा: 'विद्वान पुरुष दुर्बल से दुर्बल शत्रु को भी नष्ट करने के लिये किसी अवसर की प्रतीक्षा नहीं करते।' जब कर्ण के वध का समय आ पहुँचा तब काल अदृश्य रह कर ब्राह्मण के क्रोध से कर्ण के वध की सूचना देता हुआ इस प्रकार बोला: 'अब भूमि तुम्हारे रथ के पहियों को निगलना ही चाहती है।' उस समय परशुराम द्वारा प्रदत्त भार्गवास्त्र कर्ण को विस्मृत हो गया और पृथिवी भी उसके रथ के पहियों को ग्रसने लगी। उस अवस्था में संकटों को सहन न कर सकने के कारण कर्ण खिन्न हो उठा और धर्म की निन्दा करने लगा। कर्ण ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया और अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र का जिसे कर्ण ने काट दिया। उत्तम अस्त्र छोड़ने के लिये कृष्ण द्वारा सम्बोधित किये जाने पर अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। कर्ण ने एक के बाद एक करके अर्जुन के धनुष की बारह प्रत्यञ्चाओं को काट दिया परन्तु उसे यह मालूम नहीं था कि अर्जुन के धनुष में सौ प्रत्यञ्चायें हैं। कृष्ण द्वारा उच्च अस्त्रों का प्रयोग करने के लिये कहे जाने पर अर्जुन ने रौद्रास्त्र के साथ संयुक्त कर के एक अन्य दिव्यास्त्र का मन्त्रों से अभिषेक किया। इसी समय पृथिवी ने कर्ण के रथ के एक पहिये को ग्रस लिया। शीघ्रतापूर्वक रथ से उतर कर कर्ण ने अपनी भुजाओं से पकड़ कर धँसी हुई पहिया को ऊपर उठाने का प्रयास किया। कर्ण ने रथ को ऊपर उठाते समय ऐसा झटका दिया कि सप्तद्वीपों से युक्त, पर्वत, वन और काननों सहित यह समस्त पृथिवी चक्र को ग्रसित किये हुये ही चार आंगुल ऊपर उठ गई। पहिया फस जाने के कारण क्रोधाश्रु बहाते हुये कर्ण ने अर्जुन से उस समय तक रुकने के लिये कहा जब तक वह पहिये को बाहर न निकाल ले (८-९०)।" कर्ण द्वारा धर्म और नीति की दुहाई देने पर श्रीकृष्ण ने उस पर व्यंग करते हुये उसके और उसके परामर्श के अनुसार दुर्योधन द्वारा पाण्डवों पर किये गये अत्याचार का स्मरण दिलाया। कर्ण ने लज्जा से अपना मस्तक झुका लिया और कोई उत्तर न देकर युद्ध करता रहा। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्ण पर दिव्यास्त्र प्रहार करने का आग्रह किया। कृष्ण के ऐसा कहने पर अर्जुन के मन में कर्ण के पिछले कुकृत्यों का स्मरण करके भयंकर क्रोध जागृत हुआ। कुपित होने पर अर्जुन के शरीर के सभी छिद्रों से अग्नि की चिनगारियाँ निकलने लगीं। उस समय यह एक अद्‌भुत सी बात हुई। कर्ण और अर्जुन दोनों ने ब्रह्मास्त्रों का प्रयोग किया और कर्ण अपने धँसे हुये रथ के पहियों को एक बार पुनः निकालने का प्रयास करने लगा। अर्जुन ने आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया परन्तु कर्ण ने वारुणास्त्र के प्रयोग द्वारा मेघों को उत्पन्न करके उस आग्नेयास्त्र को बुझा दिया। उस समय मेघों की घटा घिर जाने से चारों ओर अन्धकार छा गया। अर्जुन ने वायव्यास्त्र के प्रयोग द्वारा उन मेघों को विसर्जित कर दिया। अर्जुन का वध करने के उद्देश्य से कर्ण ने ज्वलन्त अग्नि के समान एक भयंकर वाण हाथ में लिया। उस उत्तम वाण को धनुष पर चढाते ही सम्पूर्ण पृथिवी डगमगाने लगी और स्वर्ग के देवताओं में भी हा-हाकार मच गया। कर्ण के हाथ से छूट कर वह वाण अर्जुन के वक्षस्थल में समा गया जिससे उन्हें चक्कर आने लगा, गाण्डीव धनुष पर रक्खा हुआ उनका हाथ ढीला पड़ गया और वे पर्वत के समान काँपने लगे। इस बीच मौका पाकर कर्ण ने अपने रथ के पहियों को बाहर निकालने का एक बार पुनः प्रयास किया। चेतना लौटते ही अर्जुन ने अञ्जलिक नामक वाण हाथ में लिया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा: 'कर्ण जब तक रथ पर नहीं चढ़ जाता तब तक ही अपने वाण के द्वारा उसके मस्तक को काट डालो।' कृष्ण की आज्ञा को शिरोधार्य करके अर्जुन ने सर्वप्रथम कर्ण के रथ के ध्वज को नष्ट कर दिया। उसके पश्चात् अर्जुन ने एक अन्य अञ्जलिक वाण का सन्धान किया। उस समय समस्त चराचर जगत् काँप उठा और ऋषिगण भी जोर-जोर से कहने लगे कि 'जगत् का कल्याण हो!' तत्पश्चात् कर्ण के रथ पर चढ़ने के पूर्व ही अर्जुन ने उसका मस्तक काट दिया। कर्ण का वह मस्तक-विहीन शरीर धरती पर गिर पड़ा और उसमें से एक तेज निकल कर सूर्य-मण्डल में विलीन हो गया। पाण्डव उस समय अत्यन्त प्रसन्न हुये (८. ९१)।"

"कौरव पक्ष अत्यन्त शोक-विह्वल हो उठा। भीम के हर्षित गर्जन ने कौरवों को भयभीत कर दिया। शल्य ने जब दुर्योधन को कर्ण की मृत्यु का समा-

चार दिया तो वह मानों चेतना-शून्य हो गया (८, ९२)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने कर्णवध के पश्चात् कौरव सेना की स्थिति का वर्णन किया। दुर्योधन ने एक बार पुनः युद्ध करने का निश्चय किया। भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने दुर्योधन और उसके सैनिकों के साथ युद्ध किया जिसमें भीमसेन ने दुर्योधन के २५,००० हजार पदातियों का वध कर दिया। अर्जुन ने कौरवों की रथ सेना का विध्वंस किया। पराजित कौरव सेना भाग खड़ी हुई, जिस पर चेकितान आदि ने अपने-अपने शंख बजाये। दुर्योधन ने अत्यन्त वीरतापूर्वक युद्ध करते हुये अपनी अवशिष्ट सेना को सन्नद्ध होने के लिये कहा परन्तु उसके आग्रह करने के विपरीत भी उसकी सेना ने पलायन किया (८. ९३)।" "शल्य ने दुर्योधन से रणभूमि के भयंकर संहार का वर्णन किया और कहा कि सेना को रात्रिकालीन शिविर में बुला लेना चाहिये। उस समय अश्वत्थामा तथा अन्य सभी नरेश दुर्योधन को सान्त्वना देने के पश्चात् अपने-अपने शिविरों में चले गये। मृत कर्ण का शरीर उस अवस्था में भी सूर्य के समान सुशोभित हो रहा था। सूर्य रक्त से भीगे हुये कर्ण के शरीर का किरणों द्वारा स्पर्श करके रक्त के समान ही लाल रूप धारण करके पश्चिम समुद्र की ओर जा रहे थे। वहाँ उपस्थित देवता तथा ऋषिगण अपने-अपने स्थानों को चले गये। कर्ण के मारे जाने पर नदियों का प्रवाह रुक गया, सूर्यदेव अस्ताचल को चले गये और मंगल एवं सोमसुत बुध तिर्यक् होकर उदित हुये। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हर्ष में भर कर अपने-अपने शंख बजाये जिसको सुनते ही कौरव योद्धा, शल्य और दुर्योधन को छोड़ कर युद्धभूमि से भागने लगे। कर्ण के मारे जाने पर देवता, गन्धर्व, मनुष्य, चारण, महर्षि, यक्ष तथा बड़े-बड़े नागों ने अर्जुन और श्रीकृष्ण का आदर किया (८. ९४)।" "शिविर की ओर पलायन करनेवाले कौरवों का वर्णन (८. ९५)।" "श्रीकृष्ण ने अर्जुन से महाराज युधिष्ठिर के पास चलकर कर्णवध का सामाचार देने का प्रस्ताव करते हुये धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवयोद्धाओं से शत्रुओं का सामना करने के लिये प्रयत्नपूर्वक डटे रहने का आदेश दिया। तदनन्तर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने युधिष्ठिर का दर्शन किया। इन लोगों को हर्षित देख कर युधिष्ठिर समझ गये कि कर्ण का वध हो गया, अतः उन्होंने शय्या से उठकर श्रीकृष्ण और अर्जुन को हृदय से लगा लिया। श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बधाई दी परन्तु युधिष्ठिर ने पाण्डवों की सफलता का श्रीकृष्ण के प्रभाव को ही श्रेय दिया। तदनन्तर अर्जुन और श्रीकृष्ण के साथ युधिष्ठिर रणभूमि में कर्ण के शरीर को देखने के लिये आये। उस समय पाण्डव पक्ष के महारथी युधिष्ठिर से मिल कर उनका हर्ष बढ़ाने लगे। नकुल-सहदेव, भीमसेन, सात्यकि, धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। कर्णवध के दुःखद समाचार को सुन कर धृतराष्ट्र और गान्धारी शोक-विह्वल होकर मूर्च्छित हो गये। उस समय विदुर, संजय तथा कुरु-कुल की स्त्रियाँ धृतराष्ट्र और गान्धारी को सान्त्वना देने लगे (८. ९६)।" कर्णपर्व के श्रवण तथा पाठ की महिमा का वर्णन (८. ९६, ५९-६५)। १८. ६; ६४ : 'कर्णं पर्वण्यपि तथा भोजनं सार्वं कामिकम् ।'

१. कर्णपुत्र = वृषसेन : ५. १६८, २३; ७. १६८. १५. १९. २१. २४; ८. ४८, ४६; ६१, ३६; ७५, १०; ८४, २९, ३१. ३९. ४२; ८५, २८; ९. १, ३२। तु० की० **कर्णसुत, कर्णात्मज, कार्णि।**

२. कर्णपुत्र = भानुसेन : ८. ४८, २७। तु० की० **कर्णसुत।**

३. कर्णपुत्र = प्रसेन : ८. ८२, ४। तु० की० **कर्णात्मज।**

४. कर्णपुत्र = सुषेण : ९. १०, ४१. ४५. ४७।

कर्णप्रावरण, दक्षिण समुद्रतट पर निवास करनेवाली एक जाति का नाम है। सहदेव ने इस जाति के लोगों को परास्त किया था' (२. ३१, ६७)। ये लोग युधिष्ठिर को भेंट देने के लिये आये थे (२. ५२, १९)। दुर्योधन की सेना में इनकी उपस्थिति (६. ५१, १३)।

कर्ण प्रावरणा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २५)।

कर्णवेष्ट, क्रोधवश संज्ञक दैत्य के अंश से उत्पन्न एक क्षत्रिय राजा का नाम है (१. ६७, ६०)। उन राजाओं में से एक यह भी थे जिन्हें पाण्डवों की ओर से रण-निमन्त्रण भेजा गया था (५. ४, १५)।

कर्णश्रवस्, युधिष्ठिर का सत्कार करनेवाले एक ब्राह्मण का नाम है (३. २६, २३)।

कर्णसम्भव—कर्ण के जन्म की कथा; इन्द्र द्वारा उस के कवच और कुण्डलों को माँगना (१. १११)।

१. कर्णसुत = वृषसेन : ७. १४७, ६६; १४८, २२; १६८, २९; ८. ८५, २६. ३६। तु० की० **कर्णपुत्र, कर्णात्मज, कार्णि।**

२. कर्णसुत = भानुसेनः ८. ४८, २९। तु० की० **कर्णपुत्र।**

३. कर्णसुत, द्वि० व०, : ८. ७, २२।

कर्णाटक, एक दक्षिण भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५९)।

कर्णाट्ट : ३. २८४, ३०।

१. कर्णात्मज = वृषसेन : ७. १६, ८. ९; ८. ८४, २०. २१. ३०; ८५, २९। तु० की० **कर्णापुत्र, कर्णसुत, कार्णि।**

२. कर्णात्मज = सत्यसन्धः ८. ७, २१।

३. कर्णात्मज = सुषेण : ८. ७५, १३। तु० की० **कर्णपुत्र।**

४. कर्णात्मज = प्रसेन : ८. ८२, ४। तु० की० **कर्णपुत्र।**

कर्णिका, एक अप्सरा का नाम है जिसने अर्जुन के जन्मोत्सव पर नृत्य-गान किया था (१. १२३, ६४)।

कर्णिकारध्वज = अभिमन्यु : ६. ११५, ३१।

कर्णिकारमहास्रग्विन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कर्णिकारस्रजप्रिय = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कर्तृ = विश्वदेव (१३. ९१, ३५)।

२ कर्तृ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

३. कर्तृ = विष्णु : १३. १४९, ४७. ५४ (सहस्र नामों में से एक); १६५, ९।

१. कर्दम, एक नाग का नाम है (१. ३५, १६)।

२. कर्दम, एक प्रजापति का नाम है। ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति का उल्लेख (२. ११, १९)। ये कीर्तिमत् के पुत्र तथा अनङ्ग के पिता थे (१२. ५९, ९०-९१)। इक्कीस प्रजापतियों के वर्णन में इनकी गणना (१२. ३३४, ३६)।

कर्दमिल, समङ्गा के निकट के एक पवित्र क्षेत्र का नाम है, जहाँ भरत का अभिषेक हुआ था (३. १३५, १)।

कर्पट, देखिये **पञ्चकर्पट।**

कर्मकालविद् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कर्मन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कर्मिन्, शुक्र के एक पुत्र का नाम है: 'द्वावन्यौ रौद्रकर्मिणौ' (१. ६५, ३७)।

कर्वट, पूर्व में स्थित एक देश का नाम है जिसे भीम ने दिग्विजय करते समय विजित किया था (२. ३०, २४)।

कल = पितरों का एक गण है। ये ब्रह्माजी की सभा में उपस्थित रहकर ब्रह्मा जी की उपासना करते हैं (२. ११, ४७)।

कलकल = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कलविङ्क, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से अनेक तीर्थों में स्नान का फल मिलता है (१३. २५, ४३)।

२. कलविङ्क, एक प्रकार का पक्षी जिसकी उत्पत्ति मरे हुये त्रिशिरा के सुरापायी मुख से हुई थी (५, ९, ४२)।

कलश, एक कश्यप-वंशी नाग का नाम है (५. १०३, ११)।

कलशपोतक, एक नाग का नाम है (१. ३५, ७)।

कलशी, एक तीर्थ का नाम है जहाँ आचमन करने से अग्निष्टोमयज्ञ का फल प्राप्त होता है (३. ८३, ८०)।

कलशोदर, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७२)।

कलसोदर, देखिये **कलशोदर।**

कलहंस, धृतराष्ट्री की संतति का नाम है (१. ६६, ५८)।

१. कला = सूर्य (३. ३, २०)।

२. कला = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कलाप, एक महातेजस्वी ऋषि का नाम है जिनका राजसूय यज्ञ के अन्त में राजा युधिष्ठिर ने पूजन किया (२.४५, ३८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ पृष्ठ ८४३, कालम १)।

१. कलि. चतुर्थ युग का नाम है। 'अन्तरे चैव सम्प्राप्ते कलिद्वापरयोरभूत', (१.२, १३)। 'कलौ युगे; (३.१८८, ६३)। 'कले प्रवर्तनाद्राजा पापमत्यन्तमश्नुते', (५. १३२, १९)। 'दण्डनीतिं परित्यज्य यदा कार्त्स्न्येन भूमिपः। प्रजाः क्लिश्नात्ययोगेन प्रवर्तेत तदा कलिः॥', (१२.६९, ९१)। 'कलावधर्मो भूयिष्ठं', (१२.६९, ९२)। 'कलेः प्रवर्तनाद्राजा पापमत्यन्तमश्नुते', (१२.६९, १००)। 'कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्च भरतर्षभ। राजवृत्तानि सर्वाणि राजैव युगमुच्यते', (१२.९१, ६)। 'कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्च भरतर्षभ। राजमूला इति मतिर्मम नास्त्यत्र संशयः॥', (१२. १४१, १०)। १२० २३१, १९. २७.२८; २३८, ७। 'द्वापरे विप्लवं यान्ति वेदाः कलियुगे तथा। दृश्यन्ते नापि दृश्यन्ते कलेरन्ते पुनः किल॥', (१२. २३८, १५)। १२. २६७, ६। 'द्वापरस्य कलेश्चैव सन्धौ पार्यवसानिके', (१२. ३३९, ८९)। 'कलौ त्वधर्मः क्षितिमेवाजगाम', (१३. १५८, १०)। तु० की० **कलियुग।**

२. कलि. पासे में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द है और सामान्य रूप से दुर्भाग्य का भी द्योतक है। दुर्योधन कलि के अंश से उत्पन्न हुए थे (१. ६७, ८७)। 'जगतो यस्तु सर्वस्य विद्विष्टः कलिपूरुषः', (१०६७, ८८)। 'कलिद्वारमुपस्थितम्', (२.४९, ५२)। ३. ५८, १–३. ५.७.११–१४; ५९, १–३.६.९) इसने नल को आक्रान्त किया जिससे वे पासे में पराजित हुये (३.५९,१७)। ३.६२,१५. २५. २६. २८. २९; ७२, ३०–३३.३९. ४१। जब नल ने पासे की विद्या का ज्ञान प्राप्त कर लिया तब कलि ने उनको छोड़ दिया (३. ७२, ४३)। ३. ७६, १७. १९; ७८, २२; ७९, ११। 'दानवान्कलिना हतान्', (३. ९४, ११)। 'द्यूतजं कलिम्', (३. १७४, ९)। 'युद्धे कृष्ण कलिर्नित्यं प्राणाः सीदन्ति संयुगे', (५. ७२. ४९)। 'पर्यायकाले धर्मस्य प्राप्ते कलिरजायत', (५. ७४, १२)। 'कलिं पुत्रप्रवादेन सञ्जय त्वामजीजनम्', (५. १३३, ३०)। 'कलिर्महान्' (५. १५४, २१)। दुर्योधन कलि के अंश से उत्पन्न हुआ था (११. ८, ३०)। 'अशरण्यः प्रजानां यः स राजा कलिरुच्यते', (१२. १२, २९)। राजकलयः', (१२. १२, ३१)। कलिपूर्वम्', (१३. २३, ४,)। 'विमुच्यते कलिकलुषेण मानवः', (१३. ७७, ३२)। 'भिन्नभाण्डे कलिं प्राहुः', (१३. १२७, १६)। 'कलिं दुर्योधनं विद्धि', (१५. ३१, १०)। तु० की० **१. कलि।**

३. कलि, कश्यप-पत्नी मुनि के पुत्र १६ देवगन्धर्वों में से १५ वें का नाम है (१. ६५, ४४)। ये अर्जुन के जन्मोत्सव में पधारे थे (१. १२३, ५७)।

४. कलि = सूर्य (३. ३, २०)।

५. कलि = शिव, सहस्रनामों में से एक (१३. १७, ७९)।

१. कलिङ्ग, राजा बलि की पत्नी रानी सुदेष्णा के गर्भ से दीर्घतमस् द्वारा उत्पन्न पुत्र का नाम है (१. १०४, ५३, ५४)।

२. कलिङ्ग, युधिष्ठिर के समय में कलिङ्गों के राजाओं के लिये प्रयुक्त हुआ है। द्रौपदी के स्वयंवर के समय भी ये उपस्थित थे (१. १८६, १३)। ये दुर्योधन की सेना में थे (५. ९५, २०; ६. ५४, १, १८. ६७. ६८. ७२)। ये द्रोणाचार्य के व्यूह के दाहिने भाग में स्थित थे (७. ७, ११) ये जयद्रथ की रक्षा करेंगे (७. ७४, १७)। इन्होंने अर्जुन पर आक्रमण किया (७. ९३, ३२)। इन्होंने भीमसेन के साथ युद्ध किया (७. १५५, २३)। 'उभौ कलिङ्गवृषकौ भ्रातरौ युद्धदुर्मदौ', (८. ५, ३४)। तु० की०

३. कलिङ्ग, स्कन्द के एक योद्धा का नाम है (९. ४५, ६४)।

४. कलिङ्ग, बहु०, एक जनपद का नाम है। क्रोधवश नामक दैत्यगण से उत्पन्न हुये अन्य राजाओं के साथ कलिङ्ग नरेश कुहर का उल्लेख (१. ६७, ६५)। 'कलिङ्गविषयश्चैव कलिङ्गस्य च स स्मृतः', (१. १०४, ५४)। अर्जुन द्वारा विजित (१. २१५, ९)। 'कलिङ्गराष्ट्रद्वारेषु ब्राह्मणाः पाण्डवानुगाः' (१-२१५, १०) 'कलिङ्गान्', (१. २१५, १२)। अपने दिग्विजय के अवसर पर सहदेव ने इन्हें विजित किया (२. ३१, ७१)। युधिष्ठिर को भेंट देने वाले लोगों में से एक यह भी थे (२. ५२, १८)। तीर्थयात्रा करते समय युधिष्ठिर कलिङ्ग देश में पधारे (३. ११४, ३. ४)। दिग्विजय करते हुये कर्ण ने इन्हें विजित किया (३. २५४, ८)। उन राजकुमारों में से एक जिनके पास पाण्डवों को दूत भेजना चाहिये (५. ४, २४)। सहदेव ने दन्तकूर में कलिङ्गों को विजित किया (५. २३, २४)। कृष्ण दन्तकूर में कलिङ्गों का विनाश कर चुके थे (५. ४८, ७६)। भीमसेन ने इन पर विजय प्राप्त की (५. ५०, १९)। सहदेव द्वारा विजित (५. ५०, ३१)। शिखण्डी द्वारा विजित (५. ५०, ३६)। ६-९, ४२. ४६. ६९ (भारत वर्ष के उत्तर-पूर्व में स्थित)। दुर्योधन की सेना में इनकी उपस्थिति (६. १७, ३२)। भीमसेन पर आक्रमण किया (६. ५३, ३८. ४१)। ६. ५४, ४ (कलिङ्गानां महाचमूम्) ५. ७ (कलिङ्गानां नराधिप) १५. १६. १८. २५. ३६. ६६. ६७. ६९. ७८. ७९. ८१. ८२. ९६. १०३। श्रुतायु को आगे करके इन्होंने भीमसेन पर आक्रमण किया, भीम ने इनका वध कर दिया (६. ५४, १०४)। भीष्म के गरुडव्यूह में इनकी उपस्थिति (६. ५६, ८)। इन्होंने भगदत्त का अनुगमन किया (६. ८७, ८)। अर्जुन पर आक्रमण किया (६. ११७, ३२)। ये कर्ण द्वारा पहले से ही विजित थे (७. ४. ८)। कृष्ण ने इन्हें पहले ही विजित कर लिया था (७. ११. १५)। द्रोण द्वारा निर्मित गरुडव्यूह के ग्रीवा भाग में इनकी स्थिति का उल्लेख (७. २०, ६)। गरुडव्यूह के पृष्ठ भाग में स्थित (७. २०, १०)। ये रामजामदग्न्य द्वारा विजित कर लिये गये थे (७. ७०, १२)। इन्होंने सात्यकि के साथ युद्ध किया (७. १४१, १०. ११)। कलिङ्गराजकुमार और भीमसेन का युद्ध हुआ; भीमसेन ने पहले उनके पिता का, तत्पश्चात् कलिङ्ग राजकुमार का भी वध कर दिया (७. १५५, २१. २३)। इन्होंने कृतवर्मा का अनुगमन किया (७, १९३, १३)। 'उभौ कलिङ्ग वृषकौ भ्रातरौ युद्धदुर्मदौ', (८. ५, ३४)। ये कर्ण द्वारा पूर्व समय से ही विजित थे (८. ८, २०)। अर्जुन पर आक्रमण करते हैं (८. १७, १२)। धृष्टद्युम्न पर आक्रमण करते हैं (८. २२, ३)। नकुल पर आक्रमण करते हैं (८. २२, २१)। आकाशवाणी ने घोषित किया कि अर्जुन कलिङ्गों आदि का वध कर डालेंगे (८, ६८, ११)। भीमसेन द्वारा मारे गये (८, ७०, ९)। युद्धभूमि में मृत हुये (९. ३३, २५)। चित्राङ्गद द्वारा अनुशासित (१२. ४, २)। ब्राह्मणों की कृपा दृष्टि से वञ्चित होने के कारण शूद्र हुये क्षत्रियों के साथ इनका भी उल्लेख है (१३. ३३, २२)। तु० की० बहु० **कालिङ्ग।**

कलिङ्गक (= श्रुतायुध ?) : ६. १७, ३४। तु० की० कालिङ्ग।

कलिङ्गराज : ६. ५४, १२१ (भीम द्वारा इसका वध)।

कलिङ्गाधिप—ये द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुए थे (१. १८७, १६)।

कलिङ्गाधिपति—इन्होंने शकुनि की सहायता की (६. ७१, १४)। तु० की० कालिङ्ग।

कलिन्द. बहु० (१३. ३३, २२)। देखिये, बहु० कालिङ्ग।

कलियुग, चौथे युग का नाम है। कलियुग में गंगा को पवित्र कहा गया है (३. ८५, ९०)। कलियुग में धर्म का चतुर्थांश ही शेष रह जाता है और नारायण का रंग काला हो जाता है, अतः इसे तामस युग कहते हैं (३. १४९, ३३–३८)। इसकी अवधि एक सहस्र दिव्य वर्ष होती है (३. १८८, २५)। "इस युग में छल से शासन करनेवाले शक, अन्ध्र, पुलिन्द, कम्बोज, बाह्लीक, शौर्य सम्पन्न आभीर आदि राजा होते हैं। इस युग में प्रायः सभी मिथ्यावादी और पापाचारी हो जाते हैं। वर्णाश्रम का लोप

हो जाता है तथा मनुष्यों की शारीरिक क्षमता भी घट जाती है (३. १८८, २७. ३० और बाद) ।" कलियुग में नारायण कृष्णवर्ण हो जाते हैं (३. १८९, ३२) । यह तामस युग होता है (३. १९०. ३. ११) । इस युग की स्थिति, मनुष्यों के धर्म और व्यवहार आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है (३. १९०, १९. २७. ४४. ६५) । 'आदौ कलियुगस्य', (६. ६६, ४०) । 'प्राप्तं कलियुगम्', (९. ६०, २५) । 'तथा कलियुगे राजन् द्वन्द्वमापेदिरे जनाः', (१२. २०७. ४०) । १२. २३१, २७ । 'यज्ञाः कलियुगे', (१२. २३२, ३२) । 'दृश्यन्ते न च दृश्यन्ते वेदाः कलियुगेऽखिलाः', (१२. २३२, ३६) । १२. २३८, १५; २६०, ८ । 'कलियुगे प्राप्ते राज्ञो दुश्चरितेन ह । भवेत्कालविशेषेण कला धर्मस्य षोडशी ॥', (१२. २६७, ३४) । 'इदं कलियुगं प्राप्य अनुष्याणां सुखावहः', (१३. १२९, ९) । तु० की० **१. कलि ।**

कल्कल, दक्षिण में स्थित एक जनपद का नाम है (६. ९, ६२) ।

कल्किन्, एक ब्राह्मण का नाम है । "जब सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति आदि ग्रह एक साथ ही पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेंगे तो कृतयुग का पुनः आरम्भ होगा और उस समय काल की प्रेरणा से सम्भल नामक ग्राम में किसी ब्राह्मण के मङ्गलमय गृह में एक महान् शक्तिशाली ब्राह्मण प्रगट होगा, जिसका नाम होगा विष्णुयशा कल्किन् । महान् बुद्धि एवं पराक्रम से सम्पन्न वह महात्मा, सदाचारी, प्रजावर्ग का हितैषी, तथा चक्रवर्ती राजा होगा । वही सम्पूर्ण कलियुग का संहार करके नूतन सत्ययुग का प्रवर्तक होगा । वह ब्राह्मणों से घिरा हुआ सर्वत्र विचरेगा और भूमण्डल में सर्वत्र फैले हुए नीच स्वभाववाले सम्पूर्ण म्लेच्छों का संहार कर डालेगा (३. १९०, ९०–९७) ।" "तदनन्तर यह कल्किन् नामक ब्राह्मण चोरों और डाकुओं का विनाश करके अश्वमेध का अनुष्ठान करेंगे, और उसमें यह समस्त पृथिवी ब्राह्मणों को दान में देकर सत्ययुग की पुनः स्थापना करेंगे (३. १९१, १–७) ।" ये विष्णु के दसवें अवतार हैं (१२, ३३९, १०४) ।

१. कल्प : 'पुराकल्पविशेषवित्', (२. ५, २) । 'पुराकल्पेषु नित्यशः', (३. ४१, ३५) । 'पुरा कल्पे', (५. ३७, १९) । 'कल्पसंक्षेपतत्पर', (६. ६५, ५६) । 'कल्पान्ते', (७, २१, ३८) । 'पूर्वकल्पे यथातथम्', (९. ४७, ५) । 'युगं द्वादशसाहस्रं कल्पं विद्धि चतुर्युगम् । दशकल्पशतावृत्तमहस्त दब्राह्ममुच्यते', (१२. ३०२, १४) । 'अतीते महाकल्पे', (१२. ३३६, १) । 'कल्पादौ', (१२. ३३९, ६१) । 'कल्पादिषु', (१२. ३३९, ७५) । 'महाकल्पसहस्राणि महाकाल्पशतानि च समतीतानि', (१२. ३३९, ११५) । 'यथा वृत्तं हि कल्पादौ', (१२. ३४०, २८) । 'यावत्कल्पक्षयात्', (१२, ३४०, ६८) । 'यत्राविशन्ति कल्पान्ते सर्वे ब्रह्मादयः सुराः', (१२. ३४३, १५) । 'पुराकल्पे', (१३. ६३, ३१) । 'महाकल्पम्', (१३. १०७, ७७) । 'पुराकल्पविदः', (१४. ३१, ४) । 'पुराकल्पं सनातनम्', (१४. ३५, २३) ।

२. कल्प = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

कल्पवृक्ष : ३. २८१, ५; ७. १६८, १८; १६९, ६; ८. ९४; ४४; १४. ५९, ६ ।

१, कल्माष, एक नाग का नाम है (१. ३५, ७) ।

२. कल्माष, चितकबरे रंग के एक उत्तम अश्व का नाम है । यह अश्व अर्जुन ने दिग्विजय के समय हाटक देश के निकटवर्ती गन्धर्व नगर से प्राप्त किया था (२. २८, ६) ।

कल्माषपदसरस् (८. ४५, २२); देखिये **कल्माषपाद**

कल्माषपाद, अयोध्या के राजा और मदयन्ती के पति का नाम है, जिन्हें सौदास भी कहते हैं । पुत्र रहित होने के कारण इन्होंने अपनी रानी मदयन्ती को पुत्र-प्राप्ति के लिये वसिष्ठ के पास भेजा और वसिष्ठ ने उसे अश्मक नामक पुत्र प्रदान किया (१. १२२, २१–२२) । "ये इक्ष्वाकु वंशी एक तेजस्वी राजा थे । एक दिन ये शिकार से थक कर जब नगर की ओर लौट रहे थे तो एक संकीर्ण पथ पर आ पहुँचे जहां केवल एक व्यक्ति ही एक समय में चल सकता था । उस समय वसिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र, शक्ति, सामने से आ रहे थे । उन्हें देखकर इन्होंने उनसे मार्ग से हट जाने के लिये कहा परन्तु जब वे नहीं हटे तो इन्होंने उन पर कोड़े से प्रहार किया । उस समय क्रुद्ध शक्ति ने इन्हें राक्षस हो जाने का शाप दे दिया । इन्हीं दिनों विश्वामित्र इनके पास आये । जब शक्ति ने इन्हें शाप दे दिया तो उन्हें पहचान कर ये उनकी स्तुति करने लगे । उस समय अदृश्य रूप से उपस्थित विश्वामित्र ने किंकर नामक एक राक्षस को इनके भीतर प्रवेश करा दिया । उस राक्षस से आविष्ट होकर इन्हें किसी भी बात की सुध-बुध नहीं रह गई । एक दिन किसी ब्राह्मण ने इनसे मांस-सहित भोजन माँगा जिस पर इन्होंने उससे कुछ क्षण तक प्रतीक्षा करने के लिये कहा । तदनन्तर घूम फिर कर जब ये अन्तःपुर में लौटे तो अर्धरात्रि के समय इन्हें ब्राह्मण को भोजन देने की प्रतिज्ञा का स्मरण हुआ । उस समय इन्होंने अपने रसोइये से ब्राह्मण को मांस-भोजन द्वारा तृप्त करने के लिए कहा । जब रसोइये को कोई मांस नहीं मिला तो इनकी, जिन पर राक्षस का आवेश था, आज्ञा से उसने उस ब्राह्मण को मनुष्य का मांस ही पकाकर प्रस्तुत किया । इस पर क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण ने इन्हें यह शाप दिया कि ये मनुष्यों के मांस में आसक्त हो समस्त प्राणियों के उद्वेग पात्र बनकर पृथिवी पर विचरण करेंगे । तदनन्तर एक दिन शक्ति को देखकर इन्होंने उनका भक्षण कर लिया । शक्ति की मृत्यु के बाद विश्वामित्र की प्रेरणा द्वारा इनके शरीर में प्रविष्ट राक्षस से प्रेरित होकर इन्होंने वसिष्ठ के अन्य पुत्रों का भी भक्षण कर लिया (१. १७६, १–४२) ।" "एक दिन जब महर्षि वसिष्ठ अपनी पुत्रवधू के साथ आश्रम की ओर लौट रहे थे तो उन्होंने निर्जन वन में बैठे हुए राजा कल्माषपाद को देखा । उस समय भयानक राक्षस से आविष्ट राजा कल्माषपाद ने वसिष्ठ का भी भक्षण करने की इच्छा की (१. १७७, १७–१८) ।" "इनके राक्षस रूप को देखकर जब वसिष्ठ की पुत्रवधू भयभीत हुई तो उन्होंने इनका परिचय देते हुए अपनी हुंकार से रोककर इन्हें शापमुक्त भी कर दिया । उस समय वसिष्ठ के मन्त्रपूत जल के प्रभाव से इनके भीतर स्थित राक्षस ने भी इन्हें छोड़ दिया । इन्होंने इस प्रकार शापमुक्त होने के पश्चात् वसिष्ठ से कहा : 'मैं आपका यजमान सौदास हूँ, अतः आप आज्ञा दें मैं आपकी क्या सेवा करूँ ।' वसिष्ठ के कहने पर इन्होंने ब्राह्मणों के प्रति आदर भाव रखने का वचन दिया और अपने लिये एक श्रेष्ठ गुण सम्पन्न पुत्र की याचना की । वसिष्ठ ने इन्हें मनोवांछित पुत्र प्रदान करने का वचन दिया । तदनन्तर महर्षि वसिष्ठ ने यथा समय इनकी पत्नी, मदयन्ती, के गर्भ से अश्मक नामक एक पुत्र उत्पन्न किया (१. १७७, २३–४७) ।" 'राजा कल्माषपादश्च दिवमारुह्य मोदते', (१, १८१, १७) । १. १८२, १ । 'कल्माषपादं राजर्षिमशापद्ब्राह्मणी रुषा', (१. १८२, १८) । 'सौदासेन तदा राज्ञा मानुषा भक्षिता,, (३. २०८, १६) । 'कल्माषपादः सरसि निमज्जत्राक्षसोऽब्रवीत्'. (८. ४५, २२) । 'सौदासस्याभिरक्षितः', (१२. ४९, ७७) । 'महर्षि शापात्सौदासः पुरुषादत्वमागतः', (१३. ६, ३२) । 'राजा मित्रसहश्चापि वसिष्ठाय महात्मने । मदयन्तीं प्रियां दत्वा तया सह दिवं तः ॥', (१२. २३४, ३०) । 'इक्ष्वाकुवंशजो राजा सौदासो वदतां वरः', (१३. ७८, १) । 'सौदास उवाच', (१३–७८, ३) । 'राजा मित्रसहश्चैव वसिष्ठाय महात्मने । मदयन्तीं प्रियां भार्यां दत्वा च त्रिदिवं गतः ॥', (१३, १३७, १८) । 'सौदासपत्न्या विधृते दिव्ये ये मणिकुण्डले', (१४. ५६, २९) । 'सौदासं पुरुषादम्,' (१४. ५६, ३१) । 'सौदास उवाच', (१४. ५७, ११. १३, १८), 'सौदासवचनम्', (१४. ५७, २०) । 'स मित्रसहम्', (१४. ५८, १) । सौदास उवाच', (१४. ५८, २. ५. ११. १५) । तु० की० **इक्ष्वाकुवर, कोशलाधिप, मित्रसह, राक्षस, सौदास ।**

कल्माषी, एक नदी (= यमुना, नीलकण्ठी में) का नाम है । 'अभितः सोऽथ कल्माषीं गंगाकूले परिभ्रमत्', (१. १६७, ५) । 'कल्माषीतीरसंस्थस्य गतस्त्वं शिष्यतां भृगोः', (२. ७८, १६) ।

कल्याणी, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, ७) ।

कवचिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०३; ११७, ११) । इसका भीमसेनपर आक्रमण (८. ५१, ७) । भीमसेन द्वारा इसका वध (८. ८४, २) ।

कवष, पश्चिम दिशा में निवास करनेवाले एक ऋषि का नाम है (१२. २०८, ३०)।

१. कवि, भृगु के पुत्र और उशनस् (शुक्र) के पिता, एक ऋषि का नाम है (१. ६६, ४२, ४२; तु० की० १. ७६, २२ पर नीलकण्ठी)। ये भृगु और अङ्गिरा आदि के साथ ब्रह्मा के वीर्य की अग्नि में आहुति से उत्पन्न हुये (१३, ८५, १०६)। इन्होंने वारुण संज्ञक आठ पुत्र प्राप्त किये जिनके नाम कवि, काव्य, धृष्णु, बुद्धिमान् शुक्राचार्य, भृगु, विरजा, काशी, तथा धर्मज्ञ उग्र हैं। इनके आठ पुत्रों द्वारा समस्त जगत व्याप्त है (१३. ८५, १३२–१३६)। 'कविश्च विद्वांस्तथा ह्यागस्त्यः', (१३. ९४, ४)। 'कविरुवाच; (१३, १४, ३२)।

२. कवि = शुक्र (उशनस्) : १. ७६, १४ (?)।

३. कवि, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३६)।

४. कवि, कवि के प्रथम पुत्र का नाम है (१३. ८५, १२६)।

५. कवि = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

६. कवि, अङ्गिरस् द्वारा शापित एक अग्नि का नाम है (१३.१५३,८)।

कविपुत्र = शुक्र (उशनस्) : १. ७६, २२।

कविसुत = शुक्र (उशनस्) : १. ६६, २२।

कशेरक, कुबेर के सभाभवन में उपस्थित होनेवाले एक यक्ष का नाम है (२. १०, १५)।

कश्यप, एक महर्षि का नाम है जो मरीचि के पुत्र और एक प्रजापति थे। "सौति ने कहा : प्रजापति की दो पुत्रियों, कद्रू और विनता, को उनके पति महर्षि कश्यप ने यह वर दिया कि कद्रू को एक सहस्र नागरूपी पुत्र, तथा विनता को दो ऐसे पुत्र प्राप्त होंगे जो कद्रू के एक सहस्र पुत्रों से श्रेष्ठ होंगे। इस प्रकार वर देकर कश्यप वन चले गये। बहुत समय के पश्चात् कद्रू ने एक सहस्र और विनता ने दो अण्डे दिये। पाँच सौ वर्षों के पश्चात् कद्रू के एक सहस्र अण्डों ने फूट कर नागों को उत्पन्न किया परन्तु विनता के अण्डे नहीं फूटे। उस समय विनता ने एक अण्डे को फोड़ा, जिससे अरुण उत्पन्न हुये। अरुण के शरीर के नीचे का आधा अङ्ग अभी अविकसित था जिस पर क्रुद्ध होकर उन्होंने अपनी माँ, विनता, को पाँच सौ वर्षों तक कद्रू की दासी बने रहने का शाप दे दिया। उन्होंने यह भी कहा कि यदि वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करेगी तो द्वितीय अण्डे से उत्पन्न द्वितीय पुत्र उसे शाप-मुक्त कर देगा (१. १६, ६. ७. १०. १३)।" जब कद्रू ने अपने पुत्रों को शाप दिया तब ब्रह्मा ने इन्हें बुलाकर कद्रू पर क्रोध न करने का अनुरोध करते हुये इन्हें सर्पों का विष उतारने की विद्या प्रदान की (१, २०, १४. १६)। 'ऋषेः सुतस्त्वमसि दयावतः प्रभो महात्मनः खगवर कश्यपस्य ह', (१. २३, २४)। 'कश्यपस्य सुतो धीमानरुणेत्यभिविश्रुतः', (१. २४, १६)। १. २९, ८. १३; ३०, १०. १४-१७. १९. २१. ४१। "शौनक के यह पूछने पर कि गरुड किस प्रकार कश्यप के पुत्र हुये, सौति ने बताया कि एक समय कश्यप ने पुत्र की कामना से यज्ञ आरम्भ किया जिसमें इन्द्र ने वालखिल्यों का उपहास किया। इन्द्र पर क्रुद्ध होकर वालखिल्यों ने यह विचार करके अग्नि में आहुति दी कि इन्द्र से भी श्रेष्ठ एक द्वितीय इन्द्र का प्रादुर्भाव हो। इसी के अनुसार कश्यप ने विनता के गर्भ से पक्षियों के इन्द्र, गरुड, को जन्म दिया (१. ३१, २. ५. ६. १५-१७. २१. २५. २८)।" 'कश्यपस्य महात्मनः', (१. ३६, ११; ३७, ३२)। 'मरीचेः कश्यपः पुत्रः कश्यपात्तु इमाः प्रजाः', (१. ६५, ११)। इन्होंने दक्ष की तेरह कन्याओं के साथ विवाह किया (१. ६६, १३)। ये मरीचि के पुत्र थे और इनसे ही समस्त देवता तथा असुर उत्पन्न हुये (१. ६६, ३४)। इन्होंने दक्ष की तेरह कन्याओं के साथ विवाह किया (१. ७५, ९)। इन्होंने दक्ष की पुत्रियों में से सर्वश्रेष्ठ, अदिति, के गर्भ से आदित्यों को उत्पन्न किया (१. ७५, १०)। दक्ष की एक अन्य पुत्री, सुरभि, के गर्भ से इन्होंने वसिष्ठ की होमधेनु को जन्म दिया (१. ९९, ८)। अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित सात महर्षियों में से एक यह भी थे (१. १२३, ५१)। राम जामदग्न्य ने इन्हें सम्पूर्ण पृथिवी दान कर दी थी (१. १३०, ६२)। ब्रह्मा की सभा में उपस्थित प्रजापतियों में से एक यह भी थे (२. ११, १८) इन्होंने प्रह्लाद के प्रश्न का उत्तर दिया (२. ६८, ७१. ७४. ८५)। इन्होंने कृष्ण का पूजन किया (३. १२, ५२)। ३. ३१, ३९। उन महर्षियों में से एक यह भी थे जो युधिष्ठिर की प्रतीक्षा कर रहे थे (३. ८५, ११९)। ब्रह्मा ने दक्षिणा के रूप में पृथिवी इन्हें दान कर दी परन्तु इस पर क्रुद्ध होकर जब पृथिवी रसातल में प्रवेश कर गई तब इन्होंने पृथिवी को प्रसन्न किया (३. ११४, १८. २१)। राम ने इन्हें पृथिवी दान कर दी (३. ११७, १२–१४)। प्रजापति के रूप में इन्हें नारायण के साथ समीकृत किया गया है (३. १८९, ६)। इन्होंने विष्णु के वामन रूप को अदिति के गर्भ से उत्पन्न किया (३. २७२, ६२)। इन्होंने विनता के गर्भ से पक्षियों को उत्पन्न किया (५. १०१, ४)। ये सर्पों के प्रवर्त्तक हैं (५. १०३, १७)। गरुड और इन्द्र दोनों ही इनके पुत्र हैं (५. १०५, १०)। इनके पुत्र सर्वप्रथम पूर्व में प्रवृद्ध हुये (५. १०८, ६)। इन्होंने वरुण का पश्चिम के अधिपति के रूप में अभिषेक किया (५. ११०, ३. १९)। 'अदित्यां कश्यपो यथा', (५. ११७, १२)। 'कश्यपश्च प्रजापतिः', (६. ६, २१)। "राम जामदग्न्य ने पृथिवी, तथा एक सुवर्ण-वेदिका को इन्हें दान कर दिया। उन्होंने सुवर्ण आभूषणों से विभूषित एक लाख हाथी भी इन्हें दिये। तदनन्तर इन्होंने परशुराम को पृथिवी छोड़ देने का आदेश दिया (७. ७०, १८. १९. २२)।" ७. ९४, ४५; १९०, ३३। स्कन्ध के अभिषेक के समय उपस्थित होकर इन्होंने भी उनका अभिषेक किया (९–४५, १०. २३)। इन्होंने राम जामदग्न्य का यज्ञ कराकर सागरों सहित यह पृथिवी उनसे दक्षिणा के रूप में प्राप्त की (९. ४९, ८)। "जब राम जामदग्न्य ने दक्षिणा के रूप में पृथिवी इन्हें दान कर दी तो इन्होंने उन्हें पृथिवी छोड़ कर दक्षिण सागर के तट पर चले जाने का आदेश दिया जिसका पालन करते हुये वे शूर्पारक में जाकर निवास करने लगे। इन्होंने पृथिवी ब्राह्मणों को दे दी। जब पृथिवी रसातल में प्रवेश करने लगी तो इन्होंने उनको अपने ऊरु में धारण किया जिससे पृथिवी ऊर्वी कहलाई। पृथिवी द्वारा एक राजा की याचना करने पर इन्होंने जीवित क्षत्रियों को खोज कर उन्हें राजा बना दिया (१२. ४९, ६४–६८. ७३. ७४. ८८)।" ऐल–कश्यप संवाद (१२. ७३, ६. ८. १८. १९. २१. २३. २५)। 'कश्यपस्यात्मसम्भवः', (१२-१६९, १९)। 'कश्यपस्य पुत्रोऽहं माता दाक्षायणी', (१२-१७०, २)। मरीचि के पुत्र का नाम है जिन्होंने दक्ष की तेरह कन्याओं के साथ विवाह किया (१२. २०७, १८. २१)। कुछ लोग इन्हें अरिष्टनेमि भी कहते हैं और ये बारह आदित्यों के पिता हुये (१२. २०८, ८, १६)। इन्होंने विष्णु के वराह अवतार का वर्णन किया (१२-२०९, ६)। १२. २९६, १७। 'कश्यपस्य पितुः', (१२. ३१८, ६२)। नारायण ने कहा कि वे कश्यप और अदिति के यहाँ बारहवें आदित्य के रूप में जन्म लेंगे (१२. ३३९, ८१)। इन्होंने दक्ष की तेरह कन्याओं के साथ विवाह किया (१२. ३४२, ५७)। 'तस्माद् वृषाकपिं प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः', (१२. ३४२, ८९)। 'कश्यपस्य सुरासुराः', (१३. १२, २९)। 'कश्यपस्य सुराश्चैव असुराश्च सुतास्तथा', (१३. १२, ३०)। १३. १४, ३९७; ४७, ६१। 'महर्षेः कश्यपस्यैते गात्रेभ्यः प्रसृतास्तिलाः', (१३. ६६, १०)। 'मारीचः काश्यपो ह्यभूत', (१३. ८५, १०७)। १३. ९३, २१। 'कश्यप उवाच', (१३. ९३, ४४. ६९. ९०. १२०)। १३-९४, ४। 'अदितिः कश्यपस्य', (१३. १४६, ६)। 'कश्यपस्यात्मजः', (१३. १४७, ५८)। उत्तर में धनेश्वर के सात गुरुओं में से एक यह भी थे (१३. १५०, ३८)। "एक समय राजा अङ्ग के साथ स्पर्धा होने के कारण पृथिवी की अधिष्ठात्री देवी अपनी लोकधर्म धारण-रूप शक्ति का परित्याग करके अदृश्य हो गई। उस समय विप्रवर कश्यप ने अपने तपोबल से इस स्थूल पृथिवी को धारण किया (१३. १५३, २)।" "वायु ने कहा : एक समय राजा अङ्ग ने पृथिवी को ब्राह्मणों को दान देने का विचार किया। उनके इस विचार से चिन्तित होकर पृथिवी, जो ब्रह्मा की पुत्री हैं, भूमित्व का त्याग करके अपने पिता के लोक चली गई। उस

समय महर्षि कश्यप योग के आश्रय द्वारा अपने शरीर का त्याग करके भूमि के स्थूल विग्रह में प्रविष्ट हो गये और आलस्य-शून्य होकर ३०,००० दिव्य वर्षों तक पृथिवी के रूप में स्थित रहे। तत्पश्चात् पृथिवी ब्रह्म लोक से लौट कर कश्यप की पुत्री बन गई और तभी से पृथिवी का नाम काश्यपी हुआ (१३. १५४, ४. ७. ८) ।', 'मारीचः काश्यपः', (१३. १६५, १७) । 'वसिष्ठः कश्यपश्चैव', (१४. ३५, २६) । तु० की० **देवर्षि, काश्यप, महर्षि, मारीच,** और **प्रजापति।**

कश्यपद्वीप, जम्बूद्वीप के कश्यपद्वीप और नागद्वीप दो कर्ण हैं (६. ६, ५५) ।

कसेरुमत्, कृष्ण द्वारा वध किये गये एक यवनराज का नाम है (३. १२, ३२) ।

कहोड, एक ब्राह्मण का नाम है जो अष्टावक्र के पिता थे। ये उद्दालक के शिष्य थे और उद्दालक की पुत्री सुजाता के साथ ही विवाह करके इन्होंने अष्टावक्र को उत्पन्न किया (३. १३२, ८) । ये जनक के यज्ञ में उपस्थित हुये जहाँ शास्त्रार्थ में पराजित करके वन्दिन् ने इन्हें जल में डुबा दिया (३. १३२, १५) । जब अष्टावक्र ने वन्दिन् को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया तो ये जल से ऊपर उठे (३. १३४, ३१) । 'कहोड उवाच', (३. १३४, ३३) ।

कहोडसूनु = अष्टावक्र (३. १३२, ३) ।

काक, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ६४) ।

१. काकी, ताम्रा की पुत्री का नाम है (१, ६६, ५६) । इसने उल्लुओं को जन्म दिया था (१. ६६, ५७) ।

२. काकी, शिशुओं की सप्त-मातृकाओं में से एक का नाम है (६. २२८, १०) ।

१. काकुत्स्थ, (ककुत्स्थ का पुत्र) = अनेनस् (३. २०२, २) ।

२. काकुत्स्थ (ककुत्स्थ का वंशज) = दशरथपुत्र राम : ३. २७८, १३; २७९, १९. २४. ३५; २८०, १४. ३८; २८२, २५; २८३, ४४; २८४, १; २९०, १३. १७. २६; २९१, ७. २८. ३० ।

३. काकुत्स्थ = दशरथपुत्र लक्ष्मण (३. २८२, ११) ।

काकुदिक, एक अस्त्र का नाम है जिसका अर्जुन प्रयोग करेंगे (५. ९६, ४२) ।

काक्षीव = काक्षीवत् : 'शूद्रायां गौतमो यत्र महात्मा संशितव्रतः । औशीनर्यामजनयत्काक्षीवाद्यान्सुतान्मुनिः', (२. २१, ५) । तु० की० १. १०४, ४७ ।

काक्षीवत् = कक्षीवत् । उन प्राचीन राजाओं में से एक जिनका नारद ने वर्णन किया था (१. १, २२६) । काक्षीवत् आदि एकादश पुत्रों को दीर्घतमस् ने शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न किया था (१. १०४, ४७-४९) । ये युधिष्ठिर की सभा में विराजमान होते थे (२. ४, १७) । इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, १८) । 'अथ काक्षीवतः पुत्रं गौतमस्य महात्मनः । शुश्राव तपसि श्रान्तमुदारं चण्डकौशिकम् ॥', (२. १७, २२) । 'ततो राजगृहं गच्छेत्तीर्थसेवी नराधिप । उपस्पृश्य ततस्तत्र काक्षीवानिव मोदते ॥', (३. ८४, १०५) । पूर्वदिशा के ऋषियों में से एक (१२. २०८, २७) । इन्होंने विष्णु की तपस्या करके परम सिद्धि प्राप्त की थी (१२. २९३, १५) । तपस्या का आश्रय लेने से ही अपनी-अपनी प्रकृति को प्राप्त हुये ऋषियों में से एक यह भी थे (१२. २९६, १४) ।

काक्षीवती (कक्षीवत् की स्त्रीवंशज) = भद्रा (१. १२१, १७) ।

काञ्चन, मेरु द्वारा स्कन्द को दिये गये दो पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ४७) ।

काञ्चनच्छविस् = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

काञ्चनवर्मन् = हिरण्यवर्मन् (५. १८९, २०; १९२, २०) ।

काञ्चनष्ठीविन् = सुवर्णष्ठीविन् (१२. ३०, १. ३; ३१, २४) ।

काञ्चनाक्ष, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ५७) ।

काञ्चनाक्षी, नैमिषारण्य में बहनेवाली सरस्वती का नाम है (९. ३८, ४. १९) ।

कान्च्य, एक जाति के लोगों का नाम है। ये दुर्योधन की सेना में विद्यमान थे (५. १६०, १०३; १६१, २१) । युधिष्ठिर की सेना में इनकी उपस्थिति का उल्लेख (८. १२, १९) ।

कात्यायनी = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ६ ।

काद्रवेय (बहु०), (कद्रू के पुत्र और वंशज) = नाग। इन्होंने सर्पों के विनाश के लिये होनेवाले जनमेजय के सर्पसत्र में भस्म होने से बच निकलने का परामर्श किया (१. ३७, १०) । छः काद्रवेयों की गणना (१. ६५, ४१) । अर्जुन के जन्मोत्सव पर इनकी उपस्थिति का उल्लेख (१. १२३, ५०) । ये अर्जुन के पक्ष में थे (८. ८७, ४३) ।

कानन (बहु०) : १२. ३३२, ३० ।

१. कान्त = स्कन्द (३. २३२, ४) ।

२. कान्त = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

३. कान्त = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

कान्तारक, एक जनपद का नाम है (२. ३१, १३) ।

कान्ति, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४०) ।

कान्यकुब्ज, गाधि की राजधानी का नाम है (१. १७५, ३) । यहाँ पर कौशिक और विश्वामित्र ने इन्द्र के साथ सोमपान किया था (३. ८७, १७) । गाधि की राजधानी होने का उल्लेख (३. ११५, २०) । 'गंगायां कान्यकुब्जे वै ददौ सत्यवतीं तदा', (३. ११५, २८) । 'पुरा हि कान्यकुब्जे वै गाधेः सत्यवतीं सुताम्', (५. ११९, ४) । 'अदूरे कान्यकुब्जस्य गंगायास्तीरमुत्तमम् । अश्वतीर्थं तदद्यापि मानवैः परिचक्ष्यते ॥', (१३. ४. १७) ।

कान्वशिरस्, एक जाति का नाम है, जो पहले क्षत्रिय थी; किन्तु ब्राह्मणों से ईर्ष्या रखने के कारण नीच भाव को प्राप्त हो गई (१३.३५,१७) ।

कापालिन् = शिव, व० स्था० ।

कापाली = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ४ ।

१. कापिल, एक वर्ष का नाम है (६. १२, १४) ।

२. कापिल : 'कापिलं तेज आसाद्य मत्कृते निधनं गताः', (३. १०७, ३७) । 'कापिलं मण्डलम्', (१२. २१८, ११) । 'योगशास्त्रं च निखिलं कापिलं चैव भारत', (१२. ३२५, ४) । 'विरञ्चि इति यत्प्रोक्तं कापिलं ज्ञानचिन्तकैः', (१२, ३४२, ९४) ।

३. कापिल = साङ्ख्य (१२. ३०१, ५४. ८५) ।

कापिलेय = पञ्चशिख । इनका इसलिये यह नाम पड़ा, क्योंकि इन्होंने कपिला का स्तनपान किया था (१२. २१८, ६. १६. १७. १९) ।

कापी, एक भारतीय नदी का नाम है (६. ९, २४) ।

कापोति, उञ्छवृत्ति वाले एक ब्राह्मण का नाम है (देखिये इस पर नीलकण्ठी : 'कापोतिः कपोतवदेकैकं कणं आदत्ते स कापोतिः', (४. ९०, २४) ।

१. काम, धर्म के पुत्र और रति के पति का नाम है (१. ६६, ३२-३३) । महादेव, अन्तक, काम और क्रोध के सम्मिलित अंश से अश्वत्थामा की उत्पत्ति हुई (१. ६७, ७२) । काम और क्रोध वसिष्ठ जी के चरण दबाते रहे हैं (१. १७४, ६) । 'कामवश्यौत्सुक्यकरान् कामस्येव शरोत्करान्', (३. १५८, ६७) । 'कामबाणाभिसन्तप्तः', (३. २८०, ३) । 'कामबाणार्तः', (३. २८१, २) । 'अत्र कामश्च रोषश्च शैलश्चोमा च संबभुः', (५. १११, १०) । 'विश्वेश्वर उमापतिः काममभिवर्तमानमनङ्गत्वेन शममनयत्', (१२. १९०, १०) । 'काम क्रोधौ', (१२. १९९, ११५. ११६) । 'क्रोधं कामस्य देवेशः सहायं चासृजत्प्रभुः', (१३. ४०, १०) । 'असृजन्त प्रजाः सर्वाः कामक्रोधवशं गताः', (१३. ४०, ११) । 'सनातनो हि संकल्पः काम इत्यभिधीयते । रुद्रस्य तेजः प्रस्कन्नमग्नौ निपतितं च यत् ॥', (१३. ८५, ११) । सात धरणीधरों में से एक यह भी हैं (१३. १५०, ४१) । 'गाथाः कामगीताः', (१४, १३, १२) ।

तु० की० काम के निम्नलिखित पर्याय :

*अनङ्ग : ३. १५८, ६८; ४. १४, १७; ५. १७५, १०; १२. १९०, १० (नाम की व्युत्पत्ति); १३. १४, २१७; ४१, ८।

*कन्दर्प : १. १८७, ५. १२; २९४. २०; ३. ५३, १५; २८१, ३; ६. ३४, २८ (कृष्ण के साथ समीकृत)।

*जगत्पति, व० स्था०।

*मकरध्वज, व० स्था०।

*मनोभव, १. १९१, १३।

*मन्मथ : १. ७१, ४१; १५४, ८; १७१. ४०; १७३, २८; ३. ४६, ३. १०; ५४, २८; ६८, १२; १५८, ६५; ४. १४, २६. ४०।

*सङ्कल्पज : १. १८७, ३।

*स्मर : ७. १८४, ४८।

२. काम, एक अग्नि का नाम है (३. २१९, २३)।

३. काम, स्थाणु द्वारा प्रदत्त स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, २६)।

४. काम = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

५. काम = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामकृत् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामक्रोधौ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कामघ्न = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कामचरी, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, २३)।

कामजित् = स्कन्द (३. २३२, ४)।

कामठक, धृतराष्ट्र के कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र में जल मरा था (१. ५७, १६)।

१. कामद = सूर्य (३. ३, २४)।

२. कामद = स्कन्द (३. २३२, ४)।

३. कामद = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कामदा, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, २७)।

कामदुघ : 'लोकाः कामदुघाः', (३. २६१, २०)। 'सर्वाः कामदुघा गावः', (७. ६९, ४)। 'लोकान्कामदुघान्', (९. ४३, ४५; ११. २, १५)। 'सर्वकामदुघां धेनुं सर्वकामगुणान्विताम्। ददाति यः सहस्राक्ष स्वर्गं याति स मानवः;, (१३. ६२, ६३)।

कामदुह् : 'सर्वकामदुहां वरा', (१. ९९, ९)। 'नन्दिनीं नाम राजेन्द्र सर्वकामधुगुत्तमाम्', (१. ९९, १४)। 'कामधुग्धेनुर्वसिष्ठस्य', (१. १७५, ९)। ३. ५४, १८। 'धेनुः कामधुक्', (६. ९, ७१)। 'धेनूनामस्मि कामधुक्', (६. ३४, २८)। ७. ६९, ४; १३. ५१, ३३; १४. २१, १५।

कामदुह : 'तैस्तैर्गुणैः कामदुहास्त्वथ भूत्वा नरं प्रदातारमुपैति सा गौः', (३. १८६, ११; १३. ५७, २८)।

कामदेव = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामनाशक = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कामन्द, एक ऋषि का नाम है (१२. १२३, १२)। इनका आङ्गरिष्ठ के साथ संवाद (१२. १२३, १५)।

कामन्दक = कामन्द। 'कामन्दकस्य संवादमाङ्गरिष्ठस्य चोभयोः', (१२. १२३, ११)।

कामपाल = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामप्रद = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामशास्त्र : १. २, ३८३; १२. २५४, ८।

कामहन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कामा, पृथुश्रवस् की पुत्री का नाम है जो अयुतनायी की पत्नी तथा अक्रोधन की माता थीं (१. ९५, २१)।

कामाख्य, एक तीर्थ का नाम है : 'कामाख्यं तत्र रुद्रस्य तीर्थं देवनिषेवितम्', (३. ८२, १०५)।

कामाङ्गनाश = शिव (१३. १४, ३१४)।

कामात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ६३)।

कामारि = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कामिन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

काम्पिल्य — दक्षिण पाञ्चाल का एक नगर जो द्रुपद की राजधानी था (१. १३८, ७३)। विवाह के पश्चात् काम्पिल्य नगर में शिखण्डी का आगमन (५. १८९, १३)। दशार्णराज ने एक समय इसके निकट पहुँच कर किसी ब्राह्मण को दूत बनाकर वहाँ भेजा था (५. १९२, १४)। प्राचीनकाल में यहीं राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे, जिनके यहाँ पूजनी नामक चिड़िया थी (१२. १३९, ५)।

***काम्बोज,** पश्चिमोत्तर भारतखण्ड का एक जनपद और वहाँ के निवासियों का नाम है (१. ६७, ३२)। अर्जुन ने दरदों सहित यहाँ के निवासियों को विजित किया था (२. २७, २३. २५)। युधिष्ठिर के रथ में काम्बोज देश में उत्पन्न (काबुली) घोड़े जोते गये (२. ५३, ५)। यह भविष्यवाणी कि काम्बोज-देशीय म्लेच्छगण कलियुग में राजा होंगे (३. १८८, ३६)। 'काम्बोजा ऋषिका', (५. ४, १५)। काम्बोज-योद्धा दुर्योधन के सैनिक थे (५. १६०, १०३; १६१, २१)। महाभारतकाल में इस देश का राजा सुदक्षिण था, जो महारथी माना गया था (५. १६६, १०३)। उत्तर दिशा में इसकी स्थिति (६. ९, ६५)। दुर्योधन के आगे-आगे चले (६. १७, २७)। 'सुदक्षिणं तु राजेन्द्र काम्बोजानां महारथम्', (६. ४५, ६६)। 'श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धः काम्बोजानां महारथम् (६. ४५, ६८)। भीष्म-निर्मित गरुडव्यूह के पुच्छस्थान में काम्बोज खड़े किये गये थे (६. ५६, ७)। भीष्म के व्यूह में (६. ७१, १७)। काम्बोज योद्धा युद्ध में त्रिगर्त का अनुगमन कर रहे (६. ८७, १०)। राजपुर जाकर कर्ण ने काम्बोजों को विजित किया था (७. ४, ५)। ये द्रोण के व्यूह में स्थित थे (७. ७, १४)। कृष्ण ने इन्हें पहले ही विजित कर लिया था (७. ११, १७)। द्रोण द्वारा निर्मित गरुडव्यूह के ग्रीवा भाग में इनके उपस्थित होने का उल्लेख (७. २०, ७)। काम्बोज-योद्धा धृष्टद्युम्न का अनुगमन कर रहे थे (७, २३, ४२. ४३)। अर्जुन पर आक्रमण करते हैं (७. ९१, ३७)। इनका राजा सुदक्षिण युद्ध में मारा जाता है (७. ९२, २६)। 'एते दुर्वारणा नाम काम्बोजा यदि ते श्रुताः', (७. ११२, ४३)। ७. ११२, ४८। सात्यकि द्वारा आक्रमण (७. ११३, ६१)। ७. ११९, १४. २०. २७. ४५ (सात्यकि ने सहस्रों काम्बोजों आदि का वध कर दिया)। 'काम्बोजसैन्यम्', (७. ११९, ५२)। 'जित्वा यवनकाम्बोजान्', (७. १२०, १)। 'काम्बोजानां च वाहिनीम्', (७. १२०, ९)। शक, काम्बोज आदि सात्यकि पर आक्रमण करते हैं (७. १२१, १३)। 'नदीजकाम्बोजवनायुजैश्च', (८. ७, ११)। कर्ण इन्हें पहले ही विजित कर चुके थे जिस कारण ये लोग दुर्योधन को भेंट अर्पित करते थे (८. ८, १८; ९, ३३)। कर्ण-व्यूह में इनकी स्थिति (८. ४६, १५)। 'प्रत्यक्षं च समासाद्य पार्थः काम्बोजरक्षितम् (८. ५६, १०७)। सुदक्षिण के भ्राता का वध (८. ५६, ११५)। 'काम्बोजानामयुतम्', (८. ७०, ४)। कर्ण ने काम्बोजों को पहले ही विजित कर लिया था (८. ७९, ४६)। इन्होंने अर्जुन पर आक्रमण किया (८. ८८, १७)। ये युद्ध में मारे जा चुके थे (९. १, २७)। 'अश्वत्थामा पृष्ठतोऽभूत्काम्बोजैः परिवारितः', (९. ८, २६)। काम्बोज और यवन स्त्रियाँ मृत जयद्रथ को घेरकर खड़ीं थीं (११. २२, ११)। बर्बर और असभ्य जातियों में इनकी गणना (१२. ६५, १४)। ये मल्लयुद्ध में निपुण थे (१२. १०१, ५)। उत्तर दिशा की असभ्य जातियों में इनकी गणना (१२. २०७, ४३) ये शूद्र के रूप में च्युत हो गये थे (१३. ३३, २१)।

१. काम्बोज (काम्बोजों का अधिपति) = सुदक्षिण। 'सुदक्षिणश्च काम्बोजः', (१, १८६, १५) काम्बोजराज ने काले, नीले और लाल रंग के कदली मृग के चर्म तथा अनेक बहुमूल्य कम्बल युधिष्ठिर के लिये भेंट में भेजे थे (२. ४९, १९; ५१, ३)। ५. १९, २१; ५८, १०; ९५, २०; १५५, ३२; १६०, १२२, १६१, ४० (दुर्योधन की सेना में इनकी स्थिति); १६६, १; ६, १६, १५; ५१, १८; ६५, ३१; ९९, २; १०२, २४; १०८, ५८;

११०, १५; ७. २०, ९; ७४, १६; ८७, २६; ९१, ३७; ९२, १७. ७०. ७६ (अर्जुन द्वारा इनका वध); १५०, २३ (काम्बोजं निहतं); ८. ७२, १९; ९. २, १८ (दुर्योधन के पक्ष में); २४, २९; २०, ३४ (मृत व्यक्तियों के साथ इनका उल्लेख); २५, १ । तु० की० **काम्बोजराज** ।

२. काम्बोज = सुदक्षिण का पिता : 'काम्बोजस्य च दायादे हते राजन् सुदक्षिणे', (७. ९४, २) । तु० की० **काम्बोजराज** ।

३. काम्बोज (काम्बोजराज का पुत्र) = सुदक्षिण के लघुभ्राता का नाम है जो अर्जुन के द्वारा मारा गया (८. ५६, ११३) ।

४. काम्बोज, एक प्राचीन राजा का नाम है जिसने धुन्धुमार से खड्ग ग्रहण किया । मुचुकुन्द को इनसे खड्ग की प्राप्ति हुई (१२. १६६, ७७) ।

५. काम्बोज : 'अथ काम्बोजजैरश्वैर्महद्भिः शीघ्रगामिभिः', (३. ७१, १३) । 'काम्बोजमुख्यानां नदी जानां च वाजिनाम्', (६. ९०, ३) । काम्बोज देशीय अश्व नकुल को वहन करते हुये कौरव-सैनिकों की ओर दौड़े (७. २३, ७) । धृष्टकेतु काम्बोज देशीय चितकबरे अश्वों द्वारा युद्धभूमि की ओर लौटा (७. २३, २३) । 'युक्तैः परमकाम्बोजैर्जवनैर्हेममालिभिः', (७. २३, ४२) । 'काम्बोजानथ वाल्हिकान्' (७. ३६, ३६) । 'काम्बोजास्तरणोचितः', (७. ९२, ७३) । 'काम्बोजान्... हयवरान्', (७. १२१, २७) । 'काम्बोजैर्जवनैर्हयैः', (७. १२५, २५) । 'युक्तं परमकाम्बोजैस्तुरगैर्हेममालिभिः', (१०. १३, २) । 'काम्बोजं पश्य दुर्धर्षं काम्बोजास्तरणोचितम्', (११. २५, १) । 'शतं वै यस्तु काम्बोजान्ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छति । नियतेभ्यो महीपाल स च पापात्प्रमुच्यते ॥', (१२. ३५, १४) ।

१. काम्बोजराज = सुदक्षिण (३. १०८, १४; १११, १८) ।

२. काम्बोजराज = सुदक्षिण-पिता : 'ततः काम्बोजराजस्य पुत्रः शूरः सुदक्षिणः', (७. ९२, ६१) । 'पुत्रः काम्बोजराजस्य', (७. ९२, ७५) ।

काम्य = शिव (७. २०२, ३०) ।

१. काम्यक, एक वन का नाम है । 'गमनं काम्यके', (१. २, १५७) । 'काम्यकागमनम्', (१. २, १८९) । 'काम्यके काननश्रेष्ठे', (१. २, १९७) । 'प्रययुः काम्यकं वनम्', (३. ३, ८६) । 'काम्यकं नाम ददृशुर्वनं मुनिजनप्रियम्', (३. ५, ३) । ३. ५, ५. ६; ६, ११ । 'काम्यकं नाम तद्वनम्', (३. ११, ३) । ३. २२, ५३: ३६, ४१. ४३; ४७, २४. ३४; ५०, १२; ५१, १६; ५२, २; ८०, १. ४. ४५. २६. ३०; ८६, १७. २१; ९२, ९२, २७; ९३, १९ । 'काम्यके पुनराश्रमे', (३. १४६, ६) । 'काम्यकं पुनराश्रमम्', (३. १४६, ७) ।' 'काम्यकात् प्रव्रजितः', (३. १६४, १५) । 'स्वस्ति प्राप्नुहि कौन्तेय काम्यकं पुनराश्रमम्', (३. १६६, १३) । ३. १६७, ११; १८२, १८; १८३, १ । 'रम्यं काम्यकं काननोत्तमम्', (३. २५८, १३) । ३. २५८, १६; २६४, १. ७; २६८, २२; २६९, ५; २७२, ८१; २९९, १६; ३१०, ४२; ३११, २; ७. १८३, ३० ।

२. काम्यक, एक सरोवर का नाम है (२. ५२, २०) ।

काम्यकवनप्रवेश—"युधिष्ठिर ने कहा : 'भूरिश्रवा, शल, जलसन्ध, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन तथा अन्य धार्तराष्ट्र, सभी अस्त्रविद्या के ज्ञाता हैं । हमने जिन राजाओं तथा भूपालों को युद्ध में कष्ट पहुँचाया है वे सभी कौरव-पक्ष में मिल गये हैं और उनकी सैन्य शक्ति तथा कोष भी सम्पन्न हैं । दुर्योधन ने अपने समस्त सैनिकों को हर प्रकार की उपभोग सामग्री प्रदान की है जिससे वे सब उसके लिये अपना प्राण दे देंगे । यद्यपि भीष्म, द्रोण तथा कृप का आन्तरिक स्नेह धार्तराष्ट्रों तथा हम लोगों के प्रति समान ही है, तथापि वे दुर्योधन का अन्न खा रहे हैं अतः उसका ऋण अवश्य चुकायेंगे ।' जब युधिष्ठिर इस प्रकार कह रहे थे तो उसी समय व्यास वहाँ उपस्थित हुये और युधिष्ठिर को एकान्त में ले जाकर उन्हें प्रतिस्मृति नामक विद्या का उपदेश दिया । व्यास ने बताया कि उस विद्या के द्वारा अर्जुन, महेन्द्र, रुद्र, वरुण, कुबेर और यम आदि से दिव्यास्त्र प्राप्त कर सकते हैं । व्यास ने युधिष्ठिर आदि को उस स्थान पर निवास करने वाले तपस्वियों की असुविधा का निवारण तथा वहाँ के मृगों और वृक्षों आदि का विनाश न करने की दृष्टि से अन्यत्र चले जाने का परामर्श दिया । इस प्रकार उपदेश करके व्यास अन्तर्धान हो गये । तदनन्तर अनेक ब्राह्मणों के साथ पाण्डवों ने सरस्वती के तट पर स्थित काम्यक वन में प्रवेश किया और धनुर्वेद, पितृयज्ञ, और देवों तथा ब्राह्मणों की सेवा में रत रहते हुये निवास करने लगे (३. ३६) ।"

काम्या, एक स्वर्गीय अप्सरा का नाम है जो अर्जुन के जन्मोत्सव में नृत्य करने आई थी (१. १२३, ६४) ।

कायव्य, एक डाकू का नाम है (१२. १३५, ३. १३. २३–२४) । 'कायव्यचरितम्', (१२. १३५, २५) ।

कायव्यचरित (म्)—"कायव्य नामक एक निषादपुत्र ने दस्यु होने पर भी सिद्धि प्राप्त कर ली थी । वह क्षत्रिय पिता और निषाद जातीय माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, अतः क्षत्रिय धर्म का निरन्तर पालन करता था । वह प्रहार-कुशल, शूरवीर, बुद्धिमान् , शास्त्रज्ञ, क्रूरतारहित, ब्राह्मण भक्त और गुरुपूजक था । प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल के समय वह मृगों के शिकार के लिये जाया करता था । वह पारियात्र पर्वत पर निवास करनेवाले समस्त प्राणियों के धर्मों का ज्ञाता और सम्पूर्ण निषादों में सर्वाधिक निपुण था । वह अकेला ही सैकड़ों सैनिकों को विजित कर लेता था और उस वन में रहकर अपने अन्धे तथा बहरे माता-पिता की सेवा-पूजा किया करता था । एक दिन कई सहस्र डाकूओं ने उसे अपना नायक बनाया । इसने उन दस्युओं से यह वचन लिया कि वे स्त्रियों और ब्राह्मण आदि को क्षति नहीं पहुँचायेंगे । इस प्रकार कायव्य ने अपने पुण्यकर्म से सिद्धि प्राप्त कर ली और अन्य दस्युओं को भी पाप से बचा लिया (१२-१३५) ।"

कायशोधन, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ४२) ।

१. कारण (म्) = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

२. कारण (म्) = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

१. कारन्धम, पञ्चनारीतीर्थों में से एक का नाम है जिसका अर्जुन ने दर्शन किया (१. २१६, ३) ।

२. कारन्धम, करन्धमपुत्र आविक्षित् का नाम है (१४. ३, २३) । इसकी उत्पत्ति त्रेतायुग के आरम्भ में हुई (१४. ४, १७) । 'कारन्धमात्मज', मरुत (१४. ८; ३४) ।

कारपवन, सरस्वती नदी सम्बन्धी एक तीर्थ का नाम है जहाँ बलराम पधारे थे (९. ५४, १२) । 'तं देशं कारपवनाद्यमुनायां जगाम ह', (९. ५४, १५) ।

कारस्कर, एक जाति के लोगों का नाम है । अन्य लोगों के साथ ये भी युधिष्ठिर की सेवा में लगे रहते थे (२. ५०, २०) । धर्महीन लोगों के साथ इनका उल्लेख (८. ४४, ४३) ।

कारावर, एक जाति का नाम है (१३. ४८, २६) ।

कारीषि, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम है (१३. ४, ५५) ।

१. कारूष, वैवस्वत मनु के छठे पुत्र का नाम है (१. ७५. १६) ।

२. कारूष, करुप देश के अधिपति का नाम है । शिशुपाल ने विशालानरेश की कन्या भद्रा का करूषराज के वेश में उपस्थित होकर अपहरण कर लिया था (२. ४५, ११) ।

३. कारूष, एक देश का नाम है : 'कारूषे च समुद्रान्ते', (२. ५२, ८) ।

४. कारूष (पा:), बहु०, एक जनपद = **करूष** (बहु०) । ये लोग भीष्म के गरुडव्यूह के बाँयें पंख के स्थान में खड़े थे (६. ५६, ९) । द्रोण को व्याकुल कर देने का इनका उल्लेख (७. ९, २८) । 'चेदिकारूपकोसलाः', (७. २१, २३) । द्रोण ने इनको विजित किया था (७. २१, २९.) इन्होंने भी अन्य लोगों के साथ युद्ध में अर्जुन और भीमसेन का अनुसरण किया (७. १५६, ५१) । 'कारूषाः कोसलाः', (८. १२, १९) । 'चेदिकारूपमत्स्यानाम्', (८. ३०, २७) ! ८. ४७, १७ ।

इन्होंने भी अन्य लोगों के साथ वसुषेण को घायल किया (८. ४९, ३४)। कर्ण ने इनका संहार किया (८. ५६, २)। ८. ७३, ६; ७८, १०।

कारूपक, भी अन्य राजाओं के साथ क्रोधवश नामक दैत्यों से उत्पन्न हुये थे (१. ६७, ६४)। उन राजाओं में एक यह भी थे जिनके पास पाण्डवों ने दूतों द्वारा रणनिमन्त्रण भेजना आवश्यक समझा (५. ४, १८)।

कारूषाधिपति—ये चोर डाकुओं को मारने वाले थे। अन्य राजाओं के साथ ये भी द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये (१. १८६, १६)।

कार्णि, कर्णपुत्र = वृषसेन (८. ८४, ४०)। तु० की० **कर्णपुत्र, कर्णसुत, कर्णात्मज।**

कार्तयुग : 'कार्तयुगप्रधान', (ययाति के लिये प्रयुक्त हुआ है : १. ९०, १)। 'कार्तयुगाने तान्धर्मान्', (१२. ६९, ८६)। 'कार्तयुगधर्माणो भागाः', (१२. ३४०, ५६)।

कार्तवीर्य, हैहयराज कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन का नाम है। 'कार्तवीर्यवधः', (१. २, १६९)। 'कार्तवीर्यसमः', (१. १२३, ३८)। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, ११)। ये तपोबल से सम्राट हुये थे (२. १५, १५)। उन राजाओं में से एक यह भी थे जो अपने से बड़ों का अपमान करके सेनासहित नष्ट हो गये थे (२. २२, २४)। इन्होंने तपस्या, योग और समाधि में स्थित होकर भयङ्कर आपत्तियों से प्रजा की रक्षा की (३. ३, ११)। 'भोजः कार्तवीर्यसमः', (३. १२, ३३)। 'कार्तवीर्यार्जुनो यथा', (३. ८५, १३०)। 'नरेन्द्रस्य कार्तवीर्यस्य', (३. ९३, ८)। 'हैहयाधिपतेश्चैव कार्तवीर्यस्य', (३. ११५, १०)। ३. ११६, १९. २३. २७; ११७, १। 'कार्तवीर्यसमं युधि......फाल्गुनम्', (३. १४१, १९)। 'सदृशं बाहुवीर्येण कार्तवीर्यस्य पाण्डवम्', (५. ६०, १९)। 'इष्वस्त्रे सदृशो राज्ञः कार्तवीर्यस्य पाण्डवः', (५. ९०, २९)। राम जामदग्न्य ने इनका वध कर दिया (७. ७०, ३)। ७. ९८, ४१। 'शूरः कार्तवीर्यसमो युधि', (७. १४४, ८)। 'कार्तवीर्यसमो वीर्ये', (७. १९४, ८)। 'कार्तवीर्यश्च रामेण भार्गवेण यथा हतः', (८. ५, ५५)। 'कार्तवीर्यसमं वीर्ये कर्णम्', (८. ३१, १५)। 'कार्तवीर्यसमौ चोभौ', (८. ८७, २६)। 'कार्तवीर्यसमो युधि', (८.९०, ११४)। १२. ४९, ४०. ४२. ४७। राम जामदग्न्य द्वारा इनका वध (१२. ४९, ५२)। 'कार्तवीर्यसुता हताः', (१२. ३६०, १६)। 'जामदग्न्येन रामेण सहस्रनयनोपमः। संयुगे निहतो रोपात्कार्तवीर्यो महाबलः ॥', (१२. ३६०, १७)। 'कार्तवीर्यो हतो येन चक्रवर्ती', (१३. १४, २७२)। इन्होंने भी कार्तिक मास में मांसभक्षण का निषेध किया था (१३. ११५, ६९)। 'सहस्रभुजभृच्छ्रीमान्कार्तवीर्योऽभवत्प्रभुः। अस्य लोकस्य सर्वस्य माहिष्मत्यां महाबलः ॥', (१३. १५२, ३)। 'कार्तवीर्यस्य संवादं समुद्रस्य', (१४. २९, १)। 'कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्। येन सागरपर्यन्ता धनुषा निर्जिता मही ॥', (१४. २९, २)।

कार्तस्वर, एक दैत्य का नाम है जो पृथिवी का प्राचीन अधिपति था (१२. २२७, ५२)।

कार्त्तिक, एक मास का नाम है। 'कार्त्तिकस्य तु मासस्य प्रवृत्तं प्रथमेऽहानि', (२. २३, २९)। 'अलक्ष्यः प्रभया हीनः पौर्णमासीं च कार्त्तिकीम्', (६. २, २३)। 'कार्त्तिकं तु नरो मासं यः कुर्यादेकभोजनम्', (१३. १०६, ३०)। 'द्वादश्यां कार्त्तिके मासि', (१३. १०९, १४)। 'कार्त्तिके मासि', (१३. १३२, ७)। तु० की० **कौमुद।**

कार्त्तिकी, कार्त्तिक मास में जिस दिन पूर्ण चन्द्र रहता है उस तिथि, पूर्णिमा, का नाम है : ३. ८२, ३१. ३७. ११५; १८२, १६; १२. १७१, ९. १८; १५. ११, ३; १३, १५; १५, २। तु० की० **कौमुदी।**

कार्त्तिकेय = स्कन्द, व० स्था०।

कार्त्तिकेयस्तव (कार्त्तिकेय की स्तुति)—युधिष्ठिर के पूछने पर मार्कण्डेय ने स्कन्द के नामों की गणना कराते हुये फल आदि का वर्णन किया (३. २३२)।

कार्पासिक, एक प्राचीन देश का नाम है जहाँ निवास करने वाली दासियाँ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेवा-कार्य करती थीं (२. ५१, ८)।

कार्य (म्) = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कार्यरमन् = कृष्ण (१२. ४७, ६३)।

कार्ष्ण—'कार्ष्णं वेदम्', (१. १, २६८; ६२, १८; १८. ५, ४१)।

१. कार्ष्णि, एक देवगन्धर्व का नाम है। इसने भी अन्य गन्धर्वों के साथ अर्जुन के जन्मोत्सव के समय गायन किया था (१. १२३, ५६)।

२. कार्ष्णि (कृष्ण [वासुदेव] का पुत्र) = प्रद्युम्न (३. ११८, २०; १२०, १२; ५. २२, २४)। 'यदि कार्ष्णिर्धनुष्पाणिरिह स्यान्मकरध्वजः', (७. १११, २५)।

३. कार्ष्णि (कृष्णपुत्र) = अभिमन्यु (६. ४७, १५. १९-२१; ६०, २४; ६१, ३. ११; ६२, १४. ४८; ७८, २४; १००, २३. ३०; १०१, १२. १३. १९; ११६, २. ३; ७. १४, ६४. ६५. ७५. ७९; २५, ३३; ३४, १७; ३८, १६; ४१, ३; ४६, १२; ४८, १०; ४९, ३. ३८)। 'प्राप्य दौःशासनिं कार्ष्णिः प्राप्तो वैवस्वतक्षयम्', (७. ५१, ७)। ११. २०, ३। 'अस्य गात्रगतान् बाणान् कार्ष्णि बाहुबलार्पितान्। उद्धरन्त्यसुखाविष्टा मूर्छमाना पुनः पुनः ॥', (११. २५, ११)

४. कार्ष्णि = शुक (१२. ३२५, ४५; ३२६, ५)।

१. काल : 'कालवशं गतान्', (१. १, २२५)। कालमूलमिदं सर्वं भावाभावौ सुखासुखे ॥ कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः। संहरन्तं प्रजाः कालं कालः शमयते पुनः ॥ कालो हि कुरुते भावान्सर्वलोके शुभाशुभान्। कालः संक्षिपते सर्वाः प्रजा विसृजते पुनः ॥ कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः। कालः सर्वेषु भूतेषु चरत्यविधृतः समः ॥ अतीतानागता भावा ये च वर्तन्ति साम्प्रतम्। तान्कालनिर्मितान्बुध्वा न संज्ञां हातुमर्हसि ॥', (१. १, २४७-२५१)। 'कालेनाद्भुतकर्मणा', (१. २, २९)। 'कालदण्डोपमम्', (१. ९, २२)। 'काल इवान्तकोऽपरः', (१. २८, १७)। 'कालकल्पाः', (१. ६५, ३४)। ये ध्रुव के पुत्र थे : 'ध्रुवस्य पुत्रो भगवान्कालो लोकप्रकालनः', (१. ६६, २१)। 'कालरूपधृत्', (१. १३८, ३१)। 'कालेनेव हतम्', (१. २१०, १८)। 'कालदण्डं यमः', (१. २२७, ३२)। 'कालवत्', (१. २२८, १०)। 'कालहता इव', (१. २२८, ३०)। इन्द्र के सभाभवन में इनकी उपस्थिति (२. ७, १४; ८, २९)। 'कालस्येव जिघत्सतः', (२. ४२, १२)। 'कालेन निर्मितः', (२.४६, २३)। 'कालो दण्डमुद्यम्य', (२. ८१, ११)। इनको कृष्ण के साथ समीकृत किया गया है (३. १२, २२)। 'कालान्तकयमोपमम्', (३. २२, ३१)। 'कालान्तकयमोपमः', (३. २७, २५)। 'कालेन ह्यन्तकेन'. (३. ३५, १)। ३. ३५, २। 'निसृष्ट इव कालेन युगान्ते ज्वलनो महान्', (३. ८६, ११) 'कालान्तकयमोपमम्', (३. १३७, १३)। 'कालेनाद्भुतकर्मणा', (३. १५७, ४४)। 'कालान्तकोपमः', (३. १५७, ५०)। 'कालेनैते हताः', (३. १६१, ४४)। 'कालरूपाः', (३. १७०, ५)। 'कालान्तकयमोपमम्', (३. १७८, २७)। ३. २७३, ६। 'कालान्तकयमाद्दते', (३. ३१३, २७)। ३. ३१३, ११८। 'कालान्तकयमोपमम्', (४. ३३, २५)। 'कालमर्जुनरूपेण संहरन्तमिव प्रजाः', (४. ५५, २९)। 'युगान्ते कालनिर्मिताम्', (४. ६२, १७)। 'यमकालोपमद्युती', (५. ३, १६)। 'कालासूर्यानलोपमान्', (५. ३, १९)। 'व्यात्ताननः काल इव', (५. ४८, ६०)। 'कालवशं गताः', (५. ५१, ५९)। 'युयुजे कालधर्मणा', (५. १२०, १२)। 'कालसम्मितम्', (५. १८०, २३)। 'कालोत्सृष्टां प्रज्वलितामिवोल्काम्', (५. १८१, ५)। 'कालान्तकोपमम्', (५. १८४, १०)। ६. ३, ५१. ५४; ८, २०; १४, ६०। 'कालः कलयतामहम्', (६. ३४, ३०)। 'कालदण्डोपमम्', (६. ४५, ८)। 'कालदण्डमिवापरम्', (६. ४५, ३२)। 'कालदण्डोपमाम्', (६. ४८, ८१)। 'कालान्तकयमोपमः', (६. ५४, ४७)। ६. ५४, १०५। 'कालान्तकयमोपमम्', (६. ५५, ३८)। 'कालेनेव युगक्षये', (६. ५७, २)। 'कालोत्सृष्टमिवान्तकम्', (६. ६१, २६)। 'युगान्ते कालवत्', (६. ६३, १३)। 'कालस्येव युगक्षये', (६. ६३, २०)। 'कालमृत्युसमप्रभम्', (६. ६४,

२२)। 'कालोत्सृष्ट इवान्तकः', (६. ६४, ४९)। कालमृत्युसमावुभौ', (६.६४, ६५)। 'कालमिवान्तकाले', (६. ७८, ३८)। 'व्यत्ताननो यथा-कालः', (६. ८४, १९)। ६. ८५, २२। 'कालसंमितम्', (६. ८६, ११)। 'क्रुद्धः काल इवापरः', (६. ८९, २६)। 'कालान्तकयमोपमः', (६. ९१, ८)। 'कालसृष्टमिवान्तकम्', (६. ९१, २४)। 'कालान्तकयमोपमौ', (६. ९४, २१)। ६. ९६, २९। 'कालेमेव युगक्षये', (६. १०२, १४; १०४, ४)। 'कालासृष्टमिवान्तकम्', (६. १०८, ४१)। 'कालवत्', (६. १०९, १३)। 'कालान्तकसमद्युतिः', (६. ११३, १५)। 'कालवत्', (७. ८, १५) 'कालेन वलिना हताः', (७. ७४, ३२)। 'कालनिर्मिता', (७. ७७, १२)। ७. ८०, ६। 'कालकोयम्', (७. ८०, ४७)। ७. ८५, २६। 'मृत्युः कालेन चोदितः', (७. ८८, १५)। 'कालकल्पाः', (७. ९३, ४३)। ७. ९५, २८। 'कालकल्पैः', (७. ११२, ५१)। 'कालसन्निभा', (७. ११७, २१)। 'कालान्तकयमोपमम्', (७. ११९, २५)। 'कालवत्त', (७. ११९, ४९)। 'कालदण्डमिवान्तकः', (७. १२७, ५२)। ७. १२९, ३. ७। 'कालशक्तिमिवापराम्', (७. १३३, २१)। 'यमकालान्तकोपमम्', (७. १३५, ९)। ७. १३५, २२। 'कालान्तकयमोपमम्', (७. १५९, ४८)। 'विक्रमं पार्थाः कालस्येव युगक्षये', (७. १५९, ७०)। 'कालदण्डोग्रधारिणम्', (७. १७५, ३७)। ७. १७९, ४०; १८३, ६२; १८९, २९। 'कालसृष्ट इवान्तकः', (७. १९९, १)। 'कालवत्', (७. १९९, ४६)। ७. २०१, ५१। कृष्ण के साथ समीकृत (७. २०१, ७४; २०२, १०४)। ८. ९, २१। 'कालान्तकयमोपमौ', (८. १५, ३१)। 'कालचक्रवत्', (८. १८, ७)। 'कालदण्डैरिव', (८. २१, २८)। 'मृत्युकालान्तकोपमम्', (८. २३, १७)। 'कालदण्डोपमम्', (८. २५, ३०)। ८. २८, १७। 'कालदण्डः', (८. ३४, ४३)। ८. ३४, ४८। 'कालोविग्रहवानिव', (८. ४७, ५)। 'कालान्तकयमोपमम्', (८. ५१, २०; ५६, १७)। ८. ५९, २५। 'कालसंमितम्..... कालदण्डमिवापरम्', (८. ५९, ५९)। 'काल इवात्तदण्डः', (८. ७६, ८)। ८. ७६, ९। 'कालस्येव युगक्षये', (८. ७७, २८)। 'कालान्तकवपुः', (८. ७८, ५८)। ८. ७८, ५९। 'कालदण्डोधतं यमम्', (८. ८१, ३१)। ८. ८४, ५। 'कालमिवात्तदण्डम्', (८. ८४, १८)। 'यमकालान्तकोपमौ', (८. ८७, १९)। 'कालपाशोपमायसी', (८. ८७, ९७)। ९. १, ३८। 'कालः क्रुद्धः प्रजास्विव', (९. ७, ३२)। 'कालसृष्ट इवान्तकः', (९. ११, २७)। 'कालोदण्डमिवोद्यम्य', (९. ११, ४२. ४६)। 'कालो यमश्च मृत्युश्च', (९. ४५, १७)। 'यमकालोपमौ', (९. ४५, ३०)। ९. ५५, ३१। 'कालेनापीह दण्डिना', (९. ६१, ६६)। 'कालोपसृष्टेन', (९. ६३, ४५)। ९. ६४, ९. १०; १०. ७, ६५; ८, ८। 'कालसृष्ट इवान्तकः', (१०. ८, ४२)। 'कालवत्', (१०. ८, ४७)। 'कालसृष्ट इवान्तकः', (१०. ८, ७७)। १०. ९, २१. २२। 'कालान्तकयमोपमः', (१०. १३, २२)। ११. २, ५, इत्यादि. २३, इत्यादि; ३, ८; ४, १०; ६, ८; ७, १२; ९, १३, इत्यादि। 'युगान्त इव कालेन पतितं सूर्यम्', (११. २३, १५)। 'हन्ता कालः', (१२. १५, १७)। 'कालो यथागतः', (१२. १५, २२)। 'कालधर्ममुपेयिवान्', (१२. ३१, ४५)। 'अपानभूमिं कालस्य', (१२. ४८, ५)। 'कालसृष्टम्', (१२. ६९, ८०)। 'काल इवान्तकः', (१२. ११६, ११)। 'कालं सर्वेशम्', (१२. १२२, ३३)। १२. १२२, ५२। 'कालसंमितः', (१२. १४३, १०. ११)। 'कालधर्ममुपागतः', (१२. १५३, १२)। 'कालवशं याति', (१२. १५३, ४३)। १२. १५३, ४४। 'कालान्तक इवोद्यतः', (१२. १६६, ४५)। १२. १८१, ११. १२; १९६, ६; १९८, ९; १९९, १, इत्यादि; २०६, ११. १२. १४; २२३, १; २२४, १९, इत्यादि; २२७, २९, इत्यादि; २३३. १५; २७५, ४-६. ९; २८०, ३५; २८५, १३. १८; ३०२, १३; ३२०, १०८; ३२१, ७६. ९२; ३४२, १३९ (= रुद्र)। 'कालमन्युवशं गताः', (१३. १, ७)। १३. १, १६. ५०. ५१, इत्यादि. ७०। 'कालान्तकोपमाः', (१३. ३, ४)। १३. १४८, ३९-४० (कृष्ण के साथ समीकृत); १५०, २०. ४१ (सात धरणीधरों में से एक); १६०, ४० (= रुद्र)। 'समयुज्यत कालेन', (१३. १६८, १०)। 'कालाधर्मणा', (१४. ५४, २२; ६१, ३३)। 'कालान्तकयमोपमम्', (१४. ७४, २७)। 'कालाधर्मणा', (१६. ३, ३२)। 'कालपाशग्रहां भीमां नदीं वैतरणीमिव', (१६. ५, १०)। १६. ८, ३३, इत्यादि। 'कालपाशम्', (१७. १, ३)। तु० की० **अन्तक, मृत्यु, यम।**

२. काल = सूर्य (३. ३, १६)।

३. काल = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

४. काल = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कालकञ्ज, कालखञ्ज (॰आः), वहु०, असुरों की एक जाति का नाम है। वरुण के सभाभवन में इनकी उपस्थिति (२. ९, १२)। ये हिरण्यपुर में निवास करते थे (३. १७३, २. १२)। अर्जुन ने इनका विनाश किया (३. १७३, १५)। 'महाकाया महावीर्याः कालखञ्जा इवासुराः', (४. १३, १६)। अर्जुन ने इनको विजित किया था (४. ४९, १०; ६१, २५; ५. ४९, १४)। 'असुराः कालखञ्जाश्च तथा विष्णुपदोद्भवाः', (५. १००, ५)। तु० की० वहु० **कालकेय।**

कालकटङ्कट = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कालकन्द, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६९)।

कालकण्ठ, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६९)।

कालकवृक्षीय, एक मुनि का नाम है। ये इन्द्र की सभा में उपस्थित होते थे (२. ७, १८)। इन्होंने क्षेमदर्शिन् को उपदेश दिया (१२. ८२, ५)। 'मुनिः कालकवृक्षीयः', (१२. ८२, ६. ८२)। ये क्षेमदर्शिन् के पुरोहित हो गये (१२. ८२, ६७)। इनके द्वारा क्षेमदर्शिन् को उपदेश (१२. १०४, ११)।

कालका, महान् असुर-कुल की कन्या का नाम है। इसने कालकेयों को जन्म दिया (१३. १७३, ७)। तु० की० **काला।**

कालकाक्ष, एक दैत्य का नाम है जिसका गरुड ने वध किया था (५. १०५, १२)।

कालकीर्ति, सुपर्ण नामक असुर के अंश से उत्पन्न एक राजा का नाम है (१. ६७, ३७)।

१. कालकूट, समुद्र-मन्थन से प्रगट हुये एक भयानक विष का नाम है जिसका शिव ने पान कर लिया था (१. १८, ४१)। दुर्योधन ने भीमसेन के भोजन में कालकूट मिलाया था। (३. १२, ८०)। 'पीत्वा महाराज कालकूट सुदुर्जरम्', (७. १३५, २७)। तु० की० **कालकूटक।**

२. कालकूट, एक पर्वत का नाम है। शतशृङ्ग जाते समय पाण्डु ने इसे मार्ग में पार किया (१. ११९, ४८)। श्रीकृष्ण आदि ने इन्द्रप्रस्थ से गिरिव्रज जाते समय मार्ग में इसे लाँघा था (२. २०, २६)। यहाँ दुर्योधन की सेना ने पड़ाव डाला था (५. १९, ३०)।

३. कालकूट, उत्तराखण्ड में कालकूट पर्वत के आस-पास के प्रदेश का नाम है जिसे अर्जुन ने उत्तर-दिग्विजय के समय विजित किया था (२. २६, ४)।

कालकूटक, एक विष=कालकूट, का नाम है जिसे दुर्योधन ने भीमसेन के भोजन में मिलाया था (१. १२८, ४५. ५७)।

कालकेय (वहु०), असुरों की एक जाति का नाम है (१. १, १६४; २, १८५)। ये काला के पुत्र थे : 'विनाशनश्च क्रोधश्च क्रोधहन्ता तथैव च। क्रोधशत्रुस्तथैवान्ये कालकेया इति श्रुताः ॥', (१. ६५, ३५)। 'यथा-सुरान्कालकेयान्देवो वज्रधरस्तथा', (२. ४, २३)। इन्होंने वृत्र का अनुसरण किया (३. १००, ३; १०१, २)। हिरण्यपुर में इनकी स्थिति का उल्लेख (३, १७३, ११. १३)। अर्जुन ने इन्हें विजित किया था (५. १५८, ३०)। अर्जुन ने इनका वध कर दिया (७. ५१, १६; १२८, ४६; ८. ७९, ६०. ६२)। 'पूर्वं देवैरजितं कालकेयैः', (८. ८९, ३८)। 'प्रव्राजमेयं कालकेयान्पृथिव्याम्', (१४. ९, ३०)। तु० की० वहु० **कालकञ्ज।**

कालकोटि, नैमिषारण्य के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है। युधिष्ठिर ने तीर्थयात्रा करते समय इसका दर्शन किया (३. ९५, ३)।

कालखञ्ज (वहु०), देखिये वहु० **कालकञ्ज।**

कालघट, वेदविद्या के पारंगत एक ब्राह्मण का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र के सदस्य बने थे (१. ५३, ८)।

कालचक्र (**क्रः**) = सूर्य (३. ३, २१)।

कालज्ञान : ९. ३७, १५. १७।

कालज्वलन = कालाग्नि। 'कालज्वलनसन्निभाः', (७. ९९, ७)। 'काल ज्वलनसन्निभैः', (७. १६६, ३१)।

कालञ्जर, एक पर्वत का नाम है जहाँ देवह्रद में स्नान से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है (३. ८५, ५६. ५७)। 'हिरण्यविन्दुः कथितो गिरौ कालंजरे महान्', (३. ८७, २१)। 'सत्त्वे चित्तं समावेश्य ततः कालंजरो भवेत्', (१२. २४६, ९)। 'गंगायमुनयोस्तीर्थे तथा कालञ्जरे गिरौ। दशाश्वमेधानाप्नोति तत्र मासं कृतोदकः ॥', (१३. २५, ३५)।

कालतीर्थ, अयोध्या के एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से ग्यारह वृषभदान का फल प्राप्त होता है (३. ८५, ११)।

कालतोयक, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४७)।

कालद, एक जनपद का नाम है (६. ९, ६३)।

कालदन्तक, वासुकि-कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, ६)।

कालनाथ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कालनेमि, एक महाबली दानव का नाम है जो इस पृथिवी पर कंस के रूप में उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ६७)।

कालनेमिहन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कालपथ, विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ४, ५०)।

कालपर्वत, एक पर्वत का नाम है। रावण लङ्का से त्रिकूट और कालपर्वत को पार करने के पश्चात् समुद्र के समीप आया (३. २७७, ५४)। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने शिव के पास जाते हुये मार्ग में इसे पार किया (७. ८०, ३१)।

कालपुष्पफलप्रदः = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कालपूजित = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कालपृष्ठ, उन नागों में से एक का नाम है जो शिव के घोड़ों के बालबन्धन बनाये गये थे (८. ३४, २९)।

कालमुख, बहु०, एक जाति के लोगों का नाम है जो मनुष्य और राक्षस दोनों के संयोग से उत्पन्न हुये थे। सहदेव ने दक्षिण-दिग्विजय के समय इन्हें विजित किया (२. ३१, ६७)।

कालयवन, गर्गाचार्य के तेज से उत्पन्न एक शक्तिशाली असुर नरेश का नाम है। इसका नारायण (श्रीकृष्ण) ने वध कर दिया (१२. ३३९, ९५)।

कालयोगिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कालरात्रि : 'कालरात्रिर्यथा', (६. १०४, ३४)। 'कालरात्रिमिवोद्यताम्', (७. १२५, ३२)। 'कालरात्रिनिभा', (७. १६९, २७)। 'कालरात्रिरिवोद्यता', (७. १८३, ८)। ८. ३४, ४८। 'कालरात्रिमिवात्युग्राम्', (८. ८१, २५)। 'कालरात्रीव दुर्दशा', (८. ८१, २९)। 'कालरात्रिमिवोद्यताम्', (९. ११, ५०)। 'कालरात्रिमिव पाशहस्ताम्', (९. १७, ४३)। 'कालरात्रीमिवोद्यताम्', (९. २८, ४०)। १०. ८, ७०. ८४। 'कालरात्रिर्गुणोत्तरा', (१२. ३४७, ५३)। १३. १९, २१। 'कृत्या कालरात्रीव', (१३. ९३, ५८)।

कालवह्नि = कालाग्नि (१२. २२७, ८१)।

कालविञ्ज, एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, ४३)।

कालवेग, वासुकि कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, ६)।

कालशैल, एक पर्वत का नाम है (३. १३९, १)। युधिष्ठिर आदि ने गन्धमादन के मार्ग में इसे पार किया (३. १३९, ४)। तु० की० **कालपर्वत**।

कालसाह्वय, एक नरक का नाम है (१३. ४४, १९)।

कालसूर्य : ५. ९, ४९; ७. ८, २९; १६, १५; १०१, ७; ११७, ३६; ८. २४, २५; ९. ५५, ३८; १३. १४, २७०।

काला, दक्ष प्रजापति की पुत्रियों में से एक और कश्यप की पत्नी का नाम है (१. ६५, १२)। इन्होंने (चार प्रकार के) कालकेयों को उत्पन्न किया (१. ६५, ३४)।

कालाख्य = शिव (१३. १६, १७)।

कालाग्नि : 'कालाग्निसमतेजसम्', (१. ५४, २५)। 'कालाग्निसन्निभम्',) (३. १२४, २३)। 'कालाग्निरिव लोहितः', (३. २२९, ३३)। 'युगान्तकाले सम्प्राप्ते कालाग्निर्दहते जगत्', (३. २७२, ३२)। ४. ५५, ७; ५. ८३, १५। 'कालाग्निसमतेजसम्', (५. १७६, २६)। 'नाम्ना संवर्तको नाम कालाग्नि', (६. ७, २८)। 'कालाग्निमिव', (६. १४, १३)। 'कालाग्निसमतेजसम्', (६. ९२, १५)। 'दीप्तमिव कालाग्निम्', (७. १५, ५)। 'कालाग्न्यनिलवर्चसम्', (७. ४०, ११)। 'शरं कालाग्निसंयुक्तम्', (७. २०२, ८३)। 'कालाग्निसमवर्चसम्', (१२. १६६, ५१)। 'कालाग्निसदृशोपमः', (१२. २८२, ८)। 'कालाग्निसदृशोपमा', (१२. २८४,४७)। १२. ३१२, ८; १३. १५५, ७। 'कालाग्निसमतेजसा', (१३. १६०, ३१)।

कालात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ६६)।

कालाध्यक्ष = सूर्य (३. ३, २२)।

कालानल = कालाग्नि : 'कालानलविषाः', (१. ५७, २२)। ३. १४२, ६०। 'कालानलसमद्युतिः', (३, २०४, २३; २२७, १७)। 'शरं कालानलोपमम्', (५. १८२, २८)। 'कालानलन्निभानि', (६. ३५, २५)। 'कालानलसमप्रभम्', (६. ८२, ३६)। 'कालानलसमौ', (६. १००, ५३)। 'कालानलसंनिभेन', (७. ११८, १४)। 'कालानलद्युतिः', (७. १३९, ६४)। 'भल्लेन कालानलसन्निभेन', (७. १४०, १८)। 'कालानलसमम्', (७. १९७, ३५)। 'कालानलसमप्रख्यम्', (७. २०१, ७)। 'कालानलोपमः', (१२. २८३, ३९)। 'कालानलसमद्युतिः', (१३. १४, २५८)।

कालाप, युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित होने वाले एक मुनि का नाम है (२. ४, १८)।

कालाम्र, भद्राश्ववर्ष के शिखर पर स्थित एक महान् वृक्ष का नाम है (६. ७, १४)। इसका वर्णन (६. ७, १५–१८)।

कालार्क = कालसूर्य (५. १८१, ६)।

कालिक, एक पार्षद का नाम है जिसे पूषा ने स्कन्द को प्रदान किया था (९. ४५, ४३)।

१. कालिका, एक देवी का नाम है जो अन्य देवियों के साथ ब्रह्मा की सभा में उपास्थित होती थीं (२. ११, ४०)।

२. कालिका, एक नदी (?) का नाम है : 'कालिकासंगमे स्नात्वा कौशिक्यरुणयोर्गतः। त्रिरात्रोपोषितो राजन्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥', (३. ८४, १५६)।

३. कालिका—स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, १४)।

कालिकाश्रम, विपाशा नदी पर स्थित एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, २४)।

कालिकासङ्गम – देखिये **२. कालिका**।

कालिकेय, सुबल के पुत्र एक कुरुयोद्धा का नाम है जिसे अभिमन्यु ने पराजित किया था (७. ४९, ७)।

१. कालिङ्ग, कालिङ्गराज श्रुतायुध या श्रुतायुस् का नाम है। ये युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित होते थे (२. ४, २६)। 'कालिङ्गं च महारथम्', (२. ४४, २१)। 'आवन्त्यकालिङ्गजयद्रथेषु', (५. ६२, १६)। ये दुर्योधन की सेना में एक अक्षौहिणी सेना के अधिनायक थे (६. १६, १६)। ये भी पाँच प्रधान महारथियों के साथ दुर्योधन के आगे-आगे चल रहे थे (६. १७, २६)। 'योधयामास समरे कालिङ्गः सह सेनया', (६. ५४, २)। इन्होंने भीम से युद्ध किया (६. ५४, २०. २८. ३१. ७२)।

भीम ने इनका वध कर दिया (६. ५४, ७५)। तदनन्तर इनके चक्र-रक्षकों का भी भीम ने वध कर दिया (६. ५४, ७६)। मृतक योद्धाओं के साथ इनका उल्लेख (११. २५, ६)। तु० की० **कलिङ्ग, कलिङ्गाधिप, कलिङ्गाधिपति, कलिङ्गक, कालिङ्गक, कलिङ्गराज।**

२. कालिङ्ग (कलिङ्गराज पुत्र) = शक्रदेव (६. ५४, १२१)।

३. कालिङ्ग, (बहु०) = बहु० कलिङ्ग, एक जाति के लोगों का नाम है। 'सर्वे कालिङ्गसैन्यानां मनांसि समकंपयत्', (६. ५४, ८६)। 'सर्व-कालिङ्गयोधेषु', (६. ५४, ९१)। ६. ५४, ९९. १००. १०५। 'हत्वा सर्वकालिङ्गान्', (६. ५४, ११७)। ६. ५४, १२१। ये दुर्योधन का अनुसरण करते थे (६. ७०, २८)। इन लोगों ने शकुनि की मदद की (६. ७१, १४)। इन लोगों ने अभिमन्यु पर आक्रमण किया (७. ४६, २२)। अधार्मिक लोगों के साथ इनका उल्लेख (८. ४४, ४३)। ये लोग शाश्वत धर्म के ज्ञाता थे (८. ४५, १४)। कृष्ण ने इनका विनाश किया (१६. ६, ११)।

कालिङ्गक (कलिङ्ग-नरेश)—ये युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में पधारे थे (२. ३४, ११)।

२. कालिङ्गी (कालिङ्ग-नरेश की पुत्री) = करम्भा, जो अक्रोधन की पत्नी थी (१. ९५, २२)।

२. कालिङ्गी, तंसु की पत्नी और ईलिन की माता का नाम है (१. ९५, २७)।

कालिन्दी = यमुना (२. ९, १८; ४. ५, १)।

कालिय, एक नाग का नाम है (१. ३५, ६; ५. १०३, ९)।

१. काली = शान्तनु की पत्नी सत्यवती, जिसने व्यास को जन्म दिया : 'जनयामास यं काली शक्तेः पुत्रात्पराशरात्', (१. ६०, २)। १. १०५, ३; ५. १४७, १९. ३०; १७५, १ (गन्धवती); ६. ११९, ३४।

२. काली = दुर्गा (उमा) : ४. ६, १७; ६. २३, ४; १०. ८, ६९।

कालीयक, एक नाग का नाम है (१. ३५, १०)।

कालेय (बहु०) एक असुर-जाति का नाम है। इनके पुत्रों में से आठ के अंश से आठ पराक्रमी राजा हुये (१. ६७, ४७)। उन आठ पराक्रमी राजाओं में से एक मगध देश में जयत्सेन नामक राजा हुआ (१. ६७, ४८) 'बृहन्नामाष्टमस्तेषां कालेयानां नराधिप', (१. ६७, ५५)। ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ११, ५६)। इन्होंने देवताओं को पराजित कर दिया (३. १०१, ६)। इनके भय से त्रस्त होकर इन्द्र ने नारायण की शरण ली (३. १०१, ९)। इन्होंने समुद्र का आश्रय लिया और मुनियों का भक्षण किया (३. १०२, १)। 'कालोपसृष्टाः कालेयाः', (३. १०२, ७)। 'कालेयभयपीडितम्', (३. १०२, १२)। 'कालेय इति विख्यातो गणः परमदारुणः', (३. १०३, ७)। ३. १०४, १६. १८। जब अगस्त्य ने समुद्र का पान कर लिया तो मृत्यु से बचे हुये कुछ कालेयों ने वसुधा को विदीर्ण करके पाताल में प्रवेश किया (३. १०५, १२. १४)। मार्कण्डेय ने नारायण के उदर में इन्हें देखा (३. १८८, १२०)। तु० की० **असुर,** बहु० **कालकेय।**

कालेहिका, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, २३)।

कालोदक, एक तीर्थ का नाम है। कालोदक, नन्दिकुण्ड, और उत्तर-मानस आदि तीर्थों में स्नान करने से मनुष्य भ्रूणहत्या के भय से मुक्त हो जाता है (१२. १५२, १२; १३. २५, ६०)।

कावेरी, एक नदी का नाम है। यह वरुण की सभा में उपस्थित होकर उनकी उपासना करती थी (२. ९, २०)। इसमें स्नान करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है (३. ८५, २२)। मार्कण्डेय ने इसे अन्य नदियों के साथ नारायण के उदर में देखा था (३. १८८, १०५)। अग्निमाताओं में से एक (३. २२२, २५)। भारतीय नदियों में से एक (६. ९, २०)। १३. १६५, २०. २२।

१. काव्य, कवि प्रजापति के आठ वारुणसंज्ञक पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ८५, १३३)।

२. काव्य = शुक्र, व० स्था०।

काशकुशादयः, काश के अभिमानी देवता का नाम है जो यम की सभा में धर्मराज की उपासना करते हैं (२. ८, ३२)।

काशपौण्ड्र, एक जनपद का नाम है (८. ४५, १४)।

काशि० बहु, एक स्थान के निवासियों का नाम है जिन्हें पाण्डु ने विजित किया (१. ११३, २९)। अर्जुन द्वारा इस देश के विजित होने की भविष्यवाणी हुई (१. १२३, ४०)। भीमसेन ने यहाँ के निवासियों को विजित कर लिया था (५. ५०, १९)। सहदेव ने इन्हें पराजित किया था (५. ५०, ३१)। ये युधिष्ठिर के पक्ष में थे (५. ५७, ३३; ७२, १४)। दिवोदास इनका राजा था (५. ११७, १)। 'काशिनगरम्', (५. १७६, १२)। 'चेदि काशिकरूपाणां नेतारं दृढविक्रमम्। सेनापतिममित्रघ्नं धृष्टकेतुमथादिशत्॥', (५. १९६, २)। 'काशयोऽपरकाशयः', (६. ९, ४२)। 'काशिपुर्याम्', (६. १३, ६)। युधिष्ठिर की सेना में स्थित इन पर भीष्म ने आक्रमण किया (६. ४७, ४)। इन्होंने धृष्टकेतु का अनुसरण किया (६. ५६, १४)। भीष्म ने इनका वध कर दिया (६. १०६, १८; ११६, ७५)। 'काशिपुरम्', (६. १२२, १७)। कर्ण द्वारा विजित (७. ११, १५)। इन्होंने द्रोण पर आक्रमण किया (७. १२५, ५३)। कर्ण ने इन्हें विजित किया जिससे इन्होंने दुर्योधन को भेंट अर्पित की (८. ८, १९)। महायुद्ध में भीष्म ने इन पर विजय प्राप्त की (८. ७३, २९)। 'विषये काशिराजस्य', (१३. ५, ३)। इस देश पर हर्यश्व, सुदेव और उनके बाद दिवोदास ने शासन किया (१३. ३०, १०)। 'विषयः काशीनाम्', (१३. ३०, ५१)। वृषदर्भ उशीनर ने इस पर राज्य किया (१३. ३२, ९)। 'काशीनामीश्वरः', (१३. ३२, ३७)। अम्बा आदि के स्वयंवर के अवसर पर भीष्म ने इन्हें पराजित किया (१३. ४४, ३८)। 'काशिपुर्याम्', (१३. १६८, २६)। यज्ञाश्व इस जनपद में भी गया (१४. ८३, ४)। तु० की० बहु० **काशिक,** बहु० **काश्य।**

१. काशिक, युधिष्ठिर के एक उदार रथी का नाम है (५. १७१, १५)।

२. काशिक (बहु०) = बहु० काशि, एक जाति के लोगों का नाम है जो दुर्योधन के पक्ष में थे (७. २४, ७)। इन्होंने अभिभूः का अनुसरण किया (८. ६, २३)।

काशिकन्या = अम्बा। इसने शिखण्डिन् के रूप में पुनर्जन्म ग्रहण किया (५. ५०, ३४)। ५, १७८, ६. १७; १८०, १७; १८६, २५. २९. ३७।

काशिकरूषराज = अलर्क (३. २५, १३)।

काशिन्, प्रजापति कवि के आठ वारुणसंज्ञक पुत्रों में से सातवें का नाम है (१३. ८५, १३३)।

काशिनगर = वाराणसी (५. १७६, १२)।

काशिनन्दन, काशिराज के पुत्र सुदेव का नाम है (१३. ३०, १४)।

काशिप, काशी के राजा सुवर्णनामन् का नाम है जो जनमेजय पारिक्षित की पत्नी वपुष्टमा के पिता थे (१. ४४, ८)।

१. काशिपति, काशि के राजा का नाम है जो अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका के पिता थे। भीष्म ने इनकी पुत्रियों का अपहरण करके विचित्रवीर्य के साथ विवाह कर दिया (१. १०२, ३)। 'काशिपतेः सुता', (१. १०२, ६०)। 'ज्येष्ठामम्बां काशिपतेः सुताम्', (१. १०२, ६४)। 'काशिपतेः सुता', (१. १०६, २४)। 'काशिपतेः पुरीम्', (५. १७३, ११)। इनकी कन्याओं के भीष्म द्वारा अपहृत होने का उल्लेख (५. १७४, २)। 'ज्येष्ठा काशिपतेः सुता', (५. १७४, ४; १७५, १९. २१; १८६, ३९)। 'ज्येष्ठा कशिपतेः कन्या अम्बानामेति विश्रुता', (५. १९२, ६४)। तु० की० **काशिराज।**

२. काशिपति, काशिदेश के अधिपति महारथी नरेश का नाम है जो वाराणसी पुरी में निवास करते थे। ये युधिष्ठिर के पक्ष में थे (५. ५०, ४१)। इन्होंने द्रोण पर आक्रमण किया (७. ८, २५)। तु० की० **५. काशिराज; २. काश्य।**

३. काशिपति = प्रतर्दन (१२. २३४, २०; १३. १३७, ५)।

काशिपुर = वाराणसी (६. १२२, १७)।

काशिपुरी = वाराणसी (६. १३, ६; १३. १६८, २६)।

१. काशिराज से एक और एकाधिक राजाओं का तात्पर्य है। ये दीर्घजिह्व नामक दानवराज के अंश से उत्पन्न हुये थे (१. ६७, ४०)। 'यः पुत्रं काशीराजस्य वाराणस्यां महारथम्। समरे स्त्रीषु गृध्यन्तं भल्लेनापाहरद्रथात् ॥', (७. १०, ६०)। कृष्ण ने इनका वध कर दिया (१६. ६, १२)।

२. काशिराज, अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका के पिता का नाम है। इन्होंने स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें भीष्म ने आकर इनकी तीनों पुत्रियों का अपहरण कर लिया (१. १०२, १८)। 'काशिराजस्वयंवरे', (५, १६८, ३५)। तु० की० **१. काशिपति।**

३. काशिराज, बृहद्रथ की दोनों पत्नियों के पिता का नाम है (२. १७, १७)।

४. काशिराज = सुबाहु। भीम ने अपनी दिग्विजय के अवसर पर इसे विजित किया था (२. ३०, ६)।

५. काशिराज—ये एक अक्षौहिणी सेना के साथ युधिष्ठिर के पास आये (४. ७२, १६)। युधिष्ठिर के सहायकों में इनकी गणना (५. ८०, १४)। ५. ८३, ३०। युधिष्ठिर की सेना में इनकी उपस्थिति का उल्लेख (६. २५, ५)। ये युधिष्ठिर के क्रौञ्चव्यूह में स्थित थे (६. ५०, ५७; ५१, २७)। इन्होंने आवन्त्य के साथ युद्ध किया (६. ७१, २०)। ७. ८, २८। वसुदान के पुत्र ने इनका वध कर दिया (८. ६, २३)। तु० की० **अभिभू; २. काशिपति; २. काश्य।**

६. काशिराज = सुदेव (१३. ३०, १३)।

काशिराजदुहितरौ, काशिराज की दो पुत्रियों=अम्बिका और अम्बालिका का नाम है (१. ९५, ५१)।

काशिराजन्=२. काशिराज (५. १७६, १८)।

काशिराजसुता = अम्बा (५. १७६, ४४; १७७, २२; १७८, २८.९१)।

काशिराजसुताः = अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका (५. १७३, ९)।

१. काशिराजसुते = अम्बिका और अम्बालिका (१. १०३, ९)।

२. काशिराजसुते, बृहद्रथ की दो पत्नियों का नाम है (२. १७, ५०)।

काशिसुता = अम्बा (५. १८६, १८; १८७, १९)।

काशिसुते = अम्बिका और अम्बालिका (१. १०९, २४)।

१. काशीश, काशि के एक राजा का नाम है जो दुर्योधन के पक्ष में थे (९. २, १७)।

२. काशीश = दिवोदास (१३. ३०, १५)।

काशीश्वरस्य तीर्थं (म्), एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ५७)।

काशेयी, (काशिराज की पुत्री) = सुनन्दा।

१. काश्मीर (बहु०), एक जनपद का नाम है। यहाँ के निवासियों ने युधिष्ठिर को भेंट दी (२. ५२, १४)। 'काश्मीरेष्वेव नागस्य भवनं तक्षकस्य च। वितस्ताख्यमिति ख्यातं सर्वपापप्रमोचनम् ॥', (३. ८२, ९०)। ६. ९, ५३. ६७। राम जामदग्न्य ने इन्हें पराजित किया (७. ७०, ११)। तु० की० बहु० **काश्मीरक।**

२. काश्मीर (वि०) : 'काश्मीरीव तुरङ्गमी', (४. ९, ११)।

१. काश्मीरक (वि०)—इन लोगों को अर्जुन ने अपने दिग्विजय के समय विजित किया (२. २७, १७)। ये लोग युधिष्ठिर के राजसूय में उपस्थित हुये (२. ३४, १२)।

२. काश्मीरक (बहु०), एक जनपद = बहु० काश्मीर। यहाँ के लोग युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित हुये (३. ५१, २६)। कृष्ण ने इन्हें विजित किया (७. ११, १६)।

काश्मीरमण्डल—यहाँ अग्नि और काश्यप, तथा नहुषकुमार ययाति और उत्तर के समस्त ऋषियों के बीच संवाद हुआ था (३. १३०, १०–११)। सिन्धु में गिरने वाली यहाँ की चन्द्रभागा, वितस्ता और महानद नदियों, तथा सिन्धु में स्नान करके मनुष्य मृत्यु के पश्चात् स्वर्गगामी होता है (१३. २५, ७–८)।

१. काश्य, काशि के एक राजा, अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका, का नाम है (१. १०२, ५६)। 'सुतां काश्यस्य' (५. १७८, ४१)।

२. काश्य, युधिष्ठिर के समय के काशिराज का नाम है जो युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में उपस्थित हुये थे (२. ५३, ९)। इनके और अन्य राजाओं के दिये गये धन को युधिष्ठिर जूये में हार गये (२. ६८, २)। इन्हें पाण्डवों की ओर से रणनिमन्त्रण भेजा गया था (५. ४, १९)। इनके पुत्र का नाम अभिभू था (५. १५१, ६३)। ये युधिष्ठिर की सेना में महारथी थे (५. १७१, २२)। 'पुत्रः काश्यस्य वा विभुः', (५. १९६, २८)। ये युधिष्ठिर की सेना में उपस्थित महाधनुर्धर थे (६. २५, १७)। 'पुत्रः काश्यस्य चाभिभूः', (६. ५१, २०; ९३, १३)। 'काश्यस्याभिभुवः पुत्रं सुकुमारं महारथम्', (७. २३, २७)। 'पुत्रः काश्यस्य चाभिभूः', (७- २३, ४१)। धृतराष्ट्रपुत्र जय के साथ इनका युद्ध (७. २५, ४५)। 'पुत्रः काश्यस्य चाभिभूः', (७. ८५, ४१)। शैब्य गोवासन ने इन पर आक्रमण किया (७. ९५, ३८; ९६, ११)। तु० की० **अभिभू, २. काशिपति, ५. काशिराज।**

३. काश्य = ७. बभ्रु (५. २८, १३)।

४. काश्य, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जो शरशय्या पर पड़े भीष्म के पास आये थे (१२. ४७, १० । १३. १४, ३९७)।

५. काश्य (बहु०), एक जनपद = बहु० काशि (८. ४७, १७)।

१. काश्यप, एक ब्रह्मर्षि का नाम है (१. ३, १८२)। १. ४२, ३३. ३६. ३८. ४१। "ये सर्पदंशन से पीड़ित हुये परिक्षित् का प्राण बचाने के लिये हस्तिनापुर जा रहे थे। मार्ग में इनकी तक्षक से भेंट हुयी और इन्होंने तक्षक के डसने से भस्म हुये वृक्ष को अपने मन्त्रबल से पुनः पूर्ववत् हरा-भरा कर दिया जिस पर तक्षक ने इन्हें प्रचुर धन दिया और ये वहाँ से लौट आये (१. ४३, १. ३. ४. ६. ११. १६,१८–२०)।" १. ५०, १७–१९. २३. २४. २७. ३४. ३८ (संवादं पन्नगेन्द्रस्य काश्यपस्य च). ५०–५२। ये भी अन्य लोगों के साथ युधिष्ठिर को सभा में उपस्थित होते थे (३. २६, २३)। इनकी कुछ गाथाओं का उल्लेख किया गया है (३. २९, ३५–४५)। 'अग्नेश्चैवात्र संवादः काश्यपस्य च', (३. १३०, ११)। ३. १८५, २१; २२०, १। भीष्म को घेर कर खड़े होने वाले ऋषियों में एक यह भी थे (१२. ४७, १०)। 'इन्द्रकाश्यपसंवादम्', (१२. १८०, ४)। 'ऋषिसुतं काश्यपम्', (१२. १८०, ५)। १२. १८०, ९. १९. ३९. ५२. ५४; २९६, १४; १३. २२, १०. १२। पृथिवी, अग्नि, काश्यप और मार्कण्डेय का संवाद (१३. २२, १५)। अन्य लोगों के साथ ये भी भीष्म को देखने के लिये आये (१३. २६, ५)। १३. ४७, ६१। राम जामदग्न्य ने दक्षिणा के रूप में इन्हें पृथिवी समर्पित की थी (१३. ६२, ३४)। राम जामदग्न्य ने इनसे प्रश्न किया (१३. ८४, ३८)। ये श्रीकृष्ण के तप को देखने के लिये आये (१३. १३९, ११)। १३. १५०, ७९। पश्चिम के ऋषियों में से एक (१३. १६५, ४२)। १४. १६, १९. २३. २६. ४६; १७, २। तु० की० **कश्यप** और निम्नलिखित शीर्षक।

२. काश्यप (कश्यप का पुत्र या वंशज) = कण्व (१. ७०, २७)। 'महर्षिं काश्यपं द्रष्टुमथ कण्वं तपोधनम्', (१. ७०, ३१)। १. ७०, ३३. ५०. ५१; ७३, २२।

३. काश्यप = विभाण्डक : 'आश्रमश्चैव पुण्याख्यः काश्यपस्य महात्मनः', (३. ११०, २३)। 'काश्यपस्य सुतः', (३. ११०, २५)। ३. ११०, ३४; १११, ४. ५. २१; ११३, ६. ८. १६।

४. काश्यप = राजधर्मन् (१२. १७०, ९. ११; १७१, ७)।

५. काश्यप = विश्वावसु (१२. ३१८, ५५. ७९. ८२)।

६. काश्यप = इन्द्र (?) (१३. १४, ३६)।

७. काश्यप, एक अग्नि का नाम है (३. २२०, १. ९)।

८. काश्यप (द्वि०) = याज और उपयाज (१. १६७, ८)।

९. काश्यप (बहु०) युधिष्ठिर के साथ इनकी उपस्थिति (३. २६, ७)। ३. ११५, २; १२. १६६, २३।

काश्यपद्वीप, एक द्वीप, जो चन्द्रमा में प्रतिविम्बित खरगोश की आकृति में एक कान के रूप में दृष्टिगोचर होता है (६. ६, ५५)।

काश्यपनन्दन (बहु०) = देवता (१३. ६६, २२)।

काश्यपपुत्र = ऋष्यश्रृङ्ग (३. १११, ११)।

काश्यपात्मज = ऋष्यश्रृङ्ग (३. ११०, २७)।

काश्यपि = राजधर्मन् (१२. १७०, ५)।

काश्यपी (कश्यप-पुत्री) = पृथिवी (१३. ६२, ६२; ९१, २५; १५४, ६. ७)।

१. काश्यपेय (कश्यप-पुत्र) = गरुड (१. २३, १३)।

२. काश्यपेय (कश्यप का वंशज) = दारुक (७. १४७, ५५)।

३. काश्यपेय बहु०, (कश्यप के पुत्र) = आदित्य (१३. १५०, १६)।

काष्ठ, कुबेर की सभा में उपस्थित होनेवाले शिव के एक सेवक (?) का नाम है (२. १०, ३५)।

१. काष्ठाः बहु० (कालपरिमाण)—स्कन्द के अभिषेक के समय इसकी उपस्थिति (९. ४५, १५)।

२. काष्ठाः = सूर्य (३. ३, २०)।

३. काष्ठा = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

काहलि = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

किं = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

किंजप्य, कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है (२. ८३, ७९)।

किंदत्त, एक कूपमय तीर्थ का नाम है जहाँ सेर भर तिल दान करने से मनुष्य तीनों प्रकार के ऋणों से मुक्त हो जाता है (३. ८३, ९८)।

किंदम, एक मुनि का नाम है। मृगरूपधारिणी पत्नी के साथ मृग-रूप धारण करके मैथुन करते समय पाण्डु ने इनका वध कर दिया जिस पर इन्होंने पाण्डु को शाप दे दिया (१. ११८, २८)।

किंदान, कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ७९)।

१. किङ्कर एक राक्षस का नाम है जो कल्माषपाद में प्रविष्ट हो गया था (१. १७६, २१)।

२. किङ्करः: 'यमः साक्षादुपागच्छत सकिङ्करः', (३. २९८, ३८)। 'किंकरोद्यतदण्डेन मृत्युना', (८. ५०, २४)। 'अन्तकाले यथा क्रुद्धो मृत्युः किंकरदण्डभृत्', (३. ५६, १२०)। 'वैवस्वतमिव क्रुद्धं किंकरोद्यतपाणिनम्', (९. ३२, ५०)। 'मृत्युर्वैकिङ्करो दण्डः', (१३. ६२, २७)।

३. किङ्कर, बहु०, एक राक्षस जाति का नाम है (२. २, १३२)। 'किंकरैः सह रक्षोभिः', (२. ३, १९)। ये युधिष्ठिर के भवन की रक्षा करते थे (२. ३, २८)। 'तेन चैव मयेनोक्ताः किंकरा नाम राक्षसाः। वहन्ति तां सभां भीमास्तत्र का परिवेदना ॥', (२. ४८, ९)। युधिष्ठिर ने इन्हें बलि दी (१४. ६५, ६)।

किङ्किणीकाश्रम, एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, २३)।

१. कितव = शकुनि (१. २, १३७; ७. ३४, २३)।

२. कितव = दुःशासन (१. १, १५८)।

३. कितव = उलूक (५. १६३, ५४ = कैतव्य)।

४. कितव = (बहु०), एक जाति के लोगों का नाम है। इन्होंने युधिष्ठिर को भेंट अर्पित किया (२. ५१, १२)। इन्होंने भीष्म की रक्षा की (६. १०६, ७)। इन्होंने भीष्म का साथ नहीं छोड़ा (६. ११९, ८१)। ये दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (७. ७, १६)।

किन्नर (बहु०) : 'किन्नरैरप्सरोभिश्च देवैरपि च सेवितम्', (१. १८, २)। ये पुलस्त्य की संतान हैं (१. ६६, ७)। 'सेवितं वनमत्यर्थं महवानरकिंनरम्', (१. ७०, १५)। 'किंनरोद्गीतभाषिणि', (१. १७२, १०)। ये कृष्ण और अर्जुन का सत्कार करते हैं (१. २२८, २१)। ये युधिष्ठिर के सभा-भवन में गायन करते थे (२. ४, ३८)। कुबेर के भवन में इनकी उपस्थिति (२. १०, १४)। इन्होंने वडवा तीर्थ में विष्णु की प्रसन्नता के लिये चरु अर्पित किया (३. ८२, ९४)। ये सौगन्धिक वन में निवास करते हैं (३. ८४, ५)। गोकर्ण तीर्थ में इनकी उपस्थिति का उल्लेख (३. ८५, २५)। गंगाद्वार इनका निवासस्थान है (३. ९०, २०)। हिमालय पर्वत पर इनकी स्थिति (३. १०८, १०)। कैलास पर्वत पर कुबेर के भवन में ये लोग निवास करते थे (३. १३९, १२)। 'किन्नरचरितं गिरिम्', (३. १४३, ६)। 'वानरकिन्नरैः', (३. १४५, १४)। 'गिरिं च चाचारिहरः किन्नराचरितं शुभम्', (३. १४६, १५)। ये कुबेर के सरोवर का सेवन करते थे (३. १५३, ९)। 'किन्नरसेवितम्', (३. १५८, ९९)। ३. १६०, ३६। ये कुबेर के अनुगामी थे (३. १६२, ११)। 'नगोत्तमं प्रस्रवणैरुपेतं दिशां गजैः किन्नरपक्षिभिश्च', (३. १७७, १)। 'कथां वेत्सि मुने दिव्यां मनुष्योरगरक्षसाम् ॥ देवगन्धर्वयक्षाणां किन्नराप्सरसां तथा।', (३. २०१, ४. ५)। 'देवदानवयक्षाणां किन्नरोरगरक्षसाम्।', (३. २२४, ८)। सर्पकिन्नरभूतेभ्यः', (३. २७५, २५)। 'देवदानवकिन्नराः', (३. २९०, २८)। 'गन्धर्वयक्षप्रवराः सकिन्नरमहोरगाः', (४. ७०, १२)। 'सकिन्नरमहोरगम्', (५. १२, २)। 'किन्नरोरगराक्षसाः', (५. १५, १८)। 'मन्दरस्य प्रदेशांश्च किन्नरोद्गीतनादितान्', (७. ८०, २९)। किन्नरैश्चोपशोभितम्', (७ ८०, ३३)। 'सकिन्नरमहोरगा', (७. १११, ३१)। ७. १६३, १४; ९. ४६, ८८। 'यक्षकिन्नरसेवितम्', (७. १६९, ७)। 'किन्नरयक्षराक्षसाः', (१२. २२८, ९३)। 'नरकिन्नररक्षांसि', (१२. २३२, १५)। 'सकिन्नरमहोरगे', (१२. ३०२, ३१)। हिमवत् पर्वत पर इनकी उपस्थिति (१२. ३२७, ४)। 'सकिन्नरमहोरगाः', (३. ३३४, १६)। 'गीतैस्तथा किन्नराणामुदारैः', (१३. १४, ५३)। कुबेर के सभाभवन में इनके उपस्थित होने का उल्लेख (१३. १९, ४१)। 'किन्नरोरगरक्षांसि', (१३. ५८, २९)। 'किन्नरोरगराक्षसाः', (१३. ८३, ८)। 'पिशाचकिन्नराणाम्', (१३. ८७, ४)। 'किन्नरराजजुष्टम्', (१३. १०२, २३)। १३. १४०, ७। 'नरकिन्नरयक्षागाम्', (१४. ४३, १४; ४४, १५)। 'किन्नरा रौद्रदर्शनाः', (१४. ६३, १५)। ये युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में उपस्थित हुये (१४. ८८, ३७)। 'गन्धर्वाश्च सकिन्नराः', (१४. ९२, २५)।

किन्नरी (एकव० और बहु०)—रैभ्य मुनि की पुत्रवधू किन्नरी के समान आश्रम में विचर रही थी (३. १३६, २)। गन्धमादन पर्वत पर किन्नरियाँ क्रीड़ा करती थीं (३. १५८, ३९)। सुदेष्णा ने द्रौपदी से पूछा कि वह किन्नरी अथवा रोहिणी आदि तो नहीं है (४. ९, १५)। 'किन्नरीगीतजुष्टम् (१३. १०२, २०)।

किम्पुना, एक नदी का नाम है जो अन्य नदियों के साथ वरुण की सभा में उपस्थित होती है (२. ९, २०)। मार्कण्डेय ने इसका नारायण के उदर में दर्शन किया (३. १८८, १०५)।

किम्पुरुष (बहु०), एक जाति का नाम है जो पुलह की सन्तान हैं (१. ६६, ८)। अर्जुन ने अपनी दिग्विजय के समय उत्तर दिशा में इन्हें विजित किया था (२. २८, १)। ये अगस्त्य द्वारा समुद्रपान का अद्भुत दृश्य देखने के लिये आये (३. १०४, २१)। ये माणिभद्र की उपासना में लगे रहते थे (३. १३९, ६)। उत्तरदिशा में इनकी स्थिति का उल्लेख (३. १४५, १४)। ये कुबेर के क्रीडास्थलरूप सरोवर की रक्षा करते थे (३. १५३, ९)। ये गन्धमादन पर निवास करते थे (३. १५८, ३८. ९७)। ३. १५९, १७। इन्हों ने भी कुबेर के साथ गन्धमादन पर निवास किया (३. २७५, ३३)। 'देवदानवगन्धर्वयक्षकिम्पुरुषैः', (३. २८१, ३)। ७. १९९, २; १२. १६९, ५। इनकी उत्पत्ति कश्यप की पत्नी के गर्भ से हुई (१२. २०७, २५)। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में ये भी उपस्थित थे (१४. ८८, ३७)।

किम्पुरुषसिंह = द्रुम (५. १५८, ३)।

किम्पुरुषाचार्य=द्रुम (२. ३७, १३; ४४, १६)।

किम्पुरुषेश=द्रुम (२. १०, २९)।

१. किरात (बहु०), एक असभ्य जाति के लोगों का नाम है जिनकी वसिष्ठ की गाय के पार्श्वभाग से सृष्टि हुई (१. १७५, ३७)। 'वङ्गपुण्ड्रकिरातेषु', (२. १४, २०)। इन्होंने भगदत्त का अनुसरण किया (२.

२६, ९)। भीमसेन ने पूर्वदिशा के किरातों के सात राजाओं को विजित किया (२. ३०, १५)। पश्चिम दिशा में नकुल ने इन्हें विजित किया (२. ३२, १७)। इन्होंने युधिष्ठिर को भेंट अर्पित की (२. ५२, ९)। ये युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित थे (३. ५१, २४)। गंगाद्वार में इनकी स्थिति का उल्लेख (३. ९०, २०)। 'किराततङ्गणाकीर्णम्', (३. १४०, २५)। ये भगदत्त की अक्षौहिणी में सम्मिलित थे (५. १९, १५)। ५. ६४, १६. २१। ये दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (५. १९५, ७)। ६. ९, ५१. ५७। उत्तरपूर्व में इनकी स्थिति (६. ९, ६९)। इन्होंने युद्ध में कृप का अनुसरण किया (६. २०, १३)। ये युधिष्ठिर की सेना में सन्नद्ध थे (६. ५०, ४८)। कर्ण ने इन्हें दुर्योधन के लिये विजित किया था (७. ४, ७)। "ये जिन हाथियों पर चढ़े हुये थे वे वही थे जिन्हें दिग्विजय के समय अपनी प्राणरक्षा की इच्छा से किरातों ने अर्जुन को भेंट किया था। रणदुर्मद किरात उन हाथियों के महावत और उन्हें शिक्षा देने में कुशल थे। इनके हाथी अञ्जन नामक दिग्गज के कुल में उत्पन्न हुये थे जिनका स्वभाव अत्यन्त कठोर था। उन्हें युद्ध की अच्छी शिक्षा मिली थी; उनके गण्डस्थल और मुख से मद की धारा बहती रहती थी; वे सबके सब सुवर्ण कवचों से विभूषित थे और युद्ध में वे सब-के-सब ऐरावत के समान पराक्रम प्रगट करते थे। उन गजराजों पर तीक्ष्ण स्वभाव वाले लुटेरे और डाकू आरूढ़ थे, जिन्होंने लोहे के कवच आदि धारण कर रक्खे थे (७. ११२, २८. ३०. ३२-४९)।" ये सब विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर सात्यकि के विरुद्ध युद्ध करने के लिये सन्नद्ध थे (७. ११९, १५)। सात्यकि ने सहस्रों किरातों का वध कर दिया (७. ११९, ४६)। अर्जुन ने इन्हें पराजित किया (८. ७३, २०)। बर्बर जातियों के अन्तर्गत इनकी गणना कराई गई है (१२. ६५, १३; २०७, ४३)। शिव ने किरात का रूप धारण किया (१३. १४, १४१)। इनका शूद्रों के रूप में पतन हो गया था (१३. ३५, १८)। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के साथ दिग्विजय करते समय अर्जुन ने इन्हें पराजित किया था (१४. ७३, २५)। 'काशीनंगान्कोसलांश्च किरातानथ तंगणान्', (१४. ८३, ४)।

२. किरात, अर्जुन से युद्ध करते समय किरातवेषधारी शिव का नाम है : 'देवदेवं किरातरूपं त्र्यम्बकम्', (१. १, १६२)। 'महादेवेन युद्धं च किरातवपुषा सह', (१. २, १५८)। 'किरातवेषसंच्छन्नः', (३. ३९, ५)। ३. ३९, ११. १३. १७. २२. २८. ३२. ३६. ५४-५७. ५९. ६६; १६७, २२. ४३। 'किरातरूपेण स्थितं रुद्रम्', (४. ४९, ७)। 'किरातरूपेण स्थितं शर्वम्', (८. ३१, ३)।

किरातराज (किरातों के अधिपति) पुलिन्द युधिष्ठिर की सेवा में उपस्थित रहते थे (२. ४, २४)। किरातराज सुमना (?) युधिष्ठिर की सभा में उनकी सेवा के लिये बैठते थे (२. ४, २५)। इन्होंने अर्जुन को भेंट में हाथी प्रदान किये (७. ११२, २८)।

किरातराजन् = सुबाहु (३. १७७, ११)।

किरीटकौस्तुभधर = कृष्ण (विष्णु, नारायण) : ३. २०३, १८; ६. ६६, २२।

किरीटभृत्, **किरीटमालिन्**, **किरीटवत्** = अर्जुन, स्था व०।

किरीटितनयात्मज (किरीटिन् का पौत्र) = परिक्षित् (१४. ६७, ११)।

१. किरीटिन् = अर्जुन, व० स्था०।

२. किरीटिन् = नर (१. १९, ३१)।

३. किरीटिन् इन्द्र (१. २९, ६; २. ७, ५)। इन्द्र की आकृति में शिव (१३. १४, १७४)। १३. ४०, २९)।

४. किरीटिन् = शिव (१३. १४, ३८७)।

५. किरीटिन्, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७१)।

किर्मीर, एक राक्षस का नाम है। 'किर्मीरस्य वधश्चात्र भीमसेनेन संयुगे', (१. २, १५०)। भीमसेन ने इसका वध किया था (३. १०, २३)। 'किर्मीरः कथं भीमेन पातितः', (३. १०, ३७)। 'किर्मीरवधसंविघ्नः', (३. १०, ३९)। 'किर्मीरस्य वधम्', (३. ११, १)। 'अहं बकस्य वैभ्राता किर्मीर इति विश्रुतः', (३. ११, २३)। ३. ११, २८. ४६। भीम ने इसका वध कर दिया (३. ११, ६९)। 'किर्मीरं रक्षसां वरम्', (३. ११, ७५)। यह अलायुध का सखा एक महातेजस्वी योद्धा था (७. १७६, ४)। 'हिडिम्बबककिर्मीरा निहता मम बान्धवाः', (७. १७६, ७) 'राक्षसेन्द्रा हिडिम्बकिर्मीरबकप्रधानाः', (७. १८०, ३३)। 'हिडिम्बबक किर्मीरा भीमसेनेन पातिताः', (७. १८१, २३)।

किर्मीरवध : १. २, ४९।

किर्मीरवधपर्वन्, महाभारत के ३१ वें अवान्तरपर्व का नाम है। "धृतराष्ट्र के पूछने पर विदुर ने बताया कि उन्होंने भीमसेन के द्वारा किर्मीरवध के भयङ्कर कर्म के सम्बन्ध में पाण्डवों के कथाप्रसङ्ग में बार-बार सुना था। विदुर ने धृतराष्ट्र को बताया कि जूए में पराजित पाण्डव तीन दिन और तीन रात में हस्तिनापुर से काम्यकवन जा पहुँचे। उस वन में भयंकर राक्षस विचरण करते रहते थे। जब पाण्डवों ने उस वन में प्रवेश किया तो किर्मीर नामक राक्षस उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया : किर्मीर का विस्तृत वर्णन। युधिष्ठिर के पूछने पर किर्मीर ने कहा : 'मैं बकासुर का भाई, किर्मीर हूँ।...... आज सौभाग्यवश देवताओं ने यहाँ मेरे बहुत दिनों के मनोरथ को पूर्ति कर दी है। भीम मेरे भाई का हत्यारा है। इसी प्रकार भीम ने मेरे मित्र हिडिम्ब का भी वध करके उसकी बहन हिडिम्बा का अपहरण कर लिया। अब आज मैं अपने इन पुराने वैरों का प्रतिशोध लूँगा।' किर्मीर की बात सुन कर यद्यपि अर्जुन भी क्रुद्ध हो उस पर पर प्रहार करने के लिये उद्यत हुये, तथापि भीमसेन ने उन्हें रोकते हुये उस राक्षस से स्वयं ही युद्ध करने की इच्छा प्रगट की। भीम और किर्मीर में उसी प्रकार भीषण मल्ल युद्ध हुआ जिस प्रकार प्राचीन काल में वालिन् और सुग्रीव में हो चुका था। अन्ततोगत्वा भीम ने उस राक्षस किर्मीर को उठा कर भूमि पर पटक दिया और उसका वध कर दिया। तदनन्तर द्रौपदी को आगे कर पाण्डव वहाँ से द्वैतवन की ओर गये और उस वन को निष्कण्टक बना कर द्रौपदी सहित वहीं रहने लगे। विदुर ने कहा : 'मैंने महान् वन में जाते और आते समय मार्ग में मर कर गिरे हुये उस भयंकर राक्षस, किर्मीर, के शव को देखा था जो भीमसेन के बल से मारा गया था, और उस वन के ब्राह्मणों के मुख से भीमसेन के इस महान् कर्म का वर्णन भी सुना था।' (३. ११)।"

किलकिल = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

किष्किन्धा, एक पुरी का नाम है जहाँ सहदेव ने वानरराज द्विविद और मैन्द के साथ युद्ध किया था (२. ३१, १७)। ३. २८०, १५. १६. ३९ (वालिन् और सुग्रीव की राजधानी); २८२, ५. ७. १३; २९१, ५७. ५८।

किष्किन्ध्या—देखिये **किष्किन्धा**।

१. कीचक, विराट के साले और सेनापति का नाम है। 'दुष्टात्मनो वधो यत्र कीचकस्य वृकोदरात्', (१. २, २०८)। 'कीचकस्तु महाबलः', (४. १४, ४)। ४. १४, ५. ११. ३८. ४६. ५१. ५२; १५, १. २. ९. १०. १४. १७. १८; १६, १. ५. ७. ९-११. १३. १४. ३१. ३२. ३६. ४९. ५०; १८, ५। 'योऽयं राज्ञो विराटस्य कीचको नाम भारत। सेनानीः पुरुषव्याघ्रः श्यालः परमदुर्मतिः॥', (४. १८, ७)। ४. २१, ३. ४. २१. २२. २४. २७. २९. ३५ (विराटस्य कीचको नाम सारथिः). ४३. ४६. ४८. ५१; २२, १. ७. १२. १४. १८. १९. २३. २५-२७. ३२. ३३-३९. ४३. ५७. ६१. ६५. ६६. ६९. ७३. ७८. ८०. ८६-९०. ९२; २३, १. २. ५ (कीचको हतः)। यह द्रौपदी के कारण ही मारा गया था (४. २३, ७)। ४. २५, १. २. ४। इसने त्रिगर्तों को विजित और उनका वध कर दिया (४. २५, २०)। इसने त्रिगर्तों के राजा सुशर्मन् को अनेक बार विजित किया (४. ३०, २)। ४. ३०, ४। 'कीचके तु हते', (४. ३१, ३)। ५. ८, ५१; ९०, २३। 'कीचको निहतो यथा', (७. १३९, १०८)। 'कीचकः सगणो हतः', (८. ५०, २३)। 'तथा विराटनगरे कीचकेन भृशार्दिताम्', (१०. ११, २५)। 'कीचकेन पदा वधम्', (१२. १६, २१; १४. १२, ११)।

२. कीचक (बहु०), एक जाति का नाम है। 'कीचकानां वधः पर्व', (१. २, ५८)। 'मत्स्यांस्त्रिगर्तान्पञ्चालान्कीचकान्तरेण च', (१. १५६, २)। 'कीचकानां तु मुख्यस्य', (४. २२, ५४)। ४. २३, ९. १९। भीमसेन ने एकसौ पाँच कीचकों का वध कर दिया (४. २३, ३३)। ४. २४, ७। द्रौपदी के लिये बहुत से कीचक मारे गये (४. ४४, ६)। 'हन्ता कीचकानाम्', (४. ७१, ५)। 'सैरन्ध्री द्रौपदी राजन् यस्यार्थे कीचका हताः', (४. ७१, ८)। तु० को० बहु० सूत; बहु० सूतपुत्र।

कीचकवधपर्वन्, महाभारत के ५४ वें अवान्तर पर्व का नाम है। "पाण्डवों ने मत्स्यराज के नगर में प्रच्छन्न रूप से रहते हुये दस मास व्यतीत किये। जब वर्ष पूर्ण होने में कुछ ही समय शेष रह गया तब एक दिन राजा विराट का सेनापति, महाबली कीचक, द्रौपदी को देख कर उस पर आसक्त हो गया। कीचक ने द्रौपदी से प्रणय-याचना की परन्तु द्रौपदी ने उसे फटकारते हुये कहा : 'मैं वीर गन्धर्वों द्वारा सुरक्षित होने के कारण तेरे लिये सर्वथा दुर्लभ हूँ।...यदि तू मेरा अपमान करेगा तो मेरे पति, गन्धर्व, तेरा वध कर देंगे।' परन्तु कीचक ने द्रौपदी की बातों की परवाह नहीं की (४. १४)।" "जब द्रौपदी ने कीचक की प्रार्थना अनसुनी कर दी तो कीचक ने अपनी बहन, विराट् की महारानी सुदेष्णा, से द्रौपदी को मदिरा लाने के लिये अपने पास भेजने की प्रार्थना की। जब सुदेष्णा ने द्रौपदी को कीचक के पास जाने की आज्ञा दी तो भयभीत द्रौपदी मन ही मन भगवान् सूर्य की आराधना करती हुई मदिरा लाने के लिये एक पात्र लेकर कीचक के भवन की ओर चली। द्रौपदी की प्रार्थना सुन कर उसकी रक्षा के लिये सूर्य ने अदृश्यरूप से एक राक्षस को नियुक्त कर दिया। (४. १५)।" "द्रौपदी को देख कर कीचक ने ज्यों ही उसे पकड़ना चाहा, उसने उसे धक्का देकर भूमि पर गिरा दिया और स्वयं भाग कर युधिष्ठिर के पास आ गई। द्रौपदी के पीछे-पीछे कीचक भी आया और द्रौपदी का केश पकड़ कर खींचने लगा, किन्तु उसी क्षण द्रौपदी की रक्षा कर रहे अदृश्य राक्षस ने कीचक को ऐसा धक्का दिया कि वह भूमि पर मूर्छित होकर गिर पड़ा। उस समय अपना भेद खुल जाने के भय से युधिष्ठिर ने भीमसेन को शान्त किया। द्रौपदी ने विलाप करते हुये मत्स्यनरेश महाराज विराट से रक्षा की प्रार्थना की परन्तु उसे सुन कर भी जब मत्स्यराज बलाभिमानी कीचक पर शासन करने में असमर्थ रहे तब उनकी इस अकर्मण्यता को देख कर उन्हें फटकारते हुये द्रौपदी ने सभासदों से अपनी दीन दशा का निवेदन किया जिस पर सभासदों ने द्रौपदी की प्रशंसा तथा कीचक की निन्दा की। उस समय युधिष्ठिर ने द्रौपदी को रानी सुदेष्णा के पास चले जाने का परामर्श देते हुये कहा : 'सैरन्ध्री! अब तू रानी सुदेष्णा के पास जा। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे सूर्य के समान तेजस्वी पति, गन्धर्वगण, अभी क्रोध करने का अवसर नहीं देखते। तुम्हारे पतियों के कुपित होने पर वृत्रहन्ता इन्द्र भी युद्ध में उनका सामना नहीं कर सकते। इस समय तुम चली जाओ। गन्धर्व तुम्हारा प्रिय करेंगे। जिसने तुम्हारा अपमान किया है उसे मार कर वे तुम्हारा दुःख अवश्य दूर कर देंगे।' द्रौपदी ने आकर रानी सुदेष्णा को सारा वृत्तान्त बताया जिसे सुनकर रानी ने कहा : 'यदि तुम्हारी सम्मति हो तो मैं कीचक को मरवा डालूँ।' सुदेष्णा की बात सुन कर द्रौपदी ने कहा : 'उसे दूसरे ही लोग मार डालेंगे, जिनका वह अपराध कर रहा है।' (४. १६)।" उस रात कृष्णा ने भीमसेन के समीप आकर अपने दुःख कर निवेदन किया (४. १७)। द्रौपदी ने भीमसेन के प्रति अपने दुःख के उद्गार प्रकट किये (४. १८)। पाण्डवों के दुःख से दुःखित द्रौपदी ने भीमसेन के सम्मुख विलाप किया (४. १९-२०)। भीमसेन और द्रौपदी का संवाद जिसमें भीमसेन ने कीचक-वध की प्रतिज्ञा की (४. २१)। "द्रौपदी की बातें सुनकर भीमसेन ने कहा : 'मैं आज ही कीचक का उसके बन्धु-बान्धवों सहित वध कर दूँगा। तुम आगामि-रात्रि के प्रदोषकाल में कीचक से मिलो और उसे नृत्यशाला में लाओ, किन्तु इस कार्य में तुम्हें कोई पहचानने न पाये।' भीम के परामर्श पर द्रौपदी कीचक को नृत्यशाला में लाई, जहाँ भीमसेन ने उसका वध कर दिया। उस समय नृत्यशाला के रक्षकों को द्रौपदी ने बताया कि उसके पति, गन्धर्वों ने कीचक का वध कर दिया (४. २२)।" "कीचक के सम्बन्धियों ने विराट से द्रौपदी को भी कीचक के शव के साथ भस्म कर देने की अनुमति प्राप्त कर ली। तदनन्तर वे द्रौपदी को बाँध कर श्मशान-भूमि की ओर जाने लगे। मार्ग में द्रौपदी ने अपने पतियों, जय, विजय, इत्यादि को पुकारा। द्रौपदी की वाणी सुन कर भीमसेन वहाँ उपस्थित हुये और उन्होंने १०५ उप-कीचकों का वध कर दिया (४. २३)।" "कीचक तथा अन्य सूतपुत्रों के वध से भयभीत राजा विराट ने अपनी रानी, सुदेष्णा से कहा कि वे द्रौपदी को राज्य छोड़ देने की आज्ञा दें। सुदेष्णा, के तदनुसार आज्ञा देने पर द्रौपदी ने तेरह दिन तक और निवास करने की अनुमति माँगी जिसे रानी ने स्वीकार किया (४. २४)।"

कीट : 'द्वैपायनस्य संवादं कीटस्य च', (१३. ११७, ६)। १३. १०७, ७. ८. १०. १५, इत्यादि।

कीटक, क्रोधवशसंज्ञक दैत्यों के अंश से उत्पन्न एक राजा का नाम है (१. ६७, ६०)।

कीटोपाख्यान—"भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा : पूर्वसमय की बात है, ब्रह्मस्वरूप व्यासजी कहीं जा रहे थे। उन्होंने एक कीड़े को गाड़ी की लीक से अत्यन्त तेजी के साथ भागते देखा। सर्वज्ञ व्यास ने, जो सभी प्राणियों की भाषा समझते थे, उस कीड़े से उसके भागने का कारण पूछा। कीड़े ने बताया : 'यह जो बहुत बड़ी बैलगाड़ी आ रही है उसी से दब जाने के भय से मैं भाग रहा हूँ। प्राणियों के लिये मृत्यु अत्यन्त दुःखदायिनी होती है। अपना जीवन सबको अत्यन्त दुर्लभ प्रतीत होता है। अतः मैं भय से भाग रहा हूँ।' जब व्यास ने कीड़े से कहा कि उस योनि में जीवित रहने से उसका मर जाना ही उत्तम है तब कीड़े ने उत्तर दिया : 'जीव सभी योनियों में सुख का अनुभव करते हैं। मुझे भी इस योनि में सुख मिलता है, और यही सोचकर जीवित रहना चाहता हूँ। पूर्वजन्म में मैं एक मनुष्य था। उस योनि में एक शूद्र और निर्दय था। मैं इतना स्वार्थी तथा कृपण था कि बिना किसी अतिथि या आश्रित को भोजन दिये ही स्वयं भोजन कर लेता था। उस समय मैं दानादि भी नहीं करता था। दूसरों के सुख को देखकर मुझे ईर्ष्या होती थी। अपने उस पूर्वजन्म के निर्दयतापूर्ण कार्यों का स्मरण करके अब मुझे अत्यन्त पश्चाताप होता है। पूर्वजन्म में मैंने केवल अपनी वृद्धा माता की सेवा की, तथा एक दिन अपने घर आये अतिथि का स्वागत-सत्कार किया। उसी पुण्य के प्रभाव से आजतक मेरी पूर्वजन्म की स्मृति सुरक्षित है। अब, मैं किसी शुभकर्म द्वारा भविष्य में पुनः सुख पाने की आशा रखता हूँ। वह कल्याणकारी कर्म क्या है, इसे मैं आप से सुनना चाहता हूँ।' (१३. ११७)।" "व्यास ने कहा : 'तुम जिस शुभकर्म के प्रभाव से तिर्यग्योनि में जन्म लेकर भी मोहित नहीं हुए। वह मेरा ही कर्म है। मेरे दर्शन के प्रभाव से ही तुम्हें मोह नहीं हो रहा है। मैं अपने तपोबल से केवल दर्शनमात्र दे कर तुम्हारा उद्धार कर दूँगा, क्योंकि तपोबल से श्रेष्ठ और कोई बल नहीं है। अपने पूर्वकृत पापों के कारण तुम्हें कीटयोनि में आना पड़ा है, फिर भी, यदि इस समय तुम्हारी धर्म के प्रति श्रद्धा है तो तुम्हें धर्म अवश्य प्राप्त होगा। एक जगह एक श्रेष्ठ ब्राह्मण रहते हैं। वे जीवन में सदा सूर्य और चन्द्रमा की पूजा करते हैं। तुम उन्हीं के यहाँ पुत्र रूप से जन्म लेकर अनासक्त भाव से विषयों का उपभोग करोगे। उस समय मैं तुम्हारे पास आकर ब्रह्मविद्या का उपदेश करूँगा और तुम जिस लोक में जाने की इच्छा करोगे, तुम्हें पहुँचा दूँगा।' व्यास जी के इस प्रकार कहने पर वह कीट पुनः मार्ग में जाकर रुक गया और उसी समय बैलगाड़ी के आ जाने से उसके नीचे दबकर मर गया। तत्पश्चात वह क्रमशः शाही, गोधा, सूअर, मृग, पक्षी, चाण्डाल, शूद्र और वैश्य की योनि में जन्म लेता हुआ क्षत्रिय जाति में उत्पन्न हुआ। क्षत्रियकुल में जन्म लेने के पश्चात वह व्यास जी का दर्शन करने के लिये उनके पास आया और उनकी स्तुति की। उसने कहा : 'आप सत्य-प्रतिज्ञ हैं, अमित तेजस्वी हैं; आपके प्रसाद से ही मैं आज कीड़े से राजपूत हो गया हूँ।'

व्यास ने कहा : 'अभी तुम्हारे पूर्वजन्मों के पाप का सर्वथा नाश नहीं हुआ। आज जो तुम ने मेरी पूजा की है उसके फलस्वरूप तुम क्षत्रिय के पश्चात् ब्राह्मणत्व प्राप्त करोगे। तुम नाना प्रकार के सुख भोगकर अन्त में गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिये संग्राम-भूमि में अपने प्राणों की आहुति दोगे। तदनन्तर ब्राह्मण-रूप में पर्याप्त दक्षिणावाले यज्ञों का अनुष्ठान करके स्वर्ग-सुख का उपभोग करोगे। तत्पश्चात् विनाशी ब्रह्मरूप होकर अक्षय आनन्द का अनुभव करोगे। तिर्यग्योनि में पड़ा हुआ जीव जब ऊपर की ओर उठता है तो वहाँ से सर्वप्रथम शूद्र-भाव को प्राप्त होता है। तदुपरान्त शूद्र > वैश्य > क्षत्रिय > ब्राह्मण > स्वर्ग का क्रम होता है।' (१३. ११८)।"

"तदनन्तर उस क्षत्रिय ने घोर तपस्या आरम्भ की जिसे देखकर व्यास ने उसके पास आकर कहा : 'प्राणियों की रक्षा करना ही क्षात्रधर्म है जिसका पालन करके तुम अगले जन्म में ब्राह्मण हो जाओगे।' व्यास का वचन सुनकर उस भूतपूर्व कीट ने प्रजा-पालन आरम्भ किया। तत्पश्चात् वह पुनः वन में जाकर थोड़े समय में परलोकवासी हो प्रजापालन-रूप धर्म के प्रभाव से ब्राह्मण-कुल में जन्म पा गया। उस समय व्यास ने उसके पास आकर कहा : 'अब तुम्हें किसी प्रकार व्यथित नहीं होना चाहिये। हाँ तुम्हें धर्म के लोप का भय अवश्य होना चाहिये। अतः उत्तम धर्म का आचरण करते रहो।' तदनन्तर उस भूतपूर्व कीट ने ब्राह्मणत्व प्राप्तकर पृथिवी को सैकड़ों यज्ञ-यूपों से अंकित कर दिया और ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ होकर उसने ब्रह्मलोक में जा कर सनातन ब्रह्म को प्राप्त किया। व्यास के आदेशानुसार उसे स्वधर्म का पालन कर के सनातन पद प्राप्त करने में सफलता मिली। इसी प्रकार जो प्रमुख-प्रमुख क्षत्रिय अपनी शक्ति का परिचय देते हुए इस रणभूमि में मारे गये हैं, वे भी पुण्यमयी गति को प्राप्त हुए हैं। अतः हे युधिष्ठिर उनके लिए शोक मत करो। (१३. ११९)।"

कीर्ति, दक्ष प्रजापति की एक पुत्री और धर्म की पत्नी का नाम है (१. ६६, १४)। ये ब्रह्मा की सभा में उपस्थित होती थीं (२. ११, ४२)। ३. ३७, ३३।

कीर्तिधर्मन्, पाण्डवों के एक योद्धा का नाम है (७. १५८, ३९)।

१. **कीर्तिमत्**, विरजा के पुत्र और कर्दम के पिता का नाम है (१२. ५९, ९०)।

२. **कीर्तिमत्**, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३१)।

कीर्त्यावास = महापुरुष (महापुरुषस्तव में)।

कुकुण, एक काश्यपवंशी नाग का नाम है (५. १०३, १४)।

१. **कुकुर**, एक काश्यपवंशी नाग का नाम है (५. १०३, १४)।

२. **कुकुर**, एक प्राचीन राजा का नाम है (१३. १६५, ५३)।

३. **कुकुर** (बहु०), यादवों की एक जाति का नाम है (२. १९, २८; ३. १८३, ३२)। इन्होंने कृतवर्मन् का अनुसरण किया (५. १९, १७)। इन्होंने कृष्ण का अनुसरण किया (५. २८, ११)। ६. ९, ६०; १२. ८१, २९। ये कुकुर और अन्धकवंश के लोग मौसल युद्धमें परस्पर मतवाले होकर युद्ध करते थे (१६. ३, ४२)।

कुकुराधिप = उग्रसेन (१२. २३१, ४)।

कुटकुटिका, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६,१५)।

१. **कुक्कुर**, एक मुनि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजते थे (२. ४, १८)।

२. **कुक्कुर** (बहु०), एक जनपद का नाम है। ये लोग युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १६)। दक्षिण दिशा में इनकी स्थिति (६. ९, ४२)। ये भीष्म की रक्षा करते थे (६. ५१, ७)। तु० की० बहु० कुक्कुर।

१. **कुक्षि**, एक दानवराज का नाम है जो मेरुगिरि के समान तेजस्वी और विशाल 'पार्वतीय' नामक राजा हुआ (१. ६७, ५६)।

२. **कुक्षि**, रैभ्य के पुत्र का नाम है (१२. ३४८, ४३)।

१. **कुञ्जर**, एक नाग का नाम है (१. ३५, १५; १६. ४, १५)।

२. **कुञ्जर**, सौवीर देश के एक राजकुमार का नाम है जो जयद्रथ का अनुगामी था (३. २६५, १०)।

कुञ्जरकेतन = भोज (७. ४८, ८)।

कुञ्जल, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७६)।

कुटीमुख, कुबेर के सभाभवन में स्थित शिव के एक अनुगामी (?) का नाम है (२. १०, ३५)।

कुठर, एक नाग का नाम है (१. ३५, १५)।

कुठार, धृतराष्ट्रकुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, १५)।

कुणि = गर्ग (९. ५२, ३-४)।

१. **कुण्ड**, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ११)।

२. **कुण्ड**, एक नाग का नाम है जो अर्जुन के जन्मोत्सव पर उपस्थित हुआ था (१. १२३, ७१)।

३. **कुण्ड** = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कुण्डक, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, ३)।

कुण्डज, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०५)।

कुण्डजठर, एक ऋषि, आत्रेय (?), का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र के सदस्य हुये थे (१. ५३, ८)। ये भी अन्य ऋषियों के साथ युधिष्ठिर की तीर्थयात्रा के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे (३. ८५, ११९)।

१. **कुण्डधार**, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ७. ११)। धृतराष्ट्र के उन सात पुत्रों में से एक यह भी था जिसका भीमसेन ने वध कर दिया (६. ८८, १५. १८. २३)।

२. **कुण्डधार**, वरुण की सभा में उपस्थित होनेवाले दो नागों का नाम है (२. ९, ९. १०)।

३. **कुण्डधार**, एक मेघ का नाम है : १२. २७१, २. ६ [जलधरं मेघं कुण्डधारं नामतः, 'नीलकण्ठी']. १३. १७-२०. २३. २४. २८. ४१-४३. ४५. ४८. ५२. ५३ (इनका ब्राह्मण के साथ संवाद)।

कुण्डभेदि, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसका भीमसेन ने वध कर दिया था (६. ९६, २७)। तु० की० **कुण्डभेदिन्**।

कुण्डभेदिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०४; ११७, १३)। अभिमन्यु ने इसका वध कर दिया (७. ३७, २५. ३०)। इसने भीमसेन पर आक्रमण किया (७. १२७, ३३)। भीमसेन द्वारा इसका वध (७. १२७, ६०)। ७. १५६, १२१।

कुण्डर = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

१. **कुण्डल**, कौरवकुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, १३)।

२. **कुण्डल** (बहु०), एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ६३)।

कुण्डलाहरण : (१. २, ५७)।

कुण्डलाहरणपर्वन्, वनपर्व के अन्तर्गत महाभारत के पचासवें अवान्तर पर्व का नाम है। जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने कहा : "जब पाण्डवों के वनवास के बारह वर्ष व्यतीत हो गये तो इन्द्र ने युधिष्ठिर को दिये गये अपने वचन के अनुसार अर्जुन के हित के लिये कर्ण से उसका कवच और कुण्डल माँगने का निश्चय किया। उस समय सूर्य ने स्वप्न में कर्ण को दर्शन देकर उसे इन्द्र को कुण्डल और कवच न देने के लिये सचेत किया परन्तु कर्ण ने आग्रहपूर्वक कुण्डल और कवच देने का ही निश्चय किया (३. ३००-३०१)।" सूर्य-कर्णसंवाद; सूर्य की आज्ञा के अनुसार कर्ण ने इन्द्र से शक्ति लेकर ही उन्हें कुण्डल और कवच देने का निश्चय किया (३. ३०२)। कुन्तिभोज के यहाँ ब्रह्मर्षि दुर्वासा का आगमन तथा राजा का उनकी सेवा के लिये पृथा को आवश्यक उपदेश देना (३. ३०३)। कुन्ती का पिता से वार्तालाप तथा ब्राह्मण की परिचर्या (३. ३०४)। कुन्ती की सेवा से सन्तुष्ट होकर तपस्वी ब्राह्मण का उसको मन्त्र का उपदेश देना (३. ३०५)। कुन्ती के द्वारा सूर्य का आवाहन तथा कुन्ती-सूर्यसंवाद (३. ३०६)। सूर्य द्वारा कुन्ती के उदर में गर्भस्थापन (३. ३०७)। कर्ण का जन्म, कुन्ती का उसे पिटारी में रखकर जल में बहा देना, और

विलाप करना (३. ३०८)। अधिरथ सूत तथा उसकी पत्नी राधा को बालक कर्ण की प्राप्ति; राधा के द्वारा उसका पालन; हस्तिनापुर में उसकी शिक्षा-दीक्षा, तथा कर्ण के पास इन्द्र का आगमन (३. ३०९)। इन्द्र का कर्ण को अमोघ शक्ति देकर बदले में उसका कवच-कुण्डल लेना (३. ३१०)।

१. कुण्डलिन्, गरुड़ की संतानों में से एक का नाम है (५. १०१, ९)।

२. कुण्डलिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (६. ९६, २४)।

३. कुण्डलिन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कुण्डली, एक भारतीय नदी का नाम है (६. ९, २१)।

कुण्डशायिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १०)।

कुण्डारिका, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (६.४६,१५)।

कुण्डाशिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १४)।

कुण्डिक, धृतराष्ट्र के एक पुत्र (प्रथम) का नाम है (१. ९४, ५८)।

कुण्डिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कुण्डिन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र (पञ्चम) का नाम है (१.९४,५८)।

२. कुण्डिन, विदर्भदेश की राजधानी का नाम है (३. ६०, १९; ७३, २. २१; ७७, २०)। रुक्मिन्, श्रीकृष्ण से पराजित होने के कारण लज्जित हो पुनः कुण्डिनपुर को नहीं लौटा और वहीं भोजकट नामक उत्तम नगर बसाया (५. १५८, १४)।

कुण्डीविष, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ५०, ५०)।

कुण्डीवृष (बहु०) देखिये **कौण्डीवृष** (बहु०)।

कुण्डोद, एक पर्वत का नाम है, जहाँ राजा नल को जल और शान्ति मिली (३. ८७, २५)।

१. कुण्डोदर, एक प्रमुख नाग का नाम है। (१. ३५, १६)।

२. कुण्डोदर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९७)।

३. कुण्डोदर, जनमेजय के छठें पुत्र का नाम है (१. ९४, ५५)।

कुनदीक, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ५८)।

१. कुन्तल, कुन्तल देश के राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के राजसूय में उपस्थित हुये थे (२. ३४, ११)।

२. कुन्तल (बहु०), एक जनपद का नाम है (५. १४०, २६; ६. ९, ५२. ५९)। इन्होंने द्रोण का अनुसरण किया (६. ५१, १२)। कर्ण का अनुसरण करते हुये इन पर पांड्यनरेश ने आक्रमण किया (८.२०,८)।

१. कुन्ति, कुन्ति देश के एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर की सेवा में उपस्थित रहते थे (२. ४, २४)।

२. कुन्ति, सात महारथी वृष्णियों में से एक का नाम है (२.१४,५९)।

३. कुन्ति (बहु०), एक जाति के लोगों का नाम है जो जरासन्ध के भय से भाग गये थे (२. १४, २६)। ४. १, १३; ६. ९, ४०। राम जामदग्न्य ने इनका वध कर दिया (७. ७०, ११)। भीष्म ने युद्धभूमि में इनका वध कर दिया (८. ६, २)।

कुन्तिकन्या = कुन्ती (१. ६३, ९८)।

कुन्तिभोज, एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो शूरसेन के फुफेरे भ्राता थे। शूरसेन ने इन्हें अपनी पुत्री पृथा (कुन्ती) को गोद दिया (१. ६७, १३१; १११, ३)। 'दुहिता कुन्तिभोजस्य पृथा', (१. ११२, १)। १. ११२, ४। 'कुन्तिभोजस्य दुहित्रा', (१. ११२, १०)। १. ११२, ११। सहदेव ने अपने दक्षिण दिग्विजय के समय इन्हें विजित किया (२. ३१, ६)। ये युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में पधारे थे (२. ३४, १२)। ३. ३०३, ४. ६. ९; ३०४, १३। इन्होंने अपनी पुत्री कुन्ती को एक तपस्वी ब्राह्मण की सेवा में लगा दिया (३. ३०५, ११. २१)। शूर ने कुन्ती को इन्हें प्रदान कर दिया था (५. ९०, ६३. ६४)। युधिष्ठिर के सहायकों में एक यह भी थे (५. १४१, २६)। कुन्ती के पिता के रूप में इनका उल्लेख (५. १४४, २०)। युधिष्ठिर के साथ चल रहे थे (५. १५१, ६५)। युधिष्ठिर के महारथियों में से एक (५. १७२, २)। ये युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित थे (६. २५, ५)। इन्होंने अपने पुत्र सहित विन्द और अनुविन्द के साथ युद्ध किया (६. ४५, ७२. ७४. ७५)। ये और शैब्य धृष्टद्युम्न के क्रौञ्चव्यूह के अक्षिभाग में स्थित थे (६. ५०, ४७)। धृष्टद्युम्न के मकरव्यूह में ये और शतानीक पदभाग में स्थित थे (६. ७५, ११)। ६. ८९, १८; ९९, १२; ११०, ५; ११८, ४१। 'इन्द्रायुधसवर्णस्तु कुन्तिभोजो हयोत्तमैः', (७. २३, ४६)। ७. ३५, २। अलम्बुष के साथ इनका युद्ध (७. ९५, ४७; ९६, १८. १९)। ७. १११, ४६। अश्वत्थामा ने इनके दस पुत्रों का वध कर दिया (७. १५६, ८३-८४)। 'द्रुपदस्यात्मजान् दृष्ट्वा कुन्तिभोजसुतांस्तथा। द्रोणपुत्रेण निहतान् राक्षसांश्च सहस्रशः॥', (७. १५७, १)। 'पुरुजित् कुन्तिभोजश्च मातुली सव्यसाचिनः। संग्रामनिर्जितांल्लोकान् भीमतौ द्रोणसायकैः' (८. ६, २२-२३)। ९. २, २३। तु० की० **कुन्ति, कुन्तिराज, पुरुजित्।**

कुन्तिभोजजा, (कुन्तिभोज की पुत्री) = कुन्ती (१५. १९, ६)।

कुन्तिभोजसुता = कुन्ती (१. ११२, ६; १३६, २७; १५. १, ८)।

कुन्तिभोजसुतासुत—कौन्तेय, बहु० (१. २०३, १४)।

कुन्तिभोजात्मजापुत्र = अर्जुन (१. २२१, ७)।

कुन्तिराज = कुन्तिभोज (५. १४५, ३)।

कुन्तिराजसुता = कुन्ती (१. १११, १७; १२४, ५; १५०, १२; १५१, २४)।

कुन्तिराजात्मजा = कुन्ती (३. ३०७, २७)।

कुन्तिवर्धन = पुरुजित् (२. १४, १७)।

कुन्तिसुता = कुन्ती (१. १२४, ६)।

कुन्ती, (कुन्तिराज की पुत्री), शूर की पुत्री का नाम है जिसे कुन्तिभोज ने गोद ले लिया था। यह सूर्य द्वारा कर्ण की माता, पाण्डु की पत्नी और युधिष्ठिर, भीमसेन तथा अर्जुन की माता हुई। इसका वास्तविक नाम पृथा था (१. १, १००. १५३. १७७; २, ३२१. ३४६)। "वासुदेव के पिता का नाम शूरसेन था। उनके पृथा नामक जब एक कन्या उत्पन्न हुई तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञानुसार उस कन्या को अपने फुफेरे भाई कुन्तिभोज को गोद दे दिया। पिता के घर रहते समय पृथा को अतिथियों का स्वागत-सत्कार करने का कार्य सौंपा गया। एक दिन जब दुर्वासा उसके यहाँ पधारे तो अपनी सेवा से उसने उन्हें सन्तुष्ट किया। उससे प्रसन्न होकर दुर्वासा ने उसे एक ऐसा मन्त्र दिया जिसके प्रयोग से वह किसी भी देवता का आवाहन कर सकती थी। पृथा ने कौतूहलवश अपनी कुमारी अवस्था में ही उस मंत्र द्वारा सूर्य का आवाहन किया जिससे सूर्य ने आकर उसमें एक गर्भ स्थापित कर दिया। पृथा का वह बालक कवच और कुण्डल के साथ ही उत्पन्न हुआ परन्तु माता-पिता के भय से पृथा ने उस बालक को एक पेटी में रखकर जल में छोड़ दिया (१. ६७, १२९-१३९)।" 'स कर्ण इति विख्यातः पृथायाः प्रथमः सुतः', (१. ६७, १४८)। ये सिद्धि के अंश से उत्पन्न हुई थीं (१. ६७, १६०)। ये, पृथा, पाण्डु की पत्नी थीं (१. ९५, ५८)। 'कुन्तीमुवाच सा तथोक्ता पुत्रानुत्पादयामास। धर्माद्युधिष्ठिरं मारुताद्भीमसेनं शक्राद‍र्जुनमिति॥', (१. ९५, ६१)। १. ९५, ६२. ६५. ६६. ८३। ये शूरसेन की पुत्री थीं जिन्हें कुन्तिभोज ने गोद ले लिया था (१. १११, १)। १. १११, ८. ११. १७। 'सा वार्ष्णेयी दीनमानसा', (१. १११, २१)। इन्होंने सूर्य द्वारा कर्ण को उत्पन्न किया (१. १११, २२)। 'दुहिता कुन्तिभोजस्य पृथा', (१. ११२, १)। 'कुन्तिभोज सुता', (१. ११२, ६)। इनका पाण्डु से विवाह हुआ (१. ११२, ८. ११. १३)। १. ११३, २०; ११४, ६. ९; ११५, २। इन्होंने वन जाते समय पाण्डु का अनुसरण किया (१. ११९, २३. २६)। १. १२०, २७. २८. ३२. ३६. ३८; १२१, १. ३२; १२२, २। 'एवमुक्ता ततः कुन्ती पाण्डुं परपुरञ्जयम्', (१. १२२, ३२)। पाण्डु की आज्ञा से इन्होंने अपने मन्त्र द्वारा धर्म, वायु और इन्द्र का आवाहन किया जिससे इन्होंने युधिष्ठिर, भीम, और अर्जुन को उत्पन्न किया (१. १२३, १. ४. ७. १२. १६. २५. ३१. ३७. ३८. ४३)। इन्होंने सौरी में ही आकाशवाणी सुनी (१. १२३, ४७)। इन्होंने तीन पुत्रों से और अधिक सन्तान उत्पन्न करने से पाण्डु को विरत किया (१. १२३, ७६)। १. १२४, ४-६. ९. २५। इन्होंने माद्री को मंत्र का उपदेश दिया जिससे माद्री ने दो पुत्र प्राप्त किये (१. १२४, २६)। १.

१२५, १५. १७. २३। माद्री ने अपने कारण हुई पाण्डु की मृत्यु का इनसे उल्लेख किया (१. १२५, २८)। 'पुरुहूतादयं जज्ञे कुन्त्यामेव धनञ्जय', (१. १२६, २५)। इन्होंने माद्री और पाण्डु का मृतकसंस्कार किया (१. १२७, ३. २६)। इन्होंने पाण्डु के लिए अमृतस्वरूप स्वधामय श्राद्धदान किया (१. १२८, १)। 'आर्यकेण च दृष्टः स पृथाया आर्यकेण च', (१. १२८, ६४)। १. १२९, ५. १०. १३. १९; १३४. १५; १३५, १३। 'पृथारणिसमद्भूतैस्त्रिभिः पाण्डववह्निभिः', (१. १३५, १७)। 'कन्यागर्भः पृथुयशाः पृथायाः', (१. १३६, ३)। १. १३६, २७. २८। 'अयं पृथायास्तनयः कनीयान्पाण्डुनन्दनः', (१. १३६, ३१)। अपने पुत्र, कर्ण, को पहचान कर कुन्ती के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई (१. १३७, २३)। १. १४१, २. ४. ५. ८; १४२, १५; १४४, १३; १४५, २९; १४८, ५. ६; १५०, १२. १४. १७; १५१, १२. २४; १५२, १६; १५४, २; १५५, ४; १५६, ३. ११; १५७, ५. ८–११. १८; १५९, २४; १६०, १; १६१, १. १३. १९. २०; १६२, ४. १२; १६५, ५; १६८, २. ३. १० ११; १६९, १६; १८९, २३. २४; १९०, ४६। जब पाण्डव द्रौपदी को जीत लाये तो इन्होंने सबसे उसका उपभोग करने के लिये कहा (१. १९१, १–४. ६)। १. १९२, ४. ९; १९४, ३. ९; १९५, १०. १८. ३२; १९६, १८. २२; १९९, २. ४; २००, ६; २०३, १३. १५; २०४, ८; २०६, ५. १४. २३. २६; २०७, ११; २२१, २१. २५; २. २, २; १७, १; २४, ५४; ४५, ५७; ७८, ५; ७९, १. ३. १०. १३. ३०. ३१; ३. ३७, २४; ४४, ११; ४६, ३८. ४६. ५५; ४७, ८। 'कौरवः सोमवंशीयः कुन्त्यागर्भेण धारितः। पाण्डवो वायुतनयो भीमसेन इति श्रुतः॥', (३. १४७, ३)। 'वातेन कुंत्या बलवान सुजातः', (३. १५४, १९)। ३. १८३, २७; २३३, ४०। 'कुंत्याः प्राणैरिष्टतमो नृवीरः', (३. २७०, १९)। ३. ३०३, १०. १२. २२. २७. २८; ३०४, १३. २०; ३०५, ५. १२. १५. २३; ३०६, १०. १२. २५; ३०७, ८. १७. १९. २२. २३. २७; ३०८, १. ९. २२. २३; ३, ३०९, १५। शूर की पुत्री पृथा, कुन्ती, को कुन्तिभोज ने गोद ले लिया था; इन्होंने एक ब्राह्मण की सेवा की जिसने इन्हें एक मंत्र दिया जिसके प्रभाव से ये अपनी इच्छानुसार किसी भी देवता का आवाहन कर सकतीं थीं; इन्होंने सूर्य का आवाहन किया जिससे सूर्य ने इन्हें कर्ण प्रदान किया और इन्होंने नवजात कर्ण को नदी में बहा दिया (३. ३०९, २१)। ३. ३१३, ८. १३१. १३२; ४. ४, ५२; १९, २५. ४०; २०, २५; ५. ३१, १६; ९०, १. ३. ९०. १००. १०१; ९१, १। इन्होंने कृष्ण से युधिष्ठिर को युद्ध करने के लिये कहा (५. १३२, ५)। ५. १३३, १। इन्होंने श्रीकृष्ण से युधिष्ठिर को विदुलापुत्र-शासन करने के लिये कहा (५. १३६, १६)। इन्होंने कृष्ण को समाचार देकर पाण्डवों के पास भेजा (५. १३७, १. २)। ५. १३८, १. २; १४०, २८; १४१, ४। 'कुन्त्याः प्रथमजं पुत्रम्', (५. १४१, २१)। ५. १४४, १. १०. २६. २९–३१; १४५, २; १४६, २. २४। "कृष्ण ने कर्ण को बताया कि वह कुन्ती का पुत्र था। कुन्ती ने कर्ण से अपने को उसकी माता बताते हुये पाण्डवों से संधि करने के लिये कहा। कर्ण ने अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की (५. १४६, २७)।" ५. १५४, ४. २४; ६. ७९, ४। 'अवकीर्णस्त्वहं कुन्त्या सूतेन च विवर्धितः', (६. १२२, २४)। ७. १२७, २३; १३१, १०। 'कुन्त्याः पुत्रस्य सदृशं नेदं पाण्डवनन्दन', (७. १३१, २३)। 'कुन्तीमपुत्राम्', (७. १३२, १४)। 'कर्णः कुन्त्या वचः स्मरन्', (७. १३९, ९२)। 'कुन्त्याः स्मृत्वा वचो राजन्', (७. १६७, २०; ८. २४, ५१)। 'कुंतीवाक्यं च सोऽस्मरत्', (८. ४९, ५२)। 'स्नेहस्त्वया पार्थ कृतः पृथाया गर्भं समाविश्य यथा न साधु', (८. ६८, ३)। ८. ६८, १०। अर्जुन के जन्म के समय कुंती ने आकाशवाणी सुनी (८. ६८, १४)। 'गर्भे आभविष्यः पृथायाः', (८. ६८, २९)। ८. ६९, ३०; ७०, ३७; ८७, ११६। 'पाण्डोः कुन्त्याश्च संतति', (९. ३३, १६)। ये युद्धभूमि को देखने गईं (११. १०, २. ४)। ११. १४, १५; १५, ३४. ३८। इन्होंने पाण्डवों को बताया कि कर्ण उसका पुत्र था (११. २७, ६)। 'कुन्त्या दुःखेन योजितः', (१२. १, १८)। 'गूढोत्पन्नः सुतः कुन्त्या भ्राताऽस्माकमसौ किल', (१२. १, २१)। 'कुन्ती कथयामास सूर्यजम्', (१२. १, २२)। 'ज्येष्ठपुत्रः कुन्त्या', (१२. १, २४)। १२. १, २६. २७. ३१. ३५. ३६. ३८. ४२। कर्ण इसलिये मारा गया कि उसने कुन्ती को अर्जुन के अतिरिक्त अन्य चार भ्राताओं की रक्षा का वरदान दिया था (१२. ५, ११)। 'कुन्ती शोकपरीताङ्गी दुःखोपहतचेतना', (१२. ६, ३)। १२. ३७, ४१; ४०, ४। 'न ह्येतामाशिषं पाण्डुर्न च कुन्ती त्वयाचत', (१२. ७५, २२)। १२. ७५, २३; १३. १६७, ९; १४. १५, १७; ५२, २८. ३०; ६१, ३२. ३७. ३९। इन्होंने उत्तरा को सान्त्वना दी (१४. ६१, ४१)। १४. ६२, १०; ६३, २३; ६६, ५। 'ततः कृष्णं समासाद्य कुन्ती भोजसुता तदा, (१४. ६६, १४)। १४. ६६, २७. २९; ६७, १. ९; ६९, २; ७०, ६; ७१, ७; ८७, २८; ८८, २. ५; ८९, २८. २९; १५. १, ८. ११. २३; ३, १४. ५१. ७८; ५, ५; १०, ४६; ११, १८; १५, ९; १६, ७. ९. १०. २४. २५; १७, १; १८, १–३. ९. १०. १५। इन्होंने वन के लिये धृतराष्ट्र और गान्धारी का अनुसरण किया (१५. १८, २१)। १५. १९, ६. १५; २०, ३; २१, ३. ५; २२, ५. ११. १३. १५. १७; २४, ८. ११. १९; २५, ८; २७, १७; २८, ६; २९, १. १३. १८. ३६. ४९. ५२; ३०, १. २३; ३१, २. ३; ३६, २७. ३९. ४२; ३७, ७. ११. १४. १७. २९, ३१. ३५. ४३; ३८, ७. १६; ३९, १३। ये वन की अग्नि से जल गईं (१५. ३९, १८)। स्वर्ग में पाण्डु के साथ इनकी उपस्थिति (१८. ४, २०)।

१. कुन्तीनन्दन = अर्जुन (१४. ८७, ६)।

२. कुन्तीनन्दन = युधिष्ठिर (५. १६९, ३)।

१. कुन्तीपुत्र = अर्जुन (धनञ्जय) : १. १७१, ३; २१३, ११. २१; २१४, १५; २१५, ११. १८; २१६, १०. १३; २१८, १६; २. २७, २; ८०, १५; ३. ४१, ४६; २४४, १६; २४५, ११. १८. २०; ४. ३७, १७; ५०, १७; ५७, ४३; ६४, ४७; ७२, १०; ५. ७, २. २१; ६६, ३; ९६, ४८; १३८, १६; १५६, १८; १५८, २०; ६. ४३, १४; ११९, ८०; १२०, ४७; ७. १२, २७; १९, ८; २८, १३; ३०, २१; ८०, १. ५; १४५, ८८; १४६, ८२; १४७, ६; १८२, ३७; १८६, १५; १८८, २९; १९०, १३; १९२, ६५; १९३, ५२; २०१, १; २०२, २; ८. ३, ११; ४१, ८१; ४२, १५. २१; ६४, ६०; ८७, १०१; ९. २४, १५; २७, २. ३५; ११. २३, १३; १२. ५३, १७; १४. ७३, ११।

२. कुन्तीपुत्र = भीमसेन (वृकोदर) : १. १२८, २७; १६३, १४; ३. १५७, ५४; ४. ३३, ३८; ५. ५०, २१. २२; ५५, ३१; १६२, १७; ६. ९६, ३१; ७. १३९, ७३; १९९, ५५।

३. कुन्तीपुत्र = युधिष्ठिर : १. १३१, २६; १३९, ३; १४७, ७; १९१, १५; १९५, २. १६. १७; २०१, ६; २०७, ३; २२१, ४२. ६९; २. ४, ३३; ३३, ४३; ४५, ६४; ४९, २१; ५२, ४९; ५६, २; ५७, ५; ८०, ४; ३. २, २; ३, १; ३६, १. ३९; १५७, ३१; १६१, १३; १६६, १०, १५; १७३, ७५; २३३, ४९; २४६, ११. २५; २५९, ९; २६७, १२. १५; ३११, ५; ३१२, ९. १४. २०. ३३; ४. ५, २८; २२, ३४; ३३, ११. ३३; ७१, १. २६; ७२, १५. ३४; ५. ६, ५. ६; ८, १५; १८, २२; २२, ३३. ३८; २३, २; ५०, ५; ८३, ३०; १२८, २३; १३८, १६; १४०, २०; १४२, ८; १५१, ५७; १५२, ३; १६४, १; १९६, ३३; ६. १, ६; १९, २४; २१, १; २५, १६; ४३, ८७; ४५, २९; ५१, २६; ७. १६, २९; २१, ४६; ५२, १. १९; ८६, ४; १०६, ४७; १२६, ३०; १५७, ४१; १६२, ४६; १९०, ४२; १९९, ५; ८. ६०, १०; ६२, ५. ७; ६४, ६६; ९६, ४८; ९. ११, २१; १२, ५६; १६, ७. ४८; २३, १३; ५५, ११; १०. १०, ७; १२, १; ११. २६, २४; २७, १४; १२. ३७, ३१; ४०, १५; ४५, ४; १३. १६७, २४; १५. ३, १३; ५, ७; ९, १०; १०, २२. ४३; ११, २५; १२, ३; १४, १०; २७, २३।

४. कुन्तीपुत्र (द्वि०) = भीमसेन और अर्जुन (३. ३१३, १२)।

५. कुन्तीपुत्र (बहु०) = कौन्तेय : १. १२४, १. २०; १५७, १. २; २०१, ४; २०६, २; ५, ५०, १३. १५; १७०, ६; ७. ७९, २७; १५. १०, ४८।

१. कुन्तीमातृ = अर्जुन (१. २२२, १६; २. २६, १६; ३. ४१, ४३)।

२. कुन्तीमातृ = भीमसेन (३. १८०, २)।

कुन्तीविवाह—पृथा (कुन्ती) ने अपने स्वयंवर के अवसर पर पति के रूप में पाण्डु का वरण किया (१. ११२)।

१. कुन्तीसुत = अर्जुन (१. १३५, ११; १८७, २९; १८८, २; २१५, २६; ३. ४२, १२; २७०, १३; ४. ६५, ६; ६. १०६, ४९; ७. २७, १९; ७९, २५; ८३, २४; ८. ४६, ५७)।

२. कुन्तीसुत = भीमसेन (३. १५३, ५; ८. ४६, ८०)।

३. कुन्तीसुत = कर्ण (११. २७, २०)।

४. कुन्तीसुत = युधिष्ठिर (१. ११५, १०. १५; १९१, २०; २. ४७, ३६; ६७, ४९; ७१, २१; ३. ४, ५; ९२, २७; ३१२, ४१; ५. २, ७; ३, ६; ७. १२, ८; १२. २८, ५९; ४०, १; १३. १४८, ४१; १६७, १; १५. २, २; ८, १८; १८. २, ५५)।

५. कुन्तीसुत (द्वि०) = भीमसेन और अर्जुन (१. १९०, ३८)।

६. कुन्तीसुत (बहु०) = कौन्तेय : १. १९४, १५; १९७, ३७; २०७, १९; २. ६८, ५६; ५. १, १८; २, २; १७२, २१; ७. १७६, ९; १९०, ९।

१. कुन्द, स्कन्द के एक पार्षद का नाम है (९. ४५, ३९)।

२. कुन्द = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कुन्दापरान्त (बहु०), एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४९)।

कुपट, दनु के पुत्र, एक असुर का नाम है (१. ६५, २६)। पृथिवी पर राजा सुपार्श्व इसी के अंश से उत्पन्न हुये थे (१. ६७. २८–२९)।

कुवलाश्व—देखिये कुवलाश्व।

कुबेर, धन के अधिपति; उत्तर दिशा के दिग्पाल, गुह्यकों, राक्षसों और यक्षों के राजा, तथा रिद्धि के पति, का नाम है। 'कुबेरस्य', (१. ७४, ८५)। 'उद्यानानि कुबेरस्य', (१. १२०, ११)। 'कुबेरस्य प्रियः सखा', (१. १७०, १३)। 'कुबेरः', (१. १९७, ३)। अर्जुन-कृष्ण के विरुद्ध देवों के साथ युद्ध करते हुये धनेश्वर, अर्थात् कुबेर ने अपनी गदा से कृष्ण पर प्रहार किया (१. २२७, ३२)। 'कुबेरं', (२. ६, १०)। 'कुबेरस्य सभां', (२. ९, ३०)। इनकी सभा का वर्णन, जहाँ इनके सखा, भगवान शङ्कर, भी कभी-कभी पदार्पण करते हैं (२. १०)। 'स राजगृहमासाद्य कुबेर-भवनोपमम्', (२. ५८, ३)। व्यास जी ने युधिष्ठिर से कहा कि वे अर्जुन को इनके तथा अन्य देवों के पास दिव्यास्त्र प्राप्ति के लिये भेजें (३. ३६, ३२)। ये अपने अनुचरों, यक्षों, के साथ अर्जुन के पास आये (३. ४१, ८)। दिव्यास्त्र प्रदान करने के पश्चात् इन्होंने अर्जुन को आशीर्वाद दिया (३. ४१, ३३)। 'कुबेरेण यथा हीनं वनं चैत्ररथं तथा', (३. ८०, ६)। 'जज्ञे धनपतिर्यत्र कुबेरो नरवाहनः', (३. ८९, ५)। अर्जुन ने इनसे दिव्यास्त्र प्राप्त किये (३. ९१, १३)। ये मन्दराचल पर्वत पर निवास करते थे। (३. १३९, ५)। लोमश ने युधिष्ठिर से कहा कि वे कुबेर के सचिवों तथा अन्य राक्षसों का सामना करने के लिये तैयार हों (३. १३९, १०)। 'कुबेरनलिनीं रम्यां राक्षसैरभिसेविताम्', (३. १४१, २४)। भीमसेन ने इनके भवन के समीप एक रमणीय सरोवर देखा जो इनका क्रीडास्थल था (३. १५३, २. ८; १५४, ४. ११)। 'कुबेरस्य नलिन्याः', (३. १५५, २१)। पाण्डवगण इनकी अनुमति से इनके सरोवर के समीप कुछ समय तक रहे (३. १५५, ३३)। इन्होंने गन्धमादन पर्वत पर आकर युधिष्ठिर से भेंट की (३. १६१)। इन्होंने युधिष्ठिर आदि को उपदेश और सान्त्वना देने के पश्चात् अपने भवन के लिये प्रस्थान किया (३. १६२)। 'कुबेरो नरवाहनः', (३. १६८, १३)। 'कुबेरात्', (३. १७६, १३)। 'कैलासं······कुबेरकान्तं', (३. १७७, २)। 'कुबेरकान्तां नलिनीं', (३. १७७, ९)। चित्रसेन इनके भवन से द्वैतवन सरोवर के पास आये (३. २४०, २१)। ये पुलस्त्य जी के पुत्र थे (३. २७४, १२)। "ये (वैश्रवण) अपने पिता को छोड़कर पितामह ब्रह्मा की सेवा में रहने लगे। इससे इन पर क्रुद्ध होकर इनके पिता पुलस्त्य ने अपने आधे शरीर से एक अन्य द्विज, विश्रवा, को प्रगट किया। विश्रवा वैश्रवण से प्रतिशोध लेने के लिये उन पर कुपित रहता था। परन्तु ब्रह्मा इन पर (वैश्रवण पर) प्रसन्न थे अतः उन्होंने इन्हें अमरत्व प्रदान करते हुये इन्हें धन का स्वामी और लोकपाल बना दिया। ब्रह्मा ने ही इनकी शिव से भी मैत्री कराई और राक्षसों से परिपूर्ण लङ्का नगरी को इनकी राजधानी बनाया। साथ ही उन्होंने इन्हें पुष्पक विमान भी दिया (३. २७४, १२–१७)।" जब इन्हें यह पता लगा कि इनके पिता इन पर क्रुद्ध रहते हैं तो ये उन्हें प्रसन्न रखने का यत्न करने लगे (३. २७५, २)। ये लङ्का में रहते थे (३. २७५, ३)। एक दिन जब ये अपने पिता के साथ विराजमान थे तो रावण आदि ने इन्हें महान् ऐश्वर्य से युक्त देखा (३. २७५, १४)। "ब्रह्मा से वर प्राप्त कर लेने पर रावण ने सर्वप्रथम इन्हें परास्त करके और लङ्का से बहिष्कृत कर दिया। रावण ने इनका पुष्पक विमान भी छीन लिया। तदनन्तर ये गन्धमादन पर्वत पर आकर निवास करने लगे (३. २७५, ३३–३४)।" इन्होंने रावण को शाप दिया (३. २७५, ३५)। विभीषण से सन्तुष्ट होकर इन्होंने उसे यक्ष तथा राक्षसों का सेनापति बना दिया (३. २७५, ३७)। इनकी आज्ञा से एक गुह्यक अभिमन्त्रित जल लेकर श्वेतपर्वत से श्रीराम के पास आया (३. २८९, १०)। रावण का वध करने के पश्चात् श्रीराम ने पुष्पक विमान इन्हें लौटा दिया (३. ९१, ६९)। अर्जुन और कृपाचार्य का युद्ध देखने के लिये ये भी उपस्थित हुये (४. ५६, ११)। 'लोकपालः कुबेरः', (५. १६, २७)। इन्द्र ने इन्हें इनके पद पर प्रतिष्ठित किया (५. १६, ३१)। इन्द्र ने इन्हें सम्पूर्ण यक्षों तथा धन का अधिपति बना दिया (५. १६, ३३) अन्य देवताओं सहित इनसे घिरे हुये इन्द्र ने स्वर्गलोक के लिये प्रस्थान किया (५. १८, २)। 'वैश्रवणः कुबेरो', (५. २९, १६)। गन्धमादन पर्वत पर एक दुर्गम गुफा में एक मधुकोष था जिसका मधु इन्हें अत्यन्त प्रिय था (५. ६४, १९)। द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को बताया कि कुबेर के भवन में जाकर पाण्डवों ने विविध प्रकार के रत्न प्राप्त किये हैं (५. १३९, १५)। ये यक्षों के रक्षक हैं (५. १५६, १२)। भीम ने उलूक से कहा कि यदि कुबेर भी दुर्योधन की रक्षा करें तो भी वह अब बच नहीं सकता (५. १६२, २७)। लोक में भ्रमण करते हुये स्थूलकर्ण के घर पर आये (५. १९२, ३३)। कुबेर शुक्राचार्य से धन का चतुर्थ भाग प्राप्त करके उसका उपभोग करते हैं और उस धन का सोलहवाँ भाग मनुष्यों को देते हैं (६. ६, २३)। गन्धमादन पर्वत पर गुह्यकों के स्वामी, कुबेर, निवास करते हैं (६. ६, ३४)। इन्हें युद्ध में जीतना सरल है परन्तु भीष्म को जीतना अशक्य (६. ५०, ७)। ये यक्षों में श्रेष्ठ हैं (७. ६, ५)। 'कुबेरसदनेष्वपि', (७. ६७, १५)। 'कुबेरतनयोपमः', (७. ७१, ९)। अर्जुन ने इनसे प्राप्त अस्त्रों के प्रयोग की घोषणा की (७. ७६, १३)। 'कुबेरस्य विहारे च नलिनीं पद्मभूषिताम्', (७. ८०, २७)। कवच और कुण्डल से सम्पन्न कर्ण का ये भी युद्ध में सामना नहीं कर सकते थे (७. १८०, १६)। कर्ण ने युद्ध में इन्हें भी विजित कर सकने की गर्वोक्ति की (८. ३७, ३१)। शल्य ने दुर्योधन को सान्त्वना देते हुए उससे कहा कि उसकी सेना में कुबेर आदि जैसे पराक्रमी योद्धा थे (८. ९२, १३)। "बलराम उस कुबेरतीर्थ में आये जहाँ पूर्वकाल में तपस्या करके कुबेर ने अनेक वर प्राप्त किये। इसी तीर्थ में कुबेर ने रुद्र के साथ मित्रता, धन का स्वामित्व, देवत्व, लोकपालत्व, और नलकूबर नामक पुत्र अनायास ही प्राप्त कर लिये। यहीं कुबेर को पुष्पक विमान मिला और वे यक्षों के राजा बने (९. ४७, २८–३१)।" अर्जुन ने इनसे दिव्यास्त्र प्राप्त किये थे (१२. ५, १३)। 'कुबेरभवनप्रख्यं', (१२. ४४, १०)। 'कुबेर इव नैर्ऋतान्', (१२. ६७, २६)। मुचकुन्द के साथ इनका संवाद (१२. ७४)। 'धनानां राक्षसानां च कुबेरमपि चेश्वरम्', (१२. १२२, २८)। 'इष्टेषु विसृजन्नर्थान्कुबेर इव कामदः', (१२. १३९, १०६)। 'कुबेरः सर्वयक्षाणां क्रतूना विष्णुरुच्यते', (१३. १४, ३१९)। उत्तर दिशा की ओर जाते समय अष्टावक्र मुनि का मार्ग में इन्होंने स्वागत किया (१३. १९, ३२–५३)। 'कुबेरमिव रक्षांसि', (१३. ६१, ३८)। 'कुबेरश्च

सहानुगः', (१४. ८, ४)। 'कुबेरानुचरैः', (१४. ८, ७)। 'कुबेरस्य', (१४. ८, ११. १२)। 'कुबेरः सर्वरक्षानां राजा', (१४. ४३, ११)। 'यक्षेन्द्राय कुबेराय', (१४. ६५, ६)। 'कुबेरभवनं', (१५. २०, ३३)। 'कुबेरस्य भवनं', (१८. ५, २९)।

तु० की० कुबेर के निम्नलिखित पर्याय :

*अलकाधिप—देखिये वस्था०।

*कैलासनिलय : २. ६, ११; ३. ४१, ३३; १२. २८६, ९।

*गदाधर : ६. ५०, ७।

*गुह्यकाधिप, गुह्यकाधिपति—देखिये वस्था०।

*द्रविणाधिपति : ३. १६०, ४१।

*धनद : २. १०, १३. १५. २१. ३३; ११, ५१; २५, ४; २७, २ (उत्तरां तस्मादिशं धनदपालिताम्); ३. १५०, २२; १५१, ५; १५६, १६; १६९, २९; १६०, ६; १६१, ३५; १६२, १ (धनद उवाच). २७; १६४, ६; १७८, २; ५. १००, ४; १११, ११; ११४, ४; १९२, ४५; ७. २७, ३९; २०२, ३७; ८. १७, १९; ६८, १३; ९. ४६, ३९; १२. ४४, १३; ७४, ९ (धनद उवाच); २८०, २८; २८९, ८. १०; १३. १९, १६. ३२. ४२. ६१।

*धनदेश्वर : २. १०, २९।

*धनाधिगोप्तृ : ५. १९२, ३४।

*धनाधिप : ३. १६१, २७. ३७. ४०; १३. १९, ५२।

*धनाधिपति : ३. १६१, ३०; १६२, ३५. ३६; ९. ४७, ३०।

*धनाध्यक्ष : १. १७९, १८; २०७, ३८; ३. ४१, ३३; १६२, २९; २८१, १२; १०. ९, १९; १४. ६५, ११।

*धनानां ईश्वरः : २. १०, २८. ३३; ३. ४१, ८।

*धनपति : १. २१६, १६; २. १०, ३८; १२, ३; २५, ९; ५. ११४, ३; ८. ४२, ३६; १२. २८९, ९।

*धनेश : ३. २३१, ३२; २७४, १५; ७. ७२, ४६; १८. ५, १४।

*धनेश्वर : १. १८७, ६; २२७, ३२; २. १०, २७. ३८. ३९; ३. १९, २१; ११८, ११; १५४, ६. ९. २७; १६०, ६१; १६१, १८. २२. ३३. ३६. ५४ (धनेश्वर उवाच). ६०; १६६, १६; २६५, ३; २७५, ३२. ३७; २८१, २४; ४. ७०, २१; ५. १८, २; ११७, ९; १९१, २५; ६. १०७, १७; ७. ४६, १२; १३३, १०; १२. ७४, १२; २०७, ३५; १३. १६. २२; १९, ५१; १५०, ३९; १६५, ११।

*नरवाहन : ३. ८९, ५; १५९, २६; १६१, ४२; १६८, १३; २३१, ३३; २७५, १४; ५. १९२, ३३; १२. ५९, ११९।

*निधिप : १२. २०७, ३५।

*पौलस्त्य—देखिये वस्था०।

*यक्षपति, यक्षप्रवर, यक्षरक्षोधिप, यक्ष-राक्षसभर्तृ, यक्षराज्, यक्षराज, यक्षराजन्, यक्षाधिप, यक्षाधिपति—देखिये वस्था०।

*राक्षसाधिपति, राक्षसेश्वर, राजराज, राजराजन्—देखिये वस्था०।

*वित्तगोप्तृ : ८. ९०, ३५।

*वित्तपति : ७. १८५, २५।

*वित्तानां पतिः : ८. ३४, ३२।

*वित्तेश : ६. ३४, २३; १४. १०, ३४।

*वैश्रवण : १. १, १६६; २, १८३; ५५, ४; १९९, ६; २. १०, २; १७, १५; ३. १२, २२; ६५, २३; १५३, ९; १५४, १२; १५६, १२. १३; १५९, २६. २८; १६०, ५. ३७. ५९. ६१; १६१, १५; १६३, ५. ६; १६४, १९; १७६, ४. १८; १८९, ५; २७४, १२. १४. १५; २७५, १. १४. ३४; २९१, ६९; ४. १३, ३८; ४५, ४०; ७०, १४; ५. २९, १६; १३२, ९. १०; १५८, ३२; १९२, ४८. ५५; ६. ६, ४१; १०३, २२; १२०, ५२; ७. १०, ४१; २३, ४२; ६९, २४; ९९, ११; २०२, ४३; ८. ८, २४; ३९, २; ७०, ७; ८७, ४९; ९. ५५, २९; १२. १५, १७; ५७, १८; ६८, ४१. ४७; ७४, ३. ५. ८. १६. १९; १३९, १०३; १५५, १०; २८३, ८; १३. १३, ३५. ३७. ४८. ५१; ५३, ४९; १०२, १८; १४६, ४; १४. ७०, १९; ८९, ३३; १५. १०, ४२।

कुब्जाम्रक, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, ४०)।

१. कुमार = स्कन्द, देखिये वस्था०।

२. कुमार, एक राजा का नाम है जिनको पाण्डवों ने आमन्त्रित किया (५. ४, २४)।

३. कुमार, गरुड के पुत्र, एक सुपर्ण का नाम है (५. १०१, १३)।

४. कुमार, एक पाञ्चाल राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के चक्ररक्षक थे। द्रोण ने इनका वध किया (७. १६, २१–२५)।

५. कुमार = सनत्कुमार (५. ४१, २. ५; १२. ३७, १२ : 'पितामहसुतं ज्येष्ठं कुमारं दीप्ततेजसम्')।

६. कुमार (बहु०) एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने पराजित किया था (२. ३०, १)। ये लोग युधिष्ठिर के लिये उपहार लाये (२. ५२, १४)।

७. कुमार, स्कन्द के पार्षदों के एक वर्ग का नाम है (३. २२८, ३)। ये स्कन्द से उत्पन्न हुये थे (३. २३०, ३१)।

१. कुमारक, कौरव्य जाति के एक नाग का नाम है (१. ५७, १३)।

२. कुमारक (बहु०) = ७. कुमार (३. २२८, १)।

कुमारकोटि, एक तीर्थ का नाम है (३. ८२, १७)।

कुमारधारा, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १४९)।

१. कुमारी, केकय देश की एक राजकुमारी का नाम है जो पूरुवंशीय राजा भीमसेन की पत्नी और प्रतिश्रवा की माता थीं (१. ९५, ४३)।

२. कुमारी, धनंजय नामक नाग की पत्नी का नाम है (५. ११७, १७)।

३. कुमारी, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, ३६)।

४. कुमारी, शाकद्वीप की एक नदी का नाम है (६. ११, ३२)।

५. कुमारी = दुर्गा (उमा) : ४. ६, ७।

६. कुमारी, एक तीर्थ का नाम है जो पाण्ड्य देश में स्थित था (३. ८८, १४)।

७. कुमारी, स्कन्द से उत्पन्न ग्रहों का नाम जो गर्भस्थ बालकों का भक्षण करने वाले थे (३. २३०, ३१)।

१. कुमारपितृ = स्कन्द (३. २२८, ५)।

२. कुमारपितृ = शिव (८. ३३, ६०; १०. ७, ९)।

कुमारसू (कुमार के पिता) = अग्नि (२. ३१, ४४)।

कुमारिका, एक तीर्थ का नाम है (३. ८२, ८१)।

१. कुमुद, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, १५; ५. १०३, १३; १६. ४, १५)।

१. कुमुद, एक वानर का नाम है जो सुग्रीव का अनुगामी था (३. २८९, ४)।

३. कुमुद, सुप्रतीक के कुल में उत्पन्न एक गजराज का नाम है (५. ९९, १५)।

४. कुमुद, गरुड के पुत्र, एक सुपर्ण का नाम है (५. १०१, १२)।

५. कुमुद, कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम है (६. १२, १०)।

६. कुमुद, धाता द्वारा स्कन्द को प्रदान किये गये पाँच पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३९)।

७. कुमुद, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ५६)।

८. कुमुद = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कुमुदमालिन्, ब्रह्मा द्वारा स्कन्द को दिये गये चार पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, २५)।

कुमुदाक्ष, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, १५)।

कुमुदोत्तर, शाकद्वीप का एक वर्ष जो जलद के निकट स्थित था (६. ११, २५)।

१. कुम्भ, प्रह्लाद के द्वितीय पुत्र, एक असुर का नाम है (१. ६५, १९)।

२. कुम्भ = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कुम्भक, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७५)।

१. कुम्भकर्ण, रावण के भ्राता, एक राक्षस का नाम है (३. २०४, २९)। "विश्रवा द्वारा राक्षसकन्या पुष्पोत्कटा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र जो रावण का छोटा सहोदर भाई था। यह अत्यन्त शक्तिशाली और मायावी था। इसने सर नीचे करके घोर तपस्या की और ब्राह्मा से निद्रा का वरदान माँगा (३. २७५, १–७. २८)।" त्रिजटा ने इसे देखा (३. २८०, ६६)। रावण ने इसे निद्रा से जगवाया (३. २८६, १९. २०. २२)। इसे श्रीराम के विरुद्ध युद्ध के लिये भेजा (३. २८६, २८. २९)। युद्ध में लक्ष्मण ने इसका वध किया (३. २८७, १. ६. ८. ९. ११. १३. १५. २०)। हतं…कुम्भकर्ण', (३. २८८, १)। 'कुम्भकर्णेन', (३. २८८, ६)। तुकी० राक्षस्, राक्षसेश्वर, राक्षसेन्द्र।

२. कुम्भकर्ण = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कुम्भकर्णादिवध—"कुम्भकर्ण ने वल, चण्डवल, वज्रबाहु, तथा अन्य वानरों का भक्षण कर लिया। तदनन्तर वह सुग्रीव और लक्ष्मण से युद्ध करने लगा। जब उसकी भुजायें काटी जाती थीं तो उसकी दूनी भुजायें पुनः प्रगट हो जाती थीं। अन्त में लक्ष्मण ने एक ब्रह्मास्त्र से इसका वध कर दिया जिससे भयभीत होकर सभी राक्षस भाग चले। लक्ष्मण ने वज्रवेग और प्रमाथिन् से भी युद्ध किया। हनुमान ने वज्रवेग का और नल ने प्रमाथिन् का वध किया (३. २८७)।

कुम्भकर्णाश्रम, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १५७)।

१. कुम्भयोनि, इन्द्र की सभा में नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम है (३. ४३, ३०)।

२. कुम्भयोनि = अगस्त्य (३. ९८, २)।

३. कुम्भयोनि = द्रोण (७. १५७, २७. ३६; १८४, ३. ६. १०; १९२, १२)।

कुम्भरेतस्, शंयु के प्रथम पुत्र, भरद्वाज, की पत्नी वीरा के गर्भ से उत्पन्न वीर नामक अग्नि का नाम है जिन्हें सोम देवता के साथ द्वितीय आज्य-भाग प्राप्त होता है। इन्हें 'रथप्रभु', 'रथध्वान', और 'कुम्भरेतस्' भी कहते हैं (३. २१९, ९–१०)।

कुम्भवक्त्र, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७५)।

कुम्भश्रवा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २६)।

कुम्भसम्भव = द्रोण (७. १५७, ३६; १९२, १५)।

कुम्भाण्डकोदर, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६९)।

कुम्भिका, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १५)।

कुम्भीनसि, एक असुर का नाम है (१३. ३९, ७)।

कुम्भीनसी, गन्धर्वराज चित्ररथ की पत्नी का नाम है जिसने चित्ररथ की जीवन-रक्षा के लिये युधिष्ठिर से प्रार्थना की थी (१. १७०, ३५)।

कुरङ्ग, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान और त्रिरात्र-उपवास के फल का वर्णन किया गया है (१३. २५, १२)।

१. कुरु, कुरुओं के पूर्वज, एक प्राचीन राजा का नाम है जो संवरण के पुत्र थे। सञ्जय ने पूर्वकाल के राजाओं के अन्तर्गत इनकी गणना कराई (१. १, २३२)। 'भरतस्य कुरोः पुरोराजमीढस्य चानघ', (१. ७५, १)। ये संवरण द्वारा तपती के गर्भ से उत्पन्न हुये थे (१. ९४, ४८)। इन्होंने वाहिनी के गर्भ से अश्ववान्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि एवं जनमेजय नामक पुत्र उत्पन्न किये, और इन्हीं के नाम से कुरुजाङ्गल देश की प्रसिद्धि है (१. ९४, ५०–५१)। इन्होंने दशार्ह की राजकुमारी शुभाङ्गी से विवाह और उससे विदुर को उत्पन्न किया (१. ९५, ३९–४०)। ये संवरण और तपती के पुत्र थे (१. १७३, ५०)। 'कुरोर्वै यज्ञशीलस्य क्षेत्रमेतन्महात्मनः', (३. १२९, २२)। इनके यज्ञ के समय कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी ओघवती के नाम से प्रगट हुई (९. ३८, २६–२७)। कुरुक्षेत्र की भूमि जोतते समय इनका इन्द्र के साथ संवाद (९, ५३, २–४. ६–१५)। 'कुरुः' (१२. ४७, ८; १३. १६५, ५४; १५. १०, २४)।

२. कुरु = दुर्योधन (७. १८९, २०)।

३. कुरु (वहु० कुरवः), कुरु के वंशजों या एक जाति के लोगों का नाम है। वहुधा पाण्डु के वंशजों और अनुगामियों के विपरीत इसका धृतराष्ट्र के पुत्रों और उनके अनुगामियों के लिये प्रयोग किया गया है : १. १, १३. १७५; २, १३ (कुरुपाण्डवसेनयोः). २८. ३० (कुरुवाहिनीम्). ६४. ७४. २१२. २१३. २८१; ४१, १४; ४२, ३८; ४९, १४. १८; ६०, १८. २२. २४; ६१, ४. ७; ६२, १. ३०; ६३, १२६; ६७, ७५. ८७; ६८, २; १००, १२. १९; १०१, १२; १०२, ५७. ७३; १०६, ३. ११; १०८, १९; १०९, १. १०. ११. १६; ११०, १८; ११३, २२. २९. ३१. ३८; ११५, ३०; १२१, १; १२२, २४. ४२; १२३, ४०; १२४, २२; १२६, ३४; १२७, २८; १२८, २; १२८, ३८. ४३; १३०, २६. ३१; १३१, १३. ७५. ७८; १३२, १. ३६; १३५, ११; १३८, ६१; १३९, २२. २५; १४५, ३. ५; १४६, २५; १६६, १६; १७०, ६५. ८०; १७१. १२; १७२, ३; १७३, २८; १८५, १३; १९०, ४४; १९१, ५. १८. २१; १९२, ९. १०; १९४, ३. ४; २००, १७; २०३, ३. ४; २०४, २८; २०६, २२. २४; २१३, ४; २२१, ५९. ६०. ६१. ६२; २. ५, २६; १३, ५; २०, २६; २६, १४; ३७, २८; ४६, ५; ५०, १०; ५८, ८. २६; ३६; ६२, १०; ६६, १०. १२; ६७, २३. २७. ३९. ४०. ५२; ६८, ४३; ६९, २. ७. १७; ७१, १७. १८. १९. २१. २५; ७२, ४; ७३, १४; ७६, १९; ७७, १२. १९; ७९, ६. ३३; ८०, २३. २४. ३३; ८१, १७. ३५; ३. ३, १३; ४, ९; १०, २. १०. २०; १२, ६२; १३, ११; २३, ७. ९; २७, ९. २३; २८, ३५; ३३, ७६; ३४, ११. १२. १४. १९; ५१, ४५; ८०, २०; ८५, १६; १२०, ११. २३; १५४, २७; १५५, ३३; १५९, ४. ५; १६२, २२; १६५, ११; १७६, १२. २१; १७७, १३. २०; १८३, ७. २१; १९१, २१. ३०; १९४, २; २३३, ३; २३५, ८; २३६, २९; २३७, ११; २४१, ६; २४६, २०; २४८, ८; २६८, २२; २६९, ८. १२; ३११, ७; ३१३, ६; ४. १, १२; ६, ३५; ९, २०; १०, ५; २०, १२; २१, ६; ३१, ३०; ३५, ५. १०. १४. १९; ३६, ५. ८. ९. २२; ३७, ८. १२. १८. २९.-३२. ३४; ३८, १. २. ५. १०. ११. १५. २१. २५. २६. ३२. ३९. ४९. ५०; ३९, २; ४५, ६. ३२; ४८, २३; ४९, ५. ८; ५३, १०. १५; ५४, २. ४. ८. १२. २२. २६. ३२; ५५, ३१; ५६, १३; ५७, १. ५. ६. १०; ५९, १२; ६०, ४. ८; ६१, ५. १९. २१. २८. २९. ३४; ६३, ९; ६४, १३. १९; ६६, ८. ११. १२. १९. २२. २५. २६. २९. ३०; ६७, १. २. ७. ८. १०. १२. १४. १६. २३; ६८, ७. १०. १६. १८. १९. २०. ३६. ७५; ६९, ३. १०. १२; ७०, १६. १८. २१; ७१, २१; ५. १, १; २, ४. ५; ५, ३. ८. १४. १६. १८; १९, १४; २०, १२. १४. १६; २१, १५; २२, ३२; २३, ११. १९. २०; २४, १; २५, ३. ८. ९. ११. १४; २६, ८. १३. १६. १७. १९. २२. २३; २७, २; २९, ३१. ३२. ३६. ३७. ३८. ४८. ४९; ३०, १६. १८. २१. २२. २७. ३९. ४८; ३१, ४. ५. ११. १२. १३. १४. १५. २१. २२; ३२, २१. २२. २८. ३१. ३२; ३४, २. ५; ३६, ७२. ७३; ४८, ३. १४. ९६. ९७. १०९; ४९, २५. ३९. ४८; ५०, १०. १४. ३६; ५१, ७. ३९. ५९; ५३, १४; ५४, ७; ५५, ४. १०; ५७, ५८; ५८, ४. ८. २८; ६०, ४. ८. २१. २२. २३; ६२, १४; ६५, १२; ७२, ७९. ८१. ८२. ८७. ९०; ७३, १२. ३४. ३६; ७४, १. ९. १८. २१; ७७, १७; ७८, ७. ८; ७९, १; ८०, ११; ८१, २; ८२, ३८; ८३, १. ५. २९. ४८. ६९; ८५, १८; ८७, १५; ८९, २०. २१. २२; ९०, २१. ३१. ५१. ५२. ५७. ६६. ८३; ९१, ४. ११. १२. ३५. ३६. ३८; ९३, ८. ९. १६. १९. २०; ९४, ८. १५. २५. २७. ३३. ४०; ९५, ३. ६. ८. ११. २२. ३१; ९६, ३; ९७, १. ८; १२७, १; १२८, १. १०. २२. ३४; १२९, ५०; १३०, १८; १३१, ३३. ३५. ३७. ४१; १३२, १; १३७, ३. ४. २३. २७; १३९, २२; १४३, ४. १०; १४४, १. ८. ९; १४५, ९; १४७, ११. १४; १४८, ३. ४. २१. २७. ३०. ३६; १४९, ३; १५०, ७. १९; १५१, २; १५३, ७; १५८, ३१; १५९, १. ३; १६०, ८. ९. ४९. १०३; १६१, ६. २१; १६२, २३. ३२; १६३, १२; १६६, २; १६८, १४. ३७; १८२, ११; १९४, ६; ६. १, २. ३. २६. ३३; २, १३. १५; ३, १२. २३. ५२. ६२; ९, ३९. ७५; १४,

१. ४. ४०. ८०; १५, १३; १६, ४. २३; १७, १८; १८, ९; १९, १०. १४; २०, ५. ७; २५, २५; ४४, १. २५; ४५, २; ४६, ३. ४८; ४८, १. २७. ३२. ११७; ५०, ४१; ५१, ३०; ५५, २१; ५९, ८४. ९४. १०३. १०६. १०७. १२८. १२९. १३२. १३४. १३९; ६०, ६. २९; ६१, ३४; ६३, ३०; ६४, ८०; ७०, १२; ७२, १२. १५; ७३, १२. ४१; ७४, ८. ३८. ३९; ७७, ४६; ७८, ३१; ८५, ३६; ८६, ५३; ८७, १. ३७; ८९, २८; ९६, ३. ७९. ८०; ९७, २६; १०३, ४४; १०४, १५. ३८; १०६, ७८; १०७, ९; १०८, ११. ६०; ११५, २. ३. ६. ४२; ११७, ५०; ११९, ६९. ८०. ८४. १०९. १११. ११४; १२०, २. १०. ११. २१. २५. २८. ३१. ६२; १२१, ६. २६. २८; १२२, १३; ७. १, ९. १०. १३. २५. ३२; २, १. ३. ७. १३. १५. २२. ३५; ३, १२. १३. १४. १५. १६; ४, ११. १४. १७. १८; ७, २०. ४२. ५०; ११, ३४. ३७. ४७; १२, ७; १३, १९; १५, २. १०; १६, १२. ४४; २१, ४१. ६३; २२, २५; २३, २९; ३१, ६. ७. १९; ३२, ४६. ५०; ४७, १२; ४९, १२; ७४, ३१; ८२, ३; ८५, २. १४; ८६, ६. २३; ८७, ३१; ९१, २२; ९५, ३; ९६, १; ९७, ४; १००, १८. २३; १०२, ३२; १०३, ४७; १०४, ९; १०५, २८. ३८; १०६, १. २. ४; ११०, ८३; १११, १३; ११२, ४२; ११४, १९. ३२. ५३; ११५, ६१; १२१, ३२; १२४, १८; १२७, २३. ६१; १३०, १८; १३५, १७. ३५; १३७, १६; १३९, २३. ७७; १४०, २०; १४१, २२. २६. २८. ४६. ६७; १४५, ५. ९१. ९३. ९५; १४६, ३९; १४७, १५; १५०, ११; १५१, २. १९. ४०; १५३, ८; १५५, १२; १५६, ९७; १५७, ३८; १५८, ६९; १६२, १०; १६७, ७८; १७०, ५८; १७४, १३. २०. २१; १७५, ६१; १७७, १; १७९, २१. ४०. ४२. ४८. ६४; १८३, १२; १८४, १३. २८; १८६, १. ४. ६; १८८, ५०; १८९, ६४; १९२, ७४; १९३, १. २०. ३८; १९६, ८. ११. २१. २९; १९९, ९. १२. १३. ५१; ८. १, १४. १५; ५, ३; ९, ६०; २१, ९. २६; २४, ४; २५, १६; २८, ४९; ३७, १. ३७; ४१, ७६; ४३, ३१. ३९; ४५, १४. १६. ३०. ३५; ४६, २२; ४७, २०. २३; ४८, ६७; ४९, ६३; ५०, ३; ५१, ६९. ७६; ५६, ८१. १४५; ५७, १२; ५९, १; ६१, २. १५; ६४, ४; ६६, ३८; ६७, २. ५; ६८, ११; ६९, ७९; ७३, २१; ७४, ५६; ७६, ३. २०; ७८, ४; ७९, ४५. ९४; ८०, १. ४. २१. २२; ८१, १. ७. ९. ३९. ४१. ४३. ४५. ४८; ८२, १; ८४, ३८; ८५, ९. २३; ८७, १०; ८८, ५. १३; ८९, ४३. ६७. ६८. ८४. ९५. ९६. ९७; ९०, १. ३. ७. १६; ९१, ३८. ६६; ९२, ५; ९३, १; ९४, ११. २७. ६३; ९५, १. १३. १४. १७; ९. १, १. ९. ३४. ४१; ३, १; ८, २७. ३६; ९, १. ३२; १०, ७; १६, ३०; १७, १८. ४१. ४२. ६८; २१, ४; २३, १४. १५. ४५; २८, ६३; २९, ८०. ९०; ३१, ४४; ३३, ३. २५; ३५, १०. १६. २१; ५४, २२. २३; ५८, ११; ५९, १७; १०. १, २९; ८, ७३; ९, ६१; १०, २७; १६, ३; ११. ८, १७; १०, ७. १८. २०; १४, १. १६; १६, १. १०. १५. १७. २६. ४४. ४५; २३, २४. २५. २९; २४, ४; २५, ४१. ४३; २७, ३. २३; १२. ७, ४. २०; ३७, ३९. ४१; ५५, ४; ७५, ३५; १६८, १; २२८, ९६; ३४८, ८; ३४९, ४४; १३. ७, २७; ३९, १३; ५७, ४; ७६, २८; १४८, ६१; १६८, १८. २४; १४. १४, १५; १५, ३३; ५२, ७. ५७; ५३, १०. २०. २२; ५४, २१; ६०, ५. १०; ६१, २७; ६२, १७; ६३, ५; ६७, २; ७०, २१; ७१, १७; ७५, ४; ८०, ९; ८७, १२. २७; ८८, ३; १५. ३, १६; ८, १५; १०, २८. ३०. ३५; १७, १२. २१; १८, ११; २३, १४; २४, २; २५, ४; ३२, ६; ३३, ८. १८; १६. ४, २. ३. १९; ५, १; १७. १, ३८; १८. ४, १; ५, ३०। तुकी० कौरव; बहु० कुरूद्वह; बहु० कुरुजाङ्गल; बहु० कुरुकुल; कुरुवंश; और उत्तराः कुरवः।

कुरुकर्तृ = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कुरुकुल—१. ४२, ३८; ४९, १८; ५. ३६, ७३; १५. ३६, २५।

१. कुरुकुलश्रेष्ठ = अर्जुन (१४. ३५, १४; ८७, २२)।

२. कुरुकुलश्रेष्ठ = भीष्म (३. ८१, २२; ८३, ८२)।

३. कुरुकुलश्रेष्ठ = धृतराष्ट्र (७. १८३, ४; १५. ११, ४१)।

४. कुरुकुलश्रेष्ठ = दुर्योधन (९. ५७, ५७)।

५. कुरुकुलश्रेष्ठ = जनमेजय (१५. ३५, १२)।

६. कुरुकुलश्रेष्ठ = युधिष्ठिर (१२. ८९, ९; ९२, २१; १५. ११, ४)।

१. कुरुकुलाधम = भीष्म (२. ४१, १२; ३. २५३, २१)।

२. कुरुकुलाधम = दुर्योधन (४. ५३, १०; ९. ५६, १८)।

३. कुरुकुलाधम = परिक्षित (१. ४१, १८)।

१. कुरुकुलोद्वह = अर्जुन (३. ३७, ५०; १४. ५१, ४४. ४७; ७८, ३४)।

२. कुरुकुलोद्वह = भीमसेन (३. १४९, ९)।

३. कुरुकुलोद्वह = भीष्म (३. ८३, ५३; ५. १७८, १५; ६. ११९, १००; १२. ३०२, ६; १३. ३०, १; ८६, ४; १६८, १४)।

४. कुरुकुलोद्वह= धृतराष्ट्र (६. ११, ३३; १२, २१; ७. २०१, ४९; १५. २, १४)।

५. कुरुकुलोद्वह = जनमेजय (९. ४८, ४; १४. ६३, १०)।

६. कुरुकुलोद्वह = पाण्डु (१. १२६, ३३)।

७. कुरुकुलोद्वह = विचित्रवीर्य (५. १४७, २१)।

८. कुरुकुलोद्वह = युधिष्ठिर (२. ४६, ५; ३. १७, ९; २२, ३; १९०, ६१; २१८, १; १४. ७२, २१; १५. ३, ७३; १७. ३. २५)।

कुरुक्षेत्र (कुरुओं का क्षेत्र)—जनमेजय ने यहाँ एक यज्ञ किया था (१. ३, १)। नागराज तक्षक इसी क्षेत्र में इक्षुमती नदी के तट पर निवास करता था (१. ३, १४०–१४१)। महातपस्वी कुरु ने अपनी तपस्या से इस क्षेत्र को पवित्र बना दिया था (१. ९४, ५०)। शान्तनु-पुत्र चित्राङ्गद ने चित्राङ्गद नाम के एक गन्धर्व के साथ यहीं युद्ध किया था (१. १०१, ८)। 'तेषु त्रिषु कुमारेषु जातेषु कुरुजाङ्गलम्। कुरवोऽथ कुरुक्षेत्रं त्रयमेतदवर्धत ॥', (१. १०९, १)। सम्पूर्ण दिशाओं को विजित करने के पश्चात् सुन्द और उपसुन्द यहीं निवास करने लगे (१. २१०, २७)। तक्षक खाण्डव से कुरुक्षेत्र चला आया था (१. २२७, ४; २२८, १७)। पाण्डवगण गङ्गातट से यहाँ आये (३. ५, १)। "पुलस्त्य जी ने बताया कि कुरुक्षेत्र के दर्शन मात्र से समस्त जीव पाप-मुक्त हो जाते हैं। 'मैं कुरुक्षेत्र में जाऊँगा; कुरुक्षेत्र में निवास करूँगा', इस प्रकार जो कहता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। वायु द्वारा लायी गई कुरुक्षेत्र की धूल भी शरीर पर पड़ जाय तो मनुष्य को परमगति प्राप्त हो जाती है। जो सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती के उत्तर कुरुक्षेत्र में वास करते हैं वे मानो स्वर्गलोक में ही रहते हैं—कुरुक्षेत्र की सीमा में स्थित अनेक तीर्थों की महत्ता का वर्णन। (३. ८३, १–४. ७–८. २४. ११०. १४५. २०३. २०५. २०६)।" 'तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च। एतत्कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते ॥', (३. ८३, २०८)। 'कुरुक्षेत्रसमा गङ्गा', (३. ८५, ८८)। 'द्वापरेपि कुरुक्षेत्रं गङ्गा कलियुगे स्मृता', (३. ८५, ९०)। 'पुष्करे तु कुरुक्षेत्रे', (३. ८५, ९१)। कुरुक्षेत्र के ही एक पवित्र स्थान पर मान्धाता ने यज्ञ किया था (३. १२६, ४५)। 'द्वारमेतत्तु कौन्तेय कुरुक्षेत्रस्य भारत', (३. १२९, ११)। मुद्गल नामक एक जितेन्द्रिय ऋषि इसी क्षेत्र में निवास करते थे (३. २६०, ३)। ४. ५, २०; ५. १४१, ५३; १५०, ३. १९। पाण्डवसेना ने कुरुक्षेत्र में पदार्पण किया (५. १५१, ६८. ६९)। 'सरितं पुण्यां कुरुक्षेत्रे हिरण्वतीम्', (५. १५२, ७)। 'सन्निविष्टं कुरुक्षेत्रे', (५. १५३, १)। 'शिविराणि कुरुक्षेत्रे क्रियन्तां वसुधाधिपाः', (५. १५३, १४)। दुर्योधन की सेना ने कुरुक्षेत्र के लिये प्रस्थान किया (५. १५६, ३४)। ५. १५९, १; १६०, ९३; १६१, ११। भीष्म और परशुराम का युद्ध यहीं हुआ था (५. १७८, २२. ५७. ५९. ६६. ७२. ७९. ८१)। ५. १९५, ११; ६. १, २. ३. २३। 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे', (६. २५, १)। 'बहिष्कृता हिमवता गङ्गया च बहिष्कृताः। सरस्वत्या यमुनया कुरुक्षेत्रे चापि ये ॥', (८. ४४, ६)। 'रमणीये कुरुक्षेत्रे', (९. २३, २५)। 'कुरुक्षेत्रमुदारवृत्तिः', (९. ३५, ३७)। 'कुरुश्रेष्ठ कुरुक्षेत्रे कुरुष्व महतीं क्रियाम्', (९. ३७, ५७)। सरस्वती नदी यहाँ ओघवती के नाम से प्रगट हुई (९. ३८, २६–२७)। ९. ५२, २८–२९।

महात्मा कुरु ने इस क्षेत्र को बहुत वर्षों तक जोता था अतः इसका नाम कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हो गया; इसे समन्तपञ्चक भी कहते हैं (९. ५३, १-२)। इसकी सीमा और महिमा का वर्णन (९. ५३)। 'तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च। एतत्कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं प्रजापतेरुत्तरवेदिरुच्यते ॥', (९. ५३, २४)। बलराम ने इस क्षेत्र का दर्शन किया (९. ५४, १)। भीमसेन और दुर्योधन का युद्ध यहीं हुआ था (९. ५५, ७. १६)। 'पृथिवीपालाः कुरुक्षेत्रं समागताः', (११. ८, २७)। 'समासाद्य कुरुक्षेत्रं', (११. १६, ११)। भीष्म ने यहीं परशुराम से युद्ध किया था (१२. २७, ८)। भीष्म यहीं पर बाण-शय्या पर पड़े रहे (१२. ४८, २. ३. ६. १४; ५३, २३; ५९, २)। 'पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात्सरस्वतीम्', (१२. १५२, ११)। अग्निपुत्र सुदर्शन अपनी पत्नी, ओघवती, के साथ यहीं रहते थे (१३. २, ४०)। एक तीर्थ (१३. १२५, ४८; १६५, २४; १६७, १२)। 'उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य कुरुक्षेत्रनिवासिनः', (१४. ९०, ७. २१)। 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे', (१३. ९०, २४)। 'कुरुक्षेत्राश्रमं', (१५. २२, २१)। कुरुक्षेत्रमवातरत्', (१५. २३, १६)। 'कुरुक्षेत्रनिवासिनः', (१५. २७, २१)। 'कुरुक्षेत्रे रणाजिरे', (१५. ३१, ७)। 'कुरुक्षेत्रात्पिता', (१५. ३७, १०)। 'कुरुक्षेत्रमवातरत्', (१६. ७, ६७)। तुकी० ब्रह्मक्षेत्र, ब्रह्मवेदी, धर्मक्षेत्र, समन्तपञ्चक।

कुरुक्षेत्रकथन (म्)—"ऋषियों ने बलराम से कहा: समन्तपञ्चक-क्षेत्र सनातन तीर्थ है। इसे प्रजापति की उत्तरावेदी कहते हैं। यहाँ प्राचीन काल में देवताओं ने बहुत बड़े यज्ञ का अनुष्ठान किया था। राजर्षिप्रवर महात्मा कुरु ने इस क्षेत्र को अनेक वर्षों तक जोता था जिससे यह कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हो गया। बलराम के यह पूछने पर कि कुरु ने इस क्षेत्र को क्यों जोता था, ऋषियों ने कहा: पूर्वकाल में जब कुरु इस क्षेत्र को जोत रहे थे तो इन्द्र ने उनसे इसका कारण पूछा। कुरु ने कहा: 'जो मनुष्य इस क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त करेंगे वे पुण्यात्माओं के पापरहित लोक में जायेंगे।' कुरु का वचन सुनकर इन्द्र उनका उपहास करके चले गये परन्तु कुरु इस क्षेत्र को जोतते ही रहे। इन्द्र भी अपने कार्य से विरत न होनेवाले कुरु के पास बार-बार आते और उनसे पूछ-पूछ कर प्रत्येक बार उनकी हँसी उड़ाकर चले जाते थे। जब कुरु तपस्यापूर्वक कुरुक्षेत्र की भूमि को जोतते ही रहे तो इन्द्र ने देवताओं को भी कुरु की चेष्टा से अवगत कराया। देवताओं ने वरदान देकर कुरु को अपने अनुकूल करने का परामर्श दिया। तब इन्द्र ने आकर कुरु से कहा: 'नरेश्वर! आप व्यर्थ कष्ट क्यों उठाते हैं? जो मनुष्य और पशु-पक्षी यहाँ निराहार रहकर देहत्याग करेंगे अथवा युद्ध में हत होंगे वे स्वर्गलोक के भागी होंगे।' कुरु ने कहा 'ऐसा ही हो'। इस प्रकार प्राचीनकाल में राजर्षि कुरु ने इस क्षेत्र को जोता और इन्द्र तथा ब्रह्मा आदि देवताओं ने इसे वर देकर अनुगृहीत किया। भूतल का कोई भी स्थान इससे अधिक फलदायक नहीं होगा। जो मनुष्य यहाँ रहकर तपस्या करेंगे वे देहत्याग के पश्चात् ब्रह्मलोक जायेंगे। जो पुण्यात्मा मानव यहाँ दान देंगे उनका वह दान शीघ्र ही सहस्रगुना हो जायगा। जो मानव शुभ की इच्छा रखकर यहाँ नित्य निवास करेंगे उन्हें कभी यम का राज्य नहीं देखना पड़ेगा। जो नरेश्वर यहाँ यज्ञ करेंगे वे, जब तक पृथिवी रहेगी, स्वर्ग में निवास करेंगे। इन्द्र ने इस क्षेत्र की महिमा के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा है: 'कुरुक्षेत्र से वायु द्वारा उड़ायी हुई धूल भी यदि किसी पर पड़ जाय तो वह मनुष्य परम पद प्राप्त करता है। ब्राह्मण शिरोमणि तथा नृग आदि मुख्य-मुख्य पुरुषसिंह यहाँ महान् यज्ञ करके देहत्याग के पश्चात् उत्तम गति को प्राप्त हुये। तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद, तथा मचक्रुक—इनके बीच का जो भूभाग है वही समन्तपञ्चक एवं कुरुक्षेत्र है। इसे प्रजापति की उत्तरावेदी कहते हैं। यह महान् पुण्यप्रद, कल्याणकारी, देवताओं का प्रिय और सर्वगुण सम्पन्न तीर्थ है। अतः यहाँ रणभूमि में मारे गये सम्पूर्ण नरेश सदा पुण्यमयी अक्षय गति प्राप्त करेंगे।' ब्रह्मा आदि देवताओं सहित साक्षात् इन्द्र ने ऐसी बातें कही थीं, और ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ने इन बातों का अनुमोदन किया था। (९. ५३)।"

१. कुरुजाङ्गल, भारतवर्ष के एक जनपद का नाम है जिसकी कुरु के नाम से ही प्रसिद्धि हुई (१. ९४, ४९)। इस देश की उन्नत दशा का वर्णन (१. १०९, १ और बाद)। १. १२६, ९। 'कुरुजाङ्गलमुख्येषु राष्ट्रेषु नगरेषु च', (१. १९९, ९)। कृष्ण, अर्जुन, और भीमसेन गिरिव्रज जाते हुये कुरु देश से प्रस्थित हो कुरुजाङ्गल के बीच से होते हुये पद्मसरोवर पहुँचे (२. २०, २६)। ३. १०, ९; ५. १९, २९; १५३, ४; ६. ४, ६। सुहोत्र ने इस प्रदेश में यज्ञ किये थे (७. ५६, ९)। ८. १, १७; ८. ४४, १५. १७। सुहोत्र ने यहाँ एक यज्ञ किया था (१२. २९, २९)। युधिष्ठिर की राजधानी (१२. ३७, २३)।

२. कुरुजाङ्गल (बहु० °लाः), कुरुजाङ्गल प्रदेश के निवासियों का द्योतक है: ३. १०, ९; २३, ५. ६; १८३, २०; १३. १६७, २२; १५. ८, ११. २३; १०, ६। तुकी० बहु० जाङ्गल; बहु० कुरु।

कुरुतीर्थ, कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है (३. ८३, १६५. १६६)।

१. कुरुनन्दन = अभिमन्यु (६. १०१, २५)।

२. कुरुनन्दन = अर्जुन: १. १७४, ११; १७७, ४२; १९२, १ (°नौ = भीमसेन और अर्जुन); १९५, २०; २१४, २०; २१६, ६. ७; २२१, १६; २२२, २७ (कुरुदाशार्हनन्दनौ = अर्जुन और कृष्ण); २३४, ११; २. ३, ५; २७, १९. २१; २८, ४; ३. ३९, ५२; ४०, ५; ४१, २१. ४१; ४२, २०. ३१; ४३, १५; १७५, २०; २४५, १७; ४. २, १२; ५. ७, ७ (°नौ = अर्जुन और दुर्योधन); १५१, १८; ६. २६, ४१; ३०, ४३; ३८, १३; ११०, २१; ७. १४६, ७९. १०२; ८. ८१, ९; १४. ६२, १६; ७९, ३४; ८०, ११।

३. कुरुनन्दन = भीमसेन: १. १२९, २८; १९२, १ (°नौ=भीमसेन और अर्जुन); २. २३, ३५; २९, ९; ३. १४८, २१; २४३, १६।

४. कुरुनन्दन = भीष्म: २. ३६, २६; ३७, ८. ९; ३. ८२, २१. ६७. ११७; ८३, ७६; ८४, ७३; ८५, ९. १७; ५. १७८, ४१; १७९, ४; १२. ३०२, २; १३. ३९, ३; १०६, ११; १६८, ३५।

५. कुरुनन्दन = धृतराष्ट्र: १. २०५, १०; २. ५६, ८; ३. १०, १७; ५. ९५, ३३; १३१, १९; १५६, २२; ६. ५, १३; ११, ८; १२, ४४; ४३, २०; ४८, ३२; १००, ३; १०९, ३२; ११०, २१; १०. ८, ५४; १५. १०, २७।

६. कुरुनन्दन = दुर्योधन: १. २०३, १७; २. ४७, २; ६४, २०; ३. २४०, ६; २४६, २३; २४७, ११; ४. २६, १८; ५२, १६; ५. ७, ७ (°नौ = दुर्योधन और अर्जुन). २७. ३३; ८५, ३; १०६, ६; १६६, ५; १८०, २६; १८८, ११; १९२, ४५; ७. ७५, १६; ८. ३२, ३५; ९. ६१, ३।

७. कुरुनन्दन = जनमेजय: १. १०५, २३. २५; २. ३६, १३; ३. ४१, २६; ५. १९, १६; १२. ३४८, ६२. ८४।

८. कुरुनन्दन = पाण्डु: १. ११२, १०; ११३, १९; ११९, ४१; १२१, ४; १२४, ३; १२५, १२; १४५, ११।

९. कुरुनन्दन = परिक्षित: १. ४२, २३।

१०. कुरुनन्दन = प्रतीप: १. ९७, १८।

११. कुरुनन्दन = सहदेव: २. ३१, २५. ५३; ४. १०, ३; ५. १५१, ८।

१२. कुरुनन्दन = विदुर: ३. ६, १७।

१३. कुरुनन्दन = युधिष्ठिर: १. १६८, ५; १९५, २७; २. १४, ६९; ३७, ११; ४५, ५२; ३. १४, १५; २१, १७; ३३, ४३. ८०; ७२, १८; ७४, २३; ७५, २२; ८५, १७; ९१, १३; ९२, ९; ९५, २९; १२८, ६; १२९, ८; १६३, २७; १६७, १२; १७३, २५; १८७, ४८; २७७, १३; ३११, २०; ५. ८, २९; ६. ४३, ४२. ४४. ४९; १०७, ५२; ७. ७२, ४७; ८२, २८; ९. ७, ३४; १७, ५२; ३१, ३. ४४; १२. १०, १२; २४, ७; ४१, ९; ४९, ८; ५६, २०; ६९, ६. २५. ६३. ६५; ७३, २४; १२२, १०; २७३, ७;

२८२, १५. ६१; २८३, १७; ३१८, १०६; १३. २१, १३; ४२, ४; ४७, २६. ३५. ४७. ५१; ५२, ३५; ५३, १४; ५७, ४२; ७०, ३०; ८४, ३; ९३, २४; ९६, २; ११५, ७. ९; १५९, ३; १४. ८८, १६; १५. ३, ३३. ५६; ४, १; ५, ८; ३७, १०; १७. ३, ३४; १८. ४, ६. ९।

१४. कुरुनन्दन (बहु० °नाः) = पाण्डु के पुत्र : ४. १, १९. २३; १३, १. २; ५. २१, ३।

१. कुरुपति = भीष्म : ६. ४९, ४।

२. कुरुपति = दुर्योधन : ६. ७९, १५; ८. ५६, ३५।

३. कुरुपति = पाण्डु : १५. २५, २।

४. कुरुपति = युधिष्ठिर : २. २, १७; ११. २७, २८; १४. ८५, १८; ८८, २८।

कुरु-पाण्डवसत्तम = अर्जुन : ३. ४२, ४०।

कुरु-पाण्डवाग्र्य = युधिष्ठिर : २. ६७, ५१।

१. कुरुपुङ्गव = अभिमन्यु : ६. ५८, २५।

२. कुरुपुङ्गव = अर्जुन : १. १३९, १५; ४. ५, १८; ५९, १८; १४. ५२, ३८ (°वौ = कृष्ण और अर्जुन); ७८, १२; १६. ६, १; ८, ३१।

३. कुरुपुङ्गव = भीमसेन : १. १२९, २३।

४. कुरुपुङ्गव = भीष्म : २. ३७, ६; ७. २, ११; १३. ५८, १; ५९,१।

५. कुरुपुङ्गव = भूरिश्रवस् : ७. १४२, ४६. ५६।

६. कुरुपुङ्गव = धृतराष्ट्र : २. ६७, २८।

७. कुरुपुङ्गव = दुर्योधन : ५. ५, ८; १७०, ११; १९२, ६०; ६. ११६, ८; ७. १५८, १३।

८. कुरुपुङ्गव = सोमदत्त : ७. १५६, २८; १६२, ७।

९. कुरुपुङ्गव = युधिष्ठिर : २. ३७, ६; ७. १६२, ४६; ८. ९६, २२; ९. १७, २१. ९०; १२. ३१, १०; १३. ११६, ४२।

१०. कुरुपुङ्गव, बहु० (°वाः) = बहु० कुरु (देखिये वस्था०)

कुरुपुङ्गवाग्रज = जनमेजय : १. ४४, ७।

कुरुपुङ्गवाग्र्य = सात्यकि : ७. ११८, १।

कुरुपृतनापति = कर्ण : ८. ३७, ४१।

१. कुरुप्रवीर = अर्जुन : ६. ३५, ४८; ८. ६५, १०; ९१, ३९।

२. कुरुप्रवीर = भीष्म : ५. २, ५; १२. ५१, १४।

३. कुरुप्रवीर = धृतराष्ट्र : २. ५३, २६; ८. ७, १३।

४. कुरुप्रवीर = दुर्योधन : ४. ६५, १३; ६६, २२; ८. ७९, ७१।

५. कुरुप्रवीर = जनमेजय : १. ४४, ६. ९।

६. कुरुप्रवीर = पाण्डु (?) : १. १९२, १८ (विचित्रवीर्यस्य सुतस्य कश्चित् कुरुप्रवीरस्य ध्रियन्ति पुत्राः)।

७. कुरुप्रवीर = पुरुमित्र : ८. ७, १४।

८. कुरुप्रवीर = विकर्ण : ४. ५४, ९।

९. कुरुप्रवीर = युधिष्ठिर : १. १९१, ६. २२; ३. २३, ८; ३. १९२, ७२; २३२, १०; ५. २, ९; १२. १६७, ४९।

१०. कुरुप्रवीर, (बहु० °राः) = कुरु, बहु० (देखिये वस्था०)।

कुरुभूत = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

१. कुरुमुख्य = अर्जुन : १४. ८०, २७।

२. कुरुमुख्य = भीमसेन : ६. ४५, १९ (°ख्यौ = भीमसेन और दुर्योधन); ९. ५८, १।

३. कुरुमुख्य = भीष्म : १. १००, ७४; ५. ५९, १८; १४८, ३४; ६. १०७, १०६; ११८, ३८।

४. कुरुमुख्य = चित्राङ्गद : १. १०१, ८।

५. कुरुमुख्य = धृतराष्ट्र : २. ४८, २३।

६. कुरुमुख्य = दुर्मुख : ७. २०, ३०।

७. कुरुमुख्य=दुर्योधन : ६. ४५, १९ (°ख्यौ=भीमसेन और दुर्योधन); ९. ५८, १ (°ख्ययौ = भीमसेन और दुर्योधन)।

८. कुरुमुख्य = युधिष्ठिर : ८. ३१, १३; १४. ८०, ९।

कुरुयोध=कर्ण : ८. ८७, ६४ (कुरुपाण्डवयोधयोः=कर्ण और अर्जुन)।

१. कुरुराज = शान्तनु : ९. ५६, २५।

२. कुरुराज = धृतराष्ट्र : २. ५८, ७; ७. १४४, २९; १५. १०, ६; २०, २४; २९, ६; ३७, ३४।

३. कुरुराज=दुर्योधन : १. १३५, १. २; २. ७०, ७; ५. ४७, ९; १५३, २७; ६. ७३, १९; १२२, १७; ७. ३९, २३; ११६, १२. १४. २३; १३०, २८; १४२, ४; १५९, २; ८. ७, २३; ९३, १९. ४५; ९. ३, १९. ४५; ६, २८; ५५, १४; ५६, ७. २४; ६१, ५४; ६२, ७; १०. ९, १५. ५६; ११. १७, ३०।

४. कुरुराज = परिक्षित् : १०. १७, १५; १७. १, ८।

५. कुरुराज = युधिष्ठिर : १. २, ५२. ३३२; १७०, ३७; २. ४५, ३७; ३. १७६, ७; १८३, ५३; ४. ३, ४; १०, १२; ६८, ५४; ७१, १३; ७. २३, ८४; ८. ९६, ४; ९. १६, ३३; १०. १३, ६; ११. २६, ४४; १३. १४८, ४८; १६६, ६; १४. १५, ३०; ६०, २४; ७१, १७; ८३, १४; ८९, २१. ३६; ९०, १३; १५. १, १८; २३, ७; २५, ५; २८, १८; २९, १०; ३७, २; १६. १, ७; १७. ३, २७; १८. १, १९; ३, २. ४३।

१. कुरुराजन् = दुर्योधन : १४. ७८, ३५।

२. कुरुराजन् = युधिष्ठिर : १५. २३, ५।

कुरुराजपुत्र, (द्विव० °त्रौ) और (बहु० °त्राः) : १. १८९, १५ (अर्जुन और भीमसेन); ३. १६५, ८ (पाण्डव)।

कुरुराजर्षिसत्तम = भीष्म : १२. ३२०, १।

कुरुवंश : १. १, ४६. ९९; ८६, ८; १०६, १२. ३२; १७०,६१; ५. १५०, १४; ९. ४४, ४; ११. २३, २४; १२. ३०२, ५; १४. ७०, ८।

कुरुवंशकर = व्यास : १३. १८, ४३।

कुरुवंशकेतु = भीष्म : ६. २२, १५।

कुरुवंशविवर्धन = धृतराष्ट्र : १. ६७, ८३।

कुरुवंशविवर्धन, (बहु० °नाः) : १. १०६, ३२ (धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर); १२४, २९ (पाण्डव); ३२ (पाण्डु और धृतराष्ट्र के पुत्र)।

कुरुवरश्रेष्ठ = भीष्म : १. ८२, ७१. ७७।

कुरुवर्णक, (बहु० °काः), भारतवर्ष की एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५६)।

१. कुरुवर्धन = दुर्योधन : १. २०२, १; ६. १०, ३।

२. कुरुवर्धन = युधिष्ठिर : ३. १३, ११; १४. १५, ३२; ८५, २०।

कुरुवासिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कुरुविन्द, (बहु० °न्दाः) एक जाति के लोगों का नाम है (६. ८७, ९)।

१. कुरुवीर = अर्जुन : १४. ७४, २०; ८०, २५।

२. कुरुवीर = भीमसेन : ३. १४७, ४।

३. कुरुवीर = धृतराष्ट्र : १५. २, ९; १८, २०।

४. कुरुवीर = कर्ण : ८. ८७, ६३।

५. कुरुवीर = युधिष्ठिर : ५. ३३, १०।

कुरुवीरमुख्य, (द्विव० °यो) = अर्जुन और कर्ण : ८।

१. कुरुवृद्ध = भीष्म : ४. ३०, १६; ५. १३९, १०; १४७, ७; १६३, १२; १६५, ५; ६. २५, १२; ५१, २२; १०७, ३०. ९१; ११२, २०; १२१, ५; १२२, ६; ७. ४, १; ११. १, २८।

२. कुरुवृद्ध = धृतराष्ट्र : ५. २३, ७।

कुरुवृद्धतम, (द्विव० °मावुभौ)=भीष्म और धृतराष्ट्र : २. ६८, १३।

कुरुवृद्धवर्य = धृतराष्ट्र : १५. २५, १८।

कुरुवृष = भीमसेन : २. २९, १३ (कुरुचेदिवृषौ = भीमसेन और शिशुपाल)।

कुरुवृषभ = युधिष्ठिर : ३. २५, ५।

१. कुरुशार्दूल = अर्जुन : १. १७०, ६५; ६. ४५, १० (°लौ = अर्जुन और भीष्म); १२. ३४२, १०७; ३४८, ४१; १४. १५, ३२; १६. ६, ८; ८, २७।

२. कुरुशार्दूल = भीमसेन : २. ४४, ४ ।

३. कुरुशार्दूल : भीष्म : ५. १७७, ७; ६. ४५, १० (°लौ = भीष्म और अर्जुन); १३. ९०, १; १६८, ३ ।

४. कुरुशार्दूल = दुःशासन : ५. १६६, १६; ७. ३९, २१ ।

५. कुरुशार्दूल = धृतराष्ट्र : ९. ६३, ५२ ।

६. कुरुशार्दूल = जनमेजय : १२. ४७, २ ।

७. कुरुशार्दूल = लक्ष्मण (दुर्योधन का पुत्र) : ५. १६६, १६ ।

८. कुरुशार्दूल = युधिष्ठिर : २. १४ ५३; ४०, ६; ३. १५, १०; ९०, ७; ५. ८, ४७; १४. १, ८; १५. ३, ७१ ।

१. कुरुश्रेष्ठ = अर्जुन : ३. १४१, ९; ४. ७२, १०; ६. ३४, १९; १२०, ४१; ७. २८, २; १४६, १८; ८. ९६, ४६; १४. ६२, १५; ७३, ९; ७९, १२; ८३, १६ ।

२. कुरुश्रेष्ठ = भीमसेन : १. १९०, २८; ३. १५०, २२; १५१, ५; ९. ५५, ३८ (°ष्ठौ = भीमसेन और दुर्योधन) ।

३. कुरुश्रेष्ठ = भीष्म : ३. ८२, ३; ८५, १८; ५. १६५, १४; १७४, ९; १७७, ३२; ६. ८२, ५; १०६, ४२; १२०, ४०; १२२, ५; १२. ९२, १; १२५, ७; १३८, ३; १३. ३९, १४; ४९, १; ६९, १; १६८, १८ ।

४. कुरुश्रेष्ठ = भूरिश्रवस् : ७. १४२, ५९ ।

५. कुरुश्रेष्ठ = धृतराष्ट्र : ६. १२, ४३; ५९, ५१; ८३, ७; १०६, ४२; १०७, ६; ८. ९६, २७; ९. ३१, २; ६३, ७२; १५. ५, ६; १३, १२; ३६, ४४ ।

६. कुरुश्रेष्ठ = दुर्योधन : २. ७०, ८; ३. २५२, १६; २५५, ८; ५. १२४, २१; १९२, ६३; १९३, ८; ७. १४५, ३३; ९. ५५, ३८ (°ष्ठौ = दुर्योधन और भीमसेन); १०. ९, १८. ४१ ।

७. कुरुश्रेष्ठ = जनमेजय : ९. ३७, ५८; ५१, ३० ।

८. कुरुश्रेष्ठ = नकुल : २.३२, १७ ।

९. कुरुश्रेष्ठ = परिक्षित् : १. ५०, १९ ।

१०. कुरुश्रेष्ठ = सेनाबिन्दु : ८. ६, ३२ ।

११. कुरुश्रेष्ठ = युधिष्ठिर : २. ४, ६; ३७, १७; ३. १, ४६; १२, ४; १३, १५; १५, १६; २३, ५; २६, ६; ८९, ४. १७; ११०, १९; ११४, २९; १४४, २१; १५९, ८; २९२, १३; ५. २४, १; ७. १२६, ३४; ८. ६५, १२; १०. १२, ११; १२. ५६, १२. ४६; ५९, ५९; १३०, २९; १५९, १४; २०७, ४७; १३. ६६, १६; ११५, ८४; १६६, १७; १४. ६५, १४; ८७, १४; ८९, १९; १५. ६, ३; ७, २०; १७, २१ ।

कुरुश्रेष्ठतम = युधिष्ठिर ('कुरुश्रेष्ठतमं वदन्ति युधिष्ठिरं धर्मसुतं पतिं मे : ३. २७०, ७) ।

१. कुरुसत्तम = अर्जुन : १. १७४, २; १७६, २०; २१५, ३. ६; ६. २८, ३१; ७. ९२, १८; १४६, ६६; ८. ८१, ७ ।

२. कुरुसत्तम = भीमसेन : ३. १६१, ४७; ९. ५५, ५१ (°मौ = भीमसेन और दुर्योधन); ५७, २१ (°मौ = भीमसेन और दुर्योधन) ।

३. कुरुसत्तम = भीष्म : १. १४१, १६; २०५, २; २. ४२, २०; ३. २३८, १५; ५. ३०, १५; ५५, २१; ६. १२१, २; ८. ७, २ (°मौ = भीष्म और द्रोण); १२. ३७, १०; ३००, १; १३. २६, १४ (गाङ्गेय) ।

४. कुरुसत्तम = चित्राङ्गद : १.१०१, ९ ।

५. कुरुसत्तम = शान्तनु : १. ९७, २० ।

६. कुरुसत्तम = धृतराष्ट्र : १. १३४, ३; १४०, ५; ३. २३६, ५; २३८, २४; ५. ५५, ९; ९५, ८; ६. १०, ५; ७. १७५, ५८; १९२, १०; ८. ५३, ११; ९५, १४; ९. ५८, ३८; ११. २, ८. २३; ८, १; ९, १४ ।

७. कुरुसत्तम = द्रोण : ८. ७, २ (°मौ० = द्रोण और भीष्म) ।

८. कुरुसत्तम = दुर्योधन : २. ४२, २०; ३. २५२, १३; २५६, १०; ५. १२४, ८; ६. १२१, ४५; ७. १५३, ४३; १५९, ११; ८. ३१, ६५; ९. ५५, ५१ (°मौ = दुर्योधन और भीमसेन); ५७, २१ (°मौ = दुर्योधन और भीमसेन); ५७, ५०; ५९, १३. २३; १२. १२४, ६८ ।

९. कुरुसत्तम = जनमेजय : १. १०७, ५; ११२, ११; २. ३३, ३१; ३. २४०, १६; ३११, १०; ४. ३८, ७; ९. ४४, १४; १५. १, ५ ।

१०. कुरुसत्तम = युधिष्ठिर : ३. २७, ९; ८१, ४; १२०, २१; १६३, २२; १८३, ६४; ५. ९, ५१; ८. ६५, ५; १२. १, ५; २४, ९; ३१, २५; ५५, २२; ५८, २४. २७; ७५, ३५; २५९, २७; २७९, २. ३; ३२३, १३; १३. ८, २३; ५९, २८; ६७, ११; १५९, २; १४. १४, १५; १५. १, ५ ।

कुरुसत्तमाः (बहु०) = कुरु (बहु०) : देखिये वस्था० ।

१. कुरुसिंह = भीष्म : ६. १२०, ५ ।

२. कुरुसिंह = दुर्योधन : ७. १८९, ३५ (प्रववृते युद्धं कुरुमाधवसिंहयो) ।

कुरुसिंहाः (बहु०) = कुरु (बहु०) : देखिये वस्था० ।

१. कुरूत्तम = अर्जुन : ७. १०४, १ (°मौ = कृष्ण और अर्जुन) ।

२. कुरूत्तम = दुर्योधन : ७. १४५, २५ ।

३. कुरूत्तम = युधिष्ठिर : ३. २२५, १५; ६. २२, ८; १३. ८, १४ ।

कुरूत्तमाः (बहु०) = कुरु (बहु०) : देखिये वस्था० ।

१. कुरूद्वह = अर्जुन : ३. ४६, २८; १६८, ३१. ६६; ८. ६९, ८४; १४. १५, १६ ।

२. कुरूद्वह = बाह्लिक : १५. २९, ४४ ।

३. कुरूद्वह = भीष्म : १. ११३, ५; २. ४१, ३७; ३. ८३, ८. ४१. ५१. ९९. १०९. १४८. १६५; ८४, ७९; ५. १७८, ८७; १८५, १६; १२. १६०, ३८ ।

४. कुरूद्वह = भूरिश्रवस् : ७. १४३, ५५ ।

५. कुरूद्वह = धृतराष्ट्र : १. १४०, ९०; ७. २७, १४; १८२, १३; ८. ५०, ४७; १५. २. २, २३; ३, ६१; १९, ११; ३६, १२; ३७, ७ ।

६. कुरूद्वह = दुर्योधन : ५. १८३, ८; १८४, ६; ७. १५२, ३१; १२. १२४, २२ ।

७. कुरूद्वह = जनमेजय : २. ३१, ३७; ४७, १७; १५. ३५, १ ।

८. कुरूद्वह = कर्ण : ८. ५०, ४७ ।

९. कुरूद्वह = युधिष्ठिर : ३. १२८, २१; १२. ५६, १३; ६६, २१; ८२, १५; १५८, १२; १६३, १२; १३. ७०, १; ७१, ११; १६५, १; १५. २, १७; ५, २७. ३८; १६, १५ ।

कुरूद्वह, (बहु० °हाः) : १. १२८, ५० (पाण्डव और धार्तराष्ट्र); ३. ११, ७ (पाण्डव); १४५, ५३ (पाण्डव); १५५, ३४ (पाण्डव); २५२, ५२ (धार्तराष्ट्र); ३१४, १८ (पाण्डव); ६. २२, २ (पाण्डव); १३. १६८, १८; १४. ५२, ३२; ६३, ८; ६५, २३; ७१, ११ ।

कुलकर्तृ = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

कुलत्थ, (बहु० °त्थाः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६६) ।

कुलधर्म—सनातन काल से चला आ रहा कुलाचार (६. २५, ४०) ।

कुलपांसन—कुलाङ्गार और नराधम राजाओं के लिये प्रयुक्त हुआ है (५. ७४, १७) ।

कुलम्पुन, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से मनुष्य अपने समस्त कुल को पवित्र कर देता है (३. ८३, १०४) ।

कुलम्पुना, एक नदी का नाम है (१३. १६५, २०) ।

कुलपर्वत—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य, और पारियात्र, ये सात कुलपर्वत हैं (६. ९, ११) ।

कुलहारिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

कुलाद्य (बहु०)—देखिये **कुशाद्य** (बहु०) ।

कुलिक, एक नाग-प्रमुख का नाम है जो कद्रू का पुत्र था (१. ६५, ४१) ।

कुलिङ्ग (बहु०)—देखिये **कुलिन्द** (बहु०) ।

१. कुलिन्द, (बहु० °न्दाः), एक जाति के लोगों का नाम है (२. १४, २६) । अपनी दिग्विजय के समय अर्जुन ने उत्तर में निवास करनेवाली इस जाति को पराजित किया था (२. २६, ४) । ये लोग भी

युधिष्ठिर के सम्मुख भेंट लेकर उपस्थित हुये (२. ५२, ३)। इनके राजा का नाम सुबाहु था (३. १४०, २६. २८)। ये उत्तर में निवास करते थे (६. ९, ६३)। इन्होंने सात्यकि पर आक्रमण किया (७. १२१, ४३)। कर्ण ने इन्हें पराजित किया था (८. ८, १९)। इन लोगों ने दुर्योधन की सेना के साथ युद्ध किया (८. ८५, ४. ८. १९)।

२. कुलिन्द (कुलिन्दों का राजा) = सुबाहु (३. १७, १२)।

कुलिन्दज = २. कुलिन्दपुत्र, जिसका शकुनि ने वध किया (८. ८५, १९)।

१. कुलिन्दपुत्र, कुलिन्दराज के एक पुत्र का नाम है जिसका कृप ने वध किया था (८. ८५, ६. ७)।

२. कुलिन्दपुत्र, कुलिन्दराज के एक अन्य पुत्र का नाम है जिसका शकुनि ने वध किया था (८. ८५, १५)।

कुलिन्दराजावरज = २. कुलिन्दपुत्र (८. ८५, १३)।

कुलिन्दाधिपति = कुलिन्दराज सुबाहु (३. १४०, २८; २६५, ७)।

कुलिन्दोपत्यक, (बहु० °काः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५५)।

कुलूत, (बहु० °ताः), एक जाति के लोगों का नाम है (८. १२, ४५)।

कुलूताधिपति = क्षेमधूर्ति (८. १२, ३५)।

कुल्या, एक तीर्थ का नाम है जहाँ उपवास करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है (१३. २५, ५६)।

कुवलयापीड, ऐरावत-कुलोत्पन्न कंस के शक्तिशाली गजराज का नाम है जिसका श्री कृष्ण ने वध किया था (गीप्रे० सं० २. ३८, २९ के बाद दा० पाठ, पृ० ८०१)।

कुवलाश्व, अयोध्या के एक इक्ष्वाकुवंशी राजा का नाम है (३. २०१, ६. ७)। ये धुन्धुमार के नाम से विख्यात थे (३. २०१, १०)। ये बृहदश्व के पुत्र थे (३. २०१, ३३)। इनके २१,००० पुत्र हुये (३. २०२, ५)। कुवलाश्व उत्तम गुणों में अपने पिता से बढ़कर थे (३. २०२, ६)। इनके पिता ने उचित समय इनका राज्याभिषेक कर दिया (३. २०२, ७)। बृहदश्व ने उत्तङ्क से इनकी वीरता की प्रशंसा की (३. २०३, २)। "महर्षि उतङ्क के साथ ये अपने २१,००० पुत्रों को लेकर धुन्धु के वध के लिये प्रस्थित हुए। इनके पुत्रों ने सात दिनों तक खुदाई करने के पश्चात् वालुकामय समुद्र में छिपे महाबली धुन्धु को देखा। इन्होंने अपने पुत्रों सहित धुन्धु पर आक्रमण किया परन्तु धुन्धु ने इनके पुत्रों को भस्म कर दिया। तब इन्होंने ब्रह्मास्त्र के प्रयोग द्वारा धुन्धु का वध कर दिया। इस युद्ध में इनके तीन पुत्र, दृढाश्व, कपिलाश्व, और चन्द्राश्व, ही शेष रहे। धुन्धु का वध करने से इनका नाम धुन्धुमार पड़ा (३. २०४, ११. १२. १८. २०. २३. २९. ३२. ३३. ४०. ४१. ४२)।" तुकी० **धुन्धुमार; इक्ष्वाकु।**

कुवलेशय = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कुवीरा, एक नदी का नाम है (६. ९, २७)।

कुश, एक प्राचीन काल के महर्षि का नाम है, जो अग्निदेव के समान प्रतापी थे। ये ब्रह्मा के पुत्र और विश्वामित्र के प्रपितामह थे (गी० प्रे० सं० १. ७४, ६९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

कुशचीरा, एक नदी का नाम है (६. ९, २३)।

कुशद्वीप, सुप्रसिद्ध सात द्वीपों में से एक का नाम है (६. ११, २)। इसका विशेष वर्णन (६. १२, ६–१६)। शिव ने इसे दानव विद्युत्प्रभ को दे दिया (१३. १४, ८४)।

कुशधारा, एक नदी का नाम है (६. ९, २४)।

कुशनाभ, महर्षि कुश के धर्मात्मा पुत्र का नाम है जो गाधि के पिता और विश्वामित्र के पितामह थे (गी० प्रे० सं० १. ७४, ६९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

कुशप्लवन, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान और तीन रात निवास से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है (३. ८५, ३६)।

कुशबिन्दु, भारतवर्ष की एक जाति का नाम है (६. ९, ५६)।

कुशल, क्रौञ्चद्वीप के अन्तर्गत एक क्षेत्र का नाम है (६. १२, २१)।

कुशल्य, भारत की एक जाति का नाम है (६. ९, ४०)।

कुशवत्, एक झील का नाम है (३. १३०, १८)।

कुशवती, देवलोक की एक नगरी का नाम है (३. १६१, ५४)।

कुशविन्दु, भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ५६)।

कुशस्तम्ब, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करनेवाला मनुष्य स्वर्ग में अप्सराओं द्वारा सेवित होता है (१३. २५, २८)

कुशस्थली = द्वारका : २. १४, ५०। 'कुशस्थलीं करिष्यामि निवेशं द्वारकां पुरीम्', (१२. ३३९, ९१)।

कुशाद्य, भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ४४)।

कुशाम्ब, राजा वसु उपरिचर के तृतीय पुत्र का नाम है, जिसका एक दूसरा नाम मणिवाहन था (१. ६३, ३१)।

कुशावर्त, एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, १३)।

कुशिक, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. ८, २४)। ये कान्यकुब्ज देश के राजा गाधि के औरस पुत्र थे (१. १७५, ३)। ये यम की सभा में उपस्थित थे (२. ८, १०)। 'कुशिकस्याश्रमम्', (३. ८४, ३१)। कृष्ण की उपासना करनेवाले ऋषियों में से एक यह भी थे (५. ८३, २७)। 'कुशिकस्य', (६. ९, ८)। ये जह्नु के पौत्र और अज के पुत्र थे (१२. ४९, ३)। ये वल्लभ के पुत्र, बलाकाश्व के पौत्र और गाधि के पिता थे (१३. ४, ५. ६)। इन्होंने अपनी रानी के साथ महर्षि च्यवन की सेवा की (१३. ५२, ७. ९. १०. १३. १९. २३. २६. ३२)। इनके तथा इनकी रानी के धैर्य की परीक्षा लेने के बाद इनकी सेवा से प्रसन्न हो च्यवन मुनि ने इन्हें आशीर्वाद दिया (१३. ५३, १४. १५. २७. ५८. ६३. ६६)। महर्षि च्यवन के प्रभाव से इन्हें तथा इनकी रानी को अनेक आश्चर्यमय दृश्यों का दर्शन हुआ, और महर्षि च्यवन ने प्रसन्न होकर इन्हें वर माँगने के लिये कहा (१३. ५४, २. २३. २४. ३७)। इनके पूछने पर च्यवन ने इनके घर में अपने निवास का कारण बताया और इन्हें वरदान दिया (१३. ५५, २. ३५)। महर्षि च्यवन ने भृगुवंशी और कुशिकवंशियों के सम्बन्ध का कारण बताया (१३. ५६, १५)। तुकी० **कुशिकर्षि।**

कुशिक (बहु० °काः), कुशिक के वंशजों के लिये प्रयुक्त हुआ है। ये जह्नु से उत्पन्न हुये (१. ९४, ३३)। विश्वामित्र के वंश का नाम (१. १७४, ७)। 'कुलं···कुशिकानां', (१३. ५२, ९)। 'चिकीर्षन्कुशिकोच्छेदं', (१३. ५५, १३)। 'भृगूणां कुशिकानां च अभिसम्बन्धकारणम्', (१३. ५६, २०)।

कुशिकनन्दन = गाधि : १२. ४९, ३०।

कुशिकर्षि = कुशिक (१) : १३. ६६, १५।

कुशिकवंश—'महान्कुशिकवंशश्च ब्रह्मर्षिशतसङ्कुलः', (१३. ३, ५)।

कुशिकाश्रम, एक आश्रम का नाम है जो कौशिकी नदी के तट पर स्थित था (३. ८४, ३१. ३२)।

कुशिकोत्तम = इन्द्र : १३. १४, २०९।

१. कुशेशय, कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम है (६. १२, ११)।

२. कुशेशय = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

कुसुम, धाता द्वारा स्कन्द को दिये गये पाँच पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३९)।

कुसुम्भि, द्वारका के समीपवर्ती एक वन का नाम है (गी० प्रे० सं० २. ३८, २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ८१३)।

कुस्तुम्बरु, कुबेर की सभा के एक यक्ष का नाम है (२. १०, १६)।

कुहन, सैवीर देश के एक राजकुमार का नाम है जो जयद्रथ का अनुगामी था (३. २६५, ११)।

१. कुहर, कलिङ्ग देश के एक राजा का नाम है जो क्रोधवश नामक दैत्यों के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ६५)।

१. कुहुर, एक नाग का नाम है (५. १०३, १५)।

१. कुहू, अङ्गिरा को आठवीं पुत्री का नाम है (३. २१८, ८)। यह स्कन्द के जन्म के समय उपस्थित हुई थी (९. ४५, १३)।

२. कुहू = देवसेना : ३. २२९, ५०।

कूटमोहन = स्कन्द : ३. २३२, ५।

१. कूप, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ७६)।

२. कूप = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कूर्चामुख, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम है (१३. ४, ५३)।

कूर्म, कद्रू के पुत्र, एक नाग का नाम है (१. ६५, ४१)।

कूर्मराजन्, उस कूर्म का नाम है जिसने अमृतमंथन के समय मन्दराचल को अपनी पीठ पर धारण किया था (१. १८, ११)।

कूष्माण्ड, एक मन्त्र का नाम है (१३. १३६, १७)।

कूष्माण्डक, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, ११)।

कृकणेयु, रौद्राश्व द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक (१. ९४, १०)।

कृच्छ्र = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

कृत, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३१)।

१. कृतम्, एक युग—कृतयुग—का नाम है (१. १०९, ५) । सूर्य का भी एक नाम है (३. ३, २०)। 'कृते युगे', (३. १४९, १८)। 'कृतयुगं', (३. १४९, २३)। 'चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तद् कृतं युगम्', (३. १८८, २२)। 'क्षीणे कलियुगे चैव प्रवर्त्तति कृतं युगम्', (३. १८८, २७)। ३. १९०, ५. ९; १९१, ३. ७. ९; ५. १३२, १७ (राजा कृतयुगस्रष्टा)। 'न तदा भविता त्रेता न कृतं द्वापरं न च', (५. १४२, ७. ९. ११. १३. १५)। 'चत्वारि भारते वर्षे युगानि···कृतं त्रेता द्वापरं च तिष्यं च', (६. १०, ३)। १२. ६५, २५; ६९, ९९; ९१, ६; १४१, १०; २३१, १९. २०. २३. २५; २३२, ३२. ३७; २३८, ७. ८; ३३४, ९; ३३९, १०५; ३४८, ४१; १३. १४, ११; १६, १; १३३, ६; १५०, ५०; १५८, १०; १४. ४४, ९। तुकी० **कृतयुग**।

२. कृतम्—पासे के खेल से सम्बद्ध एक शब्द : 'नाक्षान् क्षिपति गाण्डीवं न कृतं द्वापरं न च', (४. ५०, २४)।

कृतक्षण, विदेह देश के एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजते थे (२. ४, २७)। इन्होंने राजा युधिष्ठिर को चौदह सहस्र घोड़े भेंट में दिये थे (गीप्रे० सं० २. १५, ७ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ८६१)।

कृतघ्नोपाख्यानम्—"भीष्म ने कहा : मध्यदेश का एक ब्राह्मण, जिसने वेद बिल्कुल नहीं पढ़ा था, एक सम्पन्न ग्राम देखकर उसमें भिक्षा माँगने के लिए गया। उस ग्राम में एक धनी डाकू रहता था जो ब्राह्मणों का भक्त था। उक्त ब्राह्मण ने, जिसका नाम गौतम था, इसी डाकू के घर जाकर भिक्षा की याचना की। दस्यु ने ब्राह्मण को निवास, वस्त्र तथा एक युवती दासी भी दी। इस प्रकार समस्त वस्तुयें प्राप्त करके ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ और दासी के कुटुम्ब की सहायता करता हुआ वहीं रहने लगा। उसने वाण चलाकर लक्ष्य वेधने का वहाँ बड़े यत्न के साथ अभ्यास किया और वन में घूम कर पशुओं का शिकार करने लगा। दस्युओं के सम्पर्क में रहने से गौतम भी पूरा दस्यु ही बन गया। एक दिन वेदों का पारङ्गत विद्वान् और संयमी एक अन्य ब्राह्मण उसी गाँव में आया जहाँ गौतम निवास करता था। वह ब्राह्मण शूद्र का अन्न नहीं खाता था, अतः ब्राह्मण के घर को ढूँढ़ता हुआ गौतम के घर पहुँचा। उसी समय गौतम भी कन्धे पर मारे हुए हंस को लटकाये वन से लौटा। ब्राह्मण ने देखा कि गौतम भी ब्राह्मणत्व से भ्रष्ट हो चुका है। यह देखकर ब्राह्मण ने गौतम को पहचान कर उससे घृणित जीवन का परित्याग करने के लिये कहा। उस हितैषी ब्राह्मण की बात सुनकर गौतम ने पश्चाताप करते हुये दूसरे दिन प्रातःकाल वह गाँव छोड़ देने की इच्छा व्यक्त की। वह दयालु ब्राह्मण, गौतम के अनुरोध पर रात भर वहीं रहा किन्तु उसने किसी भी वस्तु को स्पर्श करना, और भूखा होने पर भी अन्न ग्रहण करना अस्वीकार कर दिया (१२. १६८, ३०–५२)।" "दूसरे दिन प्रातःकाल उस श्रेष्ठ ब्राह्मण के वहाँ से चले जाने पर गौतम भी समुद्र की ओर चल दिया। मार्ग में उसे वैश्यों का एक दल मिला और वह उन्हीं के साथ चलने लगा। सहसा एक मत्त गज ने उस दल पर आक्रमण करके अनेक व्यक्तियों को मार डाला। गौतम भी भय से भाग चला। दल के सदस्यों का साथ छूट जाने के कारण वह मार्ग-भ्रष्ट होकर वन में किंपुरुष के समान इधर-उधर घूमने लगा। अन्त में एक मार्ग से चलकर वह एक ऐसे रमणीय वन में पहुँचा जो नन्दन वन के समान सुंदर, यक्षों और किन्नरों से सेवित, शाल, ताल और तमाल आदि वृक्षों तथा भारुण्ड नामक पक्षियों से युक्त था। उस रमणीय प्रदेश में गौतम ने एक विशाल वट-वृक्ष देखा और उसी के नीचे विश्राम करने लगा। सूर्यास्त होने पर उस वट-वृक्ष पर निवास करनेवाला एक बक आया जिसका नाम नाडीजङ्घ था। वह बक कश्यप का पुत्र और ब्रह्मा का सखा था। वह बकों का राजा, महाबुद्धिमान, तथा दिव्य दीप्ति से देदीप्यमान था। गौतम ने उस राजधर्मा बक को मार डालने की इच्छा की जिस पर राजधर्मा ने निकट आकर गौतम से कहा : 'आपका स्वागत है। यह मेरा घर है। आप यहाँ मेरे अतिथि हैं। आप रात में मेरा आतिथ्य स्वीकार करके कल प्रातःकाल यहाँ से प्रस्थान कीजियेगा।' (१२. १६९)।" "ऐसा कहकर राजधर्मा ने शास्त्रीय विधि के अनुसार गौतम का सत्कार किया, शाल के पुष्पों का आसन बना कर उसे बैठने के लिये दिया, और भागीरथी में मिलनेवाले बड़े-बड़े मत्स्य उसे भोजन के लिये दिये। गौतम ने जब यह बताया कि वह धन के लिये समुद्रतट जाने की इच्छा लेकर घर से चला है, तब राजधर्मा ने कहा : 'आपका कार्य सिद्ध हो जायगा। बृहस्पति के मतानुसार अर्थ सिद्धि के चार प्रकार होते हैं, जिसमें से एक प्रकार मित्र के सहयोग से धन प्राप्त करना भी होता है।' तदनन्तर राजधर्मा ने गौतम को अपने एक मित्र, राक्षसराज विरूपाक्ष, के पास जाने का परामर्श दिया जिसका नगर उस स्थान से केवल तीन योजन दूर था। राजधर्मा के परामर्शानुसार गौतम ने प्रातःकाल विरूपाक्ष की नगरी, मेरुव्रज के लिये प्रस्थान किया। नगर में पहुँचने पर विरूपाक्ष ने गौतम का स्वागत किया। (१२. १७०)।" "विरूपाक्ष ने गौतम से उसके गोत्र, शाखा और स्वाध्याय के विषय में प्रश्न पूछा किन्तु गौतम केवल अपनी जाति ही बता सका। गौतम के परिचय से असन्तुष्ट होने पर भी विरूपाक्ष ने ब्राह्मण होने के नाते उसे भी कार्त्तिक पूर्णिमा को एक सहस्र ब्राह्मणों को दिये जाने वाले भोज में सम्मिलित किया। आषाढ़ और माघ की पूर्णिमा को तथा विशेषतः कार्त्तिक-पूर्णिमा को विरूपाक्ष अनेक ब्राह्मणों को भोजन कराता और उन्हें रत्नादि दान करता था। अतः उस समय भोजन कराने के पश्चात् विरूपाक्ष ने राक्षसों को हिंसा करने से रोक कर ब्राह्मणों से कहा : 'विप्रगण ! आज एक दिन के लिये आप लोगों को राक्षसों की ओर से कोई भय नहीं है। अतः आनन्द कीजिये और शीघ्र ही अपने-अपने अभीष्ट स्थान को चले जाइये।' यह सुनकर सब ब्राह्मण-समुदाय चारों ओर भाग चला। गौतम भी सुवर्ण का भारी भार लेकर उसी वट-वृक्ष के पास आया। राजधर्मा ने उसको पुनः भोजनादि दिया। तदनन्तर गौतम ने सोचा कि अभी उसे बहुत दूर जाना है, और मार्ग में भोजन करने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं है। ऐसा सोचकर उस कृतघ्न ने राजधर्मा को मारकर भोजन के लिये अपने साथ ले चलने का निश्चय किया (१२. १७१)।" "ऐसा निश्चय करके उस कृतघ्न ब्राह्मण गौतम ने राजधर्मा का वध कर दिया। तदनन्तर उस मृत पक्षी के पंख और बाल नोच कर आग में पकाया तथा उसे साथ ले सुवर्ण का बोझ सिर पर उठा कर वह ब्राह्मण शीघ्रता से वहाँ से चल दिया। दो दिन व्यतीत हो जाने पर भी जब राजधर्मा विरूपाक्ष से मिलने नहीं आया तब उसे चिन्ता हुई, क्योंकि ब्रह्मलोक से लौटते समय राजधर्मा नियमित रूप से प्रतिदिन विरूपाक्ष से मिले बिना अपने घर नहीं जाता था। विरूपाक्ष को गौतम पर सन्देह हुआ और उसने अपने पुत्र को राजधर्मा की खोज करने के लिये भेजा। वट-वृक्ष के पास आकर विरूपाक्ष के पुत्र तथा अन्य राक्षसों ने जब राजधर्मा के पंख तथा पैर की अस्थियाँ देखीं तब वे शीघ्र ही गौतम को पकड़ने चले। कुछ दूर जाकर उन सब ने

राजधर्मा का मांस लेकर जाते हुये गौतम को देखा और उसे पकड़ कर विरूपाक्ष के सम्मुख लाये। विरूपाक्ष ने अपने पुत्र को आज्ञा दी कि वह गौतम का वध करके उसका मांस राक्षसों को दे दे। राक्षसराज के आदेश पर भी राक्षसों ने कृतघ्न गौतम का मांस खाना अस्वीकार कर दिया। तदनन्तर विरूपाक्ष ने उसके मांस को दस्युओं को देने के लिये कहा परन्तु उन दस्युओं ने भी उस मांस को ग्रहण नहीं किया क्योंकि मांसाहारी जीव-जन्तु भी कृतघ्न का मांस ग्रहण नहीं करते (१२. १७२)।" "तदनन्तर विरूपाक्ष ने वकराज के लिये एक चिता तैयार कराई और उस पर उसके शव को रखकर विधिपूर्वक मित्र का दाहकर्म किया। उसी समय दिव्य धेनु, दक्षकन्या सुरभि, वहाँ आकर आकाश में ठीक चिता के ऊपर खड़ी हो गई। उसके मुख से दूध मिश्रित फेन राजधर्मा की चिता पर गिरा और वह जीवित हो उठा। उस समय इन्द्र ने वहाँ उपस्थित होकर विरूपाक्ष को बताया कि एक दिन राजधर्मा ब्रह्मा की सभा में उपस्थित नहीं हो सके जिस पर ब्रह्मा ने शाप दिया कि शीघ्र ही उन्हें वध का कष्ट भोगना पड़ेगा। इन्द्र ने बताया कि ब्रह्मा के उसी शाप के कारण गौतम ने राजधर्मा का वध किया और पुनः अमृत छिड़ककर ब्रह्मा ने ही उनको जीवन दान दिया। तदनन्तर राजधर्मा के आग्रह पर इन्द्र ने अमृत छिड़ककर गौतम को भी जीवित कर दिया। राजधर्मा ने उस पापाचारी ब्राह्मण को धन सहित विदा किया। इसके बाद वकराज यथोचित रीति से ब्रह्मा की सभा में गये और ब्रह्मा ने भी उनका स्वागत किया। गौतम भी पुनः शबरों के उसी गाँव में जाकर रहने लगा। वहाँ उसने शूद्र जाति की स्त्री के गर्भ से अनेक पापाचारी पुत्रों को उत्पन्न किया। तब देवताओं ने गौतम को शाप देते हुये कहा कि 'वह पापी कृतघ्न है और शूद्रजातीय स्त्री के गर्भ से सन्तान उत्पन्न कर रहा है, अतः घोर नरक में पड़ेगा।' भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा : 'यह सारा प्रसङ्ग (कृतघ्नोपाख्यान) पूर्वकाल में मैंने महर्षि नारद से सुना था, और अब उसे स्मरण करके मैंने तुम्हें यथार्थ रूप से सुना दिया है।' (१२. १७३)।"

कृतकर्मन् = विष्णु (सहस्र नाम)।

कृतचेतस्, युधिष्ठिर की सेवा में उपस्थित रहनेवाले एक ब्राह्मण का नाम है (३. २६, २२)।

कृतज्ञ = विष्णु (सहस्र नाम)।

कृतवन्धु, एक प्राचीन नरेश का नाम है (१. १, १३८)।

कृतयुग, चार युगों में से प्रथम का नाम है : १. ६४, २६; ३. ८५, ९०; १००, ३; १४५, ३५; १४९, ७। "हनुमान् ने भीम को बताया : तात ! सबसे प्रथम कृतयुग है। उसमें सनातन धर्म की पूर्ण स्थिति रहती है। उसका कृतयुग नाम इसलिये पड़ा है कि उस उत्तम युग के लोग अपने सब कर्त्तव्य कर्म सम्पन्न ही कर लेते थे। उनके लिये कुछ करना शेष नहीं रहता था। उसमें धर्म और प्रजा का ह्रास नहीं होता था। उसमें देवता, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नाग नहीं थे। ऋक्, साम और यजुर्वेद के मन्त्र वर्णों का पृथक्-पृथक् विभाग नहीं था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, सभी शम-दम आदि शुभ लक्षणों से सम्पन्न थे। उस युग में चारों वर्णों का यह सनातन धर्म चारों चरणों से सम्पन्न था। (३. १४९, ८-२३)।" कृतयुग में सब मनुष्य धैर्यवान्, अपने-अपने कार्य में कुशल तथा पराक्रम-विधि के ज्ञाता थे (३. १६२, २)। कृतयुग में नारायण का वर्ण श्वेत होता है (३. १८९, ३२)। ३. १९१, १४; ५. १३२, १५. १७; ६. १०, ३. ४. ९; ७. ५२, २६; ८. ३४, २१; ९. ३७, ४१; ४०, ३; ४७, ५; १२. ३९, २; ५९, १३; ६९, ८०; २०७, ४५; २३१, २५. २७; २५६, ७; २६०, ८; २६७, ३२; ३३६, १८. ५६; ३३७, ५; ३४०, ८२; ३४८, १७. २९. ३४. ६३; १३. १४, १११; १४. ४, २। तुकी० देवयुग; कृतम्।

कृतलक्षण = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

कृतवर्मन्, यदुकुल के अन्तर्गत भोजवंशी हृदिक के पुत्र का नाम है : १. १, १९८. २०६; २, २९२। ये श्रीकृष्ण के अनुरागी एवं आज्ञापालक थे (१. ६३, १०५)। ये मरुतों के अंश से उत्पन्न हुये थे (१. ६७, ८१)। ये द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये (१. १८६, १८)। ये सुभद्रा के साथ अर्जुन के विवाह के अवसर पर उपस्थित हुये (१. २२१, ३१)। ये युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, ३०)। ये वृष्णिवंश के सात महारथियों में से एक थे (२. १४, ५८)। श्रीकृष्ण को शाल्व का वध करने का अवसर देने के लिये इन्होंने शाल्व से युद्ध नहीं किया (३. १८, २५)। ये अभिमन्यु और उत्तरा के विवाह के समय उपप्लव्य नगर में उपस्थित हुये (४. ७२, २१)। पाण्डवों की ओर से इन्हें रण-निमन्त्रण भेजा गया (५. ४, १२)। दुर्योधन के माँगने पर इन्होंने उसे एक अक्षौहिणी सेना दी (५. ७, ३२)। इनका एक अक्षौहिणी सेना के साथ दुर्योधन की सहायता में जाना (५. १९, १७)। ५. ४७, ६; ५७, २१। इन्होंने श्रीकृष्ण का अनुसरण किया (५. ९४, १८. ३४, ४८)। श्रीकृष्ण की रक्षा के लिये ये सेनासहित कौरवसभा के द्वार पर सन्नद्ध हो गये (५. १३०, ११)। 'कृतवर्मा महारथः', (५. १३१, ३०)। 'कृतवर्मा···सात्वतः', (५. १४३, ४२)। इन्होंने दुर्योधन की एक अक्षौहिणी सेना का सञ्चालन किया (५. १५५, ३२)। शैब्य ने इनके साथ युद्ध किया (५. १६४, ६)। ये कौरव-पक्ष के अतिरथी वीर थे (५. १६५, २४)। 'कृतवर्मा···महारथः', (५. १९५, ९)। 'कृतवर्मा···सात्वतः', (६. १६, १६)। इन्होंने प्रथम दिन के युद्ध में सात्यकि के साथ युद्ध किया (६. ४५, ११. १२) अभिमन्यु ने इन्हें आहत किया (६. ४७, १०. १९)। भीम ने इन्हें बाण से आहत किया (६. ४७, ३४)। मद्रराज शल्य इनके रथ पर चढ़ गये (६. ४७, ४२)। ये रणभूमि में भीष्म को घेर कर खड़े हो गये (६. ४८, ६३)। शङ्ख ने शल्य को इनके साथ रथ पर बैठे हुये देखा (६. ४९, २५)। ये अपनी सेना के साथ कौरव सेना के पृष्ठ भाग में खड़े हुये (६. ५१, १९)। 'कृतवर्मा···सात्वतः', (६. ५६, ३)। भीष्म की आज्ञा से ये भी अर्जुन से युद्ध करने गये (६. ५९, ७५)। धृष्टद्युम्न ने इनके पृष्ठरक्षक का वध कर दिया (६. ६१, १९)। 'कृतवर्मा···हार्दिक्यः', (६. ६५, ३१)। इन्होंने धृष्टद्युम्न पर आक्रमण किया (६. ७१, २३)। भीष्म द्वारा निर्मित क्रौञ्चव्यूह में ये मस्तक-स्थान पर स्थित हुये (६. ७५, १७)। कौरव सेना इनसे सुरक्षित थी (६.७६,१७)। 'कृतवर्मा···सात्वतः', (६. ८१, २)। इन्होंने भीमसेन से युद्ध किया (६. ८२, ५६. ५७)। 'सात्वतः', (६. ८६, ५०)। ६. ८९, ४०। 'सात्वतः', (६. ९५, १३)। भीष्म द्वारा रचित सर्वतोभद्र व्यूह में भी ये प्रमुख स्थान पर स्थित हुये (६. ९९, २)। सात्यकि ने इन्हें आहत किया (६. १०४, १६. २८)। इन्होंने भगदत्त का अनुसरण किया (६. १०८, १३)। इन्होंने धृष्टद्युम्न के साथ द्वन्द्वयुद्ध किया (६. ११०, १०)। ६. ११३, १. ४. ९. २२. ३३. ३४; ११४, ३. २२; ११९, १५; ७. ७, १३। सात्यकि ने इन पर बाण-प्रहार किया (७. १४, ३५)। इन्होंने शल्य की रक्षा की (७. १५, ३०. ३२)। ये द्रोणाचार्य के गारुड़व्यूह के नेत्र-भाग में स्थित हुये (७. २०, ५)। इन्होंने सात्यकि के साथ युद्ध किया (७. २५, ९)। ७. ३७, ५. १७. ३१; ४६, ६. २०; ४७, ४. ८. १८। जिन छः महारथियों ने अभिमन्यु का वध करने के लिये उसे घेर लिया उनमें से एक यह भी थे (७. ७३, १०)। ये द्रोणाचार्य के सूचीव्यूह के मुख-भाग में स्थित हुये (७. ८७, २५)। ७. ९१, ३७; ९२, १७. २२. २४. २५. २६. २८. २९. ३३. ३५; ९७, २; १११, ४७; ११३, ४६. ४८. ४९. ५२. ५४. ५५. ५६. ६४ (हार्दिक्य); ११४, १५ (कृतवर्मा महाहदम). ५८. ६१. ६३. ६५. ६९. ७२. ७३. ८३. ८५. ९४. ९८. ९९; ११५, ३. ४ (हार्दिक्य). ६. ७. १३; ११६, २६. २९. ३२. ३९. ४३; १२१, ९; १३०, २६; १४१, १६; १४४, १; १४७, ७४; १५६, १२१; १६५, ५. २३. २५. ४१; १७१, २३; १८३, ४४; १८७, २८; १८९, ६; १९३, १३; २००, ५१; ८. २, २०; ७, ८; ९, ८०; ११, १७; १३, ९; २६, २२. २८. २९. ३४; २९, ३४. ३५; ४६, ११; ४७, १६; ५१, ६८; ५४, १. १३. ३१. ३४. ३७. ३९; ६१, १४. ५९; ७३, १३. ५५. ६०; ७५, ११; ७८, २. ६२; ७९, ९. ८९; ८३, १६; ८५, ११; ९५, ५। दुर्योधन की सेना के बचे हुये तीन योद्धाओं में से एक यह भी थे (९. १, ३६; २, ६९)। 'सात्वतः', (९. ६, २)। ९. ८, ७।

ये शल्य के व्यूह के बायें भाग में खड़े हुये (९. ८, २५) । ९. ११, ३५. ३७. ४७; १२, ३४; १५, ७; १६, ४. ४५ । सात्यकि ने इन्हें रथविहीन कर दिया (९. १७, ७९) । ९. १७, ८६; २१, २. १६. १७. २०. २१. २२. २६. २८. ३०; २२, ३१; २३, ७; २५, ४०. ४८. ६१; २७, ५. १७; २९, ३६. ५६; ३०, २. ९. ६१; ५४, २९; ६४, ८. २८; ६५, २; १०. १, १६. २८; ४, ३. ८. १२. १७. १८; ६, २; ८, ५. १०७; ९, ६. ३४. ४९; १०, ३. ६; ११. ११, १. १८; २५, ३१; १४. ६६, ३; ८६, ५; १६. ३, १६. १७. २०. २७. २८ । ये मार्तिकावत के राजा बनाये गये (१६. ७, ६९) । मृत्यु के बाद इन्होंने मरुद्गणों में प्रवेश किया (१८. ५, १३) ।

तुक्ो० इनके निम्नलिखित पर्याय :

* **आनर्त्तवासिन्** : ८. ७, ८ ।

* **भोज, भोजराज**—देखिये वस्था० ।

* **माधव**—देखिये वस्था० ।

* **वार्ष्णेय, वृष्णि, वृष्णिसिंह**—देखिये वस्था० ।

* **सात्वत**—देखिये वस्था० ।

* **हार्दिक्य** (हृदिक के पुत्र) : १. २, ३२; १८६, १८; २१९, ११; ३. २०, ५; ४. ७२, २१; ५. १९, १७; १३०, १०; १३१, २४. ३०; ६. ६५, ३१; ८१, २८; ९०, १; ९६, १८. ४०; १११, ४०. ४१; ७. १४, ५५; ४६, २०; ४७, ३; ९२, २७. ३१; ९४, २९; १०१, १२. २४; ११३, ५६. ५७. ६४; ११४, ५९. ६०. ६२. ६४. ६८. ७४. ७६. ८६. ९६. ९७. १०१-१०३; ११५, १. ४; ११६, ४६; ११८, १; ११९, ७; १२०, ९; १२८, २६; १४९, ५५; १५९, ४६; १६०, ४; १६४, २१; १६५, ५. २३. २४. २६. ३३. ३६. ३९; १६८, १२; १८९, ६; ८. ९, ८१; २६, २२. २५. ३८; ३०, २२; ४६, ३५; ४८, २९; ५४, ३३. ३८; ६१, ५७; ९. ४, ३०; ८, ३१; १७, ७१. ७२. ७५. ७७. ८५. ८७; २१, ९. १३. ३७; २३, ८; १०. ८, १०९; ११. ११, २२; १६. ३, १८. १९; ६, ९; १८. ५, १३ ।

* **हृदिकसुत** : ८. ८५, ३ ।

* **हृदिकात्मज** : ३. १८, २६; २०, ३; ७. ११४, ८८; ८. ७, ८; ५४, ३३; ९. २१, १५ ।

कृतवाच्, युधिष्ठिर का आदर करनेवाले एक महर्षि का नाम है (३. २६, २४) ।

१. कृतवीर्य, सोमवंशी राजा अहंयाति के श्वसुर, भानुमती के पिता का नाम है (१. ९५, १५) ।

२. कृतवीर्य, एक प्राचीन राजा का नाम है जिसका संजय ने उल्लेख किया (१. १, २२८) । ये कार्तवीर्य के पिता और वेदज्ञ भृगुवंशियों के यजमान थे (१. १७८, ११. १२) । ये यमराज की सभा के एक सदस्य थे (२. ८, ९) । महिष्मती नगरी के राजा अर्जुन इन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र थे (२. ३८, २९ के बाद गी० प्रे० सं० में पृ० ७९१ पर दाक्षिणात्य पाठ ।

कृतवीर्यदुहितृ=भानुमती, जो अहंयाति की पत्नी थी (१. ९५, १५) ।

कृतवीर्यात्मज = अर्जुन कार्तवीर्य : 'कृतवीर्यात्मजो वली अर्जुनो नाम तेजस्वी क्षत्रियो हैहयाधिपः', (१२.४९, ३५) । 'कृतवीर्यात्मजो मुनिम्', (१३. १५२, ६) ।

कृतवेग, एक पुण्यात्मा और बहुश्रुत राजर्षि का नाम है जो यमसभा को सुशोभित करते थे (२. ८, ९) ।

कृतशौच, कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है जहाँ जाने और तीर्थ-सेवन से पुण्डरीक यज्ञ का फल प्राप्त होता है (३. ८३, २१) ।

कृतश्रम, युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहनेवाले एक मुनि का नाम है (२. ४, १४) । इनको वानप्रस्थ-धर्म के पालन से स्वर्गलोक की प्राप्ति हुई (१२. २४४, १८) ।

कृताकृत = विष्णु (सहस्र नाम) ।

कृतागम = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

कृतान्त = यम : 'युगान्तकाले संप्राप्ते कृतान्तस्येव रूपिणः', (२. ७२, १५) । 'कृतान्तविधि', (३. १८३, ७९) । 'कृतान्तवत्', (७. २१, ४६) । 'कृतान्तस्य गतिम्', (९. ६५, १६) । 'कृतान्तस्य', (११. ८, ४३) । 'कृतान्तविधि', (१२. ३३, १५) । 'कृतान्तवल', (१२. ३३, ४७) । 'कृतान्तविहिते', (१२. १५३, १३) । 'कृतान्त', (१२. १५३, ५०) । 'कृतान्तः', (१२. १७५, २०; २१८, २७) । 'कृतान्तवश्यानि', (१२. २८६, १०) ।

कृतान्तकृत = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

कृताश्व, युधिष्ठिर की सेवा में उपस्थित रहनेवाले एक राजा का नाम है (२. ४, ३२) ।

१. कृति, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ८, ९) ।

२. कृति, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३५) ।

३. कृति = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) : १३. १४९, २२ ।

कृतिन्, शूकरदेश के एक राजा का नाम है जिन्होंने युधिष्ठिर को भेंट दिया था (२. ५२, २५) ।

कृतीसुत (कृति के पुत्र) = रुचिपर्वन : ७. २६, ५१ ।

१. कृत्तिका, एक तीर्थ का नाम है जहाँ की यात्रा करने से अतिरात्र-याग का फल मिलता है (३. ८४, ५१) ।

२. कृत्तिका, एक नक्षत्र मण्डल का नाम है : 'कृत्तिकाभ्युपपत्तेश्च कार्तिकेय इति स्मृतः', (१. ६६, २४) । इनकी संख्या छः है (३. १३४, १३) । 'रुद्राच्च सम्भूतो गङ्गायां कृत्तिकासु च', (३. २१७, ४) । 'पावक-स्येन्द्रियं श्वेते कृत्तिकाभिः कृतं नेगे', (३. २२९, २८) । '···त्रिदिवं कृत्तिका गताः । नक्षत्रं सप्तशीर्षाभं भाति तद्वह्निदैवतम् ॥', (३. २३०, ११) । 'स्वाहामहीकृत्तिकानां', (३. २३२, १५) । 'कृत्तिकां पीडयंस्तीक्ष्णैर्नक्षत्रं', (६. ३, ३०) । 'कृत्तिकायोगयुक्तेन पौर्णमास्यामिवेन्दुना', (७. २०, १८) । इन्होंने स्कन्द का पालन किया (९. ४४, १०. १३) । 'कृत्तिकानां', (९. ४६, ९९) । 'कृत्तिकास्तस्य नक्षत्रमसेरश्चि दैवतम्', (१२. १६६, ८२) । 'महागङ्गामुपस्पृश्य कृत्तिकाङ्गारके तथा । पक्षमेकं निराहारः स्वर्गमाप्नोति निर्मलः ॥', (१३. २५, २२) । 'कृत्तिकायोगे', (१३. २५, ४६) । इस नक्षत्र में भोजन-दान करने का फल (१३. ६४, ५) । कृत्तिकाओं ने स्कन्द का पालन किया जिसके कारण ही उनका नाम कार्तिकेय पड़ा (१३. ८६, ५. ८. १०, १३) । 'कृत्तिकायोगे', (१३. ८९, २) । चान्द्रव्रत के वर्णन में कृत्तिका की स्थिति का उल्लेख (१३. ११०, ४) ।

कृत्तिकापुत्र = स्कन्द : १. १३७, १३; ३. २३१, १०३) ।

कृत्तिकाश्रम, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान और पितरों का तर्पण करनेवाला व्यक्ति पापमुक्त होकर स्वर्ग प्राप्त करता है (१३. २५, २५) ।

कृत्तिकासुत = स्कन्द : ३. २३१, ५४ ।

कृत्तिवासस् = शिव : देखिये वस्था० ।

कृत्य = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

१. कृत्या, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९. १८) ।

२. कृत्या, दैत्यों द्वारा आभिचारिक यज्ञ से उत्पन्न की गई एक राक्षसी का नाम है जो आमरण उपवास के लिए बैठे हुये दुर्योधन को वन से उठा कर रसातल में ले गई (३. २५१, २६. २८; २५२, २९; १३. ९३, ५८. ८९) ।

१. कृप, एक ब्राह्मण का नाम है जो शरद्वत् के पुत्र और कृपी के भ्राता थे : १. १, १४०. १९८; १. २, २९२. ३०१; ६३, १०७ (किसी समय गौतमगोत्रीय शरद्वान् का वीर्य सरकण्डे के समूह पर गिरा और दो भागों में बँट गया । उसी से एक कन्या और एक पुत्र का जन्म हुआ । कन्या का नाम कृपी था, जो अश्वत्थामा की जननी हुई । पुत्र महाबली कृप के नाम से विख्यात हुआ ।); ६७, ७७ (ये रुद्रों के अंश से उत्पन्न हुये) । भीष्म ने इन्हें राजकुमारों को धनुर्वेद की शिक्षा के लिये नियुक्त किया (१. १२९, ४३) । "जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने बताया कि शरद्वान् का वीर्य स्खलित होकर सरकण्डों के समूह पर गिर पड़ा और दो भागों में बँट गया । उसी वीर्य से एक पुत्र और एक कन्या की उत्पत्ति हुई । उसी दिन महाराज शान्तनु वहाँ आये और उन दोनों, बालक और बालिका, को अपने

साथ लाये। तदनन्तर शान्तनु ने ही उन दोनों का पालन-पोषण किया। शान्तनु ने ही उनका नाम क्रमशः कृप और कृपी रक्खा। अपने पुत्र को इस प्रकार पल कर बड़ा हुआ देखकर गौतम शरद्वान् ने गुप्त रूप से उसे उसका गोत्र आदि बताया और धनुर्वेद का भी उपदेश कर दिया। तदनन्तर, धृतराष्ट्र के पुत्रों, पाण्डवों और यादवों, सभी ने इन्हीं कृपाचार्य से धनुर्वेद की शिक्षा ली (१. १३०, १-२३)।" १. १३१, १५. २६; १३४, २; १३६, ६. २६. ३०; १३७, २१; १४२, २१ (कृपः शारद्वतश्चैव); १४३, १३; १४५, २; १५०, ५; १९०, ३३ (शारद्वतः); २००, ९; २०७, १३ (गौतमं); २. ३३, ५५; ३४, ८ (युधिष्ठिर के राजसूय के समय उपस्थित हुये)। उत्तम वर्ण के स्वर्ण तथा रत्नों को परखने, रखने और दक्षिणा देने के कार्य में इनकी नियुक्ति की गई (२. ३५, ७)। 'कृपे च भारताचार्ये', (२. ३७, १२)। 'वृद्धं च भारताचार्यं तथा शारद्वतं कृपम्', (२. ४४, १७)। २. ५८, २३; ६०, २; ६५, ४१; ६८, १४; ७८, २; ७९, २६; ८१, २६; ३. ८, ६; १३, ३; २९, ४७; ३६, १५; ३७, ४; ४०, १०. १३; ८६, ८; ११९, ९; १२०, ११; १७४, ३; २४९, १५; २५२, ११. ३६; २५३, २; २५४, २५; २५६, ५; २५७, ८. २६; ३०९, १८; ४. २५, ७; २९, १ (शारद्वतः); ३०, १६; ३५, २; ३६, ६; ३८, ८. १३; ३९, १७; ४५, ४०; ४७, १. १६; ४९, १; ५१, १. ६. १७; ५२, २२ (शारद्वतः); ५३, १२. १६; ५४, २८; ५५, ३७ (शारद्वतः). ४१-४२ (लोहिताश्वमरिष्टं यं वैयाघ्रमनुपश्यसि। नीलां पताकामाश्रित्य रथे तिष्ठन्तमुत्तर॥ कृपस्यैतदनीकाग्र्यं प्रापयस्वैतदेवयाम्), ६०; ५६, ५; ५७, २. ७. १२. १६ (शारद्वतः). २१. २३. ३८. ४०. ४१. ४३; ५८, १; ५९, ७; ६३, १. ४; ६६, ५. २६; ६८, ८. ४१. ७३; ५. २, ५; ५, ७; ६, १०; २२, २४; २३, १०. १९; २५, ११; २७, २५; ३०, १४; ४७, ६; ४८, १०९; ५१, ४५; ५५, ७. १७. ४३. ४६. ४९. ५३; ५७, ३७. ५०; ५८, ७. १०; ६०, १०. १७; ६१, २८; ६३, ४; ६५, १२; ६६, ४; ७३, ७; ८३, ४७; ८९, ३, १४. १७; ९०, ५२; ९१, ३५; ९२, ७; ९५, १९; १२४, १७. ४९; १२७, १४; १२८, २६; १२९, २०. ४९. ५१; १३१, ३६. ४०; १४१, ४०; १४२, १२. १६; १४३, ४२; १५५, ३२; १५८, २३. ३२; १६०, ५२; १६५, २१; १६६, २०. २१; १७१, २१; १९३, ५. १९; ६. १४, १९; १७, २८. ३९; २५, ८; ४३, ६८. ७०. ७६; ४५, ५२; ४७, २. १३. १९. ३४; ४८, ४६. १०१; ४९, ९; ५०, ३७; ५१, २. १९; ५२, १४. २४. २७; ५५, २. ६. ७; ५६, ४; ५८, ३५. ३६. ३९; ५९, ७५. १३७; ६०, २३; ६५, १३. ३१; ७१, २३; ७२, २; ७५, १६. २८; ७६, १८; ७९, १८; ८१, ३२; ८४, २१; ८५, १८; ८६, ५०; ८७, १३; ८९, १. ३. ४०; ९२, २३. ३४; ९४, १३; ९५, १३; ९६, १७; ९७, ४; ९८, ४२; ९९, २; १००, १६; १०२, २३; १०३, ४३; १०८, १३. ५७; ११०, १३; १११, २८. २९; ११३, १. ४. ९. २२. ३१. ३९; ११४, २. ६. २२; ११७, ४५. ४६; ११८, ५; ११९, ११२; ७. ७, १३; ४, ३३. ३४; १६, १५; २३, ७० (पाण्ड्यराज सारङ्गध्वज ने इनसे शस्त्रास्त्र प्राप्त किये थे); २५, ५१ (शारद्वतः). ५२ (वार्द्धक्षेमि से युद्ध करते हैं); ३२, ३८; ३४, २०; ३७, ५. १६ (शारद्वतः). २४; ३९, ५. ९; ४६, ६. १९; ४७, ४. ८. १८ (शारद्वतः); ७२, ४९; ७३, १०. २३; ७४, ७; ७५, २६; ८५, २८ (इन्होंने द्यूतक्रीड़ा को उचित नहीं माना). ३४; ८७, १२; ९५, ४८. ५०; १०४, ४. २७; १०५, १५ (इनकी ध्वजा पर वृषभ बना था); ११२, ११. ३९; ११९, १९; १३५, ७; १३७, १५; १४३, ६. ५२; १४५, ९. २०. ४३; १४६, ७४. ९५; १४७. २ (शारद्वतः). १२ (शारद्वतः). २४; १५०, ५; १५१, २२. ३०; १५५, ३८; १५६, १२०; १५८, १२ (शारद्वतः). ३३. ४९ (शारद्वतं); १५९, १०. १४. १७. १८. ४६. ६५. ६६; १६०, ४; १६३, ३; १६५, १० (शारद्वतः); १६९, २१. २८. ३२ (शिखण्डी को पराजित करते हैं); १७७, ६; १८३, १६; १८७, २८; १९१, ४७; १९२, २. ४३; १९३, ३७; २००, ५० (शारद्वतः). ५९; २०२, २२; ८. २, २३; ९, ८० (शारद्वतः); १३, ९ (धृष्टद्युम्न से युद्ध करते हैं); २०, ३; २६, १. १० (शारद्वतः, धृष्टद्युम्न से युद्ध करते हैं); २८, ८; ३०, २१; ३२, ९; ४१, ७३; ४६, ११ (शारद्वतः). ३५; ४७, १६; ४८, २९; ५२, ६८; ५४, १. ४. ६-८. १२. १७. २०; ६०, ७४; ६१, ५५; ६६, २२; ७३, १३. ५५. ५९; ७५, ८. १५. १६; ७८, २. ६१; ७९, ९. ४२ (समानो ह्यसि भीष्मेण द्रोणद्रौणिकृपेण च). ७१. ७९. ८६. ८७. ८८; ८२, २५; ८३, १६; ८४, १२; ८५, ३ (कृपहृदिकसुतौ). ६; ८८, १४; ९५, ७ (शारद्वतः); ९६, ३२; ९. १, ३६; २, १६. ६९; ४, ५. ५१; ५, २; ६, २; ८, ७; ११, ३५; १२, २६. ३४; १६, ४. ४५; १७, २४. ७८ (शारद्वतः); २१, २९; २५, ४०. ४८. ६१; २७, ५. १७; २९, ३६. ५६ (शारद्वतं), ६३; ३०, २. ९. ६१. ६४. ६८; ५४, २९ (धार्तराष्ट्रबले शेषास्त्रयः समितिमर्दनाः। कृपश्च कृतवर्मा च द्रोणपुत्रश्च वीर्यवान्). ३०; ६१, २०; ६३, ४६; ६४, २९; ६५, २. १०. २२. ३८. ४३; १०. १, १६. २८. ३१. ५७; २, १; ३, १; ४, १. ८; ५, १. ३८; ६, १. २. १९; ८, १. ५. १०७. १०९; ९, ७. १०. ३४. ३६. ४९. ५४; १०, ३ (गौतमेन); १६, १४; ११. १, २. २९; ९, २; ११, १. ५. १८. २१; २०, १८; २५, ३०; १२. ५, १३; १४, २०; ४५, ८; ४७, १०६; ४८, १; ५२, २८; ५८, २५. २९; १६६, ८१; २९७, १४; १४. ६०, ३. १४. ३३; ६१, १३; १५. १, १३; ३, २०. ५९; ४, २०; ५, ३; १०, ३०; १६, ५; २३, ६; १७. १, १४ (ये परिक्षित के गुरु बने)।

इनके नाम के निम्नलिखित पर्याय भी देखिये :

* **आचार्य, आचार्य सत्तम**—देखिये वस्था०।

* **गौतम**—देखिये वस्था०।

* **ब्रह्मर्षि**—देखिये वस्था०।

* **भारताचार्य**—देखिये वस्था०।

* **शरद्वत्**: १. १९०, ३३; ५. १४१, ४०; १६५, २१; ११. १, २९।

* **शरद्वत्सुत** (शरद्वत के पुत्र): ८. ८५, ६।

* **शारद्वत** (शरद्वत के पुत्र): १. १, १४०; ४९, १३; १३६, ३०; १४२, २१; २. ४४, १७; ४. २९, १; ३०, १६; ५२, २२; ५५, ३७; ५७, २. १२. १६. ३०. ४१; ६६, १३; ६९, ४; ५. ३०, १४; ४८, ९०; ५१, ४५; १६०, १२१; १६१, ३९; १६६, २०; १९३, १९; ६. २०, १३; ४३, ६७; ४५, ५२; ६१, १८; ८४, २१; ८७, १३; ९८, ११; ११०, १३; १११, २८. ३२; ७. २५, ५१; ३७, १६; ४७, १८; १४५, ५३. ८६. ८९; १४६, ९९; १४७, २. ७. ९. ११. १२; १५८, १२. २४. ४९; १५९, ७६; १६५, १०; १६९, २१. ३२; १९१, ४३; १९३, १२. ३५. ३६; २००, ५१; ८. ७, १२; ९, ८४; २६, ५. १०; ४६, ११; ५४, १३. १४. १७. २१; ६०, १३; ७८, ६१; ९५, ७; ९. ४, ५१; ५, २; १७, ७८. ८८; २३, ७. ८; २५, ५३; २९, ५६; ६४, २९; ६५, ४३; १०. ५, ३१; ९, ४९; १६, १४; ११. ११, १. ५. २१; १२. ५०, ८; ५२, २८; १५. ५, ३।

२. कृप, एक प्राचीन राजा का नाम है (१३. ११५, ७३)।

कृपी, कृपाचार्य की भगिनी, द्रोण की पत्नी, और अश्वत्थामा की माता का नाम है (१. ६३, १०७-१०८)। "शरद्वत का वीर्य सरकण्डे के समुदाय पर गिर कर दो भागों में विभक्त हो गया। उसी से एक पुत्र और एक पुत्री की उत्पत्ति हुई। महाराज शान्तनु ने इन बालकों को जंगल में पाया और घर लाकर पालन-पोषण करने लगे। यह सोच कर कि 'मैंने इन बालकों को कृपापूर्वक पाला-पोसा है' राजा ने दोनों का वही नाम—अर्थात् कृप और कृपी—रख दिया (१. १३०, १४-१९)।" इसका द्रोणाचार्य के साथ विवाह हुआ और इसने अश्वत्थामा नामक पुत्र उत्पन्न किया (१. १३०, ४६-४७)। ११. २३, ३४. ३७. ४२।

१. कृमि, एक नदी का नाम है (६. ९, १७)।

२. कृमि (बह०), एक जाति के लोगों का नाम है (५. ७४, १३)।

१. कृश, शृङ्गीऋषि के एक मित्र का नाम है जो धर्म के लिये कष्ट उठाते रहने के कारण सदैव कृश ही रहा करते थे (१. ४०, २७-२८)। इन्होंने शृङ्गी ऋषि को उत्तेजित किया (१. ४०, २९-३२)। इन्होंने शृङ्गी ऋषि को बताया कि उनके पिता के कन्धे पर राजा परिक्षित ने सर्प डाल दिया है (१. ४१, ३. ५-९)।

२. कृश, ऐरावत कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है जो जनमेजय के सर्पयज्ञ में दग्ध हो गया था (१. ५७, ११)।

३. कृश, एक दिव्य महर्षि का नाम है जो शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म को देखने के लिये उपस्थित हुये थे (१३. २६, ७)।

४. कृश = शिव : १२. २८४, ९१. ११३।

कृशक, एक कश्यपवंशी नाग का नाम है (५. १०३, १५)।

कृशनाश, कृशाङ्ग = शिव (सहस्र नामों के अन्तर्गत)।

कृशानु = अग्निः ८. ६८, ३०।

कृशाश्व, यम की सभा में उपस्थित रहनेवाले एक नरेश का नाम है (२. ८, १७)। कृपाचार्य तथा अन्य कौरवों के विरुद्ध अर्जुन के युद्ध को देखने के लिये ये इन्द्र के विमान पर बैठ कर आये थे (४. ५६, १०)। प्रातः सायं इनका स्मरण-कीर्तन करनेवाला मनुष्य धर्म का भागी होता है (१३. १६५, ४९)।

कृषीबल, इन्द्र की सभा में बैठ कर उनकी उपासना करनेवाले एक प्राचीन महर्षि का नाम है (२. ७, १३)।

१. कृष्ण (वासुदेव), वसुदेव और देवकी के पुत्र, रुक्मिणी के पति, प्रद्युम्न, शाम्ब इत्यादि के पिता, एक दाशार्ह (वृष्णि, माधव, यादव) राजा का नाम है जो विष्णु के अवतार थे। 'विष्णुं···हृषीकेशं,' (१. १, २४)। 'मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च,' (१. १,१११)। 'यदाश्रौषं नरनारायणौ तौ कृष्णार्जुनौ वदतो नारदस्य,' (१. १, १७४)। १. १, १७५. १८१. १९६. २०७। 'कृष्णस्य सभाप्रवेशः', (१. २, ६३)। १. २, ११५. १२४. १२६. १३४. १५२. १५३. २१९. २२१. २३१, २३२. २३५. २३६. २४८. २४९. २६६. ३०१. ३०७. ३१३. ३१९. ३४०। 'कृष्णो यथा सर्वगुणोपपन्नः,' (१. ५५, १५)। 'अनुजां वासुदेवस्य सुभद्रां भद्रभाषिणीन्। सा शचीव महेन्द्रेण श्रीः कृष्णेनेव संगता ॥,' (१. ६१, ४४)। भगवान् विष्णु जगत् के जीवों पर अनुग्रह करने के लिये वसुदेव द्वारा देवकी के गर्भ से प्रगट हुये (१. ६३, ९९)। अर्जुन द्वारा सुभद्रा के गर्भ से अभिमन्यु का जन्म हुआ अतः वह कृष्ण का भानजा था (१. ६३, १२१)। देवताओं ने नारायण (विष्णु) की कृष्ण के रूप में पृथिवी पर अवतार लेने के लिये स्तुति की (१. ६४, ५१)। 'नारायणः,' (१. ६७, ११६)। 'नरनारायणाभ्यां', (१. ६७, ११९)। 'यस्तु नारायणो नाम देवदेवः सनातनः। तस्यांशो मानुषेष्वासीद्वासुदेवः प्रतापवान् ॥,' (१. ६७, १५१)। 'भगिनीं वासुदेवस्य सुभद्रां भद्रभाषिणीं···अभिमन्युमतीव गुणसंपन्नं दयितं वासुदेवस्य,' (१. ९५, ७८)। 'पुरुषोत्तमस्य वासुदेवस्य,' (१. ९५, ८३)। अश्वत्थामा के अस्त्र की अग्नि से झुलसकर परीक्षित असमय में ही उत्पन्न हो गया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने उसे अपने तेज से जीवित कर दिया (१. ९५, ८४)। ये द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये (१. ८६, १७)। १. ८७, ८. ९। 'कृष्णं च मनसा कृत्वा जगृहे चार्जुनो धनुः,' (१. १८८, १८)। 'दामोदरः', (१. १८९, १९)। 'कृष्णाद्वा देवकीपुत्रात्', (१. १९०, ३३)। १. १९१, १९. २०. २२। "भगवान नारायण ने अपने मस्तक से दो केश निकाले जिनमें एक श्वेत था और दूसरा श्याम। ये दोनों केश देवकी और रोहिणी के भीतर प्रविष्ट हुए। उनमें रोहिणी के बलदेव प्रगट हुए जो नारायण के श्वेत केश थे। दूसरे केश से, जो श्याम था और देवकी में प्रविष्ट हुआ था, कृष्ण प्रगट हुये (१. १९७, ३३)।" इन्होंने पाण्डवों को बहुमूल्य उपहार दिये (१. १९९, १६; २०२, १६)। जनार्दनः', (१. २०५, १९)। 'यतः कृष्णस्ततः सर्वे यतः कृष्णस्ततो जयः,' (१. २०५, २६)। 'वासुदेवं,' (१. २०६, ११)। 'रामकृष्णौ च धर्मज्ञो,' (१. २०७)। 'पाण्डवाश्चैव कृष्णश्च,' (१. २०७, १०)। 'कृष्ण पुरोगमाः' (१. २०७, २८)। 'केशवः ययौ द्वारवतीं,' (१. २०७, ५२)। 'कृष्णपाण्डवौ,' (१. २१८, ४)। नरनारायण, अर्थात् अर्जुन और कृष्ण (१. २१८, ५)। १. २१८, ८. ९. २१; २१९, १५. २४। इनकी आज्ञा से अर्जुन ने इनकी बहन, सुभद्रा, का हरण किया (१. २२०, २)। ये सुभद्रा और अर्जुन के विवाह के अवसर पर उपस्थित हुए (१. २२१, ३४)। इन्होंने पाण्डवों को एक सहस्र रथ आदि दिये (१. २२१, ४६)। इन्होंने अभिमन्यु के जन्म से ही उसके लालन-पालन की सुन्दर व्यवस्था की (१. २२१, ७१)। शूरता, पराक्रम, रूप तथा आकृति में अभिमन्यु इनकें ही समान था (१. २२१, ७७)। १. २२२, १४. २२. ३३। 'कृष्णपाण्डवौ (अर्जुन और कृष्ण),' (१. २२३, ३)। नर और नारायण ने ही अर्जुन और कृष्ण के रूप में पृथिवी पर अवतार लिया (१. २२४, ९)। हव्यवाहन अग्नि ने इनसे और अर्जुन से अपने कार्य का निवेदन किया (१. २२४, १२)। अर्जुन ने अग्नि को बताया कि श्रीकृष्ण के पास भी कोई आयुध नहीं है (१. २२४, १९)। अग्नि ने इन्हें एक चक्र दिया (१. २२५, २३)। १. २२७, २०. २१. २५. २७. ३७. ३९; २२८, ३. ५. ८. १०. १३. १८. ३३. ३८. ४६। इन्होंने इन्द्र से कहा कि वे इनके और अर्जुन के साथ शाश्वत मैत्री स्थापित कर लें (१. २३४, १३)। २. १, २. ८. १०. १५. १९; २, ४. ९. १५. ११. २२. २४. २७. २९। इन्होंने विन्दुसर नामक तीर्थ में यज्ञ और दानादि किया था (२. ३, १६. १७)। २. १३, ३६. ३७. ३९. ४०. ४६. ४८; १४, १; १५, १३. १४; १६, १; १७, ११. १२. २७. ५०; १८, ९; १९, १. २२. २४; २०, १९. २०; २१, २६. ३३. ४८. ४९; २२, ७. २८. २९; २३, २. ९. ३४; २४, १–३. १२–१३ (जब भीमसेन ने जरासन्ध का वध कर दिया तब इन्होंने जरासन्ध के दिव्य रथ को जोता और भीम तथा अर्जुन को उस पर बैठा कर वहाँ आये जहाँ इनके वान्धवस्वरूप अनेक राजा बन्दी थे। इन्होंने उन सब राजाओं को मुक्त कर दिया जिससे उन सबने इन्हें विविध रत्नों के उपहार दिये). १५ १७. २०. २१. २३. ४२–४३. ४५. ४९. ५७-५८। 'ततश्चर्मण्वतीकूले जम्भकस्यात्मजं नृपम्। ददर्श वासुदेवेन शोषितं पूर्ववैरिणा ॥,' (२. ३१, ७)। 'प्रीतिपूर्वं महाराज वासुदेवमवेक्ष्य च', (२. ३१, ६४)। 'वासुदेवजितामाशां,' (२. ३२, १)। २. ३३, १०. १५. १७. २२. २५. २६; ३५, १० (ब्राह्मण का चरण-प्रक्षालन किया)। 'पुण्डरीकाक्षं······ हरिं,' २. ३६, १३। भीष्म ने कृष्ण को अर्घ्य देने के लिये सहदेव को आज्ञा दी (२. ३६, २७. २९. ३१)। २. ३७, ६. ८–१२. १४. १६. २१. २४ (शिशुपाल इनके प्रथम आदर प्राप्त करने को सहन नहीं कर सका और इनकी भर्त्सना करने लगा); ३८, ४–६. १०. ११. १७. २३, २५. २६–२९. ३०; ३९, २. ९, ११. १८; ४१, २०; ४२, ३. ५, ४३, १९. २० (शिशुपाल की माता श्रीकृष्ण की बूआ थी). २२ (श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को आश्वासन दिया कि वे शिशुपाल को सौ बार क्षमा करेंगे); ४४, १. ३. ४२; ४५, ३–५ (शिशुपाल के कुकृत्यों की गणना कराते हैं). १६. १८. २७ (इन्होंने अपने चक्र से शिशुपाल का सर काट दिया). २९. ३४. ६६. ६७; ४७, २७; ४८, ४. १५; ४९, २७; ५०, ३०; ५२, ३१–३३; ५३, १६ (राजसूय के समाप्त होने पर इन्होंने युधिष्ठिर को स्नान कराया). १९; ६२, ८; ६७, ३३; ६८, ४१–४६ (ये द्वारका से द्रौपदी की रक्षा के लिये आये); ६९, १०; ७९, २३; ८१, ३२। "अर्जुन ने कृष्ण की इस प्रकार स्तुति की : '(१) पूर्वकाल में गन्धमादन पर्वत पर आपने यत्रसायंगृह मुनि के रूप में दस हजार वर्षों तक विचरण किया। (२) पूर्वकाल में कभी इस धरा पर अवतीर्ण हो आपने ग्यारह हजार वर्षों तक पुष्करतीर्थ में केवल जल पी कर रहते हुये निवास किया। (३) आप बदरिकाश्रम में दोनों भुजाओं को ऊपर उठाये हुये केवल वायु के आहर पर एक सौ वर्षों तक एक पैर से खड़े रहे हैं। (४) आप सरस्वती नदी के तट पर उत्तरीय वस्त्र तक का त्याग करके द्वादश वार्षिक यज्ञ करते समय तक शरीर से अत्यन्त दुर्बल हो गये थे। (५) आप पुण्यात्माओं के निवास योग्य प्रभास तीर्थ में जाकर एक सहस्र दिव्य वर्षों तक एक ही पैर पर खड़े रहे। (६) आप क्षेत्रज्ञ, सम्पूर्ण भूतों के आदि और अन्त, तपस्या के अधिष्ठान, यज्ञ और सनातन पुरुष हैं। (७) भूमि पुत्र नरकासुर को मार कर अदिति के दोनों मणिमय कुण्डल आप ही ले आये थे, एवं आपने ही सृष्टि के आदि में उत्पन्न होने वाले यज्ञ के उपयुक्त घोड़ों की रचना की थी। (८) आपने समस्त दैत्यों और दानवों का युद्ध स्थल में बध करके इन्द्र को सर्वेश्वरपद

प्रदान किया और तदनन्तर मनुष्यों में प्रगट हुये। (९) आप ही पहले नारायण होकर फिर हरि रूप में प्रगट हुये; ब्रह्मा, सोम, सूर्य, धर्म, धाता, यम, अनल, वायु, कुबेर, रुद्र, काल, आकाश, पृथिवी, दिशायें, चराचरगुरु तथा सृष्टिकर्त्ता एवं अजन्मा आप ही हैं। (१०) आपने चैत्ररथवन में अनेक यज्ञों का अनुष्ठान किया और उनमें से प्रत्येक यज्ञ में एक-एक करोड़ स्वर्ण मुद्रायें दक्षिणा में दीं। (११) आप अदिति के पुत्र और इन्द्र के छोटे भाई होकर सर्वव्यापी विष्णु के नाम से विख्यात हैं। (१२) आपने ही वामनावतार लेकर अपने तेज से तीन पगों द्वारा द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक, तीनों को नाप लिया। (१३) आपने सूर्य के रथ पर स्थित होकर, द्युलोक तथा आकाश में व्याप्त होकर अपने तेज से भगवान भास्कर को भी अत्यन्त प्रकाशित किया है। (१४) आपने सहस्रों अवतार धारण किये हैं, और उन अवतारों में सैकड़ों असुरों का वध किया है। (१५) आपने मुरु दैत्य के पाश काट दिये; निसुन्द और नरकासुर को मार डाला, तथा पुनः प्राग्ज्योतिषपुर के मार्ग को सकुशल यात्रा करने-योग्य बना दिया। (१६) आपने जारूथी नगरी में आहुति, क्राथ, साथियों सहित शिशुपाल, जरासन्ध, शैब्य और शतधन्वा को परास्त किया। (१७) मेघ के समान घर्घर शब्द करने वाले सूर्यतुल्य रथ के द्वारा कुण्डिनपुर में जाकर आपने रुक्मी को परास्त किया और रुक्मिणी को अपनी भार्या बनाया। (१८) आपने इन्द्रद्युम्न और कसेरुमान् का वध किया। (१९) आपने सौभपति शाल्व को भी यमलोक पहुँचा दिया। (२०) आपने इरावती के तट पर कार्तवीर्य अर्जुन के सदृश पराक्रमी भोज को युद्ध में मार गिराया। (२१) आपने ही गोपति और तालकेतु को भी मार डाला। (२२) भोग सामग्रियों से सम्पन्न तथा ऋषि-मुनियों की प्रिय अपने अधीन की हुई पुण्यमयी द्वारका नगरी को आप अन्त में समुद्र में विलीन कर देंगे। (२३) प्रलय-काल में समस्त भूतों का संहार करके इस जगत् को स्वयं ही अपने ही भीतर रखकर आप अकेले ही रहते हैं। (२४) सृष्टि के प्रारम्भ में आपके नाभिकमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुये। (२५) जब ब्रह्मा उत्पन्न हुये, उस समय मधु और कैटभ नामक दो भयंकर दानव उनका प्राण लेने को उद्यत हो गये। दानवों का यह अत्याचार देखकर आपके ललाट से शम्भु का प्रादुर्भाव हुआ जिनके हाथों में त्रिशूल था। उनके तीन नेत्र थे। इस प्रकार ब्रह्मा और शिव आपके शरीर से ही उत्पन्न हुये हैं। (२६) आपने बाल्य-काल में जो-जो महान् कर्म किये हैं उन्हें पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती पुरुषों ने न तो किया है और न करेंगे। (२७) आप ब्राह्मणों के साथ कुछ काल तक कैलास पर्वत पर भी रहे हैं।' अर्जुन की स्तुति समाप्त होने के बाद कृष्ण ने अर्जुन से इस प्रकार कहा: 'तुम मेरे ही हो, मैं तुम्हारा ही हूँ। जो मेरे हैं, वे तुम्हारे भी हैं। जो तुमसे द्वेष रखता है, वह मुझसे भी रखता है। तुम नर हो, मैं नारायण हूँ और इस समय हम दोनों ने पृथिवी पर अवतार लिया है। तुम मुझसे अभिन्न हो, और मैं तुमसे पृथक् नहीं हूँ। हम दोनों का भेद जाना नहीं जा सकता।' तदनन्तर द्रौपदी ने कृष्ण से कहा: '(१) ऋषिगण आपको ही सम्पूर्ण जगत् का प्रजापति कहते हैं, और महर्षि असित-देवल का यही मत है। (२) जामदग्नि परशुराम का कथन है कि आप ही विष्णु हैं, आप ही यज्ञ हैं, और आप ही यजमान हैं। (३) महर्षिगण आपको क्षमा और सत्य का स्वरूप कहते हैं; सत्य से प्रगट हुये यज्ञ भी आप ही हैं। (४) नारद ने कहा है कि आप साध्य देवताओं तथा रुद्रों के अधीश्वर हैं। जैसे बालक खिलौनों से खेलता है उसी प्रकार आप ब्रह्मा, शिव, तथा इन्द्र आदि देवताओं से बारम्बार क्रीड़ा करते रहते हैं। (५) स्वर्गलोक आपके मस्तक से, पृथिवी आपके चरणों से व्याप्त है; ये समस्त लोक आपके उदर-स्वरूप हैं और आप सनातन पुरुष हैं। (६) आत्मज्ञान से तृप्त महर्षियों में आप ही परम श्रेष्ठ हैं। (७) राजर्षियों के आप ही आश्रय हैं।··········लोक, लोकपाल, नक्षत्र, दसों दिशायें, आकाश, चन्द्रमा और सूर्य आप में ही प्रतिष्ठित हैं।' इस प्रकार स्तुति के पश्चात्, द्रौपदी ने अपनी विपत्तियों का कृष्ण से निवेदन किया (३. १२, ११. १२. १४. १५. १७. २३. २६. २८. ४२. ४४. ६१. ६५. ७४. ७८. ८२. ८४. ११५. ११७. १२१. १२७. १३५। ३. १४, १. २; १६, १; १९, २४ (देवकीनन्दनः); २२, २१. ४७. ४८। ३. १५-२२ अध्यायों में श्रीकृष्ण ने शाल्व के साथ हुये युद्ध का वर्णन किया जिसमें इन्होंने शाल्व का वध कर दिया। ३. २९, ४६ (देवकी पुत्रः); ३३, १२। 'त्वयि वा परमं तोजो विष्णौ वा पुरुषोत्तमे। युवाभ्यां पुरुषाग्रयाभ्यां तेजसा धार्यते जगत् ॥ शक्राभिषेके सुमहद्धनुर्जलदनिःस्वनम्। प्रगृह्य दानवाः शस्तास्त्वया कृष्णेन च प्रभो ॥', (३. ४०, २. ३)। 'नरनारायणौ यौ तौ पुराणावृषिसत्तमौ। ताविमावनुजानीहि हृषीकेशधनंजयौ ॥', (३. ४७, १०)। 'योसौ भूमिगतः श्रीमान्विष्णुर्मधुनिषूदनः। कपिलो नाम देवोसौ भगवानजिते हरिः ॥', (३. ४७, १८)। 'जनार्दनः, हरिस्त्रैलोक्यनाथः', (३. ४९, २०)। ३. ५१, ११. २०. ४३; ५२, १२; ८०, २८; ८३, १९। 'कृष्णानिलोद्धतः', (३. ८६, १२)। 'महात्मानं कृष्णं धर्मं सनातनम्', (३. ८८, २५)। 'वासुदेवेति यं प्राहुः कपिलं मुनि पुङ्गवम्', (३. १०७, ३२)। ये पाण्डवों से मिलने के लिये प्रभासतीर्थ में आये (३. ११८, २०)। ३. ११९, ५; १२०, १७. २७. ३१; १२५, २१; १७६, १५; १८६, ६. ८. २८. ३९. ४०; १८८, १८; १८९, ५४; १९०, ६; १९१, ३४। 'देवकीपुत्रेणापि कृष्णेन नरके मज्जमानो राजर्षिर्नृगस्तस्मात् कृच्छ्रात् पुनः समुद्धृत्य स्वर्गं प्रापितः।', (३. १९९, १८)। 'सत्यभामा कृष्णस्य महिषी प्रिया', (३. २३३, ३)। 'येन कृष्णो भवेन्नित्यं मम कृष्णो वशानुगः', (३. २३३, ८)। 'कृष्णस्य महिषी प्रिया', (३. २३३, ११)। 'कृष्णमाराधय', (३. २३४, ४)। 'जानातु कृष्णस्तव', (३. २३४, ७)। 'कृष्णमहिषी', (३. २३५, १७)। 'केशवार्जुनौ', (३. २५२, २०)। जब दुर्वासा आदि पाण्डवों के पास आये तो द्रौपदी की स्तुति पर कृष्ण ने द्रौपदी की सहायता की (३. २६३, ८. २०. २६. ४२)। 'स एवं भगवान् विष्णुः कृष्णेति परिकीर्त्यते। अनाद्यन्तमजं देवं प्रभुं लोकनमस्कृतम् ॥ यदेवं विदुषो गान्ति तस्य कर्माणि सैन्धव। यमाहुरजितं कृष्णं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ श्रीवत्सधारिणं देवं पीतकौशेयवाससम्। प्रधानं सोऽस्त्रविदुषां तेन कृष्णेन रक्ष्यते ॥', (३. २७२, ७२-७४)। 'यमाहुर्वेदविद्वांसो + वराहमपराजितम्।······तेन कृष्णेन रक्ष्यते ॥', (३. ३१०, २८)। 'वासुदेवस्य भगिनीं, अर्थात् दुर्गा (४, ६, ४)। 'सत्यभामां कृष्णस्य महिषीं प्रियाम्', (४. ९, १९)। 'कृष्णं च माधवम्', (४. ४५, ४०)। 'कृष्णामवाजयत्', (४. ४९, ३)। 'कृष्णाद्वा देवकी सुतात्', (४. ५३, १८; ६४, २१)। 'स्वस्रीयो वासुदेवस्य', (४. ७२, ८)। 'जनार्दनम्', (४. ७२, १५)। ५. १, ८. १०; ५, १२; ७, ३. ७-९. ११. १५. २१. २२. २४. ३१. ३४. ३९.। 'बुद्धिमत्त्वं च कृष्णस्य बुद्ध्वा युध्येत को नरः', (५. २०, २०)। 'दामोदरेण', (५. २१, २)। 'प्रसह्य कृष्णस्तरसा' संममर्द', (५. २२, २६)। शिशुपाल के साथ इनके युद्ध का उल्लेख (५. २२, २८-३०)। 'सनातनो वृष्णिवीरश्च विष्णुः', (५. २२, ३३)। 'कृष्णो विद्वांश्चैषां कर्मणि नित्ययुक्तः', (५. २२, ३९)। 'वासुदेवं च शौरिं', (५. २५, २)। 'राजन्यभोजाननुशास्ति कृष्णः', (५. २८, ९)। 'वृष्ण्यन्धका ह्युग्रसेनादयो वै कृष्णप्रणीताः', (५. २८, १२)। 'कृष्णं भ्रातरमीशितारम्', (५. २८, १३)। 'साधुतमश्च कृष्णो', (५. २८, १४)। अभिमन्यु इनके समान पराक्रमी और अस्त्रविद्या में निपुण था (५. ४८, ३२)। 'सुग्रीवयुक्तेन रथेन वा ते पश्चात् कृष्णो रक्षतु वासुदेवः', (५. ४८, ६८)। 'अयुद्ध्यमानो मनसाऽपि यस्य जयं कृष्णः पुरुषस्याभिनन्देत्', (५. ४८, ७०)। 'जो युद्ध के द्वारा श्रीकृष्ण को जीतने की इच्छा करता है, वह मानो अत्यन्त अपार जलनिधि समुद्र को दोनों बाहों से तैरकर पार करना चाहता है (५. ४८, ७१)। जो युद्ध के द्वारा श्रीकृष्ण को जीतना चाहता है वह मानो प्रज्वलित अग्नि को दोनों हाथों से बुझाने की चेष्टा करता है (५. ४८, ७३)। 'श्रीकृष्ण ने एकमात्र रथ की सहायता से भोजवंशी राजाओं को पराजित करके रुक्मिणी को पत्नी रूप में ग्रहण किया। रुक्मिणी से ही प्रद्युम्न का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण ने गान्धारदेशीय योद्धाओं और राजा नग्नजित के समस्त पुत्रों को पराजित करके राजा सुदर्शन को मुक्त किया।

इन्होंने ही पाण्ड्य नरेश को किवाड़े के पल्ले से मार डाला और कलिङ्गदेशीय योद्धाओं को कुचल दिया। इन्होंने ही काशीपुरी को जला दिया। इन्होंने दूसरों के लिये अजेय, निषादराज एकलव्य, का वध कर दिया जिससे वह उसी प्रकार रणशय्या में सो गया जैसे जम्भ नामक दैत्य स्वयं ही वेगपूर्वक पर्वत पर आघात करके प्राणशून्य हो महानिद्रा में निमग्न हो गया। इन्होंने ही उग्रसेन के दुष्ट पुत्र, कंस, का वध करके मथुरा का राज्य उग्रसेन को दे दिया। इन्होंने सौभ नामक विमान पर बैठे हुये आकाश में स्थित शाल्वराज के साथ युद्ध किया और सौभ विमान के द्वार पर लगी शतघ्नी को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। प्राग्ज्योतिषपुर नाम से प्रसिद्ध एक भयंकर और अजेय पुर था, जहाँ नरकासुर निवास करता था। इस असुर ने अदिति के कुण्डलों को अपहरण करके उन्हें यहीं छिपा दिया था। जब देवता सहित इन्द्र भी नरकासुर को पराजित नहीं कर सके तो उन सब ने इनसे (कृष्ण से) उसका वध करने का निवेदन किया। उस समय इन्होंने निर्मोचन नगर में जाकर छः हजार लोहमय पाश काट दिये और मुर दैत्य तथा अन्य राक्षसों का नाश करके नरकासुर के साथ युद्ध किया। इनके हाथों से मारा जाकर नरकासुर आँधी के वेग से उखड़े कनेर के वृक्ष की भाँति सदा के लिये रणभूमि में सो गया। नरक और मुरु का वध करने के पश्चात् इन्होंने अदिति के कुण्डलों को प्राप्त कर लिया। उस समय देवताओं ने इन्हें यह वर दिया: 'युद्ध करते समय आपको कभी थकावट न हो, आकाश और जल में भी आप अप्रतिहत गति से विचरें; और, आपके अंगों में कोई भी अस्त्र-शस्त्र क्षति न पहुँचा सकें।' (५. ४८, ७७. ८१. ८४. ८५. ८७-८९)। 'एष नारायणः कृष्णः फाल्गुनश्च नरः स्मृतः', (५. ४९, २०)। 'शङ्खचक्रगदाहस्तं यदा द्रक्ष्यसि केशवम्', (५. ४९, २३)। 'कृष्ण द्वितीयो विक्रम्य तुष्टयर्थं जातवेदसः', (५. ५०, २६)। 'कृष्णसदृशो वीर्ये', (५. ५०, ४३)। 'हृषीकेशः', (५. ५२, ११)। 'स्रष्टा जगतः कृष्णः', (५. ५३, ३)। 'कृष्णप्रधानाः', (५. ५५, ५)। 'मुख्यमन्धकवृष्णीनामपश्यं कृष्णमागतम्', (५. ५७, २)। 'कृष्णधनञ्जयौ', (५. ५९, २)। 'इन्द्रवीर्योपमः कृष्णः', (५. ५९, १५)। 'कृष्णद्वितीयेन धनञ्जयेन', (५. ६२, ८)। 'पुण्डरीकाक्षं', (५. ६५, ८)। 'अर्जुनो वासुदेवश्च धन्विनौ परमार्चितौ', (५. ६८, १)। 'चक्रं तद्वासुदेवस्य मायया वर्तते विभो', (५. ६८, २)। 'यतः कृष्णस्ततो जयः', (५. ६८, ९)। 'हरिः', (५. ६८, १४)। 'त्रियुगं मधुसूदनम् कर्तारमकृतं देवं', (५. ६९, ३)। 'हृषीकेशं', (५. ६९, १२)। 'संजय ने धृतराष्ट्र को कृष्ण के नाम की व्युत्पत्ति बताते हुये कहा: 'भगवान समस्त प्राणियों के निवास स्थान हैं, तथा वे सब भूतों में वास करते हैं, इसलिये 'वसु' हैं। देवताओं की उत्पत्ति के स्थान होने से और समस्त देवता उनमें वास करते हैं, इसलिये उन्हें 'देव' कहा जाता है। अतएव उनका नाम 'वासुदेव' है ऐसा जानना चाहिये। बृहत् अर्थात् व्यापक होने के कारण ही वे 'विष्णु' कहलाते हैं।' इसी प्रकार संजय ने श्रीकृष्ण के अन्य नामों, जैसे माधव, कृष्ण, पुण्डरीकाक्ष, जनार्दन, सात्वत, आर्षभ, वृषभेक्षण, अज, दामोदर, हृषीकेश, अधोक्षज, नारायण, पुरुषोत्तम, जिष्णु, अनन्त, गोविन्द आदि की व्युत्पत्ति बताया (५. ७०)।" धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण का गुणगान किया (५. ७१)। ५. ७२, ६. १०. २०. २९. ३४. ४४. ४९. ५४. ५६. ६४. ७२. ७६. ७९. ८२. ८३. ८९. ९२; ७४, ५. २०; ७५, १. २; ७६, ७; ७८, ६. ११. १५; ८०, ७; ८१, ३. ४; ८२, ९. १०. १३. १५. १९. २१. २३. ३०-३२. ३५. ३७; ८३, २०. २८. २९. ३५. ४३. ४६. ४९; ८४, ३; ८५, ५. ८; ८६, १-३; ८७, ६. ७. १२; ८८, १. ५. १६. २१; ८९, १. ६. २४; ९०, २. ४. २१. २८. ३४. ३६. ५४. ५८. ६१. ६७. ६८. १०१. १०२; ९१, १२. ४० (दूत के रूप में कृष्ण ने दुर्योधन के भवन में पदार्पण किया परन्तु वहाँ कुछ भी ग्रहण न करके विदुर के गृह पर भोजन किया); ९२, १६. १७. २५. ३०; ९३, १६; ९४, ३. ७. ८. १५. १७. १८. २०. २३. २९. ३०. ३४. ३८. ४७; ९५, १ (धृतराष्ट्र के साथ इनका संवाद); ९६, १ (केशवः). ४६ (नारायणः). ४७ (जनार्दनः). ४८ (ये और अर्जुन नर तथा नारायण हैं); १०५, ३७ (चक्रगदाधरः); १०७, १४ (विबुधश्रेष्ठं त्रिभुवनेश्वरं, विष्णुं). १५ (कृष्णं योगिनमव्ययम्); १११. ४ (नारायणः कृष्णो जिष्णुश्चैव नरोत्तमः); ११७, १७ (रुक्मिण्यां च जनार्दनः); १२४, २ (केशव). ३; १२५, २. १२. १५. १६. २४; १२७, १०. १३; १२८, १; १२९, १. ३. ३७. ३८; १३०, १२. २०. ४२-५३ (विदुर ने श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन किया); १३१, १०-११ (इन्होंने अपना दिव्य रूप दिखाया); १३२, २ (कुन्ती के साथ इनका संवाद); १३७, ८. १३. २५; १३८, २; १३९, १० (वासुदेवः). १९ (मंत्री जनार्दनो यस्य); १४०, ३ (कर्ण के साथ इनका वार्तालाप); १४१, २. ४. ११. १३. १५. १६. २८. ३०. ४४-४६; १४२, १; १४३, १. ४. १०. १६. २३. २८. ३६. ३७. ३८; १४४, १. ३; १४६, ९ (कृष्णेन सहितात् धनञ्जयात्); १४७, ४. १४; १५१, ३४ (दशार्हः). ३६. ३७. ४९; १५२, ५ (इन्होंने पाण्डवों के शिविर की व्यवस्था की); १५४, ६. ७; १५७, ५. ९. ३२; १५८, ६. १४; १६०, ४९. ६२; १६१, ४; १६२, ८. १०. १३. ५७; १६३, ३; १६५, २ (वासुदेवसहायेन पार्थेन); १६९, १६ (गुडाकेशो नारायणसहायवान्); १९३, २२ (पार्थं वासुदेवसमायुक्तं); १९४, ८. १० (वासुदेवसहायवान्); १९६, १८ (वासुदेव धनञ्जयौ); ६. १, १६ (वासुदेवः). १७ (वासुदेव-धनञ्जयौ); २१, १२-१६; २२, १०; २३, १. २१ (कृष्णार्जुनावेकरथौ). २६. २८ (यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः); २५, २८. ३२. ४१; २९, १; ३०, ३४. ३७. ३९; ३५, ३५. ४१; ४१, १; ४२, ७५. ७८। (जब युद्ध क्षेत्र में अर्जुन विषादग्रस्त हो गये तो श्रीकृष्ण ने उन्हें भगवद्गीता का उपदेश दिया: ६. २५-४२)। ६. ४३, २५. ३३. ६० (=६. २३, २८). ९३; ४९, १४ (कृष्णसहितः पार्थः); ५०, ४. १०. ३५; ५२, ३५ (कृष्णेन-सहितः); ५५, १६ (कृष्णतुल्यपराक्रमः). ३७; ५९, ४१. ६३. ८९. ९० (महेन्द्रावरजः). ९२. ९३ (महेन्द्रावरजं). ९७ (देवेश जगन्निवास नमोऽस्तु ते माधव चक्रपाणे). ९८. ९९. १०३. १०४; ६५, ६५. ७० (सृष्ट्वा संकर्षणं देवं स्वयमात्मानमात्मना, कृष्ण त्वमात्मनास्राक्षीः)। भीष्म ने बताया कि देवताओं के आग्रह पर ब्रह्मा ने नारायणावतार श्रीकृष्ण की महिमा का प्रतिपादन किया (६. ६६, ४-३८)। ६. ६६, ३५ (=६. २३, २८)। भीष्म ने वासुदेव की महिमा का वर्णन किया (६. ६७, २-२५)। भीष्म ने वासुदेव की स्तुति में ब्रह्मा द्वारा कहे गये एक श्लोक (६. ६८, २) को उद्धृत किया (६. ६८, १७)। ६. ७३, ७; ८२, ११; ९६, ६। 'जगद्गोप्ता शङ्खचक्रगदाधरः॥ वासुदेवोऽनन्तशक्तिः सृष्टि-संहारकारकः। सर्वेश्वरो देवदेवः परमात्मा सनातनः॥', (६. ९८, १४. १५)। ६. १०६, ५८. ६४. ६६; १०७, १३. १८. १९, २५. ४९. ८६. ९५; १२०, ६९; १२१, ४२. ४५; १२२, १६। 'वासुदेवः', (७. २, ३१)। 'यथा वायुर्नरव्याघ्र तथा कृष्णः', (७. ३, १९)। 'नारायणः', (७. १०, ७६)। धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण की लीलाओं का संक्षिप्त वर्णन करते हुये श्रीकृष्ण की महिमा बताया (७. ११, ६. २३. २५. ३८. ४०. ४१)। ७. १७, ४ (कृष्णपाण्डवौ); १८, ४; १९, ४. ८. २१; २३, ३३ (यमाहुरध्यर्धगुणं कृष्णात् पार्थाच्च संयुगे। अभिमन्युं). ६९; २५, ३२; २७, २. ९. १९. ३१; २८, १. ३. २६। जब भगदत्त के वैष्णवास्त्र के प्रहार को श्रीकृष्ण ने अपने वक्ष पर धारण कर लिया तो अर्जुन ने उपालम्भ किया परन्तु श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने चार स्वरूपों का वर्णन करने के बाद बताया कि उन्होंने ही पूर्वकाल में उस अस्त्र को किस प्रकार नरकासुर को प्रदान किया था (७. २९, २५-३८)। 'विश्वसृग्यत्र गोविन्दः', (७. ३३, १२)। 'सकृष्णाः पाण्डवाः', (७. ३४, १)। 'कृष्णस्य चरितेन', (७. ३४, ९)। ये चक्रव्यूह-भेदन करना जानते थे (७. ३५, १५)। 'विष्णुं मातुलं', (७. ३६, ७)। 'विष्णोः स्वसुर्नन्दकरः', अर्थात् अभिमन्यु (७. ४९, १)। 'कृष्णार्जुनसमः', (७. ४९, ३८)। ७. ७२, १०. ६०. ६४. ६७. ७५; ७३, २१; ७५, १; ७६, ७. १९. २७; ७७, २ (नरनारायणौ). ९ (सुभद्रा को सान्त्वना दी); ७८, ३८. ४४; ७९, ५. ९ (दारुक

को अपना रथ सुसज्जित करने की आज्ञा दी); ८०, २. ३. ५. १३. १४. १७. २२. ३४. ३६. ४७. ५०. ५५ (ये अर्जुन के स्वप्न में प्रगट हुये और फिर दोनों ने साथ-साथ ही शिव की स्तुति की)। अर्जुन ने मन ही मन इनकी और शिव की पूजा की (७. ८१, ३) । 'नरनारायणवृषौ', (७. ८१, ९)। जब अर्जुन ने शिव से पाशुपत अस्त्र प्राप्त कर लिया तो अर्जुन और इन्होंने शिव को प्रणाम किया (७. ८१, १२) । ७. ८२, १; ८३, ८. ११. १५. १८ (नमस्ते देवदेवेश सनातन विशातन। विष्णो जिष्णो हरे कृष्ण वैकुण्ठ पुरुषोत्तम ॥)। इन्होंने अर्जुन को विजय का विश्वास दिलाया (७. ८३, २१-२८)। 'केशवस्य प्रसादनम्', (७. ८४, ५)। इन्होंने एक सारथि के समान अर्जुन के रथ को सुसज्जित करने के पश्चात् अर्जुन को इसकी सूचना दी (७. ८४, ११. १३)। ७. ८५, ३६; ८६, ११. १२. १९ (कृष्णार्जुनौ); ८८, २१; ८९, ५ (कृष्णधनञ्जयौ); ९१, २. ४. ११. ३१; ९२, २५. ५३ (शौरिं); ९३, १६. ५७; ९४; २०. ३७; ९८, ३६ (दशार्हः); ९९, ३७; १००, १४. १९. २३ (इन्होंने अर्जुन के रथाश्वों को पानी पिलाया); १०१, १५ (कृष्णधनञ्जयौ). ३२. ३८ (कृष्णपार्थौ). ४२; १०२, ३३ (कृष्णपाण्डवौ); १०३, ५. ११. १२. १४. १६. २६ (कृष्णपाण्डवौ). ४८ (कृष्णधनञ्जयौ); १०४, ११ (वासुदेव-धनञ्जयौ). ३३ (हरेः); ११०, ४५ (कृष्णतुल्यपराक्रमः). ५२. ८८ (दाशार्हं गोप्तारं जगतः पतिम्); ११२, ८ (कृष्णपाण्डवौ); ११४, २१ (कृष्णपाण्डवौ). ३१ (दाशार्हम्). ४१ (कृष्णधनञ्जयौ). ५०; ११७, ६ (दाशार्हः); ११८, २ (केशवफाल्गुनाभ्याम्); १२२, २१; १२६, ४९; १२७, ४६; १२८, ३३; १२९, ८. ३८; १३०, १४; १३१, १९; १३२, ४०; १३५, २०; १३७, १५; १३९, ११; १४०, ३. २५; १४१, २८; १४२, ११. ५३; १४३, १४. ३६. ४७. ५२; १४५, ३. ६. ८७। "योगी, योगयुक्त, योगीश्वर कृष्ण ने सूर्य को छिपाने के लिये अन्धकार की सृष्टि की। जब इन्होंने अन्धकार उत्पन्न कर दिया तो कौरव योद्धा अर्जुन का विनाश निकट देख कर हर्षमग्न हो गये । उस समय जब जयद्रथ सामने प्रगट हुआ तो इन्होंने अर्जुन से उसका मस्तक काट देने के लिये कहा (७. १४६, ६७-७३)।" ७. १४७, २१. ४०; १४८, ३५. ३६. ५८; १४९, ३. ६. १३ (५ से २४ श्लोकों में युधिष्ठिर ने कृष्ण की स्तुति की); १५२, २ (कृष्ण-सहायेन पाण्डवेन). १८; १५६, १९ (शपेऽहं कृष्णचरणैः). ४७ (गोविन्दम्); १५८, १८. २९. ३१. ३२. ३५. ५३, १५९, ७; १६२, ४६; १६७, ३६; १७३, २९. ४३ (कर्ण से युद्ध करने के लिये घटोत्कच को भेजा); १७७, ३७; १७८, १; १८०, २; १८१, २; १८२, १३. १५. १६. २२-२५. ३१. ३३; १८३, ७. ९. २४. २६. २७. ३०. ४०. ४१. ४५; १८६, ८; १९०, ५४ (इन्होंने यह प्रस्ताव किया कि द्रोणाचार्य से कहा जाय कि अश्वत्थामा का वध हो गया); १९१, ५०; १९२, ५८; १९५, २९ (ये नारायणास्त्र को नहीं जानते थे); १९८, ७. ५०; २००, १३. १८; २०१, १५. ६८. ८०. ८५. ९५; २०२, १४६। 'यथा कृष्णेन नरको मुरुश्च नरकारिणा', (८. ५, ५५)। 'नरनारायणौ', (८. १६, २०)। 'अश्वत्थामा सुसंयत्तः कृष्णावभ्यद्रवद्रणे', (८. १६, २१) । 'एवमुक्तोऽवहत्पार्थं कृष्णो द्रोणात्मजान्तिके', (८. १६, २६) । ८. १७, ५; १८, २. १६; १९, २४. ५३. ५५; २१, ४; २४, ५०; २७, १५. १८; ३०, १३. २३; ३१, ५७. ६१. ६४; ३२, १९. २१. २२. ६१; ३४, १२१; ३५, ७-९. २५. २६. ३९; ३६, १; ४०, ४. ९. ११. १४; ४६, १५. ५९ (एतच्चक्रं गदा शार्ङ्गं शङ्खः कृष्णस्य धीमतः); ५३, २०. २२; ५६, ८५. ८८. ९०. १२३. १३३. १३४. १३९; ५८, ३. ७. ४२. ४४; ५९, ५२. ६६; ६०, १; ६२, १; ६४, २६. ६१. ६२. ६५; ६५, १२; ६६, ३९; ६९, ८. १६. ६९; ७०, २३. २९. ३५. ५६; ७१, २. २३; ७२, ५. ६; ७३, १; ७४, ४. ६. ८. १०. १३. ३३. ३६. ४२. ४६; ७६, ३५; ७९, ७. ११. १५. ४१. ४८. ५३. ६४-६७; ८१, ३; ८२, १०; ८३, ४९; ८४, ४२; ८५, २४. २८. ३९; ८६, १७. २१. २२; ८७, १६. ७९. १०४. १०७. १०९; ८८, २२; ८९, ६१. ७७. ९१; ९०, ५०. ५२. ७९. ८८. १०२ (इन्होंने रथ को भूमि में थोड़ा धँसा कर अश्वसेन से अर्जुन को बचा लिया); ९१, ५७; ९४, ६१; ९६, ९. १७. २८. ३०. ३५। उन सात पाण्डव वीरों में एक यह भी थे जो युद्ध के बाद भी जीवित बच रहे (९. १, ३६) । 'कृष्ण-सारथिं......रथं', (९. ३, ३४) । 'कृष्णनेत्रः' (९. ४, १५)। ९. ४, २१. ४९; ५, ८. १०; ७, २७; ११, ३९; १३, ३८; १६, ३. १६; १७, ३७. ३८; १९, १९. २६; २४, ३०; २७, १३-१५. २०. २४. २५; ३०, ४६; ३१, ३। जब दुर्योधन बारंबार गर्जना करने लगा तो इन्होंने युधिष्ठिर को इस बात के लिये फटकारा कि उन्होंने दुर्योधन से यह क्यों कहा कि वह पाण्डवों में से किसी एक को ही मार कर राजा बन सकता है (९. ३३, १-१६. १९. २२)। ९. ३४, ५; ३५, ८. ९. ११. १२; ४९, २०; ५४, ३२; ५५, ४४ । इन्होंने भीम को दुर्योधन से कपट युद्ध करने का परामर्श दिया जिस पर भीमसेन ने गदा-प्रहार से दुर्योधन का ऊरु भंग कर दिया (९. ५८, १)। ९. ६०, २४. ३५. ४७; ६१, ३. २३. ६०; ६२, ११ (जब कृष्ण रथ से उतर गये तब अर्जुन का वह रथ जल कर भस्म हो गया). २४. २७. ३२ (यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः); ६३, २. ४. २१. २३ (दुर्योधन की मृत्यु के पश्चात् ये धृतराष्ट्र और गान्धारी को सान्त्वना देने के लिये हस्तिनापुर आये); ६५, २९। 'यथावदहमारूढः कृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा । तस्मादिष्टतमः कृष्णादन्यो मम न विद्यते ॥', (१०. ७, ६३) । 'असान्निध्यात्......केशवस्य', (१०. ८, १५४)। १०. ९, २४. ३०. ४९; १२, १. १३. ३६; १३, १ (इनके रथ का वर्णन); १४, १ (दाशार्हः); १६, ७ (अश्वत्थामा के ब्रह्मशिरस अस्त्र द्वारा हत उत्तरा के गर्भ को इन्होंने जीवित कर देने का वचन दिया). ३७; १७, २; ११. १, १४. २९; १२, १५. १६ (जब धृतराष्ट्र भीमसेन का आलिङ्गन करने आये तो इन्होंने भीमसेन के स्थान पर उनकी लौह मूर्त्ति रखवा दी); १३, १२. १४; १५, ४३; १६, १८; १७, १७. २२. २५; १८, १०. २३; १९, ८. ९. १३. १७; २०, ३. ५. ९; २२, ५. १३. १५; २३, ५. १५; २४, २७; २५, ३०. ३४. ३९-४६ (गान्धारी ने इन्हें शाप दिया कि समस्त कुरुवंश के विनाश के कारण ये भी बन्धु-बान्धवों के विनाश के बाद अनाथ के समान वन में विचरण करते हुये मृत्यु को प्राप्त होंगे)। गान्धारी के शाप को सुन कर इन्होंने कहा कि विधि का ही ऐसा विधान है (११. २५, ४७-५०) । इन्होंने गान्धारी को बताया कि सारे विनाश का मूल स्वयं उसका पाप ही है (११. २६, १-६) । १२. १, १३. १६ (हरिं); ७, ३१; २७, २२ (पुण्डरीकाक्षं); २९, ८ (युधिष्ठिर को षोडशराजोपाख्यान सुना कर सान्त्वना दी); ३०, ४ (नारद और पर्वत की कथा सुनाया); ३७, २६. ३९ (रथं...शैब्यसुग्रीवयोजितम्... समास्थाय); ३९, १ (देवकीपुत्रः सर्वदर्शी जनार्दनः); ४०, १६। युधिष्ठिर ने इनकी स्तुति की (१२. ४३, २. ५. १०. १५. १६)। १२. ४५, १३; ४६, १० (वासवानुजः). २७ (कर्ता लोकानां). ३२ (केशवस्य); ४७, १४. १५ (योगेश्वरं पद्मनाभं विष्णुं जिष्णुं जगत्पतिम्). १६. ९१. ९२. ९४. १००. १०१ (१२. ४७, १६-९९ में भीष्म ने कृष्ण की विष्णु के रूप में स्तुति की है जिसके बाद कृष्ण ने भीष्म को दिव्य ज्ञान प्रदान किया)। १२. ४८, १५; ४९, २९ (वासुदेव; राम जामदग्न्य की कथा बताया); ५०, १२; ५१, २-९ (भीष्म ने इनकी स्तुति की); ५२, १. २ (लोकनाथ महाबाहो शिव नारायणाच्युत). १३. २२; ५३, ३ (विश्वकर्माणं वासुदेवं प्रजापतिम्). ९. ११. १३. १९। कृष्ण की अनुकम्पा से भीष्म धर्मोपदेश देने के योग्य हो गये (१२. ५४, ५. १२. १४-१६. १९) । १२. ५५, १४; ५६, १०; ५८, २५; ६०, ६; ८१, १३. १७. २७ (नारद और कृष्ण का संवाद); ११०, २५ (पद्मरक्ताक्षः पीतवासा महाभुजः। सुहृद्भ्राता च मित्रं च सम्बन्धी च तथाऽच्युतः). २६ (गोविन्दः पुरुषोत्तमः); २०७, ३१. ४८; २०९, १ (अव्ययम् ईश्वरम्). ३२ (= विष्णु); २१०, ९ (वासुदेव = विष्णु, नारायण). १३ (वार्ष्णेयम्); २३०, २ (केशवः). ४ (उग्रसेन और कृष्ण का संवाद); २८०, ६० (जनार्दनः). ६२ (केशवमच्युतम्); ३३४, ८ (नारायण के एक रूप का

धर्म के पुत्र के रूप में जन्म हुआ). १८; ३३९, १०४ (ये विष्णु के नवें अवतार हैं); ३४२, ६७ और बाद (इन्होंने अर्जुन से अपने नामों की व्याख्या की); ३४६, १७ (शृण्वतोः कृष्णभीष्मयोः); ३४८, ११ (शृण्वतोः कृष्णभीष्मयोः). ६५ (शृण्वतोः कृष्णभीष्मयोः). ८८ (कृष्ण एव हि लोकानां भावनो मोहनस्तथा। संहारकारकश्चैव कारणं च विशांपते ॥) । 'कृष्णस्यापि विशांपते', (१३. ९, १७) । 'देवकीपुत्रसन्निधौ', (१३. ११, २) । 'गरुडध्वजस्य', (१३. ११, ५) । १३. १४, १० (इन्होंने बदरी तीर्थ में शिव की उपासना की थी). १३ (ये प्रत्येक युग में शिव की उपासना करते हैं). १४ (हरिरच्युतः). १८ (सुरासुरगुरो देव विष्णो). ६८. ८९ (शिव से एक पुत्र प्राप्त करने की इच्छा से ये उपमन्यु के आश्रम पर आये). १३२. २७७. ३३६. ३६४. ३६५. ३७७. ४०५. ४०७. ४२८. ४२९; १५, १; १६, ७३ (यादवेश्वर); १७, १. १८ (शिव ने इन्हें पुत्रप्राप्ति का वरदान दिया). १७०; १८, ३१. ६०. ७०. ७१; ३१, २५; ३४, २० (इनका और पृथिवी का संवाद); ७०, ६. १०. २८. २९ (इन्होंने नृग का उद्धार किया जो शापवश छिपकिली बन गये थे); ७२, ३; ९७, २१ (इनके और पृथिवी के बीच संवाद) । उन बारह नामों के उल्लेख जिनसे कृष्ण (विष्णु) की उपासना की जानी चाहिये (१३. १०९) । "एक समय श्रीकृष्ण ने बारह वर्षों तक एक व्रत किया । उस समय उनके मुख से अग्नि निकला जो उनका तेज था । श्रीकृष्ण ने उपस्थित ऋषियों को बताया कि अग्नि रूप में उनका तेज ही प्रगट हुआ और ब्रह्मा का दर्शन करने के लिये उनके लोक में गया। उन्होंने आगे कहा : 'ब्रह्मा ने मेरे प्राण को यह संदेश देकर भेजा है कि साक्षात् भगवान शंकर अपने तेज के आधे भाग से मेरे पुत्र होंगे ।' तदनन्तर श्रीकृष्ण ने ऋषियों को उपदेश दिया (१३. १३९) ।" "ऋषियों के पूछने पर श्रीकृष्ण का माहात्म्य बताते हुये शिव ने कहा : सनातन पुरुष श्रीकृष्ण ब्रह्मा से भी श्रेष्ठ हैं। उनकी दस भुजायें हैं । वे महान् तेजस्वी हैं । देवद्रोहियों का नाश करने वाले श्रीवत्सभूषित हृषीकेश सम्पूर्ण देवताओं द्वारा पूजित होते हैं । ब्रह्मा उनके उदर से और मैं उनके मस्तक से प्रगट हुआ हूँ। उनके केशों से नक्षत्र और तारा, और उनकी रोमावलियों से देवता तथा असुर प्रगट हुये हैं। समस्त ऋषि और सनातन लोक उनके श्रीविग्रह से उत्पन्न हुये हैं ।...वे देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये पृथिवी पर मानव शरीर धारण करके प्रगट होंगे और समस्त राजाओं का संहार करायेंगे। देवताओंकी रक्षा और उनके कार्यसाधन में संलग्न रहनेवाले भगवान वासुदेव ब्रह्मस्वरूप हैं। वे ही ब्रह्मर्षियों को शरण देते हैं । ब्रह्मा उनके शरीर के और शिव भी उनके श्रीविग्रह के भीतर सुखपूर्वक निवास करते हैं । शार्ङ्गधनुष, सुदर्शनचक्र, और नन्दक नामक खड्ग उनके आयुध हैं । उनकी ध्वजा में गरुड़ का चिह्न सुशोभित है। वे योगमाया से सम्पन्न और हजारों नेत्रवाले हैं। परम बुद्धि से सम्पन्न भगवान् गोविन्द यहाँ देवताओं की उन्नति के लिये प्रजापति के शुभमार्ग पर स्थित हो मनु के कुल में अवतार लेंगे । मनुकुल का वंशवृक्ष इस प्रकार होगा : मनु > अङ्ग > अन्तर्धामन् > हविर्धामन् (प्रजापतिरनिन्दितः) > प्राचीनबर्हिस् > प्रचेतस् (+ नौ अन्य पुत्र) > दक्ष प्रजापति > दाक्षायणी > आदित्य > मनु > इला (= सुद्युम्न) > बुध > पुरूरवस् > आयु > नहुष > ययाति > यदु > क्रोष्टृ > वृजिनीवत् > उषङ्गु > चित्ररथ > शूर (छोटा पुत्र) > वसुदेव आनकदुन्दुभि > [कृष्ण] वासुदेव । कृष्ण के चार भुजायें होंगी। वे ब्राह्मण-प्रिय होंगे । वे मगधराज जरासन्ध के बन्दी समस्त राजाओं को बन्धन से छुड़ायेंगे। वे अपने-अपने बल-पराक्रम द्वारा अजेय तथा समस्त राजाओं के राजा होंगे। श्रीकृष्ण शूरसेन देश में अवतीर्ण होकर वहाँ से द्वारका जाकर रहेंगे और समस्त राजाओं को जीत कर पृथिवी का पालन करेंगे। जो मेरा और ब्रह्मा का दर्शन करना चाहता है उसे प्रतापी भगवान् वासुदेव का दर्शन करना चाहिये क्योंकि उनके दर्शन से हम लोगों का भी दर्शन हो गया समझना चाहिये। जिस पर कमलनयन श्रीकृष्ण प्रसन्न होंगे उस पर ब्रह्मा आदि देवताओं का समुदाय भी प्रसन्न हो जायगा। श्रीकृष्ण ने प्रजा का हित करने की इच्छा से धर्म का अनुष्ठान करने के लिये करोड़ों ऋषियों की सृष्टि की है। हम सब देवता उनके श्रीविग्रह में निवास करते हैं । अतः उनका दर्शन करने से तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, और शिव) का दर्शन हो जाता है। उनके ज्येष्ठ भ्राता हलधर और बलराम के नाम से विख्यात होंगे। पृथिवी को धारण करनेवाले शेषनाग ही बलराम के रूप में अवतीर्ण होंगे । जो विष्णु हैं वे ही पृथिवी को धारण करने वाले अनन्त हैं। जो बलराम हैं वे ही कृष्ण हैं; जो कृष्ण हैं वे ही भूमिधर बलराम हैं । (१३. १४७) ।" १३. १४८, ७. ९. १०. १६. १९. २३. २७-२९. ३४. ३५. ४३. ६३; १४९, २०. ७२. १३५ । "भीष्म ने कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुये कहा : श्रीकृष्ण ही पृथिवी, आकाश और स्वर्ग के स्रष्टा हैं । उन्हीं की नाभि से सृष्टि के आरम्भ में एक कमल उत्पन्न हुआ और उसी के भीतर ब्रह्मा स्वतः प्रगट हुये। सत्य युग में श्रीकृष्ण सम्पूर्ण धर्मरूप से विराजमान थे; त्रेता में पूर्ण ज्ञान या विवेक रूप में स्थित थे; द्वापर में बलरूप से स्थित हुये; और, कलियुग में अधर्मरूप से पृथिवी पर आयेंगे। उन्होंने ही प्राचीन काल में दैत्यों का संहार किया और वे ही दैत्य सम्राट बलि के रूप में प्रगट हुये। श्रीकृष्ण ही विश्वकर्मा, विश्वरूप, विश्वभोक्ता, विश्वविधाता और विश्वविजेता हैं । सैकड़ों गन्धर्व, अप्सरायें, तथा देवता सदा इनकी सेवा में उपस्थित रहते हैं। राक्षस भी इनसे सम्मति लिया करते हैं । स्तोता, रथन्तर, और ब्राह्मण आदि इन्हीं का स्तवन करते हैं। इन्होंने ही दैत्यों, दानवों, तथा नागों को विक्षुब्ध करके इस पृथिवी का रसातल से उद्धार किया । ये ही वायु; अश्व, अंशुमाली सूर्य, और आदि देवता हैं। ये महातेजस्वी और सर्वत्र व्याप्त रहनेवाले सर्वसिंह कृष्ण ही सम्पूर्ण जगत् को धारण करते हैं। इन्होंने ही एक बार अग्निरूप होकर खाण्डव वन को भस्म किया था। ये ही राक्षसों और नागों को जीतकर अग्नि में होम देते हैं। इन्होंने ही अर्जुन को एक श्वेत अश्व प्रदान किया था । बज्र का प्रहार करने के लिये उद्यत इन्द्र को मार डालने के लिये इन्होंने ही कितनी सरिताओं को लाँघा और इन्द्र को परास्त किया। इनके अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा नहीं है जो दुर्वासा को अपने घर में ठहरा सके। इनको ही अद्वितीय पुरातन ऋषि कहते हैं। तीनों लोक, तीनों लोकपाल, त्रिविध अग्नि, तीनों व्याहृतियाँ और सम्पूर्ण देवता ये श्रीकृष्ण ही हैं। संवत्सर, ऋतु, पक्ष, दिन-रात, कला, काष्ठा, मात्रा, मुहूर्त, लव और क्षण, इन सबको श्रीकृष्ण का ही स्वरूप समझना चाहिये । रुद्र, आदित्य, वसु, अश्विनीकुमार, साध्य, विश्वेदेव, मरुद्गण, प्रजापति, अदिति और सप्तर्षि—ये सबके सब श्रीकृष्ण से ही प्रगट हुये हैं। वासुदेव, जीवभूत, संकर्षण, प्रद्युम्न, और अनिरुद्ध भी इन्हीं को कहते हैं। तीनों लोकों में जो कुछ भी उत्तम, पवित्र, तथा शुभ या अशुभ वस्तु है वह सब अचिन्त्य भगवान् श्रीकृष्ण का ही स्वरूप है। श्रीकृष्ण से भिन्न कुछ नहीं है। श्रीकृष्ण की ऐसी ही महिमा है। बल्कि ये इससे भी अधिक प्रभावशाली हैं। ये ही परम पुरुष अविनाशी नारायण हैं। ये ही स्थावर-जङ्गम जगत् के आदि, मध्य और अन्त हैं, तथा संसार में जन्म लेने की इच्छा वाले प्राणियों की उत्पत्ति के कारण भी ये ही हैं। इन्हीं को अविकारी परमात्मा कहते हैं । (१३. १५८; कृष्ण तथा इनके अन्य नाम इस अध्याय के ५-७. १०. १२. २४. ३४. ४४. ४६, आदि श्लोकों में आते हैं) ।" "श्रीकृष्ण ने प्रद्युम्न को ब्राह्मणों की महिमा बताते हुये दुर्वासा के चरित्र का वर्णन किया और यह समस्त प्रसंग युधिष्ठिर को सुनाया। श्रीकृष्ण ने बताया कि दुर्वासा की खीर पैर के तलवे में न लगाने के कारण ही उनका तलवा अमर नहीं हो सका। अतः इसी अंग में चोट लगने से उनकी मृत्यु होगी । (१३. १५९) ।" श्रीकृष्ण ने भगवान् शङ्कर के माहात्म्य का वर्णन किया (१३. १६०-१६१) । 'देवकीनन्दने', (१३. १६२, १) । 'कृष्णेन धीमता', (१३. १६६, ७) । 'देवदेवेश सुरासुरनमस्कृत', (१३. १६७, ३७) । 'वासुदेवो हिरण्यात्मा पुरुषः सविता विराट् ।...कृष्ण वैकुण्ठ पुरुषोत्तम ॥', (१३. १६७, ३८. ३९) । 'यतः कृष्णस्ततो धर्मो, यतो धर्मस्ततो जय', (१३. १६७, ४१) । 'नरनारायणौ = कृष्ण और

अर्जुन', (१३. १६७, ४४)। इन्होंने भीष्म को प्राणत्याग की अनुमति देते हुये उन्हें बताया कि उनको वसु-लोक की प्राप्ति होगी (१३. १६७, ४५)। १३. १६८, २०. ३६. ३७। इन्होंने युधिष्ठिर को सान्त्वना दी (१४. २, १)। इन्होंने इन्द्र और वृत्र के युद्ध का प्रसंग सुनाया (१४. ११-१३)। 'कृष्णफाल्गुनौ', (१४. १४, १२)। 'कृष्णपाण्डवौ', (१४. १५, ५)। १४. १६, २. ४. ८. १७; १९, ५३; ३४, ११; ५१, ४५। अर्जुन के अनुरोध पर कृष्ण ने अनुगीता का उपदेश दिया (१४. १६-५१)। १४. ५२, १. ४. १५. ३४. ३५; ५३, ३. १९. २३ (उतङ्क ने इन्हें शाप देना चाहा)। इन्होंने उतङ्क को अपने दिव्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया (१४. ५४)। उतङ्क ने इनके दिव्य रूप को देखा (१४. ५५, ६. ७. ११. १२. २३. ३७)। १४. ५६, १; ५९, १५; ६०, ५ (द्वारका लौटते हुये इन्होंने युद्ध की घटनाओं का स्मरण किया); ६१, ५. ७. १२ (अर्जुन की मृत्यु का वर्णन किया); ६२, ४ (अभिमन्यु के अन्तिम संस्कारादि किये). १६; ६६, ७ (हस्तिनापुर आये). ११. १४. २२; ६७, ७-९. १८; ६८, ११. १९-२१. २३; ६९, १६; ७०, १. १० (जड़वत उत्पन्न परिक्षित को जीवित किया); ७१, १०. १४; ७२, १; ८६, १४ (युधिष्ठिर के अश्वमेध के समय उपस्थित हुये); ८७, १. ५. १०-१२. २३; ८८, ८. ९; ८९, १८. ३७; १५. ७, २१; १६, २१; २५, १२; २९, १९. ४२; ३१, १२। 'जरा कृष्णं महात्मानं शयानं भुवि भेत्स्यति', (१६. १, २१)। द्वारका में भयंकर उत्पात देख कर और गान्धारी के शाप का स्मरण करके इन्होंने यदुवंशियों को तीर्थयात्रा के लिये आदेश दिया (१६. २)। १६. ३, ४. १२. १६. ३५. ३७ (इन्होंने प्रभासतीर्थ में वृष्णियों का विनाश करा दिया); ४, २. ६. १०. २१. २६. २७ (एड़ी में जरस का वाण लगने से ये मृत्यु को प्राप्त होकर अपने लोक चले गये); ५, ७. १०, १२; ६, ८. २८; ७. ३८, ७४. ७६; ८, ८. १३. १५. २४. २७. ३०। 'कृष्णे दिवं गते', (१७. १, १)। 'हरिं', (१७. १, १२)। 'चक्ररत्नं तु यत्कृष्णे स्थितमासीन्महात्मनि। गतं तच्च पुनर्हस्ते कालेनैष्यतितरय ह ॥', (१७. १, ४०)। 'गोविन्दं ब्राह्मेण वपुषाऽन्वितम्', (१८. ४, २)। 'यः स नारायणो नाम देवदेवः सनातनः। तस्यांशो वासुदेवस्तु कर्मणोऽन्ते विवेश ह ॥ षोडश स्त्रीसहस्राणि वासुदेव परिग्रहः।···ताश्चैवाप्सरसो भूत्वा वासुदेवमुपाविशन् ॥', (१८. ५, २४-२६)।

तुकी० द्विव० कृष्ण, नारायण, विष्णु, तथा निम्नलिखित पर्याय :—

* **अच्युत**—देखिये वस्था०।

* **अज**—देखिये वस्था०।

* **अनन्त**—देखिये **विष्णु**।

* **अनादि**—देखिये **विष्णु**।

* **अनादिनिधन**—देखिये **विष्णु**।

* **अनादिमध्यपर्यन्त**—देखिये **विष्णु**।

* **अन्धक-वृष्णिनाथ** (अन्धकों और वृष्णियों के अधिपति) : ६. ५९, ९८।

* **अधिदेव**—देखिये वस्था०।

* **अधोक्षज**—देखिये वस्था०।

* **अमध्य**—देखिये **विष्णु**।

* **अव्यक्त**—देखिये वस्था०।

* **अव्यय**—देखिये वस्था०।

* **असित** : 'सितासितौ यदुवरौ', (९. ६०, १२)।

* **आत्मन्**—देखिये वस्था०।

* **आदिदेव**—देखिये वस्था०।

* **आहुकानाम् अधिपति** : ५. ८६, २।

* **इन्द्रानुज, इन्द्रावरज**—देखिये वस्था०।

* **ईश, ईशः पशूनां, ईशान, ईश्वर**—देखिये वस्था०।

* **कंस-केशिनिषूदन** (कंस और केशिन् का वध करनेवाले) : ३. १४, १०।

* **कंस-निषूदन** (कंस का वध करनेवाले) : ३. २६३, ८।

* **कपिल**—देखिये वस्था०।

* **किरीट-कौस्तुभधर**—देखिये वस्था०।

* **केशव** : १. १, १७६. १७७. २१५; २, ११८. ३५६; ६१, ४६; ६२, ३३; १९७, ३३; २०६, १५; २०७, ९. ५२; २२०, २९; २२१, २७. ३८. ४०. ६५; २२८, ७. १५. २५; २३४, ७; २. २, ३. १९. २३. २७. ३३; ३, १७; १५, १०; ३३, ११; ३८, १९. २९; ३९, २; ४१, ५. १५; ४२, २; ४३, १६; ४४, ६. १७. १८. २२. २५; ४५, ३३. ३८. ५९; ५३, १९; ६८, ४२; ३. १२, ४. ९. १७. २०. ४८. १२७. १३६; १८, १८; २१, १२; २२, २२; ५१, ३३. ३५; ८२, ९६. ९७. १२६ ('सरस्वत्यां महापुण्यं केशवं समुपासते); १२०, २८; १४९, ३४ (कलियुग में विष्णु काले [कृष्ण] हो जाते हैं); १८३, ६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४४; २०३, २२. ३०; २३५, २. १४; २५२, २० (केशवार्जुनौ); २६३, १८. २४. ४५; ४. २८, ७; ४५, १० (केशवेनापि संग्रामे साक्षादिन्द्रेण वा समम्); ५. ७, २१. २८; २२, ९. १०. २८. ३०; २५, १०; २८, १०. १४; ४८, २. ५१. ८१; ४९, २३; ५४, १२; ५९, ७. १४. ३१; ६२, ९; ६३, ८; ६५, १०; ६७, ७; ६८, १५; ६९, २. ६. ७. २१; ७०, २; ७२, ६३. ९३; ७५, १; ८०, ५. १२; ८२, ८. २०. २४. २८. ४४; ८३, २. १४. ३५. ४५. ४९. ५७. ६०. ६८; ८४, २०. २९; ८५, १८; ८६, १०. ११. १५; ८७, १५; ८८, ३. ८; ८९, १२; ९०, ७. १०. २८; ९१, ७. १२. ३९; ९२, १. ११; ९४, ४. २८; ९६, १. ४९; १२४, २; १२५, १. ३. ४. ७. १०. २५. २७; १२७, २. ६. २२. २५; १२९, ३८; १३०, ८. १३. २३. ३८. ३९. ४१; १३१, १. ४. १३. ३३. ३४; १३२, ५; १३७, १. २७; १४१, १. ५०. ५३. ५७; १४२, १; १४३, १. १४. १७. ४१. ५०. ५२; १४४, ८; १४७, १. १२; १५१, १. २. ३३; १५२, ५. ८. ९; १५७, २०. ३२; १५८, २४; १६०, ९३. ११७; १६१, ११. ३५; १६२, ४. ७; १६३, २, ५३; ६. १२, ५; २०, २०; २२, १०; २६, ५४; २७, १; ३४, १४; ३५, ३५; ३७, १; ४२, ७६; ४३, ३१. ९२; ५०, ९. १४; ५९, ६८. १०२. १०३; ६७, २०. २३. २५; ६८, १२. १३. १४; ८१, ३६; ९५, ८६; ९६, १३; १०६, ६७. ७२. ७३; १०७, २४; १२०, ७०; ७. १०, ३८; ११, ३०. ३८. ३९. ४०; १६, ५३; १८, १५; १९, १८; २३, ६९; २९, १८. १९. ३९; ३३, ४; ७२, ४. २५. २६. ३४. ६१; ७६, ८. १५. २६; ७८, १. २०; ८०, ११. १५. २३. २५; ८१, २४; ८४, ५; ८५, २४; ८९, २; ९१, ३१; ९२, ५७; ९३, १२. २०. ६३. ६४; ९९, १३. २०. ३९. ४०; १०२, ३७; १०३, १४. २४. ४०; १०४, १२. १८; ११०, ४५. ५९; ११८, २ (केशवफाल्गुनाभ्याम्); १३५, २३; १३६, ३९; १३७, १५; १३९, ११२; १४१, १३. २६. २७. ३२. ३५; १४२, ५. ५२; १४६, ६७. ७३. १३६; १४७, ३२. ४६. ८६; १४८, १५. ३३; १४९, ४४; १७२, २६; १७३, ५९; १८२, २९; १८३, ५. १०; १८६, १२; १९०, ९; १९१, ५०; २०१, ७. ३९. ४०. ४३. ५४. ९५ (केशवो रुद्रसंभव). ९९; ८. २, ६; ६, ७; १६, १८. १९. २७. ३०. ३२; १७, ६. २६; १८, २; ३०, १३; ३१, २२; ३५, १०. ४४; ३८, २१; ४१, ७८. ८६; ४३, ३; ४५, ३९; ४६, १६. ३९; ५३, १५. १६. १९; ५६, ९०. ९२; ५९, ५१; ६४, ६८; ६५, १३. २२; ६८, २६. २७; ६९, २. ७३. ७४; ७०, २४; ७१, २४; ७३, १; ७४, १. २. १८. ३८. ४१. ४६; ७६, ३३; ७९, १४. ६५. ९१; ८३, ४९; ८४, ४२; ८९, ४९; ९४, ५७. ६८; ९६, ८. २४. २७; ९. ५, १२; ७, ४२. ४३; ११, ३९; २८, ६७; २९, ९५; ३२, ४६; ३४, ३; ३५, १, २; ५८, २१; ५९, ९; ६०, ११. १३. २६; ६२, ८. २०; ६३, ३१. ३२. ३३. ३७. ६६. ६७. ६९. ७१. ७४ (केशिसूदनम्); १०. ८, ५४; १२, ३८; १४, ४; १६, ६. २५; १४, १; १६, ४३. ५९; १७, १८; २०, १; २३, १६. ३२. ३६; २४, १२; १२. १, ३०; २९, ५; ३१, ३. ४६; ४३, १५; ४६, ३२; ४७, १०३. १०५; ५०, १२; ५२, २८. ३०; ५४, १४. २१; ५५, १६; ५८, २९; ८१, २५; १२२, २३; २०७, २;

२१०, १४; २३०, २; २८०, ६२; ३४१, ४. ७. ४९. ५६. ५७; ३४७, ९२; १३. १४, ७५. ७९. १००. २८६; १८, ६४. ६८; ३१, ३. २२; १०९, ३; १४७, ४१; १४९, १६. ८२./१२१; १५८, ३. ६. ३६. ४३. ४५. ४६; १५९, ४७. ४८. ४९; १६६, १६; १४. २, १; १५, ८; १६, १. ६; ५२, ४५. ५०; ५३, ११. १३; ५४, १; ६१, १४; ६६, १६; ६७, ४. १६; ६८, १८. २३; ७०, २; ८७, २५; १६. १, २३; २, २४; ३, २२. २४. २८. ३६; ४, १. ४. ५. ११. १२. २२; ५, ३; ७, १४; १′. ६, ९२ ।

* **केशिनिषूदन** (केशिनि का वध करनेवाले) : ६. ४२, १ ।

* **केशिसूदन**—'केशवः केशिसूदनः', (२. ३३, ११) । 'केशवं केशिसूदनम्', (९. ६३, ७४) । १६. २, २० ।

* **केशिहन्** : १३. १४९, ८२; १४. ६८, १; ८७, ११ ।

* **केशिहन्तृ** : २. ३९, २ ।

* **कौस्तुभभूषण** : ३. २६३, १३ ।

* **क्षेत्रज्ञ**—देखिये वस्था० ।

* **गदपूर्वज** (गद के ज्येष्ठ भ्राता) : ५. २, १ ।

* **गदाग्रज** (गद के अग्रज) : ३. १८, १७; ६. ४३, ८९; १२. ४८, १६; १४. ५२, ५३. ५४; १५. ३, २२ ।

* **गरुडध्वज**—देखिये वस्था० ।

* **गोपाल** : ३. २६३, १० ।

* **गोपीजनप्रिय** : २. ६८, ४१ ।

* **गोपेन्द्र** : ६. २३, ७ ।

* **गोविन्द**—'गां विन्दता भगवता गोविन्देनामितौजसा । वराहरूपिणा', (१. २१, १२) । १. ४९, १३; १९९, १९; २२०, ३०; २२१, ४१; २२२, १७; २. २, २०. २३. २८; २०, १०. १८; २४, ३९; ३३, २१; ३८, १८; ४३, २५; ४४, ४१; ४५, ५३; ६८, ४१. ४३; ३. ८८, २६; १८९, ५५; २०३, २२. ३४; ५. ७, ८; ६८, ९; ७०, १३. १४; ८२, २६; ८३, ३३. ५१. ६५. ७१; ८९, २०. २५; ९०, ३. ५५. ७१. १०५; ९१, १. १०. १५. १६. २२; ९४, ९. ५४; १३०, ५२; १४०, २; १४१, १२. ३७; १४७, १३; ६. २१, १४; २३, १७; २५, ३२; २६, ९; ५०, २४. २६; ६६, ३२; ६७, ३; १०६, ६४. ६६; १०७, ४३; ७. १, ४७; ११, १; १९, १३; २९, १५; ३३, १२; ७२, ३; ७९, ५; ८०, ४; ८४, १९; ८७, ९; ९९, ६३; १००, १०; १०३, १३. ३५; १३३, ५; १३५, २; १४६, ५७; १४९, ८; १५६, ४७; १९०, ४५. ५२; २०१, २; ८. १०, ४९; १९, २६. २७; ३१, ५२; ५६, ८८. ८९; ५८, ९. ४३; ६९, ९. ११. १५; ७०, ५७; ७१, १; ७२, १. ४; ७४, ३. १६; ७७, १. २; ८६, १९; ८७, १०४. ११४; ९३, १८; ९६, १०. १२. ३३. ४१. ४४; ९. ३, १८; ४, ४७; १७, ३७; २४, ५३; ६०, २३; ६२, १६; ६३, १५; १०. १२, ३८; १६, ५. २१. २९; ११. १८, १८; २५, ४३; १२. २९, ४. ५; ४६, ४; ४७, ३०. ९०. ९४; ५०, १०; ५१, ६; ५२, ७; ५३, २५; ५५, २; ११०, २६; २०७, २. ४. ७. २६; २८४, ६५; ३४२, ७०; ३४५, १२ (इमां हि धरणीं पूर्वं नष्टां सागरमेखलाम् । गोविन्द उज्जहाराशु वाराहं रूपमास्थितः ॥); १३. १४, ३२. २५५. २६२. २६८. २७१. २७३; ३१, ५; १०९, ६; १४७, ९. २३; १४९, ३३. ७१; १५९, ३८; १४. २, ९. १०; १५, ११; ५३, ३; ५५, १०; ५९, १. २. १७; ६१, १२. १६; ६३, ६; ६८, १२. १७; ७०, ५; ८६, ४; ८८, ९; ८९, ३७; १६. ५, १५; ६, १४; ८, २७; १८. ४, २ ।

* **चक्रगदाधर** : २. ४४, ४२; ५. ९१, १५; १०५, ३७; ११. २५, ४२; १४. २, ११; ८८, ८; १६. ८, २८ ।

* **चक्रगदापाणि** : १. ६४, ५२ ।

* **चक्रगदाभृत्** : ५. ८३, १४ ।

* **चक्रधर** : १. १६२, १७; ७. १४०, १७ ।

* **चक्रधारिन्** : १३. १४७, ६१ ।

* **चक्रायुध** : १. १९, ६; ५. ३, १५; १५. २५, १० ।

* **जगतःप्रभुः**—देखिये वस्था० ।

* **जगत्पति**—देखिये वस्था० ।

* **जगन्नाथ**—देखिये वस्था० ।

* **जनार्दन** : १. १८७, ८. १०; २०५, २०; २१९, २०; २२०, २१. २५; २२१, ४७. ५१. ५२; २२२, १५; २२५, ३१; २२८, ३३; २. २, १. ७. ८. ३५; १३, ३६. ४३; १५, ६; १६, २. ५; २३, ३१; २४, ५३; ३७, २६. २८; ३८, १४; ४१, १७; ४३, १५; ४४, ७; ४५, २. ३०. ३९. ५३; ६८, ४२; ३. १२, ८. २४. ३४. ४४. ६७. ७२. ८१; १४, १४; २१, १४; ४९, २०; ५१, ३२; ५२, १६; ८४, २४; ११८, १८. २०, १२०, ४. ७; १८८, १८; १८९, ५२. ५८; २३५, १; २६८, १६; ४. ७२, १५. ३५; ५. १, ३. ४. २५; ७, १४. ३४; २२, ३७. ३९; २५, १; ३०, २; ४८, १००; ५५, १०; ६८, ७. ८. १०; ६९, ४. ५. ६. १७; ७०, ६ (दस्युत्रासाज्जनार्दनः); ७२, १२. १३. ५७. ७४. ७९; ७६, १४; ७८, १. ९; ८०, ९. १८; ८२, ५. १८. २०. २९; ८३, ९. ११. ३८. ५३. ५७. ५८. ६१. ६७; ८६, १. २ (आहुकानामधिपतिः). १६; ८७, १३. १४; ८८, १. २. ८. ११. १३. १५; ८९, १४. १७. १९. २३; ९०, १. १५. २६. ४३. ५′. ७२. १००; ९१, २. ९. १४. १९. २३; ९२, २. ३. ८. २०; ९४, ५. १०. १४. २५. ३५. ४०. ५२; ९६, ४८; ११७, १७; १२४, ७; १२७, १६. २३. २४; १२८, २६. ३२; १३०, ४. २१; १३१, १५. १९. ३२; १३७, २४; १४१, ३. ९. ११. १७. २७. २९. ३७. ४८. ५१. ५५; १४३, ३२. ४१. ४४; १४५, १०; १४७, १०; १५२, १; १५७, १६; १५८, ११; १६२, ५०. ५८; ६. २२, १४; २५, ३६. ३९. ४४; २७, १; ३४, १८; ३५, ५१; ५०, २; ५२, १४. १५; ५६, १८; ५९, १०४. १३१; ६७, १६. २४; ८१, ३७; १०६, ६१; १०७, ४९; १२०, ६८. ७१; १२१, ३६; ७. ११, १२. ३१; २७, १९. २०; २८, २८; ४९, १; ७२, ११; ७३, ५१; ७६, २२; ७९, २०; ८३, १. १६; ८४, ४. १०. १८; ८५, २१; ८६, २०; ९२, ३६. ५२; ९९, ४. १८. ५७; १०३, १८. २४; १०४, २४; १२६, ३६; १४६, ६१. १०४; १४७, ३१. ४१; १७२, २३. ३०; १८०, ८. १०; १८१, १; १८२, १२. १४. ३२; १८३, २९. ३३. ३९. ५६; १९५, २२. २९; २०२, १५३; ८. ९, ६६; १०, ४०; १६, २४; १८, १०. १२; २०, ३; ४२, ३७; ४५, ३४; ५३, ७; ५६, ८३; ५८, ५; ६९, १३; ७०, १; ७४, ५; ७६, ३२. ३३; ७९, ८. १३; ८७, १०८. ११६; ८८, २२; ८९, ४९. ६२; ९४, ६४; ९६, ४६; ९. १९, २६; २४, १७. २७. ३६. ३७. ४५; २७, १६; ३०, ४६; ३३, २१; ३४, १६; ५८, २; ६२, २८; ६३, ५. ३६. ६७. ७५; १०. ८, १२४; १३, १८; ११. १२, १६; १६, २५. ३८. ५८; १८, १२. २१; २२, ९. १२; २४, २. २१; २५, ५. ६. ३६. ३९; १२. २९, ३; ३९, १; ४६, २४; ४७, ९८; ५०, १; ५२, २७; ५३, १२; ५४, २०. २२. २३; २८०, ६०; ३३५, २१; ३३९, ३३; ३४२, ११८; ३४३, २१; १३. १४, ७१. १०५; १७ ८०; ७०, ५. २५. २९; १३९, ४५; १४०, १३; १४८, ८. ४७. ५९; १४९, २७. १३९; १५०, ११ (सहस्रनामाय जनार्दनाय); १५९, ४१. ४२; १६७, १०; १४. १५, ९. ३५; १६, २८; ५१, ४५; ५२, १७. २३. ३३. ५५. ५७. ५८; ५४, १; ५५, १. ३. २५; ६६, २१. २९; ६७, ८; ६८, १२. १९; ७०, ५. ८. ११; ८७, ४; १५. ३, २३; १६. १, २०. २९; २, ११. २०; ३, ६. २४. ३१; ४, ७; ८, २३ ।

* **जिष्णु**—देखिये वस्था० ।

* **तार्क्ष्यध्वज** (जिनके ध्वज पर तार्क्ष्य, अर्थात् गरुड़, अंकित है) : ८. ४०, १४ ।

* **तार्क्ष्यलक्षण** : १२. ४३, ८ ।

* **त्रिदशेश, त्रिदशेश्वर, त्रिदशेश्वरनाथ**—देखिये वस्था० ।

* **त्रिभुवनेश्वर**—देखिये वस्था० ।

* **त्रियुग** : ५. ६९, ३. ४ (त्रियुगं मधुसूदनम्); १२. ४३, ६; १३. १४८, ५६ (त्रियुगौ पुण्डरीकाक्षौ वासुदेवधनञ्जयौ) ।

* त्रैलोक्यनाथ : ३. ४९, २० ।

* दशार्हनाथ : ८. १७, २० ।

* दशार्हभर्तृ : ३. १८३, २३ ।

* दशार्हसिंह : ३. १८३, २२ ।

* दशार्हाधिपति : ३. २३, १ ।

* दामोदर : १. १८९, १९; २. ४३, १७; ३. ४९, २२; ५. २१, २ । 'देवानां स्वप्रकाशत्वाद्दमाद्दामोदरो विभुः', (५. ७०, ८) । १२. ४३, ७ । 'दमात्सिद्धिं पराप्सन्तो मां जनाः कामयन्ति ह । दिवं चोर्वीं च मध्यं च तस्माद्दामोदरो ह्यहम् ॥', (१२. ३४१, ४४) । १३. १०९, १४; १४९, ५३ (विष्णु सहस्रनाम); १६८, ३० ।

* दाशार्ह : १. २०७, ७; २२१, ५२; २२५, ३४; २२८, ४५; २. २४, ३९; ३३, २०. २१; ३७, ५; ३. १२, ३५; २२, ४९; १८३, १०; ४. २, ११; ५. ७२, १. ४८; ७६, ३; ८१, २; ८२, १. ६. ९. १६. १९; ८३, ५०. ६६; ८४, ३. २७; ८५, ५. ८. १८; ८६, ५. १४; ८७, ६. १६; ८९, १३. २३. २७; ९१, ६. २०. २३. ३८; ९४, ५. ७. ११. १६. २१. २४. ३६. ४१. ४२. ५१; १२८, १. २२. ३३; १३७, ७. २७; १३८, १८; १४७, ४; १५१, ३४. ३६; १५३, ८. १०; १६२, ५; ६. ७९, ७; ७. ११, ४१; २८, ६; २९, २; ८५, २५; ८८, २९; ९८, ३६; ९९, ६. ३५; १००, २४. ३२; १०२, ३०; ११०, ८८; ११४, ३१. ५०; ११७, ६; १५६, ४८; १७३, ४४; १८२, २६; १९९, ३७; ८. ३१, ५५. ६२; ५६, २२; ५८, ४; ५९, ६७; ६९, ७२; ७३, ६९; ८६, २; ९६, १. २४; ९. २४, ५१. ५४; २७, २७; १०. १२, १४; १३, ७. ८; १४, १; १६, २३; १७, १; ११. १२, ३; २०, १; २५, ५०; १२. ४०, १२. १५; ४३, १; ५३, ७; १४. ६२, ६; ६६, २०. २३; ६९, १७; ७१, २१; १६. ३, ४७ ।

* दाशार्हकुलवर्धन : १२. ५२, ९ ।

* दाशार्हनन्दन : १. २२२, २७ ।

* दाशार्हवीर : ५. ९२, २६ ।

* देवकीतनय : १३. १३९, १३ ।

* देवकीनन्दन : ३. २६३, ८ ।

* देवकीपुत्र : १. १९०, ३३; ३. २९, ४६; १८३, ७. ५५; १९९, १८; ५. ६९, ७; १२५, १६; १५४, २४; ६. ११८, ३४; १२१, ४२; ७. २९, ४. ५; १४७, ३०; १८३, ९; ८. ३२, ६३; ३५, २८; ४०, ९; ९. २४, १५; २७, २; १०. १६, १८; ११. १३, १२; १२. ३९, १; ५४, १२; १३. ११, २; १५८, ३१ ।

* देवकीमातृ : ७. १८, ५; ८. ६६, १; १४. १६, ५ ।

* देवकीसुत : २. २, ३०; ३३, १९; ४. ५३, १८; ६४, २१; ७. २, १७; ८३, १; १८३, ३. ७; १३. १४७, ५० ।

* देवदेव, देवदेवेश, देवदेवेश्वर—देखिये वस्था० ।

* पद्मनाभ—देखिये वस्था० ।

* परमात्मन्, परमेश्वर, परमेष्ठिन्—देखिये वस्था० ।

* पिनाकशूलहस्त—देखिये वस्था० ।

* पीतवासस् : १. ६४, ५२; ३. १८८, १८. १२९; १८९, ५६; ५. ९४, ५२; १२. ११०, २५ ।

* पुण्डरीकाक्ष, पुण्डरीकेक्षण—देखिये वस्था० ।

* पुरुष, पुरुषश्रेष्ठ, पुरुषसत्तम, पुरुषोत्तम, पुष्कराक्ष, पुष्करेक्षण—देखिये वस्था० ।

* प्रजापति, प्रजापतिपति, प्रभु—देखिये वस्था० ।

* भूतपति, भूतात्मन्, भूतानाम् ईश्वरः, भूतेश—देखिये वस्था० ।

* भोजराजन्यवर्धन : १४. ८७, ७ ।

* मधुघातिन्, मधुनिहन्, मधुप्रवीर, मधुसूदन, मधु-(कैटभ) हन्—देखिये वस्था० ।

* महाबाहु—'बाहुभ्यां रोदसी बिभ्रन्महाबाहुरिति स्मृतः', (५. ७०, ९) । १२. ५२, २ ।

* महावराह—देखिये वस्था० ।

* महेन्द्रावरज, महेश्वर—देखिये वस्था० ।

* माधव, माधवर्षभ—देखिये वस्था० ।

* यदुकुलनन्दन, यदुकुलश्रेष्ठ, यदुकुलोद्वह, यदुनन्दन, यदुपुङ्गव, यदुप्रवीर, यदुवंशविवर्धन, यदुवर, यदुवीर, यदुवीरमुख्य, यदुशार्दूल, यदुश्रेष्ठ, यदुसुखावन, यदूत्तम, यदूद्वह—देखिये वस्था० ।

* यादव, यादवनन्दन, यादवशार्दूल, यादवश्रेष्ठ, यादवाग्र्य, यादवेश्वर—देखिये वस्था० ।

* योगिन्, योगीश, योगीश्वर, योगेश्वर—देखिये वस्था० ।

* रमानाथ : २. ६८, ४२ ।

* रामानुज : ५. ७५, २ ।

* लोककर्तृ, लोककृत, लोकनाथ, लोकभावन, लोकयोनि, लोकसाक्षिन्—देखिये वस्था० ।

* वज्रपाणि : ६. ४८, ३६ ।

* वराह—देखिये वस्था० ।

* वसुदेवपुत्र : ६. ५९, ८८ ।

* वसुदेवसुत : ३. १४, ८; ६. १२२, २५ ।

* वसुदेवात्मज : ८. ७९, ६६ ।

* वामन, वाराह—देखिये वस्था० ।

* वार्ष्णेय—देखिये वस्था० ।

* वासवानन्तरज, वासवानुज, वासवावरज—देखिये वस्था० ।

* वासुदेव : १. १, १०० (वासुदेवस्य माहात्म्यं). १३१. १३६. १७३. १७८. १८०. १९४. २१०. २११. २५६; २, १२५. १५२. १९०. २१८. २२७. २३०. २४६. ३५९; ६१, ४४. ४६; ६३, १२१; ६७, १५१. १५३. १५५; ९५, ७८ (भगिनीं वासुदेवस्य सुभद्रां). ८३. ८४; १८६, १७; १८९, २०; १९१, २०. २२. २३; २०६, ११; २०७, ६. ८; २१८, ६. १०; २१९, १३. १८. २१; २२०, २. २५; २२१, १. १२. ६३. ७०; २२२, १६. ३०. ३३; २२३, १; २२४, ९; २२५, ५; २२७, ११; २२८, १८. २५. ४२; २३४, १३ १८; २. १, १. ९; ३, १६; १७, १; १९, २२; २०, १; २१; १; २४, ४१; ३१, ७. ६४; ३२, १. १३. २०; ३६, ३१. ३२; ३७, ७. ३०; ३९, १५; ४५, १. १६. ५१. ६३; ४७, २७; ४८, ४. १५; ४९, २७; ५२, ३०; ६९, १०; ८१, ३२; ३. १०, २६; १२, ४. ५. २८. १३६; १३, १; १४, ८; १५, १. २; १७, १; १८, १; १९, १. ७; २०, १; २१, १; २२, १; ४९, २३; ५१, १०. ३६. ४२; ५२, ७. ११; ८०, २८; ८६, ३. ५; १०७, ३२; १२०, १६. २३; १४१, १९. २०; २३४, ८; २३५, १७; २६३, ९. १९. ३५; ४. २, १९; ६, ४; ४५, १९; ५०, १९; ७२, ८. १३. २५; ५. ५, १; ७, २९. ३८; ८, ४२. ४६; २०, १९; २२, २४. २९. ३४. ३८; २५, १. १३. १४; २७, १९; २८, १०. ११. १३; २९, १; ४८, ३. ८. ६४. ६८. ६९. ७१. ७३ ८२. ८७. ९४; ४९, १९; ५०, ४६; ५१, ३७; ५५, ८. ४०; ५९, १. १८; ६१, २५; ६२, ११; ६५, १०; ६६, २. ३. ११; ६७, १०; ६८, १. २; ७०, २. ३; ७१, १; ७४, २२; ७६, १; ८३, २४. ५९; ८८, १०; ८९, ७. १०; ९०, ७३. ९१; ९१, ३४; ९४, ३४; १०५, ३६; १२५, १४. २६; १२७, १; १३१, २०; १३२, २; १३७, ४; १३८, ३. ६; १३९, १०; १४०, ६; १४७, ६. १४; १४८, १. १७; १४९, १; १५०, १; १५१, ६७. ६९; १५३, १. ५. १०. १२; १५४, १. ३. १६. २३. २६; १५७, ६. २३. २४. २८. ३१; १५८, ११. १८. २५. २७; १६०, ७. ९. ५२. ५३. ८०. १०८. ११७. ११९; १६१, २६. ३५. ३७; १६२, ४१. ४२; १६३, २०. २८. ५२; १६५, २. २७. १६९, १९, २६; १७०, २; १७१, २०; १७२, ८. १५; १९३, २२; १९४, ८. १०; १९६, १८; ६. १, १६. १७; २२, १५; २३, ३; ३१, १९; ३४, ३७; ३५, ५०; ४२, ७४; ४३, १५. २१. ८९. ९७; ४९, ९; ५०, ३१. ३२; ५२, १६. ५१; ५५, ३५; ५९, ३५. ४७. ५३. ६०. ६१. ७८. ८८; ६५, ४७. ६९. ७२; ६६, ८. १३. १८. २०. २३.

२६. २८. २९. ३०. ३८. ४१; ६७, १. २; ७३, ६; ८१, ९; ८४, ४५; ९५, ४; ९६, २; ९८, १५; १०१, ३३; १०४, २; १०६, ३६. ४४. ५१. ५३. ५६. ६०; १०७, १२. ५६. ९२. ९६; ११०, ३२; ११२, ३१. ३३; ११४, २९; १२१, ३१; १२२, २९; ७. २, ३१; ७, ३०; १०, ३५. ४८; ११, १. ३२; १९, १; २७, ११; २८, ९; २९, १०. २५; ३५, १३; ३८, १६; ४८, ४०; ७२, ७. ९, ५४. ६६. ८६; ७५, १. २०. २३; ७७, १. ११. १२; ७८, १५; ८०, १०. ४३. ५३. ६५; ८१, २. ४; ८३, ३; ८४, ३१. ३४; ८५, २३; ९१, २५. २८. २९. ३०; ९२, १३. २०. ६४; ९३, १७. ६८; ९४, ३४; ९९, ३; १००, २. ९; १०१, १; १०२, १. २९; १०३, २. ४५; १०४, ११. १३. २३; ११०, ३७. १००. १०१; १११, ९. १०; ११२, २४; ११४, ५३; १२६, २४. ३६; १२८, ३३. ४१. ५०; १४२, ४८. ५६. ६३. ६६. ६९. ७१; १४३, १३. ४८; १४५, २. ४९. ८६; १४६, १३१. १३२. १३३; १४७, ७८; १४९, ५; १६२, ४६. ५२; १६७, ३६; १७१, ४५; १७३, ३५. ४५; १७६, ९; १७८, १; १८०, २. ११; १८१, २; १८२, ६. ८. ३५; १८३, ५४; १९२, ५८; १९७, १७; १९८, ४९. ६७; १९९, २७. ४३; २००, १०. १५. २८. ८०; २०१, ६८; ८. ९, ७१; १६, ३०. ३२; १७, ५. १५; १९, २३; २०, ५; २१, ६; २७, १८; ३२, ७. ६०. ६२; ३५, २६; ३७, २२; ४०, १०. १९; ४१, ८१. ८३; ४२, १. ३४; ४६, ४३. ६०. ७१; ५६, ८२; ५८, २. ५०; ५९, ५०. ६६; ६४, ३. ८. ५८. ६०; ६७, ९; ६९, ३९. ७६; ७०, ४८; ७१, ३; ७२, १७; ७३, ६९; ७९, ६. ४८. ६६. ६७; ८७, ९०. १००; ८९, ४२. ७६; ९०, ११६; ९१, १. १५. १७. ३३; ९६, १६; ९. १, ३६; २, २७. ६४; ५, २०; ७, १५. २७; १४, २७; २७, ३८; ३१, ३. ६. १६; ३२, १४; ३३, १. २२; ३५, १५; ५५, २९; ५८, १. ३; ६०, २०. ३२. ३३. ३९. ४०; ६१, २५. २७. ३९. ५८. ७०; ६२, १८. ३७. ३८. ४३; ६३, १४. ६५. ७६. ७७; ६५, ३६; १०. ४, ३१; ९, ४९; १६, २८; ११. १२, २२; १४, १९; १५, ३२; १६, १०; १८, १६; २४, २०; २५. ४७; २६, ६; १२. २, ७; ५, १०. १२; १६, २९; २९, ८; ३०, ४४; ३७, २१; ३९, २; ४०, २; ४५, ३. १२; ४६, ११. २४; ४७, १६; ४९, १. २९. ८८; ५१, १. १०; ५२, १४; ५३, ३. १२. २१. २२; ५४, १५. २५; ५५, ११; ५६, ९; ५८, २५; ८१, २. ३. २०; २१०, ९ (वासुदेवः परमिदं विश्वस्य ब्रह्मणो मुखम्); २३०, ४; ३३८, ४ (१४७ वाँ नाम); ३३९, २५. ३२. ३३. ४०. १२६; ३४१, ४१; ३४३; १९; ३४४, १८. १९; ३४७; ९४ (सर्वभूतकृतावासः); १३. १४, १७. २२. २६. ३६८; १५, ९; १७, १; १८, ३०. ६१; ३१, २ (नारदस्य च संवादं वासुदेवस्य चोभयोः); ३४, २० (संवादं वासुदेवस्य पृथ्व्याश्च भरतर्षभ). २१; ७०, ७. २५. ३०; ९७, २ (वासुदेवस्य संवादं पृथिव्याश्चैव). ३. ४. २४; १३९, ३०; १४७, १. ३२. ३८; १४८, ५४. ५६ (त्रियुगौ पुण्डरीकाक्षौ वासुदेवधनञ्जयौ); १४९, ४९ (विष्णु के सहस्रनामों में से एक). ८७. ८९. १२५. १३०. १३१. १३४. १३६; १५८, ३९; १५९, २; १६०, ३; १६१, १; १६७, २१. ३६. ३८. ४१. ४६; १६८, ५; १४. ११, १. ४; १२, १; १३, १; १५, १. २. १२; १६, ९; १७, १; १९, ५४; २०, १; ३५, २. १३; ५१, ४३. ४६; ५२, ५. ५१; ५४, २; ६०, ६; ६१, १. ३३; ६२, २. ६. १२; ६६, १. १२. १५. २८; ६९, २४; ७१, १. ९. १८. २३; ८९, १८; १५. ३, १८; १६, २१; १७, १८; ३६, ३४; १६. १, ८. १०. १२. १९; २, २३; ४, १७; ५, ६ (षोडश स्त्रीसहस्राणि वासुदेवपरिग्रहः); ७, ३१. ३८; ८, २९ (पुराणर्षिर्वासुदेवश्चतुर्भुजः); १७. १, १०। 'यः स नारायणो नाम देवदेवः सनातनः। तस्यांशो वासुदेवस्तु कर्मणोऽन्ते विवेश ह ॥ षोडश स्त्रीसहस्राणि वासुदेवपरिग्रहः', (१८. ५, २४. २५)। 'वासुदेवमुपाविशन्', (१८. ५, २६)।

* विधु—देखिये वस्था० ।

* विरञ्चि, विराज्—देखिये वस्था० ।

* विश्व, विश्वकर्मन्, विश्वकृत्, विश्वक्सेन, विश्वयोनि, विश्वरूप, विश्वसम्भव, विश्वसृज्, विश्वात्मन्, विश्वावसु, विश्वावास, विश्वेश, विश्वेश्वर—देखिये वस्था० ।

* वृष, वृषदर्भ, वृषभ, वृषाकपि—देखिये वस्था० ।

* वृष्णिकुलोद्वह, वृष्णिनन्दन, वृष्णिपति, वृष्णिपुङ्गव, वृष्णिप्रवर, वृष्णिप्रवीर, वृष्णिवीर, वृष्णिशार्दूल, वृष्णिश्रेष्ठ, वृष्णिसत्तम, वृष्णिसिंह, वृष्ण्यन्धकपति, वृष्ण्यन्धकोत्तम—देखिये वस्था० ।

* वेधस्—देखिये वस्था० ।

* वैकुण्ठ—देखिये वस्था० ।

* व्रजनाथ : २. ६८, ४२ ।

* शङ्खचक्रगदाधर : ३. १८, २७; १८९, ४०; २७२, ७३; ६. ६६, १४; ९८, १४; ७. ८३, १७; १३. १६७, ३७; १४. ५५, २३; १६. ८, १९ ।

* शङ्खचक्रगदापाणि : ८. ३५, ११ ।

* शङ्खचक्रगदाहस्त : ५. ४९, २३ ।

* शङ्खचक्रासिपाणि : ८. ७९, ६६ ।

* शम्भु—देखिये वस्था० ।

* शार्ङ्गगदापाणि : ८. ४६, ६० ।

* शार्ङ्गगदासिपाणि

* शार्ङ्गचक्रगदाधर : २. ४५, ३९; १६. ३, ४६ ।

* शार्ङ्गक्रचासिपाणि : १२. ४३, १६ ।

* शार्ङ्गधनुर्धर : ६. ६५, ५० ।

* शार्ङ्गधन्वन् : ३. ३, ४८; १२०, ६; १९१, ३४; ५. ७५, २; १३७, ३२; ६. ६५, ४०; ७. १०, ७५; ८. ८, १६; १०. १३, ७. १०; १२. २०७, ६; १३. १४९, १२०; १४. ५३, ६; १६. १, १०; ८, १४ ।

* शार्ङ्गिण् : ७. ८३, १९; १७. १, १३ ।

* शूलभृत्, शूलिन्—देखिये वस्था० ।

* शैब्य-सुग्रीववाहन—देखिये वस्था० ।

* शौरि (शूर के वंशज) : १. २२१, २८; २. २, २८; २०, १४; २२, २५. ३४; ३८, १२; ४५, ३९; ३. १८३, ३; २३५, १८; ५. २५, २; ७५, २; ८३, २१; ९०, ९०; ९१, १, १; ९४, १५. २२. ३१. ५१; १२५, २३; १३०, ४३. ५१; १३१. ४. २७. ३१. ३९; १४७, २; ६. ५२, १७; ७. ९२, ५३; १००, १७; १०१, ३३; १५८, ४६. ४८; ८. ३१, ५८; ४२, २; ६४, २; ११. २५, ३८; १२. २९, ६; ४४, १५; १४. १५, ९; ५३, १० ।

* सङ्कर्षणानुज (संकर्षण, अर्थात् बलराम, के अनुज) : २. ७९, २३; ५. १५७. १६ ।

* सत्य—'सत्यात्सत्यं तु गोविन्दस्तस्तस्मात्सत्योऽपि नामतः', (५. ७०, १३) । १२. ४३, ९; ४७, २६ ।

* सनातन—देखिये वस्था० ।

* सर्व, सर्वज्ञ—देखिये वस्था० ।

* सर्वदशार्हभर्तृ : ६. ५९, ८३ ।

* सर्वनागरिपुध्वज : १३. १४७, १५ ।

* सर्वभूतपितामह, सर्वभूतात्मन्, सर्वभूतादि, सर्वभूतेश, सर्वभूतेश्वर—देखिये वस्था० ।

* सर्वयादवनन्दन : १०. १३, १ ।

* सर्वविद्, सर्वलोककृत्, सर्वलोकगुरु, सर्वलोकपितामह, सर्वलोकेश्वर, सर्वात्मन्—देखिये वस्था ।

* सात्वत, सात्वतप्रवर, सात्वतमुख्य, सात्वतश्रेष्ठ, सात्वतीपुत्र—देखिये वस्था ।

* सुपर्णकेतु : ३. १७६, १५ ।

* सुरराज, सुरासुरगुरु, सुरोत्तम—देखिये वस्था० ।

* हंस—देखिये वस्था० ।

* हयशिरस्—देखिये वस्था० ।

* हरि—देखिये विष्णु ।

*हलधरानुज : २. २२, ३६ ।

* हिरण्यगर्भ—देखिये वस्था० ।

* हृषीकेश : १. १, २४; ६१, ४३; ६४, ५३; २२१, ४४; २२५, ३१; २. २, ४; २२, २५; २४, ३६; ३३, २५; ३८, २२; ३. ४७, १०; १८९, ३५; २०१, २४; २०३, २४; ५. ७, २७; ५२, ११; ५९, ३०; ६९, ६. १२. १६; ७०, ९ (हर्षात् सुखात् सुखैश्वर्याद्धृषीकेशत्वमश्नुते). ५३; ८४, २६; ८८, १८; ८९, ४. ८; १२४, ५; १३०, ५; १४१, १८. २३; १४३, ३६. ३७; १४७, ७; १५८, ९; १६२, २३; ६. २५, १५. २१. २४; २६, ९. १०; ४२, १; ५१, २५; ६६, १९; ६७, २१; १०६, ७०; ७. ११, २० (युधिपञ्चजनं हत्वा दैत्यं पातालवासिनम् । पाञ्चजन्यं हृषीकेशो दिव्यं शङ्खमवाप्तवान्). २६. ३६; १९, २; ५१, ९; ७६, २०. २६; ८२, ३३; ८४, ११; ८९, १; ९९, १०; १००, १२; १०१, ३६; १०२, २४; १४३, १७; १४८, २४; १४९, १६. १८. २०; १७७, ४७; १८३, ५६; ८. २१, ७. ८; ६५, १३. १५; ७०, ५६; ८६, १८. २२; ९. ४, ४८; ५, ९; १९, २९; १०. १३, ६; १६, १; ११. १७, ५; २५, २३. २५; १२. २९, १; ४३, ७; ४५, २ (हृषीकेशस्त्रैलोक्यस्य परो गुरुः); ४७, ८६; ५१, २; ५४, १२; ५६, १; २०७, २; ३३६, ४४; १३. १०९, १२; १३९, ४९; १४७, ३. ८. ६०; १४९, १९ (विष्णुसहस्रनाम); १५८, २७; १४. ६८, ८; ८७, २. ७; १५. ३१, १२; १६. १, २४; २, १८; ३, २९; ६, २५ ।

[टिप्पणीः—उक्त पर्यायों के अतिरिक्त भी महाभारत में श्रीकृष्ण की अनेक अन्य उपाधियाँ प्रायः सर्वत्र मिलती हैं। विशेषतः निम्न स्थलों को देखिये : १. १, २२-२४; ६३, ९९-१०२; २. ३३, १०-१२; ६८, ४१-४३; ३. १२, १०. ५०-६०; ८८, २४-२७; १८८, १७-२०; १८९, ५२-५७; २६३, ८-१५; ५. ७०; ६. ६५, ४७-७५; ६६, ६-४१; ६७, २-२५; ६८, २-८; ७. १४९, ७-२४; १२. ४३, ४-१६; ४७, २३-१०७; ५१, २-९; ५२, २-१३; ३४१, १ और बाद; ३४२, ३७ और बाद; १३. १४७, २ और बाद; १५८, ५-४६; १४. ५२, ८-१७; ५४, १ और बाद; ५५, ८-९ ।]

२. कृष्ण=व्यास : १. १, ६०; २, ३४८; ५५, ७ (सात्यवत्याः सुतः); ६०, १३ (पितामहाय कृष्णाय); ६२, ४१. ४३; १०५, १५; ११०, ३; १९६, १. ३; २. ४६, ६; ७८, १४; ७. १९२, ७३; ९. ६३, २९. ३६; ११. १६, ३; १२. ३२३, २५; ३३१, ६२; १३. ९, १७ (देखिये नीलकण्ठी); १८, ४२; १२०, ५. ६; १४. १४, २; ६३, ५; ८९, १६; १८. ५, ३६ ।

३. कृष्ण, एक नाग का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित रहता था (२. ९, ८) ।

४. कृष्ण = अर्जुन पाण्डव : २. ५०, ३०; ४. ४४, ९ (अर्जुन के दस नामों की गणना के अन्तर्गत). ११. २२ (कृष्ण इत्येव दशमं नाम चक्रे पिता मम । कृष्णावदातस्य ततः प्रियत्वाद्बालकस्य वै ॥); १४. ७७, ८ ।

५. कृष्ण, कुशद्वीप के पर्वत का नाम है जो 'गौर' नामक मानशिल पर्वत से पश्चिमभाग में स्थित एवं नारायण को विशेष प्रिय है (६. १२, ४) ।

६. कृष्ण, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१) ।

७. कृष्ण, एक महर्षि का नाम है जो बाण-शय्या पर पड़े भीष्म के चारों ओर खड़े ऋषियों में एक थे (१२. ४७, १२) ।

८. कृष्ण = शिव : १२. २८४, ३५ (सहस्रनाम); १३. १७, ४५ (सहस्रनाम); १४. ८, २४ (महादेवाय कृष्णाय) ।

१. कृष्ण (द्वि० °णौ) = कृष्ण वासुदेव तथा अर्जुन पाण्डव : १. २२२, २८. ३३; २२७, २१; २२८, ३; २. २०, १४. २४; ३. ८६, ४; २६८, १४; ५. २२, ३१; ४९, २४; ५२, १२; ५९, ४; १२६, २; ६. ५९, ६३; ७३, १२; ८१, ४०. ४१; ७. १९, १९; २९, ३; ३०, १५; ३८, १६; ३९, २४; ८१, ७; १००, ३७; १०१, ६. १२. १७. १८. २५. २९. ४०; १०२, ३३; १०३, २५. ४९; १११, ३२; १२६, ४९; १२७, १; १३९, १०५; १४३, ३७; १४७, ४३. ७६; १४९, ४; १५८, ३४; १७०, ६४; २००, १२; २०१, ५१; ८. १६, २१; १७, ४; ३८, २१; ३९, ५. ३०; ४०, १८. १९. ५६; ४१, ७९; ४२, ३; ५६, १२७; ६३, २२; ६४, ४. २९; ६५, १८; ७९, ४१. ५१ ६६. ६७. ७०; ८७, ६७. ७८. ८२; ८९, ३४. ८२; ९२, ११; ९३, ५३; ९६, ५२; ९. ३, ५२; ४, २६; ५, ११; ७, २; १४, ६; १९, ५८; ३४, ९ ।

२. (कृष्ण द्वि० °णौ)—'भीमार्जुनौ कृष्णौ स्वस्रीयौ च यमावुभौ' =नकुल और सहदेव (?), (५. ८, २८) ।

कृष्णकर्णी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २४) ।

कृष्णकेश, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१) ।

कृष्णगङ्गा, एक नदी का नाम है (१३. १०२, ४६) ।

कृष्णगति = अग्नि (९. २४, ६३) ।

कृष्णच्छविसमा = दुर्गा (उमा) : ४. ६, ९ ।

कृष्णद्वैपायन = व्यास (देखिये वस्था०) ।

कृष्णनेत्र = शिव : १४. ८, २१ ।

कृष्णपिङ्गल = शिव (सहस्र नामों में से एक)

कृष्णपिङ्गला = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ४ ।

कृष्णरक्तेक्षण = शिव (सहस्र नामों में से एक । ।

कृष्णवर्ण = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

१. कृष्णवर्त्मन् = अग्नि, जिनका आस्तीक ने जनमेजय के सर्पसत्र में अग्नि की स्तुति करते हुये उच्चारण किया था (१. ५५, १०) ।

२. कृष्णवर्त्मन् = कृष्ण : १२. ४३, ११ ।

कृष्णवेणा, दक्षिण भारत की एक नदी का नाम है (२. ९, २०) । 'देवहृदेरण्ये कृष्णवेणाजलोद्भवे', (३. ८५, ३७) । मार्कण्डेय ने इसे नारायण के उदर में देखा (३. १८८, १०४) । उन नदियों में से एक है जो अग्नि की मातायें हैं (३. २२२, २५) । ६. ९, २८; १३. १६५, २२ ।

कृष्णवेणी, कृष्णवेण्वा—देखिये कृष्णवेणा ।

कृष्णसारथि = अर्जुन : १. ६२, १०; ५. १४२, ६; ६, ९५, ७९; १०९, १६; ११६, ८०; ११७, १९; ७. १०४, २९; १०५, ३४; ११९, ११; १२८, ४८; १५२, २१; ८. ३४, १२३; ४६, ४१. ७०; ५३, ३८; ७९, १८. १९; ९३, ३३; ९. २५, २७ ।

१. कृष्णा = द्रौपदी : १. १, १२७. १५०. १६९; २, १०९. १५५; ६१, ३०; ६२, ७; ६३, ११०; १६५, ८. १०; १६७, ४८. ५३ (कृष्णेत्येवाब्रुवन्कृष्णां कृष्णाऽभूत्सा हि वर्णतः); १६९, १५; १८४, १८; १८५, ८. ३३; १८५, २४; १८७, ३. ११. २०; १८८, २७; १९०, ४२; १९१, २. १२; १९२, ९. १२. १४. १६; १९३, १. ४. ६. ८. ९. १०. २५; १९४, १. ३. ९; १९५, ४. १०. १८. २२. २६; १९६, १२; १९७, ५१; १९८, ३. ४. ५. ६. ११; १९९, ३; २००, २०; २०१, ९. १६; २०२, ७. ८; २०६, ४. २४. २६; २०७, ११; २०८, ३. ४. ५. १३. १७; २१३, २. १३; २२१, १८. २३. ८५; २. २, ७; २४, ५४; ६५, ३२; ६६, ४; ६७, २१. २४. २७. ३१. ३३. ३५. ४३. ४४. ४६; ६८, २४. २८. ३०. ३१. ८८. ८९; ७१, ९. २६; ७२, २; ७३, १८; ७६, १२; ७९, १. २१. ३२; ८०, ७; ८१, १७. २०. २७. २९; ३. १, १०; ११, १६. ५५. ६८; १२, १२२. १३१; २३, १; २४, २५; २५, ६; २७, १. २; २९, १४. २९. ३५. ४१; ३१, ३. ५. २३. ३०. ३२. ४०. ४२; ३५, २८; ३७, २४. ३६; ४९, २. १४; ५१, ३७; ५२, २. ३; ७९, ८; ८१, १; ८६, १७; ९१, ९; ९३, २४; ९९, ३७; ११८, ६. १६; १२०, २४; १२५, २२; १३९, १८. १९; १४०, ३. १०. २०. २१. २९; १४३, १४; १४४, १२. १९. २२; १४५, ६. ८. ३९. ४५. ५४; १५५, ९. १२. १७; १५६, १; १५७, ३. ४४; १५८, ३५; १५९, २; १६०, १९; १६१, २. ४८; १६५, ५; १६७, १; १७५, २५; १८३, १. १५. २०. २२–२६. २८; २३३, ६०; २३५, ४. ९. १७; २३६, ६. ११. १३; २३७, २१; २३८, ८; २४६, १०; २६२, २; २६३, १. १७. २०–२३; २६६, ५; २६७, १. ५. ९. २१. २२; २६८, १०. ११. २५; २६९, १५. १७; २७०, ३; २७१, ३२. ४७. ५१; २७२, ७; २७३,

१. २; २९२, १०; २९३, २; ३१०, ४२; ३११, १. २. ४; ३१२, २; ३१५, २९; ४. ३, १५. २२; ४, ८; ५, ५; ९, २. २०. ३६; १३, ११. १३; १४, ११; १५, ४. २१; १६, १३. ३४. ३६. ३९. ४६; १७, १. २. ६. २०; २०, २७; २१, ४. ४९; २२, १८. ४२. ७६. ८३. ८९; २३, ४. ९. ११. १५. ३०; २४, ११. १८; २५, १६; ३६, १२; ४४, ४; ४९, ७; ५०, १२. २२; ७१, ४. १७; ७२, ३१; ५. ८, ३०. ५०; २३, ५; २९, ३९. ४१. ४२. ४६; ३१, १३. १६; ५०, २४; ५९, ४. ७. २२; ८२, १. ४२. ४४. ४९; ९०, ४९. ५७. ८१. ८७. ९८; ९५, ५९; १३७, १२. १९. २२. २३; १६०, ७१. ८२. ८८. ९०. ११२; १६१, ७. ३०; ६. ९१, २७; १०७, २२; ७. ४०, ९; १०२, १४. २१; १३२, १४. १७; १३७, ४४. ४५; १५१, १५; १९८, ४०; १९९, ३२; ८. १. ७; ९, ६०. ६२; ६६, ३८; ७३, ८४. ८६; ७४, २२; ८७, ११७; ८९, ३९; ९१, ७–९; ९६, २१; ९. ५, १०. १७. २०. २१; ६१, ४५; १०. ११, ४. ६. ९. १६. २१; १६, ३७; ११. २२, १२; १२. १६, १८; ३७, ४१; ३८, ६; ४०, १४; १४. १२, ८; १४, ३; ५२, २८; ८७, ११; ८८, २; १५. १५, १०; २४, १९; २५, ९; २९, ४२; १७. १, २४; २, ५. १२; ३, ५. १४; १८. ३, १८. ३९।

२. कृष्णा = दुर्गा (उमा) : ४. ६, ७. ९; ६. २३, ९।

३. कृष्णा, एक नदी का नाम है (६. ९, ३३)।

४. कृष्णा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २२)।

कृष्णाजिनोत्तरीय = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कृष्णात्रेय, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जिन्होंने तपोवल द्वारा चिकित्साशास्त्र का सबसे पहले ज्ञान प्राप्त किया (१२. २१०, २१)।

कृष्णानुभौतिक, एक महर्षि का नाम है जो उत्तरायण के आरम्भ में शरशय्याशायी भीष्म के दर्शन के लिये उपस्थित हुये थे (१२. ४७, ११)।

कृष्णौजा, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७५)।

केकय, एक जनपद, उसके निवासियों, तथा उन पाँच केकय राजकुमारों का द्योतक है जो पाण्डव-पक्ष में सम्मिलित हुये—शेष केकय कौरव पक्ष में सम्मिलित हुये थे। अयःशिरा, अश्वशिरा, वीर्यवान अयःशङ्कु, गगनमूर्धा, और वेगवान्—ये पाँच पराक्रमी महादैत्य केकय देश के प्रधान-प्रधान महात्मा राजाओं के रूप में उत्पन्न हुये (१. ६७, १०. ११)। केकय राजकुमार भी युधिष्ठिर की सेवा में उपस्थित रहते थे (२. ४, ३१)। इन लोगों ने युधिष्ठिर को धन समर्पित किया (२. ५२, १४)। धृतराष्ट्र-पुत्रों की निन्दा करते हुये केकयराजकुमार पाण्डवों से मिलने के लिये वन में आये (३. १२, २)। इन राजकुमारों ने युधिष्ठिर से विदा लेकर अपने नगर की ओर प्रस्थान किया (३. २२, ५१)। इन राजकुमारों ने पाण्डवों से भेंट की (३. ५१, १७)। ये भी पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में आमन्त्रित थे (३. ५१, २६)। श्रीकृष्ण ने इनके पराक्रम की चर्चा की (३. १२०, २६)। द्रौपदी ने कहा कि केकयराजकुमार भी उसकी रक्षा करेंगे। (३. २६८, १६)। द्रुपदराज ने पाण्डवों को इन्हें आमन्त्रित करने का परामर्श दिया (५. ४, ८)। 'केकयाश्च नरव्याघ्राः सोदर्याः पञ्च पार्थिवा', (५. १९, २५)। पाँच केकय राजकुमार, जो भाई थे, पाण्डवों की ओर से युद्ध कर रहे थे (५. २२. २०)। दुर्योधन की सेना में केकयों की उपस्थिति (५. ३०, २३)। 'पाञ्चालाः केकया मत्स्याः प्रतिनन्दन्ति पाण्डवम्', (५. ५०, ७)। 'राजपुत्रा भ्रातरः पञ्च केकयाः', (५. ५०, ३८)। ये पाण्डवों की विजय चाहते थे (५. ५३, २)। ये पाण्डव-पक्ष में मिल गये थे (५. ५४, १७)। ५. ५५, ३। 'केकया भ्रातरः पञ्च सर्वे लोकहितकध्वजाः', (५. ५७, ९)। 'राजपुत्रा भ्रातरः पञ्च केकयाः', (५. ५७, १७)। ५. ६१, २५; ८३, ३२। 'केकया भ्रातरस्तथा', (५. १४१, २६)। ये पाण्डवों के सहायक थे (५. १४४, ३)। ये भी युधिष्ठिर के साथ-साथ चल रहे थे (५. १५१, ६३)। ये पाण्डवों के साथ रणक्षेत्र में उपस्थित हुये (५. १५३, २)। ५. १६०, ११; १६२, १४। 'केकयाः पञ्च राजेन्द्र भ्रातरो दृढविक्रमाः', (५. १७१, १४)। ५. १९५, ५; ६. ९, ४८ (भारतवर्ष की एक जाति); १८, १३; २०, १२; ४५, ७६ (केकया भ्रातरः पञ्च); ४७, ३०। भीष्म ने इनका वध किया (६. ४९, ४२)। इन्होंने विराट का अनुसरण किया (६. ५०, ५६)। इन्होंने भीष्म का अनुसरण किया (६. ५२, २१)। 'केकयाश्च महारथाः', (६. ५६, १७)। ६. ६१, १२. १६; ७२, ८; ७४, ३५ (केकयाश्च धनुर्वेदविशारदाः); ७५, ९ (केकया भ्रातरः पञ्च). १९. ३३; ७७, ५८; ७८ (केकयान पञ्च मारिष); ७९, २१. ५४. ५६; ८९, १८; ९५, ४०. ७२. ८५; ९७, ३९; ९९, १४ (केकया भ्रातरश्चैव); १०३, १३ (केकया भ्रातरः पञ्च); १०८, ९ (केकया भ्रातरः पञ्च); ११७, ३४; ११८, ४०; ११९, ८२; ७. ८, ४. २४; ९, २८; १४, ८३; १६, ११. ३२; २०, ७; २१, २३. २९. ६१. ६५। द्रोणाचार्य ने इन लोगों को पराजित किया (७. २२, ७)। इन लोगों ने भीमसेन का अनुसरण किया (७. २२, २३)। ये मत्स्यराज विराट के पीछे-पीछे चल रहे थे (७. २३, १४)। ७. २३, १७; २४, ७; २५, २१. ४२; ३५, ५. २२; ४०, १६. २०; ४२, ३; ४३, ८. १८; ४९, ८; ७८, १३; ८३, ५; ८५, १७. ४०; ९१, ३९; ९५, १३; ९८, ५४; १०६, ७ (केकयानां महारथः); ११०, ३१. ३२ (केकयांश्च नराधिप); १११, ४५ (केकया भ्रातरः पञ्च); ११४, १००; १२५, २३ (केकयानां महारथे); १५३, २४; १५४, १०; १५५, १४. ४४; १५६, ५१ (केकयाश्च महारथाः); १५७, ४७; १५८, ३; १५९, ९३; १६०, १२; १६६, ६३; १८४, ७; १८६, ४३; १९३, २६. ४१; १९५, ४०; ८. ३, १९; ५, २८. ४७; ८, १८; ९, ३३; १२, १९; १३, २२. २५. ३५. ३७. ३८; ३०, २७; ४६, २१; ४७, १७; ४८, २१; ४९, ९. ३४; ५४, १६; ५६, १. ४. ७०; ६२, ३२; ६३, १; ६८, ११; ७३, २९. ३५; ९. २१, ३४; ५५, ४५। जब जयद्रथ ने द्रौपदी का अपहरण किया तो केकयों ने भी जयद्रथ का अनुसरण किया (११. २२, १२)। इन पाँच भ्राताओं का द्रोणाचार्य ने वध किया (११. २५, १५)। इनका अग्नि-संस्कार (११. २६, ३६)। 'केकयानामधिपतिम्', (१२. ७७, ७)। १२. ७७, ३०। शतयूप केकयों के शासक थे (१५. १९, १०)। देखिये **कैकेय।**

केकयराजपुत्र : ८. ७, १३। बहु० ३. ५१, ४३।

केकयाधिपति = सहस्रचित्य : १५. २०, ६।

१. केतु, एक दानव (ग्रह) का नाम है : 'राहुकेतू यथा', (८. ८७, ९२)।

२. केतु = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

केतु (बहु०) एक प्रकार के ऋषियों का नाम है जिन्होंने स्वाध्याय द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति की थी (१२. २६, ७)।

१. केतुमत्, एक असुर का नाम है जो दनु का पुत्र था (१. ६५, २४)। यही अमितौजा नामक पञ्चाल क्षत्रिय वीर के रूप में उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ११)।

२. केतुमत् , विभिन्न राजाओं के लिये प्रयुक्त हुआ है। युधिष्ठिर की सभा में विराजमान होनेवाले एक राजा (२. ४, २७. ३२)। कलिङ्गराज श्रुतायुध के मित्र और कौरवपक्षीय योद्धा के रूप में इनका उल्लेख (६. १७, ३२. ३५. ३७; ५१, २०)। इन्होंने कलिङ्गराज श्रुतायुध का अनुसरण किया (६. ५४, ५. ६)। भीमसेन ने इनका वध किया (६. ५४, ७७)। 'योऽवधीत् केतुमान् वीरो राजपुत्रं दुरासदम्। अपरान्तगिरिद्वारे द्रोणात् कस्तं न्यवारयत् ॥', (७. १०, ४४)।

३. केतुमत् , द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण के एक प्रासाद का नाम जिसमें उनकी पत्नी सुदत्ता निवास करती थीं (२. ३८, २९, के बाद गीप्रे० सं० में दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ८१५)।

केतुमाल, जम्बूद्वीप के नौ वर्षों में से एक नाम है जो देवोपम पुरुषों और सुन्दरी स्त्रियों की निवासभूमि था—इसे अर्जुन ने विजित किया (२. २८, ६ के बाद गीप्रे० सं० में दाक्षिणात्य पाठ)। "यह द्वीप या वर्ष मेरु पर्वत के पश्चिम भाग में है और यही जम्बूखण्ड प्रदेश है। यहाँ के निवासियों की आयु १०,००० वर्ष होती है। यहाँ के पुरुषों का वर्ण सुनहला

होता है और स्त्रियाँ अप्सराओं के समान सुन्दरी होती हैं। इन्हें कभी रोग-शोक नहीं होता (६. ६, १३. ३१-३३)।"

केतुमाला, पश्चिम में जम्बूमार्ग के अन्त में स्थित एक तीर्थ का नाम है (३. ८९, १५)।

केतुमालिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

केतुवर्मा, त्रिगर्तराज सूर्यवर्मा के अनुज का नाम है जिसका अर्जुन ने वध कर दिया (१४. ७४, १४-१६)।

केतुशृङ्ग, सञ्जय द्वारा उल्लिखित एक प्राचीन नरेश का नाम है जो काल के अधीन हो चुके थे (१. १, २३७)।

१. केदार, कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है (३. ८३, ७२)।

२. केदार (रः) कपिलस्य—देखिये **कपिलस्य केदार (रः)।**

३. केदार (रः) कपिष्ठलस्य—देखिये **कपिष्ठलस्य केदार (रः)।**

४. केदार (रः) मतङ्गस्य—देखिये **मतङ्ग।**

१. केरल (बहु० °लाः), एक जाति के लोगों का नाम है जिनकी वसिष्ठ की गाय के मुख-फेन से सृष्टि हुई (१. १७५, ३८)।

२. केरल, दक्षिण भारत के एक जनपद का नाम है। यहाँ के निवासियों को भी 'केरल' कहा गया है, जिन्हें सहदेव ने पराजित किया (२. ३१, ६९. ७१; ६. ९, ५८)। केरल नरेश ने राजा युधिष्ठिर को चन्दन, अगुरु, मोती, वैदूर्य तथा चित्रक नामक रत्न भेंट किये (२. ५१, ४ के बाद गीप्रे० सं० में दाक्षिणात्य पाठ)। कर्ण ने दिग्विजय के समय यहाँ के राजा को विजित किया और दुर्योधन के लिये 'करद' बनाया (३. २५४, १५-१६)। युधिष्ठिर की सेना में इनकी उपस्थिति (८. १२, १५)। ८. ४४, ४३।

केलिकिल = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

केवला, एक नगरी का नाम है जिसे कर्ण ने अपनी दिग्विजय के समय विजित किया था (३. २५४, १०-११)।

केशयन्त्री, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९.४६,१७)।

केशव = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

केशवनन्दन = प्रद्युम्न : ३. १८, ७; १९, ५।

केशवपूर्वज = बलराम : ९. ३४, १९; ५१, ५३; ५५, ४८।

केशवाग्रज = बलराम : ९. ३५, ८९।

१. केशिन्, एक असुर का नाम है जो दनु का पुत्र था (१. ६५, २३)। इसने विष्णु के साथ तेरह दिनों तक युद्ध किया था (३. १३४, २०)। जब इसने देवसेना नामक कन्या का केश पकड़कर खींचना आरम्भ किया तब वहाँ इन्द्र ने उपस्थित होकर इससे युद्ध करके देवसेना को मुक्त कराया (३. २२३, ८. ११-१४)। "अपना परिचय देते हुये देवसेना ने कहा : 'मैं प्रजापति की पुत्री हूँ। मेरी बहन का नाम दैत्यसेना है जिसका केशी ने पहले ही हरण कर लिया था। जब मैं अपनी बहन के साथ मानस पर्वत पर क्रीड़ा-विहार के लिये आया करती थी तो यह केशी हम लोगों को अपने साथ चलने के लिये कहता था। दैत्यसेना इसे चाहती थी परन्तु मेरा इस पर प्रेम नहीं था।' (३. २२४, १-३)।"

२. केशिन्, एक दैत्य का नाम है जो कंस का अनुगामी था। "इसके शरीर में दससहस्र हाथियों का बल था। यह घोड़े की आकृति में रहता था। कंस की प्रेरणा से यह श्रीकृष्ण का वध करने आया परन्तु स्वयं ही मारा गया (गीप्रे० सं० में २. ३८, पृ० ८०१, कालम १)। श्रीकृष्ण ने धर्मपूर्वक इसका वध किया था ऐसा उन्होंने शपथपूर्वक घोषित किया है (१४. ६९, २३)। श्रीकृष्ण द्वारा केशिवध की चर्चा (१६. ६, १०)।

केशिनिसूदन, केशिसूदन = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

१. केशिनी, एक अप्सरा का नाम है जो कश्यप द्वारा प्राधा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी (१. ६५, ५०)।

२. केशिनी, महाराज अजमीढ़ की तृतीय पत्नी का नाम है जिसके गर्भ से अजमीढ़ ने तीन पुत्र-जह्नु, व्रजन, रूपिण—उत्पन्न किये (१. ९४, ३२)।

३. केशिनी, दमयन्ती की दासी का नाम है। बाहुक के साथ इसका संवाद (३. ७४)। दमयन्ती के आदेश से इसने बाहुक की परीक्षा ली (३. ७५, १. २. ४. ६. ८. १९. २२. २४. २६)। इसने दमयन्ती को राजा नल के सम्बन्ध में सूचना दी (३. ७६, १-२)।

४. केशिनी, उमा (पार्वती) की अनुगामिनी, एक सहचरी का नाम है (३. २३१, ४८)।

५. केशिनी, एक सुन्दरी कन्या का नाम है जिसके सम्बन्ध में विरोचन और सुधन्वा में संवाद हुआ था (५. ३५, ५-१०. १२. १३)।

केशिहन्, केशिहन्तृ = कृष्ण (विष्णु)—देखिये वस्था०।

केसर, शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम है जहाँ की वायु केसर की सुगन्ध से भीनी रहती है (६. ११, २३)।

केसरिन्, एक वानरराज का नाम है जिनके क्षेत्रभूत अञ्जना देवी के गर्भ से वायु द्वारा हनुमान् का जन्म हुआ था (३. १४७, २७)। इनके पुत्र, हनुमान्, अर्जुन की ध्वजा पर स्थित थे (८. ६८, ३०)।

१. कैकेय (एक या एकाधिक केकय राजाओं के लिये प्रयुक्त) : ३. ३३, ८९; ६. १६, १५ (कैकेयाः); १९, २१; ४७, ३० (केकयाः). ६७; ४८, १०१; ५२, ८; ५६, ४; ६९, ११; ७७, ६५; ७. १०, ५६; १५८, ३; १६०, १९; १८६, ३४; ८. ६, १८. १९; ५६, ६०; ८२, ४; १२. ७७, २९।

२. ककेय = बृहत्क्षत्र : ६. ४५, ५२; ७. २३, २३; १०७, १. ३; १२५, १३. १६. १७. १९।

३. ककेय = विन्द : ८. १३, २७. ३२. ३३। द्विव० °यौ = विन्द और अनुविन्द : ८. १३, ६. ११।

कैकेयपुत्र = विशोक : ८. ८२, ३।

कैकेयराज : १२. ७७, ६।

१. कैकेयी (केकयराज की पुत्री) = सुनन्दा, जो सर्वभौम की पत्नी और जयत्सेन की माता थी (१. ९५, १६)।

२. ककेयी (केकयराज की पुत्री), अजमीढ़ की पत्नी के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. ९५, ३७)।

३. कैकेयी = कुमारी, जो भीमसेन पारिक्षित की पत्नी और प्रतिश्रवा की माता थी (१. ९५, ४३)

४. कैकेयी, महाराज दशरथ की पत्नी का नाम है जो भरत की माता हुई (३. २७४, ८)। इसने महाराज दशरथ को इस बात के लिये विवश किया कि वे राम को वनवास और भरत को राज्य दें, यद्यपि भरत ने साम्राज्य लेना अस्वीकार करके उसे श्रीराम के लिये सुरक्षित रक्खा (३. २७७, १६. १७. ३१. ३६)।

५. कैकेयी = सुदेष्णा, जो विराट की पत्नी थी (४. ९, ६)। ४. १५, २; १९, ६-७; २१, २०. २८।

६. कैकेयी = सुमना : १३. १२३, २।

कैकेयीनन्दिवर्धन = उत्तरा : ४. ६८, ६८।

कैटभ, एक दानव का नाम है। मधु और कैटभ नामक दानवों ने ब्रह्मा का वध करने का प्रयास किया (३. १२, ३९)। 'मधुकैटभयोः पुत्रो धुन्धुर्नाम सुदारुणः', (३. २०२, १८)। 'मधुश्च कैटभश्चैव'; (३. २०३, १७)। 'मधुकैटभयोः', (३. २०३, २०)। 'मधुकैटभावूचतुः', (३. २०३, २८)। 'मधुकैटभयो', (३. २०३, ३५)। "जब विष्णु प्रलय के उपरान्त एकार्णव जल में शेषनाग पर शयन कर रहे थे तो उनकी नाभि से एक कमल निकला और उसी में ब्रह्मा प्रगट हुये। उस समय मधु और कैटभ नामक दो भयंकर असुरों ने ब्रह्मा का वध करने की इच्छा की। जब ये असुर ब्रह्मा को बार-बार डराने लगे तब ब्रह्मा ने अपनी कमल-नाल को हिलाया जिससे विष्णु कि निद्रा भंग हो गई और उन्होंने इन असुरों को देखा। इन असुरों ने विष्णु को वर देने की इच्छा की जिस पर विष्णु ने यह वर माँगा कि वही इन दोनों का वध करने वाले हों। इन असुरों ने भी विष्णु से निवेदन किया कि वे इनका खुले आकाश में ही वध करें। उन्होंने यह भी कहा कि वे दोनों विष्णु के ही पुत्र हों। तदनन्तर विष्णु ने अपनी

दोनों जाँघों को अनावृत देखकर मधु और कैटभ के मस्तकों को उन्हीं पर रखकर चक्र से काट दिया (३. २०३, १२-३५)।" 'मधुकैटभयोः पुत्रो धुन्धुः', (३. २०४, ९)। 'धुन्धुर्नाम···मधुकैटभयोः सुतः', (३. २०४, ४२)। 'एकार्णवे च स्वपता निहतौ मधुकैटभौ', (५. १३०, ५०)। 'हत्वा पुरा विष्णुरसुरौ मधुकैटभौ', (९. ४९, २१)। 'मधुकैटभयोर्युधि', (९. ५५, ३०)। "सृष्टि के आदि में ब्रह्मा जिस कमल से प्रगट हुये उसी के पत्ते पर पड़ी दो बूँदों से मधु और कैटभ नामक दानवों की उत्पत्ति हुई। इन दो दैत्यों ने ब्रह्मा के पास से वेदों का हरण कर लिया। ब्रह्मा के निवेदन पर विष्णु ने दोनों दानवों का वध करके वेदों का उद्धार किया (१२. ३४७, २६. ६०. ७०)।" देखिये असुर, दानव (द्वि०) भी।

२. कैटभ, एक दानव का नाम है जो प्राचीन समय में इस पृथिवी का अधिपति था, किन्तु इसे छोड़कर चल बसा (१२. २२७, ५३)।

कैटभनाशिनी = दुर्गा (उमा) : (६. २३, ९)।

१. कैतव, शकुनिपुत्र उलूक का नाम है (१. १८६, २२)।

२. कैतव (बहु० ॰वाः), एक भारतीय जनपद तथा वहाँ के निवासियों के लिये प्रयुक्त हुआ है (६. १८, १३)।

१. कैतव्य—देखिये उलूक।

२. कैतव्य (बहु० ॰व्याः), एक जाति के लोगों का नाम है जो दुर्योधन की सेवा में सम्मिलित हुये (८. ७, १९)।

१. कैरात, वि० (कैरातों का)—'पर्व कैरातसंज्ञितम्', (१. २, ५०)। 'कैरातं वेषमास्थाय', (३. ३९, २; ४९, ५)। 'भूतं महत् कैरातसंस्थितम्', (३. १६७, २०)। 'कैराते द्वन्द्वयुद्धे', (५. १९४, १२)। 'कैरातं स्थानमुत्तमम्', (१३. १९, ५४)।

२. कैरात (बहु० ॰ताः), एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लेकर उपस्थित हुये (२. ५२, १३)।

कैरातक (वि०)—'कैरातकीनामयुतं दासीनाम्', (२. ५२, ११)। 'कैरातकं मधु', (७. १२७, १४)। देखिये **कैलातक** भी।

कैरातपर्वन्, महाभारत के ३३वें अवान्तर पर्व का नाम है जिसमें अर्जुन की इन्द्रलोक की यात्रा से सम्बद्ध घटनाओं का वर्णन है। "वैशम्पायन ने यह बताया कि काम्यकवन से अर्जुन किस प्रकार घोर वन्य प्रदेश (वर्णन) को पार करके उत्तर दिशा की ओर चले। उस घोर वन में अनेक सिद्ध और चारण निवास करते थे। उस वन को पार करके अर्जुन हिमवत् पर्वत (वर्णन) की ओर अग्रसर हुये। हिमवत् पर्वत के रमणीय प्रदेश में थोड़े समय तक विचरण करने के पश्चात् अर्जुन ने कठोर तपस्या (वर्णन) आरम्भ की। जब अर्जुन चार महीने तक घोर तपस्या करते रहे तब उनके विषय में निवेदन करने के उद्देश्य से वहाँ रहनेवाले सभी महर्षि पिनाकधारी शिव के पास आये। शिव ने महर्षियों के भय का निवारण करके उन्हें विदा किया और बताया कि वे (शिव) अर्जुन के मनोरथ को जानते हैं (३. ३८)।" "तदनन्तर शिव ने किरात का वेष धारण किया और अपने साथ देवी उमा तथा अनेक प्रकार के वेप धारण किये हुये भूतगणों को लेकर उस स्थान पर आये जहाँ मूक नामक दावन सूअर का रूप धारण करके अर्जुन को मार डालने का उपाय सोच रहा था। उस सूअर को देख कर अर्जुन और किरातरूपधारी शिव ने एक साथ ही उस पर बाण से प्रहार किया। दोनों बाणों के आघात से सूअररूपी दानव फिर अपने भयानक राक्षस रूप को प्रकट करते हुये मृत्यु को प्राप्त हुआ। उस समय किरातवेशधारी शिव और अर्जुन में सूअर को मारने की प्राथमिकता के सम्बन्ध में विवाद छिड़ गया। शीघ्र ही दोनों के बीच युद्ध होने लगा। दोनों में पहले बाण-युद्ध हुआ और फिर क्रमशः खड्ग, शूल, वृक्ष, शिलाओं का प्रयोग किया गया। तदनन्तर दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा। शिव के अंगों से अवरुद्ध हो अर्जुन अपने पीड़ित अवयवों के साथ मिट्टी के लोंदे से दिखाई पड़ने लगे। उनकी श्वास-क्रिया भी वन्द हो गई जिससे वे चेष्टाहीन हो भूमि पर गिर पड़े। थोड़ी देर के बाद जब अर्जुन की मूर्च्छा दूर हुई तो उन्होंने मिट्टी की वेदी बना कर उस पर पार्थिव शिव की स्थापना और पुष्पमालाओं से उनका पूजन किया। उस समय अर्जुन ने पार्थिव शिव पर जो माला चढ़ाई थी वह उन्हें किरात के मस्तक पर दिखाई पड़ी। यह देख कर अर्जुन सारा रहस्य समझ गये और किरात वेशधारी शिव के चरणों पर गिर पड़े। उनके ऊपर प्रसन्न हो शिव ने कहा : 'तुम्हारा तेज और पराक्रम आज मेरे समान सिद्ध हुआ है। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें दिव्य चक्षु प्रदान करता हूँ। तुम युद्ध में अपने शत्रुओं पर, वे चाहे सम्पूर्ण देवता ही क्यों न हो, विजय पाओगे। मैं तुम्हें अपना पाशुपत नामक अस्त्र भी दूँगा जिसकी गति कोई रोक नहीं सकता।' तदनन्तर अर्जुन ने देवी उमा (पार्वती) सहित शिव का दर्शन और उनके चरणों में प्रणाम करके 'महादेवस्तव' से उन्हें प्रसन्न किया। शिव ने अर्जुन को सान्त्वना देते हुये उन्हें अपने हृदय से लगा लिया। (३. ३९)।" "शिव ने अर्जुन को 'नर' नामक सुप्रसिद्ध ऋषि बताते हुये उनका गाण्डीव धनुष और अक्षय तुणीर आदि लौटा दिया। शिव ने अर्जुन को वर माँगने के लिये भी कहा जिस पर अर्जुन ने उनसे पाशुपतास्त्र, जिसका नाम 'ब्रह्मशिरस्' भी है, माँगा। शिव ने इस शर्त पर वह अस्त्र देना स्वीकार किया कि उसका प्रयोग किसी पुरुष या अल्पशक्ति योद्धा पर नहीं किया जायगा क्योंकि ऐसा करने पर सम्पूर्ण जगत् का नाश हो जायगा। तदनन्तर पवित्र हो कर अर्जुन ने शिव से उस अस्त्र को ग्रहण किया। उस समय वन, वृक्ष, समुद्र, वनस्थली, ग्राम, नगर, तथा आकारों सहित समस्त पृथिवी काँप उठी। वह भयंकर अस्त्र उस समय मूर्तिमान होकर अर्जुन के पार्श्वभाग में खड़ा हो गया। शिव के स्पर्श से अर्जुन के शरीर में जो कुछ भी अशुभ था वह नष्ट हो गया। उस समय शिव ने अर्जुन से कहा : 'तुम स्वर्गलोक को जाओ।' ऐसा कह कर पार्वती सहित शिव आकाशमार्ग से चले गये (३. ४०)।" "अर्जुन इस बात पर आश्चर्य करने लगे कि उन्हें साक्षात् शिव के दर्शन हुये। उसी समय वैदूर्यमणि के समान अङ्गकान्ति वाले, जल के स्वामी, वरुणदेव, नागों, नद और नदियों के देवताओं, दैत्यों, तथा साध्य देवताओं के साथ वहाँ उपस्थित हुये। तदनन्तर स्वर्ण के समान शरीरवाले भगवान् कुबेर महातेजस्वी विमान द्वारा वहाँ आये। उनके साथ बहुत से यक्ष भी थे। इसी प्रकार हाथ में दण्ड लिये हुये सम्पूर्ण भूतों का विनाश करनेवाले धर्मराज भी वहाँ उपस्थित हुये। उनके साथ मानव शरीरधारी विश्वभावन पितृगण भी थे। उस समय धर्मराज अपने विमान से तीनों लोकों, गुह्यकों, गन्धर्वों, तथा नागों को प्रकाशित कर रहे थे। तत्पश्चात् इन्द्राणी के साथ ऐरावत पर बैठ कर इन्द्र वहाँ आये। अनेक देवता उनके साथ थे और ऋषियों और गन्धर्वों का समुदाय उनकी स्तुति कर रहा था। इस प्रकार उपस्थित सभी लोकपालों ने वहाँ हिमवत् पर्वत पर अपना-अपना आसन ग्रहण किया। तदनन्तर यमराज ने दक्षिण दिशा में स्थित हो अर्जुन से कहा : 'हम सब लोकपाल यहाँ उपस्थित हैं। हम तुम्हें दिव्य दृष्टि देते हैं जिससे तुम हमारा दर्शन कर सको। तुम भीष्म, द्रोणाचार्य, निवातकवच आदि पर विजय प्राप्त करोगे।' तदनन्तर यम ने अपना दण्डास्त्र अर्जुन को समर्पित किया। इसके पश्चात् वरुण ने पश्चिम दिशा में खड़े हो कर अर्जुन को सम्बोधित कर अपने वारुण-पाश उन्हें समर्पित किये। इसके बाद कुबेर ने कहा : 'अर्जुन ! पूर्वकल्प में मेरे साथ तुमने सदा तप के द्वारा परिश्रम उठाया है। आज मैं तुम्हें अपना अन्तर्धानास्त्र प्रदान करता हूँ जिससे तुम मानवेतर प्राणियों तक को जीत सकोगे।' अन्त में इन्द्र ने अर्जुन से कहा : 'मैं शीघ्र ही अपना रथ, उसके सारथि, मातलि, के साथ तुम्हारे पास भेजूँगा जिस पर बैठ कर तुम स्वर्ग लोक आना। वहाँ मैं तुम्हें दिव्यास्त्र प्रदान करूँगा।' तत्पश्चात् अर्जुन ने वहाँ उपस्थित लोकपालों का विधिवत् पूजन कर उन्हें विदा किया। उस समय देवताओं से दिव्यास्त्र प्राप्त करके अर्जुन को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और वे अपने आप को कृतार्थ तथा पूर्ण मनोरथ मानने लगे (३. ४१)।"

कैलातक (वि०)—'कैलातकं मधु', (७. ११२, ६२)। देखिये **कैरातक** भी।

कैलास, एक पर्वत का नाम है जो कुबेर और शिव का निवास स्थान है। 'कैलासारोहणं', (१. २, १८२)। 'कैलासमिव गुह्यकाः', (१. १४६, १२)। 'कैलासशिखरप्रख्यैः', (१. १८५, १९)। 'कैलासशिखरोपमः', (१. २२०, २०)। राजा श्वेतकि ने शिव को प्रसन्न करने के लिये इसी पर्वत पर तपस्या की थी (१. २२३, ३६)। पूर्वकाल में दैत्यों ने जब कैलास पर्वत से उत्तर स्थित मैनाक पर्वत पर यज्ञ करना चाहा तो उस समय मयासुर ने एक रमणीय मणिमय भाण्ड तैयार किया था (२. ३, २)। 'उत्तरेण कैलासान्मैनाकं पर्वतं प्रति', (२. ३, ९)। 'कैलासनिलयस्य', (२. ६, ११)। 'कैलासशिखरोपमा', (२. १०, २)। उन पर्वतों में से एक जो कुबेर की सभा में उपस्थित रहता था (२. १०, ३१)। 'कैलासशिखरप्रख्यान्', (२. ३४, २०)। 'कैलासकूटप्रतिमं', (२. ४६, १५)। 'कैलासं पर्वतं प्रति', (२. ४६, १७)। व्यास यहाँ आये (२. ४६, १८)। 'उत्तरादपि कैलासादोषधीः', (२. ५२, ६)। 'कैलासभवने', (३. १२, ४३)। 'कैलासनिलयो धनाध्यक्षः', (३. ४१, ३३)। 'कैलासमिव श्रृङ्गिणम्', (३. ४२, ४०)। सगर ने यहाँ आकर शिव को प्रसन्न करने के लिये तपस्या की (३. १०६, १०)। भगीरथ ने यहाँ आकर शिव को प्रसन्न करने के लिये तपस्या की (३. १०८, २६)। यह शिव का निवास-स्थान है (३. १०९, १७)। "इस पर्वत की ऊँचाई छः योजन है। यहाँ देवता आया करते हैं। इसी के निकट विशालापुरी (बदरिकाश्रम तीर्थ) है। यहीं कुबेर का भवन है जहाँ अनेक यक्ष, राक्षस, किन्नर, नाग, सुपर्ण, तथा गन्धर्व निवास करते हैं (३. १३९, ११. १२)।" 'कैलासं पर्वतं प्रति', (३. १४०, ३)। 'कैलासशिखरोपमम्', (३. १४२, १५)। 'कैलासं पर्वतोत्तमम्', (३. १४५, १८)। 'कैलासशिखराभ्याशे', (३. १५३, १)। भीमसेन के प्रहारों से पीड़ित हो क्रोधवश नामक राक्षसों ने भाग कर इसी पर्वत-शिखर पर शरण ली (३. १५४, २२)। वृषपर्वा के आश्रम की ओर जाते समय पाण्डवों ने इसका दर्शन किया (३. १५८, १७)। "इस कैलास के शिखर को लाँघ जाने पर परम सिद्ध देवर्षियों की गति प्रकाशित होती है। चपलतावश इससे आगे के मार्ग पर जानेवाले मनुष्य को राक्षसगण लोहे के शूलों आदि से मारते हैं (३. १५९, २४. २५)।" अरिष्टषेण के आश्रम से जाते समय पाण्डवों ने इसका दर्शन किया (३. १७७, २. ६)। 'कैलासे हिमवत्पृष्ठे मन्दरे श्वेतपर्वते', (५. ११, १२)। 'कैलासशिखरोपमात्', (५. ९४, ३१)। इसी पर्वत पर कुबेर का राक्षसों, यक्षों, और गन्धर्वों के अधिपति के रूप में अभिषेक हुआ था (५. १११, ११)। 'कैलासमित्युक्तं स्थानमैलविलस्य', (५. १११, २०)। 'कैलासशिखरोपमः', (५. १५७, १९)। 'कैलासमन्दराभ्यां तु तथा हिमवता विभो॥ सहस्रशो महाशब्दः शिखराणि पतन्ति च।', (६. ३, ३७. ३८)। गुह्यकों के साथ कुबेर यहाँ निवास करते थे (६. ६, ४१)। 'अस्त्युत्तरेण कैलासे मैनाकं पर्वतं प्रति', (६. ६, ४२)। 'कैलासमिव श्रृङ्गिणम्', (६. ६२, ३३; ९४, २३)। 'कैलासशिखरोपमः', (७. ११, ३१)। 'कैलासभवने', (९. ११. ५५)। सश्रृङ्गमिव कैलासं', (९. १२, २)। 'कैलासमिव श्रृङ्गिणम्', (९. ३३, ३९. ४२)। 'कैलासश्रृङ्गसङ्काशो', (९. ४५, ३२)। 'कैलासमि श्रृङ्गिणम्', (९. ५६, २८)। 'मुमुदे तच्च लब्ध्वाऽसौ कैलासं धनदो', (१२. ४४, १३)। 'कैलासशिखरे द्दष्ट्वा दीप्यमानं महौजसम्। भृगुं महर्षिमासीनं भरद्वाजोऽन्वपृच्छत॥', (१२. १८२, ६)। 'वैश्रवणः···कैलासनिलयः', (१२. २८३, ८. ९)। 'कैलासपृष्ठम्', (१२. ३३१, ६५)। 'कैलासपृष्ठात्', (१२. ३३२, १०)। यह कुबेर का निवास है (१३. १९, ३१)। अष्टावक्र ने इसे पार किया (१३. १९, ५४)। देवगन्धर्वसेवित इस पर्वत पर सुरभि ने तपस्या की (१३. ८३, २९)। 'कैलासं प्रस्थितां चैव नदीं गङ्गां', (१३. १५५, २३)। 'कैलासस्य महागिरेः', (१४. ७७, १६)। 'कैलासशिखराकारं···विमानम्', (१८. ६, ३२. ३३)।

कैलासक, एक नाग का नाम है (५. १०३, ११)।

कैलासगिरिवासिन् = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

कैलासनिलय = कुबेर : २. ६, ११; ३. ४१, ३३; १२. २८३, ९।

कवर्त (बहु० ˚र्ताः), एक जाति के लोगों का नाम है (१३. ५०, १५; ५१, ५. ३९)।

कशिक (बहु० ˚काः) एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें भीष्मक ने पराजित किया था (२. १४, २१)।

१. कोकनद, स्कन्द के विभिन्न सैनिकों का नाम है (९. ४५, ६०. ६१. ७४)।

२. कोकनद (बहु० ˚दाः) एक जनपद के निवासियों का नाम है जिन्हें दिग्विजय के समय अर्जुन ने पराजित किया था (२. २७, १८)।

कोकवक (बहु० ˚काः), दक्षिण के एक जनपद के निवासियों का नाम है (६. ९, ६१)।

कोकमुखा = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ८।

कोकामुख, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से पूर्वजन्म की स्मृति जाग्रत होती है (३. ८४, १५८; १३. २५, ५२)।

कोकिलक, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है। (९. ४५, ७३)।

कोङ्कण, (बहु०), दक्षिण-भारतीय एक जनपद के निवासियों का नाम है (६. ९, ६०)।

कोटरक, एक नाग का नाम है (५. १०३, १२)।

कोटरा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १४. १७)।

कोटिकास्य (कोटिक), शिबि नरेश सुरथ के पुत्र का नाम है जो जयद्रथ का साथी था (३. २६४, १२. १६. १७; २६५, १. ६; २६६, ४; २६७, २; २७१, ५)। भीमसेन ने इसका वध किया (३. २७१, २४)।

कोटितीर्थ, एक तीर्थ (तीर्थों ?) का नाम है : 'महाकालं ततो गच्छेन्नियतो नियताशनः। कोटितीर्थमुपस्पृश्य हयमेधफलं लभेत्॥', (३. ८२, ४९)। 'ततः पञ्चनदं गत्वा नियतो नियताशनः॥ कोटितीर्थमुपस्पृश्य हयमेधफलं लभेत्।', (३, ८३, १६. १७)। 'अभिवाद्य ततो यक्षं द्वारपालं मचक्रुकम्। कोटितीर्थमुपस्पृश्य लभेद्बहु सुवर्णकम्॥', (३. ८३, २००)। 'तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः॥ पुण्डरीकमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्।', (३. ८४, २७. २८)। 'कोटितीर्थे नरः स्नात्वा अर्चयित्वा गुहं नृप। गोसहस्रफलं विद्यात्तेजस्वी च भवेन्नरः॥' (३. ८४, ७७)। 'कोटितीर्थे नरः स्नात्वा गोसहस्रफलं लभेत्', (३. ८५, ६१)।

कोटिश, वासुकि-कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, ५)।

कोण्वशिर (बहु ˚राः) एक जनपदवासियों का नाम है जो शूद्र हो गये थे (१३. ३५, १७ : 'काण्वशिराः' है)।

कोपवेग, एक महर्षि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजते थे (२. ४, १६)।

कोलगिरि, दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम है जहाँ के निवासियों को सहदेव ने दिग्विजय के समय विजित किया था (२. ३१. ६८)।

कोलाहल, प्राचीन काल के एक सचेतन पर्वत का नाम है जिसने कामवश दिव्यरूपधारिणी शुक्तिमती नदी को रोक लिया था (१. ६३, ३५)। उपरिचर वसु ने इस पर पैरों से प्रहार किया (१. ६३, ३६)। इसके द्वारा शुक्तिमती नदी के गर्भ से यमज सन्तान की उत्पत्ति (१. ६३, ३७)।

कोलिक, विडालोपाख्यान में आये हुए एक चूहे का नाम है (५. १६०, ३८)।

कोलिसर्प, एक जाति का नाम है जो पहले क्षत्रिय थी, किन्तु ब्राह्मणों की कृपादृष्टि न मिलने से शूद्रत्व को प्राप्त हो गई (१३. ३३, २२)।

कोल्लगिरेय, दक्षिण के एक देश का नाम है जिसे अर्जुन ने अश्वमेध यज्ञ की रक्षा के समय विजित किया था (१४. ८३, ११)।

कोशल, कोशलराज, कोशला, कोशलाधिप, कोशलाधिपति, कोशलेन्द्र, कोशलेश्वर—देखिये कोस˚।

कोषा, भारत की एक नदी का नाम है (६. ९, ३४)।

कोष्ठवान्, एक पर्वत का नाम है जिसे अन्य अनेक पर्वतों का अधिपति कहा गया है (१४. ४३, ५)।

१. कोसल (बहु० °लाः) एक जाति के लोगों का नाम है। ये जरासंध के सामने से भाग खड़े हुए (२. १४, २७ : 'कोशलाः')। 'पूर्वांश्च कोसलान् ; (२. १०, २८) अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने इन्हें विजित किया था (२. ३०, ३)। अपनी दिग्विजय के समय सहदेव ने इन्हें विजित किया था (२. ३१, १३)। 'गच्छति कोसलान,' (३. ६१, २३)। 'कांतिकोसलाः,' (६. ९, ४०)। 'कोसलराजा,' (६. ४५, १५)। दुर्योधन की सेना में इनकी उपस्थिति (६. ५१, १५)। कृष्ण ने इन्हें पराजित किया था (७. ११, १५)। मत्स्यों आदि के साथ इन्होंने भी द्रोण पर आक्रमण किया (७. २१, २३)। इन्होंने युधिष्ठिर का पक्ष लिया था (७. २४, ७)। 'कोसलानामधिपः,' (७. ४७, २०)। 'कोसलराजस्तु विरथः', (७. ४७, २१)। 'कोसलानामधिपं राजपुत्रं बृहद्बलम् ,' (७. ४७, २२)। इन लोगों ने द्रोण पर आक्रमण किया (७. १२५, ५३)। द्रोण के विरुद्ध युद्ध में इन लोगों ने अर्जुन का अनुसरण किया (७. १५६, ५१)। इनके अधिपति, बृहद्बल, का अभिमन्यु ने वध किया (८. ५, २१)। दुर्योधन के लिये कर्ण ने इन्हें पराभूत किया (८. ८, १९) युधिष्ठिर की सेना में इनकी उपस्थिति (८. १२, १९)। इन लोगों ने धृष्टद्युम्न पर आक्रमण किया (८. २२, ३ : 'कोशलाः')। ये लोग शाश्वतधर्म के ज्ञाता थे (८. ४५, १४)। 'प्रेक्षितज्ञाश्च कोसलाः', (८. ४५, ३४)। इन लोगों ने कर्ण पर आक्रमण किया (८. ४९, ३४)। अर्जुन ने इन लोगों का वध किया (८. ५३, २)। 'कोसलानामधिपतिं राजपुत्रं बृहद्बलम् ', (११. २५, १०)। क्षेमदर्शी इनके शासक थे (१२. ८२, ६)। अम्बा के स्वयंवर के समय भीष्म ने इन लोगों को पराभूत किया था (१३. ४४, ३८)। 'पुण्ड्रान्सकोसलान्', (१४. ८२, २९)। यज्ञाश्व की रक्षा करते हुये अर्जुन ने इन्हें पराजित किया था (१४. ८३, ४)। तुकी बहु० **कौसल्य**।

२. कोसल = ऋतुपर्ण : ३. ७४, ८ ।

कोसलराज = बृहद्बल (७. ४७, २१)।

कोसला = अयोध्या : २. २०, २८; ३. ६१, २३। यह ऋतुपर्ण की राजधानी थी (३. ७६, २८)। 'ऋषभं तीर्थमासाद्य कोशलायां नराधिप', (३. ८५, १०)। 'कोशलां तु समासाद्य कालतीर्थमुपस्पृशेत्', (३. ८५, ११)। अपनी दिग्विजय के समय कर्ण ने इसे विजित किया (३. २५४, १०)। 'वैदेह्या समेतं कोसलागतम्', (३. २७९, ३३)। यहाँ उद्दालक ने यज्ञ किया और उस समय सरस्वती नदी मनोरमा के रूप में प्रगट हुई (९. ३८, २३)।

१. कोसलाधिप = क्षेमदर्शी : १२. १०४, ३२ ।

२. कोसलाधिप = सौदास (कल्माषपाद) : १३. ६, ३२ ।

३. कोसलाधिप = ऋतुपर्ण (३. ७३, २५)।

कोसलाधिपति (कोसलों के अधिपति)—द्रौपदी के स्वयंवर के समय इनकी उपस्थिति (१. १८६, २२)। अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने कोसलाधिपति बृहद्बल को पराजित किया था (२. ३०, १)। अपनी दिग्विजय के समय सहदेव ने इन्हें पराजित किया था (२. ३१, १२)। 'कोसलाधिपतेः पुत्रं सुक्षत्त्रम्', (७. २३, ५७)।

१. कोसलेन्द्र = राम दाशरथी (३. २८४, १०. २२)।

२. कोसलेन्द्र = बृहद्बल (६. ११६, ३१. ३२)।

कोसलेश्वर = सुदास (१३. १६५, ५७)।

कोहल, वेदविद्या में पारङ्गत एक ऋषि का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र के सदस्य थे (१. ५३, ९)। राजा भगीरथ ने इन्हें एक लाख सवत्सा गायें दान देकर इनका आशीर्वाद प्राप्त किया था (१३. १३७, २७)। ये उत्तर दिशा में निवास करते थे (१३, १६५, ४५)।

कौकुट्टक (बहु० °काः), दक्षिण की एक जाति का नाम है (६. ९,६०)।

कौकुर (बहु० °राः) एक जाति = कुकुर। ये दासों के रूप में युधिष्ठिर के भवन में निवास करते थे (२. ५०, २०)। ये युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १५)। 'वार्ष्णेयान् समोजान्धककौकुरान्', (१६. ५, २)।

कौकुलिका, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६,१५)।

कौणप, वासुकि के कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है जो माता के शाप से पीड़ित हो विवशतापूर्वक सर्पसत्र की अग्नि में जल गया (१. ५७, ६)। बहु० °पाः (१. १७०, १५)।

कौणकुत्स्य, एक वनवासी द्विजश्रेष्ठ का नाम है जो सर्पदंशन से मृत प्रमद्वरा को देखने के लिये आये थे (१. ८, २५)।

कौणपाशन, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, १४)।

कौण्डिन्य, एक मुनि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजते थे (२. ४, १६)।

कौत्स, एक विद्वान् ब्राह्मण का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र में उद्गाता बनाये गये थे (१. ५३, ६)। राजा भगीरथ ने अपनी कन्या, हंसी, को इन्हें दान देकर अक्षय लोक प्राप्त किया था (१३. १३७, २६)।

१. कौन्तेय (कुन्ती के पुत्र)=अर्जुन : १. ६१, ४५; १३२, २४. ४७; १३८, १४, २८. ४१. ५६; १४५, ८; १७०, ६९; १७१, १२. २२; १७८, ५: १८५, ९; २१३, १४; २१४, ८. ११. १६. ३१. ३३; २१५, २. १०; २१६, ११; २१८, ४. १३. १७; २२०, ७; २२१, ५. १३. १७; २२५, २३; २. १, ३; २७, ३. ९. १८; २८, १२; ३. ३७, २१–२३. २५. ३१. ५८; ३८, १६; ३९, १८. ५०; ४१, २३. २९; ४२, २०; ४३, १९; ४४, ५. ६; ७९, २६; ९१, १५; १६७, ४७; १६८, ७३. ८३; १७३, ७५; १७५, २. ६; ३१२, २४. २७; ४. १, ९; २, १२; ३८, ३०; ४५, ३४; ४६, ६. १०; ४८, ७. १७; ५१, ६; ५५, ३; ५७, ३०; ५८, १७. ५९; ५९, २१; ६०, १४. २५; ६१, ४२. ४६; ६२, ९; ६४, ९. ३१. ३४; ६९, १८; ७२, ३३; ५. ७, ६; ५६, ३; ७९, ३; ९०, ६६; १४१, ५७; १५८, २६; १६०, ९५. ११५; १६१; ३३; १६९, २६; ६. १४, ११; २३, २०; २५, २७; २६, १३. ३७. ६०; २७, ३९; २९, २२; ३०, ३५; ३१, ८; ३२, ६. १६; ३३, ७. १०. २३. २७. ३१; ३७, १. ३१; ३८, ४. ७; ४०, २२; ४२, ४८. ५०. ६०; ४९, १५; ५९, ४५; ७३, १६; ८१, ३८; ८४, ४५. ४७. ४९; १०१, ५८; १०६, ३६; ११६, ६०; ११७, ४५. ६३; ७. ९, ३२; १६, ४२. ४६; १७, ६; २७, २; ५१, ८; ७५, २३; ८८, ७; ८९, १२; ९२, १६. २४; ९३, २८; ९४, १. ८. ३४. ३७; ९९, ४; १००, १, ४. ३३; १०२, २७; १०४, १२; १०५, ३४; १३९, १२२; १४१, २१. २६; १४३, ४; १४५, १४. ८५; १४६, ४७. ४८. ५२. ५३. ७९; १४७, ९; १४८, ५; १५९, ४७; १७२, २६; १७३, ३५; १८२, १६; १८५, १३. २८; १९७, २. ६; २०१, ९; २०२, २८. ३७. १५३; ८. ४९, ५६; ६०, १ (कौन्तेयं धर्मराजं युधिष्ठिरम्). १०; ६३, १२. ३२; ६५. २३; ९६, ५०; ९. ११, २९ (अजातशत्रु युधिष्ठिरम्); १६, ४९. ५६; १९, १६; २३, १०; ३०, ४५; ३१, १७. ४१; १०. १०, ९; ११. ८, ३८; १२. १४, १; १५, २९. ५३; २०. ६; २१. ६. १३; २३, १ (पाण्डवः). १३; २४, १ (अजातशत्रुम्). ६; २५, १; २७, ३४; ३२, १६. २४; ३३, ४८; ३४, ६. १८. २१; ३७, १७; ३८, १७. २७; ४९, १. १५. ३८; ६६, ४. ७. ९. २०. २७. २९. ३१; ७१, ३१; ७५, २६; ८३, ३; ८४, ११; ८६, २; ८९, ५; १२४, ७१; १२८, २६; १३३, १; १३७, ३; १४१, १०२; १५८, ३२; १६९, १६; २०७, ४१; २६४, २३; २७३, २४; २८०, ५९; २८२, ६३, ३००, १६. ३४. ५६; ३०१, ४१. ७६. ९९. १००. १०६; ३३७, ३९; ३४१, ५१; १३. १, १७; १४, ३८६; १८, ११. १८; २६, १०४; २७, ९; ३१, ३६; ४०, ८; ४७, ५२; ५९, १२; ६६, ४. ६. ५६; ६७, ७. १७; ९५, २०; १०३, ३; १०५, ५; १०६, ७. २०. ४३. ७१; ११५, ३८; १३५, २१; १३८, ४; १४८, ५४. ५८; १५९, ५५; १६६, १५; १६७, ८. २६; १४. १, ८. १८; ३, २१; १२, ७. १५; ७२, ३; ८६, ८. १०. १८; ८८, १२. ३५; १५. २, २७; ३, ६२. ७४; ४, १८; ५, ९; ६, ४. ७; ८, ४; २८, २२; १७. २, ११; १८. २, २५; ४, ४ ।

२. कौन्तेय (बहु० °याः और द्वि० °यौ), अर्थात् कुन्ती के पुत्र : १. १, १८७; ६१, २०; १४१, १२; १४२, १७; १४६, ३; १६८, १;

१७१, २; २००, ५; २०१, १६ (एकैकः……कौन्तेयः); २०२, ४. ९; २०४, २. ६; २०६, २६; २०७, ८; २. ३७, २५; ८०, २७; ३. १, १९; ९२, ६; १४३, ५३; १५८, २९; २४२, २१; ४. ३४, ३; ५२, ७; ५. ३, ११; ८, २४; १८, २५; १९, २८; १२४, ३१; १२८, १०; १३८, ३; ६. १४, २८; ६५, ३४; ११४, ८ (°यौ = अर्जुन और भीमसेन). ११ (वही); ७. ९, ३२; १५६, १२५; १७०, ६५; ८. २, १४; ९, ६३. ९७; ३२, १५. २६; ५७, ११; ११. १४, १५।

कौवेर (वि०)—'विसर्गे कौवेरे', (२. ७८, १९)। 'कौबेरम्…… अस्त्रम्', (३. ४१, ४१)। 'अश्वग्रामः……कौवेर', (५. १६९, २१)। 'कौवेर्योऽथ महाबलाः', (९. ४६, ३६)। कौवेरं प्रययौतीर्थम्', (९. ४७, २५)। 'कौबेरे काननोत्तमे', (९. ४७, २७)। 'कौवेरा यक्षगन्धर्वकिन्नराः', (१३. १९, ४१) 'कौवेरं लोकमश्नुते', (१३. ७९, १६)। 'कौवेरमाप्नुवन्', (१५. ३३, १५)। 'रौद्रमाग्नेयकौवेरं याम्यं गिरिशमेव च', (७. २३, ९४)।

१. कौमार (वि०)—आगस्त्य सर में फल और शाक खा कर निवास करनेवाला कौमार, अर्थात् स्कन्द, पद प्राप्त करता है (३. ८२, ४५)। 'मङ्गलानि च सर्वाणि कौमाराणि त्रयोदश:', (३. २२६, १३)। 'वायव्यश्चाथ कौमार्यो ब्राह्मश्च भरतर्षभ', (९. ४६, ३७)।

२. कौमार, शाकद्वीप के एक वर्ष का नाम है (६. ११, २६)।

कौमुद, एक मास (कार्त्तिक) का नाम है : 'कौमुदेमासि', (५. ८३, ७)। 'कौमुदे शुक्लपक्षे', (१३. ६६, ६२)। 'कौमुदे……शुक्लपक्षे', (१३. ११५, ६३)। 'मासं तु कौमुदं पक्षं', (१३. ११५, ६७)। 'शारदं कौमुदं मासं', (१३. ११५, ७६)।

कौमुदी, कौमुद (कार्त्तिक) मास की पूर्णमासी का नाम है (१३. १३०, ३२)।

कौमोदकि, श्रीकृष्ण की गदा का नाम है : 'वरुणश्च ददौ तस्मै गदामशनिनिःस्वनाम्। दैत्यान्तकरणीं घोरां नाम्ना कौमोदकीं प्रभुः॥', (१. २२६, २८)। 'गदां कौमोदकीं दिव्यां', (७. ७९, ३५)।

१. कौरव = अर्जुन : १. १३६, ३१; १७१, २०; ३. ४१, ४५; ७. १३५, ३३।

२. कौरव = बभ्रुवाहन : १४. ८०, ४६।

३. कौरव = भीमसेन : ३. १४७, ३; २७२, ६; ७. १३७, ४५।

४. कौरव = भीष्म : १. १०२, ४७. ४८; २. ३८, ५; ३. ८४, ६८; ५. १६०, ७८ (गाङ्गेयः); १६५, १५; १६८, १६. ४२; १७४, ७; १७९, १६; १८३, १४; ६. ५८, ३४; ८६, १८; १०७, ४८; १२२, २६; ७. १, ३९; १२. ४६, २९; ५४, २५; ५६, ४; २३१, १; ३०१, ८१; १३. ३, १६; ६६, ५; १६७, ३६; १६८, १२।

५. कौरव = भूरि : ७. १६५, ६; १६६, ३।

६. कौरव = भूरिश्रवस् : ६. ६४, २; ७. १४२, १८. ६९; १४३, ३; १४५, १।

७. कौरव = शान्तनु : १३. ४४, ४०।

८. कौरव = धृतराष्ट्र : १. ६७, ९; २००, ७; २. ५६, ७; ३. ११, ६९; १३, ३; २३९, ४; ५. ६, ४; १२४, २; ६. ६५, २९; ८. ४, ८; ९. ४, ४९; ६३, ७२; ११. १३, ५; १२. ४०, ५; १५. ३, २. २९. ६२; ११, १०. १८; १२, ४; २७, २०; २९, ३६; ३६, १३।

९. कौरव = दुःशासन : ६. १२०, २६; ७. १२२, १४; १२३, ५; ८. २३, ९।

१०. कौरव = दुर्मुख : ५. ६६, ६।

११. कौरव = दुर्योधन : १. १३६, ३९; १४४, १८; २०३, ११; ३. २४०, ३०; २५१, २; २५२, २५; २५३, १७; २५५, २; २५६, ११; २५७, १४; २६२, २६; ४. ५२, १२; ५. ४८, २७; ७९, ११; ८५, १६; ९१, १०. १३; ९७, १०; १३८, ३; १५४, १३; १५६, ३५; १६२, ५४; १६३, २९; १६९, ११; १८०, २७, ३६; १८८, १२; १९२, २; १९५, १९; ६. ४३, ४१. ५६. ५७; ६५, ३५; ९२, २२; ९४, १४. २३; ९५, १०; ७. ३७, ३; ९४, ७६; १५१, ७; १५८, १४; १५९, ७८; १६०, २. ९; १६६, ४९. ५५; १८५, १४; १९३, ३२; १९५, १७; ८. ३२, ६३; ९. १, २; ७, २०; १६, १७; २४, ६; ३०, २७. ६७; ५४, २७; ५५, २३; ५७, ६७. ६९; ५८, २०; ५९, २७; ६५, ३८।

१२. कौरव = जनमेजय : १. १०२, १; १३०, ६; २. १२, ३४; ३. २४०, १७; १४. ८५, ५; १५. १, १२।

१३. कौरव = पाण्डु : १. ११३, २१; १२३, ३०; १२७, १२; १९३, १८।

१४. कौरव = सोमदत्त : १. १४३, १२; ७. १५६, १२. १६; १६२, १६।

१५. कौरव = सुहोत्र : ३. १९४, ४।

१६. कौरव = विचित्रवीर्य : १. १०२, ४७।

१७. कौरव = विदुर : ५. ८६, ७।

१८. कौरव = युधिष्ठिर : ३. १३, ३; १४, १८; १५, २०; १६, ९; २२, ४४; २६, ९; ६६, २६; २०१, ११; ४. ४३, २१ (धर्मराजस्य); ५. १९४, २२; ७. ११२, २६; ११. १, २ (राजा धर्मपुत्रः); ९, २ (कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामनाः); १२. ४२, ११; १४. ७२, १०; ८५, २३; १५, ९, १० (राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः); १७. १, २; १८. ३, २२।

१९. कौरव = युयुत्सु : ११. २६, २५।

२०. कौरव = (वि०) : १. १३८, १५; ३. ३६, ११ (कौरवं पक्षं); ५. १४७, ३४ (वंशम्); १४८ (वंशः); १४९, ३२ (कुलस्य); ६. ४३, ३२ (सैन्यं); ५८, १९ (°वीं सेनां). २७ (सैन्यं); ७. १३८, ११ (सैन्यं सिन्धुसौवीर कौरवम्); १६०; ५ (°वीं सेनां); १६४, ३३ (सैन्यं); ८. २३, २२ (°वी सेना); ५२, ४२ (°वी सेनां); ५६, ३ (सैन्यं); ७३, ८; ७६, २५; ९. १०, ६२; १९, १४; ३१, २३ (वंशे)।

२१. कौरव = (बहु० °वाः); कुरु के वंशजों अथवा बहु० कुरु का द्योतक है; अक्सर इसका प्रयोग पाण्डु के पुत्रों और उनके अनुगामियों के विरुद्ध धृतराष्ट्र के पुत्रों और उनके अनुगामियों के लिये किया गया है : १. १, ११८; २, २९. २२४. २९० (कौरवाणां यशोभृता = व्यास). ३१६; ४०, १०; ७५, २; ११०, १६; ११३, २५ (पाण्डुनां नरसिंहेन कौरवाणां यशोभृता). ४२; १२७, २७; १२९, १; १३०, २७. ३०; १३२, २ (धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्र). ४. २९; १३८, ११. १५. १६; १३९, ८ (संसदि); १४३, १७; १४६, २४; १५०, ५; १८९, २४ (°वाग्र्यैः); १९८, ९ (राजपुत्राः = पाण्डु के पुत्र). १३ (°वंशवर्धनाः); २०६, २४. १८. २०; २०७, १२; २१४, १ (°वाणां यशस्करम्); २२०, ३१; २. ५८, ३१; ६१, ३ (कौरवाणां कुलकरं ज्येष्ठं पाण्डवमच्युतम् = युधिष्ठिर); ६३, ७ (संसदि °वाणाम्); ६७, १४. १६; ६८, ५. १९. ४२ (°वार्णवमग्नां माम् = द्रौपदी). ५७; ६९, ११–१३; ७०, ८; ७७, २५; ८०, ३४. ४७; ३. ४, २; ५, १३. १६; ८, १; १३, २; २५, १८; ३६, १३ (°सैन्यस्य); ९५, ३; १९०, ५७ °वर्षभाः, अर्थात् पाण्डव); २४१, १. ८; २४३, १. १८. २०. २२; २४४, ५; २४६, २. १८; २५६, २१; २५७, १४; ४. ६, २८ (°वाहिनीम्); २६, ५; ३०, ७. ११. २१. २७; ३९, १२; ४५, ३४; ४८, २२; ५२, २० (राजा °वाणाम् = दुर्योधन); ५३, १; ५५, १३; ६२, १; ६८, ७१; ५. २, १३; ६, १९; १९, ३३; २३, १७; २६, २८; २९, १७. १९, ३५; ३२, १० (°वाणां राजा, अर्थात् युधिष्ठिर); ३६, ७३ (मेढीभूतः कौरवाणां त्वम्, अर्थात् धृतराष्ट्र). ७४; ४७, १५; ४८, २७. ३९ (°वाणां प्रवीरे, अर्थात् भीष्म); ५७, ५३; ६२, १; ६६, ८; ६८, ३; ७२, ४३. ८९; ७३, ३७; ९१, ३७, १२४, ५९; १२८, २३; १३१, २६; १४३, १९; १४६, २५; १५०, ५; १५४, १५; १५५, २७ (अक्षौहिण्यो दशैका च कौरवाणामभूद्बलम्); १५८, २६; १६५, ४ (भीष्म); १७२, १८ (चित्राङ्गदं कौरवाणामाधिपत्येऽभ्यषेचयम्); ६. १, ३. २६; ३, ५८; १६, २७; ४३, ३०. ४१. ५७. ७१. ८२. ८५; ५०, ३४; ५२, १९ (°वानीकम्). ५९; ५७, ८; ५९, ७०. ८५. १०९; ६४, ७८; ७५, १४. २३. ३७; ८७, ४; ८८, ३५; ८९, १२. २०. २१; ९४, २३. २५. ४४. ८३; ९६, ४; ९७, २६; १०३, ४६;

११४, २३. ४३; १२०, २२ (°वाणां पितामहः, अर्थात् भीष्म); ७. १, ५१ (भीष्मे कौरवाणामपाकृतम्); ४, ४. १०; ७, ४२; ११, ३५; १२, ३; २२, ९; ३०, २९; ५१, १९; ७५, ७; ८६, १५. १९. २२; १००, ९; ११०, ४०. ५८. ६८; ११४, ४२; ११९, २८. २९. ३२. ३७; १२४, २०; १२८, ४५; १३७, ४५; १४१, १५. २१; १४३, ६९; १४५, ५०; १४६, ८; १४९, ४६. ५१; १५४, १९; १५८, १७; १६०, ३७; १६२, ५१; १६३, १७; १६४, ९ (°वाणामनीकिनीम्). ३३. ३५; १७२, १३. २१. ४१; १८३, ६५; १८७, २४; १९२, ३३; १९३, ८. ६६; १९६, २४. २५; १९८, ४५. ६३; १९९, १०. ४०; २००, १६; २०१, ३. ९९; २०२, २; ८. ८, २७ (यादवकौ °न्); ९, ९६; १०, २; ११. १२. १३; २७, २; २८, ११; ३०, ४०; ३१, ७; ३७, ९; ४१, ७३; ५१, ८०; ५४, ४१; ५५, ३४; ५६, ५. ८९; ५८, ४७; ६०, ३८. ५९; ६१, १३. ४१; ६६, ३४. ४० (समागमे सृञ्जयकौरवाणाम्). ४४; ६७, ४; ७०, १९; ७३, ४. ७. २७. १२४; ७४, ५३; ७६, २६; ७९, ७६; ८३, ५१; ८९, ८३; ९३, ५९; ९४, ६१; ९. ३, ५७; ५, ५०; ८, १२; ११, २०; १७, ६९; १९, ६५; २०, ११; ३०, १५. २७ (कौरवाणां महारथान्, अर्थात् अश्वत्थामा, कृप, और कृतवर्मा); ६३, २; ६५, १ (कौरवाणां महारथाः, अर्थात् अश्वत्थामा, कृप, और कृतवर्मा); १०. १५, २८; ११. ८, ३८. ४२; २७, २५; १२. ४२, १०; ४६, २३ (भीष्मे कौरवाणां धुरंधरे); ५०, ११; ५२, १४; ५४, ४; १३. १३७, ३१ (कौरवाणां धुरंधर, अर्थात् युधिष्ठिर); १६८, २२; १४. ५३, १३. १५; ६०, ८; ७६, ९ (कौरवाणां महारथम्, अर्थात् अर्जुन); ७९, ३५ (कौरवाणां धुरन्धरे, अर्थात् अर्जुन); ८७, १७ (कौरवाणां धुरन्धरे, अर्थात् अर्जुन); १५. ३, १७. १८; १५, ४ (स्त्रियः कौरवपाण्डवानां······कौरवराजवंश्याः). १२; ३२, ५; ३६, ५० (°योषितः)।

कौरवदायाद = भूरिश्रवस् : ६. ७४, १४; ८. ५, १७।

१. कौरवनन्दन = अर्जुन : १. १७७, ३; ६. १२१, ३०; १४. ७४, ३३; ७७, २६।

२. कौरवनन्दन = भीमसेन : ३. १५०, ६।

३. कौरवनन्दन = भीष्म : १२. ५५, १।

४. कौरवनन्दन = धृतराष्ट्र : १२. १२४, ६४; १५. १९, १२; २९, २०; ३६, ६।

५. कौरवनन्दन = दुर्योधन : ५. १८५, १; १९२, ६७; ९. ३१, ६२।

६. कौरवनन्दन = जनमेजय : ३. ९१, १।

७. कौरवनन्दन = पाण्डु : १. ११२, १३; ११९, ३८।

८. कौरवनन्दन = युधिष्ठिर : २. १२, २३; ३. ९६, ४; ५. १८, १२; १२. ८९, ९; ११९, १९; १३. ४३, २६; ११६, १०. २०; १४८, ४१; १६. १, १।

९. कौरवनन्दन = (बहु० °नाः) = पाण्डु के पुत्र : २. ५८, ३०; ३. १४०, २९; ४. ५२, ८।

कौरवराज = धृतराष्ट्र (?) : १५. १५, ४ (स्त्रियः···कौरवराजवंश्याः)।

कौरवराजपत्नी = द्रौपदी : १. १९४, ९।

कौरवराजपुत्र = अर्जुन : ८. ७९, ५५।

१. कौरवर्षभ = अर्जुन : ३. ४९, ६।

२. कौरवर्षभ = पाण्डु : १. ११३, १६।

३. कौरवर्षभ = युधिष्ठिर : १४. ८६, १५।

कौरववंशभृत् = धृतराष्ट्र : १५. २४, ५।

कौरववंशवर्धन = युधिष्ठिर : ४. ७, २।

कौरवशार्दूल = देखिये **पौरवशार्दूल**।

१. कौरवश्रेष्ठ = अर्जुन : १४. ७७, ३२।

२. कौरवश्रेष्ठ = भीमसेन : ३. १७९, १७।

३. कौरवश्रेष्ठ = श्रेणिमान् : ५. १७१, २७।

४. कौरवश्रेष्ठ = धृतराष्ट्र : ६. १२, ४०।

५. कौरवश्रेष्ठ = दुर्योधन : ३. २५५, १४; ७. १६६, ४६।

६. कौरवश्रेष्ठ = युधिष्ठिर : ३. १४, २; १७, २५; ५०, ९; २०३, १।

१. कौरवसत्तम = अर्जुन : ६. ५९, १०४।

२. कौरवसत्तम = युधिष्ठिर : ६. ६०, ११ (धर्मराज्ञा)।

१. कौरवाग्र्य = भीष्म : १३. १६७, ५।

२. कौरवाग्र्या = युधिष्ठिर : १०. १०, ३१।

कौरवाचार्यमुख्य = द्रोण : १. १६७, २४ (भारद्वाजस्य)।

कौरवात्मज = दुर्योधन : ४. ६९, ६।

कौरवाधम = भीष्म : २. ४१, १५।

कौरवी = उलूपी : १५. १५, १०।

१. कौरवेन्द्र = वाह्लीक : ८. ६, ३०।

२. कौरवेन्द्र = धृतराष्ट्र : ६. ११, २३; ७. ८, २९; १७९, २५; ८. ८९, ३४; १५. १, २२; ३, ८१; १५, १३; २०, २१; २१, १।

३. कौरवेन्द्र = दुर्योधन : ५. १७२. १४; १८२, १६; १९२, २९; ६. ११२, ११; १२१, ३८. ५३; ९. ५६, १७; ५९, ३; ६१, ७; १४. ६०, १३. ३४।

४. कौरवेन्द्र = जनमेजय : १८. ३, ३०।

५. कौरवेन्द्र = युधिष्ठिर : ३. १८३, ९५; ६. ८६, ११; ७. १५९, ५४; १२. ३०८, ४६; १३. ९४, ४२; १५८, ६; १८. ३, ३०।

१. कौरवेय = अर्जुन : ७. १४३. १२।

२. कौरवेय = भूरिश्रवस् : ७. १४२, १४; १४३, ५४; १४४, २।

३. कौरवेय = दुर्योधन : ३. २४६, २५; २५२, ३९; ५. १५५, २६; ७. १५८, ६३; ९. २४, ३२।

४. कौरवेय = सोमदत्त : ७. १५६, ११।

५. कौरवेय, वि० (= वि० कौरव)। ७. १२१, ५३; १५८, ५८।

६. कौरवेय, बहु० = बहु० कौरव : १. १३२, ७; १४२, १८. १९; २. ६९, ९; ७०, ६; ३. ८, ३; २३६, ४ (अर्थात् पाण्डव); ४. ३४, ७; ५. ६, १८; १९, ३२; ४८, ६५; ८८, १८; १६०, १; ६. ५७, ५; ६०, ९; ८९, २६; ७, ८६, २१; ९७, १; १०२, ३१; १२७. ७१; १६०, ६०; १७९, ६३; १८७, ३०; १८९, ६५; ८. २, २३; ४५, २८; ५१, २९; ९. २३, १२; २८, १६।

१. कौरव्य = अर्जुन : १. १७०, ६८; १७१, १६; ५. ७, २ (कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः); ७. १४७, २५; ८. ५८, ४८; १४. १५, २०. २७; ७८, ५; ८१, ७; १६. ५, ७; ७, २९. ६८।

२. कौरव्य = भीमसेन : ४. २२, २४; १४. ८५, १२; १५. २, ३०।

३. कौरव्य = भीष्म : १. १०२, १९; १३१, ४४. ५५; २. ४२, ५; ३. ८५, १०६. १०९; ५. २३, ८; १७८, ४१. ६६. ७०; १८३, ९. १७; १८६, ३९; ६. ५९, ५५; १०६, ४६; ११५, ५; ७. १, ३८; १२. २७, ८; १६४, ३; ३२१, २; १३. १०६, १६; १६७, १८; १६८, ११; १४. ६०, ८।

४. कौरव्य = भूरिश्रवस् : ७. १४२, २; १४७, ५८।

५. कौरव्य = शान्तनु : १. १०२, ५४; १०३, ३।

६. कौरव्य = धृतराष्ट्र : १. ११३, २२; १४०, ९३; १४१, १. १५; १४५, ७, २. ५२, २५; ३. ४, ६; ९, १७; १०, ६; ५. २१, २१; ६४, ५; ८३, ४६; ९५, ९. ११. १३; ६. ९, १३. ५५; ११, १६. २४. २७. ३२; १२, १. १०. ३१. ३३. ४९; १०९, ८; ७. १, ४. ५; १२४, ३८; १२५, ३४; १२८, २३. ३३; १३२, १६; १३५, २५; १७३, ५९; १९१, ३७; ८. १, २०; ४९, ६४; ९. २, १४; १५, २७; २३, ६४; १०. १, ३६; ८, ४५; ११. १२, २७; १५. २, ६; १०, ४५; १४, १७; २७, २३; ३६, ४८।

७. कौरव्य = दुःशासन : ३. २४९, ३६ (°यौ = दुःशासन और दुर्योधन); ७. ४०, ९; ८. २३, २१।

८. कौरव्य = दुर्योधन : २. ४८, २०; ३. २४०, १९; २४२, २०; २४९, ३६ (°यौ = दुर्योधन और दुःशासन); २५०, २; ४. २५, ७ (राजानं धृतराष्ट्रजम्). २२; २८, ३३; ५. १९, २२. २३. २६; २०, १; ६४, १५; १५४, ७; १५५, १८; १६३, ३७ (धार्तराष्ट्रं सुयोधनम्). ३८; १७५, २३;

१८०, १९; १८२, २६; १८६, २८. ३०; १९२, ७० (राजा दुर्योधनः); १९५, १४; ६. ७९, १८; ११४, ३१; ७. ९४, ३३; १०३, १८; १४५, ३०; १५१, २२. ३१; १५८, १०; १५९, ८४; १८५, १२; १९५, १४. ३०; ८. ३२, ३६; ९. २४, ४; ३६, ३; ३२, २४; ३४, ५; ५७, ४२; १०. ९, २७; १२. ४, १२; १४. ५२, १८।

९, कौरव्य = जनमेजय : १. ६७, ३९. ६१; ११९, ४७; १२५, १०; १४९, २; २३३, १; २. २१, ४२; ३. १७५, २५; १८३, १; २४०, २४; ४. १७, १०; ८. १, ४; ९. ३९, ३६; ४२, २५; ४६, ९. २१; १३. १६७, १८; १६८, १; १४. ५८, ४१; ६४, ८; ७१, १७; ७६, ५; ७७, ११; ८०, ४३; ८२, १६; ८३, १९; १५. १०, १; २३, १७; १७. १, २७. २९; १८. ३, १; ५, १०।

१०. कौरव्य = जयत्सेन : ९. २६, १२।

११. कौरव्य = पाण्डु : १. ११८, २१; १२३, २५; ५. १४८, ५।

१२. कौरव्य = सहदेव : २. ३१, २. ५४।

१३. कौरव्य = सोमदत्त : १. १८६, १४; २. ३४, ८।

१४. कौरव्य = सुहोत्र : ३. १९४, ४. ७।

१५. कौरव्य = विचित्रवीर्य : १. १०२, ७१।

१६. कौरव्य = युधिष्ठिर : १. १५०, १६; २. ७, १; ३५, १२; ३७, १; ३. १३, १०. १४; १४, १६. १७; १५, १५; १६, ७. २९; १७, १३. २१; १८, ११; ३३, ५७; ५१, २८; ५७, ३०; ८७, १५. २२; ९०, २२; ९८, १; ९९, २; २०४, १९; २२३, १; २३०, ३१; २६७, १२; ४. १६, ४०; १९, ३१; ४४, २; ६८, ६७; ७१, १; ६. १, १२; ८६, ४. ४७; १२०, ६६; ७. २०, २३; १११, ३८; १२. १६, १७; २३, १; ५६, २३; ५९, ४२; ६६, २१; ६९, ५५. १०५; १२१. ९. ३३; १४२, ५; १५८, १६. २१; १६०, १७; १६५, ६२; २६६, ७२; २८१, १२; २८२, ११. १९. ६२; ३२४, ११. १३; १३. ३४, ३०; ४०, १; ४२, ३. २८. ३२; ५९, १५; ६०, ८; ६८, ३४; ८६, ३४; ९१, ४; १४८, ६२; १६७, १०. ३२; १४. ५, २२; १४, ६; ५२, ५१; ७२, २०; १५. २, १७; २९, ४; ३६, ४६; १७. १, १९ (राजा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः); १८. २, ३५; ३, ६।

१७. कौरव्य = युयुत्सु : ७. ८३, ६; १. ४. ६०, ३३; ६३, २४ (युयुत्सुं धृतराष्ट्रजम्)।

१८. कौरव्य = एक नाग का नाम है (१. ३५, १३)। 'कौरव्यकुलजान्नागान्', (१. ५७, १२)। 'कौरव्यकुलजास्त्वेते प्रविष्टा हव्यवाहनम्', (१. ५७, १४)। 'कौरव्यस्याथ नागस्य भवने', (१. २१४, १४)। 'ऐरावतकुले जातः कौरव्यो नाम पन्नगः', (१. २१४, १८)। 'कौरव्यस्यनिवेशनात्', (१. २१४, ३४)। नागों की गणना के अन्तर्गत इसका उल्लेख (५. १०३, १५. १९)। 'कौरव्यस्यात्मजा', अर्थात् उलूपी (१४. ८८, २)।

१९. कौरव्य (बहु० ॰व्याः) = बहु कौरव : १. १, ९५ (धृतराष्ट्र, पाण्डु, और विदुर); १२६, १८; १३८, २३; १५१, ११; २. ४१, ३; ३. १, २; ९, २३; १०, ३; २३३. ५७; २४१, २२. २३; २५८, १७; ४. ४, ११; ५. १५७, ३४; ५. ९, ५५ (धृतराष्ट्र); ४३, १०० (धृतराष्ट्र के पुत्र); १११, १६ (दुर्योधन के भ्राता); ७. २२, १४; २८, १२; ३६, १२; १४१, २५; १८१. ३३; १९७, २९; ८. २९, २; ६०, ३६; ६२, ६; ११. १४, १८; १४. ६०, २२।

कौरव्यकुलनन्दिनी = उलूपी : १४. ८१, १।

कौरव्यदायाद = पाण्डु : १. १२६, २२।

कौरव्यदुहितृ = उलूपी : १४. ८१, २३।

कौरव्यपत्नी = कुन्ती : ५. १४४, २९ (कौरव्यपत्नी वार्ष्णेयी पद्ममालेव शुष्यतो)।

कौरव्यमुख्य = भूरिश्रवस् : ७. १४१, ३४।

कौशल्य, बहु० कौशल्य, कौशल्या, कौशल्यात्मज, कौशल्यानन्दवर्धन,, कौशल्यानन्दिवर्धन, कौशल्यामातृ—देखिये **कौस॰**।

१. कौशिक (कौशिक के वंशज) = विश्वामित्र : १. ७१. ४२; १७५, ४८; ३. ८४, १४२. १४३; ८७, १५. १७; ५. १०६, ९. १५; ११७, १३; ११९, २०; १८६, २७; ९. ४०, ११. १३; ४२, २७; १२. ४७, ७; १४१ ३४. ३५. ४९, ९२; २०८, ३३; ३४२, २३; १३. १८, ५३; ५५, ३१; १५०, ३८।

२. कौशिक = अष्टक : ५. १२२, १२।

३. कौशिक = गाधि : ९. ४०, १३; १३. ५५, ३१।

४. कौशिक = चण्डकौशिक : २. १९, २१।

५. कौशिक = इन्द्र : ३. ९, ९; १२१, २१; १३५, २०; १२. ४९, ६ (गाधिर्नामाऽभवत्पुत्रः कौशिकः पाकशासनः); १३. १४, २३६, २८४ (देवराजः); ७३, ३६. ४६।

६. कौशिक = कुशिक के वंशज, अनेक ब्राह्मणों के लिये प्रयुक्त हुआ है : २. ४, १२; २१, १० (मणिमांश्च : इन्होंने मगधों के देश पर अनुकम्पा की = चण्डकौशिक (?), = विश्वामित्र (?); ३. २०६, १. ४८। "कौशिक नामक एक ब्राह्मण नदियों के संगम पर बसे एक गाँव में निवास करता था। उसने सदा सत्य बोलने का व्रत ले रखा था। एक दिन कुछ लोगों ने डाकुओं के भय से छिपने के लिये उसी वन में शरण ली जहाँ कौशिक रहता था। जब डाकुओं ने वहाँ आकर छिपे व्यक्तियों का कौशिक से पता पूछा तो उन्होंने डाकुओं को सत्य बात बता दी। तदनन्तर उन निर्दयी डाकुओं ने सब छिपे व्यक्तियों का पता लगाकर उनका वध कर दिया। इस प्रकार वाणी का दुरुपयोग करने के कारण कौशिक को महान पाप लगा और उन्हें नरक का कष्ट भोगना पड़ा। (८. ६९, ३७. ४६. ४९. ५०. ५१. ५२)। १२. १०९, ८; १९९, ४ (पैप्पलादिः स कौशिकः)।

७. कौशिक, जरासंध के एक सेनापति का नाम है (२. २१, १०)।

८. कौशिक (वि०) : ३. १५७, ११ (खड्गं); ७. ४८, ३५ (मार्गैः कौशिकाद्यैः); १९१, ३९; ५७, ४९ (मार्गान्); १३. ५२, ४ (वंशात्)।

९. कौशिक (बहु० ॰काः) १. १७६, ४४।

कौशिकाचार्य = आकृति : २. ३१, ६१।

१. कौशिकी, एक नदी का नाम है जिसका सृजन करने के बाद विश्वामित्र ने उसका नाम पारा रक्खा (१. ७१, ३०)। १. २१५, ७; २. ३०, २२ (कौशिकीकच्छनिलयं राजानं च महौजसम्); ३. ८३, ९५; ८४, १३२. १४३. १५६; ८७, १३ (विश्वामित्र ने यहीं ब्राह्मणपद प्राप्त किया था); ११०, २०. २२; ११४, १; १८८, १०२ (उन नदियों में एक जिन्हें मार्कण्डेय ने नारायण के उदर में देखा था); २२२, २३; ६. ९, १८. २९; ७. ५४, २२; १२. २५८, २१; १३. ३, १०; २५, ३१; ९४, ६; १०२, ४७; १४६, १८; १६५, २७।

२. कौशिकी = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ८।

कौशिक = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

१. कौसल्य, कोसलों के राजा, बृहद्बल, के लिये प्रयुक्त हुआ है : ५. १६६, १८; ६. १६, १६ (कौश॰); ८१, ४; ८७, ९; ११४, ३८; ११६, ३३; ७. ४९, ३८ (अभिमन्यु ने इसका वध किया था); ७३, १० (अभिमन्यु के साथ इसके युद्ध का उल्लेख); ११. २६, ३५ (इनका शवदाह)।

२. कौसल्य = बृहद्रथ : ५. १९५, १०।

३. कौसल्य = वसुमनस् : १२. ६८, ३. ७. ६१।

४. कौसल्य = क्षेमदर्शिन् : १२. ८२, ५. १२. ६८; १०४, ११. २७. २९. ४०; १०५, २०; १०६, २३. २७।

१. कौसल्या, पूरु की पत्नी का नाम है जो जनमेजय की माता थीं : १. ९५, ११।

२. कौसल्या = अम्बिका : १. १०५, ४७. ४८. ५०; १०६, २. १३।

३. कौसल्या = अम्बालिका : १. ११४, ३. ४; ११९, २४; १२६, १६; १२७, २४; १२८, ११।

४. कौसल्या, राजा दशरथ की पत्नी और श्रीराम की माता का नाम है : ३. २७४, ८; २७७, १८. ३६।

५. कौसल्या, राजा जनक की पत्नी का नाम है : १२. १८, १२।

कौसल्यात्मजा (द्वि ं जे) = अम्बिका और अम्बालिका : १. ९५, ५१ ।

१. कौसल्यानन्दवर्धन (कौसल्या का पुत्र) = पाण्डु : १. ११३, ४३ ।

२. कौसल्यानन्दवर्धन = राम दाशरथी : ३. २७७, १३ ।

कौसल्यामातृ = राम दाशरथी : ३. २८३, ३४; २९१, ४२ ।

कौस्तुभ, श्रीकृष्ण द्वारा धारण की गई एक मणि का नाम है । देवताओं ने जब क्षीरसागर का मन्थन किया तब इस दिव्य मणि की उत्पत्ति हुई (१. १८, ३६) । यह श्रीकृष्ण का भूषण थी (३. २६३, १३) । श्रीकृष्ण इस मणि को धारण करते थे (५. ९४, १४) । क्षीरसागर के मन्थन से इसकी उत्पत्ति (५. १०२, १२) । 'अत्यर्थं भ्राजते कृष्णे कौस्तुभस्तु मणिस्ततः', (८. ४६, ५९) । 'कौस्तुभं च जाज्वल्यमानं', (८. ७६, ३५) । 'कौस्तुभेनोरसिस्थेन मणिनाऽभिविराजितम्', (१२. ४५, १५) । तुकी० किरीट-कौस्तुभधर ।

१. क्रतु, ब्रह्मा के छठवें मानस-पुत्र, एक महर्षि का नाम है (१. ६५, १०; ६६, ४) । इनके पुत्र पतङ्गसहचारी थे (१. ६६, ९) । अर्जुन के जन्म के समय ये भी उपस्थित हुये (१. १२३, ५२) । राक्षसों की रक्षा करने के लिये ये पराशर के राक्षस-यज्ञ के समय उपस्थित हुये (१. १८१, ९) । इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, १७) । ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ११, १९) । स्कन्द के अभिषेक के समय ये भी उपस्थित हुये (९. ४५, १०) । उन महर्षियों में एक यह भी थे जो भीष्म को घेर कर खड़े हुये (१२. ४७, १०) । ये ब्रह्मा के पुत्र थे (१२. १६६, १६) । १२. २०७, १७; २०८, ४ । जीवों में निवास करने वाले देवताओं में एक यह भी हैं (१२. २६२, ४०) । इक्कीस प्रजापतियों में एक यह भी हैं (१२. ३३४, ३५) । सप्तर्षियों में एक यह भी हैं (१२. ३३५, २९) । आठ प्रकृतियों में एक यह भी हैं (१२. ३४०, ३४) । सप्तर्षियों में एक यह भी हैं (१२. ३४०, ६९) । १३. १४, ९६ । भीष्म को देखने के लिये उपस्थित हुये (१३. २६, ४) । इन्हें महायोगेश्वर कहा गया है (१३. ९२, २१) ।

२. क्रतु = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

१. क्रथ, एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो क्रोधवशसंज्ञक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ६१) ।

२. क्रथ, एक राजा का नाम है जिसे भीमसेन ने अपनी दिग्विजय के समय परास्त किया था (२. ३०, ७) ।

३. क्रथ, एक महर्षि का नाम है जिन्होंने शान्ति-दूत बनकर हस्तिनापुर जाते हुये श्रीकृष्ण की परिक्रमा की थी (५. ८३, २७) ।

४. क्रथ, एक कौरव योद्धा का नाम है (७. १२०, १०-११) ।

५. क्रथ, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७०) ।

६. क्रथ, एक प्राचीन देश और उसके निवासियों (क्रथाः) का नाम है जिन पर भीष्मक ने विजय प्राप्त की थी (२. १४, २१) ।

१. क्रथन, एक यक्ष का नाम है जिसके साथ पक्षिराज गरुड़ ने युद्ध किया था (१. ३२, १८) ।

२. क्रथन, एक असुर का नाम है जो भूतल पर राजा सूर्याक्ष के रूप में उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ५७) । वरुण की सभा में उपस्थित असुरों में एक यह भी था (२. ९, १३) ।

३. क्रथन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ११) ।

४. क्रथन = शिव : ८. ३३, ५८ ।

१. क्रम, वेदों के उच्चारण की एक विधि के लिये प्रयुक्त हुआ है : १२. ३४२, १०२ (क्रमाक्षरविभागवित्). १०३ (क्रमपारगः); १३. ८५, ९० (पदक्रमविभूषितः) ।

२. क्रम = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

३. क्रम = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

क्रमजित्, एक क्षत्रिय नरेश का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजते थे (२. ४, २८) ।

१. क्रव्याद = बहु० राक्षस : २. १०, २०; ७. ३६, ३८; ७६, १६; ७७, ६; १९५, ४; ८. ८७, ५०; १०. ८, १३९; १३. ११५, २७ ।

२. क्रव्याद, पितरों के तीन गणों में से एक का नाम है (१२. २६९, १५) ।

१. क्राथ, पूरुवंशी महराज कुरु के प्रपौत्र एवं धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ९४, ५८) ।

२. क्राथ, सिंहिकाकुमार राहु के अंश से उत्पन्न एक प्रसिद्ध राजा का नाम है (१. ६७, ४०) । यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८७, १५) । जारूथी नगरी में श्रीकृष्ण ने इसे पराजित किया था (३. १२, ३०) । यह दुर्योधन की सेना में सम्मिलित हुआ (७. २०, १३) । इसने अभिमन्यु पर आक्रमण किया (७. ३७, २५) । अभिमन्यु ने इसके पुत्र का वध किया (७. ४६, २५-२६) । 'क्राथदेवावृधौ', (८. ८५, ३) । कुलिन्दराज ने इसका वध किया (८. ८५, १५) । तुकी० **क्राथाधिप, क्राथपुत्र** ।

३. क्राथ, एक वानर-सेनापति का नाम है (३. २८३, १९) ।

४. क्राथ, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (८. ५१, ७) । भीम ने इसका वध किया (८. ५१, १६) ।

५. क्राथ = शिव : ८. ३३, ५८ ।

६. क्राथ, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५७०) ।

७. क्राथ, एक नाग का नाम है (१६. ४, १६) ।

क्राथपुत्र, एक नरेश का नाम है । उन नरेशों में से एक जिनको आमन्त्रित करने के लिये पाण्डवों को दूत भेजना था (५. ४, १९) । अभिमन्यु ने इसका वध किया (७. ४६, २२. २५) ।

क्राथाधिप = २. क्राथ, जिसका कुलिन्दराज ने वध किया (८. ८५, १६) ।

१. क्रिया, दक्ष प्रजापति की पुत्री और धर्म की पत्नी का नाम है (१. ६६, १४) ।

२. क्रिया = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

क्रियावस्था = शिव (सहस्र नामों में से एक) ।

क्रीत, एक प्रकार का अबन्धुदायाद पुत्र जिसका धन आदि के द्वारा क्रय कर लिया गया हो (१. १२०. ३४) ।

क्रूर, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ६५) ।

क्रूरा, दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप की पत्नी का नाम है । यह 'क्रोधवश' संज्ञक असुरों की जननी हुई (१. ६५, १२. ३२; ६६, १३) ।

१. क्रोध, एक असुर का नाम है जो कश्यप-पत्नी काला का पुत्र था (१. ६५, ३५) ।

२. क्रोध (मूर्तिमान क्रोध का संवेग)—अश्वत्थामा की उत्पत्ति महादेव, अन्तक, काम और क्रोध के सम्मिश्रण से हुई थी (१. ६७, ७२) । काम के साथ ये भी वसिष्ठ का पाद-प्रक्षालन करते थे (१. १७४, ६) । 'नारी क्रोधसमुद्भवा', (३. २२६, २७) । विरूप और विकृत के रूप में काम और क्रोध (१२. १९९, १६) । इक्कीस प्रजापतियों में से एक यह भी हैं (१२. ३३४, ३६) । 'क्रोधं कामस्य देवेशः सहायं चासृजत्प्रभुः', (१३. ४०, १०) । धर्म ने क्रोध का स्वरूप ग्रहण किया (१४. ९२, ४४. ४७. ५२) ।

क्रोधकृत = विष्णु (सहस्र नामों में से एक) ।

क्रोधज = शिव : १२. ३३५, ४१ (रुद्रः); ३४२, ३९. ४२ ।

१. क्रोधन, एक ऋषि का नाम है जो इन्द्र की सभा में विराजते थे (२. ७, ११) ।

२. क्रोधन = शिव : १४. ८, २५ ।

क्रोधना, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ६) ।

क्रोधवर्धन, एक असुर का नाम है जो दण्डधार नामक राजा के रूप में पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ४६) ।

१. क्रोधवश राक्षसों के एक गण का नाम है (३. १५३, ११) । ये

कुबेर के सौगन्धिक कमलों वाले सरोवर की रक्षा करते, परन्तु भीमसेन ने इनमें से सौ का वध कर दिया (३. १५४, १८. २५)। 'क्रोधवशान् हत्वा पर्वते गन्धमादने', (४. ७१, ४)। 'कृष्णायां चरता प्रीतिं येन क्रोधवशा हताः', (५. ५०, २४)। 'शूरः क्रोधवशानां', (५. ९०, २३)। 'स्वर्गेलोके श्रवतां नास्ति 'धिष्ण्यमिष्टापूर्तं क्रोधवशा हरन्ति', (१७. ३, १०)।

२. क्रोधवश, एक राक्षस का नाम है जो रावण की सेना में सम्मिलित था (३. २८५, २)।

क्रोधवशा—'क्रोधवशा नारीः प्रजज्ञे क्रोधसंभवाः', (१. ६६, ६०)।

क्रोधवशः गणः, क्रूरा के पुत्र, राक्षसों के एक गण का नाम है (१. ६५, ३२)। ये मद्रक आदि राजाओं के रूप में उत्पन्न हुये। (१. ६७, ५९)।

क्रोधशत्रु, एक असुर का नाम है जो कश्यप-पत्नी काला का पुत्र था (१. ६५, ३५)।

क्रोधहन् = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

१. क्रोधहन्तृ, एक असुर का नाम है जो कश्यप-पत्नी काला का पुत्र था (१. ६५, ३५)। यह वृत्रासुर के छोटा भाई और राजा दण्ड के रूप में उत्पन्न हुआ (१. ६७, ४५)।

२. क्रोधहन्तृ, पाण्डवपक्षीय राजा सेनाविन्दु का दूसरा नाम है (५. १७१, २०)।

क्रोधा, दक्ष प्रजापति की पुत्री का नाम है जिसे क्रूरा और क्रोधवशा भी कहते हैं (१. ६५, १२. ३२; ६६, ६०)।

क्रोर्यात्मन् = कृष्ण : १२. ४७, ६४।

क्रोशना, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १७)।

क्रोष्टु, श्रीकृष्ण के पूर्वज, महासत्त्व के पुत्र, और वृजिनीवत् के पिता का नाम है (१३. १४७, २८)।

१. क्रौञ्च, हिमवत् के पुत्र, एक पर्वत का नाम है जिसे स्कन्द ने विदीर्ण किया था (३. २२५, ३३)। 'स्कन्दशक्त्या यथा क्रौञ्चः पुरा नृपतिसत्तम', (६. १११, ४७)। 'हंसाः क्रौञ्चमिवाविशन्', (७. १३९, १३)। 'क्रौञ्चमग्निसुतो यथा', (७. १५६, ९३)। 'क्रौञ्चमिवाद्रिमग्निजः', (८. ९०, ६८)। 'क्रौञ्चो यथा स्कन्दहतो महाद्रिः', (९. १७, ५१)। 'क्रौञ्चं पर्वतम्', (९. ४६, ८२)। 'क्रौञ्चं शरणमीयिवान्', (९. ४६, ८३)। 'क्रौञ्चं महामन्युः क्रौञ्चनादनिनादितम्', (९. ४६, ८४)। 'बिभेद क्रौञ्चं', (९. ४६, ९१)। 'क्रौञ्चस्तेन विनिर्भिन्नो दैत्याश्च शतशो हताः', (९. ४६, ९४)।

२. क्रौञ्च, क्रौञ्चद्वीप के एक पर्वत का नाम है (७. १२, १७. १८. २१)।

३. क्रौञ्च, एक प्रकार के युद्ध-व्यूह का नाम है (६. ५१, १)। भीष्म ने इसका निर्माण किया (६. ७५, १५–२२)। युधिष्ठिर ने इसका निर्माण किया (७. ७, २५)।

क्रौञ्चद्वीप, एक द्वीप का नाम है जिसमें क्रौञ्च और महाक्रौञ्च पर्वत स्थित थे (६. ११, ३; १२, ६)। इस पर युधिष्ठिर का शासन था (१२. १४, २२. २३)।

क्रौञ्चनिषूदन, सरस्वती-सम्बन्धी एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से विमान लाभ होता है (३. ८४, १६०)।

क्रौञ्चपदी, एक तीर्थ का नाम है जहाँ पिण्डदान करने से मनुष्य तीन ब्रह्महत्या के पापों से मुक्त हो जाता है (१३. २५, ४२)।

क्रौञ्चपर्वत = १. क्रौञ्च : (९. ४६, ८२)।

क्रौञ्चारुण, एक प्रकार के व्यूह (सम्भवतः क्रौञ्चव्यूह) का नाम है जिसका धृष्टद्युम्न ने निर्माण किया (६. ५०, ४०)।

१. क्षण = सूर्य : ३. ३, २०।

२. क्षण (बहु० °णाः) = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

क्षणभोजिन्, एक राजा ना नाम है जो दुर्योधन की बची-खुची सेना में उपस्थित था (८. ७, १८)।

क्षत्तृ = विदुर (देखिये वस्था०)।

क्षत्रञ्जय, धृष्टद्युम्न के एक वीर पुत्र का नाम है (७. १०, ५३)। द्रोणाचार्य ने इनका (द्रुपद के पौत्र का) वध किया (७. १८६, ३३. ३४)।

क्षत्रदेव, शिखण्डी के पुत्र का नाम है (५. ५७, ३२)। ये पाण्डव-पक्ष के एक वीर रथी थे (५. १७१, १०)। ५. १९६, २५। इन्होंने भीमसेन का अनुसरण किया (६. ९३, १४)। ६. ९५, २३. ४०. ७३; ७. १०, ५३। इन्होंने लक्ष्मण के साथ युद्ध किया (७. १४, ४९)। इन्होंने द्रोण के साथ युद्ध किया (७. २१, ५०)। 'क्षत्रदेवं तु भल्लेन रथनीडादपातयत्', (७. २१, ५६)। इनके अश्वों का वर्णन (७. २३, ६. २५)। लक्ष्मण ने इनका वध किया (८. ६, २६. २७)।

क्षत्रधर्मन्, धृष्टद्युम्न के पुत्र, एक अर्धरथी का नाम है (५. १७१, ५)। ६. ९३, १४; ७. २३, ५; ३५, ३; ८५, ४०; १२५, ६३. ६६ (द्रोणाचार्य ने इनका वध कर दिया); ८. ६, २५ (द्रोण ने इनका वध किया था)। तुकी० **धृष्टद्युम्नसुत, क्षत्रवर्मन्, सौमकि**।

क्षत्रवर्मन्, धृष्टद्युम्न के एक वीर पुत्र का नाम है जिन्होंने द्रोण पर आक्रमण किया (७. १०, ५३)। ७. २५, १०–१२ (इन्होंने जयद्रथ के साथ युद्ध किया)।

क्षत्रियाः (बहु०) = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

क्षपणक, एक भिक्षु का नाम है (१. ३, १२६. १२७)।

१. क्षपाः = सूर्य : ३. ३, २०।

२. क्षपाः (बहु०) = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

क्षपाचर (रजनीचर) = राक्षस (बहु०) : ३. २९०, ९। = रावण : ३. २८९, ३३। = स्थूण : ५. १९२, ५२।

क्षम, क्षाम = विष्णु (सहस्र नाम)।

क्षमाक्षमे = शिव (सहस्र नामों में से एक)।

क्षमिणं वरः = विष्णु (सहस्र नामों में से एक)।

क्षय = शिव : ८. ३३, ५८; १२. २८४, ९४ (१,००० नाम)।

क्षर = विष्णु (कृष्ण) : १२. ३४०, १०७; १३. १४९, ६४ (१,००० नाम)।

क्षान्त = शिव (१,००० नाम)।

क्षितिकम्पन स्कन्द के एक सेनापति का नाम है (९. ४५, ५९)।

क्षितिपति = शिव : १४. ८, ३३।

क्षितिसुख = शिव : १०. ७, ८।

क्षितीश = विष्णु (१,००० नाम)।

क्षीरनिधि (क्षीरसागर)—'यस्याः क्षीरस्य धाराया निपतन्त्या महीतले। ह्रदः कृतः क्षीरनिधिः पवित्रं परमुच्यते ॥', (५. १०२, ४)।

क्षीरपा = शिव (१,००० नाम)।

क्षीरवती, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करके देवपूजन में लगा हुआ व्यक्ति वाजपेय-यज्ञ का फल प्राप्त करता है (३. ८४, ६८. ६९)।

क्षीरसागर (क्षीरनिधि)—इसकी उत्पत्ति (५. १०२, ४)। अन्य नामों द्वारा इसका उल्लेख : क्षीरोद (१. २, ९१; ६. ११, १०; १२. ३३६, २३; ३४०, ४५; १३. १४, २४०); क्षीरोदधि (१२. ३३६, २७)।

१. क्षीरोद (क्षीरसागर)—इसका मन्थन (१. २, ९१)। 'क्षीरोदमथ सागरम्', (३. २८३, २१)। ६. ११, १०। 'मेरोरुत्तरभागे तु क्षीरोदस्यानुकूलतः', (१२. ३३६, २३) । क्षीरोदममृताशयम्', (१२. ३३९, ३६)। क्षीरोदस्यानुकूलतः' (१२. ३४०, २६) । 'क्षीरोदस्योत्तरं कूलं' (१२. ३४०, ४५)। 'क्षीरोदस्य समुद्रस्य', (१२. ३५०, ९) । 'क्षीरोदमिव सागरम्', (१३. १४. २४०)। 'क्षीरोदः सागराणाम्', (१३. १४, ३२५)। 'क्षीरोदः सागरः', (१३. १४, ३५८)। देखिये **क्षीरोदधि** भी।

२. क्षीरोद = शिव (१,००० नाम)।

क्षीरोदधि (क्षीरसागर)—'क्षीरोदधेर्योत्तरतो हि द्वीपः श्वेतः', (१२. ३३५, ८)। 'क्षीरोदधेरुत्तरतः श्वेतद्वीपो महाप्रभः', (१२. ३३६, २७)।

क्षीरी, उत्तरकुरु-वर्ष के कुछ वृक्षों का नाम है जो सदैव षड्विध रसों से युक्त अमृत के समान दूध का प्रस्रवण करते रहते हैं; इनके फलों में इच्छानुसार वस्त्र तथा आभूषण भी प्रगट होते हैं (६. ७, ४. ५)।

क्षुत = शिव (१,००० नाम)।

१. क्षुद्र, एक जाति का नाम है (१३. ४८, २५)।

२. क्षुद्र = शिव (१,००० नाम)।

क्षुद्रक (बहु० °काः), एक देश तथा उसके निवासियों का नाम है (२. ५२, १५)। ये दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (६. ५१, १६)। 'क्षुद्रकमालवाश्च', (६. ५९, ७६. १३६)। इन लोगों ने भीष्म का अनुसरण किया (६. ८७, ७)। पूर्व समय में राम ने इनका वध किया था (७. ७०, ११)। अर्जुन ने इनका वध किया (८. ५, ४८)।

क्षुद्रलुब्ध = शिव (१,००० नाम)।

क्षुप, एक ऋषि का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ८, १३)। "ब्रह्मा ने अनेक वर्षों तक अपने मस्तक पर एक गर्भ धारण किया। जब एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो गये तब ब्रह्मा को छींक आयी और वह गर्भ नीचे गिर पड़ा। उससे जो बालक प्रगट हुआ उसका नाम क्षुप रखा गया। ब्रह्मा के यज्ञ में यही प्रजापति क्षुप ऋत्विज हुये (१२. १२२, १६. १७)।" शिव ने इन्हें समस्त प्रजाओं का अधिपति बना दिया (१२. १२२, ३५)। लोकपालों ने शिव के दण्ड को इन्हें दिया और इन्होंने उसे सूर्यपुत्र मनु को दे दिया (१२. १२२, ३८. ३९)। प्रजा की रक्षा के लिये मनु ने लोकपालों से प्राप्त खड्ग इन्हें दिया और इन्होंने उसे इक्ष्वाकु को दिया (१२. १६६, ७३)। उन राजाओं में एक यह भी थे जो कार्त्तिक मास में मांस-भक्षण नहीं करते थे (१३. ११५, ७५)। 'क्षुपश्च राजर्षिः', (१३. १६५, ५६)। ये प्रसन्धि के पुत्र और इक्ष्वाकु के पिता थे (१४. ४, ३)। तुकी० **प्रजानाम् अधिपः, प्रजापति।**

क्षुब्ध = शिव (१,००० नाम)।

क्षुभा—'क्षुभया सहिता मैत्री याश्चान्या भूतमातरः। ताश्च सर्वा नमस्यामि पान्तु मां शरणागतम् ॥', (३. ३, ६९)।

क्षुर = शिव (१,००० नाम)।

क्षुरकर्णी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २५)।

क्षेत्र—देहधारियों का यह शरीर (६. ३७, १)। इसका वर्णन (६. ३७, ५. ६)।

क्षेत्रज्ञ—इस शरीर को जाननेवाला जीवात्मा जिसे बहुधा कृष्ण (विष्णु) के साथ समीकृत किया गया है : १. ७४, ३१; ९०, १३; ९२, ९; ९३. १. ६; ३. १२, १७ (= कृष्ण); ८८, २७ (= कृष्ण); २१३, २०; ५. ३३, १००; ६. ३७, १–३ (= कृष्ण). २६; १२. ४७. ५२ (क्षेत्रे क्षेत्रज्ञमासीनं = कृष्ण); १८७, २५; २४१. १८; ३१३, १३; ३१४. १४; ३३४, ३० (= पुरुष). ४१; ३३८, ३ (पाँचवा नाम = महापुरुष); ३३९, २८. ४० (वासुदेव); ३४०. ७५; ३४४, १८ (वासुदेव); ३४८, ५८ (हरिः); ३५१. ६ (= पुरुष); १३. १४९, १५ (= विष्णु, १,००० नाम); १४. ३४. १२ (= कृष्ण); ४३, ३६ (= पुरुष)।

क्षेत्रात्मन् = कृष्ण : १२. ४७. ५२।

क्षेम, एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो क्रोधवशसंज्ञक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७. ६५)। द्रोणाचार्य ने इसका वध किया था (७. २१. ५३)।

१. क्षेमक, कश्यप और कद्रू से उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ३५, ११)।

२. क्षेमक, एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में विराजमान होते थे (२. ४, २२)। पाण्डवों की ओर से इन्हें भी रण-निमन्त्रण भेजा गया था (५. ४. २३)।

क्षेमकृत् = विष्णु (१,००० नाम)।

क्षेमङ्कर, जयद्रथ के साथी, त्रिगर्तदेश के एक राजा का नाम है जिसका कोटिकास्य ने द्रौपदी को परिचय दिया (३. २६५, ६. ७)। नकुल ने इसका वध किया (३. २७१, १६)।

क्षेमदर्शिन्, कोसलराज का नाम है (१२. ८२, ६)। कालकवृक्षीय मुनि ने इसे उपदेश दिया जिसके बाद इसने उन्हें अपना पुरोहित बनाया (१२. ८२, १७; १०४. ३)। 'क्षेमदर्शीय इतिहासः', (१२. १०४. २)।

क्षेमधन्वन्, एक कौरव-पक्षीय प्रधान रथी का नाम है जो दुर्योधन के अनुगामी सहायकों में था (६. १७. २७)। उन मृत योद्धाओं में एक यह भी था जिसका शवदाह किया गया (११. २६. ३३)।

१. क्षेमधूर्ति, एक या अधिक राजाओं का नाम है। कोधवश संज्ञक गण के अंश से उत्पन्न राजाओं में से एक (१. ६७. ६४)। इसे पाण्डवों की ओर से रणनिमन्त्रण भेजे जाने का विचार (५. ४. १८)। इसने सात्यकि से युद्ध किया (७. २५, ४७)। इसने धृतराष्ट्र के तीन पुत्रों का समर्थन किया (७. ९५, ३६)। इसने बृहत्क्षत्र पर आक्रमण किया (७. १०६, ८)। बृहत्क्षत्र ने इसका मस्तक काट दिया (७. १०७, १. ३. ५)। भीमसेन ने इसका वध किया (८. ५, ४४)। कुलूत राज क्षेमधूर्ति का भीमसेन ने वध किया था (८. १२, २५. ३२, ३९. ४१. ४३)।

२. क्षेमधूर्ति, एक कौरव योद्धा का नाम है जिसका सात्यकि ने वध किया था (९. २१, ८)।

क्षेममूर्ति, धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम है (१. ६७, १००)।

क्षेमवाह, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६६)।

क्षेमवृद्धि, राजा शाल्व के मंत्री और सेनापति का नाम है जो साम्ब द्वारा पराजित हुये थे (३. १६, ११. १३. १४. १६)।

क्षेमशर्मन्, एक कौरव योद्धा का नाम है जो द्रोण द्वारा निर्मित गरुड़-व्यूह के ग्रीवाभाग में स्थित थे (७. २०, ६)।

क्षेमा, एक दिव्य अप्सरा का नाम है जो अन्य अप्सराओं के साथ अर्जुन के जन्मोत्सव पर नृत्य करने के लिये उपस्थित हुई थी (१. १२३, ६२)।

क्षेमि, क्षेमकुमार सत्यधृति का नाम है। इन्हें चितकबरे, विशालकाय, वश में किये हुये, सुवर्ण की माला से विभूषित, ऊँचे और शुभलक्षण अश्वों ने युद्धभूमि में पहुँचाया (७. २३, ५८)।

क्षेम्य = शिव : १४, ८. १५।

१. क्षोभण = शिव (१,००० नाम)।

२. क्षोभण = विष्णु (१,००० नाम)।

क्षौद्र, एक जाति का नाम है (१३. ४८, २१)।

ख

१. खं = सूर्य : ३. ३, १७।

२. खं = कृष्ण : ३. १२, २२।

३. खं = शिव (१,००० नाम)।

१. खग, एक कश्यप-वंश में उत्पन्न नाग का नाम है (५. १०३, १०)।

२. खग = शिव (१,००० नाम)।

खगम, पूर्वकाल के एक तपोबल सम्पन्न ब्राह्मण का नाम है जो सहस्रपाद ऋषि के मित्र थे। (१. ११, १)। इनके शाप से सहस्रपाद ऋषि 'डुण्डुभ' सर्प हो गये (१. ११, २–४)।

खगराज् = गरुड़ : ९. १७, ५९।

खगेश्वर = गरुड़ : १. २३, २२।

खचर = शिव (१,००० नाम)

खचारिन् = स्कन्द : ३. २३२, ८।

१. खट्वाङ्ग, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. ५५, १३)।

२. खट्वाङ्ग, इलविला के पुत्र महाराज दिलीप का दूसरा नाम है (७. ६१, १०)।

खट्वाङ्गधारिन् = शिव : १०. ७, ४।

खट्वाङ्गिन् = शिव (१,००० नाम)।

खड्ग, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६७)।

खड्गजिह्व = शिव (१,००० नाम)।

खड्गिन् = शिव (१,००० नाम)।

खड्गोत्पत्तिकथन (म्र)—"नकुल ने भीष्म से पूछा कि खड्ग और धनुष में से कौन श्रेष्ठ शस्त्र है; खड्ग का किस प्रकार और किसने सर्वप्रथम निर्माण किया था; और इसके प्रयोग की शिक्षा देनेवाला कौन प्रथम शिक्षक था। भीष्म ने कहा : "पूर्वकाल में यह सम्पूर्ण जगत एक महासागर था। उसी में पितामह ब्रह्मा का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रह्मा ने तब वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, भूमि और राक्षस-समूह की रचना की। तदनन्तर उन्होंने लौकिक शरीर धारण करके मरीचि आदि पुत्रों को उत्पन्न किया। प्रचेताओं के पुत्र दक्ष ने साठ कन्याओं को जन्म दिया जिन्हें ब्रह्मर्षियों ने पत्नी-रूप में प्राप्त किया। इन्हीं कन्याओं से सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम जगत उत्पन्न हुआ। ब्रह्मा ने इन समस्त प्राणियों की सृष्टि करके उनके ऊपर वेदोक्त सनातन धर्म के पालन का भार रक्खा। आचार्य और पुरोहितगणों सहित देवता, आदित्य, वसुगण, रुद्रगण, साध्यगण, मरुद्गण तथा अश्विनीकुमार आदि सभी उस सनातन धर्म में प्रतिष्ठित हुये। भृगु, अत्रि, अङ्गिरा प्रभृत सिद्ध मुनि, वसिष्ठ, गौतम, अगस्त्य, नारद, पर्वत, वालखिल्य, आदि ऋषि, वानप्रस्थ तथा पृश्निगण, सभी ब्रह्मा की आज्ञा के अधीन रहकर सनातनधर्म का पालन करने लगे। परन्तु हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष, विरोचन, शम्बर आदि दानवों और दैत्यों ने धर्म-मर्यादा का उल्लङ्घन करते हुए अधर्म करने का ही निश्चय किया। ये सभी दैत्य और दानव साम, दाम और भेद इन तीनों उपायों का अतिक्रमण करके केवल दण्ड द्वारा समस्त प्रजाजनों को पीड़ित करने लगे। तदनन्तर ब्रह्मर्षियों सहित ब्रह्मा हिमालय के शिखर पर उपस्थित हुये और जगत का कार्य सिद्ध करने के लिये वहीं ठहर गये। कई सहस्र वर्ष व्यतीत होने पर ब्रह्मा ने वहाँ एक यज्ञ आरम्भ किया। उसी यज्ञमण्डप में अग्नि को इधर-उधर बिखेर कर एक भयंकर भूत प्रगट हुआ। उसे देखकर ब्रह्मा ने महर्षियों, देवताओं, तथा गन्धर्वों से कहा : 'मैंने ही इस भूत का चिन्तन किया था। यह असि नामधारी प्रवल आयुध है जिसे मैंने सम्पूर्ण जगत की रक्षा तथा असुरों के वध के लिये प्रगट किया है।' तदनन्तर वह भूत अपने रूप का परित्याग कर तीस अङ्गुल से कुछ बड़े खड्ग के रूप में प्रकाशित होने लगा। उस खड्ग को ब्रह्मा ने भगवान रुद्र को दिया। रुद्र ने उस खड्ग से दैत्यों और दानवों का भीषण संहार किया। उस समय कितने ही दानव धरती में घुस गये, अनेक पर्वतों में छिप गये, कुछ आकाश में उड़ चले, तथा बहुत से जल में समा गये। उस समय महर्षियों और देवताओं ने महादेव का पूजन किया। महादेव रुद्र ने उस दानवों के रक्त से रंजित खड्ग को अत्यन्त सत्कार के साथ विष्णु को दे दिया। विष्णु ने उसे मरीचि को, मरीचि ने महर्षियों को, और महर्षियों ने उसे इन्द्र को दिया। इन्द्र ने उसे लोकपालों को और लोकपालों ने सूर्यपुत्र मनु को दिया। मनु से वह खड्ग क्षय, इक्ष्वाकु, पुरूरवा, आयु, नहुष, ययाति, पूरु, अमूर्तरया, भूमिशय, और भरत के पास होता हुआ ऐलविल के पास पहुँचा। फिर उनके पास से धुन्धुमार, काम्बोज, मुचुकुन्द, मरुत्त, रैवत, युवनाश्व, रघु, हरिणाश्व, शुनक, उशीनर, भोज, शिवि, प्रतर्दन, अष्टक और पृषदश्व के पास से होता हुआ द्रोणाचार्य को प्राप्त हुआ। उन्हीं द्रोणाचार्य से वह पुनः कृपाचार्य को मिला और उनसे पाण्डवों तथा नकुल को प्राप्त हुआ। भीष्म ने नकुल को बताया कि उस खड्ग का नक्षत्र कृत्तिका, देवता अग्नि, गोत्र रोहिणी, तथा गुरु रुद्र है। उसके आठ गोपनीय नाम हैं : १. असि; २. विशासन; ३. खड्ग; ४. तीक्ष्णधार; ५. दुरासद, ६. श्रीगर्भ; ७. विजय; और ८. धर्मपाल। सब आयुधों में खड्ग ही श्रेष्ठ है। रुद्र ने सर्वप्रथम इसका संचालन किया। पृथु ने सर्वप्रथम धनुष का उत्पादन किया था। युद्धविशारद पुरुषों को सदैव ही खड्ग का पूजन करना चाहिये। खड्ग-प्राप्ति का यह उत्तम प्रसङ्ग सब प्रकार से सुनकर पुरुष इस संसार में कीर्ति प्राप्त करता है और देहत्याग के पश्चात् अक्षय सुख का भागी होता है। (१२. १६६)।"

खण्डखण्डा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २०)।

खण्डपरशु = विष्णु। शब्द की व्युत्पत्ति : 'मन्त्रैश्च संयुयोजाशु सोऽभ-वत्परशुर्महान् ॥ क्षिप्तश्च सहसा तेन खण्डनं प्राप्तवांस्तदा। ततोऽहं खण्डपरशुः स्मृतः परशुखण्डतात ॥', (१२. ३४२, ११६. ११७)। १३. १४९, ७४ (१,००० नाम)।

खनक (खोदनेवाला) : १. १४७, १. १६. २०।

खनीनेत्र, एक राजा का नाम है जो विविंश के ज्येष्ठ पुत्र और सुवर्चस् के पिता थे। ये पराक्रमी होने और अकण्टक राज्य पाने पर भी प्रजा के अनुरागभाजन नहीं हो सके। अतः इन्हें राज्यच्युत करके इनके पुत्र सुवर्चस् को गद्दी पर बैठाया गया (१४. ४, ६–९)।

१. खर, एक राक्षस का नाम है जो विश्रवा का पुत्र और शूर्पणखा का सहोदर भ्राता था (३. २७५, ८)। यह धनुर्विद्या में विशेष प्रवीण तथा ब्राह्मणद्रोही था (७. २७५, १२)। रावण, कुम्भकर्ण तथा विभीषण की तपस्या के समय यह अपनी बहन शूर्पणखा सहित उनकी सेवा करता था (३. २७५, १९)। शूर्पणखा के कारण इसने राम दाशरथी के साथ युद्ध किया (३. २७७, ४२)। श्रीराम ने तपस्वीजनों की रक्षा के लिये खर आदि चौदह सहस्र राक्षसों का संहार किया (२. ३८, २९ के बाद गीप्रे० सं० में पृ० ७९४ पर दाक्षिणात्य पाठ)। राम दाशरथी द्वारा इसके वध का उल्लेख (७. १०७, २८)।

२. खर, राक्षसों के एक दल का नाम है जिसने वानर-सेना पर आक्रमण किया था (३, २८५, २)।

खरकर्णी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २६)।

खरजङ्घा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २२)।

खरी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ६)।

१. खलिन् = शिव (१,००० नाम)।

२. खलिन् (बहु० °नाः), दानवों के एक समुदाय का नाम है जिसे वसिष्ठ ने अपने तेज से दग्ध कर दिया था (१३. १५५, १७. २२. २४)।

खलु, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, २८)।

खश (बहु °शाः), खस भी, एक बर्बर जाति का नाम है जो वसिष्ठ की गाय के मूत्र से उत्पन्न हुये थे (१. १७५, ३७)। ये युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, ३)। ये दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (५. १६०, १३०: 'खशा')। ५. १६१, २१ (खश); ७. ११, १८ (खश); १२१, ४२ (सात्यकि से युद्ध किया); ८. २०, १०; ४४, ४७ (खश); ७३, १९ (खश)।

खाण्डव, यमुना-तटवर्ती एक वन का नाम है (१. १, १५२)। 'दहनं खाण्डवस्य', (१. २, ८८)। 'खाण्डवस्य दाहनम्', (१. २, १२८)। तक्षक पहले खाण्डववन तथा कुरुक्षेत्र में निवास करता था (१. ३, १३९)। १. ६१, ४५; १२३, ४१; २२३, १. ६ (यह इन्द्रसखा तक्षक का निवास-स्थान था अतः इन्द्र इसकी रक्षा करते थे)। १० (अग्नि ने इसका दहन करने की इच्छा की)। १२–१६. ७५. ७८. ७९ (अग्नि ने सात बार इसे जलाने का निष्फल प्रयास किया था); २२४, ७. ९. १० (ब्रह्मा ने अग्नि को अर्जुन तथा श्रीकृष्ण की सहायता लेने का परामर्श दिया)। १४; २२५, ३५ (खाण्डवं दावं); २२६, २ (प्राणिनः खाण्डवालयाः)। ४. १२. १९; २२७, २. ५२ (प्राणिनः खाण्डवालयाः); २२८, १ (°वालयाः)। १७. २२. २७ (°वालयान् : श्रीकृष्ण और अर्जुन ने इस वन में निवास करने वाले प्राणियों को बचकर भागने से रोका; इन्द्र तथा देवों आदि ने अर्जुन और श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया परन्तु पराजित हुये; तक्षक का पुत्र अश्वसेन और मयासुर बच गये); २२९, २०. २१. ३३. ३४; २३१, १६; २३२,

२५ (इसमें निवास करनेवाले शार्ङ्गकों का वृत्तान्त); २३४, ५; ३. ३९, ४६; ४८, १४; ४९, २२; ४. २, ११; १९, १५; ३६, १८; ३७, १६. ३४; ४५, ३७; ५. २२, १३; ५२, १० (अर्जुन द्वारा अग्नि को तृप्त हुये तैंतीस वर्ष व्यतीत हो गये); ६०, ८; ६२, ८; १५८, ६. ९८, ६; ७. ११, २१; १८५, १५; ८. ४२, २४; ४६, ९; ६८, ११; ७९, ५८; ८७, ६९; ८९, ४१; ९०, १३. ५२; ९. ३३, ३३; ५६, १७; १३. १५८, २५; १५. ३८, ११; १७. १, ३८।

खाण्डवदाह (खाण्डव वन का दाह)—'खाण्डवदाहाख्यम्', (१. २, ४६)।

खाण्डवदाहपर्व (न्), महाभारत के १९वें अवान्तर पर्व का नाम है जो आदिपर्व के २२२ से २२७ अध्यायों के अन्तर्गत आता है। "धृतराष्ट्र और भीष्म की आज्ञा से इन्द्रप्रस्थ में रहते हुये पाण्डवों ने अन्य अनेक राजाओं को अपने अधीन कर लिया। युधिष्ठिर के आश्रय में समस्त प्रजा सुखपूर्वक निवास करती थी। एक बार ग्रीष्म ऋतु में अर्जुन तथा श्रीकृष्ण यमुनातट पर द्रौपदी और सुभद्रा आदि रानियों के साथ विहार के लिये गये। जब ये लोग यमुनातट पर बैठे थे तो उस समय एक तेजस्वी ब्राह्मण वहाँ उपस्थित हुआ (१. २२२)।" 'वह ब्राह्मण वेश में स्वयं अग्निदेव थे। उन ब्राह्मण ने अर्जुन और कृष्ण से कहा: 'इन्द्र सदा इस खाण्डववन की रक्षा करते हैं अतः मैं इसे जला नहीं पाता। इस वन में इन्द्र का सखा, तक्षक नाग, अपने परिवार सहित सदा निवास करता है; उसी के लिये वज्रधारी इन्द्र सदैव इसकी रक्षा करते हैं। आप दोनों अस्त्रविद्या में पूर्ण प्रवीण हैं, अतः आप इस वन को भस्म करने में मेरी सहायता कीजिये।' जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने यह बताते हुये कि अग्नि क्यों खाण्डववन को भस्म करना चाहते थे, राजा श्वेतकि की कथा का वर्णन किया। अर्जुन ने अग्नि की प्रार्थना स्वीकार करके उनसे एक दिव्य धनुष एवं रथ आदि माँगा। साथ ही उन्होंने श्रीकृष्ण के लिये भी एक ऐसे शस्त्र की याचना की जिससे वे नागों और निशाचरों का वध कर सकें (१. २२३-२२४)।" "अर्जुन के ऐसा कहने पर अग्नि ने वरुणदेव का चिन्तन किया और उनके प्रगट होने पर उनसे गाण्डीव धनुष, दो अक्षय तरकस, तथा अश्वों से सन्नद्ध एक रथ लेकर अर्जुन को दिया। तदनन्तर अग्नि ने श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र, तथा वरुण ने कौमोदकी नामक गदा प्रदान किया। इस प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन आयुधों से सुसज्जित होकर युद्ध के लिये सन्नद्ध हो गये और अग्नि ने खाण्डववनदाह आरम्भ किया (१. २२५)।" "जब खाण्डववन जलने लगा तो उसमें से भगाने का प्रयास करनेवाले जीवों को अर्जुन और कृष्ण रोकने लगे। उस समय देवता भी भयभीत होकर इन्द्र की शरण में गये। इन्द्र ने मेघ-वर्षा कराकर अग्नि को बुझाने का प्रयास किया। आरम्भ में वह समस्त वर्षाजल अग्नि के ताप से आकाश में ही सूख गया (१. २२६)।" "जब इन्द्र ने और अधिक वर्षा की तो अर्जुन ने अपने अस्त्रों से उसे विसर्जित कर दिया। उस समय तक्षक, जो कुरुक्षेत्र गया था, वन में उपस्थित नहीं था। परन्तु उसका पुत्र, अश्वसेन, वहीं था। उसको माता सर्पिणी ने उसे निगल कर अग्नि से बचाने का प्रयास किया परन्तु अर्जुन ने उस सर्पिणी का मस्तक काट दिया। उस समय अश्वसेन को बचाने की इच्छा से इन्द्र ने आँधी और वर्षा द्वारा अर्जुन को मोहित कर दिया, जिससे तक्षक का पुत्र अश्वसेन संकट से मुक्त होने में सफल हो गया। तब अर्जुन ने उस नाग को शाप देते हुए कहा: 'तू आश्रयहीन हो जायगा।' अग्नि और श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन का अनुमोदन किया। इन्द्र ने कुपित होकर आकाश में मेघ उत्पन्न किये परन्तु अर्जुन ने वायव्यास्त्र द्वारा उसे विसर्जित कर दिया। तदनन्तर इन्द्र ने शिलाओं और मन्दराचल के शिखर द्वारा अर्जुन पर आक्रमण किया परन्तु सब निष्फल हुआ। गरुड़, नागों, असुरों, गन्धर्वों, यक्षों, तथा राक्षसों ने भी अर्जुन पर आक्रमण किया परन्तु सब पराजित हो गये। श्रीकृष्ण ने अपने चक्र से दैत्यों और दानवों को पराजित कर दिया। तब देवताओं के महाराज इन्द्र ने अपने वज्र को अर्जुन और कृष्ण पर फेंका। उस समय यम ने कालदण्ड, कुबेर ने गदा, वरुण ने पाश, स्कन्द ने शक्ति, अश्विनीकुमारों ने चमकीली ओषधियाँ, धाता ने धनुष, जय ने मुसल, त्वष्टा ने पर्वत, अंश ने शक्ति, मृत्यु ने फरसा, अर्यमा ने परिघ, मित्र ने चक्र, तथा पूषा, भग और सविता ने धनुष और खड्ग लेकर अर्जुन तथा श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया। रुद्र, वसु, मरुद्गण, विश्वेदेव, साध्यगण, तथा अनेक अन्य देवता नाना प्रकार के अस्त्रों को लेकर अर्जुन तथा कृष्ण पर टूट पड़े। इस प्रकार भयंकर युद्ध होने लगा (१. २२७)।" "श्रीकृष्ण ने अपने चक्र से दानवों, निशाचरों, दैत्यों, पिशाचों, पक्षियों, नागों, और पशुओं का संहार किया। जब देवतागण श्रीकृष्ण और अर्जुन के बल से खाण्डववन की रक्षा करने तथा अग्नि को बुझाने में असफल हो गये तो वहाँ से पलायित हो गये। देवताओं को विमुख हुआ देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन की प्रशंसा करते हुये इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न हुये। उस समय इन्द्र को सम्बोधित करके यह आकाशवाणी हुई: 'तुम्हारे सखा, नागप्रवर तक्षक इस समय यहाँ नहीं हैं। वासुदेव और अर्जुन को किसी भी प्रकार युद्ध में जीता नहीं जा सकता क्योंकि ये दोनों पुरातन देवता नर और नारायण हैं। खाण्डववन के इस विनाश को तुम प्रारब्ध का ही कार्य समझो।' आकाशवाणी सुनकर इन्द्र क्रोध तथा अमर्ष का त्याग कर के स्वर्गलोक लौट गये। तदनन्तर खाण्डववन का प्रबल दाह आरम्भ हुआ। उसमें निवास करनेवाले पशुओं के आर्तनाद से गङ्गा तथा सागर में निवास करनेवाले मत्स्य भी भयभीत हो उठे। वन में निवास करनेवाले विद्याधरों की भी यही दशा थी। इस प्रकार अरण्य जन्तुओं के मांस, रुधिर, और मेदे के समूह से अत्यन्त तृप्त होकर अग्निदेव ऊपर आकाशचारी हो धूमरहित हो गये। श्रीकृष्ण और अर्जुन द्वारा दिया हुआ वह इच्छानुसार भोजन पाकर अग्निदेव अत्यन्त प्रसन्न और तृप्त हुए। इसी समय तक्षक के निवासस्थान से निकलकर सहसा भागते हुये मयासुर पर श्रीकृष्ण की दृष्टि पड़ी। अग्नि ने उस असुर को भस्म कर देने की इच्छा की जिसपर श्रीकृष्ण ने उसे मारने के लिये अपना चक्र उठा लिया। उस समय मयासुर अर्जुन की शरण में गया जिसपर अर्जुन ने उसकी रक्षा की। अग्नि उस वन को पन्द्रह दिनों तक जलाते रहे और उस दाह से उन्होंने केवल छः व्यक्तियों को ही बचा रहने दिया जिनके नाम ये हैं: अश्वसेन, मय, और चार शार्ङ्गक (१. २२८)।"

खाण्डवप्रस्थ = इन्द्रप्रस्थ (देखिये वस्था०)।

खाण्डवायन, परशुराम द्वारा दी हुई स्वर्णवेदी को खण्ड-खण्ड करके आपस में बाँटने वाले ब्राह्मणों का नाम है (३. ११७, १३)।

खाशीर, पूर्वोत्तर भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ६८)।

खिल, महाभारत के परिशिष्ट भाग, हरिवंश, का दूसरा नाम (१. २, ८२. ८३. ३७९. ३८०)।

खेचर, देवदूत के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. ९. १०. १२)।

ख्याता, स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम है (९. ४६, २०)।

ग

गगनमूर्धन्, कश्यप और दनुवंशीय एक विख्यात दानव का नाम है (१. ६५, २४)। वह पाँच केकय-राजकुमारों में से एक के रूप में उत्पन्न हुआ था (१. ६७, १०)।

१, गङ्गा, एक प्रसिद्ध नदी का नाम है: 'गङ्गाकूले' (१. २, १११)। 'नागवेश्मानि गङ्गायास्तीर उत्तरे', (१. ३, १३६)। 'गङ्गायाः', (१. ६१, ११)। यह भीष्म की माता थीं (१. ६३, ९१)। शान्तनु द्वारा गङ्गा के गर्भ से पुत्रों के रूप में अष्टवसुओं का जन्म हुआ (१. ६७, ७४)। 'नर-नारायणस्थानं गङ्गयेवोपशोभितम्', (१. ७०, २९)। ययाति ने गङ्गा और यमुना के बीच के समस्त प्रदेश को पूरु को दे दिया (१. ८७, ५)। 'शान्तनुः खलु गङ्गा भागीरथीमुपयेमे तस्यामस्य जज्ञे देवव्रतो नाम यमाहु-

भीष्ममिति', (१. ९५, ४७)। 'गङ्गा सरिच्छ्रेष्ठा समुपायात्पितामहम्', (१. ९६, ४)। महाभिष तथा गङ्गा को मनुष्यों के बीच जन्म लेने का शाप दिया गया (१. ९६, ७)। 'गङ्गोवाच', (१. ९६, १७. १८. २०)। 'गङ्गया वसवः सह', (१. ९६, २३)। इन्होंने प्रतीप से कहा कि ये उनके पुत्र, शान्तनु, के साथ विवाह करेंगी (१. ९७, १. २)। 'गङ्गामनुचचारैक-सिद्धचारणसेवितामं', (१. ९७, २६)। त्रिपथगामिनी दिव्यरूपिणी देवी गङ्गा ही अत्यन्त सुन्दर मनुष्य देह धारण करके शान्तनु को पत्नी-रूप में प्राप्त हुईं (१. ९८, ८)। 'जातं जातं च सा पुत्रं क्षिपत्यम्भसि भारत। प्रीणाम्यहं त्वामित्युक्त्वाः गङ्गा स्रोतस्यमज्जयत ॥', (१. ९८, १३)। 'गङ्गा जह्नुसुता महर्षिगणसेविता', (१. ९८, १८)। गङ्गा से विवाह करने के पश्चात् शान्तनु ने उनसे जो पुत्र उत्पन्न किये उनमें से सात को गङ्गा ने जल में फेंक दिया था, परन्तु आठवें पुत्र, भीष्म, को शान्तनु ने बचा लिया (१. ९८, २४)। 'जाह्नवी', (१. ९९, ४)। "शान्तनु के पूछने पर गङ्गा ने बताया कि पूर्वकाल में वरुण ने जिन्हें पुत्र रूप में प्राप्त किया था वे वसिष्ठ नामक मुनि ही 'आपव' के नाम से विख्यात हैं। तदनन्तर गङ्गा ने यह बताया कि किस प्रकार वसिष्ठ द्वारा वसुओं को शाप प्राप्त हुआ (१. ९९)।" 'गङ्गामनुसरन्नदीम्', (१. १००, २३)। 'नदीं गङ्गा', (१. १००, २७)। १. १००, ३०. ३१. ३३-३९ (इन्होंने भीष्म को शान्तनु को दे दिया)। १. १०४, ३९; १२७, १६; १२८, २९; १३०, ३४; १३३, ११; १३८, ७३ (माकन्दीमथ गङ्गायास्तीरे); १४९, ११. १३-१५; १५०, १९; १६६, २; १६७, ५; १७०, ३. ५. १४. १७. १९। "प्राचीन काल में हिमालय के स्वर्णशिखर से निकली हुई गङ्गा सात धाराओं में विभक्त हो समुद्र में जाकर मिल गई। जो पुरुष गङ्गा, यमुना, प्लक्ष की जड़ से प्रगट हुई सरस्वती, रथस्था, सरयू, गोमती, और गण्डकी नामक सात नदियों का जल पीते हैं उनके पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं। यह गङ्गा अत्यन्त पवित्र नदी है। आकाश ही इसका तट है। आकाशमार्ग से विचरती हुई गङ्गा देवलोक में अलकनन्दा नाम धारण करती है। यही वैतरणी होकर पितृलोक में बहती है। वहाँ पापियों के लिये इसे पार करना अत्यन्त कठिन होता है। इस लोक में आकर इसका नाम गङ्गा होता है। ऐसा श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास का कथन है, (१. १७०, १९-२२)।" १. १९७, १०. ११; २१४, ११; २१५, ७; २२८, ३२ (गङ्गोदधिचराज्ञषाः); २. ३, ११ (भागीरथी); १७, २० (गङ्गायमुनयोर्मध्ये); २०, २९; ४२, ११ (त्रिकूटस्थां गङ्गां त्रिपथगामिव); ३. १२, ८२; ४२, २०; ४७, १३ (गङ्गा सिद्धचारणसेविता); ८३, १०१; ८४, ३५ (गङ्गायमुनयोर्मध्ये). ३८ (गङ्गायाश्च नरश्रेष्ठ सरस्वत्याश्च संगमे). ८१ (गोमतीगङ्गयोश्चैव संगमे); ८५, ४ (गङ्गायास्तत्र⋯सागरस्य च संगमे). ६९. ७५ (यमुना गङ्गया सार्धं संगतालोकपावनी। गङ्गायमुनयोर्मध्यं पृथिव्या जघनं स्मृतम). ८५ (गङ्गायमुनसंगमे). ८७-९० (गङ्गा कलियुगे स्मृता). ९२ (गङ्गायां मगधेषु). ९४. ९६. ९७; ८७, १४ (गङ्गा यत्र नदी पुण्या यस्यास्तीरे भगीरथः). १८ (गङ्गायमुनयोर्वीर संगमं लोकविश्रुतम्); ८८, ९; ९०, २१ (बिभेद तरसा गङ्गा गङ्गाद्वारं). २६ (उष्णतोयवहा गङ्गा शीततोयवहा पुरा); ९३, १०; ९५, ५ (गङ्गायमुनयोश्चैव संगमे)। "अगस्त्याश्रम के समीप ही देवगन्धर्वसेवित पुण्यसलिला भागीरथी है जो आकाश में वायु की प्रेरणा से फहरानेवाली श्वेत पताका के समान सुशोभित है। यह (गङ्गा) क्रमशः नीचे-नीचे के शिखरों पर गिरती हुई सदा तीव्र गति से बहती हुई शिलाखण्डों के नीचे इस प्रकार समाती जाती है जैसे भयभीत सर्पिणी विवर में घुसी जा रही हो। पहले भगवान शङ्कर की जटा से गिरकर प्रवाहित होनेवाली समुद्र की प्रियतमा यह गङ्गा सम्पूर्ण दक्षिण दिशा को इस प्रकार आप्लावित कर रही है जैसे माता अपनी सन्तान को नहला रही हो (३. ९९, ३१-३३)।" ३. १०७, ६७; १०८. ४. १४. १५ (गङ्गोवाच). २१. २७; १०९, ६. ८ (हिमवतः सुता). ९ (गगनमेखलाम्)। "भूतल पर पहुँचकर गङ्गा ने भगीरथ से कहा : 'मैं किस मार्ग से चलूँ ? तुम मुझे मार्ग बताओ। मैं तुम्हारे लिये ही इस भूतल पर उतरी हूँ।' यह सुनकर भगीरथ, जहाँ महात्मा सगरपुत्रों के शरीर पड़े थे, वहाँ गङ्गा के जल से उन शरीरों को प्लावित करने के लिये उस स्थान से प्रस्थित हुये। भगवान शङ्कर गंगा को मस्तक पर धारण करके देवताओं के साथ कैलास पर्वत चले गये। भगीरथ ने गङ्गा के साथ समुद्रतट पर जाकर वरुणालय समुद्र को बड़े वेग से भर दिया और गङ्गा को अपनी पुत्री बना लिया। इस प्रकार लोमश जी ने त्रिपथगा (स्वर्ग, पाताल और पृथिवी पर गमन करनेवाली) गङ्गा के अवतरण का प्रसङ्ग सुनाया। (३. १०९, १४-१९)।" ३. ११४, २ (ये सागर में गिरती हैं); ११५, २८; १३४, ६ (नदीषु गङ्गा प्रवरा यथैव); १३५, ७. ३२. ३६; १३९, २ (सप्तविधा : यहाँ सदा अग्नि प्रज्वलित रहते हैं, परन्तु इस अद्भुत तीर्थ को कोई मनुष्य नहीं देख सकता). १४. १६; १५८, ९८ (महागङ्गा⋯पुण्यां देवनदीं शुभाम्); १८७, १९ (समुद्रमहिषीं). २१. २३. २४; १८८, १०२ (मार्कण्डेय ने इन्हें भी नारायण के उदर में देखा); २१७, ४ (यथा रुद्राक्ष सम्भूतो गङ्गायां कृत्तिकासु); २२२, २२ (अग्नि की माता नदियों में एक यह भी है); २५२, ४६ (गङ्गौघप्रतिमा); ३०८, २५. २६ (कर्ण जिस मंजूषा में बन्द था वह यमुना से गङ्गा में बह कर आगई); ५. १९, ३०; ५१, ३५; १११, ८ (अत्र गङ्गां महादेवः पतन्तीं गगनाच्च्युताम्। प्रतिगृह्य ददौ लोके मानुषे ब्रह्मवित्तम); १२०, १ (गङ्गायमुनसङ्गमे); १२१, १२ (गङ्गां गामिव गच्छन्तीमालम्ब्य); १३५. १८ (गत्वा गङ्गेव सागरम्); १३९, ११; १४४, २७; १५१, ५४; १५८, १३ (गङ्गयेव प्रवृद्धया); १६०, १६; १६६, १० (मकरा इव⋯गङ्गाविक्षोभयिष्यन्ति); १७८, ९४ (राम जामदग्न्य से युद्ध करने से विरत करने के लिये ये भी भीष्म के पास आई); १९६, १२। "पर्वत शिखर से उतरने के बाद भागीरथी गङ्गा चन्द्रमस् सरोवर में गिरती हैं। शिव ने गङ्गा को १,००,००० वर्षों तक अपने मस्तक पर धारण किया (६. ६, २९-३१)।" ६. ९, १४. ३६; ११, ३१; १८, १८; १९, १४; ८३, ५ (गङ्गायाः सुरनद्या वै स्वादु भूत्वा यथोदकम्); ११९, ९७ (हिमवतः सुता); ७. १०, ६६; १७, ४९; ३०, ३०; ५४, २४; ६०, १. ५-६ (तस्यांके निषसाद ह। तथा भागीरथी गङ्गा उर्वशी चाभवत् पुरा). ८; ६८, ८; ८०, २७; १५६, ६७; ८. २८, ४४ (उम्मत्तगङ्गाप्रतिमम्); ३४, २४; ४४, ६; ४६, ८७; ६०, ७३; ९. १८, ११; ३७, ४९; ४४, ८. ९. १४. २०. ३५. ४०; ४६, ५०. ९९; ११. ११, १९; १२, ५; १४, ४; २३, ४२; २६, ४४; २७, १. ५. ६. ३०; १२. १, २३; २९, ४६. ६८ (यस्याङ्के निषसाद ह। गङ्गा भागीरथी तस्यादुर्वशी चाभवत्पुरा). ११८ (यावत्यः सिकता⋯गङ्गाः); ४६, १६; ४९, ८१; १०९, ८; ११३, ७. ८ (गङ्गोवाच); १७०, ४ (देशान् गङ्गानिषेवितान्); २२८, ६; २५८, २२; २८३, १७ (गङ्गा च सरितां श्रेष्ठा सर्वतीर्थजलोद्भवा); ३२४, १२ (सरिता श्रेष्ठा मेरुपृष्ठे); ३४७, ५० (गङ्गा और सरस्वती नारायण के कूल्हे हैं); ३५३, १ (महापद्मे पुरोत्तमे। गङ्गाया दक्षिणे तीरे); ३५५, ११; १३. ४, ३. १६. १७ (कान्यकुब्ज के पास गङ्गातट पर वह अश्वतीर्थ स्थित है जहाँ वरुण के वरदान के अनुरूप ऋचीक के चिन्तन करते ही गङ्गा के जल से चन्द्रकान्ति के समान एक सहस्र अश्व प्रगट हो गये थे); २५, १५ (यत्र भागीरथी गङ्गा पततेदिशमुत्तराम्); २६, २६. २७. ३०. ३२-५३. ५६-७२. ७४-८४. ८६. ८८-९२. ९४-९६. ९८. १००. १०१. १०३-१०६ (छब्बीसवें अध्याय के इन श्लोकों में गङ्गा का अत्यन्त विस्तृत वर्णन है); ३०, ११. १८; ३५, २०; ४३, १८; ५०, ६. ८. १५; ५३, ५६. ५४, २२; ६८, ३ (ग्रामः⋯गङ्गायमुनयोर्मध्ये यामुनस्य गिरेरधः); ७३, ४२ (यथा हि गङ्गा सरितां वरिष्ठा); ७७, ८; ८५, ११-१२ (रुद्रस्य तेजः प्रस्कन्नमग्नौ निपतितं च यत्। तत्तेजोऽग्निर्महद्भूतं द्वितीयमिति पावकम् ॥ वधार्थं देवशत्रूणां गङ्गायां जनयिष्यति). ५५ (गङ्गां भागीरथीं). ५७-५९. ७०. ७२ (गङ्गोवाच); १०२, ४६; १०३, २४ (स्रोतश्च यावद्गङ्गायाः). २७ दीर्घकालं हिमवति गङ्गायाश्च दुरुत्सहाम्। मूर्ध्ना धारां महादेवः शिरसायामधारयत); १२५, ४८; १४६, १९ (गगनाद्गां गता देवी गङ्गा). २१ (गङ्गायाः सरितां वराः). २४ देवनदी गङ्गा). (२६. ३२; १५५, २३; १६५,

१२. २०; १६८, ३०; १४. १, ३; ४४, १४ (त्रिपथगा गङ्गा नदीनामग्रजा स्मृता); ८१, ११; १५. १९, ५. ६; ३१, २०. २२; ३७, ५. ६. १८. ३३; ३९, ११; १८. ३, ३९ (गङ्गा त्रिलोकगाम्). ४१ (गङ्गादेवनदीं)। तुकी० **अकाशगङ्गा, भगीरथसुता, भागीरथी, शैलराजसुता, शैलसुता, देवनदी, हिमवती, जाह्नवी, जह्नकन्या, जह्नसुता, समुद्रमहिषी, त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी।**

२. गङ्गा = शिव (१,००० नाम)।

गङ्गातोयार्द्रमूर्धज = शिव (१,००० नाम)।

गङ्गाद्वार, उस स्थान का नाम है जहाँ गङ्गा पर्वतमालाओं से निकलकर समतल भूमि या मैदानों में प्रवेश करती हैं; इसी स्थान पर प्रतीप ने तपस्या की थी (१. ९७, १)। भरद्वाज का आश्रम यहीं था (१. १३०, ३३)। अपनी तीर्थयात्रा के समय अर्जुन यहाँ पधारे थे (१. २१४, ६. १०. ३५) 'गङ्गाद्वारे महाभाग देवगन्धर्वसेविते; (३. ८१, १४)। ३. ८४, २७; ८९, १५; ९०, २१ (शैलं...बिभेद तरसा गङ्गा गङ्गाद्वारं); ९७, ११; १४०, ७; १४२. ९ (एतस्याः सलिलं मूर्ध्नि वृषाङ्क पर्यधारयत्), १५६, ९; २७२, २५; ९. ३८, २८; १२. २८३, २१; २८४, ३। "गङ्गाद्वार, कुशावर्त, बिल्वक तीर्थ, नील पर्वत, तथा कनखल में स्नान करके पापरहित हुआ व्यक्ति स्वर्गलोक को जाता है। जहाँ उत्तर दिशा में भागीरथी गङ्गा गिरती हैं और जहाँ उनका स्रोत तीन भागों में विभक्त हो जाता है, वहीं भगवान् महेश्वर का त्रिस्थान नामक तीर्थ है। जो मनुष्य एक मास तक निराहार रहकर वहाँ स्नान करता है उसे देवताओं का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। सप्तगङ्ग, त्रिगङ्ग, और इन्द्रमार्ग में पितरों का तर्पण करनेवाला व्यक्ति यदि पुनर्जन्म लेता है तो उसे अमृत-भोजन मिलता है (१३. २५, १३-१७)।" भीष्म ने इसी स्थान पर शान्तनु का श्राद्ध-कर्म किया था (१३. ८४. ११)। 'पुण्या गङ्गाद्वारमथापि च; (१३. १६५, २६)। 'गङ्गाद्वारं ययौनृप; (१५. ३७, १०)। इसी स्थान पर धृतराष्ट्र, कुन्ती और गान्धारी ने अग्नि में प्रवेश किया था (१५. ३९, १४. १५)।

गङ्गामहाद्वार, गङ्गोत्तरी से भी आगे उस स्थान का नाम है जहाँ हिमालय के शिखर से गङ्गा उतरती हैं। एक सत्यवादी महात्मा, धामामुनि, इसकी रक्षा करते हैं। उनकी मूर्ति, आकृति, तथा संचित तपस्या का परिणाम किसी को ज्ञात नहीं होता। इस स्थान से आगे जानेवाला व्यक्ति हिमराशि में गल जाता है। नरनारायण को छोड़कर अन्य कोई व्यक्ति कभी गङ्गामहाद्वार से आगे नहीं गया (५. १११, १६-२०)।

गङ्गा-यमुनयोस तीर्थम्, एक तीर्थ का नाम है। यहाँ तथा कालञ्जर तीर्थ में एक मास तक स्नान और तर्पण करने से दस अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है (१३. २५, ३५)।

गङ्गावतरण(म्)—"राजा सगर ने अपने पौत्र, अंशुमान, से कहा : 'यज्ञ में विघ्न पड़ जाने से मैं मोहित और दुःख से पीड़ित हूँ। तुम अश्व को लाकर नरक से मेरा उद्धार करो।' महात्मा सगर के ऐसा कहने पर अंशुमान् उस स्थान पर गये जहाँ पृथिवी विदीर्ण की गई थी। उन्होंने उसी मार्ग से समुद्र में प्रवेश किया और महात्मा कपिल तथा यज्ञिय अश्व को देखा। उन्होंने कपिल मुनि को अपने आने का प्रयोजन बताया। प्रसन्न होकर कपिल ने अंशुमान् से वर माँगने के लिये कहा। अंशुमान् ने पहले तो यज्ञकार्य की सिद्धि के लिये वहाँ उस अश्व के लिये प्रार्थना की और दूसरा वर अपने पितरों को पवित्र करने की इच्छा से माँगा। महर्षि कपिल ने अंशुमान् को वह यज्ञिय अश्व प्रदान करते हुये कहा : 'तुम्हारा पौत्र शङ्कर को सन्तुष्ट करके सगरपुत्रों को पवित्र करने के लिये स्वर्गलोक से गङ्गा को ले आयेगा।' अंशुमान् उस अश्व को लेकर सगर के यज्ञमण्डप में आये और अपने पूर्वजों के विनाश का जो दृश्य देखा था उसे भी बताया। तदनन्तर अंशुमान् की प्रशंसा करते हुए सगर ने अपने यज्ञ को पूर्ण किया। देवताओं ने भी सगर का सत्कार किया। सगर ने वरुणालय को अपना पुत्र माना और दीर्घकाल तक शासन करने के पश्चात् अपने पौत्र, अंशुमान् को, राज्यभार सौंपकर स्वर्गलोक चले गये। अंशुमान् राज्य करने के पश्चात् अपने पुत्र दिलीप को राज्य सौंपकर परलोकवासी हुये। दिलीप ने गङ्गा को भूतल पर उतारने के लिये महान प्रयत्न किया परन्तु कोई फल नहीं हुआ। दिलीप को एक पुत्र हुआ जिसका नाम भगीरथ पड़ा। भगीरथ का राज्याभिषेक करने के पश्चात् दिलीप वन चले गये (३. १०७)।" "अपने पितरों के विनाश की कथा सुनकर भगीरथ ने अपने मन्त्री को अपना राज्य सौंप दिया और स्वयं हिमालय के शिखर पर तपस्या करने के लिये चले गये। भगीरथ ने फल-मूल, और जल का आहार करते हुये सहस्र वर्षों तक घोर तपस्या की। तदनन्तर गङ्गा ने साकार हो उन्हें दर्शन दिया। भगीरथ के निवेदन पर गङ्गा ने पृथिवी पर उतर कर सगर-पुत्रों की भस्मराशि को पवित्र करना स्वीकार कर लिया परन्तु भगीरथ से यह भी कहा कि वे तपस्या द्वारा शिव को प्रसन्न करें क्योंकि शिव के अतिरिक्त अन्य कोई उनके (गङ्गा के) स्वर्ग से गिरने के वेग को सहन नहीं कर सकेगा। गङ्गा का आदेश पाकर भगीरथ कैलास पर्वत पर जाकर शिव की आराधना करने लगे। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने शिव को प्रसन्न करके उनसे गङ्गा के वेग को धारण करने का निवेदन किया (३. १०८)।" "भगीरथ की प्रार्थना सुनकर शिव, भाँति-भाँति के अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित अपने भयंकर पार्षदों से घिरे हुये हिमालय पर आये। तदनन्तर उन्होंने भगीरथ से गङ्गा को भूतल पर उतारने के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया। भगीरथ के प्रार्थना करने पर और शङ्कर को खड़ा देख पुण्यसलिला रमणीय गङ्गा सहसा आकाश से नीचे गिरीं। उन्हें गिरते देख दर्शन के लिये उत्सुक महर्षियों सहित देवता, गन्धर्व, नाग तथा यक्ष वहाँ उपस्थित हुए। आकाश की मेखलारूप गङ्गा को शिव ने अपने ललाट देश में पड़ी हुई मोतियों की माला की भाँति धारण कर लिया। नीचे गिरती हुई गङ्गा तीन धाराओं में बँट गईं। गङ्गा के कहने पर भगीरथ उनको मार्ग दिखाते हुये उस स्थान पर लाये जहाँ सगर-पुत्रों के शरीर पड़े थे। शिव भी गङ्गा को धारण करने के बाद देवताओं के साथ कैलास पर्वत पर चले गये। राजा भगीरथ ने गङ्गा के साथ समुद्रतट पर जाकर वरुणालय समुद्र को अत्यन्त वेग से भर दिया और गङ्गा को अपनी पुत्री बनाया। तदनन्तर उन्होंने पितरों के लिये जलदान किया और पितरों का उद्धार होते ही सफल-मनोरथ हो गये (३, १०९)।"

गङ्गासुत = स्कन्द : ३, २३२, १५।

गङ्गाह्रद, एक तीर्थ का नाम है। कुरुक्षेत्र की सीमा में स्थित यौवन-तीर्थ के अन्तर्गत गङ्गाह्रद नामक एक कूप है जिसमें तीन करोड़ तीर्थों का वास है। इसमें स्नान करनेवाला व्यक्ति स्वर्गलोक में जाता है (३. ८३, १७६. २०१; १३, २५, ३४)।

गङ्गोद्भेद, एक तीर्थ का नाम है जिसमें तीन रात उपवास-व्रत करनेवाला व्यक्ति वाजपेय यज्ञ का फल पाता है (३. ८४, ६५)।

१. गज, एक महापराक्रमी वानरराज का नाम है जो एक अरब सेना के साथ श्रीराम के पास आये थे (३. २८३, ३)।

२. गज, सुबलपुत्र शकुनि के छोटे भ्राता का नाम है जिसने अन्य भ्राताओं को साथ लेकर पाण्डव-सेना के दुर्जय व्यूह में प्रवेश किया था (६. ९०, २७-३०)। इरावान् ने इसका वध किया (६. ९०, ४५-४६)।

गजकर्ण, कुबेर की सभा में उपस्थित रहनेवाले उनके सेवक, एक यक्ष, का नाम है (२. १०, १६)।

गजपुर—हास्तिनपुर : १३. १६७, ६।

गजराज : ऐरावत : १२. २२७, १७।

गजशिरस्, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६०)।

गजसाह्वय = हास्तिनपुर : १. ४१, ९; ७४, १३; १०९, २४; ११३, १७. ३६. ४५; १२९, १; १३१, १६; २. ४७, १५; ८०, २८; ३. १, ९; ३३, ८५; ५. १७७, १०; १७८, ७९; १४. ५१, ५१; ५२, २; १५. १६, ३; २४, १८; ३६, १५; १७. १, २५।

गजहन् = शिव (१,००० नाम)।

गजाह्वय = हास्तिनपुर : २. ७९, १७; ८०, २१; ३. ६, १८; ५. १७६, ४८; १२. ५८, ३०; १४. १४, १७; १५. १५, १२; १८. ५, ३४।

गजेन्द्र = ऐरावत (?) : ९. २०, ९।

गजेन्द्रकर्ण, कुबेर की सेवा में उपस्थित रहनेवाले एक यक्ष का नाम है (२. १०, १६)।

१. गण = शिव (१,००० नाम)।

२. गण, सेनागणना का एक पारिभाषिक शब्द है : तीन गुल्मों का एक गण होता है (१. २, २१)।

गणकर्तृ = शिव (१,००० नाम)।

गणकार = शिव (१,००० नाम)।

गणनायक = गणेश : १. १, ७७।

गणा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ३)।

गणाधिप = शिव (१,००० नाम)।

गणाध्यक्ष = शिव : १०. ७, ८; १२. २८४, १४७ (१,००० नाम)।

गणित, एक सनातन विश्वेदेव का नाम है जो काल की गति के ज्ञाता हैं (१३. ९१, ३६)।

१. गणेश = महाभारत को लिपिबद्ध करनेवाले विघ्नेश्वर भगवान गणनायक गणेश (१. १, ७४. ७५–७९. ८३)।

२. गणेश = शिव (१,००० नाम)।

गणेशान = १. गणेश : १. १. ७५।

गणेश्वर = विष्णु (१,००० नाम)।

गण्डक (बहु०), एक देश और उसके निवासियों का नाम है जिन्हें अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने पराजित किया था (२. २९, ४)।

गण्डकण्डू, कुबेर की सेवा करनेवाले एक यक्ष का नाम है (२. १०, १५)।

गण्डकी, एक नदी का नाम है जो गङ्गा की सात धाराओं में से एक है। इसका जल पीनेवाले मनुष्य तत्काल पापरहित हो जाते हैं (१. १७०, २०–२१)। श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन ने इन्द्रप्रस्थ से गिरिव्रज जाते समय इसे पार किया था (२. २०, २७)। गण्डकी नदी सब तीर्थों के जल से उत्पन्न है और यहाँ जाने से तीर्थयात्री अश्वमेध यज्ञ का फल पाता और सूर्यलोक में जाता है (३. ८४, ११३)। अग्नि की उत्पत्ति की स्थानभूता नदियों में गण्डकी (?) की भी गणना है (३. २२२, २२)। हिरण्यवती, अर्थात् गण्डकी, भारतवर्ष की प्रधान नदियों में से एक है (६. ९, २५)।

गण्डलिन = शिव (१,००० नाम)।

गण्डसाह्वया, उन नदियों में से एक का नाम है जिन्हें अग्नि की उत्पत्ति का स्थान कहा गया है (३. २२२, २२)।

गण्डा, सप्तर्षियों की सेविका, एक दासी का नाम है जो शूद्र पशुसख की पत्नी थी (१३. ९३, २२)। इसने वृषादर्भि से प्रतिग्रह के दोष बता कर उससे भय प्रगट किया (१३. ९३, ५०)। इसने यातुधानी से अपने नाम का अभिप्राय बताया (१३. ९३, १०२)। इसने मृणाल की चोरी के विषय में शपथ खायी (१३. ९३, १३३. १३४)।

गतागत = शिव (१,००० नाम)।

गताध्वर = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

गति = शिव (१,००० नाम)।

गतितालिन्, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६७)।

गतिसत्तम = विष्णु (१,००० नाम)।

गद, श्रीकृष्ण के अनुज का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये थे (१. १८६, १७)। ये भी रैवत पर्वत के उत्सव में उपस्थित थे (१. २१९, १०)। अर्जुन और सुभद्रा के लिये दहेज ले कर ये द्वारका से इन्द्रप्रस्थ आये (१. २२१, ३२)। श्रीकृष्ण के द्वारका आने पर इन्होंने उनका स्वागत किया (२. २, ३५)। युधिष्ठिर के मयनिर्मित सभाभवन में प्रवेश करने के समय ये भी वहाँ उपस्थित थे (२. ४, ३०)। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में ये भी पधारे थे (२. ३४, १६)। शाल्व के आक्रमण के विरुद्ध इन्होंने द्वारका नगरी की रक्षा-व्यवस्था में सहयोग दिया था (३. १५, ९)। 'गदाग्रजो दुराधर्षः......माधवः', (३. १८, १७)। 'गदसारणौ', (३. १८, २०)। अक्रूर और साम्ब के साथ-साथ ये भी युद्ध में पाण्डवों की सहायता करेंगे (३. ५१, २८)। 'गदोमुल्कौ', (३. १२०, १९)। 'गदाग्रजाय', (३. १८३, १४)। 'गदपूर्वजस्य', अर्थात् श्रीकृष्ण (५. २, १)। 'गदप्रद्युम्नसाम्बांश्च', (५. ३, १९)। 'गदसाम्बोद्धवादिभिः', (५. १५७, १७)। 'गदाग्रजः', (६. ४३, ८९)। 'गदश्च साम्बश्च', (७. ११, २७)। 'गदो वा सारणो वापि', (७. ११०, ६०)। इन्होंने श्रीकृष्ण के चक्र के लिये कभी भी प्रार्थना नहीं की (१०. १२, ३३)। 'सौकुमार्ये पुनर्गदे', (१२. ८१, ७)। १३. १४, ४२; १४. ६६, ३; ८६, ५ (युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में आये); १६. ३, १६. ४५ (मौसल युद्ध में गद को मारा गया देख कर विरोधियों पर श्रीकृष्ण को अत्यन्त क्रोध हुआ)।

गदपूर्वज = कृष्ण : ५. २, १।

१. गदाग्रज = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

२. गदाग्रज = विष्णु (१,००० नाम)।

१. गदाधर = विष्णु (१,००० नाम)।

२. गदाधर = कुबेर : ६. ५०, ७।

गदापर्वन्, से गदायुद्धपर्व का तात्पर्य है (१८. ६, ६६)।

गदायुद्ध, से भी गदायुद्धपर्व के गदायुद्ध का तात्पर्य है (१. २, ७१)।

गदा[युद्ध]पर्वन्, शल्यपर्वान्तर्गत तीसरे अवान्तर पर्व का नाम है जिसमें गदायुद्ध का वर्णन किया गया है। "जब पाण्डुपुत्रों ने समराङ्गण में समस्त सेनाओं का संहार कर डाला तो अत्यन्त खिन्न होकर अश्वत्थामा, कृतवर्मा, और कृपाचार्य उस सरोवर के पास गये जहाँ दुर्योधन छिपा था। वहाँ उन लोगों ने युद्ध करने के विषय में दुर्योधन से बातचीत की। इसी समय व्याधों को दुर्योधन के छिपने के स्थान का पता लग गया और उन्होंने पाण्डवों को इसकी सूचना दी। पता पा कर युधिष्ठिर सेना सहित उस सरोवर पर आये। उन्हें देख कर कृपाचार्य आदि दूर हट गये (९. ३०)।" "पाण्डव उस द्वैपायन सरोवर पर आये जहाँ दुर्योधन छिपा था। वहाँ युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण का, और तालाब में छिपे दुर्योधन के साथ युधिष्ठिर का संवाद हुआ (९. ३१)।" "युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा कि वह सरोवर से बाहर निकल कर किसी एक पाण्डव के साथ गदायुद्ध के लिये तैयार हो। धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने बताया कि दुर्योधन एक बार में अपने किसी एक विपक्षी के साथ युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। युधिष्ठिर ने उसकी यह प्रार्थना स्वीकार करते हुये कहा कि यदि वह पाँच पाण्डवों में से किसी एक का भी वध कर देगा तो वह राजा बना रहेगा। तदनन्तर दुर्योधन ने सरोवर से बाहर निकल कर पाण्डवों को ललकारा। उस समय युधिष्ठिर ने उस पर अभिमन्यु को छल से मारने का व्यङ्ग किया (९. ३२)।" "श्रीकृष्ण ने इस प्रकार एकमात्र द्वन्द्वयुद्ध के दाँव पर ही सब कुछ लगा देने की जल्दीबाज़ी पर युधिष्ठिर की भर्त्सना की। भीम ने श्रीकृष्ण को आश्वासन दिया कि दुर्योधन गदायुद्ध में उनकी समता नहीं कर सकता। श्रीकृष्ण ने भीम की प्रशंसा करते हुये उन्हें दुर्योधन के साथ युद्ध करने तथा उसका वध कर देने के लिये प्रोत्साहित किया। सात्यकि ने भी भीमसेन की प्रशंसा की। भीमसेन ने दुर्योधन और युधिष्ठिर के समक्ष गर्वोक्ति की। दुर्योधन ने इसके विपरीत अत्यन्त मर्यादित उत्तर दिया जिस पर पाण्डवों तथा सृञ्जयों ने उसकी प्रशंसा की। उस समय हाथी चिग्घाड़ने और घोड़े हिनहिनाने लगे। पाण्डवों के शस्त्र भी अपनी ज्योति से प्रदीप्त हो उठे (९. ३३)।" "भीमसेन और दुर्योधन का गदायुद्ध जब आरम्भ होने ही को था कि बलराम जी अपने दो शिष्यों के बीच युद्ध होने के समाचार को सुनकर वहाँ उपस्थित हुये। पाण्डवों और श्रीकृष्ण आदि ने बलराम का पूजन किया। बलराम जी ने कहा : 'तीर्थयात्रा के लिये निकले हुये मुझे आज बयालीस दिन हो गये। मैं पुष्य नक्षत्र में चला था और श्रवण नक्षत्र में पुनः वापस आया हूँ। मैं अपने दोनों शिष्यों का गदायुद्ध देखना चाहता

हूँ ।' तदनन्तर वहाँ उपस्थित पाण्डवों और श्रीकृष्ण आदि ने बलराम का पूजनादि करके उन्हें गदायुद्ध देखने के लिये निमन्त्रित किया। उन लोगों के आग्रह पर बलराम वहाँ राजाओं के बीच बैठ गये। उस समय नीलाम्बर-धारी गौर कान्तिवाले बलराम आकाश में नक्षत्रों से घिरे चन्द्रमा की भाँति सुशोभित हो रहे थे (९. ३४)।" "जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने बताया कि बलराम जी तीर्थयात्रा के लिये निकल गये और यह कहा कि वे न तो पाण्डवों की सहायता करेंगे और न कौरवों की। बलराम ने मार्ग में ही रह कर अपने सेवकों को द्वारका जाकर वहाँ से तीर्थयात्रा में काम आनेवाली वस्तुयें, अग्निहोत्र की अग्नि तथा पुरोहितों आदि को ले आने के लिये कहा। तदनन्तर वे कुरुक्षेत्र से सरस्वती के स्रोत की ओर तीर्थयात्रा के लिये चल पड़े। उनके साथ ऋत्विज, सुहृद, अन्यान्य श्रेष्ठ ब्राह्मण, रथ, हाथी, घोड़े और सेवक, सभी थे। वे मार्ग में विभिन्न देशों के लोगों को उनकी मनोवाञ्छित वस्तुयें तथा निर्धनों को भोजन आदि देते चलते थे। तीर्थयात्रा समाप्त करने के बाद वे पुनः कुरुक्षेत्र आये। जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने **बलदेवतीर्थयात्रा** (देखिये बस्था०) का वर्णन किया (९. ३५-५४)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने कहा : बलराम को देख कर दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। बलराम के प्रस्ताव पर युधिष्ठिर आदि पाण्डव और दुर्योधन सरस्वती के दक्षिण स्थित समन्तपञ्चक आये। देवताओं, और चारणों ने दुर्योधन को साधुवाद दिया—दुर्योधन और भीमसेन का वर्णन। तदनन्तर दुर्योधन ने अतिपराक्रमी बलराम, श्रीकृष्ण, पाञ्चाल, सृञ्जय, केकयगण, तथा अपने भ्राताओं के साथ खड़े युधिष्ठिर से कहा कि वे सब लोग अब उसका और भीमसेन का गदायुद्ध देखें। दुर्योधन की बात सुनकर वहाँ उपस्थित सभी राजा बैठ गये और उनके बीच श्रीकृष्ण तथा नीलाम्बरधारी श्वेतकान्ति वाले बलराम भी बैठे। दुर्योधन और भीमसेन गदा हाथ में लेकर एक दूसरे के सम्मुख डट गये (९. ५५)।" "उस समय दुर्योधन के लिये अनेक अपशकुन प्रगट हुये। भीमसेन अत्यन्त उत्साह में भरे थे। भीम का दुर्योधन के साथ पहले वाग्युद्ध हुआ जिसमें दुर्योधन ने व्यर्थ गर्वोक्तियाँ करने की अपेक्षा युद्ध करने का आह्वान किया। सोमकों आदि ने दुर्योधन की प्रशंसा की। दुर्योधन की बात सुनकर भीमसेन ने गदा हाथ में लेकर युद्ध आरम्भ किया। उस समय हाथी बारंबार चिग्घाड़ने लगे, घोड़े हिनहिनाने लगे, तथा पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र प्रदीप्त हो उठे (९. ५६)।" "दुर्योधन और भीमसेन के गदायुद्ध का वर्णन : उसे देखकर देव, गन्धर्व, और मनुष्य चकित हो रहे थे। पाण्डव और सोमक भी भयभीत थे। युद्ध में दुर्योधन ने कौशिक मार्गों का आश्रय लेकर बार-बार उछल कर भीमसेन को धोखा देते हुये उनके वक्षस्थल पर प्रहार किया जिससे भीम मूर्च्छित हो गये। तदनन्तर उठ कर भीमसेन ने भी दुर्योधन की पसलियों पर प्रहार किया जिससे वह भूमि पर गिर पड़ा। उस समय सृञ्जय और पाण्डवगण हर्षनाद करने लगे। दुर्योधन ने भी शक्ति बटोर कर भीमसेन पर प्रहार किया जिससे उनका कवच छिन्न-भिन्न हो गया और वे भूमि पर गिर पड़े। दो घड़ी में पुनः चैतना लौटने पर भीमसेन रक्त से रंजित हुये अपने मुख को पोंछते हुये उठे और बलपूर्वक अपने को संभाल कर धैर्यपूर्वक पुनः युद्ध के लिये सन्नद्ध हो गये (९. ५७)।" "अर्जुन के पूछने पर दुर्योधन तथा भीमसेन के बलाबल के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण ने बताया—'दोनों की शिक्षा समान है, परन्तु बल में भीमसेन श्रेष्ठ हैं। दुर्योधन कौशल में चतुर है और उसका अभ्यास भी श्रेष्ठ है। धर्मयुद्ध में भीम उसे कभी पराजित नहीं कर सकते परन्तु छल का आश्रय लेने पर वे उसका उसी प्रकार वध कर देंगे जैसे देवताओं ने असुरों का तथा इन्द्र ने विरोचन और वृत्रासुर का वध कर दिया था। भीम ने दुर्योधन की जाँघें तोड़ देने की प्रतिज्ञा की थी। अतः आज वे अपनी उसी प्रतिज्ञा का पालन करते हुये मायावी दुर्योधन को माया से ही नष्ट कर डालें।' श्रीकृष्ण का यह वचन सुन कर अर्जुन ने भीमसेन को दिखाते हुये अपनी बायीं जाँघ को ठोंका। भीमसेन ने अर्जुन के संकेत को समझ लिया। द्वस्थान नामक पैतरे का आश्रय लेकर दुर्योधन ज्योंही ऊपर उछला, भीमसेन ने अपनी गदा से उसकी जाँघ पर प्रहार किया जिससे वह टूट गई। दुर्योधन के भूमि पर गिरते ही वहाँ बिजली की गड़गड़ाहट के साथ प्रचण्ड हवा चलने लगी, धूल की वर्षा होने लगी, और वृक्षों, वनों, एवं पर्वतों सहित पृथिवी काँपने लगी। इन्द्र ने आकाश से धूल एवं रक्त की वर्षा की। आकाश में यक्षों, राक्षसों, तथा पिशाचों का कोलाहल व्याप्त हो गया—अन्य अपशकुनों का वर्णन। इन अद्भुत उत्पातों को देख कर पाण्डवों सहित समस्त पाञ्चाल मन-ही-मन अत्यन्त उद्विग्न हो उठे। देवता, गन्धर्व, और अप्सराओं के समूह उस अद्भुत युद्ध की चर्चा करते हुये अपने-अपने अभीष्ट स्थानों को चले गये (९. ५८)।" "उस समय पाण्डव तथा सोमकगण अत्यन्त हर्षित हुये। भीमसेन ने दुर्योधन के कुकृत्यों की चर्चा करते हुये अपने बायें पैर से उसके मस्तक में ठोकर मारी और उसे छली तथा कपटी कहा। भीम के इस कार्य की श्रेष्ठ और धर्मात्मा सोमकों ने निन्दा की। युधिष्ठिर ने भी भीमसेन की इसके लिये निन्दा की और दुर्योधन के लिये विलाप करने लगे (९. ५९)।" "दुर्योधन पर नाभि के नीचे प्रहार हुआ देख कर भीमसेन पर बलराम अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और उनका वध कर देने के लिये उद्यत हुये। उस समय श्रीकृष्ण ने बलराम को समझा कर शान्त किया। बलराम (बलदेव) ने दुर्योधन की प्रशंसा करते हुये भीमसेन को शाप दिया और अपने रथ पर बैठ कर द्वारका चले गये। पाञ्चालादि भी अत्यन्त खिन्न हो गये थे। श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीमसेन, इत्यादि ने दुर्योधन के साथ विगत घटनाओं के सम्बन्ध में वार्तालाप किया (९. ६०)।" "पाण्डव सैनिकों ने भीमसेन की अत्यन्त प्रशंसा की। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के कुकृत्यों का उल्लेख करते हुये उस पर और अधिक आक्षेप करना निरर्थक बताया। 'श्रीकृष्ण की बात सुनकर क्रुद्ध दुर्योधन ने युद्ध में किये गये श्रीकृष्ण के कपट-व्यवहारों का उल्लेख किया। श्रीकृष्ण ने भी दुर्योधन को उसके कुकृत्यों का स्मरण दिलाते हुये बताया कि उन्हीं पापकर्मों के कारण उसका यह दुःखद अन्त हुआ है। दुर्योधन ने अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में गर्वोक्ति करते हुए उसे अत्यन्त गौरवपूर्ण बताया। उस समय दुर्योधन के मस्तक पर पुष्पों की वर्षा हुई और गन्धर्वों, अप्सराओं, तथा सिद्धों ने उसकी स्तुति की। पाण्डव और श्रीकृष्ण अपने वचनों पर लज्जित हुये। कौरव योद्धाओं के वध के लिये अपनाये गए कपट-व्यवहारों का श्रीकृष्ण ने समर्थन किया (९. ६१)।" "पाण्डवगण तब कौरव-शिविर में आये जो सूना और शोभाहीन हो रहा था। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना गाण्डीव और अक्षय तरकस लेकर रथ से उतरने के लिये कहा। तदनन्तर श्रीकृष्ण भी रथ से उतर गये जिसके बाद रथ के ध्वज पर बैठा वानर अन्तर्धान और रथ भी अश्वों आदि सहित अग्नि में भस्म हो गया, क्योंकि वह कर्ण और द्रोणाचार्य के ब्रह्मास्त्रों के तेज से पहले ही दग्ध था परन्तु श्रीकृष्ण के आसीन होने के कारण भस्म नहीं हुआ था। श्रीकृष्ण के रथ से उतरते ही वह अश्वों आदि सहित जलकर राख हो गया। श्रीकृष्ण ने युद्ध में विजय के लिये युधिष्ठिर को बधाई दी, परन्तु युधिष्ठिर ने इसका सारा श्रेय श्रीकृष्ण को ही दिया। पाण्डवों को कौरव-शिविर में प्रचुर सम्पत्ति मिली। श्रीकृष्ण के परामर्श पर पाण्डव तथा सात्यकि रात भर शिविर के बाहर ओघवती नदी के तट पर ही रहे। तदनन्तर उन लोगों ने गान्धारी के क्रोध को शान्त करने तथा धृतराष्ट्र को सान्त्वना देने के लिये श्रीकृष्ण को हस्तिनापुर भेजा। श्रीकृष्ण दारुक को रथ पर बैठा कर स्वयं भी उस पर बैठे और धृतराष्ट्र के पास चल पड़े। उनके रथ में शैब्य और सुग्रीव नामक अश्व सन्नद्ध थे (९. ६२)।" "जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने बताया कि युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को हस्तिनापुर इस लिये भेजा क्योंकि उन्हें भय था कि दुर्योधन को छलपूर्वक मारने के कारण अपनी तपस्या के प्रभाव से गान्धारी कहीं समस्त पाण्डवों को शाप से भस्मीभूत न कर दें। जब श्रीकृष्ण हस्तिनापुर पहुँचे तो उनके पहले ही व्यास वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने धृतराष्ट्र और गान्धारी को सान्त्वना दी। धृतराष्ट्र ने अपने चित्त के शान्त हो जाने का उन्हें आश्वासन दिया। तदनन्तर श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा के मन में जो भीषण संकल्प हुआ था उसका स्मरण किया।

वे सहसा उठकर खड़े हो गये और धृतराष्ट्र से विदा माँगी। धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण को विदा करते हुये कहा : 'आप शीघ्र जाकर पाण्डवों की रक्षा कीजिये।' श्रीकृष्ण ने पाण्डवों के पास लौट कर उन्हें समस्त वृत्तान्त बताया और उन्हीं के साथ सावधान होकर रहे (९. ६३)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने युद्ध भूमि में जाँघ टूट जाने से आहत पड़े दुर्योधन के विलापों का वर्णन किया। दुर्योधन का संदेश सुनाते हुये संजय ने कहा : 'उसने कहा है कि मेरे माता-पिता युद्ध-धर्म के ज्ञाता हैं। वे दोनों मेरी मृत्यु के समाचार से आतुर हो जायँगे। उन्हें सान्त्वना देते हुये कहियेगा कि मेरे समान सुन्दर अन्त किसका हुआ होगा। भीमसेन ने गदायुद्ध की मर्यादा का उल्लङ्घन करके मुझे मारा है। यह बात आप अश्वत्थामा, कृतवर्मा तथा कृपाचार्य को भी बता दें। पाण्डवों ने अधर्म में प्रवृत्त होकर अनेक बार युद्ध की मर्यादा को भङ्ग किया है, अतः आप लोग कभी भी उनका विश्वास न करें।' संजय ने बताया कि इसके बाद दुर्योधन ने संदेशवाहक दूतों को संदेश दिया। दुर्योधन का विलाप सुनकर सहस्रों मनुष्यों की आँखों में आँसू भर आये और वे दसों दिशाओं में भाग चले। उस समय समस्त दिशायें मलिन हो गईं और पृथिवी काँपने लगी। उन संदेशवाहकों ने आकर अश्वत्थामा को दुर्योधन का संदेश सुनाया और फिर अपने-अपने स्थान को चले गये (९. ६४)।" "अश्वत्थामा इत्यादि तब उस स्थान पर आये जहाँ आहत दुर्योधन पड़ा था। उसे चारों ओर से मांसभक्षी भूतों ने घेर रक्खा था। उसकी दशा देखकर अश्वत्थामा अत्यन्त विषादग्रस्त हो गये। दुर्योधन ने भी अपनी दशा का वर्णन करते हुए विलाप किया। अश्वत्थामा ने यह प्रतिज्ञा की कि वे सम्पूर्ण पाञ्चालों का वध कर डालेंगे। दुर्योधन ने अश्वत्थामा की बात सुनकर कृपाचार्य से जल मँगवाया और उससे अश्वत्थामा का कौरव सेनापति के रूप में अभिषेक किया। तदनन्तर दुर्योधन को वहीं छोड़कर अश्वत्थामा आदि लौट आये (९. ६५)।"

गदावसान, मथुरा के एक स्थान क नाम है। श्रीकृष्ण के द्वारा अपने जामाता कंस के मारे जाने पर अत्यन्त कुपित हो मगधराज जरासंध ने श्रीकृष्ण को मारने की दृष्टि से निन्यानवे बार अपनी गदा घुमाकर गिरिव्रज से मथुरा की ओर फेंका। वह गदा निन्यानवे योजन दूर मथुरा में गिरी। जिस स्थान पर वह गदा गिरी उसीका नाम गदावसान पड़ा (२. १९, २२–२५)।

गदिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. गन्ध = 'रूपंरसो गन्धश्च', (२. ११, २१)।

२. गन्ध = शिव (१,००० नाम)।

गन्धकाली, सत्यवती का दूसरा नाम है। भीष्म ने अपने पिता का प्रिय करने की इच्छा से उनका गन्धकाली से विवाह कराया (१. ९५, ४८)।

गन्धधारिन् = शिव (१,००० नाम)।

गन्धपाः, देवों के एक वर्ग का नाम है (१३. १८, ७५)।

गन्धपालिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. गन्धमादन, एक पर्वत का नाम है (१. २, १७६. १७७. १८७)। यहाँ कश्यप ने तपस्या की (१. ३०, ९)। यहाँ शेष ने तपस्या की (१. ३६, ३)। हिमवत् पर्वत को पार करके पाण्डु इस पर्वत पर आये (१. ११९, ४८)। उन मूर्तिमान पर्वतों में से एक जो कुबेर की सभा में उपस्थित रहता था (२. १०, ३२)। श्रीकृष्ण ने १०,००० वर्षों तक इस पर्वत पर निवास किया था (३. १२, ११)। इन्द्रलोक जाते समय अर्जुन ने हिमवत तथा इस पर्वत को पार किया था (३. ३७, ४१)। पाण्डवगण इस पर्वत की ओर चल पड़े (३. १४०, २२)। "युधिष्ठिर ने बताया कि यह वही पर्वत है जहाँ विशाल बदरी और नरनारायण का आश्रम है। इस पर यक्षगण निवास करते हैं। इसके क्षेत्र में सवारी से नहीं जाया जा सकता। जो क्रूर, लोभी और अशान्त हैं वे भी इस स्थान पर नहीं पहुँच सकते। जो अपने मन तथा इन्द्रियों पर संयम नहीं रखता उस मनुष्य को यहाँ आने पर मक्खी, मच्छर, सिंह, व्याघ्र, तथा सर्पों आदि का सामना करना पड़ता है। परन्तु जो संयमी होता है उसे इन जीवों का दर्शन तक नहीं होता। अतः हम लोग भी अर्जुन को देखने की इच्छा से अपने मन को संयम में रखकर गन्धमादन पर्वतमालाओं में प्रवेश करेंगे (३. १४१, २२–२८)।" इस पर्वत पर ऋषि, सिद्ध, देवता, गन्धर्व, अप्सरायें और किन्नर निवास करते हैं (३. १४३, २–७)। 'पाञ्चाल्या गच्छेयं गन्धमादनम्', (३. १४५, २)। यह पर्वत किन्नरों, यक्षों, गन्धर्वों, देवों, ब्रह्मर्षियों तथा अप्सराओं से सेवित है, और यहीं भीमसेन हनुमान से मिले थे (३. १४६, १६. २०. ३१. ५०)। इसी के निकट भीमसेन ने क्रोधवशों का वध किया था (३. १५२, १)। 'गन्धमादनसानुपु', (३. १५५, ३४)। ३. १५८, १७. १९ (वृषपर्वा का आश्रम इसी के निकट हिमवत के ढालों पर स्थित था). ३८–४० (वर्णन). ४८. ५९, ७७. ८०. ८५; १५९, २९; १६०, २. ४२ (भीम ने यहीं मणिमत् आदि का वध किया था); १६१, २९; १६४, २० (अर्जुन इन्द्रलोक से यहाँ आये); १७४, १०; १८८, ११३ (मार्कण्डेय ने इसे भी नारायण के उदर में देखा); २४४, ९; २७५, १३ (यहीं विश्रवस् का निवास था). ३३७ (लङ्का का साम्राज्य छिन जाने पर कुबेर इसी पर्वत पर निवास करने लगे); २८३, ५। 'कृष्णायां चरता प्रीतिं येन क्रोधवशा हताः। प्रविश्य विषमं घोरं पर्वतं गन्धमादनम् ॥', (५. ५०, २४)। 'कुञ्जभूतं गिरिं सर्वमभितो गन्धमादनम्। दीप्यमानौषधिगणं सिद्धगन्धर्वसेवितम् ॥', (५. ६४, १७)। नर और नारायण ने इसी पर्वत पर तपस्या की थी (५. ९६, १५)। 'किंपुरुषसिंहस्य गन्धमादनवासिनः', (५. १५८, ३)। 'आरुरुक्षुर्यथा मन्दः पर्वतं गन्धमादनम्', (५. १६०, ९४; १६१, १२)। 'परं माल्यवतः पर्वतो गन्धमादनः', (६. ६, ९)। "गन्धमादन पर्वत के शिखरों पर गुह्यकों के स्वामी कुबेर राक्षसों के साथ रहते और अप्सराओं के समुदायों के साथ आमोद-प्रमोद करते हैं। इस पर्वत के अन्यान्य पार्श्ववर्ती पर्वतों पर दूसरी-दूसरी नदियाँ हैं, जहाँ निवास करने वाले लोगों की आयु ११,००० वर्ष होती है। यहाँ के पुरुष हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी, और महाबली होते हैं। यहाँ की सभी स्त्रियाँ कमल के समान कान्तिवाली और देखने में अत्यन्त मनोरम होती हैं (६. ६, ३४–३६)।" देवों, ऋषियों इत्यादि ने यहीं पितामह की स्तुति की थी (६. ६५, ४२)। 'आशीविषा इव क्रुद्धाः पर्वते गन्धमादने', (६. ९२, ४)। 'महामेघो यथा वर्षं विमुञ्चन्गन्धमादने', (७. १२५, ६)। 'गन्धमादनयात्रायां दुर्गेभ्यश्च स्म तरिताः। पाञ्चाली च परिश्रान्ता पृष्ठेनोढा महात्मना ॥', (७. १८३, ३१)। त्रिपुर पर आक्रमण करते समय शिव ने गन्धमादन और विन्ध्यपर्वतों को अपना वंशध्वज बनाया (७. २०२, ७१)। यह गुह्यकों द्वारा रक्षित था (८. ४५, ३३)। राम ने यहीं तपस्या द्वारा महादेव को संतुष्ट किया था (१२. ४९, ३३)। 'महामेरोर्गिरेः शृङ्गात्प्रच्युतो गन्धमादनम्' (१२. ३३४, १३)। नर-नारायण ने यहाँ तपस्या की थी (१२. ३४२, १०८; ३४३, ३३)। यह उत्तर में स्थित है (१३. २१, १५)। 'गन्धमादनसन्निधौ', (१३. २५, ११)। सनत्कुमार आदि यहीं निवास करते हैं (१३. १४७, ४४)। 'पर्वतो गन्धमादनः', (१३. १६५, ३२)।

२. गन्धमादन, एक वानर-प्रमुख का नाम है जो गन्धमादन पर्वत पर निवास करता था। यह दस खरब सेना लेकर श्रीराम के पास आया (३. २८३, ५)।

३. गन्धमादन = रावण (?) : 'राक्षसाधिपतिश्चैव महेन्द्रोगन्धमादनः', (२. १०, ३०)।

गन्धमादन-प्रवेश—'युधिष्ठिर ने भीम से कहा कि वह सहदेव, धौम्य, सरथि, रसोइयों, सेवकों, आदि को लेकर गङ्गाद्वार लौट जाँय और नकुल, तथा लोमश ही उनके साथ आगे गन्धमादन क्षेत्र की ओर जाँय। परन्तु भीम लौटने के लिये तैयार नहीं हुये। द्रौपदी ने भी कहा कि वह मार्ग के कष्टों का सहन करने की क्षमता रखती हैं, अतः वह लौटेंगी नहीं। भीमादि की इस प्रकार उत्साहपूर्ण बातों को सुनकर अन्ततोगत्वा युधिष्ठिर सबके साथ आगे बढ़े। कुछ दूर जाने पर उन लोगों को कुलिन्दराज सुबाहु

का राज्य दिखाई पड़ा। उस राज्य में किरातों, तङ्गणों, एवं कुलिन्द आदि जंगली जातियों का निवास था। सुबाहु ने पाण्डवों का स्वागत किया। दूसरे दिन प्रातःकाल इन्द्रसेन आदि सेवकों, रसोइयों, और द्रौपदी के सारे सामानों को सुबाहु को सौंपकर पाण्डवगण द्रौपदी के साथ गन्धमादन की ओर अग्रसर हुये (३. १४०)।" "युधिष्ठिर ने भीम से कहा कि पाँच वर्षों से अर्जुन को न देख पाने के कारण वह अत्यन्त चिन्तित हैं। अर्जुन के गुणों का वर्णन करते हुये युधिष्ठिर ने कहा कि वे लोग दृढ़व्रती ब्राह्मणों के साथ अब गन्धमादन क्षेत्र में प्रवेश करेंगे (३. १४१)।" "जब पाण्डवगण मन्दराचल पर्वत की ओर चलने को उद्यत हुये तब लोमश जी के कहने पर सबने गङ्गा की वन्दना की। तदनन्तर ऋषियों आदि के साथ आगे बढ़ने पर सबने एक श्वेत पर्वत के समान पड़ी नरकासुर की अस्थियों को देखा। लोमश ने नरकासुर के वध और भगवान् वाराह द्वारा वसुधा के उद्धार की कथा सुनाया (३. १४२)।" "पाण्डवों ने ब्राह्मणों आदि के साथ ज्योंही गन्धमादन क्षेत्र में प्रवेश किया, त्योंही प्रबल आँधी चलने लगी। उसके बाद ही बिजली की गरज और भीषण वर्षा आरम्भ हुई। उस समय सबने वृक्षों आदि के नीचे शरण ली। सहदेव अग्निहोत्र की अग्नि ले कर चल रहे थे। आँधी-पानी के समाप्त होने पर जब पुनः सूर्य प्रगट हुआ तब सब आगे की यात्रा के लिये चले (३. १४३)।" "अभी सब लोग एक ही कोस चले थे कि द्रौपदी को मूर्च्छा आ गई। नकुल ने दौड़ कर उन्हें सहारा दिया। अन्य लोग भी वहाँ आ गये। द्रौपदी को अपनी गोद में लेकर युधिष्ठिर विलाप करने लगे। धौम्य आदि ब्राह्मणों ने युधिष्ठिर को सान्त्वना दी और तत्पश्चात् वे राक्षसों का विनाश करनेवाले मन्त्रों का जप तथा शान्तिकर्म करने लगे। महर्षियों द्वारा शान्ति के लिये मन्त्रपाठ होते समय पाण्डवों ने अपने शीतल हाथों से बार-बार द्रौपदी के अङ्गों को सहलाया। इस प्रकार उपचार से द्रौपदी की चेतना लौट आई। तब पाण्डवों ने उन्हें मृगचर्म पर सुलाया। उस समय नकुल और सहदेव अपने हाथों से उनका पैर दबाने लगे। युधिष्ठिर ने द्रौपदी को आश्वासन दिया। भीम ने कहा कि वहाँ ऊँचे-नीचे पर्वतीय प्रदेश में वे अकेले ही अन्य पाण्डवों तथा द्रौपदी को उठाकर ले चलेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि घटोत्कच भी सबको अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलेगा। युधिष्ठिर के कहने पर भीम ने घटोत्कच का स्मरण किया। पिता के स्मरण करते ही धर्मात्मा घटोत्कच हाथ जोड़े हुये वहाँ उपस्थित हुआ और अपने योग्य कार्य की आज्ञा माँगी। भीमसेन ने उसे अपने हृदय से लगा लिया (३. १४४)।" "घटोत्कच ने द्रौपदी को अपनी पीठ पर बैठाया तथा सैकड़ों अन्य राक्षस पाण्डवों और ब्राह्मणों को लेकर आकाश मार्ग से चलने लगे। उस समय महर्षि लोमश अपने ही प्रभाव से दूसरे सूर्य की भाँति सिद्ध मार्ग, अर्थात् आकाशमार्ग से चल रहे थे। इस यात्रा में सब ने म्लेच्छों से भरे हुये ऐसे देश देखे जो विविध प्रकार के रत्नों की खानों से भरे थे। उन पर्वत-शिखरों पर अनेक विद्याधर, वानर, किन्नर, किम्पुरुष, और गन्धर्व चारों ओर निवास करते थे। पाण्डवों ने उत्तम समृद्धि से सम्पन्न अनेक देशों को लाँघकर कैलास का दर्शन किया। उसी के निकट नर-नारायण का आश्रम था। वहीं मनोरम बदरी भी दिखाई पड़ा। उस बदरी वृक्ष के निकट पहुँच कर पाण्डव तथा ब्राह्मण राक्षसों के कन्धों से उतर गये। उस स्थान की शोभा अनुपम (वर्णन) थी। पाण्डव उस अत्यन्त दुर्गम देवर्षिसेवित प्रदेश में प्रतिदिन तर्पण और जप आदि करते हुये निवास करने लगे (३. १४५)।"

१. गन्धर्व (बहु °**र्वाः**), दिव्य गायकों और वादकों का नाम है। महाभारत के १४ लाख श्लोकों का गन्धर्वों के लोक में पाठ होता है (१. १, १०६)। श्रीशुकदेव जी ने गन्धर्वों, यक्षों तथा राक्षसों को महाभारत की कथा सुनाया (१. १, १०८)। 'बन्धं गन्धर्वैर्मोक्षणं चार्जुनेन', (१. १, १६७)। १. २, ९४. १९५; ४, ५ (मनुष्योरगगन्धर्वकथावेद); १७, ६ (मेरुं···देवगन्धर्वसेवितम्); २७, ८ (गन्धर्वाप्सरसां प्रियम्); ३१, ५; ३२, १६ (साध्याः प्राचीं सगन्धर्वा); ६३, ३४ (ये वसु उपरिचर की उपासना करते थे); ६४, ४१ (ये ब्रह्मा की वन्दना करते हैं). ४९ इन्होंने भी मनुष्यों में जन्म लिया); ६५, ५-७. ५१ (प्राधा के चार गन्धर्व-पुत्रों की गणना). ५२ (अमृतं ब्राह्मणा गावो गन्धर्वाप्सरसस्तथा). ५३ (संभवः···गन्धर्वाप्सरसां तथा); ६७, १ (गन्धर्वोरगरक्षसाम···सम्भवः). १४६ (गन्धर्वोरगरक्षसाम). १६१ (गन्धर्वाप्सरसां···अंशावतरणं). १६४ (अंशावतरणं श्रुत्वा देवगन्धर्वरक्षसाम); ६८, १ (अंशावतरणं···गन्धर्वाप्सरसां); ७०, १५ (गन्धर्वाप्सरसां गणैः); ७५, २७ (गन्धर्वोरगराक्षसान्); ८८, २. ४; १११, ३०; १२०, ११ (आक्रीडभूमि देवानां गन्धर्वाप्सरसां तथा); १२३, ५० (अर्जुन के जन्मोत्सव के समय ये भी उपस्थित हुये). ५२. ५४; १३९, २० (त्रिवर्षकृतयज्ञस्तु गन्धर्वाणामुपप्लवे···सौवीरः); १५२, ३५; १७०, ९ (मुहूर्तं···विहितं कामचाराणां यक्षगन्धर्वरक्षसाम्). ४८ (°जानामश्वानाम्). ४९ (देवगन्धर्ववाहास्ते). ५४ (गन्धर्वजाः···हयाः). ६१ (यक्षराक्षसगधर्न्वाः); १७३, ३३ (गिरिश्रेष्ठे देवगन्धर्वसेविते); १८७, ७ विश्वावसुर्नारदपर्वतौ च गन्धर्वमुख्याः). १३ (देवर्षिगन्धर्वसमाकुलम्); २१२, २ (देवगन्धर्वयक्षाणां··· ···सर्वरत्नानि); २१९, ७. ८. १२; २२५, ९ (देवदानवगन्धर्वैः पूजितम्); २२७, २४; २२८, २१; २. ४, ३७ (चित्रसेन के साथ ये भी युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित थे); ५, १ (युधिष्ठिर की सभा में इनकी उपस्थिति); ७, २४ (इन्द्र की सभा में); ८, ३८ (यम की सभा में); ९, २६ (वरुण की सभा में). १०, ९ (कुबेर की सभा में) १३. १४. २०. २५. २७. ३०; ११, २८ (ब्रह्मा की सभा में). ५६; १२, ३ (कुबेर की सभा में). ५ (इन्द्र की सभा में); २८, ५ (उत्तर में अर्जुन ने इन्हें विजित किया); ३. ३, ४० (ये भी सूर्य के रथ के पीछे-पीछे चले); २४, ७; ३१, २९; ४२, १३ (ये इन्द्र के साथ गये); ४३, ९ (इन्द्रलोक में). १०. २८ (गन्धर्वास्तुम्बुरुश्रेष्ठाः); ४४, १; ४६, १४. २७; ८२, २२. ९४; ८३, ६; ८४, ५. ४६; ८५, २६ (गोकर्ण में). ७२ (प्रयाग में); ९०, २०; ९९, ३१. ५८; १०४, २१. २४; १०५, ६; १०७, ६; १०९, ८; १३९, ६; १४३, ६; १४५, १४. २३; १४६, २१. ३०; १४८, २०; १४९, १३ (देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगा··· ···नासन्कृतयुगे); १५३, ८ (आक्रीडं राजराजस्य कुबेरस्य··· ···गन्धर्वैरप्सरोभिश्च देवैश्च परमार्चिताम्); १५४, ५; १५८, ९६. १००; १५९, १८; १६०, २२. ४७; १६१, २७. ३४. ३९; १६२. ११. २२; १६४, २; १६६, ४; १६८, १०. ३०. ४४. ५४. ५६; १७३, ४९. ७५; १७४, ७; १७५, १४. १७; १७७, २४; १७८, ५ (वनं रम्यं देवगन्धर्वसेवितम्); १७९, ३२; १८१, ३४; १८८, ७३. १२०; १८९, ३०; २०१, ५; २०२, २१; २०४, ३. ३८; २२९, ३९; २३०, ३८ (गन्धर्वाणां तु या माता सा गर्भं गृह्य गच्छति). ५१ (गन्धर्वाश्चापि यं दिव्याः संविशन्ति नरं भुवि। उन्मादयति स तु क्षिप्रं ग्रहो गान्धर्व एव सः); २३१, २६. ४३; २४०, २०. २५. २७. ३१; २४१, २. ६. ७. ९. १०. १२, १४-१६. २०-२२. २४. २७. ३१; २४२, १. ३. ४. ७. ९. ११. १२. १५. १७; २४३, १०. २१; २४४, ७. १३. १६. १९. २१, २२; २४५, १-४. ६-८. १०. १३. १५. १६. १८. २०; २४६, १. १३. १७. १८; २४७, १०. १२; २४८, १. २. ७. १०. ११. १६; २४९, ५. ९ (चित्रसेन के नेतृत्व में गन्धर्वों ने कौरवों को बन्दी बना लिया परन्तु पाण्डवों ने कौरवों को मुक्त कराया); २५३, ७; २६१, ६; २७५, २५. ३३; २७६, ८; २८१. ३. १०. १३; २९०, २७. ३१; २९१, ३. २०. ४८. ४९; ३१३, ३३; ४. ८, ५ (विराट ने भीमसेन को गन्धर्वराज या पुरन्दर समझा); ९, ३० (द्रौपदी ने बताया कि वह पाँच गन्धर्वों की पत्नी है). ३१ (पुत्रा गन्धर्वराजस्य महासत्त्वस्य कस्यचित्). ३२. ३४; १२, १२; १४, ४८; १६, ४२. ४४; २१, २३-२५; २२, १३. १७. २८. ९०; २३, १४; २४, १. ४. ९. १०. १३. १५. २८. २९; २५, ३. २१; ३०, ५; ४३, ४; ४५, १३. ३६; ५०, १७; ५६, ८. १२ (भीष्म और अर्जुन के युद्ध को देखने के लिये आये); ५८, ७१; ७०, १२; ५. १०, ११. १३. २१. ४१; ११, ७. १५; १२, २. १२. २४; १५, १८; १६, १३. २३; १७, २१; १८, १; २९, १६; ३०, १३; ४४, २१; ६१, २०; ६४, १७; ९७, १८; १०९, ९; १११, ६. १०; ११६, ३; १२०, ३; १२०, ३; १२३, ४; १२४, ५०. ५३;

१२८, ४४; १३०, ३८; १३१, ७; १५८. २८; १६७, १८; १७६, ३१; १८४, १९ (भीष्म और रामजामदग्न्य के युद्ध के समय ये भी उपस्थित थे); ६. ६, १८. ५२; ११, १५; १२, १४. २४; ३४, २६; ३५, २२; ४३, ९; ४८, ११३; ५२, ६३. ६५; ५८, ६; ६५, ६४; ६६, ३. ५. २५; ८३, २७; ८४, ९; ९५, ६७; ९८, ३; ७, ३३, ११; ४५, २२ (अर्जुन ने तपस्या करके इनसे गान्धर्वास्त्र प्राप्त किया); ५२, ११ (देवदानवगन्धर्वान् मृत्युर्हरति); ५७, ४ (नट-नर्तक-गन्धर्वैः); ६०, ७; ६२, १६ (ये मान्धाता के यज्ञों में उपस्थित हुये); ६९, १०. २५ (पुण्यगन्धान् पद्मपात्रे गन्धर्वाप्सरसोऽदुहन् । वत्सश्चित्ररथस्तेषां दोग्धा विश्वरुचिः प्रभुः); ७४, ११; ७५, १४; ७६, ५; ७९, ३२; ८२, २८; ९८, ४४; ११०, ३४; ११९, ५५; १२६, ३०; १३९, ५५; १४४, २२. २४; १४७, ४२. ५५; १५६, १९०; १५८, १६ (ह्रियमाणे तदा कर्ण गन्धर्वैर्धृतराष्ट्रजे). ३५. ५१; १६३, १३. ३४; १६४, ४; १७०, १२; १८५, १४. १७; १८८, ३७; १९५, २३; १९६, ५; २०१, ५२. ७३. ८०, ८१; २०२, ५१. १२५ (इन लोगों ने शिवलिङ्ग की अर्चना की); ८. ३४; ८१; ४१, ७६. ७७; ७२, २२; ८६, १२; ८७, ३७. ५२ (प्रालेयाः सहमौनेया गन्धर्वाप्सरसां गणाः). ५४. ८८; ८८. १; ९४, ५४. ६७; ९. १३, ४६; ३७, ४. ५. ९. १०; ३८, ९ (पुष्कर में ब्रह्मा के यज्ञ के समय ये भी उपस्थित थे); ४१, ३९; ४२, ४०; ४४, १८. ३१. ४७. ५३; ४५, ७ (स्कन्द के अभिषेक के समय ये भी उपस्थित हुये); ४६, ५९. ९७; ४९, १९; ५१, १७; ५७, ९; ५८, ६१; ६१, ५५; १०. ८, १२३; १२, १४ (अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम देवगन्धर्वपूजितम). १७; ११. २६, १३; १२. २, १७ (महेन्द्र पर्वत पर); २९, २४. ३७. ७५ (दिलीप के यज्ञ के समय इन लोगों ने नृत्य किया); ४७, २०. ३५. ७४; ५०, २५; ७२, २०; ९१, ५८; ९९, ४; १४९, १३; १५८, १४; १६६, १८ (ब्रह्मर्षियों द्वारा दक्ष कन्याओं से उत्पन्न लोगों में ये भी थे). ४१; १८८, ३ (ब्रह्मा ने इनकी सृष्टि की); २०७, २५ (ये दक्ष की एक पुत्री से उत्पन्न हुये थे); २२३, २२; २२४, २९; २२७, १०; २२९, २५; २६७, २१; २७२, १५; २८१, १७; २८४, ४. ६. ७. ६३; २९०, १३; २९५, १७; ३००, ६१; ३०२, ३१; ३२३, १९; ३२४, १४; ३२८, १५; ३३१, ५९; ३३२, १५; ३३३, १३. १४. ३२; ३४३, १६. ६२; ३५०, २१; ३६३, ५; १३. १४, ४५. १५०. १७५. २०९. २२२. ३६५. ४०१; १८, ७६; १९, ४१ (कुबेर की सभा में). ४६; २६, ५८; ३२, ३२; ३३, १६; ४०, १७; ५४, १२; ५८, ८; ६२, ८७; ७९, २२; ८०, ५; ८३, ८. २९ (कैलासशिखरे रम्ये देवगन्धर्वसेविते); ८४, ५०; ८५, ९; ८६, १८; ८७, ४; ९३, १६; ९८, २९; १०२, १८. २३; १०३, ७; १०७, ६४. ८९. ९२. ११२. १२४; ११५, ७७; १४०, ७; १४२, ३८; १४६, ६१; १४९, १३५; १५८, १५; १६०, १०; १६१, १७; १४. ७, २५; ८, ५ (मुञ्जवत् पर्वत पर शिव की उपासना करते हैं); १०, २७; ४३, १४; ५१, ११; ५४, ४. १८ (यदा त्वहं देवयोनौ वर्तामि भृगुनन्दन । तदाऽहं देववत्सर्वमाचरामि न संशय); ८८, ३६. ४० (गन्धर्वागीतकुशला नृत्येषु च विशारदाः); ९०, ४८; ९२, २५; १५. २०, ३५ (लोकांश्च देवगन्धर्वरक्षसाम); २९, २०; ३१, ६ (महाभारत के अनेक योद्धाओं के रूप में इन लोगों ने जन्म लिया था); ३२, १६; १६. ४, २५. २७; १८. ३, २४; ४, १४ (द्रौपदी के पाँच पुत्र मृत्यु के पश्चात गन्धर्व हो गये). २२; ६, ७. ३९. ४३ (गन्धर्वैर्गीतकुलैः). ४६ तुल्की० **बहु० देवगन्धर्व**।

२. गन्धर्व (द्वि० ॰र्वौ) = हाहा और हूहू (३. ४३, १४; १२. २८४, ६; ३२४, १६)।

३. गन्धर्व (एक०)—'यस्य हि त्वं सपत्नः स्या गन्धर्वस्यासुरस्य वा । न स जातु चिरं जीवेत्त्वयि क्रुद्धे परंतप ॥', (१. १००, ८३)। ३. २३३, २३। ऐसा माना गया कि कीचक का वध किसी गन्धर्व ने कर दिया (४. २२, ९४)। भीमसेन को लोगों ने एक गन्धर्व माना (४. २३, २४)। 'गन्धर्व एष वै हन्ता कीचकानां दुरात्मनाम्', (४. ७१, ५)। ययाति से पूछा गया कि वे गन्धर्व तो नहीं हैं (५. १२१, १६)। 'क्रीडन्तमिव गन्धर्वं देवकन्याः सहस्रः', (११. १९, १८)। 'नैव देवो न गन्धर्वो नासुरो न च राक्षसः । यो मामेको विषहितुं शक्तः कश्चित्पुरंदर ॥', (१२. २२५, १७)। विभिन्न गन्धर्वों के निम्नलिखित नाम मिलते हैं :—

* **अङ्गारपर्ण** (चित्ररथ) : १. १७०, १३. १४. २५. ३८। देखिये **चित्ररथ** भी, वस्था०।

* **चित्ररथ**—देखिये वस्था०।

* **चित्रसेन**—३. ४६, २२. ६१; २४२, ६; २४६, ३. ९; २४९, १–३; ४. ६४, ३७; १२. २००, १२।

* **चित्राङ्गद**—१. ९५, ५०; १०१, २. ५. ६. १०।

* **तुम्बुरु** : २. ५२, २४; ४. ५६, १२।

* **धृतराष्ट्र** : १४. १०, ४. ८।

* **विश्वावसु** : १. ९, ८ (गन्धर्वाप्सरसोः सुता); ३. २७९, ४२; १२. २८३, ११; ३१८, २७. ३६. ४८. ६९ (गन्धर्वसत्तम); ३२३, १९; ३२४, १५।

४. गन्धर्व = शिव (१,००० नाम)।

गन्धर्वतीर्थ, सरस्वती के तट पर स्थित एक प्राचीन तीर्थ का नाम है जहाँ विश्वावसु आदि गन्धर्व नृत्य आदि का आयोजन करते रहते हैं। बलराम ने इसकी यात्रा की थी (९. ३७, ९–१३)।

गन्धर्वनगर, गन्धर्वों के नगर के लिये प्रयुक्त हुआ है : 'गन्धर्वनगराकारं तथैवान्तर्हितम्', (१. १२६, ३५)। 'कुमारत्वं ……गन्धर्वाकारम्', (१. १३४, २७)। यहाँ अर्जुन ने उपहार के रूप में अश्व प्राप्त किये थे (२. २८, ६)। 'दानवपुरं ……गन्धर्वनगराकारम्', (३. १७३, ६५)। 'गन्धर्वनगरं भानुमत्समुपस्थितम्', (५. १४३, २२)। 'केतुः ……गन्धर्वनगरोपमः', (६. ५०, ४४)। 'रथाः ……गन्धर्वनगरोपमाः', (६. १०३, २०)। 'गन्धर्वनगराकारान् ……रथान्', (७. १९, २८; ३६, ३१)। 'गन्धर्वनगराकारं ……रथम्', (७. ४३, ३)। 'गन्धर्वनगराकारान् रथान्', (८. १६, ४५)। 'गन्धर्वनगराकारं घोरमायोधनम्', (८. २७, ३६)। 'जैत्रं रथवरं गन्धर्वनगरोपमम्', (८. ३६, ७)। 'गन्धर्वनगराकारा रथाः', (८. ४६, ६६)। 'रथाः ……गन्धर्वनगराकाराः', (८. ८१, १८)। 'गन्धर्वनगराकारः', (१२. २६०, १३)। 'प्रासादं ……गन्धर्वनगरोपमम्', (१३. ५४, २)।

१. गन्धर्वपति = देवक : १. ६७, ६८।

२. गन्धर्वपति = हंस : १. ६७, ८३।

३. गन्धर्वपति = अङ्गारपर्ण (चित्ररथ) : १. १७४, ४।

१. गन्धर्वराज् = चित्रसेन : ३. २४३, १७।

२. गन्धर्वराज् = धृतराष्ट्र : १४. ९, २५।

१. गन्धर्वराज = विश्वावसु : १. ८, ६; ९, १३।

२. गन्धर्वराज = चित्राङ्गद : १. १०१, ७।

३. गन्धर्वराज = अङ्गारपर्ण (चित्ररथ) : १. १७०, ५।

४. गन्धर्वराज = चित्रसेन : ३. ४५, २. ४; २४०, २१; २४१. ८; २४३, २१; २४४, १०. १७; २४५, २४; ७. १२८, ४७।

५. गन्धर्वराज = धृतराष्ट्र : १५. ३१, ८।

१. गन्धर्वराजन् = चित्रसेन : ४. ४९, ९।

२. गन्धर्वराजन् = धृतराष्ट्र : १८. ४, १५।

गन्धर्वलोक—'स हि गन्धर्वलोकस्थानुर्वश्या सहितो विराट् ॥ आनिनाय क्रियार्थेऽग्नीन्यथावद्विहितांस्त्रिधा; (१. ७५, २३. २४)।

गन्धर्वास्त्र (म्), गन्धर्वों के प्रसिद्ध अस्त्र का नाम है जिसका अभिमन्यु ने प्रयोग किया (७. ४५, २१)।

१. गन्धर्वी, सुरभि की पुत्री और अश्वों की माता का नाम है (१. ६६, ६७)।

२. गन्धर्वी, गन्धर्व-स्त्रियों के लिये प्रयुक्त हुआ है। गङ्गा से पूछा गया कि वे गन्धर्वी तो नहीं हैं (१. ९७, ३१)। १. १७०, ३५ (गन्धर्वी शरणं प्राप्ता नाम्ना कुम्भीनसी)। १. १७१, ८. ३८; ४. ९, १४. १७।

गन्धर्वेन्द्र = विश्वावसु : १२. ३१८, ३७।

गन्धवती = देखिये **सत्यवती** वस्था० ।

गन्धवतीसुत = व्यास : १२. ३४६, ८ ।

गभस्ति = शिव (१,००० नाम) ।

गभस्तिनेमि = विष्णु (कृष्ण) : १२. ४३, १४; १३. १४९, ६५ (१,००० नाम) ।

गभस्तिमत् = सूर्य : ३. ३, १६ ।

गभीर = विष्णु (१,००० नाम) ।

गभीरात्मन् = विष्णु (१,००० नाम) ।

गम = शिव (१,००० नाम) ।

गम्भीर = शिव (१,००० नाम) ।

गम्भीरघोष = शिव (१,००० नाम) ।

गम्भीरबलवाहन = शिव (१,००० नाम) ।

१. गय, एक प्राचीन राजा का नाम है जिसकी नारद ने मृत राजाओं के अन्तर्गत गणना कराई (१. १, २२७) । 'यज्ञविभूतिश्च गयस्य', (१. २, १६६) । 'गयस्ययज्ञः', (१. ५५, ४) । 'अनवरौ······गयात्', १. २०५, ६) । यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, १८) । इन्होंने तपस्यायें तथा तीर्थयात्रायें कीं (३. ९४, १८) । 'राजर्षिणा पुण्यकृता गयेनानुपमद्युते', (३. ९५, ९) । 'अमूर्तरयसः पुत्रो गयो राजर्षिसत्तमः', (३. ९५, १८) । 'गयो यदकरोद्यज्ञे राजर्षिरमितद्युतिः', (३. ९५, २६) । "अमूर्तरया के पुत्र गय राजर्षियों में श्रेष्ठ थे । उन्होंने ब्रह्मसरोवर के निकट बड़ा भारी यज्ञ किया था ! उस यज्ञ में अन्न के सहस्रों पर्वत लग गये थे; घी के कई सौ कुण्ड थे, और दही की नदियाँ बहती थीं । उस यज्ञ में दक्षिणा देते समय जो वेदमन्त्रों की ध्वनि होती थी उसके समान कोई अन्य शब्द सुनायी नहीं पड़ता था । अमिततेजस्वी राजर्षि गय ने अपने यज्ञ में जो व्यय किया था वह पहले के राजाओं ने भी नहीं किया था और भविष्य में भी कोई दूसरे कर सकेंगे ऐसा सम्भव नहीं है । इस प्रकार के अनेक यज्ञ गय ने ब्रह्मसरोवर के समीप सम्पन्न किये थे (३. ९५, १८–२९) ।" ३. १२१, ७. (इन्होंने यज्ञ किये थे). १०. १३; ४. ५६, ९ (भीष्म और अर्जुन का युद्ध देखने के लिये आये); ५. ८३, २७ (उन ऋषियों में से एक जो श्रीकृष्ण की उपासना करते हैं); ७. ६२, १० (ये मान्धाता द्वारा पराजित हुये) । "राजा अमूर्तरया के पुत्र गय ने सौ वर्षों तक नियमपूर्वक अग्निहोत्र करके होमावशिष्ट अन्न का ही भोजन किया । इससे प्रसन्न होकर अग्निदेव ने उन्हें वर देने की इच्छा प्रगट की । गय ने अग्नि से यह वरदान माँगा :—'मैं तप, ब्रह्मचर्य, व्रत, नियम और गुरुजनों की कृपा से वेदों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ । दूसरों को कष्ट दिये बिना ही धर्मपूर्वक अक्षय धन चाहता हूँ । मैं ब्राह्मणों को दान देता रहूँ और अपने वर्ण की कन्याओं से मेरा विवाह हो । मेरे धर्म सम्बन्धी कार्यों में विघ्न न आवे, इत्यादि ।' अग्नि ने तदनुसार वर दिया । इन्होंने सौ वर्षों तक विभिन्न प्रकार के यज्ञ किये—यज्ञ तथा उसमें दी गई दक्षिणाओं आदि का वर्णन : यज्ञ में खाने-पीने से बचे हुये अन्न के पचीस पर्वत शेष रह गये । रसों को प्रवाहित करने वाली कितनी ही छोटी-छोटी नदियाँ, तथा वस्त्राभूषण आदि भी बच गये । उस यज्ञ के प्रभाव से राजा गय तीनों लोकों में विख्यात हो गये । साथ ही पुण्य को अक्षय्य करनेवाला अक्षयवट तथा पवित्र तीर्थ ब्रह्मसरोवर भी उनके कारण प्रसिद्ध हो गये (७. ६६) ।" ९. ३८, २० (इन्होंने गया में यज्ञ किया); १२. २९, ८८ (मान्धाता ने इन्हें पराभूत किया). १११ (गयं······अमूर्तरयसम्). ११२. ११८; २३४, २६ (इन्होंने ब्राह्मणों को पृथिवी दान की); १३. ११५, ६८ (उन राजाओं में एक यह भी थे जो कार्त्तिकमास में मांसभक्षण नहीं करते थे) । तुकी० आमूर्तरयस (३. ९५, १७; १२१, ३; ७. ६६, १; १२. २९, १११. ११८) ।

२. गय, एक पवित्र पर्वत का नाम है : 'तस्यां गिरिवरः पुण्यो गयो राजर्षिसत्कृतः', (३. ८७, ८) । 'यस्य प्रभावाच गयस्त्रिपु लोकेपु विश्रुतः । वटश्चाक्षय्यकरणः पुण्यं ब्रह्मसरश्च तत ॥', (७. ६६, २०) । तुकी० **गया, गयशिरस्** ।

३. गज (बहु० ँजाः), गया के निवासियों का नाम है । ये लोग भी युधिष्ठिर के लिये उपहार लाये (२. ५२, १६) । ९. ३८, २० ।

गयशिरस्, गया के निकट स्थित एक पर्वत का नाम है । 'महानदी च तत्रैव तथा गयशिरो नृप । यत्रासौ कीर्त्यते विप्रैरक्षय्यकरणो वटः ॥', (३. ८७, ११) 'नगो गयशिरो', (३. ९५, ९) ।

गया, एक पवित्र तीर्थ (आधुनिक गया) का नाम है । अर्जुन इस तीर्थ में आये थे (१. २१५, ७) 'ततो गयां समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः', (३. ८४, ८२) । 'तत्र अक्षयवटो नाम त्रिपुलोकेपु विश्रुतः', (३. ८४, ८३) । 'कृष्णशुक्लावुभौ पक्षौ गयायां यो वसेन्नरः । पुनात्यासप्तमं राजन्कुलं नास्त्यत्र संशयः ॥', (३. ८४, ९६) । 'एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयां व्रजेत् । यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत् ॥', (३. ८४, ९७; ८७, ९. १०) । 'अश्मपृष्ठे गयायां', (१३. २५, ४२) । 'अध्यतिष्ठद्गयां गत्वा', (१३. २९, ५) । 'एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत् । यत्रासौ प्रथितो लोकेष्वक्षय्यकरणो वटः ॥', (१३. ८८, १४) । 'कुरुक्षेत्रं गयां गङ्गां प्रभासं पुष्कराणि च', (१३. १२५, ४८) । 'गयाऽथ फल्गुतीर्थं च धर्मारण्यं सुरैर्वृतम् । तथा देवनदी पुण्या सरश्च ब्रह्मनिर्मितम् ॥', (१३. १६५, २९) ।

गरिष्ठ, एक प्राचीन मुनि का नाम है जो इन्द्र की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ७, १३) ।

१. गरुड, कश्यप और विनता के पुत्र का नाम है, जो विष्णु के वाहन बने (१. २, ९०; १६, २४) । "गर्भ में समय पूर्ण हो जाने पर ये माता की सहायता के बिना ही अण्डा फोड़कर बाहर निकल आये । ये महान साहस से सम्पन्न थे, और अपने तेज से दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे । इनका शरीर थोड़ी ही देर में बढ़कर विशाल हो गया और ये आकाश में उड़ चले । इन्हें देखकर देवतागण अग्नि की शरण में गये । अग्नि ने देवों को सान्त्वना देते हुये गरुड को तेज में अपने ही समान बताया । अग्नि की बात सुनकर देवता तथा ऋषि गरुड के पास आये और उनकी स्तुति करने लगे । ऋषियों और देवताओं की स्तुति सुनकर इन्होंने उस समय अपने तेज को समेट लिया (१. २३, ५–२७) ।" "देवताओं और ऋषियों की स्तुति पर इन्होंने अपने तेज तथा शरीर को समेट लिया । तदनन्तर ये अपने भाई, अरुण, को पीठ पर बैठाकर पिता के घर से माता के समीप, महासागर के दूसरे तटपर आये । जब सूर्य ने अपने तेज के द्वारा सम्पूर्ण लोकों को दग्ध करने का विचार किया उस समय ये महान तेजस्वी अरुण को पुनः पूर्व दिशा में लाकर सूर्य के समीप रख आये (१. २४, १–४) ।" "तदनन्तर ये समुद्र के दूसरे ओर अपनी माता के समीप आये । वहाँ अपनी माता की आज्ञा से ये सर्पों को अपनी पीठ पर चढ़ाकर ले चले । ये आकाश में सूर्य के अत्यन्त निकट से उड़ रहे थे जिससे इनकी पीठ पर बैठे सर्प सूर्य की किरणों से संतप्त हो मूर्च्छित हो गये (१. २५, १–६) ।" "इन्होंने अपनी माता से पूछा कि इन्हें क्यों सर्पों की आज्ञा का पालन करना पड़ता है । इनकी माता, विनता, ने इनको उन परिस्थितियों से अवगत कराया जिनमें वह सर्पों की माता, कद्रू, की दासी बनने को बाध्य हो गई । माता के दुःख से दुखी होकर इन्होंने सर्पों से माता की मुक्ति का उपाय पूछा । सर्पों ने बताया कि यदि ये अमृत लाकर दें तो वे इनकी माता को मुक्त कर देंगे (१. २७, ११–२१) ।" "अमृत लाने के लिये प्रस्थान करने के पूर्व इन्होंने अपनी माता से अपनी भोजन सामग्री के संबन्ध में पूछा । इनकी माता ने इन्हें निषादों का भक्षण करने परन्तु ब्राह्मणों को न मारने का आदेश दिया । माता ने इन्हें ब्राह्मणों को पहचानने का उपाय भी बताया । माता ने कहा, 'जो तुम्हारे कण्ठ में पड़ने पर अंगारे की तरह जलने लगे, उसे तुम ब्राह्मण समझना ।' माता की बात सुनकर गरुड आकाशमार्ग से उन निषादों के पास आये और अपना मुख बड़ा करके उनके मार्ग में खड़े हो गये । जिस प्रकार आंधी से कम्पित वृक्ष वाले वन में पवन और धूल से विमोहित सहस्रों पक्षी आकाश में उड़ने लगते हैं उसी प्रकार हवा और धूल की वर्षा से बेसुध हुये सहस्रों निषाद गरुड के खुले हुए अत्यन्त विशाल मुख में समा गये । तदनन्तर

गरुड ने उनका विनाश करने के लिए अपना मुख संकुचित कर लिया (१. २८) ।" "एक ब्राह्मण भी, जो निषाद था, अपनी पत्नी के साथ गरुड़ के मुख में प्रवेश कर गया परन्तु वहाँ जाकर वह अंगारे की भाँति जलन उत्पन्न करने लगा । गरुड़ ने उसे पहचान लिया और उसकी पत्नी सहित उसे मुक्त कर दिया । ब्राह्मण को मुक्त करके गरुड़ आकाश में उड़े । उन्हें अपने पिता कश्यप का दर्शन हुआ । यतः गरुड़ की क्षुधा अभी शान्त नहीं हुई थी अतः कश्यप ने सुप्रतीक नामक गज तथा विभावसु नामक कछुये का भक्षण करने का परामर्श दिया । तदनन्तर वे उस कछुये और गज को अपने पंजे से पकड़कर आकाश में उड़ गये । विना विश्राम किये उड़ते हुये वह अलम्बतीर्थ में जा पहुँचे । वहाँ एक अत्यन्त विशाल वटवृक्ष था । उस वट ने गरुड़ से कहा कि उसकी सौ योजन तक फैली हुई जो सबसे बड़ी शाखा है उसी पर बैठकर वह उस हाथी और कछुये का भक्षण करें । पर्वत के समान विशाल शरीरवाले गरुड़ उस महान वृक्ष को कम्पित करते हुए जब उसकी विशाल शाखा पर बैठे तो वह टूट गई (१. २९, १-१४. ३३-४४) ।" "गरुड़ के पैरों का स्पर्श होते ही उस वृक्ष की वह महाशाखा टूट गई परन्तु उन्होंने उसे भी पकड़ लिया । इतने में ही उनकी दृष्टि वालखिल्य नामक महर्षियों पर पड़ी जो नीचे मुख किये उसी शाखा से लटक रहे थे । उन मुनियों की रक्षा के विचार से गरुड़ ने, जो अपने पंजे में, सुप्रतीक नामक गजराज और विभावसु नामक कछुये को पकड़े हुये थे, अपनी चोंच से उस शाखा को भी पकड़ लिया । यहाँ गरुड़ के नाम की इस प्रकार व्युत्पत्ति की गई है : 'गुरुं भारं समासाद्योड्डीन एव विहंगमः । गरुडस्तु खगश्रेष्ठस्तस्मात्पन्नगभोजनः ।' तत्पश्चात्, उस शाखा में लटके हुए वालखिल्यों पर दयाभाव होने के कारण वे कहीं बैठ नहीं सके और उड़ते-उड़ते गन्धमादन पर्वत पर जा पहुँचे । वहाँ उन्होंने अपने पिता कश्यप को तपस्या करते हुए देखा । अपने पुत्र को देखकर और उन्हें वालखिल्यों के शाप से बचाने के लिए कश्यप ने वालखिल्यों को प्रसन्न किया । कश्यप के इस प्रकार अनुरोध करने पर वे वालखिल्य मुनि उस शाखा को छोड़कर तपस्यार्थ हिमवत् पर्वत पर चले गए । कश्यप के परामर्श के अनुसार तब गरुड़ एक लाख योजन दूर एक निर्जन पर्वत पर आये । वहाँ उन्होंने उस शाखा को फेंक दिया और गज तथा कछुये का भक्षण किया । तदनन्तर वे पुनः आकाश में उड़ गये । उस समय अनेक अपशकुन होने लगे । देव-लोक में भी उस समय अनेक अपशकुन होने लगे जिन्हें देखकर बृहस्पति ने बताया कि इन्द्र के द्वारा वालखिल्यों का अपमान और उनकी ही तपस्या के प्रभाव से गरुड़ एवं अरुण की उत्पत्ति हुई है । उन्हीं में से गरुड़ अब अमृत लेने के लिए इन्द्रलोक में आ रहे हैं । इन्द्र ने तब देवों को आज्ञा दी कि वे अमृत की रक्षा करें (१. ३०) ।" "उग्रश्रवा ने बताया कि किस प्रकार इन्द्र ने वालखिल्यों का अपमान किया था और किस प्रकार वालखिल्यों की तपस्या के प्रभाव से पक्षियों में इन्द्र के समान गरुड़ की उत्पत्ति हुई (१. ३१) ।" "अमृत के लिए जब गरुड़ देवताओं के पास पहुँचे तो देवताओं से उनका भयंकर युद्ध छिड़ गया । भौमन (विश्वकर्मा), जो अमृत की रक्षा कर रहे थे, गरुड़ के प्रहार से आहत होकर मृतकतुल्य हो गये । तदनन्तर गरुड़ ने अपने पंखों की प्रचण्ड वायु से बहुत धूल उड़ाकर देवताओं को आच्छादित और विमोहित कर दिया । उस समय साध्य और गन्धर्व पूर्व दिशा में, वसु और रुद्र दक्षिण दिशा में, आदित्य पश्चिम में और अश्विन उत्तर दिशा में भागे । तदनन्तर गरुड़ ने अश्वक्रन्द आदि नौ यक्षों का, जो अमृत की रक्षा कर रहे थे, वध कर दिया । अमृत के चारों ओर अग्नि प्रज्वलित हो रही थी । उस समय गरुड़ ने ८१०० मुख प्रकट करके अनेक नदियों से उसमें जल लेकर आग को बुझा दिया । तदनन्तर उन्होंने अमृत के पास पहुँचने की इच्छा से अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया (१. ३२) ।" "गरुड़ ने देखा कि अमृत के निकट एक लौह-चक्र घूम रहा है जिसके चारों ओर तीक्ष्ण धार वाले छूरे लगे हैं । उस चक्र के भीतर एक छोटा छिद्र था जिसमें से संकुचित रूप धारण करके गरुड़ प्रवेश कर गये । चक्र के नीचे अमृत की रक्षा के लिए दो श्रेष्ठ सर्प नियुक्त थे । गरुड़ ने उन सर्पों के शरीर को बीच से काट डाला । तदनन्तर अमृत के पात्र को वहाँ से उठाकर तीव्र गति से उड़ चले । उन्होंने स्वयं अमृत का पान नहीं किया । मार्ग में विष्णु ने प्रगट होकर उन्हें वर देने की इच्छा व्यक्त की । गरुड़ ने विष्णु से दो वर मांगे । पहले वर के अन्तर्गत उन्होंने अपने को विष्णु के ध्वज में स्थित होने की इच्छा प्रकट की और दूसरे में बिना अमृत का पान किये ही अजर-अमर होने की । वर प्राप्त करने के पश्चात् गरुड़ ने स्वयं विष्णु को भी वर देने की इच्छा व्यक्त की । विष्णु ने गरुड़ से कहा कि वे उनका वाहन होना स्वीकार कर लें । इसके पश्चात् गरुड़ वहाँ से आगे बढ़े । मार्ग में इन्द्र ने रोष में भरकर उन पर अपने वज्र से प्रहार किया । वज्राहत गरुड़ ने इन्द्र से कहा : 'जिनकी अस्थियों से यह वज्र बना है उन महर्षि का मैं अवश्य सम्मान करूँगा । अतएव मैं अपना एक पंख, जिसका तुम कहीं अन्त नहीं पा सकोगे, त्याग देता हूँ । उस सुन्दर पंख को देखकर लोगों ने कहा कि जिसका वह सुन्दर पंख (पर्ण) है वह पक्षी सुपर्ण नाम से विख्यात हो । गरुड़ के पराक्रम को देखकर इन्द्र ने उनसे मैत्री स्थापित करने की इच्छा प्रकट की (१. ३३) ।" "इन्द्र और गरुड़ की मित्रता स्थापित हो गई । तदनन्तर इन्द्र ने गरुड़ से अमृत वापस माँगा । गरुड़ ने कहा : 'मैं किसी कारणवश ही यह अमृत ले जा रहा हूँ । इसे किसी को भी पीने के लिए नहीं दूँगा । मैं स्वयं इसे जहाँ रख दूँ वहाँ से तत्काल तुम उठा ले जा सकते हो ।' गरुड़ ने इन्द्र से यह वर माँगा कि सर्प उनका भोजन हो जाय । तदनन्तर गरुड़ ने अमृत को सर्पों के निकट लाकर रख दिया और अपनी माता को दासत्व से मुक्त करा लिया । इसी बीच इन्द्र वह अमृत लेकर पुनः स्वर्गलोक चले गये । अमृतपान करने की इच्छा से जब स्नान और जप आदि कर्म करने के पश्चात् सर्पगण पुनः उस स्थान पर लौटे तो उन्हें विदित हुआ कि अमृत का किसी ने हरण कर लिया है । यह समझकर कि जहाँ अमृत रखा था वहाँ उसका कुछ अंश लगा होगा, सर्पों ने उस स्थान के कुशों को चाटना आरम्भ किया । ऐसा करने से सर्पों की जिह्वा दो भागों में विभक्त हो गई । उसी समय से अमृत का स्पर्श होने के कारण कुशों की संज्ञा 'पवित्री' हो गई । उस समय से गरुड़ अपनी माता के साथ प्रसन्नतापूर्वक निवास करने लगे (१. ३४) ।" १. ६५, ४०; ६६, ३९ (वैनतेयस्तु गरुडो). ७१ (द्वौ पुत्रौ विनतायास्तु विख्यातौ गरुडारुणौ); १२३, ७३ (अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित हुए); २०७, ३२ (द्विपक्षगरुडप्रख्यैर्द्वारैः); २. २४, २२. २३ (इन्होंने कृष्ण के ध्वज पर स्थान ग्रहण किया); ३८, २८ (गरुडः पततां मुखम्); ३. २४१, १८ (खैर्गरुडनिःस्वनैः); ४. २, २४ (गरुडः पतताम् इव); ५. ७१, ५ (कृष्ण को अरिष्टनेमि, गरुड और सुपर्ण से समीकृत किया गया है); १०१, १५ (गरुडात्मजाः); १०५, १. ३. ३१. ३२; १०७, १६ (गरुडो विनतात्मजः); ११२, ४ (यह गालव के मित्र थे और इन्होंने एक सहस्र अश्वों को खोजने में गालव की सहायता की थी); ६. ३, ८४ (वैनतेयो गरुडः प्रशंसति महाजनं); ६, १४ (विहगः सुमुखो यस्तु सुपर्णस्यात्मजः); ७. ३६, २७ (पन्नगैश्छिन्नैर्गरुडेनेव); ३७, २१ (गरुडानिलरंहोभिर्यन्तुर्वाक्यकरैर्हयैः); १०९, २८ (उद्ववर्ह... पन्नगं गरुडो यथा); १४३, ४८ (गरुडोत्तमाङ्गयानः); १७४, ३० (गरुडतक्षकौ); २०१, २३ (गरुडानिलरंहसैः); ८. १२, ६ (गरुडप्रहितैरुग्रैः पक्षास्यैरुरगैरिव); १८, २ (तुरगान् गरुडानिलरंहसः); ४१, १६ (गरुडस्य गतौ तुल्याः); ५९, ४७ (गरुडस्येव पततो जिघृक्षोः पन्नगोत्तमम्); ६५, १५ (वाजिभिर्गरुडोपमैः); ७७, २२ (गरुडस्येव पततः पन्नगार्थे यथा पुरा); ८७, ९६ (गरुडः पन्नगं यथा); ९०, ५१ (नागः स्वयं य आयाद्गरुडस्य वक्त्रम्); ९. ४५, १६ (ये भी स्कन्द के अभिषेक के समय उपस्थित हुये). ८३ (गरुडाननाः); ४६, ५२ (इन्होंने अपने पुत्र, मयूर, को स्कन्द को प्रदान किया); १२. ३३७, ३५ (ये उपरिचर को गुप्त विवर तक ले गये); १३. १४, ९३ (वालखिल्यों ने अपनी तपस्या द्वारा इन्हें—सुपर्ण सोमहर्तारं को—उत्पन्न किया); १४. ८८, ३२ (रुक्मपक्षो निचितस्त्रिकोणो गरुडाकृतिः) । तुकी० **अरुणानुज, भुजगारि, गरुत्मत्, काश्यपेय, खगराज्, पक्षिराज,**

पक्षिराज, पतगपति, पतगेश्वर, सुपर्ण, तार्क्ष्य, वैनतेय, विनतानन्द-वर्धन, विनतासूनु, विनतासुत, विनतात्मज।

२. गरुड एक व्यूह का नाम है जिसका भीष्म ने निर्माण किया था (६. ५६, ३)।

३. गरुड (बहु० ंडाः), गरुड-जाति के पक्षियों के लिये प्रयुक्त हुआ है (३. १७३, ४८)। 'गरुड-पिशाच-सयक्षराक्षसान्,' (८. ३७, ३६)। 'गरुडानिव,' (४. ४६, ५०)।

गरुडध्वज—कृष्ण (विष्णु) : २. २, १०; ७. ८०, २; १३. ११, ५; १४९, ५१ (सहस्रनाम)।

गरुडी, स्वाहा के लिये प्रयुक्त हुआ है (३. २२५, ९; २२६, ५)।

१. गरुत्मत् = गरुड : १. ३३, १६. २३; २२७, २१; २. २, ३०; २४, २३. २४ (इन्होंने कृष्ण के ध्वज पर स्थान ग्रहण किया); ३. १२, ९० (वैनतेयो यथा पक्षी गरुत्मान्पततां वरः); १६०, ७४ (अभिदुद्राव तं हन्तुं गरुत्मानिव पन्नगम्); २. ४८, १३ (गरुत्मानिव पन्नगम्); ५०, १८; ५४, २१ (नागं गरुत्मानिव चित्रपक्षः); ५. १०५, १९. ३०; ११२, १; ६. ६४, ३२ (गरुत्मानिव वेगितः); ७. १२५, ३६ (छिन्नौ सर्पाविव गरुत्मता); १३९, ११७ (गरुत्मानिवाकाशे प्रार्थयन् भुजगोत्तमम्); ८. ५६, ६७ (गरुत्मात्पन्नगानिव); ९. ५५, १९ (सदृशं हि गरुत्मतः) ५८, २६ (ंन्तौ); १२. ३२७, ७ (पक्षिराजो गरुत्मांश्च); ३३७, ३२. ३६।

२. गरुत्मत् (बहु० ताः) = बहु० गरुड : ६. १०५, १२।

१. गर्ग, एक ऋषि का नाम है। 'गर्गेण वृद्धेन······ज्योतिषां च व्यतिक्रमः॥ उत्पाता दारुणाश्चैव शुभाश्च', (९. ३७, १४. १५)। 'गर्गस्रोत इति स्मृतम······तत्र गर्गं महाभागं ऋषयः सुव्रता नृप', (९. ३७, १६. १७)। 'कुणिर्गर्गो महायशाः', (९. ५२, ३. ४)। 'महर्षिर्भगवान्गर्गः', (१२. ५९, १११)। इन्होंने विश्वावसु को उपदेश दिया (१२. ३१८, ६०)। "इन्होंने बताया कि इन्होंने सरस्वती के तट पर मानस यज्ञ करके भगवान् शिव को प्रसन्न किया था, जिससे उन्होंने इन्हें चौंसठ कलाओं का अद्भुत ज्ञान प्रदान किया। साथ ही शिव ने इन्हें इन्हीं के समान एक सहस्र ब्रह्मवादी पुत्र दिये और इनके पुरोहितों सहित इनकी आयु भी दस लाख वर्ष नियत कर दी (१३. १८, ३८. ३९)।"

२. गर्ग (बहु०) गर्ग के वंशजों के लिये प्रयुक्त हुआ है (७. १९०, ३४)।

गर्गस्रोतस्, सरस्वती के तट पर स्थित एक तीर्थ का नाम है। यहाँ तपस्या से पवित्र अन्तःकरण वाले महात्मा वृद्ध गर्ग ने काल का ज्ञान, काल की गति, ग्रहों और नक्षत्रों के उलट-फेर, दारुण उत्पात तथा शुभलक्षण आदि समस्त बातों का ज्ञान प्राप्त किया था; अतः महर्षि गर्ग के नाम से ही यह तीर्थ गर्गस्रोतस कहलाता है। यहाँ उत्तम व्रत का पालन करनेवाले ऋषियों ने कालज्ञान की प्राप्ति के लिये महाभाग गर्गमुनि की सेवा की थी (९. ३७, १४ १७)।

गर्दभि, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम है (१३. ४, ५९)।

गर्भचारिन् = शिव (१,००० नाम)।

गर्भमांसशृगाल = शिव (१,००० नाम)।

गवय, एक वानरराज का नाम है जो एक अरब सेना के साथ श्रीराम के पास आया (३. २८३, ३)।

गवल्गण, सञ्जय के पिता का नाम है (१. ६३, ९७)।

१. गवाक्ष, एक गान्धार वीर का नाम है जो सुबल के पुत्र और शकुनि के भ्राता थे (६. ९०, २७)। इन्होंने पाण्डव-सेना के दुर्जय व्यूह में प्रवेश किया (६. ९०, २८-३०)। इरावान् ने इनका वध किया (६. ९०, ४५-४६)। 'शकुनेर्भ्रातरो वीरा गवाक्षः शरभो विभुः', (७. १५७, २४)।

२. गवाक्ष, एक गोलांगूल जाति के वानर का नाम है जो देखने में अत्यन्त भयंकर था। यह अपने साथ साठ सहस्र कोटि (६ खरब) सेना लेकर श्रीराम के पास आया (३. २८३, ४)।

गवां—'गवां मेधमवाप्नोति वासुकेर्लोकमुत्तमम्। वेणायाः संगमे स्नात्वा वाजिमेध फलं लभेत॥', (३. ८५, ३४)।

गवाम्-अयन्, एक यज्ञ का नाम है (३. ८४, १०२)।

गवांतीर्थ, एक तीर्थ का नाम है (३. ९५, ३)।

गवां पतिः = शिव : ७. २०२, ३४. ४८; ८. ३३, ६१; १३. १७, ७२ (१,००० नाम)।

गवां भवनम्, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ५०)।

गवां लोक—देखिये **गोलोक**।

गविज, एक गोजात मुनि का नाम है (१३. ५१, ४२. ४५)।

गविजात = गविज : १३. ५१, १५. २१।

गविष्ठ, एक विख्यात दानव का नाम है (१. ६५, ३०)। यह द्रुमसेन के रूप में प्रगट हुआ था (१. ६७, ३४-३५)।

गवेषण, एक वृष्णि राजा का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये थे (१. १८६, १९)।

गहन = विष्णु (१,००० नाम)।

गाङ्ग (वि०)—'गाङ्गो ह्रद इव', (५. ३३, २६)। 'गाङ्गं यथा वेगम्', (५. १६०. १०४; १६१, २२)। 'गाङ्ग इवावर्तो', (६. ११९, ७६; ७. ३६, १३)। 'यावत्यः सिकता गाङ्ग्यः', (७. ५८, ७)। 'गाङ्गमिवोदकम्', (१२. १७७, २८)।

१. गाङ्गेय—देखिये **भीष्म**।

२. गाङ्गेय = स्कन्द : १. १३७, १३; ९. ४४, १६; १३. ८५, ८०।

३. गाङ्गेय = (वि०)—'गाङ्गेयं वार्युपस्पृश्य', (३. ३, ३५)। 'गाङ्गेयैस्तोयैः', (१३. २६, २८. २९)। 'गाङ्गेयैः', (१३. २६, ३१)। 'गाङ्गेयं··· जलम्', (१३. २६, २६)।

गाण्डीव, अर्जुन के प्रसिद्ध धनुष का नाम है (१. १, १८०)। १. २, ३६०. ३६७ (गाण्डीवं धनुरुत्तमम्)। इसे अग्नि ने अर्जुन को दिया था (१. ६१, ४७)। "राजा सोम ने यह धनुष वरुण को दिया था। अग्नि ने वरुण से माँग कर इसे अर्जुन को दिया। यह धनुष अद्भुत था और इसमें अत्यन्त शक्ति थी। किसी भी अस्त्र-शस्त्र से यह टूट नहीं सकता था, और दूसरे अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट कर डालने की इसमें शक्ति थी। इसका आकार समस्त आयुधों से बढ़कर था। शत्रुओं की सेना को विदीर्ण करनेवाला यह एक ही धनुष दूसरे लाख धनुषों के बराबर था। देवताओं, दानवों, और गन्धर्वों ने अनन्त वर्षों तक इसकी पूजा की थी (१. २२५, ४-९)।" पूर्वकाल में ब्रह्मा ने इसका निर्माण किया था (१. २२५, १९-२०)। अग्नि के कहने पर वरुण ने इसे अर्जुन को दिया (१. २२५, ३२)। 'भीमस्य गाण्डीवं भवतो यथा', (२. ३, ७)। अर्जुन ने इसे अग्नि से प्राप्त किया था (२. ४८, ६; ७४, १२)। 'गाण्डीवनिर्घोषम्', (२. ८१, ३४)। 'धनुर्येषां गाण्डिवं लोकसारम्', (३. ४, १०)। ३. ५, ९; ११, ४० (गाण्डीवं निष्पत्रगकरोत्तदा); १२, ६७ (धिक्पार्थस्य च गाण्डिवम्). ७७; ३३, ८७; ३७, १८; ३९, ९. २६. ३९ (किरातवेशी शिव ने इसे छीन लिया); ४०, ४. २७ (किरातवेशी शिव ने इसे अर्जुन को वापस दिया); ५१, १३; ८६, १२; १६०, २२; १६८, ७६ (अजरां ज्यामिमां चापि गाण्डीवे समयोजयत्); १७०, ६. २३; १७१, २३; १७२, २. १४; १७३, ४४. ५६; १७५, ६; २३६, ३०; २६८, १७. १८; ४. ५, ११. १९; २१, १; ४०, ५; ४१, ९; ४३, १-७ (अर्जुन का यह धनुष शत्रुओं की सेना के लिये कालस्वरूप और अन्य आयुधों से विशाल था—विस्तृत वर्णन। पूर्वकाल में ब्रह्मा ने इसे एक सहस्र वर्षों तक धारण किया था। तदनन्तर प्रजापति ने पाँच सौ तीन वर्षों तक इसे अपने पास रक्खा। उनके बाद इन्द्र ने पचासी वर्षों तक, सोम ने पाँच सौ, तथा वरुण ने सौ वर्षों तक इसे धारण किया। तत्पश्चात् अर्जुन इसे पैंसठ वर्षों से धारण करते चले आ रहे हैं); ४४, १९ (उभौ मे दक्षिणौपाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे। तेन देवमनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदुः); ४५, २९; ४६, १९. २२; ५०, २४. २५; ५३, २. ५. २४; ५४, २७. ३५; ५५, ४; ५७, १७. २२; ५८, ३१. ६४; ५९, ९; ६०, २३; ६१, ८. १९ (सुवर्ण पृष्ठं गाण्डीवम्); ६२, १०. २२; ६३, ८ (ततः प्रहस्य-वीभत्सुर्दिव्यमैन्द्रं महारथः। अस्त्रमादित्यसङ्काशं गाण्डीवे समयोजयत्). १०.

१२ (दश दिशः सर्वाः पतद्गाण्डीवमावृणोत्); ६४, १४. ३४. ४०; ६५, १२; ६६, ९. २७; ५. २३, २१; २६, २५; ४८, ५२. ५५. ६१. ६४. १०२; ५२, १२. १७; ५४, १. १२; ५७, २७; ५९, २३;-६०, १२; ९६, ४१; ९८, १९ (एष गाण्डीमयश्चापो लोकसंहारसंभृतः । रक्ष्यते दैवतैर्नित्यं यतस्तद्गाण्डिवं धनुः); १२६, २; १३८, ५. २७; १४१, ३१; १४२, ७; १४३, ४५; १५८, ४–६ (यह द्युलोक में विचरनेवाले देवताओं के तीन धनुष—गाण्डीव, विज और शार्ङ्ग—ही दिव्य माने गये हैं। खाण्डवदाह के समय इन्द्रकुमार अर्जुन ने अग्निदेव से इसे प्राप्त किया था). २७. ३३; १६०, १०८. १११. ११२; १६१, २६. २९. ३०; १६२, ४४; १६९, २०; ६. २२, १०; २५, ३०; ४५, ९; ४७, १६; ५९, १०८. ११३. ११६–११९; ६०, २६; ६९, ९; ७१, २. ५. १२; ७८, ३०; ८५, ११; ११२, १४; ११७, ३८; ११९, ४५; १२०, ४४; १२१, २०; ७. ३, १४. १५. १९; ७, २९; १०, २०. २२. २७; १९, ९; ३०, ३२. ३३; ७३, ५०; ७५, २०; ७६, १२. २०; ८८, २०; ९०, १५. १७; ९२, ६३; ९३, ५. ३३; ९९, ४१; १०३, ७. ३८; १०५, ३२. ३५; ११०, ३८; ११४, १८; ११९, ११; १२६, ६; १२९, ३८; १३९, ११३. ११८. १२२; १४२, ७१; १४५, ५३. ९३. ९७; १४६, ४२. १०२. १२२; १५२, १८; १७०, ४४. ४५. ४७. ५०; १८०, १७; १९९, ५२. ५३; ८. ९, ६४. ६५; १६, ४२; १७, २२; ३०, १५; ३१, ४६; ३६. ३०; ३९, ३१; ४०, १४; ४६, ६१. ७२; ४७, ८; ५३, १; ५६, १३६; ५९, ५४; ६४, २४; ६६, ४१; ६८, २५. २८. ३०; ६९, ९. ७२; ७०, ४९; ७२, २४; ७३, ९२; ७४, २. ८. १५. २४. ४७. ५६; ७६, २८; ७९, २०. ७६. ८१; ८०, १५. १७; ८१, १६; ८२, १२; ८९, १४. २३. २४. ५५; ९०, ९२; ९१, ३० (श्लथहस्तगाण्डिवः). ४५; ९३, ३३. ४३; ९४, २९; ९. ३, ३३; ४, १७. १८. ३४; १४, २७; १८, ६; १९, ६८; २४, ५७. ५९; २५, १; २८, ६६; २९, ३. ३२; ६२, ९; १४. ७३, ८. १५; ७४, २२; ७५, ४. ५. १४; ७६, १०; ७७, २१; ७९, २७; ८२, ११. ३०; ८४, ६. १६; १६. ७, ५४. ६०; ८, २२; १७. १, ३४. ३९. ४१ (अग्नि ने अर्जुन से गाण्डीव धनुष तथा अक्षय तरकसों को सागर में फेंकने के लिये कहा जिससे वे सब वरुण के पास लौट जाँय)।

गाण्डीवधन्वन्, गाण्डीवधारिन्, गाण्डीवभृत, गाण्डीविन् = अर्जुन (देखिये वस्था०)।

गाधि (न्), एक कान्यकुब्ज राजा का नाम है जो कुशिक के पुत्र और विश्वामित्र एवं सत्यवती के पिता थे। 'कान्यकुब्जे महानासीत्पार्थिवो भरतर्षभ । गाधीति विश्रुतो लोके कुशिकस्यात्मसंभवः ॥', (१. १७५, ३)। 'कान्यकुब्जे महानासीत्पार्थिवः सुमहाबलः । गाधीति विश्रुतोलोके वनवासे जगाम ह ॥', (३. ११५, २०)। ऋचीक ने एक सहस्र अश्वों की भेंट देकर इनकी पुत्री के साथ विवाह किया (३. ११५, २१–२३)। 'कान्यकुब्जे वै गाधेः सत्यवतीं सुताम्', (५. ११९, ४)। 'कुशिकस्य च दुर्धर्ष गाधेश्चैव महात्मनः', (६. ९, ८)। ये विश्वामित्र के पिता थे (९. ४०, १२. १५)। विश्वामित्र को सिंहासन पर बैठाकर ये स्वर्गलोक को चले गये (९. ४०, १६)। 'गाधिर्नामाऽभवत्पुत्रः कौशिकः पाकशासनः', (१२. ४९, ६)। इनकी पुत्री सत्यवती का ऋचीक के साथ विवाह हुआ (१२. ४९, ७)। 'गाधेः', (१२. ४९, ८)। 'गाधिः', (१२. ४९, १३)। इनके पुत्र के रूप में विश्वामित्र का जन्म हुआ (१२. ४९, ३०)। 'कुशिकस्यात्मजः श्रीमान गाधिर्नाम जनेश्वरः', (१३. ४, ६)। 'गाधिः शत्रुनिबर्हणः', (१३. ४, ९)। 'गाधिरुवाच', (१३. ४, १२)। 'गाधये', (१३. ४, १८)। १,००० अश्व देने पर ऋचीक ने इनकी पुत्री सत्यवती को विवाह में प्राप्त किया (१३. ४, १९)। इनकी पत्नी से विश्वामित्र का जन्म हुआ (१३. ४, ४७)। 'गाधेर्दुहितरं', (१३. ५६, ११)। 'विश्वामित्रं तव कुले गाधेः पुत्रं सुधार्मिकम्', (१३. ५६, १२)। तुकी **कौशिक**।

गाधिज = विश्वामित्र : ९. ४०, २२. २७; ४२, ३७।

गाधिनन्दन = विश्वामित्र : १. १७५, १५।

गाधिसुता = सत्यवती : ३. ११५, २९।

गाधेयी = सत्यवती : १३. ४, ४३।

१. गान्धार (राः), एक जाति के लोगों का नाम है : 'गान्धाराणां यशोहर', अर्थात् शकुनि (२. ७७, ३९)। 'गान्धारराजः शकुनिर्गान्धारैरभिरक्षितः', (५. ९४, ४९)। भारतवर्ष की एक जाति के रूप में इनका उल्लेख (६. ९, ५३)। 'गान्धारैर्याति गान्धारराजः', (६. २०, ८)। पाँच गान्धारों ने पाँच केकयों के विरुद्ध युद्ध किया (६. ४५, ७६)। इन लोगों ने भीष्म का अनुसरण किया (६. ५१, १४)। इन लोगों ने सात्यकि और अर्जुन से युद्ध किया (६. ५८, ७; ७१, १४)। गज आदि गान्धार शकुनि के भ्राता थे (६. ९०, ३०)। पहले कर्ण ने इन्हें पराजित किया था (७. ४, ६)। ये लोग द्रोणाचार्य के गरुडव्यूह के पृष्ठ भाग में स्थित हुये (७. २०, ११)। 'गान्धारानाकुलांश्चक्रे', (७. ३०, ५)। अर्जुन ने ५०० गान्धारों का वध किया (७. ३०, ६)। कालिकेय के अनुचर, ७७ गन्धारों का अभिमन्यु ने वध किया (७. ४९, ७)। इन लोगों ने जयद्रथ का अनुसरण किया (७. ८७, १६)। कर्ण ने इन लोगों को पराजित तथा दुर्योधन को कर देने के लिये वाध्य किया (८. ८, १८; ९, ३४)। 'मद्रगान्धारा', (८. ४४, ४७)। 'गान्धारा·····धर्मसंकरकारकम्', (८. ४५, ८. ९)। कर्ण ने इन्हें पराजित किया था (८. ७३, ४७)। 'गान्धाराणां सहस्रेण शकुनिः परिवारितः', (८. ९५, ६)। मृत योद्धाओं के अन्तर्गत इनका उल्लेख (९. ३३, २५)। 'यवना किराता गान्धाराः', (१२. ६५, १३)। 'गान्धाराः सिन्धुसौवीराः नखरप्रासयोधिन', (१२. १०१, ३)। 'उत्तरापथजन्मानः·····यौनकाम्बोजगान्धाराः',(१२. २०७, ४३)। 'गान्धारविषयं', (१४. ८३, १९)। 'शकुनेस्तनयो वीरो गान्धाराणां महारथः', (१४. ८४, १)। 'निरुध्यमानस्तैश्चापि गान्धारैः', (१४. ८४, ७)। 'गान्धारेषु समंततः', (१४. ८४, ८)। अर्जुन ने इन्हें पराजित करके कर देने के लिये विवश किया (१४. ८४, १४)। 'गान्धारविषये', (१४. ८५, ३)। कृष्ण ने इन्हें पराजित किया था (१६. ६, १२)। तुकी० बहु० **गान्धारक, बहु० गान्धारि।**

२. गान्धार : ४. १७, १४; १२. १८४, ३९; १४. ५०, ५३।

३. गान्धार = शकुनि : २. ७७, ३९; ४. ५०, २३; ९. २७, २२।

४. गान्धार = शिव (१,००० नाम)।

५. गान्धार (द्वि० ॰रौ) = अचल और वृषक : ७. ३०, १०।

१. गान्धारक (बहु० ॰काः), गान्धार जाति के लोगों का नाम है (७. ७, १३)। 'गान्धारकैः सप्तशतैश्चापशक्त्यसिपाणिभिः', (७. ९५, ४२)। 'मद्रकेषु च संसृष्टं शौचं गान्धारकेषु च', (८. ४०, ३०)।

२. गान्धारक (धि०)—'गान्धारकैर्गुप्तं पुष्टैरश्वैर्जये धृतम्', (९. २८, ४६)।

गान्धारपति = शकुनि : ८. ८५, १९।

गान्धारमुख्य (द्वि० ॰ख्यौ) = अचल और वृषक : ५. १६८, २

गान्धारराज् = शकुनि : ७. ३७, २४।

१. गान्धारराज = शकुनि : १. १, १४८; ३. २३८, २१; ३१३, २३; ५. २, ५; २९, ४६; ३०, २९; ९४, ४९; १९५, ७; ६. २०, ८ (शकुनिः पार्वतीयैः सार्धं गान्धारैर्याति गान्धारराजः); ७. ३४, २३; १९३, ९; ८. ७, ११; ७५, ९; ९३, ३८; ९. ३, ३९; २३, ३०. ३१; ११. २४, २३।

२. गान्धारराज = सुबल : १. ११०, ११।

३. गान्धारराज = गान्धारी के पिता (७. ११, १०)।

४. गान्धारराज = शकुनि का पुत्र : १४. ८३, २०; ८४, २९।

गान्धारराजदुहितृ = गान्धारी : १. ११६, २।

१. गान्धारराजपुत्र = शकुनि : १. ६३, ११२।

२. गान्धारराजपुत्र = शकुनि का पुत्र : १४. ८४, १४।

गान्धारराजस्य पुत्रः = शकुनि : १. ११०, १५; ९. १८, १८; २३, २६।

गान्धारराजस्य सुतः = शकुनि : ५. २, ९।

गान्धाराधिपति, गान्धारों के एक राजा का नाम है जिसका मान्धाता ने वध किया था (३. १२६, ४३)।

१. गान्धारि—देखिये दुर्योधन।

२. गान्धारि (बहु० ॰रयः) = गान्धार जाति के लोग, जिन्होंने शकुनि तथा उलूक का अनुसरण किया (८. ४६, १३)।

१. गान्धारी, गान्धारराज सुबल की पुत्री, धृतराष्ट्र की रानी और दुर्योधन आदि धार्तराष्ट्रों की माता का नाम है (१. १, ९९. २१६)। १. २, ३१७. ३१९. ३४५; ६३, ११२ (दुर्योधनस्य जननी); ६७, १६० (मतिस्तु सुबलात्मजा); ९५, ५६ (तत्र धृतराष्ट्रस्य राज्ञः पुत्रशतं बभूव गान्धार्यां वरदानात् द्वैपायनस्य); ११०. ९. १०. १२. १३. १८ (इन्होंने शिव से यह वरदान प्राप्त किया था कि इनके सौ पुत्र हों। धृतराष्ट्र के साथ विवाह होने पर इन्होंने भी अपनी आँखों में पट्टी बाँध ली थी क्योंकि इनके पति अन्धे थे); ११५, १. ३. ४. ८. ९. १२. १५. ४१ (ये सौ पुत्रों की माता बनीं); ११६, ८; १२३, १; १२४, ३; १२६, १६; १३४, १५. ३५; १४३, १४; २. ५८, २७. २८; ७५, १. ११ (इन्होंने भी दुर्योधन का परित्याग कर देने का धृतराष्ट्र को परामर्श दिया); ८१, १९; ३. ९, २; २५४, २८. ३४; २५६, ५; २७१, ४३; ५. ६७, ६. ८; ६९. ८. ९; १२४, ५; १२५, १९; १२९, २. ६. ७. ९. १०. १८; १४१, ५१; १४७, ८. ४२; १४९, १; १५०, १. ७; ६. ४९, ९; ८८, ४०; ८९, ७; ८. ४, ५; ९६, ५५. ५७; ९. १, २३. ४१. ५०. ५१; ६२, ४५. ४६; ६३, १. १०. ११. १३. २३. २७–२९. ३७. ५२. ५९. ६५. ६९. ७०. ७४; ६४, ३७; १०. २, ३२; ९, २९. ३२; ११. १, २८; ८, ३०; १०, २. ४; ११, ५; १४, १. २. ७. ९. १०. १३. १४; १५, १. १२. २०. २१. २४. २८. ३३. ४० (अपनी क्रोधदृष्टि से इन्होंने युधिष्ठिर के पाँव के अंगूठे के नख को भस्म कर दिया); १६, १ (अपनी दिव्य दृष्टि से इन्होंने कौरवों के संहार को देखा); १७, १. ३; १८, १; १९. १; २०, १; २१, १; २२, १; २३, १; २४, १; २५, १. ३७. ३८. ३९. ४७ (मृत कौरवों के लिये विलाप करने के पश्चात् इन्होंने यह शाप दिया कि श्रीकृष्ण तथा उनके वंश का ३६ वर्ष बाद उन्मूलन हो जायगा); २६, १. ६; १२. ३७, ४०; ४०, ६; ४२, ९; ४५, ११; १३. १६६, १६; १६७, ९; १४. १, १०; ५२, २८. २९. ३०; ७१, ६; ७८, ४२; ८४, ३; १५. १, २. ८. ११; २, १२. १६. १९. २८; ३, ६. १२. २१. २६. २८. ३२. ३५. ३७. ५१. ६१. ६६. ७७; ४, ३. १६; ५, १. ५; ८, ५. ६. ८. १७. २०; ९, ९. १८; १०, ५. ५३; १४, १५; १५, २. ९; १६, ९. १६; १८, ४. ८. २०; १९, ४. ६. १५; २०, १६. १८. ३३; २१, ३. ८; २२, ७. १७; २४, १०. १४. १९; २७, १६; २८, ४; २९, १३. १७. ३५. ४९; ३१, १; ३२, ३. १९; ३६, २५. २७. २८. ४८; ३७, ७. ११. १४. १७. २९. ३१. ३५. ३९. ४४ (धृतराष्ट्र और कुन्ती के साथ-साथ ये भी दावाग्नि में भस्म हो गईं); ३८, ६; ३९, १३. १८; १६. २, २१; ४, १८; ६, १५; १८. ५, १४।

इनके नामों के निम्न पर्याय मिलते हैं :—

* **गान्धारराजदुहितृ**—देखिये वस्था०।

* **सुबलजा :** १५. १, २५।

* **सुबलस्य पुत्री :** ५. १४८, २८।

* **सुबलस्यात्मजा :** १. ११०, ५।

* **सुबलात्मजा :** १. ६७, ६०; ११०, ९; २. ७१, २३; ११. १६, १६।

* **सौबली :** १. ११५, २३; ११६, १५।

* **सौबलेयी :** १. ११५, १४. १७; ११६, ४; ९. ६३, ५९; १५. २, १६; १८, ९।

२. गान्धारी, अजमीढ की पत्नी का नाम है (१. ९५, ३७)।

३. गान्धारी, एक देवी का नाम है जिन्होंने पार्वती का अनुसरण किया (३. २३१, ४८)।

४. गान्धारी, कृष्ण की पत्नी का नाम है: 'तथा गान्धारराजस्य सुतां वीरः स्वयंवरे। निर्जित्य पृथिवीपालानावहत् पुष्करेक्षणः॥ अमृष्यमाणा राजानो यस्य जात्या हयाइव। रथे वैवाहिके युक्ताः प्रतोदेन कृतव्रणा॥', (७. ११, १०. ११)। श्रीकृष्ण की उन पत्नियों के अन्तर्गत इनकी गणना जो उनके साथ सती हो गईं (१६. ७, ७३)।

गान्धारीपुत्र—देखिये दुर्योधन, वस्था०।

गान्धारीपुत्रोत्पत्ति—"जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने कहा: एक समय महर्षि व्यास जब परिश्रम और क्षुधा से खिन्न होकर धृतराष्ट्र के यहाँ आये तो उस समय गान्धारी ने भोजन तथा विश्राम की व्यवस्था द्वारा उन्हें सन्तुष्ट किया। जब व्यास ने गान्धारी को वर देने की इच्छा की तो उन्होंने अपने पति के समान ही सौ पुत्र माँगे। तदनन्तर समयानुसार गान्धारी ने गर्भ धारण किया, परन्तु दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी उन्हें प्रसव नहीं हुआ। इसी बीच कुन्ती के गर्भ से एक तेजस्वी पुत्र के जन्म का समाचार सुनकर उन्हें अत्यन्य दुःख हुआ जिससे खिन्न हो उन्होंने अपने उदर पर आघात किया। इससे उनके गर्भ से एक मांस-पिण्ड का प्रसव हुआ जो लोहे के समान कड़ा था। दो वर्ष गर्भ में धारण करने के पश्चात् भी उस पिण्ड को इतना कड़ा देखकर जब उन्होंने उसे फेंक देने का विचार किया तो उसी समय व्यास ने प्रकट होकर उस मांस-पिण्ड को ठण्डे जल से सींचने के लिए कहा। उस समय सींचे जाने पर उस पिण्ड के एक सौ टुकड़े हो गये। वे अलग-अलग अंगूठों के पोर के बराबर एक सौ एक गर्भों के रूप में परिणत हुए। तत्पश्चात् गान्धारी ने उन सभी पृथक् भागों को घृत से भरे कुण्डों में पृथक् पृथक् रखवाया। उन कुण्डों के ढकन को पूरे दो वर्षों के पश्चात् ही खोलने का आदेश देकर महर्षि व्यास तपस्या के लिए हिमालय चले गये। दो वर्ष व्यतीत होने पर जिस क्रम से वे गर्भ उन कुण्डों में स्थापित किए गए थे उसी क्रम में उनमें सर्व-प्रथम दुर्योधन उत्पन्न हुआ। जिस दिन दुर्योधन का जन्म हुआ उसी दिन भीमसेन भी उत्पन्न हुये। दुर्योधन ने जन्म लेते ही गदहे जैसी बोली में रोना आरम्भ किया। उस समय प्रकृति में भी अनेक अशुभ उत्पात होने लगे। विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा कि वे अपने इस पुत्र का परित्याग कर दें परन्तु धृतराष्ट्र इसके लिए सहमत नहीं हुए। एक मास के भीतर ही उन कुण्डों से धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों और एक पुत्री का जन्म हुआ। जिन दिनों गान्धारी गर्भवती थीं उन्हीं दिनों धृतराष्ट्र ने अपनी सेविका, एक वैश्य जातीय स्त्री से, एक अन्य पुत्र को जन्म दिया जो युयुत्सु के नाम से विख्यात हुए (१. ११५)।"

१. गायत्री, एक छन्द तथा एक पवित्रतम मन्त्र का नाम है: 'गायत्री छन्दसां मुखम्', (२. ३८, २७)। ३. ८५, ३०। 'गायत्रीं वेदमातरम्', (३. २००, ८३)। 'चतुर्विंशतिरुद्दिष्टा गायत्री लोकसंगता॥ य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम्। तत्त्वेन भरतश्रेष्ठ स लोके न प्रणश्यति॥', (६. ४, १५. १६)। श्रीकृष्ण ने कहा कि वे गायत्री छन्द के समान हैं (६ ३४, ३५)। शिव ने गायत्री और सावित्री को प्रग्रह बनाया (६. २०२, ७५)। शिव ने गायत्री को अपने रथ के ऊपरी भाग का बन्धन रज्जु बनाया (८. ३४, ३५)। 'गायत्र्या कन्यया दिवि', (१३. १५२, २०)।

२. गायत्री = शिव (१,००० नाम)।

गायत्र्याः स्थान—'गायत्र्याः स्थानं त्रैलोक्यपूजितम्', (३. ८५, २८)।

गायन, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६७)।

गायन्ति त्वां गायत्रिणः = शिव (१,००० नाम)।

१. गार्ग्य, एकाधिक ऋषियों का नाम है: १२. २१०, २१ (देवर्षिचरितं गार्ग्यम्)। 'कालयवनः ख्यातो गर्गतेजोभिसंवृतः', (१२. ३३९, ९५)। ये विश्वामित्र के पुत्र थे (१३. ४, ५५)। 'वृद्धगार्ग्यो', (१३. १२५, ७७)।

२. गार्ग्य (बहु० ॰ग्याः), एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें श्रीकृष्ण ने पराभूत किया था (७. ११, १५)।

गार्त्समद (वि०)—'कथितो वंशोमया गार्त्समदस्तव', (१३. ३०, ६७)।

गार्हपत्य (बहु० ॰त्याः) पितरों के एक वर्ग का नाम है (२. ११, ४६)।

गालव, एक ऋषि का नाम है: 'चरितं गालवस्य', (१. २, ६१)। 'महर्षेश्चापि चरितं कथितं गालवस्य', (१. २, २३४)। युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित मुनियों में एक यह भी थे (२. ४, १५)। इन्द्रसभा में इनकी

उपस्थिति (२. ७, १०) । उन ब्रह्मर्षियों में एक यह भी थे जो युधिष्ठिर की प्रतीक्षा में रुके रहे (३. ८५, १२०) । ५. १०६, ७. १४. १९. २०. २५. २६. २७; १०७, १. २. १९; १०८, १. २. १८; १०९, १४. १६. २१; ११०, १४. २०; १११, २. १०. १४. १८. १९. २६; ११२, १. ४. ५. १९. २२; ११३, २. ५. १९. २२. २३; ११४, १. ११. १५; ११५, २. १२. १५. १६. १७. २०; ११६, ४. ७. ९. १०. १४; ११७, १. ६. १९. २१; ११८, १. २. ९. १२. १६. १७. २१; ११९, १. ३. ५. ९. ११. १५. १६. २१. २४; १२१, २८; १२३, १९; ९. ५०, ६५; १२. ४७, १० (उन महर्षियों में एक यह भी थे जो बाण-शय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े हुये); २८७, ३ (गालवस्य च संवादं देवर्षेर्नारदस्य च). ४. १२; ३४२, १०२–१०४ (वामादेशितमार्गेण मत्प्रसादान्महात्मना ॥ पाञ्चालेन क्रमः प्राप्तस्तस्माद्भूतात्सनातनात् । बाभ्रव्यगोत्रः स बभौ प्रथमं क्रमपारगः । नारायणाद्वरं लब्ध्वा प्राप्य योगमनुत्तनम् । क्रमं प्रार्णाय शिक्षां च प्रणयित्वा स गालवः); १३. ४, ५२; १८, ५२; २६, ६; ९४, ५. ३७ । तुकी० **पञ्चाल, पाञ्चाल।**

गालवचरित (म्र)—"पूर्वकाल में एक बार साक्षात् धर्मराज, महर्षि वसिष्ठ का रूप धारण करके तपस्या में लगे हुये विश्वामित्र के पास उनकी परीक्षा लेने के लिए आये । उस समय उन्होंने भूख से अत्यन्त पीड़ित होने के कारण भोजन की इच्छा प्रकट की । विश्वामित्र ने अत्यन्त शीघ्रता के साथ उनके भोजन के लिए चरूपाक बनाना आरम्भ किया परन्तु वे अतिथि-देवता उनकी प्रतीक्षा नहीं कर सके । फलस्वरूप जब उन्होंने दूसरे तपस्वियों का दिया हुआ अन्न खा लिया तब विश्वामित्र भी अत्यन्त उष्ण भोजन लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हुये । उस समय धर्म ने कहा : 'मैंने भोजन कर लिया है । अब तुम यहीं प्रतीक्षा करो ।' तदनन्तर धर्म वहाँ से चले गये परन्तु विश्वामित्र भोजन-पात्र को हाथ में लिए हुये निश्चेष्ट खड़े रहे । केवल वायु के आहार पर जीवित रहते हुए उन्हें इस प्रकार खड़े-खड़े सौ वर्ष व्यतीत हो गये । इस अवधि में गालवमुनि उनकी सेवा-सुश्रूषा करते रहे । सौ वर्ष पूर्ण होने पर वसिष्ठ के रूप में धर्म ने पुनः प्रगट होकर उस भोजन को ग्रहण किया जो तत्काल बने हुए भोजन के समान अब भी गर्म था । भोजन करने के पश्चात् धर्म ने कहा : 'विप्रर्षे ! मैं आप पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ ।' अपने को ब्राह्मण के रूप में संबोधित देखकर विश्वामित्र अत्यन्त प्रसन्न हुये । उन्होंने गालवमुनि की सेवा पर प्रसन्न होकर उन्हें इच्छानुसार कहीं भी चले जाने के लिए कहा । गालव ने विश्वामित्र से कहा : 'मैं आपको गुरुदक्षिणा के रूप में क्या दूँ ?' उनके इस निवेदन पर भी विश्वामित्र ने उन्हें जाने के लिए ही कहा । फिर भी गालव जब अत्यन्त आग्रह ही करते रहे तो विश्वामित्र को कुछ क्रोध आ गया और उन्होंने इस प्रकार कहा : 'तुम मुझे चन्द्रमा के समान श्वेतवर्ण ऐसे आठ सौ अश्व दो जिनके कान एक ओर से श्यामवर्ण हों ।' (५. १०६) ।" "विश्वामित्र के इस प्रकार कहने पर गालव मुनि तब से न कहीं बैठते, न सोते और न भोजन ही करते थे । वे चिन्ता और शोक में पड़े रहने के कारण इतने क्षीण हो गए कि उनके शरीर में केवल अस्थि और चर्म मात्र ही शेष रहा । उस समय वे विष्णु की शरण में जाने का विचार करने लगे । उसी समय उनके मित्र गरुड़ ने उनके समक्ष उपस्थित होकर उनसे कहा : 'मैंने विष्णु से पहले ही तुम्हारी ओर से निवेदन कर दिया है । अतः वे तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे । मैं तुम्हें सुखपूर्वक ऐसे देश में पहुँचा दूँगा जो पृथ्वी के अन्तर्गत तथा समुद्र के उस पार है ।' (५. १०७) ।" "गालव से गरुड़ ने पूर्वदिशा का वर्णन करते हुए कहा : जिस दिशा में सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न एवं प्रभावित करने वाले सूर्य उदित होते हैं, जिस दिशा में सन्ध्या के समय साध्यगण तपस्या करते हैं, धर्म के युगल नेत्र स्वरूप चन्द्रमा और सूर्य सर्वप्रथम जिस दिशा में उदित होते हैं, जहाँ धर्म प्रतिष्ठित हुआ है, तथा जिस दिशा में हवन करने पर आहुति सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त हो जाती है वही यह पूर्व दिशा दिवस एवं सूर्य मार्ग का द्वार है । इसी दिशा में प्रजापति दक्ष की अदिति आदि कन्याओं ने सर्वप्रथम प्रजावर्ग को उत्पन्न किया था और इसी में कश्यप की सन्तानों ने वृद्धि प्राप्त की है । इसी में इन्द्र का देवसम्राट् के पद पर प्रथम अभिषेक हुआ है और इसी दिशा में देवताओं ने तपस्या की है । अत्यन्त पूर्वकाल में सर्वप्रथम यही दिशा देवताओं से आवृत्त हुई थी । अतः इसे 'पूर्वा' अर्थात् आदि दिशा कहते हैं । ब्रह्मा ने सर्वप्रथम इसी दिशा में वेदों का गायन किया था और सविता ने ब्रह्मवादी मुनियों को यहीं सावित्री मन्त्र का उपदेश किया था । इसी दिशा में सूर्य ने महर्षि याज्ञवल्क्य को शुक्ल यजुर्वेद के मन्त्र प्रदान किये थे और इसी दिशा में देवगण सोम-रस का पान करते हैं । यहीं वरुण ने पाताल का आश्रय लेकर लक्ष्मी को प्राप्त किया था । पुरातन महर्षि वसिष्ठ की उत्पत्ति भी इसी दिशा में हुई थी । इसी दिशा में वेद की सहस्रों शाखायें प्रकट हुईं और इसी में धूमपायी महर्षिगण हविष्य के धूम का पान करते हैं । इसी दिशा में उदित होने वाले सूर्य कृतघ्न मनुष्यों एवं असुरों का विनाश करते हैं । यह पूर्व दिग्विभाग ही त्रिलोकी का, स्वर्ग का, और सुख का भी द्वार है । इस प्रकार वर्णन करने के पश्चात् गरुड़ ने गालव से पूछा कि वे पूर्व दिशा में ही चलेंगे या अन्य दिशाओं का भी वर्णन सुनेंगे । (५. १०८) ।" "दक्षिण दिशा का वर्णन करते हुए गरुड़ ने कहा : यह प्रसिद्ध है कि पूर्वकाल में सूर्य ने वेदोक्त विधि के अनुसार यज्ञ करके आचार्य कश्यप को दक्षिणा स्वरूप इस दिशा का दान किया था इसीलिए इसे दक्षिण दिशा कहते हैं । तीनों लोकों के पितरों, ऊष्मप नामक देवताओं, और विश्वदेवों का निवास इसी दिशा में है । विद्वान् पुरुष इसी दिशा को धर्म का द्वार कहते हैं । यहीं त्रुटि और लव आदि सूक्ष्मतर कालांशो पर दृष्टि रखते हुए प्राणियों की आयु की निश्चित गणना की जाती है । देवर्षि, पितृ-लोक के ऋषि, तथा समस्त राजर्षिगण इसी दिशा में निवास करते हैं । मृत प्राणी तथा उनके कर्म इसी दिशा का आश्रय लेते हैं । इस दिशा में प्रतिकूल स्वभाव वाले सहस्रों राक्षसों की ब्रह्मा ने सृष्टि की है । गन्धर्वगण, मन्दराचल के कुञ्जों और महर्षियों के आश्रमों में, मन तथा बुद्धि को आकर्षित करने वाली गाथाओं का इसी दिशा में गायन करते हैं । यहीं राजा रैवत गाथाओं के रूप में सामगान का श्रवण करते-करते अपनी स्त्री, मन्त्री तथा राज्य से भी वियुक्त होकर वन में चले गये थे । इस दिशा में सावर्णि मनु तथा यवक्रीत के पुत्र ने सूर्य की गति के लिए मर्यादा स्थापित की थी जिसका सूर्य कभी उल्लंघन नहीं करते । यहीं पुलस्त्यवंशी रावण ने तपस्या द्वारा देवताओं से अवध्य होने का वरदान प्राप्त किया था । इसी दिशा में घटित घटना के कारण वृत्रासुर इन्द्र का शत्रु बन बैठा । इसी दिशा में वह वैतरणी नदी है जो पापियों से घिरी रहती है । इसी दिशा में लौटने पर सूर्यदेव सुस्वादु जल की वर्षा करते हैं और तदनन्तर वसिष्ठ द्वारा सेवित उत्तर दिशा में पहुँचकर वे हिमपात करते हैं । यहीं मैंने भूख से पीड़ित होकर दो विशाल प्राणी, एक हाथी और एक कछुआ, भोजन के लिए प्राप्त किये थे । महर्षि कर्दम से उत्पन्न चक्रधनु नामक महर्षि भी इसी दिशा में रहते हैं जो कपिल के नाम से विख्यात हैं । यहीं शिव नाम से प्रसिद्ध और वेदों के पारङ्गत कुछ सिद्ध ब्राह्मण निवास करते हैं । दक्षिण में ही वासुकि-पालित तथा तक्षक एवं ऐरावत नागों द्वारा सुरक्षित भोगवती नामक पुरी है । मृत्यु के पश्चात् इस दिशा में जाने वाले प्राणी को ऐसे घोर अन्धकार का सामना करना पड़ता है जो अग्नि एवं सूर्य के लिये भी अभेद्य है । (५. १०९) ।" "गरुड़ ने पश्चिम दिशा का वर्णन करते हुए कहा : पश्चिम दिशा वरुण का आश्रय और उत्पत्ति-स्थान है । दिन के पश्चात् सूर्य इसी दिशा में स्वयं अपनी किरणों का विसर्जन करते हैं इसलिए यह पश्चिम के नाम से विख्यात है । पूर्वकाल में कश्यप ने जल-जन्तुओं के आधिपत्य के लिए इसी दिशा में वरुण का अभिषेक किया था । चन्द्रमा वरुण के निकट रहकर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को इसी दिशा में नूतनता प्राप्त कर उदित होते हैं । वायु ने इसी दिशा में युद्ध करके दैत्यों को पराजित किया था । प्रतिदिन सूर्यदेव को ग्रहण करनेवाला अस्ताचल यहीं स्थित है । निद्रा एवं रात्रि इसी दिशा से प्रकट होती हैं । पश्चिम दिशा में ही इन्द्र ने गर्भवती दिति देवी के गर्भ का उच्छेद किया था जिससे मरुद्गण जन्मे । हिमालय, मन्दराचल और

क्षीर-सागर इसी दिशा में स्थित हैं। पश्चिम दिशा में ही समुद्र के भीतर राहु का धड़ दृष्टिगत होता है। मुनिवरों का सामगान इसी दिशा में होता है। हरिमेधा मुनि की कन्या ध्वजवती यहीं निवास करती हैं। वायु, अग्नि, जल और आकाश—ये सब इसी दिशा में रात्रि और दिन के दुःखदायी स्पर्श का परित्याग करते हैं। इसी दिशा से सूर्यदेव वक्रगति से चक्कर लगाना आरम्भ करते हैं। अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों में से प्रत्येक अट्ठाइसवें दिन सूर्य के साथ विचरण करके अमावस्या के बाद फिर सूर्य-मण्डल से पृथक् हो जाता है। अधिकांश नदियाँ यहीं से प्रकट होकर समुद्र में विलीन होती हैं। यहीं नागराज अनन्त का निवास तथा भगवान् विष्णु का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। यहीं वायु का भवन और महर्षि कश्यप का आश्रम है (५. ११०)।" "उत्तर-दिशा का वर्णन करते हुए गरुड़ ने कहा: इस मार्ग से जाने पर मनुष्य का पाप से उद्धार हो जाता है अतः इस 'उत्तारण' के कारण इसे उत्तर दिशा कहते हैं। यह दिशा उत्कृष्ट सुवर्ण आदि निधियों का अधिष्ठान है। इसी दिशा में बदरिकाश्रमतीर्थ है। उत्तर में ही हिमालय पर भगवान् शंकर उमा के साथ अवस्थित हैं। चन्द्रमा का द्विजराज के पद पर अभिषेक इसी दिशा में हुआ था और यहीं पर गंगा को शिव ने मस्तक पर धारण किया था। पार्वती के तप का स्थान यही दिशा है। उत्तर-दिशा में ही शिव ने काम को भस्म किया था। कुबेर का अभिषेक इसी दिशा में हुआ था। चैत्ररथवन और वैखानस ऋषियों का आश्रम इसी दिशा में है। मन्दाकिनी नदी और मन्दराचल यहीं स्थित हैं। राक्षस गण सौगन्धिक वन की रक्षा करते हैं। कदलीवन और कल्पवृक्ष इसी दिशा में हैं। अरुन्धती देवी और सप्तर्षि यहीं प्रकाशित होते हैं। स्वाती नक्षत्र का निवास इसी में है। यज्ञानुष्ठान में प्रवृत्त ब्रह्मा जी इसी दिशा में निवास करते हैं। इसी दिशा में धाम नाम से प्रसिद्ध मुनि श्री गंगामहाद्वार की रक्षा करते हैं। कैलासपर्वत, जो कुबेर का स्थान है, यहीं स्थित है। इसी दिशा में विद्युत्प्रभा नाम से प्रसिद्ध दस अप्सरायें उत्पन्न हुई थीं। विष्णु ने त्रिलोक नापते समय चरण इसी दिशा में रखा था। उत्तर दिशा के उशीरवीज नामक स्थान में राजा मरुत ने यज्ञ किया था। इसी दिशा में महात्मा जीमूत के समक्ष हिमालय की स्वर्णनिधि प्रकट हुई थी। समस्त शुभ कर्मों के लिए यह दिशा उत्तम मानी गई है, इसीलिए इसे उत्तर-दिशा कहते हैं (५. १११)।" "गालव के निवेदन करने पर गरुड़ उन्हें पश्चिम दिशा की ओर लेकर चले—वर्णन। गरुड़ के अत्यन्त तीव्र वेग को सहन न कर सकने के कारण गालव ने उनसे गति को कुछ मन्द करने का निवेदन किया। गालव ने यह भी कहा कि गुरु को उनकी आज्ञानुसार घोड़े दिये जाने का कोई मार्ग उपलब्ध न होने के कारण वे अपने जीवन का परित्याग कर देना चाहते हैं। गालव के इस दीन वचन को सुनकर गरुड़ चलते हुए ही हँसने लगे। तदनन्तर ऋषभ नामक पर्वत पर पहुँचकर दोनों कुछ समय के लिए विश्राम करने लगे (५. ११२)।" "ऋषभ पर्वत के शिखर पर गालव और गरुड़ ने शाण्डिली नामक एक तपस्विनी ब्राह्मणी को देखा। उस तपस्विनी ने उन्हें सिद्धान्न अर्पित किया जिससे तृप्त होकर वे लोग निद्रा-लीन हो गये। दो घड़ी के पश्चात् जागकर गरुड़ ने देखा कि वह अपने दोनों पंखों से रहित हो गये हैं। जब गालव ने उनसे इस प्रकार पंखहीन होने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा: 'मैंने तो अपने मन में केवल इतना ही विचार किया था कि इस तपस्विनी को वहाँ पहुँचा दूँ जहाँ ब्रह्मा, महादेव और विष्णु आदि निवास करते हैं।' तदनन्तर गरुड़ द्वारा क्षमा-याचना करने पर शाण्डिली ने उन्हें पुनः पंखों से युक्त कर दिया। साथ ही उसने उन्हें किसी भी स्त्री का अपमान न करने की चेतावनी भी दी। तदनन्तर गरुड़ और गालव जैसे आये थे वैसे ही चले गये। फिर भी, वे श्याम-कर्ण अश्व नहीं प्राप्त कर सके। गालव को आया देखकर विश्वामित्र ने उनसे कहा: 'तुमने मुझे जो देने की प्रतिज्ञा की थी उसका समय समाप्त हो चुका है परन्तु मैं इतने ही समय तक और प्रतीक्षा करूँगा।' (५. ११३)।" "तदनन्तर गरुड़ ने हिरण्य और धन की व्युत्पत्ति तथा दुर्लभता बताते हुए कहा कि अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य तथा कुबेर धन की रक्षा करते हैं जिससे धन प्राप्त नहीं हो सकता, और बिना धन के श्यामकर्ण अश्वों की भी प्राप्ति नहीं होगी। गरुड़ के परामर्श पर धन प्राप्ति के लिए गालव तथा गरुड़ दोनों प्रतिष्ठानपुर में नहुष-पुत्र राजर्षि ययाति के पास गये। गरुड़ ने गालव की कठिनाई का ययाति से वर्णन किया और साथ ही ययाति से कहा: 'आप से भिक्षा ग्रहण करके गुरु को पूर्वोक्त धन देने के पश्चात् गालव तपस्या में संलग्न हो जायेंगे और अपनी तपस्या के एक अंश से ये आप को भी संयुक्त करेंगे। हे नरेश्वर!, यहाँ दान किये हुए घोड़े के शरीर में जितने रोयें होते हैं, दान करने वाले को उतने ही घोड़े प्राप्त होते हैं। अतः गालव को दान देने से आपके दान की शोभा होगी' (५. ११४)।" "सहस्रों यज्ञों का अनुष्ठान करने वाले दाता, दान-पति, प्रभावशाली तथा राजोचित तेज से प्रकाशित महाराज ययाति ने अपने मन में सोचा कि गालव और गरुड़ सूर्यवंश में उत्पन्न हुए अनेक राजाओं को छोड़कर उनके पास आये हैं, यह उनका सौभाग्य है। फिर भी अपने क्षीण वैभव को ध्यान में रखकर ययाति ने कहा: 'मैं अब पहले जैसा धन-सम्पन्न नहीं रह गया हूँ। इस दशा में भी मैं आपके आगमन को निष्फल नहीं करना चाहता।.........अतः मेरी पुत्री को ही महर्षि गालव ग्रहण करें। मेरी पुत्री के रूप-सौन्दर्य से आकृष्ट होकर देवता, मनुष्य तथा असुर इसे प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। इसके शुल्क के रूप में राजा लोग निश्चय ही अपना राज्य भी आपको दे देंगे।' तब गरुड़ सहित गालव उस माधवी नामक कन्या को लेकर वहाँ से चल दिये। इसके पश्चात् गरुड़ भी यह कहकर कि अश्वों की प्राप्ति का द्वार प्राप्त हो गया है, गालव से विदा लेकर चले गये। गालव उस कन्या को लेकर अयोध्यापति, इक्ष्वाकुवंशी हर्यश्व के पास आये और उनसे अपनी अभिलाषा व्यक्त की (५. ११५)।" "गालव की बात सुनकर महाराज हर्यश्व ने गालव के साथ आई ययाति-कन्या माधवी को ग्रहण करना स्वीकार कर लिया। परन्तु गालव ने कहा कि वह आठ सौ श्यामकर्ण अश्व प्राप्त करने के पश्चात् ही कन्या को प्रदान करेंगे। उस समय महाराज हर्यश्व ने कहा कि उनके पास वैसे केवल दो सौ अश्व ही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे उस कन्या से केवल एक ही सन्तान उत्पन्न करेंगे। हर्यश्व की बात सुनकर कन्या ने महर्षि गालव से कहा: 'मुझे यह वरदान प्राप्त है कि मैं प्रत्येक प्रसव के पश्चात् पुनः कन्या हो जाया करूँगी, अतः आप दो सौ श्यामकर्ण अश्व लेकर मुझे राजा को सौंप दें। इस प्रकार चार राजाओं से दो-दो सौ अश्व लेने पर आपके आठ सौ अश्व पूरे हो जायेंगे।' कन्या की बात सुनकर गालव ने नियत शुल्क का चौथाई भाग लेकर राजा हर्यश्व को केवल एक पुत्र उत्पन्न करने के के लिए वह कन्या सौंप दी। राजा ने उस कन्या से वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न किया। तदनन्तर माधवी पुनः कन्या होकर गालव के पास आ गई और वे उसे लेकर राजा दिवोदास के यहाँ गये (५. ११६)।" "राजा दिवोदास के यहाँ भी हर्यश्व जैसी ही व्यवस्था हुई। उन्होंने भी ययाति-कन्या माधवी के गर्भ से हर्यश्व की ही भाँति अपने लिए प्रतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न किया (५. ११७)।" "तदनन्तर गालव उस कन्या को लेकर भोज नगरी में राजा उशीनर के यहाँ आये। यहाँ भी पहले जैसी व्यवस्था हुई और राजा उशीनर ने उस कन्या के गर्भ से अपने लिये शिवि नामक पुत्र उत्पन्न किया। तत्पश्चात् गालव जब उस कन्या को वहाँ से लेकर चले तो उन्हें मार्ग में गरुड़ का दर्शन हुआ (५. ११८)।" "गरुड़ ने गालव को बताया कि अब शेष दो सौ श्यामकर्ण अश्व अप्राप्य हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पूर्वकाल में कान्यकुब्ज राजा गाधि की कुमारी पुत्री सत्यवती को अपनी पत्नी बनाने के लिए जब ऋचीक मुनि ने राजा से उसे मांगा तो राजा ने ऋचीक से ऐसे ही एक सहस्र श्यामकर्ण अश्व मांगे थे। ऋचीक ने वरुण-लोक में जाकर अश्व-तीर्थ से वैसे घोड़े प्राप्त किये और उन्हें राजा गाधि को दे दिया। गाधि ने पुण्डरीक नामक यज्ञ करके उन सभी अश्वों को दक्षिणा के रूप में ब्राह्मणों को बाँट दिया। उक्त तीन राजाओं ने उन्हीं से दो-दो सौ अश्व क्रय करके अपने-अपने पास रख लिए थे। शेष चार सौ घोड़े वितस्ता नदी के उस पार ले जाये जाते समय नदी की धारा

में बह गये। इस प्रकार अब इस देश में केवल छः सौ श्यामकर्ण अश्व ही विद्यमान हैं। अतः गरुड़ ने गालव को यह परामर्श दिया कि वे शेष दो सौ अश्वों के बदले में ययाति-कन्या माधवी को ही विश्वामित्र को समर्पित कर दें। गरुड़ के इस परामर्श को ग्रहण करके महर्षि गालव ने विश्वामित्र से तदनुसार प्रस्ताव किया। विश्वामित्र ने भी उस कन्या को ग्रहण करके उससे अष्टक नामक एक पुत्र उत्पन्न किया। तदनन्तर विश्वामित्र उस कन्या को गालव को लौटाकर स्वयं वन मे चले गये। गालव ने भी गुरु-दक्षिणा देकर मन ही मन प्रसन्नता का अनुभव किया और फिर गरुड़ से आज्ञा लेकर उस राज-कन्या को पुनः उसके पिता ययाति के यहाँ लौटा आये। इस प्रकार गुरु-ऋण से उऋण होकर गालव वन में चले गये (५. ११९)।" "तदनन्तर राजा ययाति माधवी के स्वयंवर का विचार करके गङ्गा-यमुना के संगम पर स्थित अपने आश्रम में आकर रहने लगे। उस कन्या के साथ उसके दो भ्राता, पूरू और यदु भी उनके आश्रम पर आये। स्वयंवर में नाग, यक्ष, मनुष्य, गन्धर्व, पशु-पक्षी तथा पर्वत, वृक्ष और वनों में निवास करने वाले प्राणियों का शुभागमन हुआ। उसमें ब्रह्मा के समान अनेक तेजस्वी ब्रह्मर्षि भी उपस्थित हुए। माधवी ने अन्य समस्त वरों को छोड़कर तपोवन का ही वर के रूप में वरण कर लिया। इसके पश्चात् ययाति-नन्दिनी माधवी तपोवन में आकर नियमों का पालन करती हुई शुद्ध मन से मृगी के समान विचरण करने लगी। ययाति भी अनेक सहस्र वर्षों की आयु पूर्ण करके मृत्यु को प्राप्त हुए। उनके दोनों पुत्र, पुरु और यदु, अभ्युदयशील थे। नहुष-पुत्र ययाति लोक-परलोक में प्रतिष्ठित हुए। ययाति महर्षियों के समान पुण्यात्मा और तपस्वी थे अतः स्वर्ग में जाकर उन्होंने सहस्रों वर्षों तक श्रेष्ठतम फल का उपभोग किया। ययाति का चित्त अपना स्वर्गीय-वैभव देखकर कुछ मोहित हो उठा जिससे वे राजर्षियों, देवताओं, मनुष्यों तथा महर्षियों की अवहेलना करने लगे। इन्द्र ने ययाति की इस अवस्था का अनुमान कर लिया। अन्य राजर्षिगण भी ययाति को धिक्कारने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि समस्त स्वर्गवासियों की बुद्धि पर पर्दा पड़ गया जिससे वे राजा ययाति को पहचान नहीं सके। फिर तो दो ही घड़ी में राजा ययाति का तेज नष्ट हो गया (५. १२०)।" कथा के आगे के अंशो के लिए देखिये **ययाति**।

गालवसम्भव (गालव से उत्पन्न) : ९. ५२, १४।

गालवि (गालव के पुत्र) : ९. ५२, १७।

गावल्गनि = सञ्जय (देखिये वस्था०)।

गिरयः, मूर्तिमान पर्वतों के लिये प्रयुक्त हुआ है जिन्होंने स्कन्द को सैनिक प्रदान किये (९. ४५, ५४)।

गिरिक = शिव (१,००० नाम)।

गिरिकप्रिय = शिव (१,००० नाम)।

गिरिका, वसु उपरिचर की पत्नी का नाम है जो कोलाहल द्वारा शुक्तिमती के गर्भ से उत्पन्न हुई थी (१. ६३, ३९. ४२. ४६. ५५)।

गिरिगह्वर, पूर्वोत्तर भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ६८)।

गिरिप्रस्थ, निषधदेश के एक पर्वत का नाम है जिसके आश्रय में रहकर इन्द्र ने अपना कार्य सिद्ध किया था (३. ३१५, १३)।

गिरिराज् : ६. ७८, ७।

गिरिराज (हिमवत) : ८. ८५, १७।

गिरिरुह = शिव (१,००० नाम)।

गिरिवरात्मजा = उमा : ९. ४४, ३९।

गिरिवृत्तालय = शिव (१,००० नाम)।

गिरिव्रज, मगधदेश की राजधानी का नाम है (१. २, १३४)। जरासन्ध ने पराजित राजाओं को यहीं बन्दी बना कर रक्खा था (२. १४, ६३)। जरासन्ध ने यहाँ से मथुरा की ओर अपनी गदा फेंका (२. १९, २३ : °व्रजात् है)। यह चारों ओर से पाँच पर्वतों द्वारा सुरक्षित थी (२. २१, ३ [°व्रजम है]. १४)। कृष्ण, अर्जुन और भीमसेन यहाँ आये और भीम ने यहाँ जरासन्ध का वध करके बन्दी राजाओं को मुक्त कराया (२. २४, १४. २९)। भीमसेन ने जरासन्ध के पुत्र को यहाँ पराजित किया (२. ३०, १७)। 'गिरिव्रजगताश्चापि नग्नजित्प्रमुखा नृपाः', (७. ४, ६)। यह जरासन्ध की राजधानी थी (१२. ३३९, ९७)। राजर्षि धुन्धुमार देवताओं के वरदान को त्याग कर यहाँ सोये थे (१३. ६, ३९), तुकी० **राजगृह**।

गिरिव्रजेश्वर = दण्डधार : ८. १८, ११।

१. गिरिश = शिव (देखिये वस्था०)।

२. गिरिश = एक धनुष का नाम है : ७. २३, ९४।

गिरिसाधन = शिव (१,००० नाम)।

गिरिसुता = उमा : १३. १४१, ३१।

गिरीणां शिखराणि = शिव (१,००० नाम)।

गिरिश = शिव (देखिये वस्था०)।

गीतप्रिया, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ७)।

गीतवादनकप्रिय = शिव (१,००० नाम)।

गीतवादित्रतत्त्वज्ञ = शिव (१,००० नाम)।

गीतवादित्रशालिन् = शिव (१,००० नाम)।

गुडाकेश, अर्जुन का एक नाम है (१. १३९, ८)। देखिये अर्जुन भी।

गुणकेशी, इन्द्र सारथि, मातलि, की कन्या का नाम है (५. ९७, १३. २०; १०३, २१; १०४, ५. ८)।

गुणबुद्धि = शिव (१,००० नाम)।

गुणभृत = विष्णु (१,००० नाम)।

गुणमुख्या, एक अप्सरा का नाम है जिसने अर्जुन के जन्म के समय नृत्य किया था (१. १२३, ६१)।

गुणाकर = शिव (१,००० नाम)।

गुणात्मन् = कृष्ण (विष्णु) : १२. ३४१, १२।

गुणाधिक = शिव (१,००० नाम)।

गुणावती, एक नदी का नाम है जिसके उत्तर प्रान्त में परशुराम ने क्षत्रियों का संहार किया था (७. ७० ८)।

गुणावरा, एक अप्सरा का नाम है जिसने अर्जुन के जन्म के समय नृत्य किया था (१. १२३, ६१)।

गुणौषद = शिव (१,००० नाम)।

गुप्त = विष्णु (१,००० नाम)।

गुप्तक, सौवीर देश के राजकुमार का नाम है जो जयद्रथ का साथी था (३. २६५, १०)।

१. गुरु = बृहस्पति। इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, २२)। 'शक्रविष्णू यथा गुरुः', (८. ६५, १९)। 'प्रतिलोमोऽभवद्गुरुः', (१२. १४१, १५)।

२. गुरु = द्रोण : १. २, ३०५; ७. १५५, ४५; १६२, ४९; ८. ७९, ७२; १०. १२, ८; १६, ३५; १७, ५। तुकी० **आचार्य**।

३. गुरु = शिव : १३. १४, १०७; १७, १३२ (१,००० नाम)।

४. गुरु = विष्णु (१,००० नाम)।

गुरुतम = विष्णु (१,००० नाम)।

१. गुरुपुत्र = अश्वत्थामा : १. १३५, ५; ६. १०१, ५७; ८. १६, ३७; ८८, ३३; ९. ६, १८; १४, २८; १०. १६, ३४।

२. गुरुपुत्र : शुक : १२. ३२६, २. ४।

गुरुभार, गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक (५. १०१, १३)।

गुरुशक्तिधारिन् = स्कन्द : ३. २३२, १५।

गुरुशिष्यसंवाद—"अर्जुन ने श्रीकृष्ण से परब्रह्म के स्वरूप की व्याख्या करने को कहा। श्रीकृष्ण ने कहा : इस विषय को लेकर गुरु और शिष्य में मोक्ष विषयक जो संवाद हुआ था, मैं वही प्राचीन इतिहास तुम्हें बता रहा हूँ। एक दिन उत्तम व्रती एक ब्रह्मवेत्ता आचार्य के किसी बुद्धिमान् शिष्य ने उनसे प्रश्न किया कि 'मैं कहाँ से आया हूँ और आप

कहाँ से आयें हैं? जगत के चराचर जीव कहाँ से उत्पन्न हुए हैं? इत्यादि।' शिष्य के प्रश्नों को सुनकर आचार्य ने कहा : 'तुम्हारे पूछे हुये इन समस्त प्रश्नों का उत्तर ब्रह्मा ने वेद-विद्या का आश्रय लेकर पहले से ही दे रक्खा है। जिसमें भूत-वर्तमान और भविष्य आदि के स्वरूप का निश्चय किया गया है, जो सिद्धों के समुदाय को भलीभाँति ज्ञात है, जिसका पूर्वकाल में निर्णय किया गया था और बुद्धिमान् पुरुष जिसे जानकर सिद्ध हो जाते हैं, मैं उसी परम, उत्तम और सनातन ज्ञान का तुमसे वर्णन करता हूँ। पूर्वकाल में एक समय जब प्रजापति दक्ष, भरद्वाज, गौतम, शुक्र, वसिष्ठ, कश्यप, विश्वामित्र और अत्रि आदि महर्षि अपने कर्मों द्वारा समस्त मार्गों में भटकते हुये अत्यन्त श्रान्त हो गये, तब एकत्रित हो उन सब मुनियों ने अङ्गिरा को आगे करके ब्रह्म-लोक में जाकर सत्य तथा पाप-कर्मों के संबंध में ब्रह्मा से प्रश्न किया। ब्रह्मा ने तब उन सब के समक्ष सनातन धर्म का उपदेश किया। ब्रह्मा ने बताया कि श्रद्धा ही धर्म का मुख्य लक्षण है। जो मनुष्य उत्तम व्रत का आश्रय लेकर धर्मों का दृढ़तापूर्वक पालन करते हैं वे काल-क्रम से सम्पूर्ण प्राणियों के जन्म और मरण को प्रत्यक्ष देखते हैं। अव्यक्त प्रकृति, महत्तत्व, अहङ्कार, दस इन्द्रियाँ, एक मन, पञ्चमहाभूत और उनके शब्द आदि विशेष गुण—इन चौबीस तत्त्वों का सनातन सर्ग है। इसके अतिरिक्त एक जीवात्मा है जिसको मिलाकर तत्वों की संख्या पच्चीस बताई गई है। तत्वों की उत्पत्ति और उनके लय का सम्यक् ज्ञान रखने वाला व्यक्ति कभी मोह में नहीं पड़ता और बन्धनमुक्त होकर सम्पूर्ण दिव्य-लोकों के सुख का अनुभव करता है।' (१४. ३५)।" "ब्रह्मा ने कहा : 'तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम अव्यक्त प्रकृति है। तीन गुणों में जब विषमता आती है तब वे पञ्चभूत का रूप धारण करते हैं और उनसे नौ द्वारवाले नगर (शरीर) का निर्माण होता है। इस पुर में जीवात्मा को विषयों की ओर प्रेरित करने वाले मन, सहित ग्यारह इन्द्रियाँ हैं। बुद्धि इस नगर की स्वामिनी है और ग्यारहवाँ मन, दस इन्द्रियों से श्रेष्ठ है।' तदनन्तर ब्रह्मा ने तमोगुण तथा उसके कार्य और फल का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि देवता, ब्राह्मण और वेद की सदा निन्दा करना, दान न देना, अभिमान, मोह, क्रोध, असहनशीलता और प्राणियों के प्रति मात्सर्य—ये सब तामस व्यवहार हैं। इसके प्रभाव में पड़कर ऋषि मुनि और देव-गण भी मोहित हो जाते हैं। तम, मोह, महामोह, क्रोधसंज्ञक तामिस्र और मृत्युरूप अन्धतामिस्र—ये पाँच प्रकार की तामसी प्रकृतियाँ हैं। जो मनुष्य उक्त गुणों को ठीक-ठीक जानता है वह सम्पूर्ण तामसिक गुणों से सदा मुक्त रहता है (१४. ३६)।" "तदनन्तर ब्रह्मा ने रजो-गुण की प्रकृति और उसके कार्यों का वर्णन करते हुए उसके ज्ञान का फल बताया (१४. ३७)।" "ब्रह्मा ने सत्व-गुण की प्रकृति तथा उसके कार्यों का वर्णन करते हुए उसके ज्ञान का फल बताया (१४. ३८)।" "सत्वादि गुणों और प्रकृति के नामों का वर्णन करते हुए ब्रह्मा ने कहा कि सत्व आदि गुणों का सर्वथा पृथक् रूप से वर्णन करना असम्भव है क्योंकि तीनों गुण अविच्छिन्न देखे जाते हैं। ऐसा होने पर भी इन गुणों में से किसी की न्यूनता और किसी की अधिकता हो सकती है। प्रकृति को तम, व्यक्त, शिव, धाम, रज, योनि, सनातन, प्रकृति, विकार, प्रलय, प्रधान, प्रभव, अव्यय, अनुद्रिक्त, अनून, अकम्प, अचल, ध्रुव, सत, असत, अव्यक्त और त्रिगुणात्मक कहते हैं। आध्यात्मतत्त्व का चिन्तन करनेवाले लोगों को इन नामों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। जो मनुष्य प्रकृति के इन नामों, सत्त्वादि गुणों और सम्पूर्ण विशुद्ध गतियों को ठीक-ठीक जानता है, वह गुण-विभाग के तत्त्व का ज्ञाता है (१४. ३९)।" "ब्रह्मा ने कहा : पहले अव्यक्त प्रकृति से महान् आत्म-स्वरूप महाबुद्धि तत्त्व उत्पन्न हुआ। महान् आत्मा, मति, विष्णु आदि पर्यायवाची नामों से इसकी पहचान होती है। यह परमात्मा संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है। अणिमा, लघिमा और प्राप्ति आदि सिद्धियाँ इसी की स्वरूप हैं। यह सब का शासक, ज्योतिर्मय और अविनाशी है। यही आदि सर्ग है (१४. ४०)।" "ब्रह्मा ने कहा : जो पहले महत्तत्व उत्पन्न हुआ था वही अहङ्कार है। जब वह अहं रूप में प्रादुर्भूत होता है तब वह अहङ्काररूपी द्वितीय सर्ग कहलाता है। यह अहङ्कार भूत आदि विकारों के कारण वैकारिक है। यह रजो-गुण का स्वरूप और इसलिए तैजस है। इसका आधार चेतन आत्मा है। समस्त प्रजा की सृष्टि इसी से होती है इसलिए इसको प्रजापति कहते हैं। यह सम्पूर्ण जगत अहङ्कार-स्वरूप है (१४. ४१)।" "ब्रह्मा ने कहा : अहङ्कार से पृथिवी, आकाश, वायु, जल और तेज—ये पाँच महाभूत उत्पन्न हुये। प्राण आदि तथा ग्यारह इन्द्रियाँ भी इसी से उत्पन्न हुई :—

भूत	अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
१. आकाश	श्रोत्र	शब्द	दिशायें
२. मारुत	त्वचा	स्प्रष्टव्य	विद्युत
३. ज्योति	चक्षु	रूप	सूर्य
४. आपः	जिह्वा	रस	सोम
५. पृथिवी	घ्राण	गन्ध	वायु
६.	पाँव	गन्तव्य	विष्णु
७. अपान	पायु	विसर्ग	मित्र
८.	उपस्थ	शुक्र	प्रजापति
९.	हाथ	कर्म	शक्र (इन्द्र)
१०.	वाच् : वैश्वदेवी	वक्तव्य	वह्नि (अग्नि)
११.	मानस	संकल्प	चन्द्रमा
१२.	अहङ्कार : सर्वसंसार-कारक	अभिमान	रुद्र
१३.	बुद्धि : षडिन्द्रियवि-चारिणी	मन्तव्य	ब्रह्मा

प्राणियों के रहने के तीन स्थान हैं : जल, थल और आकाश। देहधारियों का जन्म चार प्रकार का होता है—अण्डज, उद्भिज, स्वेदज और जरायुज। ब्रह्म-योनि की प्राप्ति के दो हेतु, तपस्या और पुण्य-कर्म, हैं। इसी प्रकार ब्रह्मा ने निवृत्ति, शरीर, काल-चक्र आदि का वर्णन करते हुए कहा कि जैसे एक दीप से सैकड़ों दीप जला लिये जाते हैं उसी प्रकार एक ही परमात्मा यत्र-तत्र अनेक रूपों में उपलब्ध होता है। वास्तव में वही परमात्मा विष्णु, मित्र, वरुण, अग्नि, प्रजापति आदि तथा सर्वव्यापी और महान् आत्मा के रूप में प्रकाशित है। ब्राह्मण-समुदाय, देवता, असुर, यक्ष, पिशाच, पितर, पक्षी, राक्षस, भूत और सम्पूर्ण महर्षि भी सदा उसी परमात्मा की स्तुति करते हैं (१४. ४२)।" "ब्रह्मा ने बताया कि मनुष्यों में क्षत्रिय, वाहनों में हाथी, वनवासियों में सिंह, पशुओं में भेड़, विवरवासियों में सर्प, गायों में बैल और स्त्रियों में पुरुष प्रधान है। न्यग्रोध, जामुन, पीपल, सेमल, शीशम और बांस, वृक्षों में प्रधान हैं। इसी प्रकार हिमवान् आदि पर्वतों में प्रधान हैं। गणों के मरुद्गण, ग्रहों के सूर्य और नक्षत्रों के चन्द्रमा अधिपति हैं। इसी प्रकार ब्रह्मा ने पितरों, सरिताओं, भूतों, ब्राह्मणों, ओषधियों, मनुष्यों, किन्नरों, यक्षों आदि विभिन्न वर्गों के प्रधानों और अधिपतियों का वर्णन किया। तदनन्तर उन्होंने धर्म आदि के लक्षणों, विषयों की अनुभूति के साधनों, तथा क्षेत्रज्ञ की विलक्षणता का वर्णन किया (१४. ४३)।" "ब्रह्मा ने समस्त पदार्थों के आदि-अन्त का एवं ज्ञान की नित्यता का वर्णन करते हुए कहा कि पहले दिन है और फिर रात्रि है, अतः दिन-रात्रि का आदि है। इसी प्रकार शुक्ल-पक्ष मास का, श्रवण नक्षत्रों का, और शिशिर ऋतुओं का आदि है—इत्यादि (१४. ४४)।" "ब्रह्मा ने देह रूपी काल-चक्र तथा गृहस्थ एवं ब्राह्मण के धर्म का वर्णन किया (१४. ४५)।" "ब्रह्मा ने ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी के धर्मों का वर्णन किया (१४. ४६)।" "ब्रह्मा ने मुक्ति के साधनों का तथा देहरूपी वृक्ष और ज्ञान-खड्ग से उसे काटने का वर्णन किया (१४. ४७)।" "ब्रह्मा ने कहा कि इस अव्यक्त, उत्पत्तिशील और अविनाशी सम्पूर्ण वृक्ष को कोई ब्रह्म-स्वरूप मानते हैं और कोई महान् ब्रह्म-वन। कितने ही इसे अव्यक्त-वन और कितने ही परम अनामय मानते हैं। जो व्यक्ति अन्तःकरण को शुद्ध कर लेता है वह

जो-जो चाहता है उस वस्तु को प्राप्त कर लेता है। अन्तर्यामी परमात्मा सत्व-स्वरूप आत्मा में स्थित है। इस तत्व को समझे बिना परम पुरुष को प्राप्त करना संभव नहीं है। कुछ विद्वानों का कथन है कि क्षेत्रज्ञ और सत्व की एकता युक्तिसंगत नहीं है। उनका कहना है कि उस क्षेत्रज्ञ से सत्व पृथक् है क्योंकि यह सत्व अविचार-सिद्ध है। ये दोनों एक साथ रहने वाले होने पर भी तत्वतः अलग-अलग हैं—ऐसा समझना चाहिए। इसी प्रकार दूसरे विद्वानों का निर्णय दोनों के एकत्व और नानात्व को स्वीकार करता है; क्योंकि मशक तथा उदुम्बर की एकता तथा पृथक्ता देखी जाती है। जल से मछली भिन्न है, तो भी मछली और जल दोनों का संयोग देखा जाता है, एवं जलबिन्दुओं का कमल के पत्ते से संबन्ध देखा जाता है (१४. ४८)।" "ऋषियों ने संशय में पड़कर ब्रह्मा से पूछा कि जगत में समस्त धर्मों में कौन सा धर्म अनुष्ठान करने के लिए सर्वोत्तम माना गया है। उन लोगों ने क्षेत्रज्ञ और सत्व के सम्बन्ध को जानने की भी जिज्ञासा प्रकट की (१४. ४९)।" "ब्रह्मा ने कहा : अहिंसा ही सर्वोत्तम कर्त्तव्य है। यह साधन उद्वेगरहित, सर्वश्रेष्ठ, और धर्म को लक्षित करने वाला है। क्षेत्रज्ञ और सत्व में विषय-विषयि भाव का संबन्ध माना गया है। मनीषी पुरुष सत्व को द्वन्द्व-युक्त कहते हैं और क्षेत्रज्ञ निर्द्वन्द्व, निष्कल, नित्य और निर्गुण स्वरूप है। जैसे कमल का पत्ता निर्लिप्त रहकर जल को धारण करता है वैसे ही क्षेत्रज्ञ सदा सत्व का उपभोग करता है। जैसे कोई मनुष्य दीपक लेकर अन्धकार में चलता है वैसे ही परम तत्व को चाहने वाला साधक सत्वरूप दीपक के प्रकाश में साधन-मार्ग पर चलता है। इस प्रकार सत्व-गुण तो व्यक्त है और पुरुष अव्यक्त माना गया है। ऐसा विचार करके ही किसी उपाय से धर्म के साधन का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। क्योंकि उपाय को जानने वाला मेधावी पुरुष अत्यन्त सुख का भागी होता है। गन्ध-रस-रूप-स्पर्श और शब्द से जो युक्त नहीं हैं तथा मुनिगण बुद्धि के द्वारा जिसका मनन करते हैं वह प्रधान कहलाता है। प्रधान का दूसरा नाम अव्यक्त है। अव्यक्त का कार्य महत्तत्व है और प्रकृति से उत्पन्न महत्तत्व का कार्य अहङ्कार है। अहङ्कार से पञ्चमहाभूतों को प्रकट करनेवाले गुणों की उत्पत्ति हुई है। पञ्चमहाभूतों के गुण इस प्रकार हैं :—

पञ्चभूत	गुण				
आकाश					शब्द
वायु				स्पर्श	शब्द
ज्योति			रूप	स्पर्श	शब्द
आपः		रस	रूप	स्पर्श	शब्द
पृथिवी	गन्ध	रस	रूप	स्पर्श	शब्द
	१ इष्ट		१ शुक्ल	१ रूक्ष	१ षड्ज
	२ अनिष्ट		२ कृष्ण	२ शीतल	२ ऋषभ
	३ मधुर	१ मधुर	३ रक्त	३ उष्ण	३ गान्धार
	४ अम्ल	२ अम्ल	४ नीला	४ स्निग्ध	४ मध्यम
	५ कटु	३ कटु	५ पीला	५ विशद	५ पञ्चम
	६ निर्हारी	४ तिक्त	६ अरुण	६ कठिन	६ निषाद
	७ मिश्रित	५ कसैला	७ ह्रस्व	७ चिकना	७ धैवत
	८ स्निग्ध	६ लवणात्मक	८ दीर्घ	८ श्लक्ष्ण	८ इष्ट
	९ रूक्ष		९ कृश	९ पिच्छिल	९ अनिष्ट
	१० विषद		१० स्थूल	१० कठोर	१० संहत (श्लिष्ट)
			११ चौकोर	११ मृदु	
			१२ गोला	१२ ?	

आकाश सब भूतों में श्रेष्ठ है, और उसके ऊपर > अहङ्कार > बुद्धि > आत्मा > अव्यक्त > पुरुष। जो मनुष्य सम्पूर्ण भूतों की श्रेष्ठता और न्यूनता का ज्ञाता, समस्त कर्मों की विधि में कुशल, और प्राणियों को आत्मभाव से देखनेवाला है वह अविनाशी परमात्मा को प्राप्त होता है (१४. ५०)।" "ब्रह्मा ने कहा : जिस प्रकार उन पाँचो महाभूतों की उत्पत्ति और नियमन करने में मन समर्थ है, उसी प्रकार स्थितिकाल में भी मन ही भूतों का आत्मा है। उन पञ्चमहाभूतों का नित्य आधार भी मन ही है। बुद्धि जिसके ऐश्वर्य को प्रकाशित करती है, वह क्षेत्रज्ञ कहा जाता है। जैसे सारथि अच्छे घोड़ों को अपने वश में रखता है, उसी प्रकार मन सम्पूर्ण इन्द्रियों पर शासन करता है। इन्द्रिय, मन और बुद्धि—ये सदा क्षेत्रज्ञ के साथ संयुक्त रहते हैं। जिसमें इन्द्रियरूपी घोड़े जुते हुए हैं, जिनका बुद्धिरूपी सारथि के द्वारा नियन्त्रण हो रहा है, उस देहरूपी रथ पर सवार होकर वह भूतात्मा (क्षेत्रज्ञ) चारों ओर दौड़ लगाता रहता है। ब्रह्ममय रथ सदा रहने वाला और महान् है, इन्द्रियाँ उसके घोड़े, मन सारथि, और बुद्धि चाबुक है। इस प्रकार जो विद्वान् इस ब्रह्ममय रथ का सदा ज्ञान रखता है, वह समस्त प्राणियों में धीर है और कभी मोह में नहीं पड़ता। यह जगत एक ब्रह्म-वन है। अव्यक्त प्रकृति इसका आदि है। पाँच महाभूत, दस इन्द्रियाँ और एक मन—इन सोलह विशेषों तक इसका विस्तार है। यह चराचर प्राणियों से भरा हुआ है। सूर्य और चन्द्रमा आदि के प्रकाश से प्रकाशित है। ग्रह और नक्षत्रों से सुशोभित है। नदियों और पर्वतों के समूह से सब ओर विभूषित है। नाना प्रकार के जल से सदा ही अलङ्कृत है। यह सम्पूर्ण भूतों का जीवन और सम्पूर्ण प्राणियों की गति है। इस ब्रह्म-वन में क्षेत्रज्ञ विचरण करता है। इस लोक में जो स्थावर जङ्गम प्राणी हैं, वे ही पहले प्रकृति में विलीन होते हैं, उसके बाद पाँच भूतों के कार्य लीन होते हैं, और कार्यरूप गुणों के बाद पाँच भूत लीन होते हैं। इस प्रकार यह भूत समुदाय प्रकृत में लीन हो जाता है। देवता, मनुष्य, गन्धर्व, पिशाच, असुर, राक्षस सभी स्वभाव से रचे गये हैं, किसी क्रिया से या कारण से इनकी रचना नहीं हुई है। विश्व की सृष्टि करनेवाले ये मरीचि आदि ब्राह्मण समुद्र की लहरों के समान बारंबार पञ्चमहाभूतों से उत्पन्न होते हैं; और उत्पन्न हुए वे फिर समयानुसार उन्हीं में लीन हो जाते हैं। इस विश्व की रचना करनेवाले प्राणियों से पञ्चमहाभूत सब प्रकार परे है। जो इस पञ्चमहाभूतों से छूट जाता है वह परम गति को प्राप्त होता है। शक्ति-सम्पन्न प्रजापति ने अपने मन के ही द्वारा सम्पूर्ण जगत की सृष्टि की है तथा ऋषि भी तपस्या से ही देवत्व को प्राप्त हुए हैं। फल-मूल का भोजन करनेवाले सिद्ध महात्मा यहाँ तपस्या के प्रभाव से ही चित्त को एकाग्र करके तीनों लोकों की बातों का क्रमशः प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। आरोग्य की साधनभूत ओषधियाँ और नाना प्रकार की विद्यायें तप से ही सिद्ध होती हैं। सारे साधनों की जड़ तपस्या ही है। जिसको पाना, जिसका अभ्यास करना, जिसे दबाना और जिसकी संगति लगाना नितान्त कठिन है, वह तपस्या के द्वारा साध्य हो जाता है; क्योंकि तप का प्रभाव दुर्लङ्घ्य है। शराबी, ब्रह्म-हत्यारा, चोर, गर्भनष्ट करनेवाला और गुरु-पत्नी की शैय्या पर सोने वाला महापापी भी भलीभाँति तपस्या करके ही इन महान् पापों से छुटकारा पा सकता है। मनुष्य, पितर, देवता, पशु, मृग, पक्षी तथा अन्य जितने चराचर प्राणी हैं, वे सब नित्य तपस्या में संलग्न होकर ही सदा सिद्धि प्राप्त करते हैं। तपस्या के बल से ही महामायावी देवता स्वर्ग में निवास करते हैं। जो लोग आलस्य त्यागकर, अहंकार से युक्त हो, सकाम कर्म का अनुष्ठान करते हैं, वे प्रजापति के लोक में जाते हैं। जो अहंता-ममता से रहित हैं, वे महात्मा विशुद्ध ध्यान-योग के द्वारा महान् उत्तम लोकों को प्राप्त करते हैं। जो ध्यान-योग का आश्रय लेकर सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं, वे आत्म-वेत्ताओं में श्रेष्ठ पुरुष सुख के राशि-भूत अव्यक्त परमात्मा में प्रवेश करते हैं। किन्तु जो ध्यान-योग से पीछे लौटकर अर्थात् ध्यान में असफल होकर ममता और अहंकार से रहित जीवन व्यतीत करता है, वह निष्काम पुरुष भी महापुरुषों के उत्तम अव्यक्त लोक में लीन होता

है। फिर स्वयं भी उसकी समता को प्राप्त होकर अव्यक्त से ही प्रकट होता है और केवल सत्व का आश्रय लेकर तमोगुण एवं रजोगुण के बन्धन से छुटकारा पा जाता है। जो सब पापों से मुक्त रहकर सबकी सृष्टि करता है, उस अखण्ड आत्मा को क्षेत्रज्ञ समझना चाहिए। जो मनुष्य उसका ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वही वेद-वेत्ता है। मुनि को उचित है कि चिन्तन के द्वारा चेतना (सम्यग्ज्ञान) पाकर मन और इन्द्रियों को एकाग्र करके परमात्मा के ध्यान में स्थित हो जाय; क्योंकि जिसका चित्त जिसमें लगा होता है, वह निश्चय ही उसका स्वरूप हो जाता है—यह सनातन गोपनीय रहस्य है। अव्यक्त से लेकर सोलह विशेषों तक सभी अविद्या के लक्षण बताये गये हैं। ऐसा समझना चाहिए कि यह गुणों का ही विस्तार है। दो अक्षर का पद 'मम' (यह मेरा है—ऐसा भाव) मृत्यु रूप है और तीन अक्षर पद 'न मम' (यह मेरा नहीं है—ऐसा भाव), सनातन ब्रह्म की प्राप्ति करानेवाला है। कुछ मन्द-बुद्धियुक्त पुरुष (स्वर्गादि फल प्रदान करने वाले) काम्य कर्मों की प्रशंसा करते हैं, किन्तु वृद्ध महात्मा जन उन कर्मों को उत्तम नहीं बतलाते, क्योंकि सकाम कर्म के अनुष्ठान से जीव को सोलह विकारों से निर्मित स्थूल शरीर धारण करके जन्म लेना पड़ता है और वह सदा अविद्या का ग्रास बना रहता है। इतना ही नहीं, कर्मठ पुरुष देवताओं के भी उपभोग का विषय होता है। इसलिए जो कोई पारदर्शी विद्वान् होते हैं, वे कर्मों में आसक्त नहीं होते; क्योंकि यह पुरुष (आत्मा) ज्ञानमय है, कर्ममय नहीं। जो इस प्रकार चेतन आत्मा को अमृत-स्वरूप, नित्य, इन्द्रियातीत, सनातन, अक्षर, जितात्मा एवं असङ्ग समझता है, वह कभी मृत्यु के बन्धन में नहीं पड़ता। जिसकी दृष्टि में आत्मा अपूर्व (अनादि), अकृत (अजन्मा), नित्य, अचल, अग्राह्य और अमृताशी है, वह इन गुणों का चिन्तन करने से स्वयं भी अग्राह्य (इन्द्रियातीत), निश्चल एवं अमृत-स्वरूप हो जाता है। जो चित्त को शुद्ध करनेवाले सम्पूर्ण संस्कारों का संपादन करके मन को आत्मा के ध्यान में लगा देता है वही उस कल्याणमय ब्रह्म को प्राप्त करता है, जिससे बड़ा कोई नहीं है। सम्पूर्ण अन्तःकरण के स्वच्छ हो जाने पर साधक को शुद्ध प्रसन्नता प्राप्त होती है। जैसे स्वप्न से जगे हुए मनुष्य के लिए स्वप्न शान्त हो जाता है उसी प्रकार चित्तशुद्धि का लक्षण है। ज्ञान-निष्ठ, जीवन-मुक्त महात्माओं की यही परमगति है, क्योंकि वे उन समस्त प्रवृत्तियों को शुभाशुभ फल देनेवाला समझते हैं। यही विरक्त पुरुषों की गति है, यही सनातन धर्म है, यही ज्ञानियों का प्राप्तव्य स्थान है और यही अनिन्दित सदाचार है। जो सम्पूर्ण भूतों में समभाव रखता है, लोभ और कामना से रहित है, तथा जिसकी सर्वत्र समान दृष्टि रहती है, वह ज्ञानी पुरुष ही इस परम गति को प्राप्त कर सकता है। गुरु ने कहा : 'ब्रह्मा के इस प्रकार उपदेश देने पर उन महात्मा मुनियों ने इसी के अनुसार आचरण करके उत्तमलोक की प्राप्ति की।' श्रीकृष्ण ने बताया कि गुरुदेव के ऐसा कहने पर उस शिष्य ने समस्त उत्तम धर्मों का पालन करते हुए मोक्ष प्राप्त किया (१४. ५१)।"

गुरुस्कन्ध, एक पर्वत का नाम है (१४. ४३, ५)।

१. गुह = स्कन्द (देखिये वस्था०)।

२. गुह = शिव (१,००० नाम)।

३. गुह = विष्णु (१,००० नाम)।

४. गुह = (बहु० °हाः), एक वर्बर जाति का नाम है जो दक्षिण में निवास करती थी (१२. २०७, ४२)।

गुहापालः प्रवेशिनाम् = शिव (१,००० नाम)।

गुहावासिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. गुह्य = शिव (१,००० नाम)।

२. गुह्य = विष्णु : १२. ३४०, १०७; १३. १४९, ७१ (१,००० नाम)।

३. गुह्य = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

४. गुह्य (बहु०) = **गुह्यक** (बहु०) : ३. ३, ४०; १५. ३१, ६।

१. गुह्यक (बहु० °काः), कुबेर के अनुचरों का नाम है : १. १, ३५; ६६, ४०; १२६, ३४; १४६, १२ (विविशुः सपरिच्छदाः···कैलासमिव-गुह्यकाः); १५५, २९ (भीमसेन ने गुह्यकों के स्थान में हिडिम्बा के साथ क्रीड़ा-विहार किया); १८७, ७ (ये लोग भी द्रौपदी के स्वयंवर में आये); २. १०, ३; ११, ४९ (ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति); १२, ३ (कुबेर की सभा में इनकी उपस्थिति); २८, ३ (हाटकं नाम देशं गुह्यक रक्षितम्); ३. ३, ४०; ४१, ११; ४२, ३७; ८२, ९४; ८४, ११५ (अधिवङ्गं धर्मज्ञ समाविश्य ततोवनम्। गुह्यकेषु महाराज मोदते); १७३, ५०; १८८, ११९ (मार्कण्डेय ने इन्हें भी नारायण के उदर में देखा); ५. १९२, ४५; ६. ६, ४१. ५१; ८. ४५, ३३; ८७, ४०; ९. ११, ५६ (भीमसेन ने गन्धमादन पर इनका वध किया); ११. २६, १४; १२. २८३, ८ (वैश्रवणो राजा गुह्यकैर् अभिसंवृतः); १३. १४, ४०१; १४२, ४९. ५० (आत्मानमुप-जीवन्यो दीक्षां द्वादशवार्षिकीम्। अश्मना चरणौ भित्त्वा गुह्यकेषु स मोदते); १८. ४, २३ (युद्ध में मृत कुछ राजाओं ने इनकी गति प्राप्त की); ६, ७। तुकी० बहु० गुह्य।

२. गुह्यक—भीम ने हनुमान से पूछा कि वे गुह्यक तो नहीं हैं (३. १४७, २४)। कुबेर के दूत के रूप में एक गुह्यक उपस्थित हुआ (३. २८९, ९)। = स्थूणाकर्ण (५. १९१, २४. ३०)।

३. गुह्यक, एक यक्ष का नाम है जो कुबेर की सभा में उपस्थित था (२. १०, १५)।

गुह्यकाधिप, गुह्यकों के राजा, अर्थात् कुबेर के लिये प्रयुक्त हुआ है (३. १६२, ३२; ६. ६, ३५)।

गुह्यकाधिपति = कुबेर (२. ४९, ३५)।

गुह्यकास्त्र, गुह्यकों के एक अस्त्र का नाम है जिसका राम जामदग्न्य ने प्रयोग किया (५. १८०, ११)।

गुह्यतपस् = शिव (१,००० नाम)

गूढव्रत = शिव (१,००० नाम)।

गृत्समद, एक महर्षि का नाम है। वसिष्ठ के शाप से एक मृग बन जाने पर ये शिव की शरण में गये (१३. १८, १९ और बाद)। "ये वीतहव्य के पुत्र तथा रूप में इन्द्र के समान थे। एक समय दैत्यों ने इन्हें इन्द्र मान कर पकड़ लिया था। इनके पुत्र का नाम सुचेता था। ये अत्यन्त तेजस्वी और ब्रह्मचारी थे (१३. ३०, ५८–६१)।"

गृध्र, एक पक्षीविशेष का नाम है जो भासी की सन्तान थे (१. ६६, ५७)।

गृध्रकूट, एक पर्वत का नाम है जहाँ लंगूरों ने मगधराज बृहद्रथ की रक्षा की थी (१२. ४९, ८२)।

गृध्र-गोमायु-संवाद :—"भीष्म ने कहा : एक ब्राह्मण का पुत्र बाल-ग्रह से बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके दुःखी बान्धव उसके शव को लेकर श्मशान की ओर चले। श्मशान-भूमि में उसे छोड़कर वे लोग लौटने में अपने को असमर्थ पा रहे थे क्योंकि बालक की स्मृतियों से उनका हृदय अभिभूत था। उन सबके रोने के शब्द को सुनकर एक गृध्र वहाँ आया और इस प्रकार कहने लगा : 'मनुष्यों! अपने इस इकलौते पुत्र के शव को यहाँ छोड़कर लौट जाओ। इसमें विलम्ब मत करो। यहाँ सहस्रों स्त्री-पुरुष काल के द्वारा लाये जा चुके हैं और उन सबको उनके बन्धु-बान्धव छोड़कर चले जाते हैं। अपना प्रिय हो या द्वेष-पात्र, कोई भी मृत्यु को प्राप्त कर पुनः जीवित नहीं हुआ है। सूर्य अस्ताचल को जा रहे हैं और जगत् के सब जीव दैनिक कार्य समाप्त करके अब उससे विरत हो रहे हैं। अतः तुम लोग भी अब अपने पुत्र का स्नेह छोड़कर घर लौट जाओ।' गृध्र की बात सुनकर वे सब बन्धु-बान्धव और ज़ोर-ज़ोर से विलाप करते हुए अपने पुत्र के शव को भूतल पर छोड़कर घर की ओर जाने के लिए मार्ग पर आकर खड़े हुए। इतने में ही कौये के पंख के समान काले रंग का एक गीदड़ अपनी माँद से निकल कर वहाँ आया और उसने उन लौटते हुए बान्धवों से कहा : 'तुम लोग अत्यन्त निर्दयी हो। अभी तो सूर्यास्त भी नहीं हुआ है अतः भयभीत मत हो। अनेक प्रकार का मुहूर्त आता रहता है, और संभव है, किसी शुभ घड़ी में तुम्हारा वह बालक पुनः

जीवित हो उठे। तुम्हारे बालक की कमल जैसी चञ्चल एवं विशाल आँखें कितनी सुन्दर हैं। इसका शरीर स्नान एवं पुष्पमाला आदि से विभूषित नये-नये विवाह करके आये वर के समान हैं। ऐसे मनोहर बालक को छोड़कर जाने के लिए तुम्हारे पैर कैसे उठ रहे हैं।' करुणाजनक विलाप करते हुये शृगाल की बात सुनकर वे सभी मनुष्य उस मृत बालक के शरीर की देख-रेख के लिए पुनः लौट आये। उन्हें लौटा देखकर गृध्र ने पुनः उन लोगों को वापस जाने का उपदेश दिया। उसने कहा : 'विद्वान् हो या मूर्ख, धनवान हो या निर्धन, सभी अपने शुभ या अशुभ कर्मों के साथ काल के अधीन हो जाते हैं। अतः इस मृतक के लिए क्यों शोक करते हो।' गृध्र की बात सुनकर शृगाल ने पुनः कहा : 'मनुष्यों ! क्या इस मन्द-बुद्धि गृध्र ने तुम्हारे स्नेह को शिथिल कर दिया है। यह बालक तुम्हारे अपने ही रक्त-मांस से बना हुआ है अतः इसे वन में छोड़कर कहाँ जाओगे। अच्छा, इतना ही करो कि जब तक सूर्यास्त न हो तब तक यहाँ रुके रहो; फिर अपने इस पुत्र को ले जाना अथवा यहीं बैठे रहना।' उस समय गृध्र ने कहा : 'मुझे जन्म लिये आज एक सहस्र वर्ष से अधिक हो गये, परन्तु मैंने कभी किसी स्त्री-पुरुष या नपुंसक को मृत्यु के पश्चात् पुनः जीवित होते नहीं देखा। मनुष्यों ! मैं बुद्धि और विज्ञान से युक्त तथा दूसरों को भी ज्ञान प्रदान करने वाला हूँ। मैंने तुम्हें विवेक उत्पन्न करनेवाली अनेक बातें बताई हैं। अब तुम लोग लौट जाओ।' गृध्र की बात सुनकर जब उस मृत बालक के बन्धु-बान्धव पुनः लौटने लगे तब शृगाल ने वहाँ आकर कहा : 'इस बालक को छोड़कर जाने में तुम्हारा संताप और बढ़ जायगा। ऐसा सुना जाता है कि श्रीरामचन्द्र जी से शम्बूक नामक शूद्र के मारे जाने पर उस धर्म के प्रभाव से एक मृत ब्राह्मण-बालक जीवित हो उठा था। इसी प्रकार राजर्षि श्वेत का बालक भी मर गया था, परन्तु धर्मनिष्ठ श्वेत ने उसे पुनः जीवित कर दिया था। अतः सम्भव है कोई मुनि या देवता तुम पर दया करके तुम्हारे बालक को जीवित कर दे।' शृगाल के कहने पर जब बान्धव पुनः लौटने लगे तब गृध्र ने उनसे कहा : 'दुराग्रहवश बारंबार लौटकर शोक का बोझ धारण करने से कोई लाभ नहीं है। भगवान् शिव, कुमार कार्तिकेय, ब्रह्मा और भगवान् विष्णु ही वर दें तो यह बालक जीवित हो सकता है।' गृध्र की बात सुनकर वे लोग पुनः लौट पड़े। तब शृगाल ने कहा : 'सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है। अतः तुम लौटो नहीं। मैं तो अपने मन से इस बालक को जीवित देख रहा हूँ। इसका नाश नहीं होगा। तुम्हें अवश्य सुख मिलेगा।' भीष्म ने कहा : 'वह शृगाल सदैव श्मशान भूमि में ही निवास करता था और अपना कार्य सिद्ध करने के लिये रात्रिकाल की प्रतीक्षा कर रहा था। अतः उसने धर्म-विरोधी, मिथ्या, तथा अमृत-तुल्य वचन कहकर उस बालक के बान्धवों को बीच में ही अटका दिया। उस समय गृध्र ने उन लोगों को पुनः लौट जाने का उपदेश दिया। परन्तु शृगाल ने भी उन लोगों से सूर्यास्त होने तक रुकने के लिये कहा। गृध्र और शृगाल दोनों ही भूखे थे और अपने-अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये मृतक के बन्धु-बान्धवों से बातें करते थे। गृध्र कहता था कि सूर्यास्त हो गया परन्तु शृगाल कहता था कि नहीं। इनमें से एक पशु था और एक पक्षी। दोनों ही ज्ञान की बातें जानते थे। इन दोनों के अमृतरूपी वचनों से प्रभावित होकर मृतक के सम्बन्धी कभी ठहर जाते थे और कभी आगे बढ़ते थे। इस प्रकार जब उन दोनों में ज्ञान-विज्ञान की बातें चल रही थीं और मृतक के बान्धव वहीं भ्रमित हो खड़े थे, उसी समय पार्वती की प्रेरणा से भगवान् शिव वहाँ प्रगट हुये। मृतक के बन्धु-बान्धवों ने शिव से वर मांगा जिस पर शिव ने उस बालक को जीवित कर के उसे सौ वर्ष की आयु प्रदान की। इतना ही नहीं, शिव ने गृध्र और शृगाल को भी उनकी भूख मिट जाने का वर दिया। तब वे सब लोग शिव को प्रणाम करके वहाँ से चले गये। धर्म, अर्थ, और मोक्ष से युक्त इस शुभ इतिहास को सदा सुनने से मनुष्य इहलोक और परलोक में आनन्द का अनुभव करता है।' (१२. १५३)।"

गृध्रपत्र, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७४)।

गृध्रवट, महादेव के स्थान का नाम है जहाँ भस्मस्नान कर्त्तव्य है। यहाँ यात्रा करने से ब्राह्मण को व्रत के पालन का पुण्य-फल प्राप्त होता है तथा अन्य वर्ण वालों के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं (३. ८४, ९१)।

गृहदेवी, राक्षसी जरा का नाम है जिसे ब्रह्मा ने इस नाम से उत्पन्न किया था (२. १८, १-२)। "दानवों के विनाश के लिये इसकी सृष्टि हुई है। यह दिव्य रूप धारण करने वाली है। जो अपने गृह की दीवार पर अनेक पुत्रों से घिरी हुई युवती स्त्री के रूप में इसका चित्र अंकित करता है उसके घर में सदा वृद्धि होती है (२. १८, ३-४)।

गृहपति = अग्नि (देखिये वस्था०)।

गृहयज्ञ—'लोकयज्ञः क्रियायज्ञो गृहयज्ञः सनातनः। पञ्चभूतनृयज्ञश्च जज्ञे सर्वमिदं जगत्॥', (१०. १८, ५)।

गृहाणां प्रविभागः—'प्रविभागो गृहाणां', (१. २, ७५)।

गेरु, एक पर्वतीय धातु का नाम है (३. १५८, ९५)।

१. गो (गौ)—महर्षि पुलस्त्य की भार्या का नाम गो या गौ था। इनके गर्भ से वैश्रवण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो पिता को छोड़कर पितामह ब्रह्मा की सेवा में रहता था (३. २७४, १२)।

२. गो (बहु० गावः), कपिला की सन्तान का नाम है (१. ६५, ५२)। रोहिणी की सन्तानों के अन्तर्गत इसका उल्लेख (१. ६६, ६८)। तुकी **सुरभि**।

१. गोकर्ण, एक प्राचीन तीर्थ का नाम है जहाँ शेष ने तपस्या की थी (१. ३६, ३)। अपनी तीर्थयात्रा के समय अर्जुन यहाँ भी आये थे (१. २१७, ३४)। यहाँ ब्रह्मा आदि ने शिव की उपासना की (३. ८५, २४)। यह दक्षिण में स्थित है (३. ८८, १५)। यहीं मरीच का निवास था (३. २७७, ५५)। भारत के उत्तर में स्थित पर्वतों के अन्तर्गत इसकी भी गणना कराई गई है (६. ६, ५१ ?)। मृत्यु यहाँ आये (७. ५४, २६)। यहाँ चारुशीर्ष ने शिव का पूजन किया (१३. १८, ६)। यज्ञ का घोड़ा यहाँ से प्रभास की ओर बढ़ा (१४. ८३, १३)।

२. गोकर्ण = शिव (१,००० नाम)।

गोकर्णा, सुमुखि नामक एक सर्पिणी के लिये प्रयुक्त हुआ है (८. ९०, ४२)।

गोकर्णासनमर्दन = अर्जुन (८. ९०, ४२)।

गोकर्णी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २५)।

गोकुल, एक स्थान का नाम है। यहाँ पले हुये ग्वालों को सव्यसाची अर्जुन ने मारा था (गीप्रे. सं. में २. ३८ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ७९९-८००; ८. ५, ३९)।

गोग्रहण—एक पर्व, गोहरणपर्व, के लिये प्रयुक्त (१. २, ५८)।

गोचर = शिव (१,००० नाम)।

गोचर्मवसन = शिव (१,००० नाम)।

गोतम, एक ऋषि का नाम है (१. १३०, २)। देखिये **गौतम**।

गोतीर्थ, एक तीर्थ का नाम है जहाँ पाण्डवगण तीर्थयात्रा के समय गये थे (३. ९५, ३)।

गोदावरी, एक नदी का नाम है। वरुण की सभा में इसकी उपस्थिति (२. ९, २०)। 'गोदावरीं प्राप्य नित्यं सिद्धनिषेविताम्', (३. ८५, ३३)। यह दक्षिण में स्थित है (३. ८८, २)। 'गोदावरीं सागरगामगच्छत्', (३. ११८, ३)। मार्कण्डेय ने इसको भी नारायण के उदर में देखा (३. १८८, १०३)। उन नदियों के अन्तर्गत इसकी भी गणना है जो अग्नि की मातायें थीं (३. २२२, २४)। इसके तट पर श्रीराम दाशरथी ने कुछ समय तक निवास किया था (३. २७७, ४१)। भारतवर्ष की नदियों के अन्तर्गत इसकी गणना (६. ९, १४)। इसका उल्लेख (१३. १६५, २२)।

गोधर्म—दीर्घतमस ने सौरभेय से गोधर्म का ज्ञान प्राप्त किया (१. १०४, २६)।

गोधा, पूर्वोत्तर भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ४२)।

गोनन्द, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६५)।

गोनर्द = शिव (१,००० नाम)।

गोनामन्—'गोनाम्ना पुष्करेण च', (२. ९, २९)।

गोप (बहु० °पाः) = नारायण (६. ७१, १३)।

१. गोपति, मुनि के गर्भ से उत्पन्न एक देवगन्धर्व का नाम है (१. ६५, ४२,)। उन गन्धर्वों में एक एक यह भी थे जो अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित हुये (१. १२३, ५५)।

२. गोपति = सूर्य : १.१७३, ३२; २. ११, ६; ३. ३००, २३; ३०२, १. २; ३०६, २२।

३. गोपति, एक राजा का नाम है जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया (३. १२, ३४)।

४. गोपति = वरुण : ५. ९८, ११; ११०, १।

५. गोपति = शिवि के एक पुत्र का नाम है (१२.४९, ७९)।

६. गोपति = शिव (१,००० नाम)।

७. गोपति = विष्णु (१,००० नाम)।

गोपराष्ट्र, पूर्वोत्तर भारत के एक जनपद का नाम है (६. ९, ४४)।

गोपायन, गोपों की सेना का नाम है (६. ७१, १३)।

१. गोपाल (बहु °लाः) = नारायण (बहु०): ७. १८, ३१; ९१, ३९; ८. ११, १७।

२. गोपाल = कृष्ण : ३. २६३, १०।

१. गोपालकक्ष, एक पूर्वीय देश का नाम है जिसे भीमसेन ने दिग्विजय के समय जीता था (२. ३०, ३)।

गोपालकक्ष (बहु० °क्षाः), गोपालकक्ष के निवासियो के लिये प्रयुक्त हुआ है (६. ९, ५६)।

गोपालि = शिव (१,००० नाम)।

१. गोपाली, एक अप्सरा का नाम है जिसने अर्जुन के सम्मानार्थ इन्द्र-सभा में नृत्य किया था (३. ४३, ३०)।

२. गोपाली, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ४)

गोपीजनप्रिय = कृष्ण : २. ६८, ४१।

गोपुत्र = कर्ण : ८. ९०, ४२ (देखिये नीलकण्ठी भी)।

गोपेन्द्र = कृष्ण : ६. २३, ७।

१. गोप्तृ = शिव : १३. १४, २१।

२. गोप्तृ = विष्णु (१,००० नाम)।

गोप्त्रात्मन् = कृष्ण : १२. ४७, ७०।

१. गोप्रतार, सरयू नदी के एक तीर्थ का नाम है जहाँ भृत्य, सेना, और वाहनों के साथ श्रीराम परमधाम को पधारे थे (३. ८४, ७०–७३)।

२. गोप्रतार = शिव (१,००० नाम)।

गोभवन, कुरुक्षेत्र की सीमा में स्थित एक पवित्र तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से सहस्र गोदन का फल मिलता है (३. ८३, ५०)।

गोमती, एक नदी का नाम है (१. १७०, २०)। यह वरुण की सभा में उपस्थित रहती है (२. ९, २३)। 'रामतीर्थे नरः स्नात्वा गोमत्या', (३. ८४, ७३)। 'गोमतीगङ्गयोश्चैव सङ्गमे लोकविश्रुते', (३. ८४, ८१)। यह पूर्व में स्थित है (३. ८७, ७)। तीर्थयात्रा के समय युधिष्ठिर यहाँ आये (३. ९५, २)। यह विश्वभुक् नामक अग्नि की पत्नी है (३. २१९, १९)। जाम्र्थी में गोमती के तट पर श्रीराम दाशरथी ने दश अश्वमेध यज्ञ किये थे (३. २९१, ७०)। 'सा लतेव महाशालं फुल्लं गोमतितीरजम्', (४. १७, १२)। भारतवर्ष की नदियों के अन्तर्गत इसकी गणना (६. ९, १८)। 'नैमिषे गोमतीतीरे', (१२. ३५५, २)। 'गोमत्यां पुलिने शुभे', (१२. ३५७, १२)। 'गोमत्यास्त्वेव पुलिने', (१२. ३५९, १४)। 'गोमतीतीरे', (१२. ३६१, ४)। दिवोदास की नगरी का एक छोर गङ्गा के उत्तर तट पर था और दूसरा गोमती के दक्षिणी तट तक फैला हुआ था (१३ ३०, १८) एक तीर्थ (१३. १०२, ४७) 'कौशिकी गोमती तथा', (१३. १४६, १८)।

गोमतीमन्त्र, एक मन्त्र का नाम है जिसे गौओं के बीच में खड़े होकर मन-ही-मन जपा जाता है। ऐसा करनेवाला पुरुष शुद्ध एवं निर्मल हो जाता है (१३. ८१, ४२–४५)।

१. गोमन्त, एक पर्वत का नाम है जो द्वारका के निकट था (२. १४, ५४)।

२. गोमन्त, क्रौञ्चद्वीप के एक पर्वत का नाम है ((६. १२, ८)।

३. गोमन्त, (बहु० °न्ताः) एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ४३)।

गोमहिषन्दा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका, का नाम है (९. ४६, २८)।

गोमार्ग = शिव (१,००० नाम)।

१. गोमुख, क्रोधवश संज्ञक दैत्य के अंश से उत्पन्न एक राजा का नाम है (१. ६७, ६३–६६)।

२. गोमुख, इन्द्र सारथि मातलि के पुत्र का नाम है (५. १००, ८)।

गोरथ, गिरिव्रज के निकट स्थित एक पर्वत का नाम है (२. २०, ३०)।

गोलांगूल, हरी की सन्तान, बन्दरों (लंगूरों) की एक जाति का नाम है, (१. ६६, ६४)।

गोलोक, एक दिव्य लोक का नाम है। 'गवांलोकम्' (९. ५०, ४१)। 'गोलोकं च सनातनम्', (१२. ३४२, १३७)। 'गोलोको ब्रह्मलोकश्च ओष्ठावास्तां', (१२. ३४७, ५२)। 'गवां लोकम्', (१३. ७२, ४)। 'लोकं गवाम्', (१३. ७३, १३)। 'गवां लोकं पुण्यकृतां निवासम्', (१३. ७३, १५)। 'गवां लोक', (१३. ८३, १३)। 'गोलोकः', (१३. ८३, ३७) 'गोलोकः पुष्करेक्षण', (१३. ८३, ४४)। 'गोलोके', (१३. ९६, २१)। "गौतम ने कहा कि प्रजापति-लोक के परे जो पवित्र गन्ध से परिपूर्ण, रजोगुणरहित तथा शोकशून्य सनातन लोक प्रकाशित होते हैं उन्हें गोलोक कहते हैं। धृतराष्ट्र ने कहा कि जो सहस्र गौओं का स्वामी होकर प्रतिवर्ष सौ गौओं का दान करता है, सौ गौओं का स्वामी होकर यथाशक्ति दस गौओं का दान करता है, जिसके पास दस ही गौयें हैं वह यदि उनमें से एक गाय का दान करता है, अथवा जो दानशील पाँच गौओं में से एक गाय का दान करता है, वह गोलोक में जाता है। जो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य का पालन करते-करते वृद्ध हो जाते हैं, जो वेदवाणी की सदा रक्षा करते हैं, तथा जो मनस्वी ब्राह्मण तीर्थयात्रा में तत्पर रहते हैं वे ही गोलोक में आनन्द प्राप्त करते हैं। प्रभास, मानसरोवर आदि तीर्थों में जो व्रतधारी महात्मा जाते हैं वे ही गोलोक प्राप्त करते हैं तथा कल्याणमय स्वरूप और पवित्र सुगन्ध से व्याप्त होकर वहाँ निवास करते हैं। (१३. १०२, ४२–४८)।" 'गवांलोकम्', (१३. १०३, ५)।

१. गोवर्धन व्रजमण्डल के एक सुप्रसिद्ध पर्वत का नाम है (गीप्रे० सं० में २. ३८ के बाद दक्षिणात्य पाठ, पृ० ८०१; २. ४१, ९)। 'गोवर्धनो धारितश्च गवार्थे', (५. १३०, ४६)।

२. गोवर्धन, वाह्लीक-देश के राजभवन के द्वार पर स्थित एक वट वृक्ष का नाम है (८. ४४, ८)।

१. गोवासन, शिवि देश के राजा का नाम है जिनकी पुत्री ने स्वयंवर में युधिष्ठिर को अपना पति चुना था (१. ९६, ७६)। 'गोवासनः शैब्यः', (६. १७, २०)। इन्होंने एक सहस्र योद्धाओं को साथ लेकर काशिराज अभिभू के पुत्र का सामना किया था (७. ९५, ३८; ९६, ११)।

२. गोवासन (बहु० °नाः), एक देश के निवासियों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिए भेंट लेकर उपस्थित हुए थे (२. ५१. ५) 'गोवासदासमीयानां वसातीनां च भारत', (८. ७३, १७)।

गोविकर्ता, महाबली बैलों को नाथने वाले के लिए प्रयुक्त हुआ है (४. २, ९)।

गोवितत, एक यज्ञ का नाम है: गोविततं नाम वाजिमेधत', (१. ७४, १३०)।

१. गोविन्द = कृष्ण (विष्णु), देखिये वस्था०।

२. गोविन्द, क्रौञ्चद्वीप के एक पर्वत का नाम है (६. १२, १९)।

३. गोविन्द = शिव (१,००० नाम)।

गोविन्दां पतिः = विष्णु (१,००० नाम)।

गोवृष = शिव (१,००० नाम)।

गोवृषध्वज = शिव (देखिये वस्था०)।

गोवृषभाङ्क = शिव (देखिये वस्था०)।

गोवृषेश्वर = शिव : (१३. १७, १४०)।

गोवृषेश्वरवाहन = शिव (१,००० नाम)।

गोवृषोत्तमवाहन = शिव (देखिये वस्था०)।

गोव्रज, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६६)।

गोव्रत, गोव्रतधारी पुरुष को कहते हैं : 'यत्रतत्रशयो नित्यं येन केनचिदाशितः। येन केनचिदाच्छन्नः स गोव्रत इहोच्यते ॥', (५. ९९, १४)।

गोशब्दात्मज = इन्द्र : ८. ९०, ४२।

गोशृङ्ग; दक्षिण के एक पर्वत का नाम है (२. ३१, ५)।

गोष्ठ = शिव : १४. ८, १९।

गोसव, एक महायज्ञ का नाम है (३. ३०, १७)।

गोस्तनी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका, का नाम है (९. ४६, ३)।

गोहरणपर्वन्, महाभारत के ५५वें अवान्तर पर्व का नाम है : "अज्ञात-वास की अवस्था में पाण्डवों का पता लगने के लिए दुर्योधन द्वारा भेजे गये गुप्तचरों ने हस्तिनापुर में लौटकर दुर्योधन से बताया कि वे पाण्डवों का पता लगाने में असमर्थ रहे हैं। उस समय दुर्योधन, द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य, भीष्म, अपने भाइयों और महारथी त्रिगर्तों के साथ राजसभा में बैठा था। गुप्तचरों ने बताया कि विराट की महारानी सुदेष्णा का ज्येष्ठ भ्राता कीचक, जो अत्यन्त शूरवीर और महापराक्रमी था, एक स्त्री के कारण गन्धर्वों द्वारा मार डाला गया (४. २५)।" "दुर्योधन ने अपने सभासदों से पाण्डवों का पता लगाने के विषय में परामर्श किया। उस समय कर्ण तथा दुःशासन ने अन्य गुप्तचरों को भेजने का परामर्श दिया (४. २६)।" "द्रोणाचार्य ने कहा कि पाण्डव-गण शूरवीर, विद्वान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय, धर्मज्ञ और कृतज्ञ हैं, अतः ऐसे महापुरुष न तो नष्ट होते हैं और न तिरस्कृत ही होते हैं। ब्राह्मण, गुप्तचर, सिद्ध-पुरुष अथवा जो अन्य लोग उन्हें पहचानते हों उनके द्वारा पुनः उन सबकी खोज करानी चाहिए (४. २७)।" "युधिष्ठिर की महिमा का वर्णन करते हुए भीष्म ने द्रोणाचार्य के मत की प्रशंसा की और अपनी सम्मति दी (४. २८)।" "कृपाचार्य ने अपनी सम्मति देते हुए दुर्योधन को सावधानीपूर्वक ही कोई कार्य करने का परामर्श दिया (४. २९)।" "त्रिगर्तराज सुशर्मा ने कर्ण की सहमति से विराट् नगर पर आक्रमण करके वहाँ की गौओं आदि का अपहरण करने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि कीचक के नेतृत्व में 'मत्स्यों' ने पहले जो आक्रमण किये थे, उनका प्रतिशोध लेने का अब समय आ गया है। त्रिगर्तराज के इस कथन का कर्ण ने भी समर्थन किया। उन सबकी बात सुनकर दुर्योधन ने अपने अनुज, दुःशासन, से सेना को प्रस्थान कराने के लिए आज्ञा दी। तदनन्तर पूर्व-योजना के अनुसार सुशर्मा ने विराट् की गौओं का अपहरण करने के लिए कृष्ण-पक्ष की सप्तमी को अग्निकोण की ओर से विराटनगर पर चढ़ाई की। दूसरे दिन, अष्टमी को, दूसरी ओर से कौरवों ने आक्रमण किया और सहस्रों गौओं पर अधिकार कर लिया (४. ३०)।" "कीचक की मृत्यु के पश्चात् विराट युधिष्ठिर के प्रति अत्यन्त आदर बुद्धि रखने लगे। सुशर्मा ने तीव्र आक्रमण करके गौओं को अपने अधिकार में कर लिया। गोप ने आकर विराटराज को इसका समाचार दिया। यह सुनकर राजा ने मत्स्य-देश की सेना एकत्र की। राजा तथा राजकुमारों ने पृथक् पृथक् कवच धारण किये। विराट् के छोटे भ्राता शतानीक और मदिराक्ष ने भी सुन्दर कवच धारण किये। राजा विराट ने तथा उनके ज्येष्ठ पुत्र शंख ने भी अपने-अपने सुदृढ़ कवच धारण किये। राजा विराट ने कङ्क, बल्लव, तन्तिपाल और ग्रन्थिक को भी युद्ध करने की स्वीकृति दी। कङ्क, बल्लव तन्तिपाल तथा ग्रन्थिक, ये चारो नाम क्रमशः युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव के छद्म नाम थे। इस प्रकार पूर्णतया सन्नद्ध होकर विराट की सेना त्रिगर्तों से युद्ध करने के लिए प्रस्थित हुई (४. ३१)।" "नगर से निकलकर मत्स्यदेशीय वीर योद्धाओं ने सूर्य के ढलते-ढलते त्रिगर्तों को पकड़ लिया। तदनन्तर दोनों के बीच भयङ्कर युद्ध होने लगा। उस युद्ध में शतानीक और विशालाक्ष ने सैकड़ों त्रिगर्त-योद्धाओं को मारकर उनकी सेना में प्रवेश किया। विराट ने भी सुशर्मा के साथ द्वैरथ-युद्ध किया (४. ३२)।" "सूर्यास्त हो जाने के कारण सैनिक युद्ध बन्द करके कुछ देर तक खड़े रहे। चन्द्रोदय होने के पश्चात् पुनः घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। त्रिगर्तराज सुशर्मा ने अपने छोटे भाई को साथ लेकर विराट पर आक्रमण किया और उन्हें बन्दी बना लिया। विराट के बन्दी हो जाने के पश्चात् मत्स्यदेशीय सैनिक भयभीत होकर पलायन करने लगे। युधिष्ठिर की आज्ञा से भीमसेन ने जब विराट को मुक्त कराने के लिए एक विशाल वृक्ष को उखाड़कर उसी से शत्रुओं का संहार करना चाहा तो युधिष्ठिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका क्योंकि इसमें उनके पहचाने जाने का भय था। युधिष्ठिर के उक्त आदेश का अनुसरण करते हुए भीम ने नकुल और सहदेव को अपने रथ-चक्र-रक्षकों के रूप में लेकर सुशर्मा पर प्रबल आक्रमण किया। उन्होंने भयङ्कर पराक्रम दिखाते हुए त्रिगर्तों की सेना का अत्यधिक संहार किया जिससे सुशर्मा अत्यन्त भयभीत हो उठा। भीम के पराक्रम को देखकर मत्स्य-वाहिनी भी पुनः उत्साहित होकर लौट पड़ी और त्रिगर्तों के साथ युद्ध करने लगी। भीम ने सुशर्मा के निकट पहुँच कर उसके रथाश्वों और सारथि का वध कर दिया जिससे सुशर्मा रथहीन हो गये। उसी समय विराट के चक्र-रक्षक, सुप्रसिद्ध वीर मदिराक्ष भी भीम की सहायता के लिए आ गये। राजा विराट भी सुशर्मा के रथ से कूद पड़े और उसकी गदा लेकर उसी की ओर दौड़े। भीम ने सुशर्मा को पकड़ लिया और उसका वध करना ही चाहते थे कि युधिष्ठिर ने उसे मुक्त करा दिया (४. ३३)।" "सुशर्मा को मुक्त करके पाण्डव युद्ध के मुहाने पर ही रात भर सुखपूर्वक रहे। राजा विराट ने अतिमानुष पराक्रम करनेवाले इन पाण्डवों का अत्यन्त सत्कार किया। तदनन्तर युधिष्ठिर के कहने पर महाराज विराट ने दूतों के द्वारा उसी रात को अपनी विजय की घोषणा करने के लिए राजधानी भेज दिया (४. ३४)।" "इसी बीच कौरवों ने उत्तर दिशा की ओर से आकर विराट की गौओं का अपहरण कर लिया। इसका समाचार देने के लिए गोप शीघ्र ही मत्स्यराज्य के पुत्र, उत्तर, के पास आया और उन्हें कौरवों से युद्ध के लिए उत्साहित करने लगा। उस समय राजकुमार उत्तर अन्तःपुर में स्त्रियों के बीच में बैठा था। उसने तब अपनी प्रशंसा करते हुए इस प्रकार कहा (४. ३५)" "उत्तर ने कहा : 'मेरा धनुष तो बहुत दृढ़ है। यदि मेरे पास कोई कुशल सारथि हो तो मैं आज गौओं को वापस लाने के लिये अवश्य युद्ध करूंगा।' उत्तर की बात सुनकर अर्जुन ने द्रौपदी से कहा कि वह बृहन्नला को ही सारथि बनाने का उत्तर को परामर्श दें (४. ३६)।" "राजकुमार उत्तर ने अपनी बहन उत्तरा को बृहन्नला के पास सारथि बनने का प्रस्ताव लेकर भेजा। बृहन्नला रूपी अर्जुन उत्तरा के सामने पहले तो अनभिज्ञता सूचक कार्य करने लगे जिससे वहाँ उपस्थित राजकुमारियाँ हँस पड़ीं और स्वयं उत्तर ने उन्हें कवच धारण करने में सहायता की। इस प्रकार बृहन्नला को सारथि के रूप में तैयार करके राजकुमार उत्तर युद्ध के लिए प्रस्थित हुआ। उस समय उत्तरा और उसकी सखियों ने बृहन्नला से कहा : 'तुम युद्ध-भूमि में आये भीष्म, द्रोण आदि प्रमुख कौरव-वीरों को पराजित करके हमारी गुड़ियों के लिए उनके कोमल और रंग-विरंगे सुन्दर वस्त्र ले आना।' बृहन्नला ने कहा कि यदि राजकुमार उत्तर रणभूमि में उन महारथियों को परास्त कर देंगे तो वह अवश्य उनके दिव्य और सुन्दर वस्त्र ले आयेगी। इस प्रकार विदा होकर अर्जुन और उत्तर रण-भूमि की ओर चले (४. ३७)।" "राजकुमार उत्तर की आज्ञा से अर्जुन उस रथ को वहाँ ले गये जहाँ कौरवों को विशाल सेना खड़ी थी। कौरवों की उस असीम सेना

को देखकर राजकुमार उत्तर भयभीत होकर रथ से कूद पड़े और भागने लगे। उस समय अर्जुन ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और आश्वासन देकर कहा कि यदि वह युद्ध से विरत होगा तो वे स्वयं कौरवों से युद्ध करेंगे। किसी प्रकार समझा-बुझाकर अर्जुन ने उत्तर को सारथि बनने के लिए तैयार कर लिया और स्वयं गाण्डीव धनुष लाने के लिये शमीवृक्ष की ओर गये (४. ३८)।" "नपुंसक-वेष में रथ पर बैठे हुए नर-श्रेष्ठ अर्जुन को, जो उत्तर को रथ पर बैठाकर शमी वृक्ष की ओर जा रहे थे, भीष्म, द्रोण आदि कौरव महारथियों ने देखा। उन्हें देखकर अर्जुन के होने की आशङ्का से वे सब मन ही मन भयभीत हो उठे। उस समय अनेक अपशकुनों की व्याख्या करते हुए द्रोणाचार्य ने कहा कि धनुर्धर अर्जुन ही आ रहे हैं इसमें सन्देह नहीं। उस समय कर्ण और दुर्योधन ने कहा कि पहचान लिए जाने के कारण पाण्डवों को पुनः बारह वर्षों तक वन में भटकना पड़ेगा (४. ३९)।" "शमीवृक्ष के निकट पहुँच कर अर्जुन ने उत्तर को आज्ञा दी कि वह वृक्ष पर चढ़कर वहाँ छिपाये हुये पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र को ले आये (४. ४०)।" "उत्तर ने कहा : 'मैंने तो सुन रक्खा था कि इस वृक्ष में कोई शव बँधा हुआ है अतः ऐसी दशा में मैं उसका स्पर्श नहीं कर सकता।' अर्जुन ने उसको बताया कि वह शव नहीं, पाण्डवों के अस्त्र हैं। अर्जुन की आज्ञा पर उत्तर ने वे अस्त्र आदि उतारे (४. ४१)।" "उत्तर ने बृहन्नला से पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र के विषय में प्रश्न किया और बृहन्नला ने उसे पाण्डवों के आयुधों का परिचय दिया (४. ४२-४३)।" "अर्जुन ने उत्तर-कुमार को अपना तथा अपने भाइयों का परिचय दिया। उन्होंने अपने कथन की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए अपने दस नामों को भी बताया (४. ४४)।" "अर्जुन ने अपने आभूषणों आदि को उतार दिया और एकाग्र-चित्त हो अपने अस्त्रों का ध्यान किया। तदनन्तर उन समस्त अस्त्रों ने प्रकट होकर अर्जुन से कहा : 'हम लोग तुम्हारे परम उदार किंकर हैं।' इस प्रकार अपने अस्त्र-शस्त्रों को अनुकूल करके अर्जुन ने अत्यन्त वेग से अपने गाण्डीव धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई और उस पर टङ्कार दी। उस धनुष की टङ्कार को सुनकर कौरवों ने समझ लिया कि वे अर्जुन ही हैं। अर्जुन ने अपने पूर्व-पराक्रमों का वर्णन करके उत्तर को आश्वस्त करते हुए कहा : 'मैं गुरुवर द्रोणाचार्य, इन्द्र, कुबेर, यमराज, वरुण, अग्निदेव, कृपाचार्य, श्रीकृष्ण और शङ्कर, इन सबका आश्रय पा चुका हूँ अतः तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए।' (४. ४५)।" "उत्तर को सारथि बनाकर अर्जुन ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने मन ही मन अपने सुवर्णमय ध्वज का चिन्तन किया जिस पर अग्निदेव ने उस ध्वज पर स्थित होने के लिए भूतों को आदेश दिया। तत्पश्चात् उनका ध्वज आकाश से रथ पर आ गया जिस पर हनुमान विराज रहे थे। उस समय द्रोणाचार्य ने विभिन्न प्रकार के शकुनों के आधार पर कहा कि अर्जुन ही युद्ध के लिए आ रहे हैं (४. ४६)।" "दुर्योधन ने भीष्म, द्रोण तथा कृप से अपना और कर्ण का यह मत कहा कि अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी है। उसने भीष्म से कहा कि वे समय की गणना करके बतायें कि अज्ञातवास का समय समाप्त हो गया है कि नहीं। अर्जुन की प्रशंसा करने के कारण कर्ण ने द्रोणाचार्य पर आक्षेप किया (४. ४७)।" "आत्म-प्रशंसापूर्ण अहंकारोक्तियाँ करते हुए कर्ण ने कहा कि वह उसी दिन अर्जुन को रथ से विरथ करके उन्हें पराजित कर देगा (४. ४८)।" "कृपाचार्य ने कर्ण को फटकारते हुए अर्जुन के पराक्रमों का वर्णन किया और कहा कि अकेले कर्ण ही नहीं वरन् समस्त कौरव महारथियों को मिलकर ही अर्जुन से युद्ध करना चाहिए (४. ४९)।" "अश्वत्थामा ने कर्ण पर आक्षेप करते हुए उसकी अहंकारोक्तियों की भर्त्सना की और कहा कि वे अर्जुन से युद्ध नहीं करेंगे (४. ५०)।" "भीष्म ने एक ओर अश्वत्थामा और कृप तथा दूसरी ओर कर्ण के बीच मध्यस्थता करते हुए कहा कि यह परस्पर विवाद का समय नहीं है और सबको मिलकर अवश्य युद्ध करना चाहिए। उन्होंने कहा : 'ब्रह्मास्त्र और वेद हमारे आचार्यों के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं। अतः हम सब मिलकर यहाँ आये हुए अर्जुन से युद्ध करेंगे।' अश्वत्थामा और दुर्योधन ने भीष्म का समर्थन किया। तब द्रोणाचार्य ने कहा : 'अब ऐसी नीति से कार्य करना चाहिए कि अर्जुन इस युद्ध में दुर्योधन के निकट न पहुँच सकें।' तदनन्तर उन्होंने भीष्म से पूछा कि वे अज्ञातवास का समय पूर्ण हो जाने के संबन्ध में अपना निर्णय दें (४. ५१)।" "भीष्म ने कहा कि तेरह वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् भी पाण्डवों के पाँच महीने और बारह दिन अधिक व्यतीत हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार पाण्डवों ने अपनी प्रतिज्ञाओं का यथावत पालन कर लिया है। इस पर दुर्योधन ने कहा : 'मैं पाण्डवों को राज्य नहीं दूँगा।' भीष्म ने दुर्योधन से कहा : 'तुम एक चौथाई सेना लेकर हस्तिनापुर की ओर जाओ तथा दूसरी एक चौथाई सेना गौओं को साथ लेकर जाय। शेष आधी सेना लेकर मैं, द्रोणाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा तथा कृपाचार्य अर्जुन के साथ युद्ध करेंगे।' यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। अपनी सेना की व्यूह-रचना करते हुए भीष्मने द्रोणाचार्य को मध्य में, अश्वत्थामा को वाम-भाग में, कृपाचार्य को दक्षिणभाग में, कर्ण को अग्र-भाग में स्थित किया और स्वयं पृष्ठ-भाग में स्थित हुए (४. ५२)।" "अर्जुन को निकट आया देखकर द्रोणाचार्य ने उनके ध्वज आदि को पहचान लिया। अर्जुन ने उत्तर को आज्ञा दी कि वह रथ को कौरव सेना के समीप ले जाय जिससे वे देख सकें कि दुर्योधन कहाँ है। अर्जुन की आज्ञा पाकर उत्तर ने रथ को उस ओर बढ़ाया जिधर दुर्योधन गया था। अर्जुन शीघ्र ही दुर्योधन के पास पहुँच गये और असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। उस बाण-समूह से आच्छादित होकर यद्यपि कौरव-सैनिक धराशायी हो रहे थे तथापि उनको वहाँ से भागने की इच्छा भी नहीं होती थी। अर्जुन के शंख-नाद, गाण्डीव धनुष की टङ्कार, तथा ध्वज में निवास करने वाले मानवेतर भूतों के भयङ्कर कोलाहल से पृथ्वी कांप उठी। उस समय गौयें भी सब ओर से लौटकर दक्षिण-दिशा की ओर भाग चलीं (४. ५३)।" "जब गौयें मत्स्य देश की राजधानी की ओर भाग गईं और अर्जुन अपने कार्य में सफल होकर दुर्योधन की ओर बढ़े तो समस्त कौरव वीर वहाँ आ पहुँचे। उस समय कर्ण, चित्रसेन, संग्रामजित, शत्रुसह, जय और विकर्ण ने अर्जुन पर आक्रमण किया। अर्जुन के प्रत्याक्रमण से पराजित होकर विकर्ण भाग गया। अर्जुन ने शत्रुंतप और संग्रामजित का वध कर दिया। कर्ण भी अन्ततोगत्वा अर्जुन के बाणों से संतप्त होकर युद्ध-भूमि से भाग गया (४. ५४)।" "दुर्योधन आदि ने अर्जुन पर आक्रमण किया। अर्जुन ने भी द्रोण, दुःसह, अश्वत्थामा, दुःशासन और कृपाचार्य पर बाणों से प्रहार किया और भीष्म, दुर्योधन तथा कर्ण को आहत कर दिया। तदनन्तर अर्जुन ने उत्तर से कृपाचार्य, द्रोण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कर्ण तथा भीष्म आदि के ध्वजों का वर्णन किया। उन्होंने अपने रथ को कृपाचार्य के पास ले चलने को कहा (४. ५५)।" "अर्जुन और कृपाचार्य के युद्ध को देखने के लिए उस समय देवों सहित इन्द्र, विश्वे-देव, अश्विन, मरुद्गण, यक्ष, गन्धर्व, महोरग, नाग, राक्षस, सर्प, पितृगण तथा महर्षि उपस्थित हुए। इनके अतिरिक्त राजा वसुमना आदि भी तेजस्वी रूप धारण करके इन्द्र के विमान में ही उपस्थित हुए। अग्नि, ईश, सोम, वरुण, प्रजापति, धाता, विधाता, कुबेर, यम, अलम्बुष, उग्रसेन तथा तुम्बुरु आदि गन्धर्व भी उस अद्वितीय युद्ध को देखने के लिए उपस्थित हुए (४. ५६)।" "उत्तर अर्जुन की आज्ञानुसार रथ को कृपाचार्य के समीप लाया। तब अर्जुन ने अपना नाम सुनाकर अपने उत्तम शंख, देवदत्त को बजाया। तदनन्तर कृपाचार्य और अर्जुन का भीषण-युद्ध आरम्भ हुआ जिसमें अनन्तोगत्वा कौरव-सैनिक कृपाचार्य को युद्ध-भूमि से अलग हटा ले गये (४. ५७)।" "तदनन्तर द्रोणाचार्य ने अर्जुन पर आक्रमण किया। उस समय अर्जुन ने आचार्य को संबोधित करते हुए कहा : 'मैं आप पर उसी समय प्रहार करूँगा जब पहले आप मुझ पर प्रहार कर लेंगे।' अर्जुन की बात सुनकर आचार्य ने उन पर बाणों से प्रहार आरम्भ किया। अर्जुन ने द्रोणाचार्य के ऐन्द्रास्त्र, वायव्यास्त्र और आग्नेय आदि अस्त्रों को अपने अस्त्रों से स्तंभित और नष्ट कर दिया। जब अर्जुन और द्रोण का इस प्रकार तुमुल-युद्ध हो रहा था तो उसी समय आकाश में देवताओं का यह शब्द गूँज उठा : 'द्रोणाचार्य का यह अत्यन्त दुष्कर

कार्य है कि वे अब तक अर्जुन के समक्ष युद्ध में डटे हैं।' अर्जुन ने उस समय द्रोणाचार्य पर भीषण बाण-वर्षा करके उन्हें व्यथित कर दिया। इसी समय अश्वत्थामा ने भी आकर अर्जुन पर आक्रमण किया। ज्यों ही अर्जुन अश्वत्थामा से युद्ध के लिए अग्रसर हुए त्यों ही अवसर पाकर आहत आचार्य द्रोण युद्ध-भूमि से भाग निकले (४. ५८)।" "अश्वत्थामा ने अर्जुन के साथ युद्ध करते हुए उनके गाण्डीव-धनुष की प्रत्यञ्चा काट दी जिस पर देवों तथा आचार्य द्रोण, भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य ने उनकी प्रशंसा की। अर्जुन ने अपने धनुष में दूसरी प्रत्यंचा लगाकर अश्वत्थामा पर पुनः आक्रमण किया। कुछ समय के पश्चात् अश्वत्थामा के बाण समाप्त हो गये अतः उनकी सहायता के लिए उपस्थित होकर कर्ण ने अर्जुन पर आक्रमण किया (४. ५९)।" "कर्ण को उपस्थित देखकर अर्जुन ने उससे कहा : 'आज रण-भूमि में मेरा सामना कर और अपने पराक्रम को दिखा। मेरे साथ युद्ध का जो तेरा उत्साह है वह अभी-अभी प्रकट हुआ है, अतः तू अब मेरा बल स्वयं देख।' कर्ण ने भी गर्वोक्ति के साथ अर्जुन का उत्तर देते हुए उन पर आक्रमण किया। भीषण युद्ध के पश्चात् कर्ण आहत होकर युद्ध-भूमि को छोड़ उत्तर-दिशा की ओर भाग गया (४. ६०)।" "तदनन्तर अर्जुन ने उत्तर को अपना रथ भीष्म की ओर ले चलने की आज्ञा दी। उस समय उत्तर अत्यन्त भयभीत हो उठा और रथ-संचालन करने में असमर्थता प्रगट करने लगा। अर्जुन ने उसे सान्त्वना देते हुए अपने अस्त्र शस्त्रों तथा पूर्व-पराक्रमों का वर्णन किया। तदनन्तर दुःशासन, विकर्ण, दुःसह और विविंशति आदि ने मिलकर अर्जुन पर आक्रमण किया। युद्ध में पराजित होकर दुःशासन तो भाग गया और विकर्ण रथ से नीचे गिर पड़ा। दुःसह और विविंशति भी अत्यधिक आहत हुए जिससे उनके सेवकों ने उन्हें युद्ध-भूमि से अन्यत्र हटा दिया (४. ६१)।" "अर्जुन ने तदनन्तर समस्त कौरव-योद्धाओं और महारथियों के साथ युद्ध किया जिसमें उन्होंने कौरव-सेना का भीषण संहार किया (४. ६२)।" "अर्जुन पर समस्त कौरवपक्षी महारथियों ने आक्रमण किया। उस समय दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन आदि भी अर्जुन को परास्त करने में असफल रहे। अर्जुन के भयंकर प्रहारों से पीड़ित होकर समस्त कौरव-सेना भाग गयी (४. ६३)।" "तदनन्तर अर्जुन और भीष्म के बीच अद्भुत युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में प्राजापत्य, आग्नेय, रौद्र, कौबेर, वारुण, याम्य तथा वायव्य आदि दिव्यास्त्रों का प्रयोग हुआ। गन्धर्वराज चित्रसेन ने उस समय इन दोनों महावीरों के युद्ध की ओर इन्द्र का ध्यान आकर्षित किया। देवराज इन्द्र ने दिव्य पुष्पों की वर्षा करके अर्जुन और भीष्म के इस अद्भुत संग्राम के प्रति आदर प्रकट किया। अनन्तोगत्वा अर्जुन के बाणों से आहत होकर भीष्म भी मूर्च्छित हो गये और उनका सारथि उन्हें संग्राम-भूमि से दूर हटा ले गया (४. ६४)।" "तदनन्तर दुर्योधन और विकर्ण ने अर्जुन पर आक्रमण किया। पराजित होकर विकर्ण तथा दुर्योधन अपने योद्धाओं सहित युद्ध-भूमि से भाग निकले (४. ६५)।" "अर्जुन की ललकार और कटु वचन को सुनकर दुर्योधन पुनः उनसे युद्ध करने के लिये लौट पड़ा। उस समय कर्ण, भीष्म, द्रोण, कृप, विविंशति और दुःशासन भी दुर्योधन की रक्षा के लिए लौट आये। अर्जुन ने इन्द्र से प्राप्त सम्मोहनास्त्र का प्रयोग करके शंखनाद किया जिससे समस्त कौरव चेतना-शून्य हो गये। कौरव महारथियों के इस प्रकार अचेत हो जाने पर अर्जुन ने उत्तर से कहा : 'अभी ये कौरव मूर्छित हैं अतः तुम द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन आदि के शरीर पर जो सुन्दर वस्त्र हैं उन्हें उतार लो। परन्तु पितामह भीष्म के, जो कि सम्मोहनास्त्र के निवारण की विधि से परिचित और अभी पूर्ण चेतनायुक्त हैं, घोड़ों को बायें ओर छोड़कर जाना क्योंकि जिनकी चेतसा लुप्त नहीं हुई है उनके निकट से इसी प्रकार जाना चाहिए।' अर्जुन की आज्ञानुसार उत्तर कौरव महारथियों के वस्त्रों को लेकर पुनः रथ पर आ गया। अर्जुन जब रण-भूमि से बाहर निकलने लगे तब भीष्म ने उन पर आक्रमण किया परन्तु अर्जुन ने उन्हें भी आहत कर दिया। कौरवों की चेतना लौटने के पश्चात् भीष्म ने दुर्योधन से कहा : 'अब तू शीघ्र ही कुरु-देश को लौट चल और अर्जुन भी गायों को जीतकर लौट जाँय।' पितामह की बात मानकर समस्त कौरव लौट पड़े। उस समय अर्जुन ने लौटकर पितामह भीष्म और गुरु द्रोणाचार्य के चरणों में प्रणाम किया। तदनन्तर उन्होंने अश्वत्थामा, कृपाचार्य तथा अन्य माननीय कौरवों को बाणों की विचित्र रीति से नमस्कार किया और फिर एक बाण मारकर दुर्योधन के रत्नजटित मुकुट को काट डाला। इसके पश्चात् उन्होंने अपना देवदत्त नामक शंख बजाया और उत्तर को लौटने की आज्ञा दी। वहाँ उपस्थित देवगण भी यथा-स्थान चले गये (४. ६६)।" "जब अर्जुन उत्तर की राजधानी की ओर लौट रहे थे तो घने जंगलों में छिपे हुए अनेक कौरव-सैनिक बाहर निकलकर करबद्ध हो अर्जुन से क्षमा-याचना करने लगे। अर्जुन ने उन्हें अभय-दान दिया। तदनन्तर अर्जुन ने उत्तर से कहा : 'तुम नगर में प्रवेश करके पाण्डवों की प्रशंसा मत करना। अपने पिता के समीप जाने पर तुम यह कहना कि तुमने ही कौरवों की विशाल सेना पर विजय प्राप्त की है।' तदनन्तर अर्जुन श्मशान-भूमि में उसी शमी-वृक्ष के समीप आकर खड़े हुये। वहाँ अग्नि के समान तेजस्वी महावानर ध्वज-निवासी भूतगणों के साथ आकाश में उड़ गया और उसके स्थान पर उत्तर के रथ में पुनः सिंह-ध्वज लग गया। अर्जुन ने पाण्डवों के समस्त आयुधों को शमी-वृक्ष पर पूर्ववत् रख दिया। इसके पश्चात् राजकुमार उत्तर ने पुनः बृहन्नला रूपी अर्जुन को अपने रथ के सारथि के रूप में बैठाकर राजधानी में प्रवेश किया। नगर के निकट पहुँचकर अर्जुन ने कुछ विश्राम करने का प्रस्ताव करते हुए उत्तर से कहा : 'तुम्हारे द्वारा भेजे हुए ये गोपाल नगर में जाकर तुम्हारे विजय की घोषणा कर दें और हमलोग अपराह्न-काल में विराट्नगर चलें।' इस प्रकार राजकुमार उत्तर और अर्जुन ने पुनः अपने पुराने वेश धारण कर लिए और नगर की ओर प्रस्थित हुए (४. ६७)।" "राजा विराट ने दक्षिण गोष्ठ की गौओं को जीतकर नगर में पाण्डवों के साथ प्रवेश किया। उस समय मत्स्य देश की प्रजा ने उन सबका अत्यन्त आदर किया। महाराज विराट् को जब यह पता लगा कि भीष्म, कृपाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, द्रोणाचार्य तथा अश्वत्थामा आदि द्वारा गोधन का हरण कर लिए जाने के कारण उनसे युद्ध करने के लिए राजकुमार उत्तर बृहन्नला को सारथि बनाकर अकेले ही चले गये हैं तो उन्हें अत्यन्त चिन्ता हुई। राजा विराट को चिन्तित देखकर युधिष्ठिर ने उन्हें आश्वस्त करते हुए बताया कि बृहन्नला द्वारा रक्षित होने पर कौरव तो क्या देवता, असुर, सिद्ध और यक्ष भी राजकुमार पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते। इसी बीच उत्तर के दूतों ने आकर उसके विजय की सूचना महाराज विराट् को दी। यह समाचार सुनकर राजा विराट् ने समस्त नगर को पताकाओं आदि से अलंकृत तथा राजकुमार का वीरोचित स्वागत करने की आज्ञा दी। तत्पश्चात् विराट् युधिष्ठिर के साथ पासा खेलने लगे। इस खेल के बीच ही जब मत्स्यराज विराट् ने अपने पुत्र उत्तर की प्रशंसा की तो युधिष्ठिर ने कहा कि बृहन्नला जिसका सारथि हो वह युद्ध में क्यों नहीं जीतेगा। युधिष्ठिर की बात सुनकर मत्स्यराज अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे परन्तु जब फिर भी युधिष्ठिर ने बारम्बार बृहन्नला की ही प्रशंसा की तो विराट् ने पासा उठाकर युधिष्ठिर के मुँह पर जोर से मारा। पासे के आघात से युधिष्ठिर की नाक से रक्त की धारा बहने लगी परन्तु उस रक्त को पृथ्वी पर गिरने से पूर्व ही युधिष्ठिर ने उसे अपने दोनों हाथों में रोक लिया। उस समय युधिष्ठिर का संकेत पाकर द्रौपदी ने उस समस्त रक्त को एक सुवर्ण-पात्र में रोक लिया। इसी बीच द्वारपाल ने आकर बृहन्नला तथा राजकुमार उत्तर के आगमन की सूचना दी। जब मत्स्यराज ने सेवक को उन दोनों को भीतर बुलाने की आज्ञा दी तो जाते हुए सेवक के कान में युधिष्ठिर ने धीरे से कहा कि वह केवल राजकुमार उत्तर को ही भीतर ले आवे क्योंकि बृहन्नला का यह निश्चित व्रत है कि जो युद्ध-भूमि के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर उनके—युधिष्ठिर के—शरीर में घाव कर देगा वह किसी प्रकार जीवित नहीं रहने पायेगा। तदनन्तर राजा विराट् के पुत्र उत्तर ने भीतर प्रवेश करके अपने पिता तथा कङ्क—युधिष्ठिर—को भी

प्रणाम किया। उत्तर ने कङ्क रूपी युधिष्ठिर के नाक से रक्त-स्राव होते देख अपने पिता से उसका कारण पूंछा। कारण का पता लगने पर उसने अपने पिता से कहा कि वे कङ्क से क्षमा मांगे। जब विराट् ने तदनुसार क्षमा मांग ली तो युधिष्ठिर ने कहा : 'मैंने चिरकाल से क्षमा का व्रत ले रखा है अतः आपका यह अपराध क्षमा हो चुका है। यदि मेरी नाक से बहनेवाला यह रक्त धरती पर गिर जाता तो आप अपने समस्त राष्ट्र के साथ नष्ट हो जाते।' जब युधिष्ठिर की नाक से रक्त-स्राव बन्द हो गया तो बृहन्नला ने राज-सभा में प्रवेश करके विराट् को तथा कङ्क को भी प्रणाम किया। उस समय विराट् ने अपने पुत्र की प्रशंसा प्रारम्भ की और उत्तर से उसके पराक्रम का वर्णन पूछा (४. ६८)।" "पिता को सम्बोधित करके उत्तर ने कहा : 'मैंने गौओं को स्वयं नहीं जीता है और न मैंने शत्रुओं पर विजय ही प्राप्त की है। यह सब कार्य तो एक देव-पुत्र ने किया है और तदनन्तर वह वहीं अन्तर्धान हो गया।' महाराज विराट की आज्ञा से बृहन्नला रूपी अर्जुन ने विराट-कन्या उत्तरा को कौरवों के सुन्दर वस्त्र समर्पित किये जिसे पाकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। तदनन्तर उन्होंने राजकुमार उत्तर के साथ राजा युधिष्ठिर आदि को प्रगट करने के विषय में परामर्श करके समस्त योजना निश्चित की (४. ६९)।"

गोहित = विष्णु (१,००० नाम)।

१. गौतम, गोतम के वंशज, एकाधिक महर्षियों का नाम है। ये मृत प्रमद्वरा को देखने के लिये उपस्थित हुये (१. ८, २५)। ये दीर्घतमस और प्रद्वेषी के ज्येष्ठ पुत्र थे (१. १०४, २४)। अपने भ्राताओं को साथ लेकर इन्होंने दीर्घतमस को गङ्गा में फेंकवा दिया (१. १०४, ३९)। अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित सप्तर्षियों में एक यह भी थे (१. १२३, ५१)। युधिष्ठिर के सभाभवन में प्रवेश करने के समय ये भी उपस्थित थे (२. ४, १७)। इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, १८)। ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ११, १९)। 'काक्षीवतः पुत्रं गौतमस्य महात्मनः', (२. १७, २२)। राजगृह के निकट इन्होंने शूद्रा औशीनरी से काक्षीव आदि को उत्पन्न किया (२. २१, ५–८)। 'ब्रह्मर्षेर्गौतमस्य वनं प्रियम्', (३. ८४, १०८)। उन ऋषियों में एक यह भी थे जो युधिष्ठिर की प्रतीक्षा कर रहे थे (३. ८५, ११९)। ३. १८५, ८. ९. १५–१७. २२; २९८, ११. ३३; ७. १९०, ३३; ९. ३६, १० (एकत, द्वित और त्रित के पिता); १२. ४७, १० (उन ऋषियों में एक यह भी थे जो भीष्म को घेर कर खड़े हुये); ४९, ८१ (दधिवाहनवैत्रिस्तु पुत्रो दिविरथस्य च। गुप्तः स गौतमेनासीद्गङ्गाकूलेऽभिरक्षितः); १२९, ३. ४. ६. ९; १६६. २३; १६८, ३४. ३६–३८. ४१. ४३; १६९, १. ११. १४. १६. २२; १७०, १. ५. ७. ९. १०. १७. २१. २२. २५; १७१, ५. २७. २९. ३१; १७२, १०. १३. १५; १७३, १०. १२. १३. १६; २०८, ३३; २२६, १९ (नीलकण्ठीः 'न मुमोह गौतम इति पाठे अहल्याजारस्य इन्द्रस्य त्रपाजननार्थं मर्मोद्घाटनं गौतमस्य च दाराप‌हारेऽपि धैर्यवर्णनम्। स्थानादहल्यायाः शप्तत्वेन शिला-रूपत्वात् गार्हस्थ्याच्च्युतः न त्वत्सदृशोऽहमजितचित्तोऽस्मि किं तु गौतम-वज्जितचित्तोऽस्मीति भावः); २६६, ४ (चिरकारिन् के पिता). ८. ४५ (मेधातिथिः). ५९. ६१. ६६. ६८ (जब इन्द्र ने इनकी पत्नी, अहल्या, का सतीत्व हरण किया तब इन्होंने अपने पुत्र, चिरकारिन्, को अहल्या का वध कर देने की आज्ञा दी, परन्तु वह पुत्र कुछ संकोच करने लगा। इसी बीच इन्हें भी ऐसी आज्ञा दे देने पर पश्चाताप हुआ); ३१८, ६० (इन्होंने विश्वावसु को उपदेश दिया); ३४२, २३ (अहल्या का सतीत्व हरण करने के कारण इन्होंने इन्द्र को यह शाप दिया कि उनकी दाढ़ी हरे रंग की हो जाय); १३. १७, १७७ (शुक्र ने इन्हें शिव के १,००० नाम बताये); २५, ४. ६९; २६, ४ (उन ऋषियों में एक यह भी थे जो भीष्म को घेर कर खड़े हुये); ४१, २१ (गौतमेनासि यन्मुक्तो भगाङ्कपरिचिह्नितः); ६६, १२; ९३, २१. ४६. ७१. ९४. १२६; ९४, ४. १९; १०२, ३. ४. ७. १२. १४. १६. १८. २०. २३. २५. २९. ३२. ३५. ३८. ४०. ४२. ४९. ५४. ५७. ५९. ६२. ६३; १०६, ६९; १५०, ३८; १५३, ६ (सप्ताश्व भगवान् गौतमेन् पुरन्दरः। अहल्यां कामयानो वै धर्मार्थं च न हिंसितः); १६५, ४२; १४. ३५, २५; ५६, ३. ५. १४. १८. २१. ३२. ३५; ५८, १८. ४३. ५७।

२. गौतम = गोतमपुत्र शरद्वत् : १. ६३, १०७; १३०, २. ५. ७. १४. १९. २०; ५. ५५, ४९; १६६, २१।

३. गौतम (गोतम के पौत्र) = कृप : १. २, ३२; १२९, ४२; १३१, १४; १३७, १५; १४२, १७; २०७, १३; २. ४८, ११; ७१, २३; ७४, २५; ३. १, १२; ४. ५७, २४. २५. २९; ५. १६४, ६; १९४, ५. १४; ६. २०, १३; ४३, २२. ७४. ७६; ४५, ५३; ७३, ३८; ८४, २०. २४. २५. २६–२९. ३४; ९६, ३६; १०१, ४१. ४२. ४४; ११३, १२. १४. ३५; ७. २०, ५; ४८, ३२; १०४, ३२; १०५, १५; १४७, २६; १५८, ३१. ५४. ५५; १६९, २२. २७. ३०. ३१; १९२, ४; ८. ७, १२; ९, ८२; ११, १८; २६, २. ३. ५. ७. ११. २०; ५४. ५. १९. २२. २४. २६. ३०; ६१, १४; ९६, ३२; ९. २, १९; ५, १; ८, २६. ३२; ११, ४३; १५, ७; १७, ८६; २२, ३५; २९, ३६; ६४, ८; १०. ३, ३५; १०, ३; १५. १५, ८; २३. ६।

४. गौतम = शिव (१,००० नाम)।

१. गौतमी, गोतम के एकाधिक स्त्री वंशजों के लिये प्रयुक्त हुआ है। ब्रह्मा की सभा में इसकी उपस्थिति (२. ११, ४०)। 'मद्र्पीनिव गौतमी', (१२. ३८, ५)। गौतमी-लुब्धक-व्याल-मृत्यु-कालसंवाद (१३. १, १६–१८. २१. २६. २९. ३०. ३१. ३३. ७७. ७८. ८०)।

२. गौतमी = जटिला, जिसने सप्तर्षियों से विवाह किया (१. १९६, १४)।

३. गौतमी = कृपी : १. १३०, ४६. ४७; १३१, ५०।

४. गौतमी, एक नदी का नाम है (१३. १६५, २१)।

गौतमी-लुब्धक-व्याल-मृत्यु-कालसंवाद—"भीष्म ने कहा : पूर्वकाल में गौतमी नामक एक वृद्धा ब्राह्मणी के एकमात्र पुत्र की सर्पदंश से मृत्यु हो गई। इतने ही में अर्जुनक नामक एक व्याध उस सर्प को ताँत के फाँस में बाँधकर गौतमी के पास लाया। गौतमी ने सर्प को मुक्त कर देने के लिये कहा। उसने बताया कि होनहार को कोई रोक नहीं सकता अतः सर्प का वध कर देने से पुत्र जीवित नहीं होगा। ब्राह्मणों को क्रोध नहीं होता। शत्रु को बन्दी बना कर वध कर देने से भी कोई लाभ नहीं है। गोमती की बात सुन कर व्याध ने कहा : 'वृत्रासुर का वध करके इन्द्र श्रेष्ठ पद के भागी हुये और शिव ने दक्ष यज्ञ का विध्वंस करके उसमें अपने लिये भाग प्राप्त किया। अतः देवों के व्यवहार का अनुसरण करते हुये सर्प को शीघ्र मार डालना चाहिये।' व्याध की बात सुनकर सर्प ने कहा : 'मृत्यु ने मुझे विवश करके इस बालक को डँसने के लिये प्रेरित किया है।' सर्प के इस प्रकार अपने को निर्दोष बताने पर मृत्यु ने उपस्थित होकर सर्प से कहा : 'काल से ही प्रेरित होकर मैंने तुझे इस बालक को डँसने की प्रेरणा दी थी। अतः इसके विनाश में न तू कारण है और न मैं। समस्त स्थावर-जङ्गम पदार्थ काल के ही अधीन हैं। चन्द्रमा,सूर्य, जल, वायु, इन्द्र, अग्नि आदि सभी काल के द्वारा रचे जाते हैं और काल ही इनका संहार कर देता है।' तब काल ने उपस्थित होकर कहा : 'न तो मैं, न यह मृत्यु, और न यह सर्प ही इस जीव की मृत्यु के अपराधी हैं। इस बालक ने जो कर्म किया है वही इसकी मृत्यु में प्रेरक हुआ है।' गोमती ने काल की बात का समर्थन किया और कहा : 'मैंने भी वैसा कर्म किया था जिससे मेरा पुत्र मर गया। अतः काल और मृत्यु अपने-अपने स्थान को पधारें तथा, अर्जुनक ! तू इस सर्प को छोड़ दे।' (१३. १, १६–८०)।"

गौतमीनन्दन = कृपीपुत्र अश्वत्थामा (७. १५६, ११८)।

गौतमीसुत = अश्वत्थामा (७. १५६ १२८; १५९, ८९; १६०, १९)।

गौर, एक पर्वत का नाम है (६. १२, ४)।

गौरपृष्ठ, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ८, २१)।

गौरमुख, शमीक ऋषि के एक शिष्य का नाम है। इन्होंने गुरु की

आज्ञा से राजा परीक्षित को शृङ्गी ऋषी के शाप का समाचार सुनाया (१. ४२, १४. १६. १७. २७. २८; ५०, १३)।

गौरवाहन, एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में पधारे थे (२. ३४, १२)।

गौरशिरस्, एक मुनि का नाम है जो इन्द्र की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ७, ११)। 'गौरशिरा मुनिः', (१२. ५८, ३)।

गौराश्व, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में विराजते थे (२. ८, १८)।

१. गौरी = उमा : 'शिखरं वै महादेव्या गौर्यास्त्रैलोक्यविश्रुतम', (३. ८४, १५१)। 'मूर्तिमतीव गौरी', (४. ७१, १७)।

२. गौरी, उमादेवी की अनुगामिनी और सहचरी का नाम है (३. २३१, ४८)।

३. गौरी, वरुण की पत्नी का नाम है (५. ११७, ९)। 'वरुणः सह गौर्या', (१३. १६५, ११)।

४. गौरी, एक नदी का नाम है (६. ९, २५)।

५. गौरी = पृथिवी : १३. १४६, १० ('गौर्या भूमौगच्छति अनादिपरंपरया चलति', नीलकण्ठी)।

गौरीश = शिव : १४. ८, ३०।

गौरीहृदयवल्लभ = शिव : १०. ७, ८।

ग्रन्थिक, विराटनगर में अज्ञातवास के समय नकुल द्वारा गृहीत नाम है (४. ३, ४; १२, ८)।

१. ग्रह (बहुधा बहु० °हाः)—'गहनक्षत्रताराणां', (१. १, ६६)। 'चन्द्रादित्यौ ग्रहास्तारा नक्षत्राणि', (१. २१०, २६)। 'ग्रहास्तोमाश्व', (२. ७, २३)। 'प्रपतन्दृश्यते ह स्म क्षीणपुण्य इव ग्रहः', (३. २१, २४)। 'ग्रहा न विपरीताँः', (३. ६५, २४)। 'नक्षत्राणि ग्रहाः', (३. ९९, ५७)। 'चन्द्रमाः सह सूर्येण······ग्रहैः सह', (३. १४२, ८) 'ग्रहनक्षत्रसङ्घैश्च', (३. १८२, १२)। 'ग्रहा दीप्ता दिशः', (३. २२६, २)। 'ग्रहाः सोपग्रहाश्चैव', (३. २२७, १)। 'नक्षत्राणि ग्रहाः', (३. २३१, ४४)। 'ग्रहनक्षत्रवर्जिते', (३. २७२, ३६)। 'ग्रहनक्षत्रताराभिः', (३. २८२, २)। 'वृतौ······ग्रहैरिव', (३. २८३, १७)। 'ग्रहाणां दशमम्', (४. २, २१)। 'नक्षत्राणि ग्रहास्तथा', (४. ५२, १)। 'नाप्यतेलोको नक्षत्राणि ग्रहैरिव', (५. ३४, ५४)। 'ग्रहास्तारागणाः'. (५. ९७, ४)। 'नक्षत्रं ग्रहस्तीक्ष्णो महाद्युतिः', (५. १४३, ८)। 'ग्रहानष्टाविवोदितान्', (५. १८५, ३२)। 'ग्रहाः प्रज्वलिता', (५. १९६, ५)। 'चन्द्रादित्यौग्रहं तथा', (६. ११, ४)। 'सम्पेतुर्दिवि सप्त महाग्रहाः', (६. १७, २)। 'सूर्यो ग्रहैरिव समावृतः', (६. ७३, २०)। 'ग्रहैर्द्यौरिव संवृताः', (६. ७५, २८)। 'ग्रहनक्षत्रशबला द्यौरिवासीद्वसुन्धरा', (६. ९६, ७७)। 'चन्द्रमायुक्तो दीप्तैरिव महाग्रहैः', (६. ९७, ३२)। 'दुद्रुवुः संख्ये ग्रहाः पञ्च रविं यथा', (६. १००, ३७)। 'सोमं ग्रहगणान्वितम्', (७. २३, ८४)। 'ग्रहनक्षत्रसोमानाम्', (७. ८०, ३७)। 'दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः', (७. ९४, ४७)। 'वसुधा तत्र द्यौर्ग्रहैरिव', (७. १२१, २४)। 'पीडयन्······प्रजासंहरणे राजन्सोमं सप्त ग्रहाइव', (७. १३७, २२)। 'द्यौरिवग्रहैः', (७. १३८, २५)। 'द्यौरिवोदितचन्द्रार्का ग्रहाकीर्णा युगक्षये', (७. १५६, १७२)। 'द्यौरिवादित्यचन्द्राद्यैर्ग्रहैः', (७. १६१, ९)। 'द्यौरिव ग्रहैः', (७. १६८, २७)। 'सर्वैर्ग्रहैर्गृहीतान्वै सर्वपापसमन्वितान्', (७. २०२, ११)। 'ग्रहाविव', (८. ६, २०; १७, २)। 'विकचो यथा ग्रह', (८. १८, ५)। 'अर्कचन्द्रग्रहपावकत्विषं', (८. २०, ४४)। 'अनुकर्ष ग्रहा', (८. ३४, २६)। 'ग्रहनक्षत्रताराभिः', (८. ३४, ३१)। 'सप्त महाग्रहाः', (८. ३७, ४)। 'ग्रहैर्द्यौरमलप्रदीप्तैः', (८. ९४, १०)। 'ग्रहा व्याप्ता घनैरिव', (९. २५, २६)। 'ऋतवश्च ग्रहाश्चैव', (९. ४५, ११)। 'ग्रहनक्षत्रताराभिः', (१०. १, २५)। 'सार्केन्दुग्रहनक्षत्रां द्यां', (१०. ७, ४०)। 'ग्रहास्तन्वभ्रसंवृताः', (११. २६, ४१)। 'क्रूरग्रहाभिशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्', (१२. २९, १७)। 'वृतश्चन्द्र इव ग्रहैः', (१२. ४७, १३)। 'नक्षत्राणामिव ग्रहः', (१२. ८७, ११)। 'नक्षत्राण्युपितिष्ठन्त ग्रहा', (१२. ९०, ३७)। 'नक्षत्राणि ग्रहांस्तथा', (१२. १६६, १४)। १२. २८०, २३; २८४, ३९; १३. १४, ३७. ७५. ७९. ८०. ३२०. ३८४; १६, ५२; ८६, १६; १५८, ३३; १६०, ४२; १६२, ५१; १६५, ३४; १४. ४३, ६; ५१, ७; ८९, ३१; १६. २, १६; १८. ६, ८।

अलग-अलग ग्रहों के नाम :

* **बुध**—'सोमस्य पुत्रः', (८. ९४, ४९)।

* **राहु** : १. २४, ८; ६७, ४० (ग्रहं तु सुपुवे यंतु सिंहिकार्केन्दुमर्दनम्); १७७, २७ (ग्रस्त आसीद्ग्रहेणेव पर्वकाले दिवाकरः); ६. ३, १७ (परुषग्रहः); १२, ४० (स्वर्भानुः); १३. १७, ३८ (शिव के सहस्रनामों के साथ समीकृत); १३६, ११; १४. ३२, ६ (आगच्छद्राहुमन्तमिव ग्रहः)।

* **शनैश्चर** : ३. २८१, ६; ५. १४३, ८; ९. १६, १०।

* **शुक्र** : १. ६६, ४२ (शुक्रः कविसुतो ग्रहः)।

* **श्वेत** : ५. ३७, ४३; ६. ३, १२. १६।

२. ग्रह (एक० और बहु०), व्याधियों के लिये प्रयुक्त हुआ है। 'स्कन्देन सोऽभ्यनुज्ञातो रौद्ररूपोऽभवद्ग्रहः', (३. २३०, २५)। 'स्कन्दापस्मारमित्याहुर्ग्रहं', (३. २३०, २६)। 'शकुनि ग्रहः', (३. २३०, २६)। 'पूतनाग्रहम्', (३. २३०, २७)। 'रेवतीं प्राहुर्ग्रहः', (३. २३०, २९)। ३. २३०, ३१ (महाग्रहाः). ३६ (अष्टादशान्ये वै ग्रहा). ४२ (कुमाराणां यथा प्रोक्ता महाग्रहाः). ४३ (मातृगणाः प्रोक्ताः पुरुषाश्चैव ये ग्रहाः). ४४ (स्कन्दग्रहा). ४६ (षोडशाद्वर्षायि भवन्ति ग्रहा). ५० (राक्षसो ग्रहः). ५१. ५२. ५७. ५८. ५९ (विभिन्न व्याधि-ग्रहों के नाम); २३१, ५० (राक्षसो ग्रहः); ११. ४, ६; १२. १५३, ३।

३. ग्रह = शिव (१,००० नाम)।

ग्रहगणेश्वर = सोम (चन्द्रमा) : १३. ६७, १२।

१. ग्रहपति = सोम (चन्द्रमा) : १२. ११८, १५; १६८, २५।

२. ग्रहपति = शिव (१,००० नाम)।

ग्राम = शिव (१,००० नाम)।

१. ग्रामणी = विष्णु (१,००० नाम)।

२. ग्रामणी = शिव के एक गण का नाम है (१३. १५०, २५)।

ग्रामणीय, ग्रामशासक क्षत्रियों के वंशजों का नाम हैं, जिन्हें दिग्विजय के समय नकुल ने विजित किया था (२. ३२, ९)।

घ

घट, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ६३)।

घटजानुक, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, १३)। हस्तिनापुर जाते समय मार्ग में श्रीकृष्ण ने इनसे भेंट की (५. ८३, ६४ के बाद गीप्रे॰सं॰ में दाक्षिणात्य पाठ)।

घटसृञ्जय (बहु० °न्याः), दक्षिण की एक जाति का नाम है (६. ९, ६३)।

घटिन् = शिव (१,००० नाम)।

घटोत्कच, एक राक्षस का नाम है जो हिडिम्बा के गर्भ से भीमसेन द्वारा उत्पन्न हुये थे। 'देवराजेन दत्तां दिव्यां शक्तिं व्यंसितां माधवेन। घटोत्कचे राक्षसे घोररूपे', (१. १, १९९)। 'कर्णघटोत्कचाभ्यां युद्धे', (१. १, २००)। १. २, १०६. २६४; ६१, २५ (हिडिम्बा और भीमसेन के पुत्र); ६३, १२४; ९५, ८१; १५५, ३८ (घटो हास्योत्कच इति माता तं प्रत्यभाषत। अब्रवीत्तेन नामास्य घटोत्कच इति स्म ह). ३९. ४१; ३. १२, ११० (हिडिम्बामग्रतः कृत्वा यस्मां जातो घटोत्कचः); १४४, २४. २५; १४५, ३. ६. ८; १५५, १७; १५७, ७; १६०, १०; १७६, २१ (अपने अनुचरों सहित इन्होंने पाण्डवों तथा ब्राह्मणों को वहन किया); १७७, १५;

५. १४१, ४३; १६२, १४; ६. ४५, ४२; ५७, ३३. ३७; ५८, १४ (दुर्योधन के साथ युद्ध किया); ६४, ५४. ५९ (भगदत्त के साथ युद्ध में माया की रचना की). ७८. ८०. ८३; ७२, ९; ७५, ७; ८३, ३२ (भगदत्त के साथ युद्ध किया); ८७, २१; ९१, २. ९ (दुर्योधन के साथ युद्ध किया); ९२, १०. १६ (वंगादि राजाओं से युद्ध किया); ९३, १६. १९; ९४, ६. ३७. ४१. ४७. ४९; ९५, २. ६. २३. ५८. ८०; ९९, ११; १०१, ३; १०९, २१; १११, ३७ (दुर्मुख के साथ युद्ध किया); ११८, ४०; ११९, २१; ७. ८, ४; १०, ७३; २३, ७५ (इन्होंने द्रोण के विरुद्ध युद्ध के लिये प्रस्थान किया : इनके अश्वों का वर्णन). ९० (इनके ध्वज पर गृध्र बना था). ९३ (इनके धनुष का नाम पौलस्त्य था); २५, ६० (अलम्बुष से युद्ध किया); ३५, ३; ९५, ४६ (अलायुध ने इन पर आक्रमण किया); ९६, २७ (अलायुध से युद्ध किया); १०९, ३ (अलम्बुष के साथ युद्ध). ४. ८. २४. ३१ (अलम्बुष का वध किया). ३६; १११, ४५; ११४, ६३; १५३, २५; १५४, १२; १५६, ६६. ६८. ७२. ७३. ७६. ७९. ९२. १०१. १०४. १११. १२८. १३०. १३७. १३८. १५३. १८५ (अश्वत्थामा ने इनके पुत्र का वध तथा इन्हें भी पराजित किया); १५८, ४३; १६६, १५. १८. २१. ३०. ३६. ४० (अश्वत्थामा ने इन्हें पराजित किया); १७३, ३६. ३९. ४१. ४५. ५४. ५९. ६०. ६३ (श्रीकृष्ण ने इन्हें कर्ण से युद्ध करने के लिये भेजा); १७४, १. १०. १२. १४. १७. १९. २२. २३. २६–२८. ३२. ३४. ३६; १७५, १. ३३. ३४. ३७. ४२. ४५. ४८. ५०. ५५. ७०. ७२. ७८. ८०. ८२. ८३. ९१; १७६, १४. १८. १९; १७७, १२. १३. १७. १९; १७८, १. ४. १२. २०; १७९, १. १२. १८. ३१. ३९ (इन्होंने कर्ण से युद्ध किया जिसमें कर्ण ने इन्द्र से प्राप्त दिव्यास्त्र से, जिससे वह अर्जुन का वध करना चाहता था, इनका वध कर दिया); १८०, ७. १२. १४. २१. ३३; १८१, २५; १८२, ६. ७. ९. १०. १२. ४२; १८३, १०. १८. १९. ३३; १८४, २; ८. ३, १३; ५, ४६; ९, ४९; ३५, १५; ५०, १६; ९. २, २३; ६१, ३४; ११. २६, ३७; १५. ३२, ८; १८. ५, ३. २७ (मृत्यु के पश्चात् इन्होंने यक्षों का लोक प्राप्त किया)।

तुर्की० घटोत्कच के निम्न पर्याय :—

* **भीमसुत, भीमसूनु, भीमसेनसुत, भीमसेनात्मज, भैमसेनि, भैमि**—देखिये वस्था०।

* **रक्षस्, रक्षाधिप, राक्षस, राक्षसपुङ्गव, राक्षसेन्द्र, राक्षसेश्वर**—देखिये वस्था०।

* **हैडिम्ब** (हिडिम्बा का पुत्र) : ३. १४४, २४; १४५, ४; १५५, २१; ६. ५८, १५; ६४, ६४. ७४; ८१, २९; ८३, २५. २७. ४०; ८९, २०; ९१, ३०; ९२, १९; ९३, ११. १५; ९४, ५०; ९५ १७. १११. ३८; ७. १४, ४६; १०९, ५. १७. २१. २४; १६६, ३९; १८१, २४; १८२, ८; १८३, १२. २२. ३९।

* **हैडिम्बि** (हिडिम्बा का पुत्र) : ७. १०९, १. २७; १५६, ९४. १६९. १७९; १७३, ४४. ४७. ५३. ६६; १७४, १३. २५; १७५, ११४; १७६, ९; १७७, ४८; १७८, १९. ३१।

घटोत्कचवध—घटोत्कच के वध का वर्णन, अर्थात् घटोत्कचवधपर्वन् (१. २, ६९)।

घटोत्कचवधपर्वन्, महाभारत के ७६ वें अवान्तरपर्व का नाम है जो द्रोणपर्व के अन्तर्गत आता है : "युद्ध के चौदहवें दिन रात्रिकालिक युद्ध : कौरवों और पाञ्चालों के बीच भीषण संग्राम छिड़ गया। उस समय दुर्योधन ने पाण्डव-सेना के बीच प्रवेश कर भयंकर नरसंहार किया। भीमसेन आदि तथा दुर्योधन आदि का युद्ध हुआ। युधिष्ठिर ने एक भयंकर बाण मार कर दुर्योधन को मूर्च्छित कर दिया। उस समय दुर्योधन की रक्षा करने के लिये द्रोणाचार्य उसके पास आ गये। पाण्डवों तथा द्रोणाचार्य का युद्ध छिड़ गया (७. १५३)।" "रात्रियुद्ध में पाण्डव-सैनिकों ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया और द्रोणाचार्य ने भी पाण्डवों का संहार किया—उस भयंकर रात्रि का वर्णन (७. १५४)।" "धृतराष्ट्र ने संजय से युद्ध के सम्बन्ध में पूछा। संजय ने वर्णन किया : द्रोणाचार्य ने कैकेयों तथा धृष्टद्युम्न के पुत्रों और शिबि का वध किया। जब शिबि ने द्रोणाचार्य के सारथि को मार दिया तो दुर्योधन ने उनके लिये दूसरा सारथि भेजा। कलिङ्गराजकुमार ने भीम तथा उनके सारथि, विशोक, पर आक्रमण किया परन्तु भीमसेन ने केवल घूँसो की मार से ही कलिङ्गराजकुमार को मार डाला। तदनन्तर कर्ण तथा कलिङ्गराजकुमार के भ्राता, ध्रुव, ने मिलकर भीमसेन पर आक्रमण किया परन्तु भीम ने पुनः घूँसों की मार से ध्रुव का वध कर दिया। फिर उन्होंने जयरात को भी थप्पड़ों से मार डाला। शकुनि ने आकर कर्ण को बचाया। तदनन्तर भीम और धृतराष्ट्र के पुत्रों में युद्ध होने लगा। जब भीमसेन ने दुर्मद के सारथि और घोड़ों को बाणों से मार डाला तब दुर्मद दुष्कर्ण के रथ पर जा बैठा। उस समय कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कृपाचार्य, सोमदत्त और बाह्लीक आदि के देखते-देखते ही भीमसेन ने दुर्मद और दुष्कर्ण के रथ को लात मारकर धरती में धँसा दिया और उन दोनों को भी घूँसों से मार डाला। भीमसेन के पराक्रम को देखकर कौरव सेना के सब राजा रणभूमि से पलायन करने लगे। कौरव सैनिकों के भाग जाने पर, रात्रि के प्रथम प्रहर में, भीमसेन युधिष्ठिर के पास आये। इसी समय समस्त धार्तराष्ट्र विशाल सेना तथा द्रोणाचार्य को लेकर उपस्थित हुये और भीमसेन से युद्ध करने लगे (७. १५५)।" "सोमदत्त ने, प्राय के लिये बैठे भूरिश्रवा का वध कर देने पर, सात्यकि की भर्त्सना की। सात्यकि ने भी सोमदत्त का क्रोधपूर्वक उत्तर दिया। सोमदत्त और सात्यकि का युद्ध होने लगा जिसमें दुर्योधन सोमदत्त की रक्षा कर रहा था। शकुनि भी सोमदत्त की ओर से युद्ध करने के लिये आ गये। सात्यकि को इस प्रकार कौरवों से घिरा देखकर उनकी रक्षा तथा सहायता के लिये धृष्टद्युम्न वहाँ आ गये। सात्यकि के बाणों से आहत होकर सोमदत्त मूर्च्छित हो गया और उसका सारथि उसे रणभूमि से दूर हटा ले गया। द्रोणाचार्य और सात्यकि + युधिष्ठिर इत्यादि का युद्ध हुआ। द्रोणाचार्य ने भीषण नरसंहार आरम्भ किया जिससे पाण्डव सैनिक इधर-उधर भागने लगे। अर्जुन + भीम + विशोक + पाञ्चालों इत्यादि का द्रोणाचार्य + अश्वत्थामा के साथ युद्ध हुआ। अश्वत्थामा के साथ घटोत्कच—इसके रथ का वर्णन—तथा राक्षसों ने युद्ध करना आरम्भ किया—राक्षसों के युद्ध का वर्णन। घटोत्कच के मायावी युद्ध से त्रस्त होकर धार्तराष्ट्र तथा कर्ण आदि तो भाग गये, परन्तु अश्वत्थामा डटे रहे और उन्होंने शीघ्र ही उस माया को विसर्जित कर दिया। अश्वत्थामा ने घटोत्कच तथा उसके पुत्र, अञ्जनपर्वन्, से युद्ध करते हुये अञ्जनपर्वन् का वध कर दिया। घटोत्कच ने पुनः माया उत्पन्न की। अश्वत्थामा ने वज्रास्त्र और फिर वायव्यास्त्र का संधान किया। उस समय घटोत्कच की ओर से पौलस्त्य और यातुधान युद्ध कर रहे थे। इस भीषण संग्राम को देखकर दुर्योधन विषादग्रस्त हो गया परन्तु अश्वत्थामा ने उसे आश्वस्त किया। तदनन्तर अश्वत्थामा ने अर्जुन के विरुद्ध युद्ध करने के लिये शकुनि तथा कर्ण आदि को भेजा और स्वयं भीम इत्यादि का वध करने की प्रतिज्ञा की। शकुनि शीघ्र ही एक विशाल सेना लेकर अर्जुन की ओर बढ़ा। अश्वत्थामा तथा घटोत्कच का भयंकर युद्ध होने लगा जिसमें अश्वत्थामा ने एक अक्षौहिणी राक्षस-सेना का वध करने के बाद घटोत्कच के रथ को भी छिन्न-भिन्न कर दिया। घटोत्कच दौड़कर धृष्टद्युम्न के रथ पर बैठ गया। भीम + घटोत्कच + धृष्टद्युम्न इत्यादि ने मिलकर अश्वत्थामा से युद्ध किया जिसमें अश्वत्थामा ने राक्षसों का संहार करते हुये रक्त की नदी बहा दी और फिर द्रुपदकुमार सुरथ तथा सुरथ के छोटे भ्राता, शत्रुञ्जय, इत्यादि का भी वध कर दिया। तदनन्तर अश्वत्थामा ने एक भयंकर बाण मार कर घटोत्कच को मूर्च्छित कर दिया जिससे धृष्टद्युम्न घटोत्कच को रणभूमि से दूर हटा ले गये। अश्वत्थामा के इस महान् पराक्रम को देखकर युधिष्ठिर के सैनिक पराङ्मुख हो गये और वहाँ सिद्ध, गन्धर्व, पिशाच, नाग, सुपर्ण, पितर, पक्षी, राक्षस, भूत, अप्सरायें तथा देवता, सभी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा की प्रशंसा करने लगे (७. १५६)।" "अश्वत्थामा के द्वारा द्रुपद तथा कुन्तिभोज के पुत्रों और सहस्रों राक्षसों को मारा गया देख कर युधिष्ठिर, भीमसेन, धृष्टद्युम्न तथा

युयुधान ने भी सावधान होकर युद्ध में ही मन लगाया। युयुधान + भीम ने सोमदत्त से युद्ध करते हुये उसे मूर्च्छित कर दिया और तदनन्तर प्रतीप के पुत्र वाह्लीक तथा धृतराष्ट्र के दस पुत्रों का भी वध कर दिया। नागदत्त से युद्ध करते हुये भीम ने उसका भी वध किया। कर्ण के भ्राता, वृकरथ, के साथ युद्ध करते हुये उसका वध करने के पश्चात् भीम ने शकुनि के पाँच भ्राताओं और सात रथियों का भी संहार कर दिया। युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य का युद्ध हुआ जिसमें युधिष्ठिर ने अम्बष्ठों, मालवों, त्रिगर्तों तथा शिविदेशीय सैनिकों का संहार किया। द्रोणाचार्य ने वायव्यास्त्र से युधिष्ठिर पर प्रहार किया परन्तु युधिष्ठिर ने भी अपने दिव्यास्त्र से उसको नष्ट कर दिया। तदनन्तर द्रोणाचार्य ने क्रमशः वारुण, याम्य, आग्नेय, त्वाष्ट्र और सावित्र नामक दिव्यास्त्रों का युधिष्ठिर के विरुद्ध प्रयोग किया परन्तु युधिष्ठिर ने इन सब अस्त्रों को दिव्यास्त्रों द्वारा नष्ट कर दिया। तब द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर पर ऐन्द्र और प्रजापत्य नामक अस्त्रों का प्रयोग किया जिस पर युधिष्ठिर ने भी माहेन्द्र अस्त्र प्रगट करके इन दिव्यास्त्रों को नष्ट किया। इसके पश्चात्, युधिष्ठिर और द्रोण, दोनों ने एक दूसरे पर ब्रह्मास्त्र चलाया। द्रोणाचार्य के प्रहारों से त्रस्त होकर पाञ्चाल सैनिक पलायन करने लगे परन्तु अर्जुन और भीम ने उन्हें आश्वस्त किया जिससे वे लौट पड़े। तदनन्तर अर्जुन ने द्रोणाचार्य के दाहिने पार्श्व में और भीमसेन ने वायें पार्श्व में महान् वाण-समूहों की वर्षा आरम्भ की। उस समय केकय, सृञ्जय, पाञ्चाल, मत्स्य तथा यादव सैनिकों ने भी अर्जुन और भीम का अनुसरण करते हुये द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। इस प्रकार त्रस्त कौरव-सेना अन्धकार और निद्रा से पीड़ित हो तितर-बितर हो गई। द्रोणाचार्य और दुर्योधन के रोकने पर भी उनकी सेना उस समय रोकी नहीं जा सकी (७. १५७)।" "दुर्योधन ने कर्ण को उत्साहित करते हुये उससे पाण्डवों को पराजित करने के लिये कहा। कर्ण ने अर्जुन आदि का वध करने की प्रतिज्ञा की जिस पर कृपाचार्य ने उसका उपहास करते हुये कहा कि वह अर्जुन का कभी भी वध नहीं कर सकेगा। इस पर क्रुद्ध होकर कर्ण ने पुनः गर्वोक्ति की परन्तु कृपाचार्य ने पाण्डव पक्ष के वीरों के पराक्रम का उल्लेख करते हुये कर्ण का प्रतिवाद और उपहास किया। कृपाचार्य की बातें सुन कर कर्ण ने उनसे कहा: 'यदि तुम पुनः यहाँ इस प्रकार मुझे अप्रिय लगनेवाली बात बोलोगे तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारी जिह्वा काट लूँगा।'''''दुर्योधन, द्रोण, शकुनि, दुर्मुख, जय, दुःशासन, वृषसेन, शल्य, स्वयं तुम, सोमदत्त, भूरि, अश्वत्थामा और विविंशति आदि युद्धकुशल वीर जहाँ खड़े होंगे वहाँ कौन उनके सामने टिक सकेगा। यदि भीष्म आज वाणों से बिद्ध होकर रणभूमि में पड़े हैं तो यह विधि का ही विधान है। इसमें दैव संयोग के अतिरिक्त और कोई कारण नहीं। मैं दुर्योधन के हित के लिये यथाशक्ति युद्ध करूँगा। विजय तो दैव के अधीन है।' (७. १५८)।" "क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा कर्ण को मारने के लिये उद्यत हुये। दुर्योधन और कृपाचार्य ने कर्ण और अश्वत्थामा को शान्त किया। पाण्डवों + पाञ्चालों ने कर्ण पर आक्रमण किया परन्तु कर्ण ने अपने पराक्रम से उन सब को पराजित कर दिया। उस समय अर्जुन कौरव सेना की ओर बढ़े और इधर अश्वत्थामा, कृपाचार्य, शल्य तथा कृतवर्मा, कर्ण की रक्षा करने लगे। भीषण वाणयुद्ध में अर्जुन ने कर्ण के धनुष को बीच से काट कर उसके घोड़ों और सारथि का भी वध कर दिया। उस समय कर्ण कृपाचार्य के रथ पर चढ़ गया। अर्जुन के आक्रमण से कौरव-सेना भागने लगी परन्तु उसे रोक कर दुर्योधन ने अर्जुन पर आक्रमण किया। कृपाचार्य ने दुर्योधन की सहायता के लिये अश्वत्थामा को भेजा। अश्वत्थमा ने शीघ्र ही दुर्योधन के पास आकर उसे अर्जुन से युद्ध करने से विरत करते हुये स्वयं अर्जुन से युद्ध करने का प्रस्ताव किया। दुर्योधन ने तब अश्वत्थामा से पाञ्चालों और सोमकों आदि का वध करने के लिये कहा (७. १५९)" "अश्वत्थामा ने कहा: 'मैं कर्ण, शल्य, कृप और कृतवर्मा निमेषमात्र में ही पाण्डव-सेना का संहार कर सकते हैं।' इस प्रकार कहकर उन्होंने पाण्डवों और पाञ्चालों इत्यादि से युद्ध करने का आश्वासन दिया। तदनन्तर उन्होंने प्रबल पराक्रम दिखाकर समस्त पाञ्चाल सेना को पराजित करके धृष्टद्युम्न से घोर युद्ध प्रारम्भ किया। उस घोर युद्ध को देखकर सिद्ध, चारण तथा वायुचारी गरुड़ आदि ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न के धनुष, रथ, सारथि और अश्वों को नष्ट कर दिया। अश्वत्थामा के इस पराक्रम से त्रस्त होकर समस्त पांचाल और सृञ्जय-सैनिक या तो नष्ट हो गये अथवा युद्ध-भूमि से भाग गये (७. १६०)।" "युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन आदि ने अश्वत्थामा + दुर्योधन के साथ घोर युद्ध किया जिसमें युधिष्ठिर ने अम्बष्ठों इत्यादि का, भीम ने अभीषाहों आदि का, और अर्जुन ने यौधेयों आदि का वध किया। द्रोणाचार्य ने वायव्यास्त्र का प्रयोग किया। जब पांचाल सैनिक रण-भूमि से भागने लगे तो उन्हें प्रोत्साहित करके भीम और अर्जुन ने दोनों ओर से द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। उस समय समस्त कौरव-सेना भागने लगी और दुर्योधन तथा द्रोणाचार्य के रोकने पर भी रुकी नहीं (७. १६१)।" "सात्यकि + भीमसेन ने वाह्लीक के पुत्र, सोमदत्त, के साथ युद्ध किया जिसमें सात्यकि ने सोमदत्त का वध कर दिया। युधिष्ठिर + पाण्डव + प्रभद्रकों ने द्रोणाचार्य के साथ युद्ध किया। द्रोण और युधिष्ठिर ने एक दूसरे पर वायव्यास्त्र का प्रयोग किया। श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को द्रोणाचार्य से दूर रहने का आदेश दिया। तदनन्तर, जब युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार वहाँ से हट गये तब श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन और भीम द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे (७. १६२)।" "जिस समय कौरवों और पाण्डवों का यह भयंकर युद्ध चल रहा था उस समय सम्पूर्ण जगत् अन्धकार और धूल से आच्छादित था। एक ओर द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य थे और दूसरी ओर भीमसेन धृष्टद्युम्न और सात्यकि। दोनों ही पक्ष की सेनायें उस समय एक दूसरे के प्रहारों से त्रस्त और खिन्न हो गईं। जितनी सेनायें मृत्यु से बच गई थीं उन सबको एकत्र करके दुर्योधन ने पुनः व्यूह का निर्माण करवाया। उस व्यूह के अग्रभाग में द्रोणाचार्य, मध्य में शल्य, तथा पार्श्व-भाग में अश्वत्थामा और शकुनि थे। स्वयं दुर्योधन रात्रि के समय अपनी सेना की रक्षा करते हुए आगे बढ़े। दुर्योधन की आज्ञा से उनकी समस्त सेना ने हाथों में जलती हुई मशालें ले लीं। उस समय आकाश में स्थित देवता, ऋषि, गन्धर्व, देवर्षि, विद्याधर, अप्सराओं के समूह, नाग-यक्ष-सर्प और किन्नर आदि ने भी हाथों में प्रदीप ले लिए। दिशाओं की अधिष्ठात्री देवियों की ओर से भी सुगन्धित तेलों से भरे हुए दीप वहाँ उतरते दिखाई दिये। नारद और पर्वत नामक मुनियों ने कौरवों और पाण्डवों की सुविधा के लिए वे दीप जलाये थे—रात्रिकालीन उस सेना का विस्तृत वर्णन। उन दोनों सेनाओं द्वारा धारण किया हुआ प्रकाश पृथ्वी, आकाश तथा सम्पूर्ण दिशाओं को लाँघकर स्वर्गलोक तक फैल गया जिससे उद्घोषित होकर देवता, गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धों के समुदाय तथा सम्पूर्ण अप्सरायें भी युद्ध देखने के लिए वहाँ उपस्थित हुईं। उस समय दोनों सेनाओं में भीषण-युद्ध होने लगा (७. १६३)।" "जब दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध आरम्भ हुआ तब दुर्योधन ने अपने भ्राता, विकर्ण, इत्यादि को द्रोणाचार्य की रक्षा करने का आदेश दिया। दुर्योधन ने कृतवर्मा को द्रोणाचार्य के दाहिने पहिये की ओर शल्य को वायें पहिये की रक्षा करने का आदेश दिया। त्रिगर्तों को उसने द्रोणाचार्य के आगे-आगे चलने के लिए कहा। दुर्योधन ने धृष्टद्युम्न से द्रोणाचार्य की विशेष रूप से रक्षा करने के लिए कहा। दुर्योधन ने यह आशा प्रकट की कर्ण अर्जुन का वध कर डालेगा तथा वह स्वयं भीमसेन और अन्य पाण्डवों को पराजित कर देगा। उस समय अर्जुन और कौरवों के बीच, अश्वत्थामा और पांचाल राज के बीच, तथा द्रोण और संजयों के बीच युद्ध होने लगा (७. १६४)।" "युधिष्ठिर ने अपने समस्त योद्धाओं को द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने का आदेश दिया। पांचालों और सुमुखों ने द्रोण पर आक्रमण किया। द्रोणाचार्य की ओर बढ़ रहे युधिष्ठिर से कृतवर्मा युद्ध करने लगे। युयुधान ने भूरि के साथ युद्ध किया। द्रोणाचार्य की ओर बढ़ते हुए सहदेव से कर्ण ने युद्ध किया। उस समय दुर्योधन का भीम से, शकुनि का नकुल से, कृप का शिखण्डी से, दुःशासन का प्रतिविन्ध्य से, अश्वत्थामा का घटोत्कच

से, वृषसेन का द्रुपद से, शल्य का विराट से, चित्रसेन का नकुल कुमार शतानीक से, अलम्बुष का अर्जुन से, द्रोण का धृष्टद्युम्न से युद्ध आरम्भ हुआ। उस समय कृतवर्मा से पराजित होकर युधिष्ठिर पीछे हट गये, और कृतवर्मा पुनः द्रोणाचार्य के रथ-चक्र की रक्षा करने लगे (७. १६५)।" "भूरि का सात्यकि से युद्ध हुआ जिसमें सात्यकि ने भूरि का वध कर दिया। अश्वत्थामा और सात्यकि ने भी एक दूसरे से युद्ध किया और उसके पश्चात घटोत्कच ने अश्वत्थामा पर आक्रमण करके उन्हें मूर्च्छित कर दिया। चेतना लौटने पर अश्वत्थामा ने भी घटोत्कच को मूर्च्छित कर दिया जिससे उसका सारथि उसे युद्ध-भूमि से दूर हटा ले गया। भीम ने दुर्योधन के सारथि, अश्वों तथा रथ का मर्दन कर दिया। उस समय भयभीत दुर्योधन भागकर नन्दक के रथ पर जा बैठा। समस्त कौरव-सैनिकों तथा युधिष्ठिर ने भी दुर्योधन को मारा गया मान लिया। युधिष्ठिर शीघ्रता से भीमसेन के पास आ गये और पांचाल, मत्स्य, केकय तथा सृंजय, द्रोणाचार्य पर टूट पड़े (७. १६६)।" "कर्ण और सहदेव का युद्ध हुआ जिसमें कर्ण ने सहदेव को पराजित कर दिया। जब सहदेव युद्ध-भूमि से भागने लगे तो कर्ण ने उनका पीछा करके अपनी धनुष से उन्हें पीड़ा दी परन्तु कुन्ती को दिये हुए अपने वचन का स्मरण करके उनका वध नहीं किया। उस समय खिन्न होकर सहदेव पांचाल राजकुमार जनमेजय के रथ पर आरूढ़ हो गये। विराट और शल्य का भी युद्ध हुआ जिसमें शल्य ने विराट को रथ-विहीन करके उनके भ्राता शतानीक का भी वध कर दिया। विराट ने शतानीक के रथ पर बैठकर पुनः आक्रमण किया परन्तु शल्य ने उन्हें मूर्च्छित कर दिया जिसपर उनका सारथि उन्हें युद्ध-भूमि से बाहर ले गया। उस समय शल्य के प्रहारों से पीड़ित होकर विराट की सेना भी भाग खड़ी हुई। सेना को भागता देखकर अर्जुन और श्रीकृष्ण शल्य की ओर बढ़े। उस समय राक्षसराज अलम्बुष आठ पहियोंवाले रथ पर अर्जुन और कृष्ण की ओर बढ़ा। अलम्बुष के रथ में घोड़ों के समान मुखवाले भयंकर पिशाच जुते हुए थे—अलम्बुष के रथ आदि का वर्णन। अर्जुन ने अलम्बुष को पराजित कर दिया जिससे वह युद्ध-भूमि से भाग गया। तदनन्तर भीषण नरसंहार करते हुये अर्जुन शीघ्रतापूर्वक द्रोणाचार्य की ओर बढ़े। अर्जुन के प्रहार से त्रस्त होकर समस्त कौरव-सेना भाग चली (७. १६७)।" "धार्तराष्ट्र चित्रसेन ने नकुल-पुत्र शतानीक से युद्ध किया परन्तु पराजित हुआ। शतानीक भागकर कृतवर्मा के रथ पर बैठ गया। वृषसेन से युद्ध करते हुए द्रुपद मूर्च्छित हो गये और उनका सारथि उन्हें रण-भूमि से दूर हटा ले गया। पांचालों और सोमकों का संहार करते हुए वृषसेन युधिष्ठिर की ओर बढ़ा। धार्तराष्ट्र दुःशासन ने प्रतिविन्ध्य से घोर युद्ध किया (७. १६८)।" "नकुल और शकुनि का युद्ध हुआ जिसमें पराजित शकुनि को उनका सारथि दूर हटा ले गया। तदनन्तर नकुल द्रोणाचार्य की ओर बढ़े। शिखण्डी और कृप का युद्ध हुआ जिसमें शिखण्डी को उनका सारथि दूर हटा ले गया। पांचालों और सोमकों ने शिखण्डी की रक्षा करना आरम्भ की जब कि धार्तराष्ट्र द्रोणाचार्य के चारों ओर खड़े हो गये। दोनों पक्ष में घोर युद्ध आरम्भ हुआ (७. १६९)।" "धृष्टद्युम्न (+पाण्डव तथा पाञ्चाल) और द्रोण का युद्ध हुआ। जब धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य पर एक भयंकर बाण छोड़ा तब उसे देखकर देवता, गन्धर्व तथा मनुष्य, सभी द्रोणाचार्य के कल्याण की कामना करने लगे। उस समय कर्ण ने उस बाण को काट दिया। द्रुमसेन के साथ युद्ध करते हुये धृष्टद्युम्न ने उसका वध कर दिया। तदनन्तर छः श्रेष्ठ महारथियों ने धृष्टद्युम्न से युद्ध करना आरम्भ किया। धृष्टद्युम्न की रक्षा करने के लिये सात्यकि ने कर्ण पर आक्रमण किया। धार्तराष्ट्र+कर्ण+कर्णपुत्र वृषसेन, तथा धृष्टद्युम्न+सात्यकि का युद्ध हुआ। इसी समय वहाँ गाण्डीव धनुष की गम्भीर टङ्कार-ध्वनि बड़े ज़ोर से सुनायी देने लगी। अर्जुन के रथ का गम्भीर घोष और गाण्डीव धनुष की टंकार सुनकर कर्ण ने दुर्योधन से धृष्टद्युम्न तथा सात्यकि को घेर कर वध कर देने के सम्बन्ध में परामर्श किया। दुर्योधन ने एक विशाल सेना के साथ शकुनि और दुःशासन को अर्जुन का वध करने के अभिप्राय से भेजा। एक भयंकर संग्राम छिड़ गया जिसमें शकुनि इत्यादि ने सात्यकि से, और द्रोण ने धृष्टद्युम्न+पाञ्चालों से युद्ध किया (७. १७०)।" "कौरव सेना के अनेक वीरों ने सात्यकि को घेर लिया। दुर्योधन और युयुधान का युद्ध हुआ जिसमें दुर्योधन भाग गया। अर्जुन ने शकुनि तथा उसके पुत्र उलूक से युद्ध करते हुये शकुनि को रथविहीन कर दिया जिससे वह उलूक के रथ पर बैठ गया। अर्जुन ने कौरव-सेना का भीषण संहार किया। तदनन्तर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने-अपने शङ्ख बजाये। द्रोणाचार्य से युद्ध करते हुये धृष्टद्युम्न ने उनके रथ को अवरुद्ध और उनकी सेना का भयंकर संहार किया। धृष्टद्युम्न आदि ने तब विजय सूचक अपने-अपने शङ्ख बजाये (७. १७१)" "दुर्योधन के उपालम्भ करने पर द्रोणाचार्य और कर्ण ने घोर युद्ध आरम्भ किया। इन लोगों के प्रहार से पाण्डव-सेना भयभीत होकर पलायन करने लगी। उस समय भीमसेन के देखते-देखते ही पाण्डव योद्धा अपनी मशालों आदि को फेंककर भागने लगे और द्रोणाचार्य ने उन सब का पीछा किया। अर्जुन, भीमसेन तथा श्रीकृष्ण ने अपनी सेना को लौटाया। तदनन्तर कौरवों (विशेषतः द्रोणाचार्य और कर्ण) तथा पाण्डवों (विशेषतः युधिष्ठिर) में घोर संग्राम होने लगा (७. १७२)।" "धृष्टद्युम्न से युद्ध करते हुये कर्ण ने उन्हें रथविहीन कर दिया। उस समय अर्जुन के रथ पर बैठ कर धृष्टद्युम्न ने पुनः कर्ण से युद्ध करने की इच्छा प्रगट की परन्तु युधिष्ठिर ने उन्हें रोक दिया। कर्ण ने पाञ्चालों को पराजित किया जिन्होंने सोमकों के साथ पुनः कर्ण पर आक्रमण किया। इसी बीच कर्ण के सारथि ने सिन्धुदेशीय दूसरे श्वेत घोड़ों को रथ में जोत लिया। इस प्रकार पुनः सन्नद्ध होकर कर्ण ने पाञ्चालों पर भयंकर आक्रमण किया जिससे सृञ्जयों आदि सहित समस्त पाञ्चाल योद्धा भाग खड़े हुये। युधिष्ठिर, कृष्ण और अर्जुन ने कर्ण के पराक्रम का सामना करने के सम्बन्ध में आपस में परामर्श किया। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कर्ण की ओर चलने का निवेदन किया। श्रीकृष्ण ने कहा कि केवल अर्जुन और घटोत्कच के अतिरिक्त अन्य कोई कर्ण का सामना नहीं कर सकता। परन्तु अर्जुन को उस समय तक कर्ण का सामना न करने का उन्होंने परामर्श दिया जब तक इन्द्र द्वारा प्राप्त शक्ति कर्ण के पास सुरक्षित है। अतः उन्होंने घटोत्कच को ही पहले कर्ण से युद्ध करने के लिये भेजने को कहा क्योंकि घटोत्कच के पास भी राक्षसों और असुरों के अनेक दिव्यास्त्र थे। तदनन्तर सबने मिलकर घटोत्कच को कर्ण से युद्ध करने के लिये तैयार किया। अर्जुन ने घटोत्कच से कहा 'तुम, महाबाहु सात्यकि, तथा भीमसेन ही सम्पूर्ण सेनाओं में तीन श्रेष्ठ वीर हैं। अतः तुम इस निशीथकाल में कर्ण के साथ द्वैरथ युद्ध करो जिसमें सात्यकि तुम्हारे पृष्ठरक्षक होंगे।' इस प्रकार सबके निवेदन और प्रोत्साहन से उत्साहित हो घटोत्कच ने कर्ण से युद्ध आरम्भ किया (७. १७३)।" "दुर्योधन ने घटोत्कच के विरुद्ध युद्ध कर रहे कर्ण की सहायता करने के लिये दुःशासन से कहा। इसी समय जटासुर के पुत्र, एक श्रेष्ठ राक्षस, ने दुर्योधन के पास आकर कहा : 'मैं पाण्डवों का वध करना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पिता, जटासुर, का पाण्डवों ने वध किया था। मैं अपने पिता के उस वध का प्रतिशोध लेना चाहता हूँ।' दुर्योधन ने इस राक्षस से घटोत्कच का वध करने के लिये कहा। इस राक्षस का नाम अलम्बुष था। अलम्बुष और घटोत्कच का युद्ध आरम्भ हुआ जिसमें दोनों ही राक्षसों ने अपनी-अपनी माया का आश्रय लिया। घटोत्कच ने अलम्बुष का वध करके उसके मस्तक को दुर्योधन के रथ पर फेंक दिया और कहा : 'यह है तेरा सहायक बन्धु जिसे मैंने मार डाला। अब तू कर्ण की तथा अपनी भी ऐसी ही अवस्था देखेगा।' इस प्रकार कह कर घटोत्कच कर्ण से युद्ध करने लगा (७. १७४)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने घटोत्कच के स्वरूप, रथ, आयुध और कवच आदि का वर्णन करने के पश्चात् कर्ण के साथ उसके युद्ध का वर्णन आरम्भ किया। उन्होंने कहा कि माया का आश्रय लेकर युद्ध करते हुये घटोत्कच ने कर्ण के दिव्यास्त्र को भी नष्ट कर दिया। तदनन्तर वह काला मेघ बन कर कर्ण पर भयंकर पत्थरों की वर्षा करने लगा। कर्ण ने वायव्यास्त्र द्वारा उस काले मेघ को नष्ट कर दिया। तब घटोत्कच ने पुनः

माया प्रगट की जिससे कर्ण ने देखा कि वह राक्षस, सिंहों, शार्दूलों और गजराजों से घिरा हुआ उसकी ओर आ रहा है। घटोत्कच के साथ के राक्षस नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों और आभूषणों से युक्त थे। कर्ण ने भीषण पराक्रम दिखाना आरम्भ किया। उस समय घटोत्कच हाथी जैसे बलवान् और पिशाचों के मुखवाले प्रखर गधों से जुते रथ पर बैठ कर कर्ण की ओर बढ़ा। उसने कर्ण पर रुद्रनिर्मित अशनि चलाया जिसकी ऊँचाई दो योजन और लम्बाई-चौड़ाई एक-एक योजन थी। कर्ण ने उस अशनि को पकड़ कर पुनः घटोत्कच पर ही चला दिया जिससे वह घटोत्कच के रथ को भस्म करती हुई धरती में समा गई। तत्पश्चात् घटोत्कच ने अपने अनेक रूप बना लिये और स्वयं अन्तर्धान हो गया। उस समय अनेक राक्षस्, पिशाच, यातुधान, कुत्ते, भेड़िये आदि कर्ण को काटने के लिये सब ओर से उस पर टूट पड़े। कर्ण ने अपने दिव्यास्त्र से घटोत्कच की माया को नष्ट कर दिया (७. १७५)।" "इसी बीच अलायुध नामक राक्षस युद्ध-भूमि में दुर्योधन के पास आया। उसके साथ अनेक रूप धारण करनेवाले वीर राक्षस थे। वह पूर्व वैर का स्मरण करके वहाँ आया था। उसके कुटुम्बी, एक ब्राह्मण-भक्षी राक्षस, बकासुर, का भीम ने वध किया था। उसके सखा, हिडिम्ब तथा किर्मीर, को भी भीम ने ही मारा था। इन्हीं सब पहले के वैरों का स्मरण कर उसने पाण्डवों, विशेषकर भीम, कृष्ण, घटोत्कच आदि का वध करने की इच्छा प्रगट की। दुर्योधन ने अलायुध से भीमसेन का वध करने के लिये कहा। अलायुध का स्वरूप, उसके रथादि, तथा आयुध बहुत कुछ घटोत्कच के ही समान थे (७. १७६)।" "घटोत्कच से युद्ध कर रहे कर्ण के सम्बन्ध में अत्यन्त चिन्तित दुर्योधन सहित कुरुओं और द्रोणाचार्य ने अलायुध का स्वागत किया। अलायुध से युद्ध करने के लिये घटोत्कच कर्ण को छोड़कर उसकी ओर आया। उधर भीमसेन कर्ण से युद्ध करने लगे। तदनन्तर कर्ण के आक्रमण की उपेक्षा करते हुये भीम ने अलायुध से युद्ध किया जो घटोत्कच को छोड़कर उनकी ओर आया था। आलायुध के साथ के राक्षसों ने गजसेना, पाञ्चालों तथा सृञ्जयों पर आक्रमण किया। उस समय के भयंकर युद्ध को देख कर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा: 'तुम अलायुध के विरुद्ध युद्ध कर रहे भीमसेन के मार्ग का अनुसरण करो। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, युधामन्यु, उत्तमौजा तथा द्रौपदी के पाँच पुत्र कर्ण पर आक्रमण करें। नकुल, सहदेव और सात्यकि अन्य राक्षसों का वध करें।' अर्जुन स्वयं द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे। श्रीकृष्ण ने घटोत्कच को भीम की सहायता के लिये भेजा (७. १७७)।" "कर्ण को छोड़कर घटोत्कच, बकासुर के भ्राता, अलायुध, से युद्ध करने लगा। इसी बीच युयुधान इत्यादि और अलायुध के राक्षसों में भी युद्ध छिड़ गया। अर्जुन ने अनेक क्षत्रियों का संहार किया। कर्ण ने भी धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के नेतृत्व में युद्ध कर रहे अनेक पाञ्चाल सैनिकों का वध किया। राक्षसों का वध करने के पश्चात् भीम + नकुल ने कर्ण से युद्ध किया। पाञ्चालों ने भी द्रोणाचार्य का सामना किया। अलायुध और घटोत्कच, दोनों ने युद्ध में अपनी-अपनी माया का आश्रय लिया, परन्तु अन्त में घटोत्कच ने अलायुध का वध करके उसके मस्तक को दुर्योधन के सामने फेंक दिया। यह देखकर दुर्योधन अत्यन्त चिन्तित हो उठा, जब कि पाञ्चाल तथा पाण्डव सिंहों के समान गर्जना करने लगे (७. १७८)।" "कर्ण ने पाञ्चालों पर भीषण आक्रमण किया। उसने अनेक श्रेष्ठ आयुधों से शत्रुओं का संहार किया। यह देख घटोत्कच कर्ण से युद्ध करने लगा। कर्ण ने एक भयंकर अस्त्र से घटोत्कच के रथ को, घोड़े तथा सारथि सहित नष्ट कर दिया। इस प्रकार रथहीन होने पर घटोत्कच वहाँ से अदृश्य हो गया और उसके बाद एक भयंकर माया की सृष्टि की—वर्णन। घटोत्कच की इस माया से त्रस्त होकर कौरव-सेना भागने लगी। उस समय केवल कर्ण ही अपने पराक्रम से युद्ध-भूमि में डटा रहा। तब सिन्ध और बाह्लीक देश के योद्धा भयभीत होकर कर्ण की ओर देखने लगे। घटोत्कच ने पुनः कर्ण के घोड़ों को मारने के पश्चात् अपनी माया से उसके दिव्यास्त्र को भी स्तम्भित कर दिया। उस समय कौरवों ने कर्ण से कहा कि वह भीम आदि की परवाह किये बिना ही इन्द्र से प्राप्त शक्ति द्वारा घटोत्कच का वध कर दे। जब कर्ण ने उस इन्द्र-शक्ति को हाथ में लिया तो भयभीत होकर घटोत्कच भागने लगा। आकाश में स्थित अनेक प्राणी तीव्र चीत्कार कर उठे। कर्ण ने उस शक्ति द्वारा घटोत्कच का वध कर दिया; परन्तु पाण्डवों का हित करने के दृष्टि से, रणभूमि में गिरते समय भी घटोत्कच ने विशाल रूप धारण कर लिया था जिससे उसके शरीर के नीचे पूरी एक अक्षौहिणी कौरव-सेना दब कर मर गई। घटोत्कच का वध होते ही कौरव सिंहनाद करने लगे। कर्ण भी दुर्योधन के रथ पर बैठकर कौरव सेना के समक्ष उपस्थित हुआ (७. १७९)।" "पाण्डवगण अत्यन्त विषाद-ग्रस्त हो गये। केवल श्रीकृष्ण ही अत्यन्त प्रसन्न होकर विजयघोष करने लगे। अर्जुन का आलिङ्गन करते हुये श्रीकृष्ण ने अपनी प्रसन्नता का कारण बतलाया और कहा कि इन्द्र से प्राप्त शक्ति के घटोत्कच पर प्रहार कर देने के कारण कर्ण के पास अब ऐसा कोई श्रेष्ठ अस्त्र शेष नहीं रहा जिससे वह अर्जुन का वध कर सके। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया कि किस प्रकार उन्होंने पाण्डवों के समस्त शत्रुओं का क्रमशः वध करा दिया है (७. १८०)।" "श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जरासन्ध आदि धर्मद्रोहियों के वध करने का कारण बताया (७. १८१)।" "धृतराष्ट्र के यह पूछने पर कि कर्ण ने इन्द्र से प्राप्त शक्ति से अर्जुन पर प्रहार क्यों नहीं किया, सञ्जय ने बताया कि कर्ण यद्यपि उस शक्ति से अर्जुन का ही वध करना चाहता था, तथापि श्रीकृष्ण की नीति के कारण वह ऐसा नहीं कर सका। उस शक्ति को नष्ट करने के लिये ही श्रीकृष्ण ने कर्ण के साथ द्वैरथ युद्ध में घटोत्कच को लगाया। संजय ने बताया: 'प्रतिदिन रात को दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन, तथा मेरा भी कर्ण से यही आग्रह रहता था कि समस्त सेना को छोड़ कर कर्ण अर्जुन को ही मार डाले। परन्तु श्रीकृष्ण अर्जुन को सदा कर्ण से बचाकर रखते थे।' सात्यकि के यह पूछने पर कि कर्ण ने अपनी अमोघ शक्ति का अर्जुन पर प्रयोग क्यों नहीं किया, श्रीकृष्ण ने कहा: 'दुःशासन, कर्ण, शकुनि तथा जयद्रथ सदा ही यह गुप्त मन्त्रणा करते और यह निश्चय करते थे कि अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पर भी कर्ण अपनी अमोघशक्ति को न छोड़े। कर्ण ने भी ऐसा ही करने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु मैं ही कर्ण को मोहित किये रहता था। आज जब उसने वह शक्ति घटोत्कच पर छोड़ दी तब मैंने समझ लिया कि अर्जुन मौत के मुख से निकल गये हैं।' (७. १८२)।" "संजय द्वारा कर्ण की शक्ति के घटोत्कच पर छोड़ देने से अर्जुन के वध की सम्भावना समाप्त हो जाने का वृत्तान्त सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा: 'मैं समझता हूँ कि श्रीकृष्ण की नीति के कारण ही वह शक्ति घटोत्कच को मारने चली गई। मेरे समस्त पुत्र तथा अन्य भूपाल उसी दुर्नीति के कारण मृत्यु को प्राप्त हुये।' अब घटोत्कच के मारे जाने पर कौरवों तथा पाण्डवों का युद्ध किस प्रकार आरम्भ हुआ इसका वर्णन करो।' धृतराष्ट्र के इस प्रकार पूछने पर संजय ने कहा: 'घटोत्कच की मृत्यु के पश्चात् समस्त कौरव-सैनिक सिंहनाद करते हुये पाण्डवों का वध करने लगे। उस समय युधिष्ठिर अत्यन्त दुःखी हो गये। उन्होंने भीम से कहा: 'तुम दुर्योधन की सेना को रोको।' इस प्रकार भीम को आदेश देकर युधिष्ठिर स्वयं बारंबार सिसकते हुये अपने रथ पर जा बैठे। उन्हें व्यथित देखकर श्रीकृष्ण ने सान्त्वना दी। फिर भी घटोत्कच की सहायता का स्मरण करके युधिष्ठिर शोक करते ही रहे। उन्होंने कहा: 'अभिमन्यु के वध में यद्यपि जयद्रथ का बहुत कम अपराध था, तथापि अर्जुन ने जयद्रथ को मार डाला। यदि पाण्डवों के लिये अपने शत्रु का वध करना न्यायसंगत है तो पहले कर्ण तथा द्रोणाचार्य को ही मार डालना चाहिये। अतः अब मैं स्वयं ही कर्ण का वध करने के लिये युद्ध भूमि में जाऊँगा। भीमसेन इस समय द्रोणाचार्य की सेना से युद्ध कर ही रहे हैं।' ऐसा कह कर युधिष्ठिर अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक वहाँ से चल दिये। उनके पीछे रथी, गजारोही, अश्वारोही, तथा पाञ्चाल और प्रभद्रकों की सेना लेकर शिखण्डी चल पड़े। युधिष्ठिर को इस प्रकार कर्ण के वध की इच्छा से जाते हुये देख कर महर्षि व्यास वहाँ प्रगट हुये और कहा: 'बड़े सौभाग्य की बात है कि संग्राम में कर्ण का सामना करके भी अर्जुन जीवित हैं। यह हर्ष का विषय है कि

युद्ध में कर्ण ने घटोत्कच पर ही इन्द्र की शक्ति को चला दिया। तात आज के पाँचवें दिन यह समस्त पृथिवी तुम्हारी हो जायगी।' ऐसा कह कर व्यास वहीं अन्तर्धान हो गये (७. १८३)।"

घटोत्कचसुत = अञ्जनपर्वन् : ७. १५६, ८०।

घटोदर, एक दैत्य या दानव का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित रहता था (२. ९, १३)।

घण्ट = शिव (१,००० नाम)।

घण्टाकर्ण, ब्रह्मा द्वारा स्कन्द को प्रदत्त चार पार्षदों में से तीसरे का नाम है (९. ४५, २३–२४)।

घण्टामालाप्रिय = शिव (१,००० नाम)।

घण्टिन् = शिव (१,००० नाम)।

घनौपम = शिव (१,००० नाम)।

घुष्य = शिव (१,००० नाम)।

घूर्णिका, शुक्राचार्य की पुत्री और देवयानी की धाय का नाम है (१. ७८, २५. २६)।

घृतपा (बहु० °पाः) घृत पीकर रहनेवाले ऋषियों के एक वर्ग का नाम है जो ब्रह्मा की आज्ञा के अधीन रहते हुये सनातन धर्म का पालन करते हैं (१२. १६६, २४)।

घृतर्चिस् = कृष्ण (विष्णु) : १२. ४३, ७।

घृतवती, एक नदी का नाम है (६. ९, २३. ३१)।

घृताची, एक अप्सरा का नाम है जिसके गर्भ से महर्षि प्रमति ने रुरु को उत्पन्न किया (१. ५, ९; ८, २)। यह छः प्रधान अप्सराओं में से एक है (१. ७४, ६८)। इसने भी अर्जुन के जन्मोत्सव पर नृत्य किया (१. १२३, ६५)। इसके दर्शन से स्खलित हुये भरद्वाज मुनि के वीर्य से द्रोणाचार्य का जन्म हुआ (१. १३०, ३५–३८; १६६, २)। उन अप्सराओं में एक यह भी थी जो कुबेर की सभा में उपस्थित रहती थी (२. १०, १०)। इन्द्र की सभा में नृत्य करनेवाली अप्सराओं में एक यह भी थी (३. ४३, २९)। इसे देख कर स्खलित हुये भरद्वाज के वीर्य से श्रुतावती नामक कन्या का जन्म हुआ (९. ४८, ६५–६७)। इसके दर्शन से स्खलित हुये व्यास के वीर्य से शुकदेव का जन्म हुआ (१२. ३२४, २. ४. ७)। इसने अष्टावक्र के स्वागत-सत्कार के लिये कुबेर की सभा में नृत्य किया था (१३. १९, ४४)। यह प्रमति की पत्नी और रुरु की माता थी (१३. ३०, ६४)। इसका उल्लेख (१३. १६५, १५)।

१. घोर, एक आयुध का नाम है (५. ९६, ४२)।

२. घोर, महर्षि अङ्गिरा के वारुण-संज्ञक पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ८५, १३१)।

३. घोर = शिव (१,००० नाम)।

घोरक, पश्चिमोत्तर भारत के एक जनपद का नाम है जहाँ के लोगों ने राजा युधिष्ठिर को भेंट दी (२. ५२, १४)।

घोरघोरतर = शिव (१,००० नाम)।

घोरतपस् = शिव (१,००० नाम)।

घोरात्मन् = कृष्ण : १२. ४७, ५६।

घोष = शिव (१,००० नाम)।

१. घोषयात्रा, घोषयात्रा पर्व में वर्णित आख्यान : १. १, १६७; २, १९५; ३. २३८, २०. २३; ४. ४५, ३६; ५. २३, २६; ४९, ४०; १३८, ९; १५८, २८; ७. १८५, १७।

२. घोषयात्रा = घोषयात्रापर्वन् : १. २, ५४।

घोषयात्रापर्वन्, महाभारत के ४३ वें अवान्तरपर्व का नाम है जो वनपर्व के २३६ से २५७ वें अध्याय तक आता है। "द्वैतवन के पूर्वोक्त सरोवर पर आकर पाण्डवों ने अपने निवास के लिए कुटी बनाई और वहीं रह कर समीपवर्ती प्रदेशों में विचरण करने लगे। उस समय पाण्डवों के पास अनेक वेदवेत्ता ब्राह्मण आते थे और पाण्डव उनकी यथोचित सेवा करते थे। तदनन्तर कथावार्ता में कुशल एक ब्राह्मण पाण्डवों के पास आया और उनसे मिलने के पश्चात् विचरण करता हुआ राजा धृतराष्ट्र के पास जा पहुँचा। उस ब्राह्मण ने पाण्डवों का समाचार देते हुये कहा : 'इस समय पाण्डव हवा और गर्मी आदि का कष्ट सहन करने के कारण अत्यन्त कृश हो गये हैं, और उनकी पत्नी, द्रौपदी, भी अनेक प्रकार के क्लेश सहन कर रही है।' ब्राह्मण की बातें सुन कर धृतराष्ट्र अत्यन्त दुखी और द्रवित हो उठे। उन्होंने कहा : 'जो मेरे समस्त पुत्रों में ज्येष्ठ, सत्यवादी, पवित्र और सदाचारी हैं, जो पहले रङ्कु मृग के चर्म से बने कोमल बिछौनों पर सोते थे, वे ही युधिष्ठिर आज भूमि पर कैसे शयन करते होंगे। जिन्हें कभी मागधों और सूतों का समुदाय प्रतिदिन स्तुति-पाठ करके जगाता था, जो साक्षात् इन्द्र के समान तेजस्वी और पराक्रमी हैं, वे अब भूमि पर सोते और पक्षियों के कलरव को सुनकर जागते होंगे।' इसी प्रकार धृतराष्ट्र अन्य पाण्डवों के लिये चिन्ता प्रकट करते हुए विचार करने लगे कि उनके प्रति कौरवों ने जो दुर्व्यवहार तथा छल किये हैं उनके कारण वे अवश्य प्रतिशोध लेंगे। उन्होंने कहा : 'अर्जुन अत्यन्त शक्तिशाली हैं। इन्द्रलोक में जाकर वे वहाँ से दिव्यास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके पुनः इस संसार में इसीलिये लौट आये हैं कि कौरवों से प्रतिशोध ले सकें।' धृतराष्ट्र की ये समस्त बातें सुनकर शकुनि ने दुर्योधन और कर्ण के पास जाकर उन्हें ये बातें बता दीं जिन्हें सुनकर दुर्योधन कुछ चिन्तित हो उठा (३. २३६)।" शकुनि और कर्ण ने दुर्योधन की प्रशंसा करते हुये उसे पाण्डवों के पास द्वैतवन चलने के लिए उकसाया (३. २३७)। "दुर्योधन ने कर्ण और शकुनि के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार करते हुए यह भय प्रकट किया कि धृतराष्ट्र कहीं उन लोगों को द्वैतवन जाने की अनुमति न दें क्योंकि वे (धृतराष्ट्र) यह समझते हैं कि अपनी तपस्याओं के कारण पाण्डव अत्यन्त शक्तिशाली हो गये हैं। फलतः दुर्योधन ने दुःशासन से कोई कुशल बहाना ढूँढ़ने के लिए कहा जिससे धृतराष्ट्र की अनुमति प्राप्त हो सके। दूसरे दिन प्रातःकाल दुर्योधन, कर्ण और शकुनि इस बात पर सहमत हुये कि धृतराष्ट्र से गौओं को देखने के लिए द्वैतवन जाने की अनुमति प्राप्त की जाय (३. २३८)।" "दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र से अनुमति लेने के लिये आये। इन लोगों ने समङ्ग नामक एक ग्वाले को पहले से ही आदेश दे रक्खा था कि वह धृतराष्ट्र से यह कहे कि उनकी गौयें समीप ही आ गई हैं। तदनन्तर कर्ण और शकुनि ने धृतराष्ट्र से निवेदन किया कि वे दुर्योधन को गौओं को देखने के लिये द्वैतवन जाने की अनुमति दें। धृतराष्ट्र ने कहा कि दुर्योधन आदि के जाने की अपेक्षा किसी विश्वासपात्र व्यक्ति को ही भेजना उचित होगा, क्योंकि वहाँ जाने पर यदि पाण्डवों से सामना हो गया तो युधिष्ठिर चाहे न भी क्रुद्ध हों परन्तु भीम और द्रौपदी अवश्य क्रुद्ध होकर आक्रमण कर देंगे। इस पर शकुनि ने धृतराष्ट्र को यह आश्वासन दिया कि दुर्योधन आदि उस स्थान पर नहीं जायेंगे जहाँ पाण्डवगण निवास कर रहे हैं। ऐसा कहने पर धृतराष्ट्र ने स्वीकृति प्रदान कर दी। इस प्रकार आज्ञा पाकर कर्ण, दुःशासन, शकुनि, अन्य भ्राताओं, तथा सहस्रों स्त्रियों आदि को लेकर दुर्योधन द्वैतवन सरोवर की ओर प्रस्थित हुआ। उस समय दुर्योधन के साथ साठ हजार रथ, तीस हजार हाथी, सहस्रों पदाती और नौ सहस्र घोड़े भी गये। नगर से दो कोस दूर जाकर दुर्योधन ने पड़ाव डाल दिया और फिर वहाँ से वाहनों के साथ द्वैतवन की ओर चला (३. २३९)।" "द्वैतवन में पहुँच कर सबने पड़ाव डाला। तदनन्तर दुर्योधन ने गौओं, बछड़ों, आदि का निरीक्षण करने के बाद उन पर चिह्न आदि बनवा दिये। इसके बाद वहाँ विहार करते हुए दुर्योधन आदि द्वैतवन सरोवर के समीप जा पहुँचे। उस समय युधिष्ठिर अपनी पत्नी, द्रौपदी, के साथ साद्यस्क राजर्षियज्ञ कर रहे थे। वहाँ दुर्योधन की आज्ञा से जब सेवकगण क्रीडामण्डपों का निर्माण करने लगे तब गन्धर्वों ने उन्हें रोका। उस समय वहाँ गन्धर्वराज चित्रसेन पहले से ही आये हुये थे। अतः अप्सराओं और अनेक सेवकों सहित चित्रसेन ने उस सरोवर को घेर रक्खा था। जब सेवक लौट आये तब दुर्योधन ने उन्हें पुनः जाकर गन्धर्वों को मार भगाने की आज्ञा दी। जब सेवकों ने जाकर गन्धर्वों को दुर्योधन की आज्ञा से अवगत कराया तो वे सब हँसने लगे। उन लोगों ने दुर्योधन के सेवकों को डरा-

धमका कर पुनः लौटा दिया (३. २४०)।" "दुर्योधन की आज्ञा से गन्धर्वों तथा कौरव-सैनिकों में युद्ध छिड़ गया। उस समय गन्धर्वराज चित्रसेन स्वयं गन्धर्वों का नेतृत्व कर रहे थे। गन्धर्वों ने कौरव-सैनिकों को पराजित कर दिया परन्तु कर्ण उनसे युद्ध करता रहा और सैकड़ों को मार गिराया। दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन और विकर्ण भी लौट कर कर्ण की सहायता करने लगे, जिससे पुनः गम्भीर युद्ध छिड़ गया। उस समय चित्रसेन ने माया प्रगट की जिससे प्रत्येक कौरव-सैनिक को ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह दस-दस गन्धर्वों से घिरा है। फलतः कर्ण को छोड़कर समस्त कौरव सेना पुनः भाग गई। तब गन्धर्वों ने कर्ण के रथ को ध्वस्त कर दिया जिससे वह विकर्ण के रथ पर बैठकर भाग गया (३. २४१)।" "कर्ण तथा समस्त सैनिकों के भाग जाने पर भी दुर्योधन वहाँ डटा रहा। गन्धर्वों ने दुर्योधन को रथहीन करके बन्दी बना लिया। दुर्योधन के रथ पर बैठे दुःशासन को भी गन्धर्वों ने पकड़ लिया। इसी प्रकार अन्य गन्धर्वों ने धृतराष्ट्रपुत्र चित्रसेन, विविंशति, विन्द, अनुविन्द तथा राजकुल की स्त्रियों को भी बन्दी बना कर अपने अधिकार में ले लिया। कौरवों के इस प्रकार बन्दी हो जाने पर उनके भागे हुये कुछ सैनिक युधिष्ठिर की शरण में गये। उनकी बात सुनकर भीमसेन ने क्रुद्ध होकर कौरवों के प्रति अनेक कटुवचन कहे, परन्तु युधिष्ठिर ने उन्हें शान्त किया (३. २४२)।" "युधिष्ठिर ने कहा कि गन्धर्वों द्वारा दुर्योधन को बन्दी बना लेने के कारण उनकी कुल-मर्यादा को ठेस लगी है, अतः उन सब को मुक्त कराना ही चाहिये। उन्होंने कहा : 'इस जगत में कौन ऐसा श्रेष्ठ पुरुष है जो शरण में आये हुये शत्रु को भी देख कर उसकी रक्षा के लिये दौड़ नहीं पड़ेगा। वरदान, राज्यप्रदान, पुत्र की प्राप्ति कराना, तथा शत्रु का संकट से उद्धार करना, इन चार वस्तुओं में से प्रारम्भ के तीन और अन्त का एक समान हैं।' यज्ञ में रत होने के कारण युधिष्ठिर ने स्वयं दुर्योधन की सहायता करने में अपनी असमर्थता प्रगट की, जिस पर अर्जुन ने यह कार्य करने का आश्वासन दिया (३. २४३)।" "युधिष्ठिर को छोड़कर शेष चार पाण्डवों ने कवच आदि धारण किया और दुर्योधन को मुक्त कराने के लिये तीव्रगामी रथों पर बैठ कर चले। जब अर्जुन के निवेदन करने पर भी गन्धर्वों ने कौरवों को मुक्त करना अस्वीकार कर दिया, तब पाण्डवों और गन्धर्वों में भीषण संग्राम छिड़ गया (३. २४४)।" "गन्धर्वों ने पाण्डवों को चारों ओर से घेर कर उनके रथों को ध्वस्त कर देने का प्रयास आरम्भ किया। उस समय वे अनेक तेजोमय बाणों की वर्षा कर रहे थे। अर्जुन ने भी क्रोध में आकर दिव्यास्त्रों के प्रयोग द्वारा दस लाख गन्धर्वों को यमलोक पहुँचा दिया। इस प्रकार पाण्डवों के अस्त्रों से पीड़ित होकर गन्धर्वगण धार्तराष्ट्रों को साथ लेकर आकाश में उड़ गये और वहाँ से गदा, शक्ति, और ऋष्टि आदि अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करने लगे। उस समय अर्जुन ने भी स्थूणाकर्ण, इन्द्रजाल, सौर, आग्नेय तथा सौम्य नामक दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। अपने सैनिकों को त्रस्त हुआ देख कर गन्धर्वराज चित्रसेन ने लोहे की गदा लेकर अर्जुन पर आक्रमण किया। जब अर्जुन ने चित्रसेन की गदा को छिन्न-भिन्न कर दिया तब वह अन्तर्धानविद्या द्वारा अपने को छिपा कर अर्जुन से युद्ध करने लगा। अर्जुन ने तब शब्दबेध का सहारा ले कर चित्रसेन की अन्तर्धानरूपी माया को भी नष्ट कर दिया। तदनन्तर चित्रसेन ने अर्जुन के समक्ष प्रगट होकर बताया कि वे उनके प्रिय सखा हैं। चित्रसेन को पहचान कर अर्जुन ने अपने समस्त दिव्यास्त्रों को समेट लिया और युद्ध समाप्त हो गया (३. २४५)।" "अर्जुन के पूछने पर चित्रसेन ने कहा : 'देवराज इन्द्र को दुर्योधन आदि के दुर्विचारों का पता लग गया था अतः उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि मैं दुर्योधन तथा उसके मन्त्रियों को बाँध कर उनके समक्ष उपस्थित करूँ। अतः अब मैं कौरवों को देवलोक में इन्द्र के पास ले जाऊँगा।' चित्रसेन की बात सुन कर अर्जुन ने दुर्योधन आदि को मुक्त कर देने का निवेदन किया। चित्रसेन के कहने पर सब लोग युधिष्ठिर के पास गये। युधिष्ठिर ने दुर्योधन आदि को मुक्त कर देने का निर्णय किया। युधिष्ठिर की बात सुनकर गन्धर्वों ने दुर्योधन आदि को मुक्त कर दिया तथा अप्सराओं आदि के साथ लौट गये। इन्द्र ने अमृत की वर्षा करके वहाँ मृत गन्धर्वों को जीवित कर दिया। तदनन्तर बन्धनमुक्त हुये दुर्योधन से युधिष्ठिर ने प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते हुये कहा कि दुःसाहस करनेवाले मनुष्य कभी सुखी नहीं होते। उस समय अपने कुकृत्यों पर अत्यन्त लज्जित हो दुर्योधन ने अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया (३. २४६)।" "जब दुःखी और लज्जित दुर्योधन अपनी सेना सहित लौटते हुये हस्तिनापुर के समीप पहुँचा तो कर्ण ने गन्धर्वों पर विजय प्राप्त करने के लिये दुर्योधन की प्रशंसा की। उसने कहा : 'महाराज दुर्योधन! इस युद्ध में तुमने जो पराक्रम दिखाया वह इस संसार में अन्य कोई नहीं दिखा सकता।' कर्ण की बात सुन कर दुर्योधन ने अश्रुगद्गद वाणी से उसे सम्बोधित किया (३. २४७)।" "दुर्योधन ने कर्ण को अपनी पराजय तथा पाण्डवों की दया से गन्धर्वों द्वारा मुक्त होने का समाचार बताया (३. २४८)।" "अपनी ग्लानि का वर्णन करते हुये दुर्योधन ने कर्ण के समक्ष आमरण अनशन करने का निर्णय व्यक्त किया। उसने कहा कि दुःशासन को राजा मान कर कर्ण आदि हस्तिनापुर जाँय। दुःशासन ने अत्यन्त दुःखी होकर दुर्योधन द्वारा प्रदत्त राज्य लेना अस्वीकार कर दिया। कर्ण ने कहा कि, पाण्डवों ने, जो दुर्योधन के राज्य और आश्रय में हैं, दुर्योधन आदि को बचा कर अपने कर्त्तव्य का ही पालन किया है, अतः इसमें ग्लानि की कोई बात नहीं। इस प्रकार कर्ण ने दुर्योधन को समझाने का प्रयास किया (३. २४९)।" "कर्ण के इस प्रकार बहुत समझाने पर भी दुर्योधन अपने आमरण अनशन करने के निश्चय पर दृढ़ रहा (३. २५०)।" "शकुनि ने दुर्योधन को समझाते हुये कहा : 'तुम अपनी अल्पबुद्धि के कारण ही प्राणत्याग करने के लिये उद्यत हो। पाण्डवों ने तुम्हारा सत्कार किया है, तब तो तुम्हें शोक हो रहा है। यदि वे तुम्हारा तिरस्कार करते तो तुम्हारी क्या दशा होती?' शकुनि के बहुत समझाने पर भी दुर्योधन अपने निश्चय पर अडिग रहा और आचमन करके पवित्र हो पृथिवी पर कुश का आसन बिछा और वल्कल धारण कर प्राणत्याग की इच्छा से बैठ गया। दुर्योधन के इस निश्चय को जानकर पातालवासी दैत्यों और दानवों ने, जो पूर्वकाल में देवताओं से पराजित हो चुके थे, उसे अपने पास बुलाने के लिये बृहस्पति तथा शुक्राचार्य द्वारा वर्णित और अथर्ववेद में प्रतिपादित मन्त्रों से अग्निविस्तारसाध्य यज्ञ का अनुष्ठान किया। तब दृढ़तापूर्वक व्रत का पालन करनेवाले वेद-वेदाङ्ग के पारंगत ब्राह्मण एकत्र हो उनके यज्ञ का सञ्चालन करने लगे। कर्म की सिद्धि होने पर यज्ञकुण्ड से एक अद्भुत कृत्या ने प्रगट होकर अपने लिये आज्ञा माँगी। दैत्यों ने उससे कहा कि वह प्रायोपवेशन करते हुये दुर्योधन को उनके पास लाये। तदनुसार कृत्या ने रात्रि के समय दुर्योधन को लाकर दैत्यों के समक्ष उपस्थित कर दिया (३. २५१)।" "दानवों ने दुर्योधन को समझाते हुये कहा : 'आत्महत्या जैसे अशुभ कर्मों में आपके समान बुद्धिमान पुरुष प्रवृत्त नहीं होते। अतः आप इससे विरत हों। हम आपको एक रहस्य की बात बताते हैं। पूर्वकाल में हम लोगों ने तपस्या द्वारा भगवान् शंकर की आराधना करके आपको प्राप्त किया था। आपके शरीर का पूर्वभाग, जो नाभि से ऊपर है, वज्रसमूह से बना हुआ है। उसी प्रकार आपकी नाभि के नीचे के शरीर को पार्वती ने पुष्पमय बनाया है। इस प्रकार महादेव और पार्वती द्वारा निर्मित होने के कारण आप दिव्य पुरुष हैं। आपकी सहायता के लिये अनेक दानव भूतल पर प्रकट हो चुके हैं। दानवों का आवेश होने पर भीष्म, द्रोण आदि की अन्तरात्मा पर भी उन दानवों का अधिकार हो जायगा जिससे युद्ध करते समय वे लोग पुत्रों, भ्राताओं, पितृजनों, बान्धवों, शिष्यों, कुटुम्बिओं, बालकों और वृद्धों किसी को भी नहीं छोड़ेंगे।...दैत्यों तथा राक्षसों के समुदाय क्षत्रिय योनि में उत्पन्न हुये हैं, जो आपके शत्रुओं के साथ युद्ध करेंगे। हम लोगों ने अर्जुन के वध का उपाय कर लिया है। श्रीकृष्ण ने जिस नरकासुर का वध किया है उसकी आत्मा कर्ण के शरीर में प्रवेश कर गई है, अतः वही नरकासुर अपने वैर का स्मरण करके अर्जुन तथा श्रीकृष्ण से युद्ध करेगा जिससे कर्ण को

अवश्य विजय प्राप्त होगी। इन्द्र इस बात को समझ कर अर्जुन को रक्षा के लिये कर्ण के अभेद्य कवच तथा कुण्डल छलपूर्वक माँग लेंगे। हम लोगों ने एक लाख दैत्यों और राक्षसों को आपकी सहायता के लिये लगा रखा है जो संशप्तक नाम से विख्यात हैं। अतः आप विषाद न करें। आपके नष्ट हो हो जाने पर तो हमारे पक्ष का ही नाश हो जायगा। देवताओं ने पाण्डवों का आश्रय ले रक्खा है, परन्तु हमारी गति तो सदा आप ही हैं।' इस प्रकार दुर्योधन को समझा कर दानवों और दैत्यों ने उसे हृदय से लगाया और विदा किया। दैत्यों के विदा करने पर कृत्या ने दुर्योधन को पुनः उसी स्थान पर पहुँचा दिया जहाँ वह आमरण उपवास के लिए बैठा था। दुर्योधन ने दैत्यों के साथ हुई बातों को सत्य माना और उन्हें किसी पर प्रगट भी नहीं किया। दूसरे दिन प्रातःकाल कर्ण ने उपस्थित होकर दुर्योधन को पुनः उत्साहित किया। तदनन्तर दैत्यों के वचनों का स्मरण करके दुर्योधन ने हस्तिनापुर लौटने का निर्णय किया। इस प्रकार कर्ण, दुःशासन, शकुनि, भूरिश्रवा, सोमदत्त, बाह्लीक आदि समस्त कौरवों के साथ दुर्योधन ने अपनी राजधानी, हस्तिनापुर, में प्रवेश किया (३. २५२)।" "भीष्म ने कर्ण की निन्दा करते हुये दुर्योधन को पाण्डवों से सन्धि करने का परामर्श दिया। कर्ण इस पर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा। कर्ण ने गर्वोक्तियाँ करने के पश्चात् दिग्विजय के लिये प्रस्थान किया (२. २५३)।" कर्ण द्वारा समस्त पृथिवी पर दिग्विजय और हस्तिनापुर में उसका सत्कार (३. २५४)। कर्ण और पुरोहित के परामर्श से दुर्योधन की वैष्णवयज्ञ के लिए तैयारी (३. २५५)। दुर्योधन के यज्ञ का आरम्भ एवं उसकी समाप्ति (३. २५६)। "दुर्योधन के यज्ञ के विषय में लोगों ने अपने-अपने मत व्यक्त किये। कर्ण ने अर्जुन का वध करने की प्रतिज्ञा की। यह सब समाचार सुनकर युधिष्ठिर उद्विग्न हो उठे और द्वैतवन छोड़कर अन्यत्र चले जाने का विचार करने लगे। इधर दुर्योधन अपने भ्राताओं के साथ रह कर भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, कर्ण तथा शकुनि आदि से मिलकर पृथिवी का शासन करने लगा। वह अपने अधीनस्थ राजाओं तथा ब्राह्मणों का भी स्वागत-सत्कार करता रहा। (३. २५७)।"

घ्राणश्रवस्, स्कन्द के एक सैनिक तथा पार्षद का नाम है (९.४५,५७)।

च

१. चक्र, नागराज वासुकि से उत्पन्न एक नाग का नाम है जो सर्पसत्र में भस्म हो गया था (१. ५७, ६)।

२. चक्र, विष्णु द्वारा स्कन्द को प्रदत्त तीन पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३७)।

३. चक्र, श्रीकृष्ण के सुप्रसिद्ध अस्त्र, सुदर्शन चक्र का नाम है जिसे अग्निदेव ने उन्हें प्रदान किया था (१. २२५, २३; १८. ४, ३)।

४. चक्र, त्वष्टा द्वारा स्कन्द को प्रदत्त दो अनुचरों में से दूसरे का नाम है (९. ४५, ४०)।

५. चक्र, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४५)।

चक्रक, विश्वामित्र के पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ४, ५४)।

१. चक्रगदाधर = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

२. चक्रगदाधर = विष्णु (१,००० नाम)।

चक्रगदाभृत् = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

चक्रचर, ऋषियों के एक वर्ग का नाम है जो प्रयाग में निवास करते थे (३. ८५, ७२; १३. १४१, १०३. १०७)।

चक्रदेव, एक वृष्णिवंशी अतिरथी वीर का नाम है (२. १४, ५७)।

चक्रद्वार, एक पर्वत का नाम है जो सुलभा के पूर्वजों के यज्ञों में देवराज इन्द्र के सहयोग से यज्ञ-वेदी में ईंट की जगह चुना गया था (१२. ३२०, ८२)।

चक्रधनुस्, महर्षि कर्दम से उत्पन्न कपिल मुनि का नाम है जो दक्षिण-दिशा में निवास करते थे। इन्होंने ही सगर-पुत्रों को भस्म किया था (५. १०९, १७)।

चक्रधर (वि०) : १४. १६, २३।

चक्रधर्मन्, विद्याधरों के अधिपति का नाम है जो अपने अनुजों के साथ कुबेर की सभा में उपस्थित होकर उनकी उपासना करते हैं (२. १०, २७)।

चक्रधारिन् = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

चक्रनेमि, स्कन्द की अनुचरी, एक मात्रिका का नाम है (९. ४६, ५)।

चक्रपाणि = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

चक्रमन्द, एक नाग का नाम है जो बलराम के परमधाम पधारने के समय उनके स्वागत के लिए उपस्थित हुआ था (१६. ४, १६)।

चक्रवाक, धृतराष्ट्री से उत्पन्न एक प्रकार के पक्षियों का नाम है (१. ६६, ५८)।

चक्रव्यूह, द्रोण-निर्मित एक सैन्य-व्यूह का नाम है जिसका भेदन करना पाण्डव-दल में अर्जुन ही जानते थे। अभिमन्यु इसमें प्रवेश करके बाहर निकलना नहीं जानता था, अतः इसमें वह मारा गया (१. ६७, ११९; ७. ३३, १९; ३४, १३; ३५, १४. १५; ८७, २२)।

चक्राति, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४५)।

चक्रायुध = विष्णु और कृष्ण।

१. चक्रिन् = विष्णु (१,००० नाम)।

२. चक्रिन् = शिव (१३. १४, १५४)।

चक्षुराज्य = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

चक्षुर्वर्धनिका, शाक-द्वीप की एक नदी का नाम है (६. ११, ३३)।

१. चक्षुस्, दिवःपुत्र आदि बारह सूर्यों में से एक का नाम है (१. १, ४५)।

२. चक्षुस् = शिव (१४. ८, १८)।

१. चणूर, एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के सभाभवन में प्रवेश करने के समय उनकी सेवा में उपस्थित थे (२. ४, २६)।

२. चणूर, एक राजा का नाम है जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था (५. १३०, ४७)।

चणूरान्ध्रनिषूदन = विष्णु (१,००० नाम)।

१. चण्ड = स्कन्द (३. २३२, ४)।

२. चण्ड = शिव (१,००० नाम)।

चण्डकौशिक, काक्षीवत् के पुत्र, एक मुनि का नाम है (२. १७, २२)। इनकी कृपा से मगध नरेश, बृहद्रथ, को पुत्र की प्राप्ति हुई जो जरासन्ध नाम से विख्यात हुआ (२. १९, १)।

चण्डतुण्डक, गरुड़ की सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, ९)।

चण्डधार = शिव (१,००० नाम)।

चण्डबल, एक वानर का नाम है जिसका कुम्भकर्ण ने भक्षण कर लिया (३. २८७, ६)।

चण्डभार्गव, एक वेदवेत्ता ब्राह्मण का नाम है, जो च्यवन मुनि के वंश में उत्पन्न हुये थे। ये जनमेजय के सर्पसत्र में होता बने (१. ५३, ५)।

चण्डा = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ५।

१. चण्डाल, एक जाति के लोगों का नाम है (१३. ३, १९; २७, ३०; २९, ४; ४०, ३०)। वैदेही के गर्भ से चण्डाल द्वारा उत्पन्न पुत्र सौपाक कहा जाता है (१३. ४८, २७)। इसे श्राद्ध से वंचित रखना चाहिये (१३. ९१, ४३)।

२. चण्डाल = मतङ्ग (१३. २७, ११. १५–१७; २८, ६)।

चण्डिकघण्ट = शिव (१,००० नाम)।

चण्डी = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ५।

चतुरश्व, एक राजर्षि का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित रह कर सूर्य पुत्र यम की उपासना करते थे (२. ८, ११)।

चतुरस्त्र = विष्णु (१,००० नाम)।

१. चतुरात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, २७)।

२. चतुरात्मन् = विष्णु (१,००० नाम)।

चतुर्गति = विष्णु (१,००० नाम)।

१. चतुर्दंष्ट्र = स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६२)।

२. चतुर्दंष्ट्र = विष्णु (१,००० नाम)।

चतुर्बाहु = विष्णु (१,००० नाम)।

चतुर्भाव = विष्णु (१,००० नाम)।

१. चतुर्भुज = विष्णु (१,००० नाम)।

२. चतुर्भुज = कृष्ण (५. ६६, १५)।

१. चतुर्मुख = ब्रह्मा (३. २०३, १५; २७२, ४४; २९१, १७; १२. २४७, २१)।

२. चतुर्मुख = शिव (१,००० नाम)।

१. चतुर्मूर्ति = ब्रह्मा (३. २०३, १५)।

२. चतुर्मूर्ति = विष्णु (१,००० नाम)।

चतुर्मूर्तिधृत् = विष्णु (१२. ३४०, १०६)।

चतुर्युग = शिव (१,००० नाम)।

चतुर्वक्त्र = ब्रह्मा (१२. ३३९, ५०; ३५०, ११)।

चतुर्वर्ण्यकर = शिव (१,००० नाम)।

१. चतुर्वेद, सात पितरों में से एक का नाम (२. ११, ४७)।

२. चतुर्वेद = ब्रह्मा (४. २०३, १५)।

३. चतुर्वेद = शिव (१,००० नाम)।

चतुर्वेदविद् = विष्णु (१,००० नाम)।

चतुर्व्यूह = विष्णु (१२. ३४८, ५७; १३. १४९, २८)।

चतुष्कर्णी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६ २५)।

चतुष्पथ = शिव (१,००० नाम)।

चतुष्पथनिकेता, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २५)।

चतुष्पथरत, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९.४६,२७)

चत्वरवासिनी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९; ४६, १२)।

चन्दन = शिव (१,००० नाम)।

चन्दनिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. चन्द्र = शिव (१,००० नाम)।

२. चन्द्र = चन्द्रमा (१. २१०, २६; ३. ११८, १२)। देखिये सोम।

३. चन्द्र, एक दैत्य का नाम है जो, चन्द्रमा के समान सुन्दर और चन्द्रवर्मा नाम से विख्यात, काम्बोज देश का राजा हुआ (१. ६७, ३१. ३८)।

चन्द्रक, विडालोपाख्यान में वर्णित एक उलूक का नाम है (१२. १३८, ३३)।

चन्द्रकुण्ड (चन्द्रह्रद), एक कुण्ड का नाम है जिसमें मेरु पर्वत से गङ्गा गिरती हैं (६. ६, २९)।

चन्द्रकेतु, कौरव पक्ष के एक योद्धा का नाम है जिसका अभिमन्यु ने वध किया था (७. ४८, १५)।

चन्द्रतीर्थ, एक प्राचीन तीर्थ का नाम है जहाँ वालखिल्य नामक वैखानस मुनि निवास करते हैं। यहाँ तीन पर्वत और तीन झरने हैं (३. १२५, १७)। देखिये चन्द्रमस्।

१. चन्द्रदेव, एक कौरव-योद्धा का नाम है जिसका अर्जुन ने वध कर दिया (८. २७, ३. ११. १३)।

२. चन्द्रदेव, पाण्डव-पक्ष के एक पाञ्चाल योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ४९, २७)।

चन्द्रप्रमर्दन, दक्षकन्या सिंहिका के पुत्र का नाम है। यह कश्यप का पुत्र था (१. ६५, ३१)।

चन्द्रभ, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७५)।

चन्द्रभागा, पञ्जाब की एक नदी का नाम है जिसे आजकल चेनाब कहते हैं। यह वरुण की सभा में उपस्थित थी (२. ९, १९)। मार्कण्डेय ने इसे भी नारायण के उदर में देखा (३. १८८, १०२)। ६. ९, १५. १९ (वेत्रवती); ८. ४४, ३२ (यह आरट्टों के देश में बहती है)। इसमें सात दिन तक स्नान करने से मनुष्य मुनि के समान निर्मल हो जाता है (१३. २५, ७)। १३. १४६, १८; १६५, १९।

१. चन्द्रमस् = चन्द्रमा (देखिये सोम)।

२. चन्द्रमस्, एक असुर का नाम है जो दनु का पुत्र था (१. ६५, २६. २७)।

चन्द्रमसस्-तीर्थम्, एक तीर्थ का नाम है (३. १२५, १७)।

चन्द्रमसी, बृहस्पति की पत्नी का नाम है (३. २१९, १)।

चन्द्रमा, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, २९)।

चन्द्रमौलि विभूषण = शिव (१०. ७, ११)।

चन्द्रवक्त्र = शिव (१,००० नाम)।

चन्द्रवत्स, एक जाति के लोगों का नाम है (५. ७४, १६)।

चन्द्रवर्मन्, एक राजा का नाम है जो चन्द्र नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ३२; ७. ३२, ६६)।

चन्द्रविनाशन, एक असुर का नाम है जो भूतल पर 'जानकि' नामक राजा हुआ (१. ६७, ३७- ३८)। देखिये **चन्द्रस्य विनाशनः**।

चन्द्रशीता, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६. ११)

१. चन्द्रसेन, एक राजा का नाम है जो समुद्रसेन का पुत्र था। यह द्रौपदी के स्वयंवर में आया (१. १८६, ११)। पूर्व में भीमसेन ने समुद्रसेन के साथ-साथ इसे भी पराजित किया था (२. ३०, २४)। यह भी पाण्डवों का एक रथी वीर था (५. १७१, १९)। यह द्रोणाचार्य के विरुद्ध युद्ध के लिये चला—इसके घोड़ों का वर्णन (७. २३, ६०)। अश्वत्थामा ने इसका वध किया। (७. १५६, ८३)। इसका उल्लेख (७. १५८, ३९)।

२. चन्द्रसेन, एक कौरव योद्धा का नाम है जिसका (?) युधिष्ठिर ने वध किया (८. २७, ८; ९. १२, ५२)।

चन्द्रस्य विनाशनः, एक असुर का नाम है जो भूतल पर 'जानकि' नामक राजा हुआ (१. ६७, ३७–३८)।

चन्द्रहन्तृ, एक असुर का नाम है जो राजर्षि शुनक के रूप में पृथिवी पर उत्पन्न हुआ (१. ६७, ३७)।

चन्द्रहर्ता, दक्षकन्या सिंहिका के पुत्र का नाम है (१. ६५, ३१)।

चन्द्रानन = स्कन्द (३. १३२, ५)।

चन्द्रार्धकृतशीर्ष = कृष्ण (११. ४७, ८१)।

चन्द्रावर्त = शिव (१,००० नाम)।

चन्द्राश्व, कुवलाश्व के पुत्र का नाम है जो धुन्धुमार की क्रोधाग्नि में दग्ध होने से बच गये थे (३. २०४, ४०)।

चन्द्रांशु = विष्णु (१,००० नाम)।

चन्द्रोदय, एक पाण्डव योद्धा का नाम है (७. १५८, ४२)।

चपल, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३८)।

चपलाक्ष = अभिमन्यु (१४. ६८, २०. २१)।

चपलेक्षण = अभिमन्यु (१४. ६९, १३)।

चमस (चमसोद्भेद), एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से अग्निष्टोम का फल मिलता है (३. ८२, ११२)।

चमसोद्भेद (= चमस), एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से अग्निष्टोम का फल मिलता है (३. ८२, ११२; १३०, ५; ९. ३५, ८७)।

चमसोद्भेदन (= चमसोद्भेद), एक तीर्थ का नाम है जो सुराष्ट्र देश में स्थित है (३. ८८, २०)।

चमू, सैन्यगणना का एक पारिभाषिक शब्द है। तीन पृतना का एक चमू होता है (१. १, २१)।

चमूस्तम्भन = शिव (१,००० नाम)।

चमूहर, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३५)।

चम्पकारण्य, एक अरण्य तीर्थ का नाम है जहाँ एक रात निवास करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है (३. ८४, १३३)।

चम्पा, अङ्गदेश की एक प्रधान नगरी का नाम है। 'अथ चम्पां समासाद्य भागीरथ्यां कृतोदकः। दण्डार्तमभिगत्वा तु गोसहस्रफलं लभेत् ॥', (३. ८४, १६३)। 'तथा चम्पां समासाद्य भागीरथ्यां कृतोदकः। दण्डाख्यमभिगम्यैव गोसहस्रफलं लभेत् ॥', (३. ८५, १४. १५)। त्रेतायुग में राजा लोमपाद इसी नगरी में निवास करते थे (३. ११३, १५)। द्वापर में यह अधिरथ सूत की राजधानी थी (३. ३०८, २६)। कर्ण इस पर शासन करता था (१२. ५, ७)। देवशर्मा यहाँ निवास करता था (१३. ४२, १६. ३३)।

चराचरस्यप्रतिहर्तृ = शिव (१,००० नाम)।

चराचरस्य स्रष्टृ = शिव (१,००० नाम)।

१. चराचरात्मन् = शिव (१,००० नाम)।

२. चराचरात्मन् = सूर्य (३. ३, २७)।

चरुचेलिन् = शिव (१,००० नाम)।

चर्मकार, एक जाति के लोगों का नाम है (१३. ४८, २६)।

चर्ममण्डल, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४७)।

चर्मवत्, शकुनि के भ्राता का नाम है जिसका इरावत् ने वध किया (६. ९०, २७)।

चर्मण्वती, एक नदी का नाम है जिसे अब चम्बल कहते हैं। इस पर द्रुपद का शासन था (१. १३८, ७४)। वरुण की सभा में उपस्थित होनेवाली नदियों के अन्तर्गत इसकी गणना (२. ९, २१)। २. २०, २८; ३१, ७ (इसके तट पर सहदेव ने जम्भक के पुत्र को पराजित किया था); ३. ८२, ५४ (इसमें स्नान का फल); १८८, १०२; २२२, २३ (अग्नि की माता नदियों के अन्तर्गत इसकी गणना); ३०८, २५; ६. ९, १९; ७. ६७, ५ (इसके नाम की व्युत्पत्ति); १२. २९, १२३; १३. ६६, ४३; १६५, २७।

चर्मवासस = शिव (८. ३३, ५९)।

चर्मिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. चल = शिव (१,००० नाम)।

२. चल = विष्णु (१,००० नाम)।

चलाचल = शिव (१,००० नाम)।

चशाति (°तयः), एक जाति के लोगों का नाम है (५. ३०, ३३)।

१. चाक्षुष, एक मनु का नाम है (१३. १८, २०)।

२. चाक्षुष (वि०)—'चाक्षुषं वै द्वितीयं मे जन्म', (१२. ३४७, ४०)। 'चाक्षुषं जन्म द्वितीयं ब्रह्मणः', (१२. ३४८, १६)।

चाक्षुषी, एक प्रकार की गान्धर्व-विद्या का नाम है जिसे चित्ररथ ने अर्जुन को प्रदान किया। मनु ने इस विद्या को सोम को प्रदान किया, सोम ने विश्वावसु को दिया, और विश्वावसु ने चित्ररथ को। इस विद्या को किसी शक्ति-हीन व्यक्ति को प्रदान करने पर इसका प्रभाव नष्ट हो जाता है। तीनो लोकों में जो भी वस्तुयें हैं उनमें से जिस वस्तु को आँखों से देखने की इच्छा हो, उसे इस विद्या के प्रभाव से देखा जा सकता है, और जिस रूप में देखना चाहे उसी रूप में वह वस्तु देखी जा सकती है (१. १७०, ४३–४५)।

१. चाण्डाल, एक जाति के लोगों का नाम है: ५. ९२, १४; १२. ७६, ६; १८०, ३८; २९६, ९; २९७, ३१; ३०२, ३२; १३. ४७, ३६; ४८, ११ (ब्राह्मणी से उत्पन्न शूद्र-पुत्र). २१ (चाण्डाल द्वारा सैरन्ध्री से उत्पन्न पुत्र श्वपाक हो जाता है). २४ (चाण्डाल द्वारा निषादी से उत्पन्न पुत्र पाण्डुसौपाक हो जाता है). २६. २८; ४९, ९ (ब्राह्मणी से उत्पन्न शूद्र-पुत्र); १४. ३६, ३०; ५५, ३४।

२. चाण्डाल, अलग-अलग चाण्डालों के लिए प्रयुक्त हुआ है। = परिघ: १२. १३८, २३. ९७. ११७. १२३. १२४. १९९ (उस चाण्डाल के लिए प्रयुक्त हुआ जिसका विश्वामित्र से संवाद हुआ)। १२. १४१, १२. ३५. ३७. ४३. ४४. ४५. ४८. ५५. ५८। एक क्षत्र-बन्धु से चाण्डाल का संवाद (१३. १०१, २ और बाद)।

चाण्डालिकाश्रम, एक तीर्थ का नाम है जहाँ कोकामुख में स्नान करके चीर-वस्त्र धारण किये हुये कुछ काल तक निवास करने वाले व्यक्ति को दस बार कन्या-कुमारी तीर्थ के सेवन का फल प्राप्त होता है (१३. २५, ५२)।

चातुराश्रम्यनेतृ = शिव (१,००० नाम)।

चातुर्महाराजिक = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

चातुर्मास्य, एक व्रत का नाम है। पाण्डवों ने गया में इस व्रत को ग्रहण करके वेदादि के स्वाध्याय द्वारा भगवान् की आराधना की थी (३. ९५, १३)।

चातुर्वर्ण्य, के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आते हैं (६. २८, १३; १२. २०७, ३३)।

चातुर्विद्य, चारो वेदों के लिए प्रयुक्त हुआ है (१२. ४६, २२; ५०, ३२)।

चातुर्होत्रप्रवर्तक = शिव (१,००० नाम)।

चान्द्रमसी, बृहस्पति की पत्नी तारा का नाम है जिसने छः अग्नि-स्वरूप पुत्रों और एक स्वाहा नामक पुत्री को जन्म दिया (३. २१९, १)।

चान्द्रव्रत, एक व्रत का नाम है जिसे मार्गशीर्ष मास की शुक्ल प्रतिपदा को मूल नक्षत्र से चन्द्रमा का योग होने पर आरम्भ किया जाता है (१३. ११०)।

चापिन् = शिव (१,००० नाम)।

चाम्पेय, विश्वामित्र के पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ४, ५८)।

चारण (बहु० °णाः), व्यक्तियों के एक वर्ग का नाम है: १. ६३, ६६; ७०, १५; ९७, २६; १०९, १०; १२०, १; १२६, ११; १८७, ७; २१०, ४; ३. ३, ४०; २४, २२; ३८, १५; ४३, १; ४६, १४; ४७, १३; ८३, ५; ८४, ५; ८५, २६; ८९, ४; १५६, १५; १५८, ३८; १६०, १३; २९०, ३१; ५. १२३, ५; १८६, २४; ६. ६, ५; ७, १५. २०; ११, ७. २९; १२, २३; २३, १६; ४३, ९; ४५, ८५; ५२, ६३; १२०, १५; ७. ३७, ३७; ८०, २४; ८७, ३२; ९८, ३४. ४५; १००, ३; १०७, १३; ११९, ५५; १२४, १०; १३७, १४; १३८, २६; १३९, ७७; १४३, ५६; १४५, ७८; १६०, ४५; ८. १५, ३४; १६, १७; ५६, १२६; ७८, ३२; ८७, २८. ४१. ६१. ८०; ९४, ६७; ९. ७, १७; २२, २८; ५५, १४; ५८, ६२; १२. ३०२, ३१; ३२७, ३; ३४०, २२; १३. १०, ७; १४, १५०; १८, ७६; १९, १६. २७; २५, ६२; १३०, ११; १४०, २; १५. २४, २०; १६. ४, २७।

चारित्र = कृष्ण (१२. ४३, १४)।

चारुचित्र, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ४)। ६. ७७, ८; ७. १३६, २० (धृतराष्ट्र के उन छः पुत्रों में एक यह भी था जिसका भीमसेन ने वध किया था)। तुल॰ **चारुचित्राङ्गद**।

चारुचित्राङ्गद, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९५)। तुल॰ **चारुचित्र**।

चारुदेष्ण, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय उपस्थित हुये (१. १८६, १७)। १. २१९, १०; २२१, ३२; २. २, ३५; १४, ५७ (सात वृष्णि रथियों में से एक यह भी थे); ३४, १६ (युधिष्ठिर के राजसूय के समय ये भी उपस्थित हुये); ३. १६, ९ (इन्होंने शाल्व से युद्ध किया). २२. २३ (इन्होंने विविन्ध्य से युद्ध किया); १८, २०; २१, १८; १२०, १९; ५. १५७, १८; ७. ११, २७; १३. १४, २९. ३३ (श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के पुत्रों के अन्तर्गत इनका उल्लेख); १४. ६६, ३; १६. ३, ४४ (इनका वध)।

चारुनेत्र, कुबेर की सभा में उपस्थित होकर उनकी सेवा करनेवाली एक अप्सरा का नाम है (२. १०, १०)।

चारुमत्स्य, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम है (१३. ४, ५९)।

चारुयशस्, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है (१३. १४, ३३)।

चारुलिङ्ग = शिव (१,००० नाम)।

चारुवक्त्र, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७३)।

चारुवेष, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है (१३. १४, ३३)।

चारुशीर्ष, एक आलम्बगोत्रीय मुनि का नाम है जिन्होंने शिव-महिमा के विषय में युधिष्ठिर को अपने अनुभव सुनाये (१३. १८, ५)।

चारुश्रवस्, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है (१३. १४, ३३)।

चार्वाक, दुर्योधन के मित्र, एक राक्षस का नाम है (१. २, ७४)। यह दुर्योधन की मृत्यु का प्रतिशोध लेगा (९. ६४, ३८)। १२. ३८, २२. २६. ३३; ३९, २. १०।

चापवक्त्र, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७६)।

चिकुर, नागराज आर्यक के पुत्र एवं सुमुख के पिता का नाम है जिसे गरुड़ ने अपना ग्रास बनाया (५. १०३, २४)।

चितिभस्मप्रिय = शिव (१,००० नाम)।

१. चित्र, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९५. ९७; ११७,४)। धृतराष्ट्र के उन सात पुत्रों में एक यह भी था जिसका भीमसेन ने वध किया (७. १३६, २०; १३७, ३०)।

२. चित्र, वरुण की सभा में उपस्थित होनेवाले एक नाग का नाम है (२. ९, ८; ३. २२५, २३)।

३. चित्र, एक पाण्डव-योद्धा का नाम है जिसने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया—इसके अश्वों आदि का वर्णन (७. २३, ६४. ६६)।

४. चित्र, अभिसार राजा चित्रसेन के भ्राता का नाम है जो कौरवों के मकर-व्यूह में स्थित हुआ और प्रतिविन्ध्य द्वारा मारा गया (८. ११, २१; १३, ७; १४, २०. २१. २६. २८. २९. ३१. ३४)।

५. चित्र, एक पांचाल-योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ५६, ४४. ४९)।

१. चित्रक, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसका भीमसेन ने वध किया (१. ६७, १०५)।

२. चित्रक, एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उनके सेवक के रूप में उपस्थित रहते थे (२. ५०, २०)।

चित्रकुण्डल, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ६. १३)।

चित्रकूट, एक पर्वत का नाम है जहाँ मन्दाकिनीतीर्थ स्थित है (३. ८५, ५८)। वनवास के समय श्री राम ने यहाँ निवास किया था (३. २७७, ३८)। ३. २८२, ७०। जो चित्रकूट, जनस्थान तथा मन्दाकिनी के जल में स्नान करके उपवास व्रत करता है वह व्यक्ति राज-लक्ष्मी से सेवित होता है (१३. २५, २९)। १३. १६५, ३२।

१. चित्रकेतु, गरुड के पुत्र, एक सुपर्ण का नाम है (५. १०१, १२)।

२. चित्रकेतु, एक पाण्डव-योद्धा का नाम है जो पांचलराज वीरकेतु के भ्राता थे और जिनका द्रोणाचार्य ने वध किया (६. ९५, ४१; ७. १२२, ४३)।

चित्रकेतुसुत = सुकेतु (८. ५४, २१)।

चित्रगुप्त, धर्मराज के मन्त्री का नाम है (१३. १२५, ६)। इनके द्वारा धर्म के रहस्य का वर्णन (१३. १३०, १४. १८. २०. ३४. ३५)।

चित्रचाप, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९८)।

चित्रदेव, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७१)।

चित्रधर्मन्, विरूपाक्ष नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न एक नरेश का नाम है (१. ६७, २३)। पाण्डवों की ओर से इन्हें रण-निमन्त्रण भेजा गया था (५. ४, १३)।

चित्रपुष्प, विचित्रपुष्पों से भरे हुये एक वन का नाम है जो द्वारका के पश्चिमवर्ती सुकक्ष नामक रजत पर्वत पर सुशोभित था (गोप्रे० सं० २. ३८ के बाद, पृ० ८१२)।

चित्रबर्ह, गरुड़ के पुत्र, एक सुपर्ण का नाम है (५. १०१, १२)।

चित्रबर्हिन्, गरुड़ के पुत्र का नाम है जिसको उन्होंने स्कन्द को प्रदान किया (९. ४६, ५१)।

चित्रबाहु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९७)।

१. चित्रभानु = अग्नि (देखिये वस्था०)।

२. चित्रभानु = शिव (१,००० नाम)।

१. चित्ररथ, मुनि-पुत्र एक गन्धर्वराज का नाम है (१. ६५, ४३)। अर्जुन के जन्मोत्सव के समय उपस्थित देव-गन्धर्वों में एक यह भी थे (१. १२३, ५६)। ये अंगारपर्ण के नाम से भी विख्यात हैं (१. १७०, १३. ४०)। ये भी कुबेर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. १०, २६)। इन्होंने युधिष्ठिर को चार सौ अश्व प्रदान किये (२. ५२, २३)। इन्होंने अर्जुन को भी अश्व प्रदान किये (२. ६१, २२; ५. ५६, १३)। श्रीकृष्ण ने अपने को गन्धर्वों में चित्ररथ कहा (६. ३४, २६)। जब गन्धर्वों ने पृथिवी का दोहन किता तो ये बछड़ा बने (७. ६९, २५)। देखिये **अंगारपर्ण, दग्धरथ, गन्धर्वराज**।

२. चित्ररथ, मर्तिकावत देश के राजा का नाम है जिसकी अपनी पत्नी के साथ की हुई जल-क्रीड़ा को जमदग्नि-पत्नी रेणुका ने देखा था (३. ११६, ६)।

३. चित्ररथ, एक अंग देश के राजा का नाम है जो प्रभावती के पति थे (१३. ४२, ८)। तुकी० **अंगपति, अंगेश्वर, अंगेन्द्र**।

४. चित्ररथ, पांचालराज वीरकेतु के भ्राता का नाम है जिसका द्रोणाचार्य ने वध किया (७. १२२, ४३)।

५. चित्ररथ, श्रीकृष्ण के प्रपितामह का नाम है जो शूर के पिता और उषङ्गु के पुत्र थे (१३. १४७, २९)।

चित्ररथा, एक नदी का नाम है (६. ९, ३४)।

चित्रलेखा, इन्द्रलोक की एक अप्सरा का नाम है (३. ४३, ३०)।

१. चित्रवर्मन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९७; ११७, ६)। भीमसेन ने इसका वध किया (७. १३६, २१)।

२. चित्रवर्मन्, एक पाञ्चाल राजकुमार का नाम है (५. ४, १३)।

३. चित्रवर्मन्, वीरकेतु के भ्राता का नाम है जिसका द्रोणाचार्य ने वध किया (७. १२२, ४३)।

४. चित्रवर्मन्, सुचित्र के पुत्र का नाम है जिसका द्रोणाचार्य ने वध किया (८. ६, २७)

चित्रवाण, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका नाम का है (१. ११७, ६)।

चित्रवाहन, मणिपुर नरेश, चित्राङ्गद, के पिता का नाम है (१. २१५, १५)।

चित्रवाहा, भारत की एक नदी का नाम है (६. ९, १७)।

चित्रवेणिक, धृतराष्ट्र के कुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है (१. ५७, १८)।

१. चित्रशिखण्डिन् = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

२. चित्रशिखण्डिन्, सप्तर्षियों (मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ) की संज्ञा है (१. ३३५, २७. २९; ३३६, ३. २०)।

चित्रशिला, एक नदी का नाम है (६. ९, ३०)।

१. चित्रसेन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६३, ११९)। १. ९५, ५७; १८६, ३ (यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ); २०७, १३ (इसने पाण्डवों का स्वागत किया); २. ५८, १३; ३. २४२, ६ (गन्धर्वों ने इसे भी बन्दी बनाया); ४. ३५, ३; ५४, ७ (इसने अर्जुन पर आक्रमण किया); ५. ३०, २८ (दुर्जयो देवितव्येन); ४७, ८; ५५, ६४; ६६, ६; ६. १७, २१ (इसने अश्वत्थामा का अनुसरण किया); १८, ११ (इसने भीष्म की रक्षा की); ४४, १६ (भीमसेन पर आक्रमण किया);

४८, ६४ (श्वेत पर आक्रमण किया); ५१, ९; ५९, १३६ (अर्जुन ने इसे पराजित किया); ६०, २; ६१, १ (अभिमन्यु से युद्ध किया); ६२, १६. २६; ७१, २१ (शिखण्डी से युद्ध किया); ७३, २४. २६. २७ (अभिमन्यु से युद्ध किया); ७७, ७; ७८, ११. २२; ८१, ४. १७. २८; ८४, ४०; ८५, १८. ३७; ८६, १; ८७, ३; ९२, २४. ३४ (घटोत्कच ने इस पर आक्रमण किया); ९४, १४; १०४, १९ (अभिमन्यु से युद्ध किया); १०८, ५७; ११०, ८ (चेकितान से युद्ध किया); १११, ५३. ५५; ११३, २. ५. ११. १८. २२ (भीमसेन से युद्ध किया); ११४, ३. ५. ७; ११६, ४. ७. २५; ११८, ५; ७. ७, १३; ७४, १५; ८५, ११; ९५, ३५; ९६, ३१ (भीमसेन से युद्ध किया); ११६, ४. ७. २५; १२०, १०. ३३. ३७ (सात्यकि से युद्ध कया); १२७, ३३; १३७, १३०. १५१ (इसका भीमसेन ने वध किया); १५२, १४; १५८, ६५; १६५, १५; १६८, १. २. ३. ८. ९. १०; ८. ७, १७; ११. १, २७ (यह भी दुर्योधन का एक परामर्शदाता था); १९, १० (मृत धार्तराष्ट्रों के अन्तर्गत इसका उल्लेख)।

२. चित्रसेन, पुरुवंशी राजा अविक्षित् के पौत्र और परीक्षित् के तृतीय पुत्र का नाम है (१. ९४, ५४)।

३. चित्रसेन, एक गन्धर्व का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में आये (२. ४, ३७)। इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, २२)। कुबेर की सभा में उपस्थित गन्धर्वों में एक यह भी हैं (२. १०, २६)। अर्जुन ने इनसे नृत्य और संगीत की शिक्षा ली और इनके मित्र बन गये (३. ४४, ६. ८)। ३. ४५, १. १४; ४६, २२. ३१. ५२–५४. ६१ (इन्होंने उर्वशी को अर्जुन के पास भेजा); १६८, ५७ (ये अर्जुन के मित्र बन गये); २४१, ८. ९. १५. १७. २२. २३; २४२, ६; २४५, २०. २८. ३०; २४६, १. ३. ९. १०. १७ (इनके नेतृत्व में गन्धर्वों ने दुर्योधन आदि कौरवों को बन्दी बना लिया पर पाण्डवों के अनुरोध पर सब को मुक्त कर दिया); २४८, १५; ४. ४९, ९ (अर्जुन ने इन्हें पराजित किया था); ६४, ३७ (इन्होंने अर्जुन की प्रशंसा की); ७. १८५, १७ (इन्हें अर्जुन ने विजित किया था); ८. ४१, ७७; १२. १६, २०; २००, १२; १३. १६५, १४; १४. १२, १०; ८८, ३९ (युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के समय उपस्थित गन्धर्वों में एक यह भी थे); १५. २९, ९। तुकी० **गन्धर्व, गन्धर्वराज्, गन्धर्वराज,** और **गन्धर्वराजन्।**

४. चित्रसेन, जरासन्ध के मन्त्री, डिम्भक, का एक नाम है (२. २२, ३२)।

५. चित्रसेन, एक राजा का नाम है जिसका समुद्रसेन ने वध किया (८. ६, १५)।

६. चित्रसेन, अभिसार देश के राजा और कौरवपक्ष के एक योद्धा का नाम है जो चित्र का भ्राता था (८. ११, २१)। इसने श्रुतकर्मा से युद्ध किया (८. १३, ७)। युद्ध में श्रुतकर्मा ने इसका वध किया (८. १४, १. ३. ६. ७. १५. १६)।

७. चित्रसेन, एक पाञ्चाल योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ४८, १५)।

८. चित्रसेन, कर्ण के भाई का नाम है जिसका युधामन्यु ने वध किया (८. ७५, ८; ८३, ३७. ४०)।

९. चित्रसेन, एक नाग का नाम है (८. ८७, ४३)।

१०. चित्रसेन, कर्ण के पुत्र का नाम है जिसका नकुल ने वध किया (९. १०, ९. १२. १८. २०. २१)।

११. चित्रसेन, विभिन्न कौरव-योद्धाओं का नाम है : ८. ७, २०; २७, ३ (= श्रुतसेन ?); ६१, १२ (युधिष्ठिर ने इस पर आक्रमण किया); ९. ६, २।

१. चित्रसेना, कुबेर की सभा में उपस्थित रहनेवाली एक अप्सरा का नाम है (२. १०, १०)। इसने इन्द्र की सभा में नृत्य किया (३. ४३, ३०)।

२. चित्रसेना, एक भारतीय नदी का नाम है (६. ९, १७)।

३. चित्रसेना, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १४)।

१. चित्रा, एक अप्सरा का नाम है जिसने अष्टावक्र के सम्मानार्थ कुबेर की सभा में नृत्य किया (१३. १९, ४४)।

२. चित्रा, एक नक्षत्र का नाम है (५. १४३, १०; ६. ३, १२)। इस नक्षत्र में वृषभ और सुगन्धियों का दान करनेवाला व्यक्ति अप्सराओं का लोक प्राप्त करता है (१३. ६४, १७)। इस नक्षत्र में श्राद्ध करने से व्यक्ति सुन्दर सन्तान प्राप्त करता है (१३. ८९, ७)। चान्द्रव्रत के लिये इसका उल्लेख (१३. ११०, ८)।

चित्राक्ष, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९५; ११७, ४)। भीमसेन ने इसका वध किया (७. १३६, २०)।

चित्राङ्ग, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ६)।

१. चित्राङ्गद, शान्तनु द्वारा सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है (१. २, ९९)। इनके भ्राता का नाम विचित्रवीर्य था (१. ९५, ५०)। शान्तनु के स्वर्गवास के पश्चात् ये राजा बने (१. १०१, २. ५. ६. १०)। १. १०२, १; ५. १७२, १८; १७३, ५; १५. १०, १९।

२. चित्राङ्गद, एक राजा का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित था (१. १८६, २२)।

३. चित्राङ्गद, एक कौरव-योद्धा का नाम है जिसको अवशिष्ट कौरवों के अन्तर्गत गणना कराई गई (८. ७, २०)।

४. चित्राङ्गद, एक कलिङ्ग राजा का नाम है (१२. ४, २)।

५. चित्राङ्गद, एक दशार्ण राजा का नाम है। यज्ञ के घोड़े की रक्षा करते हुये अर्जुन ने इसे पराजित किया था (१४. ८३, ६)।

१. चित्राङ्गदा, चित्रवाहन की पुत्री तथा बभ्रुवाहन की माता का नाम है (१. २, ३४१)। "यह चित्रवाहन की एकमात्र सन्तान थीं अतः इनके पिता ने इन्हें पुत्रिका बना लिया था। इनका अर्जुन से विवाह हुआ (१. २१५, १५)।" अर्जुन द्वारा इनके गर्भ से उत्पन्न पुत्र, बभ्रुवाहन, को मणिपुर का राजा बनाया गया (१. २१७, २३)। १४. ७९, ३८; ८०, ८; ८१, ४. २३; ८८, २ (अर्जुन और बभ्रुवाहन के युद्ध में दोनों ही मूर्च्छित होकर गिर पड़े। बभ्रुवाहन की मूर्च्छा दूर होने पर चित्राङ्गदा ने उलूपी को अर्जुन की चेतना दूर करने के लिये कहा); १५. १, २३ (इन्होंने गान्धारी की सेवा की); १५, १० (धृतराष्ट्र और गान्धारी के साथ यह भी वन गई); २५, ११; १७. १, २८ (ये मणिपुर के लिये प्रस्थित हुईं)। तुकी० **चैत्रवाहनी।**

२. चित्राङ्गदा, एक अप्सरा का नाम है (१३. १९, ४४)।

चित्राङ्गदात्मज = बभ्रुवाहन (१४. ७९, २५)।

चित्राङ्गदासुत = बभ्रुवाहन (१४. ७९, ३६; ८१, २९)।

चित्राङ्गदोपाख्यान—"शान्तनु से सत्यवती के दो पुत्र, चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य, उत्पन्न हुये। विचित्रवीर्य के वयस्क होने के पूर्व ही शान्तनु स्वर्ग चले गये, अतः भीष्म ने चित्राङ्गद को राजगद्दी पर बैठाया। चित्राङ्गद किसी को भी, यहाँ तक कि देवताओं तथा असुरों को भी, अपने समान नहीं समझते थे। फलस्वरूप गन्धर्वों के इसी नाम के राजा ने इनसे सरस्वती के तट पर तीन साल तक युद्ध करते हुये इनका वध कर दिया। तदनन्तर गन्धर्व भी स्वर्ग चला गया। ऐसी परिस्थिति में विचित्रवीर्य के वयस्क न होते हुये भी भीष्म ने उन्हें राजा बनाया और स्वयं उनकी ओर से शासन करने लगे (१. १०१)।" आगे की कथा के लिये देखिये **विचित्रवीर्योपाख्यान।**

१. चित्रायुध, एक अथवा एकाधिक ऐसे राजाओं का नाम है जो पाण्डवों के पक्ष में सम्मिलित हुये। अर्जुन के साथ एक रथी के रूप में उपस्थित (५. १७१, १७)। ये द्रोण के विरुद्ध युद्ध के लिये चले—इनके अश्वों का वर्णन (७. २३, ५६. ६४)। विकर्ण ने इनका वध किया (८. ६, १७)। कर्ण ने इनका वध किया (८. ५६, ४९)।

२. चित्रायुध, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ८)।

दुर्योधन की सेना में इसकी उपस्थिति (५. १६०, १२३)। धृतराष्ट्र के उन सात पुत्रों में एक यह भी था जिसका भीमसेन ने वध किया (७. १३६, २१; १३७, ३०)।

३. चित्रायुध, एक राजकुमार का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. १८६, १०)।

४. चित्रायुध, एक कौरव योद्धा का नाम है (८. ७, १८)।

चित्राश्व = सत्यवान् (३. २९४, १३; १३. १६५, ४९)।

चित्रोपला, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, ३४)।

चिन्त्यद्योता, देवों के एक गण का नाम है (१३. १८, ७६)।

चिबुक, वसिष्ठ की गाय द्वारा उत्पादित एक म्लेच्छ जाति का नाम है (१. १७५, ३८)।

चिरकारि, चिरकारिक, चिरकारिन्, गोतम ऋषि के पुत्र का नाम है (१२. २६६, २–५. ९. ४४. ५३–६०)।

चिरान्तक, गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, १३)।

१. चीन, वसिष्ठ की गाय के मुख से उत्पन्न एक जाति का नाम है (१. १७५, ३८)। 'स किरातैश्च चीनैश्च वृतः प्राग्ज्योतिषोभवत्', (२. २६ ९)। ये युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५१, २३. २६)। ये युधिष्ठिर के राजसूय में उपस्थित थे (३. ५१, २५)। हिमालय से राजा सुबाहु के देश में जाते समय पाण्डवगण इनके देश से होकर गुजरे (३. १७७, १२)। इन लोगों ने भगदत्त का अनुसरण किया (५. १९, १५)। 'चीनानां धौतमूलकः', (५. ७४, १४)। 'अजिनानां सहस्राणि चीनदेशोद्भवानि च', (५. ८६, १०)। यह उत्तर में निवास करनेवाली एक म्लेच्छ जाति थी (६. ९, ६५)। 'चीनाः शबरवर्वराः', (१२. ६५, १३)। 'देशरन्विविधान्यश्चैश्चीनहूणनिषेवितान्', (१२. ३२५, १५)।

चीरक, एक देश या जनपद का नाम है जिसे जीत कर के कर्ण ने दुर्योधन का करद बनाया (८. ८, १९)।

१. चीरवासस्, एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो क्रोधवश नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ६१)।

२. चीरवासस्, कुबेर की सभा में उपस्थित रहने वाले एक यक्ष का नाम है (२. १०, १८)।

३. चीरवासस् = शिव (७. २०२, ११; १३. १७, ४७; १४. ८, १७)।

चीरिणी, एक नदी का नाम है जिसके तट पर वैवस्वत मनु ने भींगे चीर और जटा धारण करके तपस्या की थी (३. १८७, ६)।

चुलुका, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, २०)।

चूचुक, दक्षिण भारत की एक म्लेच्छ जाति का नाम है (१२. २०७, ४२)।

चूचुप, दक्षिण भारत के एक जनपद का नाम है (५. १४०, २६; ६. ७५, २१)।

१. चेकितान, एक वृष्णिवंशीय यादव का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये (१. १८६, ११)। युधिष्ठिर के सभाभवन में प्रवेश करने के समय ये भी उपस्थित थे (२. ४, २७)। इन्होंने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित होकर उनके लिये एक तरकस भेंट किया (२. ५३, ९)। ५. २५, २. १०; ३०, २; ५७, २. २१; ८३, ३१; १४१, २६; १५१, ५. ६७; १६४, ८; १९६, २३; ६. १९, २१; २५, ५; ४५, ६०–६२; ५७, ३३; ७१, २२; ७२, ८; ७५, १० (युधिष्ठिर के मकरव्यूह में दाहिने पार्श्व में स्थित हुये); ८१, ३२ (कृपाचार्य से युद्ध किया); ८४, २०. २१. २६. २८. ३३; ८९, १९; ९९, १२; १०८, ६; १०९, २०; ११०, ८ (चित्रसेन ने इन पर आक्रमण किया); १११, ५३. ५४. ५५ (चित्रसेन से युद्ध किया); ११८, ४०. ४५; ७. ८, ५; १०, ५४; १४, ४८; २१, ५१. ६२; २३, ४५ (द्रोणाचार्य से युद्ध के लिये चले—इनके अश्वों का वर्णन); २६, ५४; ३५, २; ४०, १९; ८३, ५; ८५, ४१; ९५, ४१ (संजय से युद्ध किया); १२५, ६८. ७१ (द्रोण पर आक्रमण किया परन्तु द्रोणाचार्य ने इनके सारथि का वध कर दिया); ८. १२, १४; २२, ९; ३०, २८; ४९, ३३; ९३, ३९; ९. ३, ४०; १२, ३१. ३२ (दुर्योधन ने इनका वध किया); १५. ३२, १२ (उन मृत योद्धाओं में एक यह भी थे जो गङ्गा में प्रगट हुये)। तुर्की० **सात्वत, वार्ष्णेय**।

२. चेकितान = शिव (७. २०१, ६३; १३. १७, १०२)।

चेदि (बहु० °दयः) एक प्राचीन देश तथा वहाँ के निवासियों का नाम है। इसे वसु उपरिचर ने जीता था (१. ६३, २. ९. १२)। अर्जुन इसे अपने अधीन करेंगे (१. १२३, ४०)। 'चेदीनाम् अधिपः', (१. १८७, २४)। 'पुरुषोत्तमविज्ञातो योसौ चेदिषु दुर्मतिः', (२. १४, १८)। 'चेदिराजकुले जातः', (२. ४३, १)। शिशुपाल के वध के पश्चात् उसका पुत्र, धृष्टकेतु, यहाँ का राजा हुआ (२. ४५, ३६)। यह राजा सुबाहु की राजधानी थी (३. ६५, ४५. ४७; ६८, ७)। 'पाञ्चालाश्चेदिमत्स्याश्च शूरसेनाः पटच्चराः', (४. १, १२)। चेदिराज धृष्टकेतु एक अक्षौहिणी सेना लेकर युधिष्ठिर के पास आया (५. १९, ७)। ये पाण्डव पक्ष में सम्मिलित हुये (५. २२, २५)। 'चेदयश्चान्धकाश्च', (५. २८, ११)। युधिष्ठिर के पक्षवर्तियों के अन्तर्गत इनका उल्लेख (५. ५७, ३३)। ५. ७२, १४; ७४, १६ (चेदिमत्स्यानां); १४०, १८; १४४, ३. १२; १९६, २ (चेदिकाशिकरूपाणां नेतारं दृढविक्रमम्). २३ (धृष्टकेतुश्च चेदीनां प्रणेता); ६. ९, ४० (चेदिमत्स्यकरूपाश्च); ४७, ४. ६७; ५२, ९; ५४, ५. ८. १५. १६; ५६, १४; ५९, १२९; १०६, १८; ११५, २६; ११६, ७५; ११८, ५२; ७. ९, २८ (इन्होंने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया); १०, ४३ (एकोपसृत्य चेदिभ्यः पाण्डवान्यः समाश्रितः। धृष्टकेतुं समायान्तं द्रोणं कर्स्तं न्यवारयत्); २१, २३. २९; २२, ७; २३, २२; २४, ७; ३२, ४१; ७८, १३; १०६, ९; १०८, ३५; ११४, १००; १२५, २६. ५३. ५४. ५६. ५७. ७२; १५३, २४; १५६, ५१; १६०, १३; १८६, ३३. ३४. ४४; १९३, २३; २००, ७३. ८६; ८. ६, ३०; १२, १९; ३०, २७; ४५, १५ (ये सनातनधर्म के ज्ञाता थे); ४७, १५. २०; ४८, २१. ६३; ४९, ६१; ५६, १. २. ५०. ६०. ६७; ६०, २६; ६४, ५४; ७३, ६. २९. ३५; ७८, १०. २६. २७. २८; ९. १, ३१; २, २३; ७, १५; १२, ५४; १४. ८३, २; ९१, २३; १५. ३६, ३४।

चेदिक = चेदि (८. ४८, १२)।

चेदिध्वज : ५. ६२, १६।

चेदिप, चेदियों के एक राजा का नाम है (१. ६३, ९; ३. १२, २; ५. ८०, १४; ८३, ३१; ६. ९५, २४. ४१; ७. ३५, ३; ८३, ५; २००, ८६)।

चेदिपति, चेदियों के राजाओं के लिये प्रयुक्त हुआ है = वसु (१. ६३, २४. २९)। = शिशुपाल (२. ३८, ५; ४०, १३. १५; ४२, २०; ४१, १; ४५, २६)। = धृष्टकेतु (२. ५३, ६)। = सुबाहु (३. ६८, ४५)। = धृष्टकेतु (३. १२०, २६)। = शिशुपाल (५. २२, २८)। = धृष्टकेतु (५. ५०, ४७; १७१, ९; ११. २५, २२)। = वसु (१३. ११५, ५७)।

१. चेदिपुङ्गव = शिशुपाल (२. ३९, १३; ४०, ९)।

२. चेदिपुङ्गव = धृष्टकेतु (११. २५, २०)।

चेदिराज्—२. ३८, ३१ (शिशुपाल); ४४, ४ (शिशुपाल); ४५, १ (शिशुपाल); ३. २२, ५० (धृष्टकेतु); ५. ५७, ८ (धृष्टकेतु); ६. ४५, ७८ (धृष्टकेतु)।

चेदिराज (चेदियों के राजा)—शिशुपाल (२. २९, १२. १४; ३६, ३२; ३८, १४; ४०, १२; ४२, १८; ४४, ३; ४५, १६. २५)। सुबाहु (३. ६४, १३२; ६५, ४५)। धृष्टकेतु (५. १७१, ८; ६. ४५, ४०; ११६, २३)। शिशुपाल (७. ११, १३)। धृष्टकेतु (७. २५, ४९; १०७, १५; १२५, ४०)। शिशुपाल (७. १८०, ३२; १८१, २. ५. २१)। धृष्टकेतु (११. २५, २३. २४)।

चेदिवृष = शिशुपाल (२. २९, १३)।

१. चैत्य, गिरिव्रज के निकट स्थित एक पर्वत का नाम है (२ २१, १८)।

२. चैत्य = देव-वृक्ष (१. १५१, ३३)।

चत्यक (= १. चैत्य)—'शुभाश्चैत्यकपद्मामाः', (२. २१, २)। 'मागधानां तु रुचिरं चैत्यकान्तरमाद्रवन्', (२. २१, १५)। 'मागधानां सुरुचिरं चैत्यकं तं समाद्रवन्', (२. २१, १९)। 'चैत्यकस्य गिरेः शृङ्गम्', (२. २१, ४५)।

चैत्र, एक मास का नाम है (३. ८२, १२७; १३०, १५)। जो इस सम्पूर्ण मास-पर्यन्त प्रतिदिन केवल एक समय ही भोजन करके व्रत रखता है, वह संपन्न परिवार में जन्म प्राप्त करता है (१३. १०६, २३)। जो चैत्र शुक्ल द्वादशी को पूरे दिन और रात व्रतपूर्वक विष्णु के रूप में श्रीकृष्ण की उपासना करता है वह पौण्डरीक-यज्ञ का फल और देव-लोक प्राप्त करता है (१३. १०९, ७)।

१. चैत्ररथ, चित्ररथ के वन का नाम है। १. ६३, ४५ (वलं चैत्ररथोपमम्); ७०, ३० (चैत्ररथप्रख्यं); ७५, ४८ (चैत्ररथे वने); ७८, ४ (वने चैत्ररथोपमे); ११९, ४८ (यह उत्तर में स्थित है जहाँ पाण्डु आये थे); ३. १२, २३ (यहाँ श्रीकृष्ण ने यज्ञ किया था); ८०, ६ (वनं चैत्ररथं तथा); १७७, १७ (चैत्ररथप्रकाशं). २० (चैत्ररथप्रकाशात); २२६, ४ (वने ये तु तस्मिंश्चैत्ररथे जनाः); २५७, २० (प्रविवेश गृहं श्रीमान् यथा चैत्ररथं प्रभुः); ५. १११, ११ (उत्तर में स्थित है); ८. ५३, ११ (यथा चैत्ररथं वनम्); १२. ३२५, ३१ (चैत्ररथोपमम्)।

२. चैत्ररथ, कुरु और वाहिनी के पुत्र का नाम है (१. ९४, ५०)।

३. चैत्ररथ = शशबिन्दु (१२. २९, १०५)।

चैत्ररथपर्वन्, महाभारत के ग्याहरवें अवान्तर पर्व का नाम है। "बकासुर का वध करने के पश्चात् पाण्डवगण ब्राह्मण के ही घर में रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् वहाँ एक ब्राह्मण अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। ये ब्राह्मण भी पाण्डवों के साथ वहीं अतिथि के रूप में रहने लगे। उन ब्राह्मण ने धृष्टद्युम्न और शिखण्डी की उत्पत्ति और द्रुपद के महायज्ञ में बिना माता के गर्भ के ही यज्ञ की वेदी से कृष्णा (द्रौपदी) के अद्भुत जन्म का वृत्तान्त सुनाया। उन्होंने कहा कि द्रुपद-पुत्र धृष्टद्युम्न का यज्ञाग्नि से और कृष्णा का यज्ञ-वेदी के मध्यभाग से अद्भुत जन्म हुआ था। पाण्डवों ने उनसे यह भी पूछा कि धृष्टद्युम्न ने किस प्रकार द्रोणाचार्य से अस्त्रों की शिक्षा प्राप्त की, द्रुपद और द्रोण में किस प्रकार मैत्री हुई, और किस कारण उनमें वैर पड़ गया (१. १६५)।" "पाण्डवों के पूछने पर ब्राह्मण ने द्रोणाचार्य के जन्म, द्रुपद के साथ उनकी मैत्री, परशुराम से ब्रह्मास्त्र की प्राप्ति, और द्रुपद के साथ उनकी मैत्री के टूटने का वृत्तान्त सुनाया। ब्राह्मण ने यह भी बताया कि किस प्रकार भीष्म ने अपने सभी पौत्रों को द्रोणाचार्य के अधीन अस्त्र-विद्या सीखने की व्यवस्था की। अस्त्र-विद्या की शिक्षा देने के लिए अर्जुन तथा अन्य सभी राजकुमारों ने द्रोणाचार्य को उनकी आज्ञानुसार कोई भी दक्षिणा देने का वचन दिया। तदनन्तर उसने यह बताया कि द्रोणाचार्य ने किस प्रकार द्रुपद का अपमान किया (१. १६६)।" "ब्राह्मण ने बताया कि अमर्ष में भरकर राजा द्रुपद ने सन्तान प्राप्ति के लिए दो ब्रह्मर्षियों की सेवा की और उनकी आज्ञा से याज नामक श्रेष्ठ ब्राह्मण के पास उपस्थित हुए। याज ने द्रुपद की अभीष्ट सिद्धि के लिए आवश्यक यज्ञ करना आरम्भ किया। उसी यज्ञ से धृष्टद्युम्न तथा यज्ञ-वेदिका से कृष्णा का जन्म हुआ। ब्राह्मण ने बताया कि उसी द्रुपद-कुमारी कृष्णा का स्वयंवर होने वाला है (१. १६७)।" "उस ब्राह्मण की बात सुनकर कुन्ती-पुत्रों का मन विचलित हो गया। कुन्ती ने भी अपने पुत्रों का मन उस स्वयंवर की ओर आकृष्ट देखकर युधिष्ठिर से कहा कि वे सब पांचाल-देश में जायें क्योंकि उस देश को पहले कभी नहीं देखा था। युधिष्ठिर ने इसकी स्वीकृति दी और भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव ने भी युधिष्ठिर का अनुमोदन किया। फलस्वरूप अपने पुत्रों सहित कुन्ती ने आगन्तुक ब्राह्मण से विदा ली और द्रुपद की रमणीय नगरी की ओर जाने की तैयारी आरम्भ कर दी '(१. १६८)।" "पाण्डवगण जब गुप्त रूप से वहाँ निवास कर रहे थे तो महर्षि व्यास उनसे मिलने वहाँ आये। व्यास ने कहा : पूर्व-काल की बात है, तपोवन में एक ऋषि-कन्या रहती थी जो रूपवती और सदाचारिणी होते हुए भी पति नहीं प्राप्त कर सकी। पति के लिए दुःखी होकर उसने भगवान् शंकर को प्रसन्न किया और शंकर का दर्शन प्राप्त होने पर उसने श्रेष्ठ पति प्राप्त करने का वर मांगा। उसने अपनी इस इच्छा को पाँच बार दुहराया अतः शंकर ने उसे दूसरे जन्म में पाँच पति प्राप्त करके का वरदान दिया। वही देवरूपिणी कन्या द्रुपद-कुल में कृष्णा के नाम से उत्पन्न हुई है और पाण्डवों के लिए ही पत्नी के रूप में नियत की गई है। तदनन्तर व्यास ने पाण्डवों को पाञ्चाल-नगर में जाकर रहने और द्रौपदी को प्राप्त करने का आदेश दिया (१. १६९)।" "व्यास के चले जाने पर पाण्डव प्रसन्न होकर अपनी माता के साथ पाञ्चाल-देश की ओर चले। वे लोग दिन-रात चलते हुए उत्तर-दिशा में स्थित सोमाश्रयायण नामक तीर्थ में जा पहुँचे। उस समय उनके आगे-आगे अर्जुन उजाला तथा रक्षा करने के लिए जलती हुई मशाल लेकर चल रहे थे। उस तीर्थ के गंगा के जल में गन्धर्वराज अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। पाण्डवों को अपनी माता के साथ वहाँ देखकर गन्धर्वराज चित्ररथ अपने धनुष को टंकारते हुए इस प्रकार बोले : 'रात्रि प्रारम्भ होने के पहले पश्चिम दिशा में सन्ध्या की जो लालिमा छा जाती है उस समय ८० लव को छोड़कर सारा मुहूर्त इच्छानुसार विचरनेवाले यक्षों, गन्धर्वों तथा राक्षसों के लिए निश्चित बताया जाता है। शेष दिन का सब समय मनुष्यों के कार्यवश विचरण के लिए निश्चित माना गया है। जो मनुष्य लोभवश हम लोगों की बेला में इधर घूमते हुये आ जाते हैं उन मूर्खों को हम गन्धर्व और राक्षस बन्दी बना लेते हैं। इसीलिए वेद-वेत्ता-पुरुष रात्रि के समय जल में प्रवेश करनेवाले मनुष्यों और राजाओं की भी निन्दा करते हैं। अतः तुम दूर ही खड़े रहो। मैं गन्धर्वराज अङ्गारपर्ण गंगा के जल में उतरा हूँ अतः तुम लोग मुझे भली प्रकार जान लो। मैं अपने ही बल पर निर्भर रहनेवाला, स्वाभिमानी, ईर्ष्यालु तथा कुबेर का मित्र हूँ। मेरा यह वन भी अङ्गारपर्ण नाम से विख्यात है। मेरी उपस्थिति में यहाँ राक्षस, शृङ्गिणि, देवता अथवा मनुष्य, कोई भी नहीं आने पाते; अतः तुम लोग कैसे आ रहे हो ?' अर्जुन ने कहा : 'समुद्र, हिमालय की तराई और गंगा के तट पर रात-दिन अथवा सन्ध्या के समय किसी का भी अधिकार सुरक्षित नहीं है। हम लोग शक्ति-सम्पन्न हैं अतः तुम्हें असमय में भी कुचल सकते हैं।' अर्जुन के इस प्रकार के निर्भय वचन को सुनकर अङ्गारपर्ण क्रुद्ध हो उठा और धनुष उठाकर अर्जुन पर बाण-वर्षा करने लगा। अर्जुन ने उसके बाण को व्यर्थ करते हुए कहा : 'मैं तुम्हारे साथ दिव्यास्त्र से युद्ध करूँगा। यह आग्नेय अस्त्र पूर्व-काल में इन्द्र के गुरु बृहस्पति ने भरद्वाज मुनि को दिया था। भरद्वाज से अग्निवेश्य ने, अग्निवेश्य से मेरे गुरु द्रोणाचार्य ने और उनसे मैंने प्राप्त किया है।' ऐसा कहकर अर्जुन ने उस अस्त्र से गन्धर्वराज के रथ को भस्म कर दिया। रथ-हीन हुआ गन्धर्व व्याकुल हो गया और अस्त्र के तेज से मूढ़ होकर नीचे मुख किये हुये गिरने लगा। उस समय अर्जुन ने उसका केश पकड़ लिया और घसीटकर अपने अन्य भ्राताओं के पास लाये। उस गन्धर्व की पत्नी कुम्भीनसी, ने अपने पति के जीवन की रक्षा के लिए युधिष्ठिर की शरण ली। युधिष्ठिर ने तब अर्जुन से उस गन्धर्व को मुक्त करा दिया। तब गन्धर्व ने कहा : 'मैं अपने पूर्व नाम अङ्गारपर्ण को छोड़ देता हूँ। आज की पराजय से मुझे सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि मैंने दिव्यास्त्रधारी अर्जुन को मित्र के रूप में प्राप्त कर लिया है। इनके दिव्यास्त्र की अग्नि से मेरा यह विचित्र एवं उत्तम रथ दग्ध हो गया है। पहले मैं विचित्र-रथ के कारण चित्ररथ कहलाता था परन्तु मेरा नाम अब दग्धरथ हो गया। मैंने पूर्वकाल में तपस्या के द्वारा जो विद्या प्राप्त की है उसे मैं आज अपने मित्र अर्जुन को समर्पित करूँगा।' तदनन्तर गन्धर्वराज ने अर्जुन को चाक्षुषी नामक विद्या प्रदान की जिसके प्रभाव से तीनों लोकों में जिस किसी भी वस्तु को कोई देखने की इच्छा करे वह उसे देख सकता है और जिस रूप में देखना चाहे उसी रूप में देखेगा। गन्धर्वराज ने अर्जुन तथा उनके अन्य भ्राताओं

को अलग-अलग गन्धर्व-लोक के ऐसे सौ-सौ घोड़े भेंट किये जो मन के समान वेगशाली और आवश्यकता के अनुसार दुबले-मोटे हो सकते थे किन्तु उनका वेग कभी भी कम नहीं होता था। गन्धर्वराज ने बताया कि वे घोड़े इन्द्र के वज्र-स्वरूप हैं। प्रत्युपहार के रूप में अर्जुन ने भी गन्धर्वराज को आग्नेय-अस्त्र देते हुए उनसे पूछा कि उन लोगों को मनुष्यों से क्यों भय प्राप्त होता है। गन्धर्व ने कहा : 'आप लोग विवाहित न होने के कारण त्रिविध अग्नियों की सेवा नहीं करते, और आपके आगे कोई ब्राह्मण-पुरोहित भी नहीं है, इन्हीं कारणों से मैंने आप पर आक्रमण किया। यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, पिशाच, नाग और दानव कुरु-कुल की यशोगाथा का वर्णन करते हैं। नारद आदि देवर्षियों के मुख से भी मैंने आपके बुद्धिमान पूर्वजों का गुण-गान सुना है। ब्रह्मचर्य सबसे बड़ा धर्म है और वह तुममें निश्चित रूप से विद्यमान है। इसीलिए मैं युद्ध में तुमसे परास्त हो गया हूँ। यदि कोई कामासक्त क्षत्रिय रात्रि में मुझसे युद्ध करने आये तो वह किसी प्रकार भी जीवित नहीं बच सकता। कामासक्त होने पर भी यदि कोई पुरुष ब्राह्मण को आगे करके चले तो वह समस्त निशाचरों पर विजय प्राप्त कर सकता है क्योंकि उस दशा में उसका समस्त भार पुरोहित पर होता है। अतः हे तापत्य ! मनुष्यों को इस लोक में इन्द्रियों को वश में रखनेवाले पुरोहितों की नियुक्ति करनी चाहिए। छः अंगों सहित वेद के स्वाध्याय में तत्पर, ईमानदार, सत्यवादी, धर्मात्मा और कृतात्मा ब्राह्मण को ही राजाओं का पुरोहित होना चाहिए। अतः आप यह जान लें कि जहाँ विद्वान् ब्राह्मणों की प्रधानता हो उसी राज्य की दीर्घकाल तक रक्षा की जा सकती है' (१. १७०)।" "गन्धर्व ने सूर्य-कन्या तपती को देखकर राजा संवर्ण के मोहित होने का वृत्तान्त सुनाया (१. १७१)।" "गन्धर्व ने तपती और संवर्ण की बातचीत का वर्णन किया (१. १७२)।" "गन्धर्व ने बताया कि वसिष्ठ की सहायता से किस प्रकार राजा संवर्ण को तपती की प्राप्ति हुई (१. १७३)।" "वसिष्ठ की महत्ता बताते हुये गन्धर्व ने किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को पुरोहित बनाने का अर्जुन से आग्रह किया (१. १७४)।" "गन्धर्व ने वसिष्ठ के अद्भुत क्षमा-बल के आगे विश्वामित्र के पराभव का वृत्तान्त सुनाया (१. १७५)।" "शक्ति के शाप से कल्मापपाद के राक्षस होने, विश्वामित्र की प्रेरणा से राक्षस द्वारा वसिष्ठ के पुत्रों के भक्षण करने, और वसिष्ठ के शोक का गन्धर्व ने वर्णन किया (१. १७६)।" "गन्धर्व ने बताया कि किस प्रकार कल्मापपाद का शाप से उद्धार और वसिष्ठ द्वारा उन्हें अश्मक नामक पुत्र प्राप्त हुआ (१. १७७)।" "गन्धर्व ने शक्ति-पुत्र पराशर के जन्म का वर्णन करते हुए बताया कि पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर जब पराशर कुपित हुए तो उन्हें शान्त करने के लिए वसिष्ठ ने और्वोपाख्यान सुनाया (१. १७८)।" "पितरों द्वारा और्व के क्रोध का निवारण (१. १७९)।" "और्व तथा पितरों की बातचीत और और्व का अपनी क्रोधाग्नि को बड़वानल रूप से समुद्र में त्यागना (१. १८०)।" "पुलस्त्य आदि महर्षियों के समझाने से पराशर के द्वारा राक्षस-सत्र की समाप्ति (१. १८१)।" "राजा कल्मापपाद को ब्राह्मणी आंगिरसी का शाप (१. १८२)।" "पाण्डवों का धौम्य को अपना पुरोहित बनाना (१. १८३)।"

चैत्रवाहनी = चित्राङ्गदा (१. २१५, १६ ; १४. ८०, १८ ; ८१, ४)।

१. चैत्रसेनी, एक राजा का नाम है जिसे द्रोणाचार्य ने पराजित किया था (७. २१, ६२)।

२. चैत्रसेनी, चित्रसेन के पुत्र का नाम है (७. २५, २७)।

चैत्री, चैत्र मास की पूर्णिमा का नाम है (१२. १००, १० ; १४. ७२, ४)। इसी दिन युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ हुआ (१४. ७६, २५; ८१, २३; २२, २७; ८४, २४)।

चैद्य, चेदियों के राजा का नाम है। शिशुपाल (१. १, १३१; २. ४४, ५; ४५, २९; ४६, ९; ५. ६८, ४)। धृष्टकेतु (५. १४१, २५; ७. ८५, ४१; १२५, ३१)। शिशुपाल (१६. ६, ११)।

चैद्या = करेणुमती, जो नकुल की पत्नी थी (१. ९५, ७९)।

चैद्याधिपति = धृष्टकेतु (५. ४, १४)।

१. चोल (बहु० ँलाः), वर्तमान तञ्जौर की एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित हुए (३. ५१, २२)। ये दक्षिण में निवास करते थे (६. ९, ६०)। इन्हें श्रीकृष्ण ने पराजित किया था (७. ११, १७)। इन्होंने पाण्डवों के पक्ष में होकर युद्ध किया (८. १२, १५)।

२. चोल, चोल देश के राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के लिए भेंट लाये (२. ५२, ३५)।

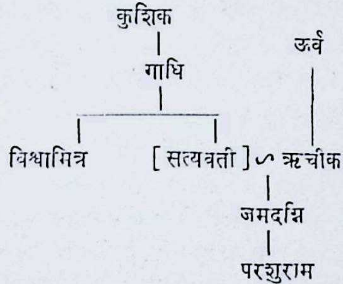
चौर, क्षत्रियों की एक प्राचीन जाति का नाम है जो ब्राह्मणों के रोष से शूद्रत्व को प्राप्त हो गई (१३. ३५, १७)।

१. च्यवन, एक महर्षि का नाम है जो भृगु के पुत्र थे। 'सौकन्यमपि चाख्यानं च्यवनो यत्र भार्गवः। शर्यातियज्ञे नासत्यौ कृतवान्सोमपीथिनौ ॥', (१. २, १७०)। ये भृगु के पुत्र और प्रमति के पिता थे (१. ५, ८. ९. १२)। ये अपनी माता, पुलोमा के गर्भ से च्युत हो गये थे इसीलिये इनका च्यवन नाम पड़ा (१. ६, २. ४. ९)। 'पुलोम्नश्च विनाशोऽयं च्यवनस्य च संभवः', (१. ७, २९)। इन्होंने सुकन्या से प्रमति नामक पुत्र उत्पन्न किया (१. ८, १)। ये आस्तीक के गुरु थे (१. ४८, १८)। जनमेजय के सर्पसत्र के समय इन्हीं का एक वंशज होतृ पुरोहित बना (१. ५३, ५)। ये भृगु द्वारा पुलोमा के गर्भ से उत्पन्न हुये थे और मनु की पुत्री, आरुषी इनकी पत्नी बनी (१. ६६, ४५)। ये ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ११, २२)। इनका आश्रम दक्षिण में स्थित था (३. ८९, १२)। इनके आश्रम में कालकेयों ने १०० मुनियों का वध कर दिया (३. १०२, ४)। ३. १२१, २२; १२२, १. २३. २६. २९ (इन्होंने राजा शर्याति की कन्या, सुकन्या, से विवाह किया); १२३, ४. १०. १२. १५. १६. २१. २४ (अश्विनों की कृपा से इन्हें पुनः युवावस्था प्राप्त हुई); १२४, १. ५. ७. ८. १०. १८ (शर्याति के यज्ञ में जब इन्होंने अश्विनीकुमारों को देने के लिये सोम हाथ में उठाया तो इन्द्र ने इन्हें रोका और इनके न रुकने पर इन पर वज्र चलाया, तब इन्होंने इन्द्र के हाथ को स्तम्भित करके उनके वध के लिये मद नामक महादैत्य को उत्पन्न किया); १२५, २ (भयभीत होकर इन्द्र ने अश्विनीकुमारों को सोमपान का अधिकारी बना दिया); २२०, १; ३०४, ९; ४. २१, १०; ५. ११७, ११; १८६, २६; १२. ३७, ११; ४७, ८ (बाण-शय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े होने वाले ऋषियों में एक यह भी थे); ३४२, २४ (अश्विनोर्ग्रहपतिषेधोद्यतवज्रस्य पुरन्दरस्य च्यवन स्तंभितो बाहू); ३६५, १; १३. ४, ८ ('च्यवनस्यात्मसंभवः ऋचीक इति विख्यातः'). १३; २६, ५; ५०, २. ३. १९. २५; ५१, १. २. ५. ७. ९. ११. १३. २४. २६. ३८. ४२. ४५ (जब ये मत्स्यों के साथ मछुओं के जाल में फँस गये तो इनका मूल्य एक गाय के बराबर निर्धारित किया गया); ५२, ७. ८. १०. १३. १५. १९. ३५; ५३, ३. २१. २२. २६. २९. ५५. ६३; ५४, १९. २७. २९. ३०; ५५, १. १०; ५६, १. १५. १६. १९ (ये कुशिक के वंश का विनाश कर देना चाहते थे परन्तु कुशिक की निष्ठा से प्रसन्न होकर उन्हें मुक्त करते हुये यह वरदान दिया कि उनके वंश की तीसरी पीढ़ी में उत्पन्न विश्वामित्र ब्राह्मणपद प्राप्त करेंगे); ८५, १२८ (ये भृगु के सात पुत्रों में से प्रथम थे); १०६, ६९ (इन्होंने तपस्या द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया)। "वायु ने बताया कि अश्विनों को वचन देने के कारण इन्होंने इन्द्र को उन्हें सोमपान का अधिकारी बनाने की आज्ञा दी। इन्द्र ने इनकी आज्ञा को यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि अश्विनद्वय देवताओं के बराबर नहीं हैं। परन्तु इन्होंने कहा कि सूर्य के पुत्र होने के कारण अश्विनद्वय भी देवता हैं। तदनन्तर यज्ञ द्वारा अश्विनों को सोमपान का अधिकार दिलाने का प्रयास किया। इस पर जब क्रुद्ध होकर इन्द्र ने इन पर वज्र से प्रहार करना चाहा तो इन्होंने उनकी भुजाओं को स्तम्भित कर दिया। इतना ही नहीं, इन्होंने इन्द्र का वध कर देने के लिये मद नामक दैत्य को उत्पन्न किया। उत्पन्न होते ही मद ने अपने मुख को खोला, जिसमें इन्द्र सहित समस्त देवता प्रवेश कर गये। तब दुखी होकर देवताओं ने इन्द्र से इनकी

आज्ञा मानने का आग्रह किया। इन्द्र ने देवों के आग्रह को मान कर इनकी आज्ञा स्वीकार कर ली। तदनन्तर इन्होंने जूआ, शिकार, मदिरा, और स्त्रियों में मद को बाँट दिया। वायु ने कहा 'बताओ कौन सा क्षत्रिय ब्राह्मण से श्रेष्ठ है।' (१३. १५६, १५. १६. १९. २२. २३. २४. २५. ३१. ३२. ३५)।" इन्द्रसहित सम्पूर्ण देवता जब मद के मुख में पड़ गये तब इन्होंने देवों के अधिकार को समस्त पृथिवी को अपने अधिकार में कर लिया (१३. १५७, २.४)। उत्तर के ऋषियों के अन्तर्गत इनकी गणना (१३. १६५, ४७)। १४. ९, ३१. ३२। तुकी० **आङ्गिरस, भार्गव, भृगु, भृगुशार्दूल भृगूद्वह, भृगुकुलकीर्तिवर्धन, भृगुकुलोद्वह, भृगुमुख्य, भृगुनन्दन, भृगुसुत।**

च्यवन-कुशिक-संवाद—"युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने कहा, पूर्वकाल में च्यवन को यह बात मालूम हुई कि उनके वंश में कुशिकवंशी कन्या के सम्बन्ध से क्षत्रियत्व का महान् दोष आने वाला है। यह जान कर कुशिकों के समस्त कुल को भस्म कर डालने की इच्छा से उन्होंने कुशिक के पास जाकर कहा: 'मेरे मन में कुछ काल तक तुम्हारे साथ रहने की इच्छा हुई है।' कुशिक तथा उनकी रानी ने च्यवन का स्वागत किया। तदनन्तर जब च्यवन सोये तो उनकी आज्ञा के अनुसार कुशिक दम्पति उनकी सेवा करने लगे। उस समय च्यवन मुनि एक ही करवट इक्कीस दिन तक सोते रहे और राजा कुशिक तथा उनकी रानी मुनि को बिना जगाये उनका पैर दबाते रहे। राजदम्पति ने इस अवधि में अन्न-जल तक ग्रहण नहीं किया। बाइसवें दिन च्यवन स्वयं उठे और राजा से कुछ कहे बिना ही महल से बाहर निकल गये। राजा तथा रानी भूख से पीड़ित और निर्बल होते हुये भी मुनि के पीछे-पीछे गये परन्तु थोड़ी ही देर में च्यवन अन्तर्धान हो गये। इससे अत्यन्त दुखी होकर राजा पृथिवी पर गिर कर मूर्च्छित हो गये। तदनन्तर अपने को सँभाल कर वे पुनः मुनि को ढूँढने का प्रयास करने लगे (१३. ५२)।" "कुशिक-दम्पति महर्षि च्यवन को ढूँढ पाने में असमर्थ होकर अपनी पुरी में लौट आये। राजा ने सूने मन से जब अपने भवन में प्रवेश किया तब च्यवन को पुनः उसी शैय्या पर सोते देखा। मुनि के दर्शन से कुशिक-दम्पति की थकावट दूर हो गई और वे पुनः मुनि का पैर दबाने लगे। इस बार भी मुनि इक्कीस दिनों तक सोते रहे और जब उठे तब उन्होंने राजा और रानी को अपने शरीर में तेल की मालिश करने की आज्ञा दी। यद्यपि राजा और रानी भूख-प्यास से दुर्बल और पीड़ित थे तथापि उन्होंने मुनि की आज्ञा का पालन किया। तदनन्तर महर्षि च्यवन ने स्नानागार में प्रवेश किया और वहाँ राजा के देखते-देखते अन्तर्धान हो गये। इसके पश्चात् च्यवन मुनि को राजा और रानी ने स्नान करके सिंहासन पर बैठे देखा। मुनि की आज्ञा से राजा ने भोजन-सामग्री—वर्णन—प्रस्तुत की परन्तु च्यवन ने समस्त भोजन को भस्म कर दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये। उस समय राजर्षि कुशिक अपनी स्त्री के साथ रात भर वहीं खड़े रहे और उनके मन में क्रोध का लेश-मात्र भी आवेग नहीं हुआ। प्रतिदिन भाँति-भाँति का भोजन तथा अनेक प्रकार के वस्त्र च्यवन की सेवा में समर्पित किये जाते थे। च्यवन मुनि जब इन समस्त कार्यों में कोई छिद्र न देख सके तो वे राजा कुशिक से बोले: 'तुम स्त्री सहित रथ में जुत जाओ और मैं जहाँ कहूँ वहाँ मुझे ले चलो।...तुम्हारा जो युद्धोपयोगी रथ हो उसे ही तैयार करो और उसमें नानाप्रकार के अस्त्र-शस्त्रों को रक्खो।' च्यवन की आज्ञा-पालन करते हुए राज-दम्पति ने च्यवन से पूछा कि वे रथ कहाँ ले चलें। च्यवन ने कहा: 'तुम बहुत धीरे-धीरे एक-एक पग उठाकर चलो जिससे मुझे कष्ट न हो और सब लोग मुझे देख सकें।' राज-दम्पति मुनि की आज्ञानुसार रथ को लेकर चले। उस समय सारा नगर आर्त होकर हाहाकार करने लगा। इतने में ही मुनि ने सहसा चाबुक उठाकर राजा और रानी पर अत्यन्त तीक्ष्ण प्रहार किया परन्तु वे दोनों निर्विकार-भाव से रथ ढोते ही रहे। पचास रात तक उपवास करने के कारण यद्यपि राजा और रानी अत्यन्त दुर्बल हो गये थे और उनका सारा शरीर काँप रहा था तथापि वे किसी प्रकार साहस एकत्र करके उस विशाल रथ का बोझ ढोते रहे। इतने पर भी राजा और रानी के मन में कोई विकार न देखकर च्यवन-मुनि राजा का समस्त धन लुटाने लगे। परन्तु इस कार्य में भी राजा कुशिक प्रसन्नता-पूर्वक ऋषि की आज्ञा का पालन करते रहे। इस पर च्यवन ने प्रसन्न होकर राज-दम्पति को वर देने की इच्छा प्रगट की। च्यवन दोनों सुकुमार राज-दम्पति की आहत और रक्तरंजित पीठ पर स्नेहवश कोमल हाथ फेरने लगे जिससे राजा और रानी की समस्त थकावट दूर हो गई और वे सुख का अनुभव करने लगे। उस समय राजा और रानी दोनों की तरुण अवस्था हो गई तथा उनका शरीर भी सुन्दर और बलवान प्रतीत होने लगा। च्यवन वहीं गंगा-तट पर रुक गये और राजा तथा रानी को दूसरे दिन प्रातःकाल उपस्थित होने की आज्ञा दी। राजा और रानी के चले जाने के बाद महर्षि च्यवन ने गंगा-तट के तपोवन को अपने संकल्प द्वारा नानाप्रकार के रत्नों से सुशोभित, समृद्धशाली एवं नयनाभिराम बना दिया। वैसा कमनीय-कानन इन्द्रपुरी अमरावती में भी नहीं था (१३. ५३)।" "दूसरे दिन प्रातःकाल राजा कुशिक ने अपनी रानी के साथ तपोवन में आकर एक सुवर्ण का सुन्दर राजप्रासाद देखा-वर्णन। वहाँ की शोभा देखकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और वे सोच-विचार करने लगे कि कहीं वे उत्तर-कुरु अथवा अमरावती पुरी में तो नहीं आ गये। उसी समय उन्हें एक बहुमूल्य तथा दिव्य पर्यङ्क पर महर्षि च्यवन विराजमान दिखाई दिये। राजा ज्यों ही हर्ष-पूर्वक च्यवन की ओर बढ़े त्यों ही महर्षि पुनः अन्तर्धान हो गये और साथ ही वह उनका पर्यङ्क भी अदृश्य हो गया। तदनन्तर राजा ने अन्यत्र महर्षि को कुशासन पर बैठकर जप करते हुये देखा। एक ही क्षण में अप्सरायें, गन्धर्व और वृक्ष आदि सब अदृश्य हो गये तथा गंगा का तट शब्द-रहित प्रतीत होने लगा। राजा और रानी को देखकर च्यवन ने उन्हें अपने समीप बुलाकर आशीर्वाद दिया। जब च्यवन ने राजा से वर माँगने के लिये कहा तो राजा बोले: 'मैं आपके निकट उसी प्रकार रहा हूँ जैसे कोई प्रज्वलित अग्नि के बीच खड़ा हो; परन्तु उस अवस्था में भी मैं जलकर भस्म नहीं हुआ, यही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे मन के एक सन्देह का समाधान करने की कृपा करें (१३. ५४)।" "राजा ने मुनि से उनके विचित्र व्यवहारों के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो च्यवन ने कहा: 'पूर्व-काल की बात है, एक दिन देवताओं की सभा में मैंने ब्रह्मा को यह कहते सुना था कि ब्राह्मण और क्षत्रिय में विरोध होने के कारण दोनों कुलों में संकरता आ जायगी। इसे ही सुनकर मैं तुम्हारे कुल का मूलोच्छेद कर डालना चाहता था, और इसी उद्देश्य से मैं तुम्हारे नगर में उपस्थित हुआ था; किन्तु तुम्हारे घर में रहकर भी मैंने तुममें कोई दोष नहीं देखा। इसीलिए तुम जीवित हो।......इस वन में जो तुमने दिव्य दृश्य देखे हैं वह स्वर्ग की एक झांकी थी। तुमने अपनी रानी के साथ इसी शरीर से कुछ देर तक स्वर्गीय-सुख का अनुभव किया है। इन सब बातों को देखने पर तुम्हारे मन में जो इच्छा हुई है वह भी मुझे ज्ञात है। तुम सम्राट और देवराज के पद की अवहेलना करके ब्राह्मणत्व पाना चाहते हो और तप की भी अभिलाषा रखते हो। तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी। तुमसे कौशिक नामक ब्राह्मण-वंश प्रचलित होगा और तुम्हारी तीसरी पीढ़ी ब्राह्मण हो जायगी। भृगु-वंशियों के तेज से तुम्हारा वंश ब्राह्मणत्व को प्राप्त होगा, और तुम्हारा पौत्र अग्नि के समान तेजस्वी तथा तपस्वी ब्राह्मण बनेगा। तुम्हारे मन में जो इच्छा हो उसे अब वर के रूप में माँग लो क्योंकि अब मैं तीर्थ-यात्रा को जाऊँगा।' कुशिक ने कहा: 'आज आप प्रसन्न हैं, यही मेरे लिए बहुत बड़ा वर है। मेरा कुल किस प्रकार ब्राह्मणत्व को प्राप्त होगा? मेरा वह पौत्र कौन होगा जो सर्वप्रथम ब्राह्मण होनेवाला है' (१३. ५५)।" "च्यवन ने कहा: 'क्षत्रिय लोग समस्त भृगुवंशियों का संहार कर डालेगें। तदनन्तर मेरे वंश में ऊर्व नामक एक महा तेजस्वी बालक होगा जो भार्गव-गोत्र की वृद्धि करेगा। वह बालक तीनों लोकों का विनाश करने के लिए क्रोध-जनित अग्नि की सृष्टि करेगा जिससे पर्वतों और वनों सहित समस्त पृथ्वी भस्म हो जायगी। कुछ काल

के पश्चात् वह मुनि-श्रेष्ठ ऊर्व उस अग्नि को समुद्र में स्थित वडवावक्त्र में डालकर बुझा देगा। उस ऊर्व के पुत्र ऋचीक होंगे। ऋचीक की सेवा में सम्पूर्ण धनुर्वेद मूर्तिमान होकर उपस्थित होगा। ऋचीक क्षत्रियों का संहार करने के लिए उस धनुर्वेद को ग्रहण करके अपने पुत्र जमदग्नि को उसकी शिक्षा देंगे। वे ऋचीक तुम्हारे कुल की कन्या का पाणि-ग्रहण करेंगे। तुम्हारी पौत्री एवं गाधिकी पुत्री को पाकर ऋचीक क्षत्रिय धर्म वाले ब्राह्मण जातीय पुत्र को उत्पन्न करेंगे। वे ऋचीक मुनि तुम्हारे कुल में गाधि को एक महान तपस्वी पुत्र प्रदान करेंगे जिसका नाम होगा विश्वामित्र। वंश-वृक्ष इस प्रकार होगा :



च्यवन की बात सुनकर कुशिक अत्यन्त प्रसन्न हुये। च्यवन भी तीर्थ-यात्रा को चले गये। आगे चलकर च्यवन मुनि के कथनानुसार भृगु-कुल में परशुराम का और कुशिक वंश में विश्वामित्र का जन्म हुआ (१३.५६)।"

च्यवनोपाख्यानम्—"भीष्म ने कहा : पूर्व काल की बात है, भृगु-पुत्र च्यवन महान व्रत का आश्रय लेकर बारह वर्षों तक जल के भीतर रहे। वे गंगा-यमुना के संगम पर प्रविष्ट हुये थे। दोनों नदियों के वेग को सहन करते हुए वे एक काष्ठ-स्तम्भ की भांति स्थित रहे—वर्णन। एक समय वे मल्लाहों के जाल में फंस गये और मल्लाहों ने उन्हें भी बाहर खींच लिया। जाल के आकर्षण से अत्यन्त खेद; त्रास और स्थल का स्पर्श होने के कारण उसमें फंसे हुए अनेक मत्स्य मृत्यु को प्राप्त हुये। वेदों के पारङ्गत विद्वान् महर्षि च्यवन को देखकर मल्लाहों ने उनसे क्षमा मांगी। मल्लाहों के पूछने पर च्यवन ने कहा : 'मैं इन मत्स्यों के साथ ही अपने प्राणों का त्याग या रक्षण करूँगा। मैं बहुत दिनों तक इनके साथ जल में रह चुका हूँ, अतः मैं इन्हें त्याग नहीं सकता।' मुनि की बात सुनकर निषाद अत्यन्त भयभीत होकर कांपने लगे और उसी अवस्था में जाकर उन सब ने राजा नहुष से समाचार का निवेदन किया (१३. ५०)।" "निषादों से महर्षि च्यवन के आगमन का समाचार सुनकर राजा नहुष अपने पुरोहितों, और मंत्रियों को साथ लेकर तत्काल मुनि के पास आये। नहुष के पूछने पर च्यवन ने कहा : 'राजन्! मत्स्यों से जीविकोपार्जन करने वाले इन निषादों ने आज अत्यन्त परिश्रम से मुझे अपने जाल में फँसाकर निकाला है; अतः आप इन मछलियों के साथ साथ मेरा भी मूल्य चुका दीजिये।' नहुष ने च्यवन के मूल्य के रूप में निषादों को प्रचुर धन दिया, परन्तु च्यवन ने कहा कि वह धन अथवा राजा का समस्त साम्राज्य भी उनके मूल्य के बराबर नहीं है। च्यवन का यह वचन सुनकर नहुष चिन्तित हो उठे और अपने पुरोहित तथा मन्त्रियों से परामर्श करने लगे। इतने ही में एक गोजात वनवासी मुनि ने वहाँ उपस्थित होकर कहा कि वे च्यवन को सन्तुष्ट करने का उपाय जानते हैं। उन्होंने बताया : 'ब्राह्मण और गौओं का कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता, अतः आप च्यवन मुनि का मूल्य एक गाय प्रदान करके दे सकते हैं।' जब नहुष ने च्यवन को एक गाय के बदले क्रय करने का प्रस्ताव किया तो उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। च्यवन ने कहा : 'गौएँ लक्ष्मी की मूल हैं।··· स्वाहा और वषट्कार सदा गौओं में ही प्रतिष्ठित होते हैं।···गौओं से श्रेष्ठ कुछ नहीं।' निषादों से गाय का उपहार स्वीकार करके च्यवन ने उन्हें भी मछलियों के साथ ही स्वर्ग जाने का आशीर्वाद दिया। उस समय मल्लाहों और मत्स्यों को स्वर्गलोक जाते हुये देखकर राजा नहुष को आश्चर्य हुआ। तदनन्तर गोजात मुनि तथा च्यवन, दोनों ने नहुष को अनेक वर दे कर कृतार्थ किया। वर देने के पश्चात् दोनों मुनि अपने-अपने निवास-स्थान तथा राजा नहुष अपनी राजधानी चले गये (१३. ५१)।" "युधिष्ठिर द्वारा परशुराम के सम्बन्ध में पूछने पर भीष्म ने पूर्व-काल में हुआ च्यवन और कुशिक का संवाद (देखिये **च्यवन-कुशिक-संवाद**) सुनाया (१३. ५२–५६)।"

छ

छत्रवती, अहिच्छत्रदेश की राजधानी, अहिच्छत्रा, का दूसरा नाम है (१. १६६, २१)।

छन्नस = शिव (१,००० नाम)।

छत्रोपानहोत्पत्ति—भीष्म ने कहा : पूर्वकाल की बात है एक दिन भृगुनन्दन जमदग्नि धनुष चलाने की क्रीड़ा कर रहे थे। उस समय उनके चलाये हुये बाणों को उनकी पत्नी, रेणुका, ला-लाकर दिया करती थीं। इस प्रकार क्रीड़ा करते-करते ज्येष्ठ मास के सूर्य मध्याह्न में आ पहुँचे। उस समय जमदग्नि के बाणों को वापस लाने के लिए जाते समय रेणुका छाया का आश्रय लेती हुई रुक-रुककर चल रही थीं। जब उसके लौटकर आने में विलम्ब हुआ तो जमदग्नि ने उससे इसका कारण पूछा। रेणुका ने कहा : 'मेरा सर तप गया है, दोनों पैर भी जलने लगे हैं और सूर्य के प्रचण्ड तेज ने मुझे आगे बढ़ने से रोक दिया। इसीलिए थोड़ी देर तक मैं वृक्ष की छाया में विश्राम करके लौटी हूँ।' रेणुका की बात सुनकर जमदग्नि ने क्रुद्ध हो सूर्य को ही अपने बाणों से नीचे गिरा देने का निश्चय किया। उस समय सूर्य-देव ब्राह्मण का स्वरूप धारण करके जमदग्नि के पास आये और बोले : 'सूर्य पृथ्वी पर वर्षा करते हैं जिससे अन्न उत्पन्न होता है, और अन्न ही प्राण है यह बात वेद-विहित है।······अतः सूर्य को गिराने से आपका क्या लाभ होगा?' (१३. ९५)।" "युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने कहा : जब जमदग्नि किसी भी प्रकार अपने क्रोध का परित्याग करने के लिए प्रस्तुत नहीं हुये तब ब्राह्मण ने कहा : 'सूर्य सदैव गतिशील रहते हैं। अतः निरन्तर यात्रा करते हुए सूर्य रूपी चंचल लक्ष्य का आप किस प्रकार भेदन करेंगे?' जमदग्नि ने कहा : 'हम ज्ञानचक्षु से जान गये हैं कि तुम्हीं सूर्य हो। तुम मध्याह्न के समय आधे निमेष के लिए रुक जाते हो, अतः उसी समय हम तुम्हारा भेदन करेंगे।' जमदग्नि की बात सुनकर सूर्य ने क्षमा-याचना करते हुये अपने को जमदग्नि की शरण में समर्पित कर दिया। सूर्य की बात सुनकर जमदग्नि ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा : 'ब्राह्मणों में जो सरलता है, पृथिवी में जो स्थिरता है, सोम का जो सौम्यभाव है, सागर की जो गंभीरता है, अग्नि की जो दीप्ति है, मेरु की जो चमक और सूर्य का जो प्रताप है उन सबका वह व्यक्ति उल्लंघन कर जाता है जो शरणागत का वध करता है। इत्यादि।' जब जमदग्नि इस प्रकार कहकर चुप हो गये तब सूर्य ने उन्हें शीघ्र ही छत्र और उपानह देते हुए कहा : 'आज से इस जगत में इन दोनों वस्तुओं का प्रचार होगा और पुण्य के समस्त अवसरों पर इनका दान उत्तम एवं अक्षय फल देने वाला होगा।' इस प्रकार भीष्म ने युधिष्ठिर को छत्र और उपानह के दान का सम्पूर्ण फल बताया (१३. ९६)।"

छद = शिव (१,००० नाम)।

१. छन्दस् = शिव (१,००० नाम)।

२. छन्दस् = विष्णु (१,००० नाम)।

छन्दोदेव, मतङ्ग को इन्द्र के वरदान से जन्मान्तर में मिलनेवाला नाम है (१३. २९, २४)।

छागमुख, बकरे के समान मुख धारण करनेवाले स्कन्द का नाम है (३. २२८, १२)।

छागवक्त्र = स्कन्द (३. २२८, १२)।

छाय = शिव (१,००० नाम)।

छिन्नतृष्ण = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

१. छिन्नसंशय = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

२. छिन्नसंशय = विष्णु (१,००० नाम)।

छेत्तृ = शिव (१,००० नाम)।

ज

जगत् = शिव (१,००० नाम)।

जगतः कोपः = कृष्ण (१२. ४७, ३४)।

जगतः प्रभवाव्यय = कृष्ण (विष्णु) : १२. ११०, २४।

जगतः प्रभुः = कृष्ण (१६. १, २५; ६, १०. १६)।

जगतः सेतु = विष्णु (१,००० नाम)।

जगती, पृथिवी देवी का नाम है जो नरक की माता हैं (७. २९, ३२)।

जगत्काल = शिव (१,००० नाम)।

१. जगत्पति = ब्रह्मा (१. २२३, ७०; ९. ४४, ४३; १२. ३९, ४; २०९, २८; ३४८, २७; १३. ८५, ७. १७; १०३, २४)।

२. जगत्पति = शिव (७. २०२, ९८; ९. ४३, १५; १२. २८१, २३. ३०; १३. १४, १. ९२. ३३७; १७, १५५)।

३. जगत्पति = काम (१३. ८५, १७)।

४. जगत्पति = कृष्ण (१२. ४७, १५; ३४५, ८; १३. १४७, ५२; १४. ८६, ८)।

५. जगत्पति = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

६. जगत्पति = नहुष (५. १५, ४. ९)।

जगत्प्रकृति = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

१. जगत्प्रभु = ब्रह्मा (३. २७५, २०; १२. २५७, २)।

२. जगत्प्रभु = विष्णु (१३. १४९, ४)।

जगदन्वय = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

जगदादिज = विष्णु (१,००० नाम)।

जगदीश्वर = इन्द्र (१. ३, १४९)।

१. जगन्नाथ = ब्रह्मा (७. ५३, १४; १२. २५७, १२; १३. १६५, ९)।

२. जगन्नाथ = कृष्ण (विष्णु) : १२. ३४१, ५; ३४३, ६; ३४६, १०; १३. १४९, १२।

३. जगन्नाथ=शिव : ७. २०२, १७; १२. २४८, १६१ (१,००० नाम)।

जगुड, एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के राजसूय के समय उपस्थित हुये (३. ५१, २५)।

जङ्गम = शिव (१,००० नाम)।

जङ्गारि, विश्वामित्र के पुत्रों में से एक का नाम है (१३. ४, ५७)।

जङ्घाबन्धु, एक प्राचीन मुनि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, १६)।

१. जटाधर, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१)।

२. जटाधर = शिव : ३. ३९, ७४; १३. १७, १२८ (१,००० नाम)।

जटायुस्, एक गृध्र का नाम है जो अरुण और श्येनी के पुत्र तथा सम्पाति के भ्राता थे (१. ६६, ७०)। रावण ने इनका वध किया (३. २७४, २)। 'गृध्रो जटायुः', (३. २७८, ४३)। इन्होंने रावण से सीता को मुक्त कराने का प्रयास किया परन्तु रावण ने इनका वध कर दिया (३. २७९, १)। "एक बार अपने ज्येष्ठ भ्राता, सम्पाति, के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुये ये आकाश में सूर्य की ओर उड़े। उस समय सम्पाति के पंख जल गये परन्तु इनके पंख बचे रहे (३. २८२, ४६–५३)।

जटालिका, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृता का नाम है (९. ४६, २३)।

१. जटासुर, एक राक्षस का नाम है (१. २, १८०)। यह पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र, तथा द्रौपदी, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव को लेकर भाग रहा था परन्तु भीमसेन ने इसे रोक कर इसका वध कर दिया (३. १५७, ५. ७१)। ४. २१, ४४; ५. ८, ५१; ७. १७४, ७ (यह अलम्बुष का पिता था); १२. १६, २०; १४. १२, १०। देखिये **रक्षस्, राक्षस**।

२. जटासुर, एक राक्षसराज का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, २४)।

जटासुरवध—जटासुर के वध का उल्लेख (१. २, ५२)।

जटासुरवधपर्वन्, महाभारत के ३७ वें अवान्तरपर्व का नाम है। "एक दिन, जब घटोत्कच आदि राक्षस विदा हो चले गये थे और पाण्डवगण आनन्दपूर्वक गन्धमादन पर अर्जुन के आगमन की प्रतीक्षा करते हुये निवास कर रहे थे, तब, भीम की अनुपस्थिति में जटासुर नामक एक राक्षस ने युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, तथा द्रौपदी का हरण कर लिया। वह राक्षस ब्राह्मण के वेश में प्रतिदिन पाण्डवों के साथ ही रहता था और अपने को सम्पूर्ण शास्त्रज्ञों में श्रेष्ठ बताता था। वह पाण्डवों के आयुधों तथा द्रौपदी का हरण करना चाहता था। एक दिन जब उस राक्षस ने देखा कि भीमसेन आश्रम के बाहर चले गये हैं, घटोत्कच आदि ने भी किसी अज्ञात दिशा का अनुसरण कर लिया है, और लोमश आदि ऋषि ध्यानस्थ हैं, तब उसने विकराल रूप धारण करके पाण्डवों के आयुधों तथा द्रौपदी सहित युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव का हरण कर लिया। उस समय सहदेव किसी प्रकार प्रयत्न करके उस राक्षस की पकड़ से मुक्त हो गये और पराक्रम करके अपनी कुशिक नामक तलवार भी उसे छुड़ा ली। तदनन्तर वे, भीम जिस मार्ग से गये थे उसी मार्ग पर जाकर, भीम को जोर-जोर से बुलाने लगे। इधर युधिष्ठिर ने, जिनका वह राक्षस हरण किये हुये जा रहा था, उस राक्षस से कहा : 'राक्षस विशेष रूप से धर्म का विचार रखते हैं क्योंकि वे धर्म के मूल हैं। इस बात का विचार करके तुझे हम लोगों के समीप ही रहना चाहिये था। देवता, ऋषि, सिद्ध, पितर, गन्धर्व, नाग, राक्षस, पशु, पक्षी, तिर्यग्योनि के प्राणी, और कीड़े-मकोड़े आदि भी मनुष्यों के आश्रित हो जीवन-निर्वाह करते हैं।...तू हमारा अन्न खाकर हमारा ही हरण करने की कैसे इच्छा करता है?...आज तूने मानव स्त्री का स्पर्श करके जो पाप किया है वह भयंकर विष है।' इस प्रकार उस राक्षस की भर्त्सना करके युधिष्ठिर बहुत भारी हो गये। इधर सहदेव ने राक्षस पर आक्रमण करने का निश्चय किया, परन्तु उसी समय भीमसेन गदा हाथ में लिये हुये वहाँ उपस्थित हो गये। भीम को देखकर उस राक्षस ने युधिष्ठिर आदि को भूमि पर रख दिया और भीम से युद्ध करने लगा। दोनों का उसी प्रकार घोर युद्ध होने लगा जैसा पूर्वकाल में वालि और सुग्रीव का युद्ध हुआ था। पहले दोनों ने वृक्षों का आयुधों के रूप में प्रयोग किया, और फिर शिलाओं से एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। तदनन्तर दोनों ने मल्लयुद्ध प्रारम्भ किया। अन्ततोगत्वा भीमसेन ने अपनी मुष्टिका द्वारा राक्षस की ग्रीवा पर प्रहार किया। इसके बाद उस राक्षस को दोनो हाथों से उठाकर पृथिवी पर पटक दिया और फिर उसके समस्त अंगों को चूर-चूर करने के पश्चात उसके मस्तक को भी धड़ से पृथक् कर दिया। इस प्रकार जटासुर को मार कर भीमसेन युधिष्ठिर के पास आये (३. १५७)।"

जटासुरसुत = अलम्बुष (७. १७४, ५)।

१. जटिन् = शिव (देखिये वस्था०)।

२. जटिन्, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१)।

जटिल = शिव (१३. १४०, ४८)।

जटिला, गोतम की एक स्त्री-वंशज का नाम है जो सात ऋषियों की

पत्नी हुई (१. १९९, १४)। द्रौपदी की पति-सेवा के विषय में इनका दृष्टान्त दिया गया (१२. ३८, ५)। देखिये **गौतमी**।

१. जठर, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ४२)।

२. जठर, एक वेदविद्या के पारंगत ब्राह्मण का नाम है जो जनमेजय के सर्पसत्र के सदस्य बने (१. ५३, ८)।

जतुगृहपर्वन्, महाभारत के आठवें अवान्तरपर्व का नाम है। "वैशम्पायन ने सौबल, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण और धृतराष्ट्र आदि की कुन्ती सहित पाण्डवों को लाक्षागृह में भस्म कर देने की दुरभिसंधि तथा पाण्डवों के उससे मुक्त हो जाने का संक्षेप में वर्णन किया। तदनन्तर जनमेजय के पूछने पर उन्होंने विस्तार से वर्णन आरम्भ किया: पाण्डवों ने जब जैसा संकट आया उसका निवारण किया और विदुर के परामर्श के अनुसार कभी भी कौरवों के षड्यन्त्रों का भंडा-फोड़ नहीं किया। उन पाण्डवों को सर्वगुणसम्पन्न देख कर नगरवासी जहाँ कहीं भी एकत्र होते वहीं युधिष्ठिर को राज्यप्राप्ति के योग्य बताते और कहते कि नेत्रहीन होने के कारण जब धृतराष्ट्र पहले ही राज्य नहीं प्राप्त कर सके तो अब वे कैसे राजा हो सकते हैं। दुर्योधन ने पुरवासियों की बात सुनकर राजा धृतराष्ट्र से कहा कि यदि युधिष्ठिर को राज्य मिल गया तो उसे (दुर्योधन को) सदैव के लिये राज्य से वंचित रह जाना होगा। साथ ही आगे भी युधिष्ठिर के ही वंशज राज्य के उत्तराधिकारी होते रहेंगे। इस प्रकार धृतराष्ट्र अथवा उनके पुत्रों को कभी भी राज्य नहीं मिल सकेगा (१. १४१)।" "दुर्योधन, कर्ण, शकुनि तथा दुःशासन ने परस्पर मन्त्रणा की जिसके पश्चात् दुर्योधन ने धृतराष्ट्र को इस बात के लिये सहमत कर लिया कि वे पाण्डवों से वारणावत जाने के लिये कहें। जब धृतराष्ट्र ने दुर्योधन के प्रस्ताव को मानने में कुछ संदेह प्रगट किया तो दुर्योधन ने कहा: 'भीष्म तो सदा ही मध्यस्थ हैं, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा मेरे पक्ष में हैं; द्रोणाचार्य उधर ही रहेंगे जिधर उनका पुत्र रहेगा; कृपाचार्य भी वहीं रहेंगे जहाँ द्रोण तथा अश्वत्थामा। विदुर हमारे आर्थिकबन्धन में हैं, यद्यपि वे प्रच्छन्न रूप से शत्रुओं के स्नेहपाश में आबद्ध हैं। फिर भी वे अकेले पाण्डवों के हित के लिये हमें बाधा पहुँचाने में समर्थ नहीं हो सकेंगे। इसलिये आप निश्चिन्त होकर पाण्डवों को वारणावत भेज दीजिये।' (१. १४२)।" "दुर्योधन तथा उसके छोटे भाइयों ने धन देकर और आदर-सत्कार द्वारा अमात्य आदि प्रकृतियों को क्रमशः अपने वश में कर लिया। इधर धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वारणावत जाकर उत्सव देखने का परामर्श दिया। युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र के अभिप्राय को जानकर भी उनकी आज्ञा का पालन करना स्वीकार कर लिया। तदनन्तर युधिष्ठिर ने भीष्म, विदुर, द्रोण, वाह्लिक, सोमदत्त, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, तथा अन्यान्य मन्त्रियों, ब्राह्मणों, और गान्धारी आदि से विनम्रतापूर्वक आशीर्वाद प्राप्त करके भ्राताओं सहित वारणावत नगर के लिये प्रस्थान किया (१. १४३)।" "दुर्योधन ने पुरोचन को आदेश दिया कि वे एक वेगशाली रथ पर बैठ कर उसी दिन वारणावत नगर जाँय और वहाँ एक लाक्षागृह का निर्माण करके पाण्डवों को कुन्ती सहित उसी में भस्म कर दें (१. १४४)।" "जब पाण्डव यात्रा के लिये प्रस्थित हुये तो नगरवासियों ने उनके लिये दुःख प्रगट करते हुये धृतराष्ट्र की भर्त्सना की परन्तु युधिष्ठिर ने पुरवासियों को समझा-बुझाकर शान्त किया। उस समय विदुर ने युधिष्ठिर को एक गुप्त भाषा में उपदेश दिया जिसे केवल युधिष्ठिर ही समझ सके—'प्राज्ञः प्राज्ञप्रलापज्ञः प्रलापज्ञमिदं वचः। प्राज्ञं प्राज्ञः प्रलापज्ञः प्रलापज्ञं वचोऽब्रवीत्'। युधिष्ठिर ने विदुर की बातों को समझ कर उसे कुन्ती को भी समझा दिया। तदनन्तर पाण्डवों ने फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र में यात्रा आरम्भ की (१. १४५)।" "वारणावत नगर के निवासियों ने पाण्डवों का हार्दिक स्वागत किया। पुरोचन ने पाण्डवों को एक सुन्दर भवन में ठहराया। दस दिनों तक उसी भवन में सुखपूर्वक निवास करने के पश्चात् पुरोचन ने पाण्डवों से एक नूतन गृह की चर्चा की जो कहने को तो 'शिवभवन' था परन्तु वास्तव में अशिव, अर्थात् अमंगलकारी, था। उस नूतन भवन में पहुँच कर युधिष्ठिर ने भीम से कहा: 'यह भवन तो अग्निप्रज्वलित करने वाली वस्तुओं से निर्मित प्रतीत होता है।' जब भीम ने उस भवन को छोड़ देने का परामर्श दिया तो युधिष्ठिर ने कहा: 'हम लोगों को यहाँ अपनी वाह्य चेष्टाओं से मन की बात प्रगट न करते हुये और यहाँ से भाग निकलने के लिये मनोनुकुल निश्चित मार्ग का पता लगाते हुये सावधानीपूर्वक यहीं रहना चाहिये।' तदनन्तर युधिष्ठिर ने उस भवन से बच निकलने के विषय पर वार्तालाप किया (१. १४६)।" "विदुर द्वारा भेजे हुये एक खनक ने आकर युधिष्ठिर को बताया कि पुरोचन उस लाक्षागृह में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को आग लगायेगा। तदनन्तर उसने उस लाक्षागृह के भीतर एक सुरंग खोद दी जिससे होकर उस गृह से बाहर निकला जा सकता था। विदुर के मन्त्री तथा उस खनक को छोड़ कर नगर का कोई भी व्यक्ति उस सुरंग के सम्बन्ध में कुछ भी जान नहीं पाया (१. १४७)।" "पाण्डव उस लाक्षागृह में एक वर्ष तक रहे। तदनन्तर एक दिन रात्रि के समय कुन्ती ने दान देने के निमित्त ब्राह्मण-भोजन कराया। उसी समय एक भीलनी अपने पाँच बेटों के साथ भोजन की इच्छा से वहाँ आई। मदिरा के नशे में होने के कारण वह भीलनी अपने पुत्रों के साथ उसी भवन में रात्रि के समय सो गई। रात्रि के समय पाण्डवों के निश्चयानुसार भीमसेन ने उस भवन में आग लगा दी और भ्राताओं तथा कुन्ती सहित स्वयं सुरंग के मार्ग से बाहर निकल गये। इस प्रकार भीलनी तथा उसके पाँच पुत्र और पुरोचन तो उसी भवन के साथ भस्म हो गये परन्तु पाण्डव बच निकले। नगरवासियों को वस्तुस्थिति का पता नहीं चला और उन्होंने समझा कि कुन्ती सहित पाँचों पाण्डव ही जल कर भस्म हो गये (१. १४८)।" "विदुर ने एक कुशल नाविक को पाण्डवों के पास भेजा। वह नाविक उन सब को नाव पर बैठाकर गंगा के उस पार ले गया (१. १४९)।" "सुरंग खोदनेवाले खनक ने सुरंग के छिद्र को धूल से ढँक दिया जिससे दूसरे लोग उसे देख नहीं सके। नगरवासियों ने भीलनी तथा उसके पाँच पुत्रों की भस्मराशि को कुन्ती और पाँचों पाण्डवों की भस्म राशि समझ कर अत्यधिक शोक प्रगट किया। फलस्वरूप धृतराष्ट्र के पास इस आशय का समाचार भेजा गया कि कुन्ती सहित पाण्डव तथा पुरोचन अग्नि में भस्म हो गये। धृतराष्ट्र ने पाण्डवों के लिये अत्यन्त शोक प्रगट करते हुये उनकी आत्मा को जलाञ्जलि दी। इधर पाण्डव भी गङ्गा पार करके रात्रि के सघन अन्धकार में चलते हुये दक्षिण की ओर स्थित एक घोर वन में पहुँचे। रात्रि के समय सतत् यात्रा करते रहने के कारण वे सब अत्यन्त थक गये थे। युधिष्ठिर ने भीम से निवेदन किया कि वे कुन्ती सहित सभी भ्राताओं को उठा कर चलें। भीम ने तदनुसार सब को उठा लिया और शीघ्रतापूर्वक चलने लगे (१. १५०)।" "भीमसेन के चलते समय उनके महान् वेग से आन्दोलित हो वैसे ही जोर-जोर से हवा चलने लगी जैसे ज्येष्ठ और आषाढ़ मास के सन्धिकाल में चलती है। भीम जिस मार्ग से चल रहे थे उसकी लताओं और वृक्षों को पैरों से रौंदते और धराशायी करते चलते थे। संध्या होते-होते वे सब वन के ऐसे भयंकर प्रदेश में जा पहुँचे जहाँ फल-मूल तथा जल अत्यन्त अल्प मात्रा में ही उपलब्ध था। फिर भी थके होने के कारण पाण्डवों ने उसी नीरस वन में एक विशाल पीपल के वृक्ष के नीचे विश्राम करने का निश्चय किया। कुन्ती उस समय प्यास से व्याकुल हो रही थीं, अतः भीम लगभग दो कोस (गव्यूति) जाकर अपने वस्त्र में पानी लाये। लौट कर जब भीम ने अपनी माता तथा भ्राताओं को थक कर भूमि पर सोते देखा तो अत्यन्त शोक करने लगे। उन्होंने मन ही मन कहा: 'पापाचारी दुर्योधन! मैं आज ही जाकर मंत्रियों, कर्ण, छोटे भाइयों और शकुनि सहित तुझे यमलोक भेज सकता हूँ; किन्तु क्या करूँ, युधिष्ठिर अब भी तुझ पर कोप नहीं कर रहे हैं।' इस प्रकार मन ही मन क्रोध से जलते हुये भीम वहीं बैठ कर और जागते हुये अपने भ्राताओं की रक्षा करने लगे (१. १५१)।"

जनक, मिथिला के एक अथवा एकाधिक राजाओं का नाम है। 'जनकस्याध्वरे', (१. २, १७४)। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, १९)।

अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने इन्हें पराजित किया (२. ३०, १३)। इनके द्वारा गाये गये कुछ श्लोकों का उद्धरण (३. २, २०)। 'जनकस्य तु राजर्षेः कूपः', (३. ८४, १११)। ३. १३२, ५.१५. २१. २३; १३३, ४ (जनकेन्द्रम्); १३४, २२. २४. २८. २९. ३२. ३४. ३६. ३७ (जनक के यज्ञ की घटनाओं का उल्लेख); १४८, ७ (सुतां जनकराजस्य सीताम्); २०७, ६. २८. २९. ३७ (जनक के पुण्यकर्मों का उल्लेख); २७४, ९ (ये सीता के पिता थे); ४. २१, १२; ६. २७, २० (कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः); १२. १७, १८ (इनके द्वारा गाई गई एक गाथा का उल्लेख); १८, ४. ३७ (तत्त्वज्ञो जनको राजा); २८, ३. ४; ९९, २. ३ (इनके और प्रतर्दन के बीच युद्ध); १०५–६ (क्षेमदर्शी का इनके साथ सम्बन्ध); १५९, १३ (इन्होंने लोभ पर विजय द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया); १७७, १५ (प्रतिष्ठिता महारण्यं जनकस्य निवेशनात्); १७८, १ (इनके द्वारा गाये गये पुरातन इतिहास का कथन); २१८, १. ३. १८. १९; २१९, १ (जनको जनदेवस्तु ज्ञपितः परमर्षिणा). २; २९०, ३; २९६, १. १०. ११. ३१. ३५; २९८, १, २. ४७; ३०२, ७. ८. १०; ३०५, १; ३०६, १; ३०८, ३८ (कराल); ३१०, ३. ४. ५; ३१४, १३; ३१८, १०९. ११२; ३१९, ३ (पञ्चशिखस्येह संवादं जनकस्य च). ४ (पंचशिख के साथ इनका संवाद); ३२०, ३. ४. ९. १८. २०; ३२५, ६. १९; ३२६, १. ६. १०. १४. २२; ३२७, ३२; ३६५, ३; १३. ४५, ६; ११५, ७३ (ये भी उन राजाओं में से एक थे जो कार्त्तिक मास में मांस-भक्षण नहीं करते थे); १६५, ५०। "ब्राह्मण ने कहा : एक समय राजा जनक ने किसी अपराध में पकड़े गये ब्राह्मण को अपने राज्य से बहिष्कृत कर दिये जाने का दण्ड दिया। राजा का आदेश सुन कर ब्राह्मण ने राजा से उनके देश की सीमा पूछा। ब्राह्मण के प्रश्न को सुन कर जनक अत्यन्त मोह में पड़ गये। थोड़ी देर चुप रहने के पश्चात् उन्होंने कहा : 'यद्यपि पूर्वजों के समय से ही मिथिला-प्रान्त के राज्य पर मेरा अधिकार है, तथापि विचार दृष्टि से देखने पर समस्त पृथिवी पर कहीं भी मुझे अपना देश दृष्टिगत नहीं होता।…… मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कहीं भी मेरा राज्य नहीं है, अथवा सर्वत्र मेरा ही राज्य है। एक दृष्टि से यह शरीर भी मेरा नहीं है, और दूसरी दृष्टि से यह समस्त पृथिवी ही मेरी है।……अतः हे द्विजोत्तम ! अब आपकी जहाँ इच्छा हो वहाँ रहिये।' ब्राह्मण के पूछने पर जनक ने बताया कि वे किस प्रकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे। उन्होंने कहा : 'मेरे समस्त कार्यों का आरम्भ देवता, पितर, भूत और अतिथियों के निमित्त होता है।' जनक की बातें सुनकर ब्राह्मण हँसा और फिर बताया कि वह स्वयं धर्म है जो राजा की परीक्षा लेने के लिये उपस्थित हुआ है (१४. ३२, १. २. ८. १५. २५)।" इन्होंने दान द्वारा परमसिद्धि प्राप्त की (१४. ९१, ३५)।

जनक के नामों के निम्न पर्याय भी देखिये :—

* **ऐन्द्रद्युम्नि** : ३. १३३, ४।

* **कराल, करालजनक**—देखिये वस्था०।

* **दैवराति** : १२. ३१०, ४।

* **धर्मध्वज** : १२. ३२०, ४।

* **मिथिलाधिप** : ३. २१८, १ (जनको मिथिलाधिपः); २९८, १ (जनको मिथिलाधिपः); ३१८, २ (= जनक दैवराति). ९७।

* **मिथिलाधिपति** : १२. ३१८, ९४।

* **मिथिलेश्वर** : १२. ३०६, १४; ३१७, ७; ३२०, ८. १२।

* **मैथिल** ३. १३४, ५; १२. ९९, १–३; १०६, २३; २१९, ५०. ५२; ३०७, ४१; ३०८, १९; ३१६, १०. १४; ३२०, ४. ११७. १२७. १६०. १७२. १८९।

* **विदेहराज, वैदेह**—देखिये वस्था०।

जनक (बहु० °काः), जनक के परिवार के लिये प्रयुक्त हुआ है (३. १३३, १७)।

जनकनृप, जनकराज—देखिये जनक।

जनकात्मज = वसुमत (१२. ३०९, १)।

जनकात्मजा = सीता (देखिये वस्था०)।

जनकेन्द्र—देखिये जनक।

जनजन्मादि = विष्णु (१,००० नाम)।

जनदेव (१२. २१८, ३; २६९, १)—देखिये जनक।

जनन = विष्णु (१,००० नाम)।

१. जनमेजय, माद्रवती से उत्पन्न राजा परिक्षित् का नाम है। इनकी पत्नी का नाम वपुष्टमा था। इनके सर्प-सत्र के समय वैशम्पायन ने सर्वप्रथम महाभारत का उच्चारण किया। १. १, ९. २०. ९७; २, ३३; ३, १ (पारिक्षितः). २. ४. ७. १० (श्रुतसेन, उग्रसेन, और भीमसेन आदि इनके भ्राताओं सहित इन्हें भी सरमा ने शाप दिया). १२. १४. १६. १९ (इन्होंने सोमश्रवा को अपना पुरोहित बनाया). ८२ (इन्होंने वेद को अपना उपाध्याय बनाया). १७१. १७५. १७६ (हस्तिनापुर आकर उत्तङ्क ने इन्हें यह स्मरण दिलाते हुये कि तक्षक नाग ने परिक्षित् को डँस लिया था, इनसे सर्प-पत्र का आयोजन करने के लिये कहा); ११, १८; १२, १; १३. १; १५, १ (इनके सर्पपत्र में सर्प भस्म हो जायेंगे); २०, ८; ३७, ९. ११; ३८, २; ४४, ६ (परिक्षित् के इन अल्पवयस्क पुत्र को राजा बनाकर काशिराज की कन्या, वपुष्टमा से इनका विवाह हुआ); ४९, १. ३. ५. १३. १९; ५०, १५ (इनके मन्त्रियों ने इन्हें बताया कि किस प्रकार तक्षक ने इनके पिता, परिक्षित् को डँसने के बाद काश्यप नामक ब्राह्मण को परिक्षित् की सहायता भी नहीं करने दिया). ३२. ४४. ४८ (इन्होंने मन्त्रियों से काश्यप तथा तक्षक के बीच हुई बातों और घटनाओं के सम्बन्ध में पूछने के पश्चात् अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने का निश्चय किया)। "जनमेजय ने सर्पसत्र के आयोजन के सम्बन्ध में ऋत्विजों से परामर्श किया। ऋत्विजों के कहने पर इन्होंने तदनुसार सर्पयज्ञ का अनुष्ठान करने की आज्ञा दी। यज्ञ के लिये जब यज्ञमण्डप का निर्माण कराकर ऋत्विजों ने इन्हें दीक्षा दी और यज्ञ प्रारम्भ करनेवाले ही थे कि वहाँ वास्तुशास्त्र के पराङ्गत विद्वान्, सूत्रधार शिल्पवेत्ता सूत ने उपस्थित होकर कहा : 'जिस स्थान पर और समय में यह यज्ञमण्डप मापने की क्रिया आरम्भ हुई उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि एक ब्राह्मण को निमित्त बनाकर यह यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकेगा।' यह सुनकर जनमेजय ने सेवकों को आज्ञा दे दिया कि उन्हें सूचित किये बिना किसी अपरिचित व्यक्ति को यज्ञमण्डप में प्रवेश न करने दिया जाय (१. ५१)।" १. ५३, १. १४; ५४, ७. २०. २७; ५५, १७; ५६, १. ४. ११. १२. १७. २१ (इन्होंने आस्तीक को एक वर माँगने के लिये कहा और आस्तीक ने इनसे सर्प-सत्र बन्द कर देने का वर माँगा); ५८, २. १० (इस प्रकार इनका यज्ञ रुक गया). २५; ५९, ६; ६०, १. ७. ८. १०. १४. १७. १८ (जनमेजय के पूछने पर सर्पसत्र के समय व्यास ने वैशम्पायन से महाभारत सुनाने के लिये कहा); ६२, १ (इन्होंने विस्तार के साथ महाभारत सुनने की इच्छा प्रगट की); ६४, १; ६५, ७; ६७, १. ९२; ६८, १; ६९, १; ७४, २; ७५, ८; ७६, १. ४; ८६, ६; ९४, १. १८; ९५, १ (ये परिक्षित् और माद्रवती के पुत्र, वपुष्टमा के पति तथा शतानीक और शङ्कुकर्ण के पिता थे); १०२, २२; १०७, १; ११६, १; ११७, १; ११८, १; १२३, १; १३०, १. ३१; १४१, १७; १५७, १; १६५, १; १८५, १. ९; २०८, १; २१४, ७; २१८, १३. १६; २२०, १; २२१, २५; २२३, १२; २२९, १; २३२, २५; २. १२, ३३; २१, ३२; २६, १; २९, ११; ३१, २५. २६. ७८; ५०, १; ७४, १; ३. १, १; ३, १३; ३८, १; ४८, १; ५०, १; ५२, १; ८०, १. ७; ९३, २९; ११४, १; ११९, १; १७५, १०; १७६, १; १७८, १; १८२, १६; २३६, १; २३७, २३; २३९, १; २४७, १; २५३, १; २५८, १; २६२, १; २७३, १; ३००, १; ३०३, १; ३१०, ४१; ३११, १; ४. १, १; ९, ३७; १३, १; १४, २; ८४, ३; १०६, १; १५३, १; १५७, १; १५९, १; ६. १, १; ७. १, १; ८. १, १८; ४, १५; ८, १; ९. १, १. २४; ३५, १. ३८. ४३. ९०; ३६, ५; ३७, १५. ३९. ५४; ३८, १; ३९, ८; ४०, १; ४१, १९; ४२, १; ४३, ३२. ४३; ४४, १. ४; ४५, ७८. ७९; ४७, १. १६; ४८, ६३;

४९, १५; ५०, ९. १९; ५१, ४; ५२, १; ५४, १; ५५, १; ५६, १; ६३, १; १०. ११, १; ११. ९, १; १२. ४५, १; ४७, १; ५४, १; १७३, २६; २८४, १; ३३९, १३३. १३९; ३४०, ५. ६. ७; ३४१, १; ३४३, ९; ३४७, १०; ३४८, १. ७७. ७९; ३४९, १. ६; ३५०, १; १३. १६६, १; १४. १५, १; १६, १; ५५, १०; ५६, १. २. ३. ३०; ५७, २०; ५८, ३५. ५२. ५८. ५९; ५९, १; ६३, १; ६६, ८; ९०, १; ९१, १; ९२, १. ३७. ३९; १५. १, १; १३, १५; २९, १. ३५; ३३, ६; ३४, १. ३; ३५, ४. ७. ९. १७ ((इनकी प्रार्थना पर व्यास ने इन्हें इनके पिता का दर्शन कराया); ३६, १; १६. १, १२. १४; ७, ६३; १७. १, १; १७. १, १. २५। "सौति ने कहा : यज्ञकर्म के बीच-बीच में जो अवसर प्राप्त होते थे उन्हीं में इस महाभारत के आख्यान को सुनकर राजा जनमेजय को बड़ा आश्चर्य हुआ। तदनन्तर उनके पुरोहितों ने यज्ञकर्म सम्पन्न कराया। सर्पों को प्राण संकट से मुक्त करा कर आस्तीक मुनि को भी अत्यन्त प्रसन्नता हुई। ब्राह्मण आदि को दक्षिणा देने के बाद राजा जनमेजय तक्षशिला से हस्तिनापुर चले आये (१८. ५, ३१-३४)।" १८, ६. १-२।

जनमेजय के निम्न पर्याय भी मिलते हैं :—

***कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलोद्वह, कुरुनन्दन, कुरुपुङ्गवाग्रज, कुरुप्रवीर, कुरुसत्तम, कुरुशार्दूल, कुरुश्रेष्ठ, कुरूद्वह, कौरव, कौरवनन्दन, कौरव्य, कौरवशार्दूल, कौरवेन्द्र**—देखिये वस्था०।

***पाण्डव, पाण्डवनन्दन, पाण्डवेय**—देखिये वस्था०।

***पारिचित्** : १. २, ९१ (सर्पसत्रेण राज्ञः पारिक्षितस्य); ३, १. १२. १४; ५१, २; ५३, १०. २३; ५५, १-७; ५६, २२. २५; ५८, १. १० (पाण्डवेयस्य राज्ञः); ६२, ५१; ३. ११८, २; १२. ३४३, ७; ३४७, ९।

***पौरव**—देखिये वस्था०।

***भरतर्षभ, भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भरतसत्तम, भारत, भारताग्र्य**—देखिये वस्था०।

२. जनमेजय, एक अथवा एकाधिक प्राचीन राजाओं का नाम है। संजय ने मृत राजाओं के अन्तर्गत इनकी गणना कराई (१. १, २८८)। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, २३)। (मान्धाता ने इन्हें पराजित किया (७. ६२, १०)। इन्होंने तीन रात्रियों में ही संसार को विजित कर लिया (१२. १२४, १६)। इन्होंने ब्राह्मण के लिये अपने शरीर का दान करके स्वर्ग प्राप्त किया (१२. २३४, २४)। 'शक्रस्योद्गम्य चरणं प्रस्थितो जनमेजयः। द्विजस्त्रीणां वधं कृत्वा किं दैवेन न वारितः ॥', (१३. ६, ३६)। 'सावित्रः कुण्डलं दिव्यं यानं च जनमेजयः। ब्राह्मणाय च गा दत्वा गतो लोकाननुत्तमान् ॥', (१३. १३७, ९)।

३. जनमेजय, महाभारत युद्ध के समकालीन एक राजा का नाम है (१. ६७, ६२)। उन राजाओं में एक यह भी थे जिन्हें पाण्डवों की ओर से रण-निमन्त्रण भेजना था (५. ४, १६)।

४. जनमेजय, कुरु और वाहिनी के पांचवे पुत्र का नाम है (१. ९४, ५१)।

५. जनमेजय, पूर्वकालीन परिक्षित् के पुत्र का नाम है (१. ९४, ५३)। इनके पुत्र का नाम धृतराष्ट्र (पूर्वकालीन) था (१. ९४, ५५)।

६. जनमेजय, पूरु और कौशल्या के पुत्र, अनन्ता के पति, और प्राचिन्वान् के पिता का नाम है (१. ९५, ११. १२)।

७. जनमेजय, नीपों के एक राजा का नाम है (५. ७४, १३)।

८. जनमेजय, युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित एक अथवा एकाधिक पाञ्चाल राजाओं का नाम है : ७. २३, ५१; १५८, ३९; १६७, २२; १८४, ५; ८. ४८, २०; ४९, ३५; ५६, ६५; ७३, १०४; ८२, २. १६। तुकी० **पाञ्चाल्य**।

९. जनमेजय, युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित पर्वतीय राजा का नाम है जिनका दुर्मुख ने वध किया (८. ६, १९)।

१०. जनमेजय—इन्द्रोत-पारीक्षितीय : १२. १५०, २. ३. ७; १५१, १. १५; १५२, ४. ८. ३८ (जनमेजय ने एक ब्राह्मण का वध कर दिया परन्तु इन्द्रोत शौनक ने उन्हें प्रायश्चित् का उपाय बताया। तदनन्तर इन्द्रोत ने उनके अश्वमेध यज्ञ में सहायता दी)।

जनमेजय (बहु० °याः)—यम की सभा में अस्सी जनमेजयों की उपस्थिति (२. ८, २३)।

१. जनार्दन = कृष्ण (विष्णु) : देखिये वस्था०।

२. जनार्दन (बहु० °नाः) : १०. ६, १८।

जनार्दनि = प्रद्युम्न : ३. १८, ७।

जनस्थान, एक स्थान का नाम है जहाँ से रावण ने सीता का हरण किया था (३. १४७, ३३; २७७, ४२)। यहाँ राम ने राक्षसों का वध किया था (७. ५९, ३. १८)। यहाँ श्रीराम ने जिस राक्षस का वध किया उसका मस्तक महोदर की जाँघ पर जाकर गिरा (९. ३९, १०)। यह एक तीर्थ का नाम है (१३. २५, २९)।

जनेश्वर = विष्णु (१,००० नाम)।

जन्तु, राजा सोमक के पुत्र का नाम है (३. १२७, ४. ६. ७. १४. १९. २१; १२८, २. ८)।

जन्तूपाख्यान (जन्तु से सम्बद्ध उपाख्यान्)—'जन्तूपाख्यानमत्रैव यत्र पुत्रेण सोमकः', (१. २, १७२)। "युधिष्ठिर के पूछने पर लोमश ने कहा : राजा सोमक के सौ रानियाँ थी परन्तु दीर्घकाल तक वे उन रानियों के गर्भ से कोई भी पुत्र न प्राप्त कर सके। अन्त में जब वे रानियों सहित अत्यन्त वृद्ध हो गये तब उनकी एक रानी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम जन्तु रखा गया। उसके जन्म लेने के पश्चात् सभी मातायें काम-भोग की ओर से मुख मोड़कर सदा उस बच्चे को घेरकर बैठी रहती थीं। एक दिन एक चींटी ने जन्तु के कटि भाग में डस लिया जिसकी पीड़ा से वह बालक रोने लगा। उस समय उसकी मातायें भी जोर-जोर से रोने लगी। रानियों का आर्तनाद सुनकर जब राजा सोमक ने समस्त वृत्तान्त का पता लगाया तो उन्हें अपने एकमात्र पुत्र के कष्ट पर अत्यन्त चिन्ता होने लगी। उन्होंने अपने ऋत्विज से किसी ऐसे यज्ञ अथवा कृत्य के संबन्ध में पूछा जिससे उन्हें सौ पुत्र प्राप्त हो सकें। ऋत्विज ने तब, पहले राजा से पुत्र प्राप्ति का कर्म सम्पन्न कराने का आश्वासन लिया, और उसके पश्चात् कहा : 'मैं एक यज्ञ आरम्भ करूँगा जिसमें तुम अपने पुत्र जन्तु की आहुति देकर यजन करो। जिस समय तुम्हारे पुत्र जन्तु के चर्बी की आहुति दी जायगी, उस समय उसके धूम को सूँघ लेने पर तुम्हारी समस्त रानियाँ गर्भवती होकर पराक्रमी पुत्रों को जन्म देंगी। तुम्हारा पुत्र जन्तु भी पुनः अपनी माता के ही पेट से उत्पन्न होगा और उसके बायीं पसली में एक सुनहरा चिन्ह बना रहेगा' (३. १२७)।" "राजा की सहमति मिल जाने पर ऋत्विज ने सोमक से जन्तु की बलि दिलवाकर यज्ञ को प्रारम्भ किया। उस समय राजा सोमक की समस्त रानियाँ आर्तनाद कर उठीं परन्तु इसके विपरीत भी जन्तु की बलि देकर यज्ञ सम्पन्न हुआ। विधिपूर्वक जन्तु की चर्बियों की आहुति के समय सोमक की समस्त रानियाँ गन्ध-धूम को सूँघकर गर्भवती हो गईं। दस मास व्यतीत होने पर उन सौ रानियों के गर्भ से सोमक के सौ पुत्र उत्पन्न हुए। ज्येष्ठ पुत्र जन्तु अपनी माता के ही गर्भ से उत्पन्न हुआ और वही सब रानियों का विशेष प्रिय भी बना। जन्तु की दाहिनी पसली में पूर्वोक्त सुवर्ण चिन्ह था और वह अन्य पुत्रों की अपेक्षा अवस्था तथा गुण में भी श्रेष्ठ सिद्ध हुआ। तदनन्तर कुछ काल के पश्चात् सोमक के पुरोहित, और उनके भी कुछ दिनों के बाद राजा सोमक परलोकवासी हो गये। यमलोक में पहुँच कर सोमक ने देखा कि उनके पुरोहित घोर नरक की अग्नि में दग्ध हो रहे हैं। राजा के पूछने पर पुरोहित ने बताया कि उनका ही यज्ञ करवाने के पाप के कारण उन्हें यह यातना सहन करनी पड़ रही है। द्रवित होकर राजा ने धर्मराज से निवेदन किया कि वह पुरोहित के स्थान पर स्वयं राजा को ही दण्ड दें। धर्म ने कहा : 'कर्ता के अतिरिक्त अन्य कोई उसके किये हुये कर्मों का फल नहीं भोगता।' धर्म की बात सुन कर राजा सोमक ने पुरोहित के साथ रह कर ही यातना सहन करने का निश्चय किया। धर्मराज ने राजा

की बात सुनकर कहा : 'यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो पुरोहित के साथ रहकर उतने ही समय तक तुम भी पाप-कर्मों का फल भोगो। इसके बाद तुम्हें उत्तम गति प्राप्ति होगी।' तब सोमक ने धर्मराज के कथनानुसार समस्त कार्य किये और भोग द्वारा पाप नष्ट हो जाने पर पुरोहित के साथ नरक से मुक्त हो गये। लोमश ने पाण्डवों को बताया कि उन्हीं सोमक के पवित्र आश्रम में छः रात निवास करने से मनुष्य उत्तम गति प्राप्त कर लेता है। अतः लोमश ने पाण्डवों को वहाँ छः रात तक मन और इन्द्रियों पर संयम रखते हुए निवास करने का आदेश दिया (३. १२८)।"

जन्ममृत्युजरातिग = विष्णु (१,००० नाम)।

जन्य = शिव (१,००० नाम)।

जमदग्नि, एक ऋषि का नाम है। ये ऋचीक के पुत्र थे (१. ६६, ४७)। ये चार पुत्रों के पिता हुये जिनमें परशुराम सबसे छोटे थे (१. ६६, ४८)। 'और्वस्यासीत्पुत्रशतं जमदग्निपुरोगमम्', (१. ६६, ४९)। उन सात ऋषियों में एक यह भी थे जो अर्जुन के जन्मोत्सव के समय उपस्थित हुये (१. १२३, ५१)। ब्रह्मा की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ११, २२)। 'वेदी शूर्पारके तात जमदग्नेर्महात्मनः', (३. ८८, १२)। 'ऋषिर्महान्महाभागो जमदग्निर्महायशाः। पलाशकेषु पुण्येषु रम्येष्वयजत प्रभुः॥', (३. ९०, १६)। 'यजमानस्य वै देवाञ्जमदग्नेर्महात्मनः', (३. ९०, १९)। "इसी समय (देखिये अर्जुन कार्तवीर्य) कान्यकुब्ज देश के राजा गाधि के, जो वनवास कर रहे थे, एक कन्या, सत्यवती, ने जन्म लिया। विवाह के योग्य होने पर इस कन्या को भृगुपुत्र ऋचीक मुनि ने पत्नी के रूप में ग्रहण किया। उस समय राजा गाधि ने ऋचीक से अपनी कन्या के लिये एक सहस्र श्यामकर्ण अश्व माँगे। तब ऋचीक ने वरुण से इस प्रकार के श्यामकर्ण अश्व लेकर गाधि को समर्पित कर दिया और गङ्गातट पर कान्यकुब्ज नगर में सत्यवती के साथ विवाह किया। उस समय देवता बराती थे। विवाह के पश्चात् पत्नी सहित ऋचीक को देखने के लिये महर्षि भृगु उनके आश्रम पर आये। सत्यवती से प्रसन्न होकर भृगु ने उसे पुत्र प्राप्ति का वर देते हुये कहा : 'ऋतुकाल में स्नान करने के पश्चात् तुम और तुम्हारी माता पुत्र-प्राप्ति के लिये दो भिन्न-भिन्न वृक्षों का आलिङ्गन करें। तुम्हारी माता पीपल के वृक्ष का और तुम उदुम्बर वृक्ष का आलिङ्गन करना। मैंने विराट् पुरुष का चिन्तन करके तुम लोगों के लिये दो चरु तैयार किये हैं। तुम दोनों अपने-अपने चरु का भक्षण करना।' इतना कह कर भृगु अन्तर्धान हो गये। इधर सत्यवती और उसकी माता ने वृक्षों के आलिङ्गन तथा चरु-भक्षण में उलट-फेर कर दिया। भृगु अपनी दिव्यज्ञान शक्ति से सब बातें जानकर पुनः वहाँ आये। भृगु ने अपनी पुत्रवधू, सत्यवती, से कहा : 'तुमने चरुभक्षण और वृक्षों के आलिङ्गन में जो उलट-फेर कर दिया है उसके कारण तुम्हारा पुत्र ब्राह्मण होकर भी क्षत्रियोचित आचार-विचार वाला, तथा तुम्हारी माता का पुत्र क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणोचित आचार का पालन करनेवाला होगा।' तब सत्यवती के बारंबार प्रार्थना करने पर भृगु ने उसे यह वर दिया कि उसका पुत्र नहीं वरन् पौत्र क्षत्रिय स्वभाव वाला हो। तत्पश्चात् सत्यवती ने जमदग्नि नामक पुत्र को जन्म दिया जो बड़े होकर वेदाध्ययन में अन्य अनेक ऋषियों से आगे बढ़ गये। जमदग्नि की बुद्धि में सम्पूर्ण धनुर्वेद तथा चारों प्रकार के अस्त्र स्वतः स्फुरित हो गये (३. ११५, १९-४५)।" "जमदग्नि ने वेदाध्ययन में तत्पर होकर तपस्या आरम्भ की। उन्होंने शौच-सन्तोष आदि नियमों का पालन करते हुये सम्पूर्ण देवताओं को अपने वश में कर लिया। फिर राजा प्रसेनजित् के पास जाकर जमदग्नि ने उनकी पुत्री, रेणुका, को पत्नी के रूप में प्राप्त किया और अपने आश्रम पर रह कर उसके साथ तपस्या करने लगे। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिये नदी तट पर गई। जब वह स्नान करके लौटने लगी तब उसकी दृष्टि मार्तिकावत देश के राजा चित्ररथ पर पड़ी जो अपनी पत्नी के साथ जल में क्रीड़ा कर रहे थे। उस समृद्धिशाली नरेश को देखकर रेणुका ने उसकी इच्छा की। रेणुका के लौटने पर जमदग्नि सब बातें जान गये। इसी समय जमदग्नि के ज्येष्ठ पुत्र रुमण्वान्, और फिर क्रमशः सुषेण, वसु, तथा विश्वावसु वहाँ आ गये। जमदग्नि ने बारी-बारी से अपने इन सभी पुत्रों को रेणुका का वध करने की आज्ञा दी, परन्तु मातृ-स्नेह उमड़ आने से वे कुछ भी बोल नहीं सके। इस पर क्रुद्ध होकर जमदग्नि ने इन पुत्रों को शाप दिया जिससे सब अपनी चेतना खो कर मृग एवं पक्षियों के समान जड़-बुद्धि हो गये। इसके बाद अपने सबसे छोटे पुत्र, परशुराम, के आश्रम पर आने पर जमदग्नि ने उन्हें भी वही आज्ञा दी जिसका पालन करते हुये उन्होंने कुठार से अपनी माता रेणुका का मस्तक काट दिया। इससे प्रसन्न हो कर जमदग्नि ने परशुराम को वर देने की इच्छा प्रगट की। परशुराम ने अपनी माता के जीवित तथा चारों ज्येष्ठ भ्राताओं के स्वस्थ हो जाने का वर माँगा। उन्होंने यह भी कहा कि माता को उनके द्वारा मारे जाने की बात का स्मरण न रहे, और वे स्वयं इतने शक्तिशाली हो जायँ की युद्ध में कोई उनका सामना न कर सके। जमदग्नि ने परशुराम को ये सब वर प्रदान किये। एक दिन जब जमदग्नि के समस्त पुत्र आश्रम से बाहर गये हुये थे, तो अर्जुन कार्तवीर्य वहाँ आये। ऋषिपत्नी रेणुका के सत्कार को ग्रहण न कर अर्जुन कार्तवीर्य ने मुनि का आश्रम तहस-नहस कर डाला और उनकी होमधेनु के बछड़े का हरण कर लिया। परशुराम के लौटने पर जमदग्नि ने उनसे सारी बातें कहीं। परशुराम ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अर्जुन कार्तवीर्य पर आक्रमण कर दिया। तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से परशुराम ने अर्जुन की सहस्र-भुजाओं को काट कर अन्ततः उसका वध कर डाला। पिता की मृत्यु से अर्जुन के पुत्र परशुराम पर कुपित हो उठे और परशुराम की अनुपस्थिति में आश्रम पर आ कर जमदग्नि की हत्या कर दी। ब्राह्मण होने के कारण जमदग्नि युद्ध में प्रवृत्त नहीं हुये और राम, राम, चिल्लाते रहे। कार्तवीर्य अर्जुन के पुत्रों के चले जाने के पश्चात् परशुराम ने आश्रम पर आकर पिता को मृत अवस्था में देखा (३. ११६)।" ७. १९०, ३३; १२. ४९, २९ (ये सत्यवती से उत्पन्न ऋचीक के पुत्र थे). ३१ (ये परशुराम के पिता थे). ४६. ५० (अर्जुन कार्तवीर्य के पुत्रों ने इनका वध कर दिया); २०८, ३४ (उत्तर दिशा के ऋषियों के अन्तर्गत इनका उल्लेख); २९२, १६ (इन्होंने विष्णु की स्तुति की थी); १३. ४, ४६ (इनका जन्म); २५, ४८ (महाह्रद में स्नान करने से मनुष्य को इनकी गति मिलती है); ५६, ९ (ये ऋचीक के पुत्र हो कर धनुर्वेद के ज्ञाता होंगे); ९३, २१. ४८. ६८. ९८ (इनके नाम की व्युत्पत्ति). १२४; ९४, ४. २५; ९५, ६; ९६, १. २. ५. ८ (सूर्य ने इन्हें एक छत्र और उपानह प्रदान किया); १०६, ६९ (उन ऋषियों में एक यह भी थे जिन्होंने उपवास द्वारा दिव्यलोक प्राप्त किया था); १२७, १७; १५०, ३९ (उत्तर में धनेश्वर के गुरुओं में एक यह भी थे); १६५, ४४ (उत्तर के ऋषियों में से एक); १४. २९, ७ (ये परशुराम के पिता थे)। "पूर्वकाल की बात है, एक दिन जमदग्नि ऋषि ने श्राद्ध करने का संकल्प किया। उस समय उनकी होमधेनु स्वयं ही उनके पास आई और मुनि ने स्वयं उसका दोहन किया। जमदग्नि ने जिस पात्र में दूध रक्खा उसमें क्रोध का रूप धारण करके धर्म ने प्रवेश किया। धर्म जमदग्नि की परीक्षा लेना चाहते थे इसीलिये क्रोध के स्पर्श से उन्होंने दूध को दूषित कर दिया। जमदग्नि ने उस क्रोध को पहचान लिया किन्तु उस पर क्रुद्ध नहीं हुये। तब क्रोध ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और जमदग्नि से कहा : 'मैंने सुना था कि भृगुवंशी ब्राह्मण अत्यन्त क्रोधी होते हैं; परन्तु यह प्रवाद आज मिथ्या सिद्ध हुआ क्योंकि आपने मुझे जीत लिया। मैं आज आपके वश में हूँ, अतः आप मुझे क्षमा करें।' क्रोध की बात सुनकर जमदग्नि ने कहा : 'मैंने पितरों के लिये इस दूध का संकल्प किया है वे ही इसके स्वामी हैं, अतः तुम उन्हीं के पास जाओ।' जमदग्नि के कहने पर क्रोध रूपी धर्म भयभीत होकर वहाँ से अदृश्य हो गये और पितरों के शाप से उन्हें नेवला बनना पड़ा। शाप का अन्त होने के उद्देश्य से जब धर्म ने पितरों को प्रसन्न किया तब पितरों ने कहा : 'धर्मराज युधिष्ठिर पर आक्षेप करके इस शाप से मुक्त हो जाओगे।' तदनन्तर वह युधिष्ठिर की निन्दा के उद्देश्य से उनके यज्ञ में पहुँचा। वहाँ युधिष्ठिर पर आक्षेप करते

हुये एक सेर सत्तू के दान का माहात्म्य बताकर क्रोधरूपधारी धर्म शाप से मुक्त हो गया (१४. ९२, ४१-५३)।" तुकी० **आर्चीक, ऋचीकतनय, ऋचीकपुत्र, भार्गव, भार्गवनन्दन, भृगुशार्दूल, भृगुश्रेष्ठ, भृगूत्तम।**

जमदग्निसुत = १. राम (५. १७६, ३४)।

१. जम्बुक, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७४)।

जम्बुपर्वत—'अष्टादश सहस्राणि योजनानि विशाम्पते। पट्शतानि च पूर्णानि निष्कम्भो जम्बुपर्वतः ॥', (६. ११, ५)।

जम्बू—"नीलगिरि के दक्षिण और निषध के उत्तर सुदर्शन नामक जम्बू-वृक्ष है जो सदा स्थिर रहनेवाला है। वह समस्त मनोवाञ्छित फलों को देनेवाला, पवित्र, तथा सिद्धों और चारणों का आश्रय है। उसी के नाम पर यह सनातन प्रदेश जम्बूद्वीप के नाम से विख्यात है। उस वृक्षराज की ऊँचाई ग्यारह सौ योजन है जो स्वर्गलोक को स्पर्श करती प्रतीत होती है। उसके फलों में जब रस आ जाता है तब वे अपने आप टूट कर गिर जाते हैं। उन फलों की लम्बाई ढाई हज़ार अरत्नि मानी गई है। वे फल इस पृथिवी पर गिरते समय भारी धमाके की आवाज़ करते हैं और भूतल पर सुवर्ण सदृश रस बहाया करते हैं। उस जम्बू के फलों का रस नदी के रूप में परिणत होकर मेरुगिरि की प्रदक्षिणा करता हुआ उत्तरकुरुवर्ष में पहुँचता है। फलों के उस रस का पान कर लेने पर वहाँ के निवासियों के मन में पूर्ण शान्ति और प्रसन्नता रहती है। उन्हें पिपासा अथवा वृद्धावस्था कभी नहीं सताती। उस जम्बू नदी से जाम्बू नामक सुवर्ण प्रगट होता है जो देवताओं का आभूषण है। वह इन्द्रगोपक के समान लाल और अत्यन्त चमकीला होता है (६. ७, १९-२६; देखिये गीताप्रे० सं० २. २८, ६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृष्ठ ७४७ भी)।" 'मेरोरग्रे यद्वनं भाति रम्यं सुपुष्पितं किन्नरीगीतजुष्टम्। सुदर्शना यत्र जम्बूर्विशाला तत्र त्वाहं तस्तिनं यातयिष्ये ॥', (१३. १०२, २०)।

जम्बूक, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७६)।

जम्बूखण्ड = जम्बूद्वीप (६. ६, ३२; ११, १)।

जाम्बूखण्डविनिर्माण, जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. २, ६७. २४५)।

जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वन्, महाभारत के ६७ वें अवान्तर पर्व का नाम है। "जनमेजय ने पूछा कि कौरवों, और पाण्डवों तथा सोमकों ने कुरुक्षेत्र में किस प्रकार युद्ध किया। वैशम्पायन ने युद्ध का वर्णन आरम्भ किया। पाण्डवों के योद्धा कौरवों की सेना के सम्मुख जाकर पश्चिमभाग में पूर्वाभिमुख होकर ठहर गये। सूर्य जम्बूद्वीप के जितने भाग को अपनी किरणों से तपाते हैं उतनी दूर की सेनायें युद्ध के लिये आ गईं। युधिष्ठिर और दुर्योधन ने अपनी-अपनी सेनाओं के लिये संकेत-चिन्ह निश्चित किये। दुर्योधन (वर्णन) को देखकर पाञ्चालों ने प्रसन्न हो शंख बजाये। अर्जुन और कृष्ण ने भी क्रमशः अपने-अपने देवदत्त तथा पाञ्चजन्य नामक शंख बजाये जिसे सुनकर कौरव सशंकित हो उठे। उस समय प्रकृति में अनेक अपशकुन प्रकट हुये। दोनों ही दलों ने युद्ध सम्बन्धी नियम बनाये तथा युद्ध-धर्म की मर्यादा स्थापित की (६. १)।" "व्यास ने धृतराष्ट्र के पास आकर उन्हें दिव्य नेत्र प्रदान करने के लिये कहा जिससे वे युद्ध के दृश्य को देख सकें, परन्तु धृतराष्ट्र ने अपने बन्धु-बान्धवों के संहार को देखने की इच्छा प्रगट नहीं की। तब व्यास ने संजय को दिव्य नेत्र प्रदान करते हुये कहा : 'संजय आपको (धृतराष्ट्र को) दिव्य दृष्टि से सम्पन्न होकर युद्ध की बातें बतायेंगे। कोई भी बात प्रगट हो या अप्रगट, दिन में हो या रात में, अथवा मन में ही क्यों न सोची गई हो, संजय सब कुछ जान लेंगे। इन्हें कोई शस्त्र काट नहीं सकेगा। इन्हें परिश्रम या थकावट की बाधा भी नहीं होगी। यह युद्ध से भी जीवित बच रहेंगे।' तदनन्तर व्यास ने धृतराष्ट्र को अपशकुनों के सम्बन्ध में बताते हुये उनसे शान्ति का वरण करने के लिये कहा। इस पर धृतराष्ट्र ने कहा कि उनके पुत्र उनके वश में नहीं हैं। व्यास ने उन शकुनों का वर्णन किया जो विजयसूचक होते हैं। इसके बाद उन्होंने पाण्डवों के साथ समझौता कर लेने के लिये कहा क्योंकि कौरवों की विजय अनिश्चित प्रतीत हो रही थी (६. २-३)।" "व्यास इस प्रकार उपदेश देकर वहाँ से चले गये। तब धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा : 'ये अनेक शूरवीर इस भूमि के लिये ही अपने जीवन का बलिदान करने वाले हैं।...मैं ऐसा मानता हूँ कि यह भूमि बहुसंख्यक गुणों से विभूषित है। इसलिये, हे संजय ! तुम मुझसे इस भूमि के गुणों का वर्णन करो। साथ ही कुरुक्षेत्र में जो असंख्य वीर एकत्र हैं, उनके देशों और नगरों के यथार्थ परिमाण आदि के सम्बन्ध में भी मैं सुनना चाहता हूँ।' तब संजय ने भूमि के विभिन्न गुणों तथा पृथिवी पर निवास करनेवाले विभिन्न प्राणियों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि स्थावर-जङ्गमरूप उन्नीस प्राणी हैं। इनके साथ पञ्चमहाभूतों को भी गिन लेने पर सबकी संख्या चौबीस हो जाती है। गायत्री के भी चौबीस अक्षर हैं। इसलिये इन चौबीस भूतों को भी लोकसम्मत गायत्री कहा गया है। संजय ने यह भी कहा कि जिसके अधिकार में भूमि है, उसी के अधिकार में सम्पूर्ण चराचर जगत् है। इसलिये भूमि के प्रति आसक्ति रखने वाले राजा एक दूसरे को मारते हैं (६. ४)।" "धृतराष्ट्र ने पृथिवी के पर्वतों, नदियों तथा प्रदेशों के नाम और परिमाण आदि का वर्णन करने के लिये संजय से अनुरोध किया। संजय ने पञ्चमहाभूतों का वर्णन करते हुये पृथिवी को उसमें सर्वप्रमुख बताया। तदनन्तर उन्होंने सुदर्शन द्वीप का संक्षिप्त वर्णन किया (६. ५)।" "धृतराष्ट्र के पूछने पर और विस्तार से वर्णन करते हुये संजय ने कहा : पूर्व दिशा से पश्चिम की ओर विस्तृत छः वर्ष पर्वत हैं जो दोनों ओर, पूर्व तथा पश्चिम में, समुद्र में प्रविष्ट हैं। इन पर्वतों के नाम ये हैं : हिमवान्, हेमकूट, निषध, वैदूर्यमणि, नीलगिरि, श्वेतगिरि, तथा शृङ्गवान्। ये छः पर्वत सिद्धों और चारणों के निवासस्थान हैं। इनके बीच के सहस्रों योजन के विस्तार में भिन्न-भिन्न वर्ष और उनमें पवित्र जनपद हैं। इन्हीं में से एक भारतवर्ष है। इसके बाद हिमालय से उत्तर हैमवतवर्ष है। हेमकूट से आगे हरिवर्ष है। नीलगिरि के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर-पूर्व से पश्चिम की ओर फैला हुआ माल्यवान् नामक पर्वत है। माल्यवान से आगे गन्धमादन है। इन दोनों के बीच सुवर्णमय मेरु पर्वत है जो प्रातःकाल के सूर्य के समान प्रकाशमान और अग्नि के समान कान्तिमान है—विस्तृत वर्णन। मेरु के पार्श्व भाग में ये चार द्वीप बसे हैं : भद्राश्व, केतुमाल, जम्बूद्वीप तथा उत्तर कुरु। इस पर्वत पर सुनहरे शरीर वाले कौवों को देखकर सुमुख नामक पक्षी ने इसका त्याग कर दिया। इस पर्वत पर देवता, गन्धर्व, असुर, राक्षस, तथा अप्सरायें क्रीडा करती रहती हैं। ब्रह्मा, रुद्र, तथा इन्द्र इस पर एकत्र हो नाना प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान करते हैं। उस समय तुम्बुरु, नारद, विश्वावसु, हाहा-हूहू नामक गन्धर्व इन देवेश्वरों की स्तुति करते हैं। सप्तर्षि और कश्यप प्रत्येक पर्व पर इस पर्वत पर पधारते हैं। इसी मेरुपर्वत के शिखर पर दैत्यों के साथ शुक्राचार्य निवास करते हैं। ये सब रत्न और रत्नमय पर्वत शुक्राचार्य के ही अधिकार में हैं। कुबेर उन्हीं से धन का चतुर्थ भाग प्राप्त करते हैं और सोलहवाँ भाग मनुष्यों को देते हैं। सुमेरु के उत्तर में कर्णिकार वन है जहाँ दिव्य भूतों से घिरे हुये पशुपति कनेर की माला धारण किये हुये भगवती उमा के साथ विहार करते हैं। उनके तीनों नेत्रों द्वारा ऐसा प्रकाश फैलता है मानों तीन सूर्य उदित हुये हों। सिद्ध पुरुष ही वहाँ भगवान् पशुपति का दर्शन करते हैं। दुराचारी लोगों को उनका दर्शन नहीं हो सकता। उस सुमेरु के शिखर से गङ्गा अत्यन्त प्रबल वेग से चन्द्रकुंड में गिरती हैं। मेरु के पश्चिम में केतुमाल द्वीप है जहाँ जम्बूखण्ड नामक प्रदेश और गन्धमादन है। नील पर्वत से उत्तर श्वेत वर्ष, और उसके भी उत्तर में हिरण्यकवर्ष है। तत्पश्चात् शृङ्गवान पर्वत से आगे ऐरावत नामक वर्ष है। दक्षिण और उत्तर के क्रमशः भारत और ऐरावत नामक दो वर्ष धनुष की दो कोटियों के समान स्थिति हैं और बीच में पाँच वर्ष (श्वेत, हिरण्यक, इलावृत, हरिवर्ष तथा हैमवत) हैं। भारत से आरम्भ करके ये सभी वर्ष आयु के प्रमाण, आरोग्य, धर्म, अर्थ, और काम, इन समस्त दृष्टियों में गुणों से उत्तरोत्तर बढ़ते गये हैं। विशाल हेमकूट ही

कैलास नाम से प्रसिद्ध है जहाँ कुबेर गुह्यकों के साथ निवास करते हैं। कैलास के उत्तर मैनाक और उसके भी उत्तर में हिरण्यश्रृङ्ग हैं। उसी के पास विन्दुसरोवर है जहाँ राजा भगीरथ ने गङ्गा का दर्शन करने के लिये अनेक वर्षों तक निवास किया था। इसी बिन्दुसरोवर से गङ्गा सात धाराओं में विभक्त हो गई जिनके नाम ये हैं: वस्वोकसारा, नलिनी, सरस्वती, जम्बूनदी, सीता, गङ्गा, और सिन्धु। हिमालय पर राक्षस, हेमकूट पर गुह्यक, और निषध पर्वत पर सर्प तथा नाग निवास करते हैं। गोकर्ण तपोवन है। श्वेत पर्वत देवताओं और असुरों का निवास है। निषध पर गन्धर्व, तथा नीलगिरि पर ब्रह्मर्षि निवास करते हैं। श्रृङ्गवान केवल देवताओं का विहार-स्थल है। इस प्रकार स्थावर और जङ्गम सम्पूर्ण प्राणी इन सात वर्षों में विभागपूर्वक स्थित हैं। पहले जिन्हें दक्षिण और उत्तर में स्थित (भारत और ऐरावत) बताया गया है वे ही दोनों उस शश के दो पार्श्व भाग है। नागद्वीप तथा काश्यपद्वीप उसके दोनों कान हैं। ताम्रवर्ण के वृक्षों और पत्रों से सुशोभित मलय पर्वत ही उसका सर है। इस प्रकार सुदर्शन द्वीप का दूसरा भाग शश (खरगोश) के आकार में दृष्टिगोचर होता है (६. ६)।" "धृतराष्ट्र ने सञ्जय से मेरु के उत्तर तथा पूर्व भाग के स्थानों का वर्णन करने के लिये कहा। साथ ही उन्होंने माल्यवान् पर्वत के विषय में भी जानना चाहा। सञ्जय ने धृतराष्ट्र को उत्तर कुरुओं के विषय में बताने के बाद मेरु के पूर्व में स्थित भद्राश्व का और फिर जम्बू वृक्ष और माल्यवान् का वर्णन किया (६. ७)।" "धृतराष्ट्र ने सभी वर्षों और पर्वतों का तथा उन पर निवास करनेवाले लोगों का नाम बताने के लिये कहा। सञ्जय ने तब रमणक, हिरण्यक, श्रृङ्गवान् तथा ऐरावत आदि का वर्णन किया। सञ्जय का वर्णन सुनकर धृतराष्ट्र अपने पुत्रों के सम्बन्ध में चिन्ता करने लगे। कुछ देर के पश्चात् उन्होंने कहा: 'इसमें सन्देह नहीं कि काल ही सम्पूर्ण जगत् का संहार करता है। फिर वही सब की सृष्टि करता है।......भगवान् नर और नारायण समस्त प्राणियों के सुहृद एवं सर्वज्ञ हैं। देवता उन्हें वैकुण्ठ और मनुष्य उन्हें विष्णु कहते हैं।' (६. ८)।" "धृतराष्ट्र ने सञ्जय से उस भारतवर्ष के सम्बन्ध में पूछा जिसके लिये दुर्योधन और पाण्डव युद्ध के लिये सन्नद्ध हैं। सञ्जय ने कहा कि पाण्डवों को भारतवर्ष के साम्राज्य का लोभ नहीं है। परन्तु दुर्योधन और शकुनि ही उसके लिये अत्यन्त लुब्ध हैं। तदनन्तर सञ्जय ने उस भारतवर्ष का वर्णन किया जो इन्द्रदेव और वैवस्वत मनु का प्रिय देश है। सञ्जय ने भारत के राजाओं, नदियों-पर्वतों और जनपदों आदि का विस्तार से वर्णन किया। फिर उन्होंने भारतवर्ष के विभिन्न भागों में निवास करनेवाली आर्य और म्लेच्छ जातियों का वर्णन किया (६. ९)।" "धृतराष्ट्र ने सञ्जय से भारतवर्ष, हिमवत वर्ष और हरिवर्ष के मनुष्यों की आयु तथा गुणों के सम्बन्ध में पूछा। सञ्जय ने चारों युगों—सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, और कलियुग—का वर्णन करते हुये इनमें से प्रत्येक में मनुष्यों की आयु तथा गुणों का निरूपण किया। उन्होंने कहा कि द्वापर में गुणों की न्यूनता होती है। भारतवर्ष की अपेक्षा हैमवत और हरिवर्ष में उत्तरोत्तर अधिक गुण हैं (६. १०)।"

जम्बूनदी, गङ्गा की सात धाराओं में से एक का नाम है (६. ६, ४८)।

जम्बूमार्ग, एक तीर्थ का नाम है (३. ८२, ४०. ४३)। यह पश्चिम में स्थित है (६. ८९, १३)। १३. २५, ५१; १६५, २४।

१. जम्भ, एक असुर का नाम है। 'इति स्म भाषते काव्यो जम्भत्यागे महासुरान्', (२. ६२, १२)। 'असुरश्च महेष्वासो जम्भ इत्यभिश्रुतः', (३. १०२, १४)। 'वेगेनैव शैलमभिहत्य जम्भः शेते स कृष्णेन हतः परासुः', (५. ४८, ७७)। 'जम्भनस्य ग्रसमानस्य तदा ह्यर्जुन आहवे', (५. ४९, १५)। श्रीकृष्ण ने इसका वध किया (७. ११, ५)। 'इन्द्राविष्णू यथा प्रीतौ जम्भस्य वधकांक्षिणौ', (७. ८१, २५)। 'शक्रजम्भौ यथापुरा', (७. ९६, २०)। 'यथेन्द्रेण हतः पूर्वं जम्भो देवासुरे मृधे', (७. १०२, १७)।' 'यथा देवासुरे युद्धे जम्भशक्रौ महाबलौ', (८. १३, ३०)। 'हते महासुरे जम्भे शक्रविष्णू यथा गुरुः', (८. ६५, १९)। 'जम्भं जिघांसुं प्रगृहीतवज्रं जयाय देवेन्द्रमिवोग्रमन्युम्', (८. ७७, ३)। 'पुरा जिघांसुर्मघवेव जम्भम्', (८. ८४, १९)। 'महेन्द्रजम्भाविव कर्णपाण्डवौ', (८. ८८, १२)। 'जम्भो वृत्रहणा यथा', (९. १२, ६३)। 'जम्भो यथा शक्रसमागमे वै नागेन्द्रमैरावणमिन्द्रवाह्यम्', (९. २०, १२)। 'यादृशं समरे पूर्वं जम्भवासवयोर्युधि', (९. २६, २५)। इन्द्र ने इसका वध किया (१२. ९८, ४९)। तुकी० **असुर।**

२. जम्भ, रावण के अनुचर, एक राक्षस का नाम है (३. २८५, २)।

जम्भक, एक राजा का नाम है जिसका, दलबल सहित, श्रीकृष्ण ने वध कर दिया था। उस समय इसका केवल पुत्र ही बच गया था जिसको सहदेव ने दक्षिण-दिग्विजय के समय पराजित किया था (२. ३१, ७. ८)।

१. जय, धृतराष्ट्र के एक महारथी पुत्र का नाम है। धृतराष्ट्र के ग्यारह महारथी पुत्रों के अन्तर्गत इसकी गणना (१. ६३, १२०)। २. ५८, १३; ४. ५४, ७ (अर्जुन पर आक्रमण करता है); ५. ५८, ७; ६. १८, ११; २०, १५; ४४, १६; ७७, ७; ७. २०, १२; २५, ४५ (धृतराष्ट्र का पुत्र); ७४, १६; ८५, २८; ९१, ३७; १३५, ३० (धृतराष्ट्र का पुत्र); ७४, १६; ८५, २८; ९१, ३७; १३५, ३० (धृतराष्ट्र का पुत्र); १५६, १२२; १५८, ५९. ६५; ८. ७, १८।

२. जय, एक देवता का नाम है, जिन्होंने देवों और अर्जुन तथा कृष्ण के युद्ध के समय हाथ में गदा लेकर अर्जुन आदि पर आक्रमण किया (१. २२७, ३४)। तुकी० **जयन्त।**

३. जय, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में विराजते थे (२. ८, १५)।

४. जय = सूर्य (३. ३, २४)।

५. जय = अर्जुन (देखिये वस्था०)।

६. जय, उन पाँच गुप्त नामों में से एक, जो अज्ञातवास के पूर्व युधिष्ठिर ने पाण्डवों को दिये (४. ५, ३५)। द्रौपदी ने इन्हीं पाँच नामों—जय, जयन्त, विजय, जयत्सेन, जयद्बल—से अपने दुःखों का निवेदन किया (४. २३; १२)।

७. जय, एक नाग का नाम है (५. १०३, १६)। इसे वासुकि ने स्कन्द को प्रदान किया (९. ४५, ५२)।

८. जय, एक पाण्डवयोद्धा का नाम है जिसका अश्वत्थामा ने वध किया (७. १५६, १८१)।

९. जय, एक पाञ्चाल राजा का नाम है जिन्होंने कर्ण से युद्ध किया (९. ५६, ४४)।

१०. जय, मूर्तिमान विजय का नाम है (९. ४६, ६४)।

११. जय = शिव (१,००० नाम)।

१२. जय = विष्णु (१,००० नाम)।

१३. जय, एक मुहूर्त का नाम है (५. ६, १७)।

१४. जय, महाभारत के लिये प्रयुक्त हुआ है: 'जयो नामेतिहासोऽयं', (१. ६२, २०; ५. १३६, १८; १८. ५, ४९. ५१; ६, २३)।

१. जयत्सेन, एक मगध राजा का नाम है जो जरासन्ध का पुत्र था। यह कालकेय नामक असुरों में से सबसे ज्येष्ठ असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ४८)। यह द्रौपदी के स्वयंवर के समय उपस्थित हुआ (१. १८६, ८)। २. ४४, १९; ५. ४, ८; १९, ८ (एक अक्षौहिणी सेना के साथ युधिष्ठिर के पास आया); ५०, ४८ (इसने युधिष्ठिर का पक्ष लिया); ६६, ६ (इसी ? ने दुर्योधन का पक्ष लिया); १९६, १६ (युधिष्ठिर की सेना में इसकी उपस्थिति)। इसने धृतराष्ट्र के एक पुत्र से युद्ध किया (७. २५, ४५)। इसका वध (११. २५, ५)। १८. ५, २। तुकी० **जरासन्धि, मागध।**

२. जयत्सेन, एक कौरव-पक्ष के राजा का नाम है जो मगधनिवासी जरासन्ध का पुत्र था (५. ६६, ६)। यह एक अक्षौहिणी सेना के साथ दुर्योधन की सेना में सम्मिलित हुआ (६. १६, १६)। दुर्योधन की सेना में (६. १०८, १४)। इसने भीमसेन से युद्ध किया (६. ११४, ३२)। अभिमन्यु ने इसका वध किया (८. ५, ३१; ७३, २४)। ९. ६, ३ ?।

३. जयत्सेन, सार्वभौम के द्वारा केकयकुमारी सुनन्दा के गर्भ से उत्पन्न एक राजा का नाम है। इसकी पत्नी का नाम सुश्रवा और पुत्र का अवाचीन (१. ९५, १६–१७)।

४. जयत्सेन, युधिष्ठिर द्वारा रक्खे गये पाण्डवों के पाँच गुप्त नामों में से एक नाम है (४. ५, ३५; २३, १२)।

५. जयत्सेन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (६. ७९, ४०. ४१. ४४)। इसने श्रुतकीर्ति तथा शतानीक से युद्ध किया (६. ७९, ४५)। इसने पौरव की रक्षा की (६. ११६, २५)। भीमसेन पर आक्रमण करने वाले धृतराष्ट्र के ग्यारह पुत्रों में एक यह भी था (९. २६, ५)। भीमसेन ने इसका वध किया। (९. २६, ११) तुकी० **कौरव**।

जयत्सेना, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ६)।

जयद्वल, युधिष्ठिर द्वारा रखे गये पाण्डवों के पाँच गुप्त नामों में से एक नाम है (४. ५, ३५; २३, १२)।

१. जयद्रथ, एक सिन्धु-राजा का नाम है (१. २, ९८. २५८. २५९)। धृतराष्ट्र की पुत्री, दुःशला, का इसके साथ विवाह हुआ (१. ६७, ११०; ११७, १८)। यह द्रौपदी के स्वयंवर के समय उपस्थित हुआ (१. १८६, २१)। यह युधिष्ठिर के राजसूय के समय उपस्थित हुआ (२. ३४, ८)। २. ३५, ८; ४४, १६; ५८, २६ (द्यूत क्रीड़ा के समय उपस्थित); ३. २६४, ११; २६५, १२; २६७, ८. १६; २६८, १०. २४. २६; २६९, १७. २७; २७०, २; २७१, ३२. ३५. ३६. ३७ (द्रौपदी को देखकर उसका अपहरण कर लिया परन्तु पाण्डवों ने इसका पीछा करके द्रौपदी को को मुक्त करा लिया); २७२, १. १२. १५. २०. २४ (भीमसेन ने इसे पकड़ लिया परन्तु बाद में मुक्त कर किया). ८१ (इसने शिव को प्रसन्न किया और शिव ने इसे यह वर दिया कि यह अर्जुन को छोड़कर अन्य सभी पाण्डवों को पराजित कर देगा); २७३, २. ९; २९३, २; ४. २१, ४५; ५. १९, १९ (एक अक्षौहिणी सिन्धुओं और सौवीरों की सेना लेकर दुर्योधन के पास आया); ४७, ६; ५५, ४३. ६३; ५७, १५. ३७. ५८; ६२, १६; ६६, ७; ९२, ७; ९५, २०; १२४, ४९; १४२, १२; १४४, ६; १५५, ३२ (यह दुर्योधन की एक अक्षौहिणी सेना का नायक बना); १६०, १२३; १६१, ४१; १६४, ७; १९५, ६; ६. १६, १५ (दुर्योधन की एक अक्षौहिणी सेना का नायक); १७, २९ (इसकी ध्वजा पर एक चाँदी का वराह बना था); २५, ८; ३५, ३४; ४५, ५५ (द्रुपद से युद्ध किया); (५०, ३७; ५६, ६ (भीष्म के गारुडव्यूह के ग्रीवा में स्थित हुआ); ५७, ३१; ५९, ७५; ६०, २; ६५, १३; ७१, १५; ७६, १८; ७९, २०; ८५, १२. ३२ (भीमसेन से युद्ध किया); ९२, २३. ३९; ९४, १४; ९९, २ (भीष्म के सर्वतोभद्र व्यूह में स्थित); १००, १६; १०८, ५७; ११३, १. ११; ११४, २. ५. २२; ११६, ४२; ११९, १५; ७. ७, ११; १४, ६२. ७२. ७६ (अभिमन्यु द्वारा पराजित); २०, १२ (द्रोण के गारुडव्यूह में स्थित); २५, १० (क्षत्रवर्मा से युद्ध किया); ३२, ३८. ६९; ३४, २२. २४; ४२, ७. १५. १६. १८ (इसने शिव से यह वर प्राप्त किया था कि यह अर्जुन को छोड़कर अन्य पाण्डवों को रोक सकेगा); ५२, ५ (इसने पाण्डवों को अभिमन्यु की रक्षा करने से रोक दिया); ७३, ९. २०. २१. २२. २९. ३१. ३४. ३७. ४४; ७४, १; ७५, १०. २७. २९ (कौरवों के छः रथियों ने इसकी रक्षा का वचन दिया); ७६, २. २४; ७७, १८. २०; ७९, २२. २३. २६; ८०, ११. २०; ८७, ११. १६. १८ (इसके अश्वों का वर्णन); ९१, ७. ३५. ४४; ९४, ६. ८. १७; १००, २४. ३४; १०१, १५. ३०. ३१; १०३, ४२; १०४, ४. २२. २७; १०५, २१. ३६; ११०, ७५; १११, ८. ११. १२. १६; ११२, १०. १२; १२४, ११. १७; १२८. ४९; १३७, १५; १४१, ३१; १४३, ५३; १४५, ३. ७. ११. १२. १८. २०. २२; १४६, ४४. ४८. ५२. ७०. ७६. ७७ (अर्जुन ने इसके सभी रक्षकों को पराजित कर दिया). १०७. ११३ (जयद्रथ के पिता वृद्धक्षत्र ने यह शाप दे रक्खा था कि जो व्यक्ति जयद्रथ के मस्तक को भूमि पर गिरा देगा उसका मस्तक टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा). ११५. १३५ (अर्जुन ने इसका मस्तक काट दिया और श्रीकृष्ण के प्रभाव से वह कटा हुआ मस्तक वृद्धक्षत्र की गोद में जाकर गिरा; फिर वृद्धक्षत्र की गोद से भूमि पर गिरने के कारण वृद्धक्षत्र का मस्तक भी चूर-चूर हो गया); १४८, ५८; १४९, ३६; १५०, ८. १४. ३४; १५२, १३; १५८, ६५ (मृत योद्धाओं के अन्तर्गत इसका उल्लेख); १५९. ५; १८२, ३५; १९७, ३७; ८. ५, ११. १२ (सिन्धुराष्ट्रमुखानीह दश राष्ट्राणि यानिह। वशे तिष्ठन्ति वीरस्य यः स्थितस्तव शासने॥ अक्षौहिणीर्दशैकां च विनिर्जित्य शितैः शरैः। अर्जुनेन हतो राजन्महावीर्यो जयद्रथः॥); ७३, ४३ (यह द्रोणाचार्य द्वारा रक्षित था). ४८; ९. २, १६ (इसने दुर्योधन का पक्ष लिया था). ३४; ४, १२. ३१. ३३; ५, ४०; २४, २८; २७, १५; ३२, २०; ६१, ४५; ६४, ३३; ११. १२, ८; १६, २८; २०, १८; २२, ८. ९. १२. १३; २६, ३२ (इसका शवदाह किया गया); १४. ७७, ११ (इसकी मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये सिन्धुओं ने अर्जुन पर आक्रमण किया); ७८, १७. ३५; ८४, १२; १५. १४, ६ (युधिष्ठिर ने इसका श्राद्ध आदि कराया); १८. ५, ३।

तुकी० इसके नाम के निम्नलिखित पर्याय भी :—

*वार्द्धक्षत्रि (वृद्धक्षत्र का पुत्र) : ४. २६४, ६. ११; ६. २०, १२, ७. ४२, ८; ११. २२, ७।

***सिन्धुपति, सिन्धुराज्, सिन्धुराज, सिन्धुराजन्, सिन्धु-सौवीरभर्तृ**—देखिये वस्था०।

***सुवीर, सुवीरराष्ट्रप**—देखिये वस्था०।

***सैन्धव, सैन्धवक**—देखिये वस्था०।

***सौवीर, सौवीरक, सौवीरराज**—देखिये वस्था०।

२. जयद्रथ, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में विराजते थे (२. ८, २६)।

जयद्रथवध, जयद्रथवधपर्वन् के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. २, ६९)।

जयद्रथवधपर्वन्, महाभारत के ७५ वें अवान्तरपर्व का नाम है जो द्रोणपर्व के ८५-१५२ अध्यायों के अन्तर्गत आता है। "अपने पक्ष के वीरों के वध पर विलाप करते हुये धृतराष्ट्र ने अतीत की सुखद स्थितियों का स्मरण किया। उन्होंने कहा : 'पहले मैं सोमदत्त के भवन में बैठा हुआ उत्तम शब्द सुना करता था। परन्तु आज पुण्यहीन मैं अपने पुत्रों के भवन को उत्साहशून्य एवं आर्तनाद से गूँजता हुआ देख रहा हूँ। विविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन और विकर्ण के भवनों से भी अब पूर्ववत् आनन्दपूर्ण ध्वनि नहीं सुनी जाती।' इसी प्रकार अपने पक्ष के अन्य वीरों के सम्बन्ध में सोच-सोचकर विलाप करते हुए धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण के दूत के रूप में दिये परामर्श को अस्वीकार कर देने और कपट-द्यूत आदि का उल्लेख किया। उन्होंने कहा : 'मैं जूआ खेलना नहीं चाहता था। विदुर भी उसकी प्रशंसा नहीं करते थे। इसी प्रकार जयद्रथ और भीष्म भी इसके लिये सहमत नहीं थे।···पाण्डव पृथिवी का राज्य भोगने और उसे प्राप्त करने में भी समर्थ हैं। उन्हें यदि आदेश दिया जाय तो वे सदा धर्ममार्ग पर स्थित रहेंगे। शल्य, सोमदत्त, भीष्म, द्रोण, विकर्ण, बाल्हीक, कृपाचार्य तथा अन्य भरतवंशी यदि पाण्डवों से कुछ कहेंगे तो वे उसे अवश्य स्वीकार करेंगे।' तदनन्तर धृतराष्ट्र ने पाण्डवपक्ष के वीरों के पराक्रम का वर्णन करते हुये उन्हें अजेय बताया और कहा : 'दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुःशासन के अतिरिक्त कोई ऐसा वीर नहीं जो पाण्डवों के वेग का सहन कर सके।' इसके पश्चात धृतराष्ट्र ने संजय से आगे की घटनाओं का वर्णन करने के लिये कहा (७. ८५)।" "संजय ने धृतराष्ट्र का उपालम्भ करते हुये उन्हें ही युद्ध तथा कौरवों के विनाश के लिये दोषी बताया (७. ८६)।" "प्रातःकाल द्रोणाचार्य ने कौरव सेना की व्यूह-रचना आरम्भ की। कौरव-सैनिक भी उत्साह में भर कर चिल्ला रहे थे कि 'अर्जुन कहाँ हैं?' अपने सैनिकों के व्यूहबद्ध हो जाने के पश्चात द्रोणाचार्य ने जयद्रथ से कहा : 'तुम, भूरिश्रवा, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन तथा कृपाचार्य सेना —वर्गन—लेकर मुझसे छः कोस की दूरी पर जाकर सन्नद्ध हो जाओ। वहाँ रहने पर इन्द्र आदि सम्पूर्ण देवता भी

तुम्हारा सामना नहीं कर सकते।' जयद्रथ ने इस आदेश का पालन किया। द्रोणाचार्य ने शकट-व्यूह का निर्माण किया था, जिसकी लम्बाई बारह गव्यूति और पृष्ठ भाग की चौड़ाई पाँच गव्यूति थी। इस व्यूह के पृष्ठभाग में पद्म नामक एक गर्भव्यूह भी बनाया गया जो अत्यन्त दुर्भेद्य था। इस पद्म व्यूह के मध्यभाग में एक अन्य सूची व्यूह बना था जो अत्यन्त गूढ़ था। सूचीमुख व्यूह के प्रमुख भाग में कृतवर्मा को खड़ा किया गया। कृतवर्मा के पीछे काम्बोजराज और जलसंध स्थित हुये, तथा इनके बाद दुर्योधन और कर्ण। इन सबके पीछे एक लाख वीर तथा उनके भी पीछे एक विशाल सेना लेकर जयद्रथ खड़े हुये। शकट-व्यूह के मुखभाग में स्वयं द्रोणाचार्य—इनके रथादि का वर्णन—खड़े हुये। इस महाव्यूह को देखकर सिद्धों और चारणों को अत्यन्त विस्मय हुआ। उस समय दुर्योधन भी व्यूह को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ (७. ८७)।" 'तब रौद्र-मुहूर्त के उपस्थित होने पर युद्धभूमि में अर्जुन दिखाई दिये। उस समय प्रकृति में अनेक अपशकुन भी प्रगट हुये। तदनन्तर नकुलपुत्र शतानीक और द्रुपद-कुमार धृष्टद्युम्न ने पाण्डव सेना की व्यूह-रचना की। दुर्मर्षण (धार्तराष्ट्र) ने अर्जुन से युद्ध करने का उत्साह प्रगट किया। अर्जुन भी—इनके आयुधों आदि का वर्णन—तब श्रेष्ठ रथ में बैठकर युद्धभूमि में सन्नद्ध हो गये। तदनन्तर जब अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अपने-अपने शंख बजाये तब कौरव सेना भयभीत हो उठी (७. ८८)।" "चौदहवें दिन का युद्ध : अर्जुन और दुर्मर्षण का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने शत्रु सेना का भीषण संहार किया। अर्जुन के इस पराक्रम से त्रस्त होकर दुर्मर्षण की समस्त सेना भाग चली (७. ८९)।" "अर्जुन और दुःशासन का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन द्वारा भयंकर संहार किये जाने से दुःशासन की सेना ने पलायन किया। दुःशासन ने भी भागकर द्रोणाचार्य के पास शरण ली (७. ९०)।" "अर्जुन ने द्रोणाचार्य के पास आकर उनसे जयद्रथ का वध करने की अनुमति माँगी, परन्तु द्रोणाचार्य ने ऐसी अनुमति देना अस्वीकार करते हुये अर्जुन पर आक्रमण कर दिया। द्रोणाचार्य को पराजित करना कठिन देखकर अर्जुन और समय नष्ट न करने की दृष्टि से उन्हें छोड़ते हुये आगे बढ़े। अर्जुन कौरव सेना के भीतर घुस गये। उस समय पाञ्चाल राजकुमार युधामन्यु और उत्तमौजा उनके चक्ररक्षक थे। जय इत्यादि तथा अभीषाहों ने अर्जुन का प्रतिरोध किया। इन समस्त वीरों ने द्रोणाचार्य को आगे करके अर्जुन पर आक्रमण किया और उन्हें और आगे बढ़ने से रोक दिया (७. ९१)।" "अर्जुन और द्रोणाचार्य का युद्ध होने लगा जिसमें द्रोणाचार्य ने ब्रह्मास्त्र प्रगट किया। अर्जुन ने भी ब्रह्मास्त्र द्वारा ही आचार्य के अस्त्र को रोक दिया। तदनन्तर द्रोणाचार्य को छोड़कर अर्जुन. भोजों का वध करते हुये कृतवर्मा और काम्बोजराज सुदक्षिण के बीच में आकर डट गये। अर्जुन और कृतवर्मा का युद्ध हुआ जिसमें कृतवर्मा मूर्च्छित हो गये। तब अर्जुन ने काम्बोजों के साथ युद्ध आरम्भ किया। कृतवर्मा और युधामन्यु + उत्तमौजा का युद्ध हुआ जिसमें इन लोगों को अर्जुन के पीछे जाने से कृतवर्मा ने रोक दिया। अर्जुन (+ कृष्ण) और श्रुतायुध का युद्ध हुआ। श्रुतायुध ने अपनी गदा से श्रीकृष्ण पर प्रहार किया परन्तु उस गदा ने लौटकर श्रुतायुध का ही वध कर दिया। श्रुतायुध को मृत देखकर कौरव-सेना में हाहाकार मच गया। काम्बोजराज सुदक्षिण और अर्जुन का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने सुदक्षिण का वध कर दिया। इस प्रकार श्रुतायुध और सुदक्षिण को मारा गया देखकर कौरव-सेना यत्र-तत्र भागने लगी (७. ९२)।" "अर्जुन ने अभीषाहों इत्यादि का संहार आरम्भ किया। श्रुतायु ' अच्युतायु और अर्जुन का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने इन दोनों का ऐन्द्रास्त्र से वध कर दिया। श्रुतायु और अच्युतायु के पुत्र नियतायु + दीर्घायु का अर्जुन से युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने इन दोनों का वध कर दिया। गजसेना सहित अङ्गों + गजारोही कालिङ्गों इत्यादि और अर्जुन का युद्ध हुआ परन्तु अर्जुन ने इन सबका तथा म्लेच्छों और यवनों इत्यादि का भी भीषण संहार किया। अम्बष्ठराज श्रुतायु और अर्जुन (+ कृष्ण) का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने श्रुतायु का वध कर दिया (७. ९३)।" "दुर्योधन ने द्रोणाचार्य का उपालम्भ किया जिसे सुन कर द्रोणाचार्य ने वृद्धावस्था के कारण अर्जुन का सामना करने में अपनी असमर्थता प्रगट की। तदनन्तर उन्होंने दुर्योधन के शरीर में मंत्रों से अभिमन्त्रित एक दिव्य कवच बाँधा और उसी से अर्जुन से युद्ध करने के लिये कहा। द्रोणाचार्य ने बताया कि उस दिव्य कवच से रक्षित होने पर उसे असुरों, देवताओं, यक्षों, नागों, राक्षसों और मनुष्यों, किसी का भी भय नहीं रहेगा। यह वही दिव्य कवच था जिसे शिव ने इन्द्र को दिया था। इसे पहन कर इन्द्र ने वृत्र का वध किया। इन्द्र > अङ्गिरा > बृहस्पति > अग्निवेश्य से होता हुआ यह कवच द्रोणाचार्य को प्राप्त हुआ। द्रोणाचार्य ने इसे ब्रह्मसूत्र से दुर्योधन के शरीर में बाँधा। पूर्वकाल में ब्रह्मा ने विष्णु के शरीर में भी इस कवच को इसी प्रकार बाँधा था। इसी प्रकार तारकामय संग्राम में भी ब्रह्मा ने इन्द्र के शरीर में इसे बाँधा था। दुर्योधन + त्रिगर्त इत्यादि ने तब अर्जुन के रथ की ओर प्रस्थान किया (७. ९४)।" "धृष्टद्युम्न के नेतृत्व में पाण्डवों + सोमकों का द्रोणाचार्य से युद्ध हुआ। द्रोणाचार्य का धृष्टद्युम्न से भयंकर संग्राम होने लगा। द्रोण की सेना तीन भागों में विभक्त हो गई, जिसमें से एक भाग कृतवर्मा की ओर, दूसरा जलसन्ध की ओर, और तीसरा स्वयं द्रोण की ओर चला गया। तब विविंशति इत्यादि तथा भीमसेन का, गोवासन प्रधान शैब्य तथा काशिराज का, माद्रराज शल्य तथा युधिष्ठिर का, दुःशासन तथा सात्यकि का, संजय तथा चेकितान का, शकुनि (+ ७०० गान्धार) तथा सहदेव का, विन्द और अनुविन्द तथा विराट का, बाल्हीकराज तथा शिखण्डी का, अवन्ती के एक वीर + सौवीरों + प्रभद्रकों तथा धृष्टद्युम्न का, अलायुध तथा घटोत्कच का, और अलम्बुष तथा कुन्तिभोज का, युद्ध होने लगा। उस समय सिन्धुराज जयद्रथ सम्पूर्ण सेना के पीछे कृपाचार्य आदि रथियों से सुरक्षित था। जयद्रथ के दाहिने चक्र की अश्वत्थामा तथा बायें चक्र की कर्ण रक्षा कर रहे थे। भूरिश्रवा आदि वीर जयद्रथ के पृष्ठ भाग की रक्षा कर रहे थे। साथ ही कृपाचार्य, वृषसेन, शल तथा शल्य आदि भी जयद्रथ की रक्षा करने में संलग्न थे (७. ९५)।" "अपने व्यूह के आगे स्थित होकर द्रोण ने पार्थों से युद्ध किया। विन्द और अनुविन्द का विराट के साथ, शिखण्डी का बाल्हीक के साथ, गोवासनराज शैब्य का काशिराज के साथ, बाल्हीकराज का द्रौपदेयों के साथ, दुःशासन का सात्यकि के साथ, कुन्तिभोज का अलम्बुष के साथ, नकुल + सहदेव का शकुनि के साथ, घटोत्कच का अलायुध के साथ, युधिष्ठिर का शल्य के साथ, और विविंशति इत्यादि का भीमसेन के साथ युद्ध हुआ (७. ९६)।" "भीमसेन का द्रोणाचार्य के साथ, युधिष्ठिर का कृतवर्मा के साथ और धृष्टद्युम्न का द्रोणाचार्य के साथ युद्ध हुआ। धृष्टद्युम्न अपने रथ को लाँघकर द्रोणाचार्य के रथ पर चढ़ गये। उन्होंने द्रोणाचार्य का वध कर देने का प्रयास किया परन्तु द्रोणाचार्य ने उनके आयुधों आदि को नष्ट कर दिया। तदनन्तर द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के रथ और सारथि को भी नष्ट कर दिया। इस प्रकार द्रोणाचार्य के वश में हुये धृष्टद्युम्न को उस समय सात्यकि ने बचा लिया (७. ९७)।" "सात्यकि (युयुधान) का द्रोणाचार्य के साथ युद्ध हुआ जिसे देखने के लिये ब्रह्मा और सोम के साथ देवता, सिद्ध, चारण, विद्याधर तथा नाग वहाँ उपस्थित हुये। द्रोणाचार्य ने सात्यकि के पराक्रम की परशुराम, कार्तवीर्य अर्जुन, और भीष्म आदि के साथ तुलना करते हुये उनकी प्रशंसा की। इन्द्र आदि देवताओं, सिद्धों और चारणों ने भी सात्यकि की प्रशंसा की। द्रोणाचार्य ने आग्नेयास्त्र का संधान किया और सात्यकि ने वारुणास्त्र का। अभी द्रोण और सात्यकि का यह अद्भुत युद्ध चल ही रहा था कि सूर्य अस्ताचल को चले गये। सात्यकि की रक्षा करने की दृष्टि से युधिष्ठिर इत्यादि ने द्रोणाचार्य तथा दुःशासन इत्यादि से युद्ध किया (७. ९८)।" "इधर अर्जुन और श्रीकृष्ण तीव्र गति से कौरव-सेना में प्रवेश करते हुये जयद्रथ की ओर बढ़ने लगे। विन्द और अनुविन्द ने अर्जुन से युद्ध किया परन्तु अर्जुन ने दोनों का वध कर दिया। तदनन्तर अर्जुन ने अपने रथ के घोड़ों को थोड़ा विश्राम देने के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण से परामर्श किया। श्रीकृष्ण ने जब घोड़ों को

विश्राम देना आरम्भ किया तो रथ से नीचे उतर कर अर्जुन ने अकेले ही कौरव-सेना को रोक लिया। अर्जुन ने भूमि में एक वाण मार कर वहीं घोड़ों को पानी पीने के लिये एक जलाशय का निर्माण किया। उस समय उन्होंने घोड़ों के विश्राम के लिये वहाँ वाणों का अद्भुत घर भी बना दिया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के इन पराक्रमों की सराहना की (७. ९९)।" "जब श्रीकृष्ण घोड़ों की परिचर्या करने लगे तो सिद्धों और चारणों ने उन्हें साधुवाद दिया। जब अर्जुन पैदल ही युद्ध करने लगे तो कौरव-सेना ने उन पर भीषण आक्रमण किया परन्तु अर्जुन ने सबको पीछे हटा दिया। उस समय समस्त कौरव-सैनिक अर्जुन के पराक्रम की प्रशंसा करते हुये दुर्योधन की भर्त्सना करने लगे। घोड़ों को भोजन आदि कराने के पश्चात् श्रीकृष्ण ने उन्हें पुनः रथ में सन्नद्ध किया। तदनन्तर अर्जुन और श्रीकृष्ण तीव्रगति से जयद्रथ की ओर बढ़ने लगे (७. १००)।" "श्रीकृष्ण तथा अर्जुन की प्रगति देखकर कौरव-सैनिक निराश हो गये। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन भी द्रोण आदि कौरव महारथियों से युद्ध करते हुये जयद्रथ के निकट आ गये। उस समय दुर्योधन एकमात्र रथ की सहायता से युद्धभूमि में आया और श्रीकृष्ण के सामने डट गया। दुर्योधन को इस प्रकार सन्नद्ध देखकर कौरव-सेना हर्षित हो उठी (७. १०१)।" "श्रीकृष्ण ने दुर्योधन की ओर संकेत करते हुये अर्जुन की प्रशंसा की। उन्होंने अर्जुन से कहा : 'देवता, असुर, और मनुष्यों सहित तीनों लोक भी रणक्षेत्र में तुम्हें जीत नहीं सकते; फिर अकेले दुर्योधन की तो बात ही क्या। अतः आज तुम दुर्योधन का वध कर डालो।' इस प्रकार श्रीकृष्ण के वचनों से प्रोत्साहित होकर अर्जुन ने दुर्योधन का वध कर डालने का वचन दिया। तदनन्तर उनका दुर्योधन के साथ भयंकर संग्राम होने लगा (७. १०२)।" "अर्जुन दुर्योधन को आहत नहीं कर सके क्योंकि उसने अभेद्य कवच बाँध रक्खा था। तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण को उस कवच के सम्बन्ध में बताते हुये कहा : 'ब्रह्मा ने वह तेजस्वी कवच अङ्गिरा को दिया, और उनसे बृहस्पति < इन्द्र से होता हुआ मुझे प्राप्त हुआ।' तदनन्तर अर्जुन ने अभिमन्त्रित वाणों से दुर्योधन पर प्रहार किया परन्तु अश्वत्थामा ने उन्हें काट दिया। अर्जुन इस अस्त्र का दो बार प्रयोग नहीं कर सकते थे क्योंकि ऐसा करने पर यह अस्त्र स्वयं अर्जुन को ही मार डालता। अर्जुन ने दुर्योधन के रथ, अश्वों तथा आयुधों आदि को नष्ट कर दिया। तब दुर्योधन युद्धभूमि से भाग गया। जब श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य नामक शंख बजाया तथा अर्जुन ने अपने गाण्डीव धनुष पर टंकार दी तो कौरव भयभीत होकर भूमि पर गिर पड़े। जयद्रथ के रक्षकों ने श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पर आक्रमण किया (७. १०३)।" "भूरिश्रवा, शल, कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य, शल्य तथा अश्वत्थामा ने अर्जुन पर आक्रमण किया। अर्जुन और कृष्ण ने उस समय अपने-अपने शंख बजाये। दुर्योधन + भूरिश्रवा का अर्जुन से युद्ध हुआ। अश्वत्थामा ने भी अर्जुन (+ कृष्ण) से युद्ध किया (७. १०४)।" "संजय ने धृतराष्ट्र से अर्जुन और कौरव-महारथियों के ध्वजों का वर्णन किया। अर्जुन ने अकेले ही नौ कौरव महारथियों से युद्ध किया (७. १०५)" "अपराह्नकाल में पाञ्चाल सैनिकों ने द्रोणाचार्य का वध करने का निश्चय किया। बृहत्क्षत्र और द्रोणाचार्य का, क्षेमधूर्ति और बृहत्क्षत्र का, धृष्टकेतु और क्षेमधूर्ति का वीरधन्वा और धृष्टकेतु का, युधिष्ठिर और द्रोण का, विकर्ण (धार्तराष्ट्र) और नकुल का, दुर्मुख और सहदेव का, व्याघ्रदत्त और सात्यकि का, भूरिश्रवा और द्रौपदेयों का, अलम्बुष और भीमसेन का, तथा युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य का, भयंकर युद्ध हुआ। युधिष्ठिर ने महान पराक्रम प्रगट किया। द्रोणाचार्य तथा युधिष्ठिर, दोनों ने ब्रह्मास्त्र का संधान किया। फिर भी, युधिष्ठिर का रथ भंग हो गया और वे सात्यकि के रथ पर बैठ कर युद्ध-भूमि से पलायन कर गये (७. १०६)।" "क्षेमधूर्ति और केकयराज बृहत्क्षत्र का युद्ध हुआ जिसमें केकयराज ने क्षेमधूर्ति का वध कर दिया। वीरधन्वा और धृष्टकेतु का युद्ध हुआ। सिद्ध और चारण भी इस अद्भुत युद्ध से चकित थे। धृष्टकेतु ने वीरधन्वा का वध कर दिया। दुर्मुख (धार्तराष्ट्र) और सहदेव का युद्ध हुआ जिसमें भाग कर दुर्मुख निरमित्र के रथ पर चढ़ गया। सहदेव ने निरमित्र का वध कर दिया। नकुल और विकर्ण का युद्ध हुआ जिसमें विकर्ण की पराजय हुई। मगधराज व्याघ्रदत्त और सात्यकि का युद्ध हुआ जिसमें सात्यकि ने व्याघ्रदत्त का वध कर दिया। तदनन्तर मगध वीरों ने सात्यकि से युद्ध किया परन्तु सात्यकि ने उनका भीषण संहार किया। इस प्रकार कौरव-सेना प्रायः पराजित हो गई। तब द्रोणाचार्य ने सात्यकि से युद्ध आरम्भ किया (७. १०७)।" "भूरिश्रवा और द्रौपदेयों का तथा नकुल-पुत्र शतानीक और भूरिश्रवा का युद्ध हुआ। सहदेव के पुत्र ने शल का वध कर दिया। अलम्बुष और भीमसेन का युद्ध हुआ जिसमें अलम्बुष ने माया का आश्रय लेकर युद्धक्षेत्र में रक्त की नदी बहा दी जो चारों ओर से राक्षसों से घिरी थी। तब भीमसेन ने त्वाष्ट्र नामक अस्त्र का संधान किया जिससे त्रस्त होकर अलम्बुष द्रोणाचार्य की सेना में भाग गया (७. १०८)।" "घटोत्कच और अलम्बुष का युद्ध हुआ जिसमें दोनों ने अपनी-अपनी माया का प्रयोग किया। भीमसेन इत्यादि पाण्डवों ने भी अलम्बुष से युद्ध किया। अन्ततः घटोत्कच ने अलम्बुष का वध कर दिया (७. १०९)।" "युयुधान और द्रोणाचार्य का युद्ध हुआ। युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से भीमसेन के नेतृत्व में एक बड़ी सेना लेकर युयुधान की रक्षा करने के लिये कहा। युधिष्ठिर ने अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर द्रोणाचार्य से युद्ध किया परन्तु द्रोणाचार्य ने अनेक पाण्डवों को पराजित कर दिया। युधिष्ठिर ने पाञ्चजन्य की ध्वनि सुनकर समझा कि अर्जुन कष्ट में हैं। उन्होंने सात्यकि को अर्जुन का कुशल-समाचार लाने के लिये भेजा। उन्होंने सात्यकि की प्रशंसा करते हुये कहा : 'अर्जुन तुम्हारा भाई, मित्र और गुरु है। अतः तुम उसकी सहायता के लिये प्रयत्न करो। स्वयं अर्जुन ने भी तुम्हारी प्रशंसा की है।' इस प्रकार सात्यकि के अनेक गुणों की चर्चा करने के पश्चात् युधिष्ठिर ने उनसे अर्जुन की रक्षा करने के लिये कहा (७. ११०)।" "सात्यकि ने युधिष्ठिर का आदेश शिरोधार्य करते हुये कहा : 'स्वयं अर्जुन ने मुझे आपकी रक्षा का आदेश दिया है।' सात्यकि ने यह भी कहा कि सौवीर, सिन्धु, पूरुदेश के योद्धा, तथा कर्ण आदि महारथी भी अर्जुन की सोलहवीं कला के बराबर नहीं हैं, अतः अर्जुन के लिये कोई भय नहीं। देवता, असुर, मनुष्य, राक्षस, किन्नर, सर्पगण तथा सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम प्राणी भी अर्जुन का सामना नहीं कर सकते। सात्यकि के इस प्रकार कहने पर भी युधिष्ठिर ने उन्हें अर्जुन की रक्षा के लिये जाने पर जोर देते हुये कहा कि सात्यकि की अनुपस्थिति में भीमसेन उनकी रक्षा करेंगे (७. १११)।" "सात्यकि ने युधिष्ठिर की आज्ञा का पालन करना स्वीकार करते हुये कहा : 'अर्जुन इस समय यहाँ से तीन योजन दूर हैं। यह आप जो गजसेना देखते हैं, इसका नाम है अञ्जनककुल है और इस पर अनेक म्लेच्छ योद्धा आरूढ़ हैं। वध के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से इस सेना की पराजय नहीं हो सकती। आप जिन रथियों को देख रहे हैं वे सब रुक्मरथ नामक महारथी राजकुमार हैं।'.....ये सब योद्धा कर्ण के वश में हैं। कर्ण ही इन्हें अर्जुन की ओर से इधर लौटा लाया है जिससे ये मुझसे युद्ध कर सकें। मैं इन सब को मथ कर अर्जुन के पास जाऊँगा। जो दूसरे सात सौ गज आप देख रहे हैं उन पर किरात आरूढ़ हैं। वे सब दुर्योधन की आज्ञा से मेरे साथ युद्ध युद्ध के लिये सन्नद्ध हैं। मैं इन समस्त किरातों का वध करके अर्जुन के पास जाऊँगा। दुर्योधन की ये अनेक अक्षौहिणी सेनायें मुझसे युद्ध के लिये सन्नद्ध हैं, परन्तु मैं इन सब को मथ कर अर्जुन के पास अवश्य पहुँचूंगा।' इस प्रकार उत्साहपूर्ण वचन कहने के पश्चात् सात्यकि आयुधों से भरे अपने रथ को लेकर अर्जुन से मिलने के लिये चले। सात्यकि को अपने भीतर प्रवेश करने के लिये सन्नद्ध देखकर कौरव-सेना पर पुनः मोह छा गया (७. ११२)।" "सात्यकि जब कौरव-सेना की ओर बढ़े तब युधिष्ठिर भी द्रोणाचार्य से युद्ध करने के लिये सात्यकि के पीछे-पीछे ही गये। धृष्टद्युम्न और राजा वसुदान ने सैनिकों से सात्यकि की रक्षा करने का आह्वान किया। सात्यकि के पराक्रम को देखकर कौरव-सेना भाग खड़ी हुई। सात्यकि और द्रोणाचार्य का युद्ध हुआ, परन्तु सात्यकि ने

द्रोणाचार्य को छोड़कर अवन्ति-सैनिकों की ओर बढ़ने का अपने सारथि को आदेश दिया। तदनन्तर कर्ण को सेना का संहार करते हुये सात्यकि ने कृतवर्मा से युद्ध किया और उसके सारथि का वध कर दिया। कृतवर्मा तब भीमसेन से युद्ध करने लगे और सात्यकि ने काम्बोजों का साक्षात्कार किया। द्रोणाचार्य ने सात्यकि का पीछा करने का प्रयास किया परन्तु पाण्डव-सैनिकों ने उन्हें रोक दिया। भीमसेन के नेतृत्व में पाण्डवों का कृतवर्मा से युद्ध हुआ (७. ११३)।" "धृतराष्ट्र ने सञ्जय के समक्ष यह आश्चर्य प्रगट किया कि उनकी इतनी पराक्रमी सेना का भी कैसे इस प्रकार संहार हुआ। विदुर के उपदेशों का स्मरण दिलाते हुये सञ्जय ने धृतराष्ट्र की भर्त्सना की और उसके बाद कहा: भीमसेन के नेतृत्व में पार्थों ने कृतवर्मा से युद्ध किया। शिखण्डी को उनका सारथि युद्ध-भूमि से दूर हटा ले गया। कृतवर्मा ने पार्थों आदि को पराजित कर दिया (७. ११४)।" "सात्यकि ने लौट कर कृतवर्मा से युद्ध करते हुये उनको रथविहीन कर दिया। तदनन्तर सेना का भेदन करते हुये सात्यकि अर्जुन की ओर चले। दुर्योधन की आज्ञा से द्रोणाचार्य की सेना के बायें ओर रुक्मरथ तथा गजारोही त्रिगर्त्त योद्धा सात्यकि से युद्ध करने के लिये सन्नद्ध थे, परन्तु सात्यकि के पराक्रम को देखकर यह गजसेना भाग खड़ी हुई। मगधराज जलसन्ध ने सात्यकि पर आक्रमण किया परन्तु सात्यकि ने उसका वध कर दिया। यह देखकर कौरव-सेना भागने लगी। द्रोणाचार्य और सात्यकि का युद्ध हुआ (७. ११५)।" "द्रोण इत्यादि ने सात्यकि से युद्ध किया। पराजित दुर्योधन चित्रसेन के रथ पर बैठ कर युद्ध भूमि से भाग गया। कृतवर्मा ने सात्यकि से युद्ध किया परन्तु पराजित हो गया (७. ११६)।" "द्रोणाचार्य और सात्यकि का युद्ध हुआ जिसमें सात्यकि ने द्रोणाचार्य के सारथि को आहत कर दिया। द्रोणाचार्य ने भी सात्यकि के सारथि पर प्रहार किया जिससे वह मूर्च्छित हो गया। सात्यकि ने तब स्वयं अपने रथ का सारथि बन कर द्रोणाचार्य से युद्ध किया। सात्यकि ने द्रोणाचार्य को आहत कर दिया जिससे वे पुनः भाग कर अपने व्यूह की ही रक्षा करने लगे। कौरव-सेना ने भी पलायन किया (७. ११७)।" "राजा सुदर्शन और सात्यकि का युद्ध हुआ जिसमें सात्यकि ने सुदर्शन का वध कर दिया (७. ११८)।" "सात्यकि के सारथि ने उनकी प्रशस्ति की। सात्यकि ने सारथि से रथ को काम्बोजों की ओर ले चलने के लिये कहा। यवनों ने सात्यकि से युद्ध किया परन्तु पराजित होकर भाग गये। इसी प्रकार सात्यकि ने सहस्रों काम्बोजों का भी वध कर दिया। उस समय चारण और गन्धर्वों आदि ने सात्यकि को साधुवाद दिया (७. ११९)।" "सात्यकि—युयुधान—ने अर्जुन की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया परन्तु दुर्योधन आदि ने उनका पीछा करके उन पर आक्रमण कर दिया। सात्यकि ने दुर्योधन की सेना का भीषण संहार आरम्भ किया। दुर्योधन को उसका सारथि रणभूमि से दूर हटा ले गया और शेष कौरव-सेना ने भी पलायन किया। तब युयुधान पुनः अर्जुन की ओर चले (७. १२०)।" "धृतराष्ट्र ने सात्यकि की वीरता पर आश्चर्य प्रगट करते हुये सञ्जय से आगे के युद्ध का समाचार पूछा। सञ्जय ने युद्धजन्य विनाश को धृतराष्ट्र की ही खोटी बुद्धि का परिणाम बताते हुये इस प्रकार वर्णन किया: 'दुर्योधन के नेतृत्व में गजसेना और शकों, काम्बोजों, यवनों आदि के सेना ने सात्यकि पर आक्रमण किया। दुःशासन ने भी दस्युओं की सेना लेकर सात्यकि से युद्ध किया। सात्यकि ने गजसेना तथा समस्त अश्वसेना का संहार करने के पश्चात् दस्युओं का भी संहार आरम्भ किया। उस समय सात्यकि के प्रहारों से अञ्जन तथा वामन नामक दिग्गज के कुल में उत्पन्न पर्वताकार श्रेष्ठ गजराज भी धराशायी हो गये। वनायु, काम्बोज और बाह्लीक देशों में उत्पन्न अश्वों तक को सात्यकि ने मार गिराया। दरद, तंगण, खस, लम्पाक, और कुलिन्ददेशीय म्लेच्छों ने जब सात्यकि पर पाषाणों से आक्रमण किया तो उन्होंने उनका भी संहार कर डाला। सात्यकि के प्रहारों से त्रस्त कौरव-सेना का कोलाहल सुनकर द्रोणाचार्य ने अपना रथ सात्यकि के पास ले चलने के लिये सारथि से कहा। सारथि ने बताया कि पाञ्चाल तथा पाण्डव द्रोणाचार्य की ओर ही आ रहे हैं। इसी समय सहसा सात्यकि भी वहाँ उपस्थित हुये। उन्हें देख कर छिन्न-भिन्न कौरव-सेना तथा दुःशासन आदि सभी भयभीत होकर द्रोणाचार्य की सेना की ओर भाग आये (७. १२१)।" "द्रोणाचार्य ने दुःशासन की कायरता पर उसकी भर्त्सना की। उन्होंने उसके द्रौपदी के सम्मुख कहे शब्दों को भी उद्धृत करते हुये कहा कि वह पाण्डवों से सन्धि कर ले। तब म्लेच्छों की सेना लेकर दुःशासन ने सात्यकि से युद्ध किया। द्रोणाचार्य ने पाञ्चालों + पाण्डवों इत्यादि से युद्ध किया। द्रोणाचार्य ने वीरकेतु, चित्रकेतु, सुधन्वा, चित्रवर्मा, और चित्ररथ आदि पाञ्चालों का वध कर दिया। द्रोणाचार्य से घोर युद्ध करते हुये धृष्टद्युम्न उनके रथ पर चढ़ गये, परन्तु फिर धृष्टद्युम्न का सारथि उन्हें युद्धभूमि से दूर हटा ले गया। पाण्डवों का भीषण संहार करने के पश्चात् द्रोणाचार्य पुनः अपने व्यूह की रक्षा करने लगे (७. १२२)।" "दुःशासन और सात्यकि का युद्ध हुआ जिसमें दुःशासन के सैनिकों ने पलायन किया। दुर्योधन ने ३,००० त्रिगर्तों को युयुधान—सात्यकि—से युद्ध के लिये भेजा परन्तु सात्यकि ने ५०० त्रिगर्तों का वध कर दिया जिससे शेष सैनिक द्रोण की शरण में भाग गये। जब सात्यकि अर्जुन की ओर बढ़ने लगे तो दुःशासन ने उन पर पुनः आक्रमण किया। सात्यकि के प्रहारों से त्रस्त होकर दुःशासन त्रिगर्तराज के रथ पर चढ़ गया। भीमसेन के प्रण का स्मरण करके सात्यकि ने दुःशासन का वध नहीं किया और शीघ्रतापूर्वक अर्जुन से मिलने के लिये बढ़े (७. १२३))।" "सात्यकि के महान पराक्रम की देवता तथा चारण, सब ने सराहना की। भीमसेन इत्यादि का कौरवों के साथ युद्ध हुआ। सात्यकि अर्जुन की ओर चले गये। दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ युद्ध करते हुये भीषण नर-संहार किया। दुर्योधन की रक्षा करने के उद्देश्य से द्रोणाचार्य ने पाञ्चालों से युद्ध किया। उस समय भीषण नर-संहार होने लगा। इसी समय उस स्थान पर तीव्र कोलाहल होने लगा जहाँ अर्जुन थे (७. १२४)।" "अपराह्न: द्रोणाचार्य का सोमकों (+पाण्डवों) से युद्ध हुआ। केकयराज बृहत्क्षत्र और द्रोणाचार्य का युद्ध हुआ जिसमें दोनों ने ब्रह्मास्त्र का संधान किया। द्रोणाचार्य ने अन्ततः बृहत्क्षत्र का वध कर दिया। तदनन्तर द्रोणाचार्य ने चेदिराज धृष्टकेतु (जो शिशुपाल का पुत्र और काम्बोजदेशीय अश्वसेना लेकर युद्ध कर रहा था), और फिर धृष्टद्युम्नकुमार क्षत्रधर्मा तथा जरासन्ध-पुत्र सहदेव का भी वध कर दिया। चेदियों ने भी द्रोणाचार्य से युद्ध किया जिसमें द्रोणाचार्य ने अनेक प्रमुख चेदियों का वध कर दिया। द्रोणाचार्य के प्रहारों से त्रस्त होकर पाञ्चाल सैनिक काँप उठे और भीमसेन तथा धृष्टद्युम्न को पुकारने लगे। द्रोणाचार्य से पराजित होकर चेकितान भी युद्धभूमि से भाग गया। उस समय द्रुपद ने कहा: 'दुर्बुद्धि पापी दुर्योधन अत्यन्त कष्टप्रद लोक में जायगा क्योंकि उसी के कारण अनेक क्षत्रियशिरोमणि वीरों का वध हुआ है।' ऐसा कहकर राजा द्रुपद ने पार्थों को आगे करके द्रोणाचार्य पर आक्रमण कर दिया (७. १२५)।" "सात्यकि और अर्जुन का कोई समाचार न मिलने के कारण युधिष्ठिर ने अत्यन्त चिन्तित होकर भीमसेन को सात्यकि का पता लगाने के लिये भेजने का निश्चय किया। उन्होंने भीम को भेजते हुये कहा: 'जब तुम श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा सात्यकि को सकुशल देखना तब उच्च स्वर में सिंहनाद करके मुझे इसकी सूचना देना' (७. १२६)।" "भीम ने धृष्टद्युम्न से युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिये कहा और स्वयं सात्यकि तथा अर्जुन का समाचार लाने के लिये प्रस्थित—वर्णन—हुये। पाञ्चजन्य की भयंकर ध्वनि सुन पड़ी जिससे युधिष्ठिर अत्यन्त चिन्तित हो उठे। भीम अपने सारथि, विशोक, द्वारा संचालित रथ पर आरूढ़ होकर कौरव सेना का भेदन करते हुये चले। उनके पीछे पाञ्चाल तथा सोमक वीर भी थे। उस समय दुःशल आदि धार्तराष्ट्रों ने भीमसेन पर प्रबल आक्रमण किया परन्तु भीमसेन अपने वेग से उन सब को लाँघ कर द्रोणाचार्य की सेना पर टूट पड़े। द्रोणाचार्य के साथ घोर युद्ध करते हुये भीमसेन ने अपनी गदा से उनके रथ को सारथि सहित चूर-चूर कर दिया। द्रोणाचार्य, जो रथ से पहले ही उतर पड़े थे, किसी प्रकार बच गये। भीमसेन ने कुण्डभेदी इत्यादि ग्यारह धार्तराष्ट्रों का

वध कर दिया। इस प्रकार त्रस्त होकर धृतराष्ट्र के पुत्र अपनी सेना सहित भाग खड़े हुये और भीमसेन द्रोणाचार्य की सेना की ओर अग्रसर हुये (७. १२७)।" "भीम और द्रोणाचार्य का युद्ध हुआ जिसमें भीमसेन ने द्रोणाचार्य के रथ को आठ बार फेंक दिया। इस प्रकार द्रोणाचार्य तथा अन्य कौरव-योद्धाओं को पराजित करते हुये भीमसेन ने सात्यकि को देखा और तीव्रगति से उनके पास आ गये। वहाँ अर्जुन तथा श्रीकृष्ण को भी देखकर भीमसेन ने भयंकर गर्जना की। अर्जुन तथा श्रीकृष्ण ने भी प्रत्युत्तर देते हुये गर्जना की, जिसे सुन कर युधिष्ठिर ने समझ लिया कि सब कुशल है। इससे प्रसन्न होकर युधिष्ठिर अर्जुन के पराक्रम के सम्बन्ध में अनेक प्रकार से विचार करने लगे (७. १२८)।" "भीमसेन ने कर्ण से घोर युद्ध किया। भीमसेन ने कर्ण के सारथि तथा अश्वों आदि का वध कर दिया जिससे भागकर कर्ण वृषसेन के रथ पर जा बैठा। इस प्रकार कर्ण को पराजित करके भीमसेन ने महान् सिंहनाद किया जिसे सुनकर युधिष्ठिर अत्यन्त प्रसन्न हुये। इसी समय अर्जुन ने गाण्डीव धनुष की टंकार की तथा श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया (७. १२९)।" "द्रोणाचार्य को देखकर दुर्योधन ने उनको उपालम्भ देते हुये कहा कि उन्होंने ही सात्यकि तथा भीमसेन को आगे बढ़कर अर्जुन की सहायता के लिये जाने दिया। द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को परामर्श दिया कि जयद्रथ की रक्षा करने की प्रभावशाली व्यवस्था की जानी चाहिये। जयद्रथ की ओर जाते समय दुर्योधन ने दो पाञ्चाल राजकुमारों, युधामन्यु तथा उत्तमौजा, को देखा जो पहले अर्जुन के चक्र-रक्षक थे परन्तु जिन्हें अर्जुन के कौरव-सेना में प्रवेश कर लेने के विपरीत कृतवर्मा ने रोक दिया था। अब ये पाञ्चाल वीर कौरव-सेना के दूसरे किनारे से अर्जुन के पास पहुँचने का प्रयास कर रहे थे। उत्तमौजा शीघ्रतापूर्वक युधामन्यु के रथ पर चढ़ गये परन्तु दुर्योधन ने उस रथ को अपनी गदा से भूमि में धंसा दिया। उत्तमौजा आदि ने दुर्योधन को भी रथविहीन कर दिया जिससे वह मद्रराज के रथ पर चढ़ गया। तब उत्तमौजा और युधामन्यु भी अन्य दो रथों पर बैठकर अर्जुन के समीप चले गये (७. १३०)।" "कर्ण ने भीमसेन पर आक्रमण किया। भीम ने कर्ण को छोड़कर अर्जुन के समीप चले जाने का प्रयास किया परन्तु कर्ण ने भीमसेन का अपमानपूर्वक आह्वान किया जिससे भीमसेन ने पीछे मुड़कर कर्ण से युद्ध आरम्भ कर दिया। कर्ण तथा भीमसेन में उस समय भीषण युद्ध होने लगा जिसमें भीमसेन ने कर्ण को रथविहीन करके पराजित कर दिया (७. १३१)।" "कर्ण दूसरे रथ पर बैठ कर भीमसेन से युद्ध करने लगा। कपट-द्यूत तथा वनवास काल में विराट नगर में जो दुःख प्राप्त हुआ था उन सब बातों का स्मरण करके भीमसेन अपने जीवन से विरक्त हो उठे और अपने जीवन का मोह छोड़ कर कर्ण पर आक्रमण करने लगे। उस रणक्षेत्र में पाण्डुनन्दन भीमसेन को अपने बाणों से आच्छादित करते हुये कर्ण ने रीछ के समान रंगवाले अपने काले घोड़ों को भीमसेन के हंस-सदृश श्वेतवर्ण वाले उत्तम घोड़ों के साथ मिला दिया। भीमसेन को कर्ण से युद्ध करते देख कर श्रीकृष्ण और अर्जुन चिन्तित हो उठे। भयंकर युद्ध चलता रहा जिसमें हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का भीषण संहार हुआ (७. १३२)।" "धृतराष्ट्र ने भीमसेन के पराक्रम की प्रशस्ति करते हुये सञ्जय से पूछा कि जो कर्ण रणक्षेत्र में देवताओं, यक्षों, असुरों, और मनुष्यों का भी निवारण कर सकता था, वह युद्ध में भीमसेन को कैसे नहीं लाँघ सका। सञ्जय ने वर्णन करते हुये कहा : भीमसेन ने पुनः कर्ण को सारथि और अश्वों से रहित करके दुर्जय का भी वध कर दिया। उस समय कर्ण शोकार्त होकर विलाप करने लगा, परन्तु भीमसेन के सामने से भागा नहीं (७. १३३)।" "दूसरे रथ पर चढ़कर कर्ण ने पुनः भीमसेन का सामना किया परन्तु भीम ने उसे इस बार भी रथहीन कर दिया। दुर्योधन ने अपने भ्राता, दुर्मुख, को कर्ण की रक्षा के लिये भेजा। भीम ने दुर्मुख का भी वध कर दिया। कर्ण अत्यन्त विलाप करने लगा और अपने रथ पर बैठ कर युद्धभूमि से भाग गया (७. १३४)।" "भीम की विजय के सम्बन्ध में खेदपूर्वक चर्चा करते हुये धृतराष्ट्र ने कहा : 'मैं तो दैव को ही बड़ा मानता हूँ जिसके सामने पुरुषार्थ व्यर्थ है। कर्ण हर प्रकार का प्रयत्न करके भी युद्ध में भीम को जीत नहीं सका।' सञ्जय ने इस सब विनाश का धृतराष्ट्र को ही कारण बताते हुए कहा कि कर्ण को पराजित हुआ देख कर दुर्मर्षण आदि पाँच धार्तराष्ट्रों ने भीम पर आक्रमण किया परन्तु भीम ने उन सबका वध कर दिया। तदनन्तर भीमसेन कर्ण से युद्ध करने लगे (७. १३५)।" "कर्ण अपने जीवन से अत्यन्त विरक्त हो गया। भीमसेन ने कर्ण को पुनः रथ, सारथि तथा आयुधों से रहित कर दिया। तब कर्ण पैदल ही युद्धभूमि से भाग निकला। दुर्योधन ने अपने अन्य सात भ्राताओं को भीम से युद्ध करने के लिये भेजा परन्तु भीम ने उन सबका वध कर दिया। विदुर के शब्दों का स्मरण करके कर्ण रोने लगा। तदनन्तर एक अन्य रथ पर बैठकर वह पुनः भीम से युद्ध के लिये उपस्थित हुआ। उस समय भीमसेन रणक्षेत्र में अर्जुन, कृष्ण, सात्यकि, चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा को आनन्दित करते हुये कर्ण से युद्ध करने लगे (७. १३६)।" "कर्ण ने अत्यन्त शोकपूर्वक दुर्योधन के मृत भ्राताओं को देखा। भीमसेन ने कर्ण को अत्यन्त त्रस्त कर दिया जिस पर चारणों तथा भूरिश्रवा आदि ने भीमसेन को साधुवाद दिया। दुर्योधन ने अपने अन्य सात भ्राताओं को कर्ण की रक्षा के लिये भेजा परन्तु भीम ने इन सबका भी वध कर दिया। इस प्रकार मृत धार्तराष्ट्रों में विकर्ण पाण्डवों को अत्यन्त प्रिय था अतः भीमसेन ने उसके लिये शोक प्रगट किया। दुर्योधन के सात भाइयों का वध करने के पश्चात् भीमसेन ने भयंकर सिंहनाद किया जिससे युधिष्ठिर ने उनके विजयी होने की कल्पना कर ली। अपने इकतीस भ्राताओं को भीमसेन के हाथों मारा गया देखकर दुर्योधन ने विदुर के शब्दों का स्मरण किया (७. १३७)।" "भीमसेन और कर्ण का भयंकर युद्ध हुआ। दोनों ने ही एक दूसरे की सेनाओं का संहार किया। इस युद्ध को देखकर सिद्ध और चारण चकित थे (७. १३८)।" "भीम और कर्ण का युद्ध चलता रहा। देवर्षियों, सिद्धों, गन्धर्वों तथा विद्याधरों आदि ने दोनों ही वीरों की प्रशंसा की। कर्ण के बाण से आहत होकर भीमसेन का सारथि सात्यकि के रथ में चला गया। कर्ण ने भीमसेन के शस्त्रों को भी काट दिया। उस समय भीमसेन ने उछल कर कर्ण को पकड़ना चाहा परन्तु कर्ण अपने रथ में छिप गया। कौरवों और चारणों ने भीमसेन के इस पराक्रम की सराहना की। जब कर्ण ने भीमसेन के समस्त अस्त्र-शस्त्र नष्ट कर दिये तो वे रथ के मार्ग को अवरुद्ध कर देने के लिये अर्जुन के मारे हुये हाथियों के समूह के भीतर प्रवेश कर गये। ऐसा करके भीम केवल अपना प्राण बचाने की इच्छा करने लगे। उन्होंने अर्जुन की प्रतिज्ञा का स्मरण करके कर्ण पर प्रहार नहीं किया। कर्ण ने भी कुन्ती को दिये अपने वचन का स्मरण करके भीमसेन का वध नहीं किया। उसने केवल अपने धनुष से भीमसेन को छूते हुये अपमानपूर्ण वचन मात्र कहा। तब अर्जुन ने कर्ण पर प्रहार करके उसे पलायन करने के लिये विवश कर दिया। जब कर्ण भागने लगा तब अर्जुन ने उस पर एक भयंकर बाण छोड़ा जिसे अश्वत्थामा ने काट दिया। तदनन्तर अर्जुन ने अश्वत्थामा से युद्ध करके उसे भी पलायन करने के लिये विवश कर दिया (७. १३९)।" "धृतराष्ट्र अत्यन्त शोकग्रस्त होकर विलाप करने लगे। सञ्जय ने कहा : सात्यकि ने भीमसेन का अनुसरण किया। राजा अलम्बुष ने सात्यकि से युद्ध किया परन्तु सात्यकि ने उनका वध कर दिया। तदनन्तर जब सात्यकि अर्जुन की ओर बढ़ने लगे तब दुःशासन तथा अन्य धार्तराष्ट्रों ने उन पर आक्रमण किया। सात्यकि ने दुःशासन के घोड़ों का वध कर दिया जिस पर अर्जुन और श्रीकृष्ण अत्यन्त हर्षित हो उठे (७. १४०)।" "पचास त्रिगर्तदेशीय राजकुमारों ने सात्यकि पर आक्रमण किया परन्तु सात्यकि ने उन सबको पराजित कर दिया। तदनन्तर शूरसेनों तथा कलिङ्गों के बीच से होते हुये सात्यकि अर्जुन के निकट आ गये। श्रीकृष्ण ने सात्यकि की प्रशंसा की। परन्तु सात्यकि की उपस्थिति से अर्जुन प्रसन्न नहीं हुये क्योंकि उन्हें युधिष्ठिर की चिन्ता होने लगी (७. १४१)।" "भूरिश्रवा और सात्यकि ने एक दूसरे से रोषपूर्ण सम्भाषण और युद्ध किया। दोनों ने एक दूसरे

को रथविहीन कर दिया जिसके बाद दोनों मुष्टि-युद्ध करने लगे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से थके हुये सात्यकि की भूरिश्रवा के विरुद्ध रक्षा करने के लिये कहा। भूरिश्रवा युद्धस्थल में सात्यकि को घसीटते हुये खेल-सा कर रहा था। अर्जुन ने भूरिश्रवा के पराक्रम की सराहना करने के पश्चात् सात्यकि की रक्षा करने के उद्देश्य से भूरिश्रवा को दाहिनी भुजा को काट गिराया (७. १४२)।" "इस अधर्म के लिये भूरिश्रवा ने अर्जुन को उपालम्भ दिया परन्तु अर्जुन ने अपने कार्य को उचित बताया। तदनन्तर भूरिश्रवा प्राय—वर्णन—के लिये बैठ गये। उन्होंने अर्जुन के तर्कों के औचित्य को स्वीकार किया जिस पर श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने उन्हें आशीर्वाद दिया। यद्यपि श्रीकृष्ण ने निषेध किया तथापि सात्यकि ने प्राय के लिये बैठे भूरिश्रवा का वध कर दिया। उस समय योद्धाओं ने सात्यकि की प्रशंसा नहीं की। सिद्धों, चारणों, मनुष्यों तथा देवताओं ने भूरिश्रवा की ही प्रशस्ति की। वहाँ उपस्थित सैनिकों ने इसे विधि का विधान ही माना। सात्यकि ने वाल्मीकि का उद्धरण देते हुये अपने कार्य को उचित बताया (७. १४३)।" "धृतराष्ट्र ने सात्यकि के भूरिश्रवा द्वारा अपमानित होने का कारण पूछा। सञ्जय ने शिनि और सोमदत्त का इतिहास बताते हुये वृष्णि वीरों की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, नाग और राक्षस भी वृष्णि वीरों पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते (७. १४४)।" "अर्जुन जयद्रथ के रथ की ओर बढ़े। दुर्योधन ने अर्जुन से युद्ध किया और कर्ण से कहा कि वह जयद्रथ की रक्षा करे। कर्ण ने यथाशक्ति जयद्रथ की रक्षा का आश्वासन दिया। दुर्योधन इत्यादि तथा अश्वत्थामा ने अर्जुन + भीमसेन और युयुधान से युद्ध किया। सिद्धों, चारणों और पन्नागों ने कर्ण तथा अर्जुन की प्रशंसा की। अर्जुन ने कर्ण को सारथि, रथ तथा अश्वों से रहित कर दिया। उस समय अश्वत्थामा ने कर्ण को अपने रथ पर बैठा लिया। अर्जुन ने वारुणास्त्र का संधान करके भीषण संहार किया (७. १४५)।" "अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र इत्यादि अस्त्रों—वर्णन—का प्रयोग किया। अर्जुन और जयद्रथ का युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन ने उसके ध्वज को काटकर सारथि का वध कर दिया। उस समय छः महारथियों ने जयद्रथ को अपने बीच में छिपा कर अर्जुन से युद्ध करना आरम्भ किया। श्रीकृष्ण ने अपनी योग-शक्ति से सूर्य को ढँक दिया जिससे अर्जुन के अतिरिक्त अन्य सब ने समझ लिया कि सूर्यास्त हो गया। जब जयद्रथ बार-बार मुंह ऊँचा करके सूर्य को देखने लगा तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उसका वध कर देने की आज्ञा दी। श्रीकृष्ण की बात सुनकर अर्जुन ने कौरव-सेना का भयंकर संहार आरम्भ किया जिससे त्रस्त होकर समस्त योद्धा जयद्रथ को छोड़कर भाग गये। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि वे बिना और विलम्ब किये जयद्रथ का मस्तक काट डालें। श्रीकृष्ण ने कहा: 'सिन्धुराज जयद्रथ के पिता वृद्धक्षत्र इस समय समन्तपञ्चक से बाहर घोर तपस्या कर कर रहे हैं। तुम किसी भयंकर दिव्यास्त्र से जयद्रथ का कुण्डलसहित मस्तक काट कर उसे वृद्धक्षत्र की गोद में गिरा दो। यदि जयद्रथ का मस्तक तुम भूमि पर गिरा दोगे तो वृद्धक्षत्र के शाप के कारण तुम्हारे मस्तक के भी सौ टुकड़े हो जायेंगे।' अर्जुन ने ऐसा ही किया। जयद्रथ का कटा हुआ मस्तक वृद्धक्षत्र की गोद में जा कर गिरा और जब वृद्धक्षत्र घबरा कर सहसा उठे तो गोद से वह मस्तक भूमि पर गिर पड़ा जिससे स्वयं वृद्धक्षत्र के मस्तक के सौ टुकड़े हो गये। इसके बाद श्रीकृष्ण ने सूर्य को पुनः प्रगट करके अन्धकार को विसर्जित कर दिया। अर्जुन और श्रीकृष्ण ने विजय घोष करते हुये अपने-अपने शङ्ख बजाये और भीमसेन ने प्रबल सिंहनाद करके युधिष्ठिर को इस विजय की सूचना दी। सूर्यास्त के बाद भी युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य का युद्ध चलता रहा। इधर अर्जुन ने भी अनेक महारथी वीरों से युद्ध किया (७.१४६)।" "कृपाचार्य + अश्वत्थामा ने अर्जुन से युद्ध किया जिसमें कृपाचार्य को उनका सारथि युद्ध-भूमि से दूर हटा ले गया और अश्वत्थामा ने स्वयं पलायन किया। अर्जुन के बाणों से जब कृपाचार्य मूर्च्छित हो गये तो अर्जुन ने अत्यन्त खेद प्रगट किया। कर्ण ने अर्जुन + सात्यकि + पाञ्चाल चक्ररक्षकों से युद्ध किया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्ण से बच कर रहने के लिये कहा क्योंकि कर्ण के पास इन्द्र द्वारा प्रदत्त शक्ति अभी भी वर्तमान थी। धृतराष्ट्र ने सञ्जय से पूछा कि सात्यकि, जो रथहीन हो चुके थे, किस प्रकार पुनः युद्ध के लिये उपस्थित हुये! सञ्जय ने बताया: श्रीकृष्ण पहले ही यह जान गये थे कि सात्यकि को भूरिश्रवा से परास्त होना पड़ेगा। इसलिये उन्होंने अपने सारथि, दारुक, को बुलाकर यह आज्ञा दे दी थी कि वह उनका रथ तैयार रक्खे। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को देवता, गन्धर्व, यक्ष, नाग, राक्षस या मनुष्य, कोई भी परास्त नहीं कर सकते। सात्यकि को रथहीन देखकर श्रीकृष्ण ने अपने शङ्ख को ऋषभस्वर से बजाया जिसे सुनकर दारुक रथ ले कर वहाँ उपस्थित हो गया। सात्यकि उसी रथ पर आरूढ़ हुये। उस रथ में शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहक नामक श्रेष्ठ अश्व सन्नद्ध थे। सात्यकि ने रथारूढ़ होकर कर्ण से युद्ध आरम्भ किया। उस समयय चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा ने भी अर्जुन का रथ छोड़कर कर्ण पर ही आक्रमण किया। जैसा युद्ध होने लगा वैसा इस पृथिवी पर, अथवा स्वर्ग में देवताओं, गन्धर्वों, असुरों, और राक्षसों ने भी नहीं सुना था। उसे देखने के लिये आकाश में स्थित देवता, गन्धर्व, और दानव भी सावधान हो गये। सात्यकि ने कर्ण को रथविहीन कर दिया। तब कर्ण पुत्र वृषसेन, शल्य तथा अश्वत्थामा ने सात्यकि से युद्ध आरम्भ किया। कर्ण भी दुर्योधन के रथ पर चढ़ गया। सात्यकि ने दुःशासन इत्यादि धार्तराष्ट्रों का भीमसेन की प्रतिज्ञा का ध्यान रखकर वध नहीं किया। सात्यकि ने एकमात्र धनुष से अश्वत्थामा, कृतवर्मा, तथा अन्यान्य महारथी वीरों को परास्त कर दिया। सञ्जय ने बताया कि इस संसार में केवल तीन ही वास्तविक धनुर्धर हैं और वे हैं श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा सात्यकि। धृतराष्ट्र ने पूछा कि सात्यकि क्या किसी दूसरे रथ पर भी आरूढ़ हुये थे? सञ्जय ने कहा: दारुक का एक छोटा भाई था जो एक दूसरा सुसज्जित रथ लाया। इस रथ पर विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुये थे—वर्णन। सात्यकि ने इस रथ पर आरूढ़ होकर कौरव-सेना पर आक्रमण किया और दारुक इच्छानुसार श्रीकृष्ण के निकट चले गये। कर्ण के लिये भी एक नवीन रथ लाया गया। सञ्जय ने धृतराष्ट्र को बताया कि भीमसेन ने इकतीस धार्तराष्ट्रों का वध कर दिया (७. १४७)।" "कर्ण द्वारा अपमानित होने पर भीमसेन ने स्वयं कर्ण का वध करने के लिये अर्जुन से आज्ञा मांगी। अर्जुन ने कर्ण को फटकारते हुये उसके सामने ही उसके पुत्र, वृषसेन, का वध करने की प्रतिज्ञा की। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बधाई दी परन्तु अर्जुन ने श्रीकृष्ण को ही अपनी विजय का श्रेय दिया। तदनन्तर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उस दिन के युद्ध का वृत्तान्त सुनाया और फिर पाञ्चजन्य नामक शङ्ख बजाकर युधिष्ठिर को सूचित करने के लिये चले (७. १४८)।" "श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बधाई दी परन्तु युधिष्ठिर ने सारा श्रेय श्रीकृष्ण को ही दिया। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने एक बार पुनः युधिष्ठिर को बधाई दी। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण की स्तुति की और फिर सात्यकि, भीम, एवं अर्जुन का अभिनन्दन करते हुये सब का आलिङ्गन किया (७. १४९)।" "व्याकुल हुये दुर्योधन ने खेद प्रगट करते हुये द्रोणाचार्य को उपालम्भ दिया। दुर्योधन ने द्रोणाचार्य पर अर्जुन के प्रति पक्षपात का लांछन करते हुये कहा: 'मैं कर्ण को ही ऐसा देखता हूँ जो सच्चे हृदय से मेरी विजय चाहता है।' (७. १५०)।" "दुर्योधन को उत्तर देते हुये द्रोणाचार्य ने अपना कवच उतारने के पूर्व समस्त पाञ्चालों का वध करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने दुर्योधन से कहा कि वह अश्वत्थामा को प्राणों की चिन्ता किये बिना ही सोमकों इत्यादि से प्रतिशोध लेने की आज्ञा दे। तदनन्तर द्रोणाचार्य ने पाण्डवों से युद्ध के लिये प्रस्थान किया (७. १५१)।" "दुर्योधन ने द्रोणाचार्य की निष्ठा के प्रति अपनी शंका को कर्ण से बताया। कर्ण ने दुर्योधन की शंका का समाधान करते हुये कौरवों की पराजय में भाग्य को ही दोषी ठहराया। इसी बीच पाण्डव सेना युद्ध के लिये उपस्थित हुई और दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध होने लगा (७. १५२)।"

जयद्रथविमोचणम्, जयद्रथविमोक्षणपर्वन के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. २, ५५)।

जयद्रथविमोचणपर्वन्, महाभारत के ४७ वें अवान्तरपर्व का नाम है।

"भीम ने जयद्रथ का केश पकड़ कर उसे उठा लिया और फिर भूमि पर पटक कर इस बात पर खेद प्रगट करने लगे कि युधिष्ठिर ने उन्हें इसका वध करने की अनुमति नहीं दी। तदनन्तर भीम ने अपने बाण से जयद्रथ के सर के बालों को काट कर केवल पाँच बाल ही छोड़ दिये। फिर उन्होंने जयद्रथ को सार्वजनिक रूप से यह कहने का प्रण कराया कि 'मैं पाण्डवों का दास हूँ'। इसके बाद जयद्रथ को बाँध कर रथ में भीम आदि उसे युधिष्ठिर के पास लाये। युधिष्ठिर और द्रौपदी ने जयद्रथ को उसकी सेना सहित मुक्त करा दिया। तब जयद्रथ ने गङ्गाद्वार में जाकर शिव को प्रसन्न करने के लिये तपस्या की। शिव के प्रगट होने पर जयद्रथ ने उनसे यह वर मांगा कि वह पाँचो पाण्डवों को युद्ध में पराजित कर दे। शिव ने इसे असम्भव बताते हुये अर्जुन को अपराजेय तथा कृष्णरूपी विष्णु द्वारा रक्षित बताया। फिर भी शिव ने कहा: 'तुम अर्जुन को छोड़ कर युधिष्ठिर की सेना तथा उनके भ्राताओं को एक दिन के लिये पराजित कर सकोगे।' इस प्रकार वर देकर उमा सहित शिव अन्तर्धान हो गये। जयद्रथ भी अपने घर लौट आया। पाण्डव उस समय काम्यक वन में ही निवास करते रहे (३. २७२)।"

१. जयन्त, इन्द्र और शची के पुत्र का नाम है (१. ११४, ४; २२१, ६५)।

२. जयन्त, युधिष्ठिर द्वारा रक्खे गये पाण्डवों के पाँच गुप्त नामों में से एक नाम है (४. ५, ३५; २३, १२)।

३. जयन्त, एक पाञ्चाल महारथी का नाम है जो युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित हुआ (५. १७१, ११)।

४. जयन्त, एक रुद्र का नाम है (१२. २०८, २०)।

५. जयन्त = विष्णु (१,००० नाम)।

६. जयन्त, आदित्यों में से एक का नाम है (१३, १५०, १५)।

जयन्ती, एक नदी का नाम है जिसमें स्नान करने से राजसूययज्ञ का फल मिलता है (३. ८३, १९)।

जयप्रिया, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १२)।

जयरात, एक कौरव-योद्धा का नाम है जिसका भीमसेन ने वध किया (७. १५५, २८)।

जयवर्मन्, एक कौरव-योद्धा का नाम है (७. १५६, १२३)।

जयसेन, एक मगध राजकुमार का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहता था (२. ४, २६)।

जया = दुर्गा (उमा) : ४. ६, १६; ६. २३, ६।

जयाजयौ = शिव (१,००० नाम)।

जयात्मज = अर्जुन (३. १२०, १२)।

१. जयानीक, एक पाण्डव योद्धा का नाम है जिसका अश्वत्थामा ने वध किया (७. १५६, १८१)।

२. जयानीक, विराट के भ्राता का नाम है (७. १५८, ४२)।

जयावती, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ४)।

१. जयाश्व, विराट के भ्राता का नाम है (७. १५८, ४२)।

२. जयाश्व, द्रुपद के एक पुत्र का नाम है जिसका अश्वत्थामा ने वध किया (७. १५६, १८१)।

जयिन् = विष्णु (१,००० नाम)।

१. जरत्कारु, यायावरसंज्ञक ब्राह्मणों के घर में उत्पन्न एक ऊर्ध्वरेता और महान् ऋषि का नाम है जो आस्तीक के पिता थे। "सौति ने कहा: महर्षि जरत्कारु जब तपस्या करते हुये विचरण कर रहे थे तो उन्होंने एक दिन अपने पूर्वजों, यायावरों, को देखा जो पैर ऊपर और सर नीचे किये हुये एक विशाल गड्ढे में खस नामक तृण को पकड़ कर लटक रहे थे। उस खस का चूहों ने सब ओर से प्रायः भक्षण कर लिया था। जरत्कारु के पूछने पर उन यायावरों ने कहा: 'अपनी सन्तान-परम्परा का नाश होने से हम नीचे, पृथिवी पर गिरना चाहते हैं। हमारी एक संतान ही बच गई है जिसका नाम जरत्कारु है। हम भाग्यहीनों की वह अभागी सन्तान केवल तपस्या में ही संलग्न है और विवाह करके पुत्र उत्पन्न नहीं करना चाहता।' पूर्वजों की बात सुनकर जरत्कारु ने अपना परिचय देते हुये अपने नाम की ही कन्या से विवाह करने का वचन दिया (१. १३, ११. १६. १९. २३. २७)।" उन्होंने वासुकि नाग की बहन, जरत्कारु, से विवाह किया (१. १४, ४. ५. ६)। १. १५, १०. ११; ३८, १२. १३. १४ (ब्रह्मा ने ऐसा विधान किया था कि जरत्कारु, वासुकि नाग की बहन जरत्कारु, के साथ विवाह करके आस्तीक नामक पुत्र उत्पन्न करेंगे); ३९, १०. १३. १४; ४०. १. २. ३. ४ (जरेति क्षयमाहुर्वै दारुणं कारुसंज्ञितम्। शरीरं कारु तस्या-सीत्तत्स धीमाञ्छनैः शनैः॥ क्षपयामास तीव्रेण तपसेत्यत उच्यते। जरत्का-रुरिति ब्रह्मन्वासुकेर्भगिनी तथा॥). ७; ४५, १. १९. २७. ३१; ४६, १. २. ३. ५. १९; ४७, १. ४. ७. १४-४३ (एक दिन ये अपनी पत्नी की गोद में सर रख कर सो गये। कुछ समय के पश्चात् जब सूर्य अस्ताचल को जाने लगे तब इनकी पत्नी ने इन्हें जगा दिया जिससे ये सूर्यास्त के पूर्व अपना सन्ध्या-वन्दन आदि कर लें। उस समय ये अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और कहा कि सूर्य में इतनी शक्ति नहीं कि वे उनके सोते रहने पर अस्त हो जाँय। अतः इस प्रकार जगा दिये जाने को इन्होंने अपना अपमान माना और क्रुद्ध होकर पुनः तपस्या के लिये चले गये); ५३, २४; ५४, १. ५; ५८, २४; ५. ११७, १६।

२. जरत्कारु वासुकि नाग की बहन का नाम है जो जरत्कारु की पत्नी और आस्तीक की माता हुई (१. १४,५; ३८, १६. १८; ३२, २; ४०, ४; ४७, २०. २७. ३३)। इसने अपनी गोद में सोते हुये अपने पति को जगा दिया जिस पर इसके पति क्रुद्ध हो उठे (१. ४७, २०. २७. ३३. ४१)। इसने वासुकि से अपने पति के चले जाने तथा अपने गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न करने की बात कहा (१. ४८, १. ९. १०)। इसने अपने पुत्र, आस्तीक, से सर्पों के शापग्रस्त होने की बात बताकर यह इच्छा व्यक्त की कि वह (आस्तीक) उन सत्र को शापमुक्त करायेगा (१. ५४, १. ४. ५. १३)। १. ५८, २४; ५. ११७, १६।

जरत्कारुसुत = आस्तीक (१५. ३५, १०)।

जरस्, उस व्याध का नाम है जिसने मृग के भ्रम से श्रीकृष्ण के पाँव में बाण मारा था। श्रीकृष्ण इसे सान्त्वना देकर स्वर्गलोक चले गये (१६. ४, २२-२४)।

जरायु, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १९)।

जरायुजाः (बहु०) = शिव (१,००० नाम)।

जरा, एक राक्षसी का नाम है जिसने जरासन्ध के शरीर के दोनों टुकड़ों को जोड़ा था (२. १७, ३९)। "पूर्वकाल में ब्रह्मा ने गृहदेवी के नाम से इसकी सृष्टि की थी और इसे दानवों के विनाश के लिये नियुक्त किया था। जो अपने घर की दीवार पर इसे अनेक पुत्रों सहित युवती के रूप में अंकित करता है उसके घर में सदा वृद्धि होती है। मगधराज बृहद्रथ के घर में इसकी सविधि पूजा होती थी, अतः इसने प्रसन्न होकर दो टुकड़ों में उत्पन्न हुये शिशु, जरासन्ध, को जोड़कर बृहद्रथ को समर्पित कर दिया था (२. १८, १-७)।" "बलराम और जरासन्ध के युद्ध के समय जरासन्ध ने गदा का प्रहार किया। वह गदा जहाँ गिरी वहीं यह रहती थी। जरासन्ध की गदा और बलराम के स्थूणाकर्ण नामक अस्त्र के गिरने से यह अपने पुत्र तथा बन्धु-बान्धवों सहित मृत्यु को प्राप्त हुई (७. १८१, १२-१४)। जरासन्ध के साथ युद्ध करते समय कर्ण जरा द्वारा जोड़े गये जरासन्ध के दोनों टुकड़ों को चीर कर अलग करने ही वाला था (१२. ५, ४)। तुकी० **गृहदेवी, राक्षसी।**

१. जरासन्ध, मगध के राजा का नाम है जो बृहद्रथ का पुत्र था (१. १, १३१. १५५)। यह विप्रचित्ति नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ४)। यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. १८६, २३)। 'राजा महावीर्यो जरासंधो महाबलः', (१. १८७, २६)। "इसकी महान् शक्ति तथा इसके मित्रों का वर्णन। इसके भय से अनेक लोग भाग गये। कंस ने इसकी दो पुत्रियों, अस्ति और प्राप्ति, से विवाह किया। जब श्रीकृष्ण ने कंस का वध कर दिया तो उसकी दोनों पत्नियों ने, अपने

इस पिता से श्रीकृष्ण का वध करने के लिये कहा। जब जरासन्ध ने मथुरा पर आक्रमण किया तो समस्त यादव भागकर द्वारका चले गये। इसने अनेक राजाओं को पराजित करके उन्हें गिरिव्रज में वन्दी बना रक्खा था (२. १४, ७. १०. १३. १८. २४. २५. २९. ३५. ३८. ४४. ४६. ५३. ६२. ६४. ६७. ६८)।" इसने बलिदान करने के लिये वन्दी राजाओं को एक शिव-मन्दिर में रख छोड़ा था, अतः श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि विना इसका वध किये राजसूय यज्ञ पूर्ण नहीं होगा (२. १५, ७. १८. २०. २२. २५. २६)। २. १६, ३. १५; १७, ११. १२ (बृहद्रथ की दो पत्नियों में से प्रत्येक ने एक-एक शिशु के अधे भाग को जन्म दिया; जरा नामक राक्षसी ने इन दोनों भागों को जोड़ दिया); १८, ११ (जरा द्वारा जोड़े जाने के कारण इसका नाम जरासन्ध पड़ा); १९, १७–१९. २१ (कंस-वध हो जाने पर इसने क्रोध में आकर मथुरा की ओर अपनी गदा को फेंका); २०, १. ११. २४ (इसका वध करने के लिये श्रीकृष्ण, अर्जुन, और भीम गिरिव्रज के लिये प्रस्थित हुये); २१, ११. १९. २२–२४. २७. ३१. ३७. ३८. ४०. ४२ (इसने ब्राह्मणवेशी श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा भीम का स्वागत किया); २२, १. १२. २७. ३१. ३५ (जब भीम ने इसे युद्ध लिये ललकारा तो इसने अपने पुत्र, सहदेव, को राजसिंहासन पर बैठा दिया); २३, १. ३–५. ८. ९. ३४. ३५ (इसने भीमसेन से मल्ल-युद्ध किया); २४, १. ३–५. ९ (भीमसेन ने अन्ततः इसका वध कर दिया). १२ (इसके रथ का वर्णन). ३३. ४७. ५०. ५३. ५४; ३७, २३; ४२, १–३. ५; ४४, ११ (कर्ण ने इसे मल्लयुद्ध में पराजित किया था); ८१, ३६ (भीमसेन ने इसका वध किया था); ३. १०, २६; १२, ३०; ५. ५१, ३७. ३८ (इसने सम्पूर्ण पृथिवी को अपने अधिकार में कर लिया था परन्तु भीमसेन ने इसका वध कर दिया); १३०, ४८; ६. १२२, १८ (यह कर्ण को पराजित नहीं कर सका); ७. ११, ६. १२; १८०, ३२; १८१, १. ५. ८. १२. १३. १५. १६ (इसने बलराम पर अपनी गदा फेंका परन्तु बलराम ने स्थूणाकर्ण अस्त्र से उसे रोक दिया। वह गदा तब भूमि पर गिरी और उससे दब कर उसी जरा नामक राक्षसी की बन्धु-बान्धवों सहित मृत्यु हो गई जिसने इसे जोड़ा था। गदा से रहित हो जाने पर बाद में भीमसेन ने इसका वध कर दिया); १२. ४, ६ (यह कलिङ्गराज चित्राङ्गद की पुत्री के स्वयंवर में उपस्थित हुआ); ५, १ (इसने कर्ण को मल्लयुद्ध के लिये ललकारा परन्तु कर्ण से पराजित हो गया। तदनन्तर इसने कर्ण को मालिनी नामक नगर प्रदान किया); ३३९, ९६ (कृष्ण के रूप में अवतार लेकर नारायण इसका वध करेंगे); १३. १४७, ३४ (इसे पराजित करके श्रीकृष्ण इसके द्वारा बन्दी बनाये गये राजाओं को मुक्त करायेंगे); १५. २५, १३। तुकी० **बार्हद्रथ, मागध, मगधाधिप, मगधाधिपति, मगधेश्वर**।

२. जरासन्ध, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १००; ११७, ९)।

जरासन्धवध, जरासन्धवधपर्व के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. २, ४७. १३३)।

जरासन्धवधपर्वन्, महाभारत के २३ वें अवान्तर पर्व का नाम है जो सभापर्व के २०–२४ अध्यायों तक आता है। "श्रीकृष्ण ने कहा कि यद्यपि जरासन्ध के नाश का उचित अवसर आ पहुँचा है तथापि युद्ध में तो सम्पूर्ण देवता तथा असुर भी उसे पराजित नहीं कर सकते। अतः श्रीकृष्ण ने बाहुयुद्ध के द्वारा उसे पराजित करने का निश्चय किया। उन्होंने सोचा: 'मुझ में नीति है, भीमसेन में बल है, और अर्जुन हम दोनों की रक्षा करने वाले हैं; अतः जैसे तीन अग्नियाँ यज्ञ की सिद्धि करती हैं उसी प्रकार हम तीनों मिलकर जरासन्ध के वध का कार्य पूर्ण कर लेंगे। जब हम तीनों उससे एकान्त में मिलेंगे तो वह अपने बाहुबल के दर्प में चूर होने के कारण निश्चय ही भीमसेन के साथ युद्ध करने को उद्यत होगा।' यह सोचकर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से तदनुसार स्वीकृति प्राप्त की और फिर अर्जुन तथा भीमसेन को लेकर उन्होंने जरासन्ध की राजधानी के लिए प्रस्थान किया। इन तीनों लोगों ने स्नातक ब्राह्मणों के वेश में यात्रा आरम्भ की। ये तीनों कुरु प्रदेश से प्रस्थित हो कुरु जाङ्गल के बीच से पद्मसरोवर पहुँचे। तदनन्तर कालकूट पर्वत को लाँघकर गण्डकी, महाशोण, सदानीरा एवं एकपर्वतक की समस्त नदियों को क्रमशः पार करते हुए आगे बढ़े। इसके पूर्व उन्होंने मार्ग में सरयू नदी पार करके पूर्वी कोसल प्रदेश में भी पदार्पण किया था। कोसल को पार करके, अनेक नदियों का अवलोकन करते हुये वे सब मिथिला पहुँचे। गंगा और शोणभद्र को पार करके वे तीनों पूर्वाभिमुख होकर चलने लगे। उन लोगों ने कुश एवं चीर से अपने शरीर को ढँक रखा था। अन्त में उन लोगों ने गोरथ पर्वत पर पहुँच कर मगध की राजधानी को देखा (२. २०)।" "मगध की राजधानी गिरिव्रज, विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नामक पर्वतों के बीच स्थित थी। यहीं गौतम ने शूद्रजातीय कन्या के गर्भ से काक्षीवान आदि पुत्रों को उत्पन्न किया था। ये गौतम मुनि यहीं आश्रम में निवास करते हैं और पूर्वकाल में अङ्ग-वङ्ग आदि नरेश भी उनके अतिथि रहा करते थे। यहीं अरबुद, शक्रवापी, स्वस्तिक और मणि नामक नाग भी निवास करते हैं। मनु ने मगध देश के निवासियों को मेघों के लिए अपरिहार्य कर दिया है। चण्डकौशिक तथा मणिमान् नाग भी मगध देश पर अनुग्रह कर चुके हैं। श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीम को लेकर, गिरिव्रज के निकट स्थित चैत्यक नामक पर्वत पर गये। उस स्थान पर बृहद्रथ ने ऋषभ नामक एक मांस-भक्षी राक्षस का वध करके उसके चर्म से तीन बड़े-बड़े नगाड़े बनवाये थे। जहाँ वे नगाड़े बजते थे वहाँ दिव्य-पुष्पों की वर्षा होने लगती थी। कृष्ण आदि ने इन नगाड़ों को फाड़कर चैत्यक पर्वत के परकोटे पर आक्रमण किया और उसे ध्वस्त कर मगध की राजधानी गिरिव्रज में प्रवेश कर गये। उसी समय अनेक अपशकुनों को देखकर वेदों के पारगामी ब्राह्मणों ने जरासन्ध को उनके विषय में सूचित किया। पुरोहितों ने जरासन्ध को हाथी पर बैठाकर उसके चारो ओर प्रज्वलित अग्नि घुमाया। जरासन्ध ने भी अग्नि की शांति के लिए व्रत की दीक्षा लेकर नियमपूर्वक उपवास किया। इधर श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन स्नातक ब्राह्मणों के वेश में अस्त्र शस्त्रों का परित्याग करके और केवल अपनी भुजाओं का ही आयुधों के रूप में प्रयोग करते हुए नगर में प्रविष्ट हुए। फूल-मालाओं की अलंकृत दूकानों को देखकर श्रीकृष्ण आदि ने बलपूर्वक अनेक मालायें छीन लीं। उन सबके वस्त्र अनेक रंग के थे और उन लोगों ने गले में हार तथा कानों में चमकीले कुण्डल धारण कर रक्खे थे। ये लोग नर-श्रेष्ठों से भरी हुई तीन ड्योढ़ियों को पार करके जरासन्ध के निकट पहुँचे। इन्हें देखकर जरासन्ध ने विधि-पूर्वक अतिथ्य-सत्कार किया। श्रीकृष्ण ने जरासन्ध को बताया कि उनके साथ के दो व्यक्ति (भीम, अर्जुन) एक व्रत ले चुके हैं अतः वे अर्धरात्रि के पूर्व वार्तालाप नहीं करेंगे। तब जरासन्ध उन लोगों को यज्ञशाला में ठहराकर स्वयं राजभवन चला गया। अर्धरात्रि होने पर उन लोगों के स्वागत-सत्कार के लिए पुनः उपस्थित हुआ। जरासन्ध का यह नियम भूमण्डल में विख्यात था कि वह स्नातक ब्राह्मणों के आगमन का समाचार सुनकर अर्धरात्रि के समय भी उनके सत्कार के लिए उपस्थित हो जाता था। श्रीकृष्ण के अपूर्व वेश को देखकर जरासंध को अत्यन्त विस्मय हुआ। उसने उन लोगों की निन्दा करते हुए कहा: 'ब्राह्मणों! मानव-जगत में सर्वत्र विख्यात है कि स्नातक ब्राह्मण समावर्तन आदि विशेष निमित्त के विना चन्दन और मालायें आदि नहीं धारण करते। आप के गले में पुष्प मालायें हैं, और भुजाओं में धनुष की प्रत्यञ्चा की रगड़ का चिह्न स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। चैत्यक पर्वत के शिखर को तोड़कर आप लोग नगर में क्यों घुस आये हैं? मेरे यहाँ उपस्थित होकर, विधिपूर्वक अर्पित की हुई इस पूजा को भी आप लोग ग्रहण क्यों नहीं करते?' जरासन्ध के इस प्रकार पूछने पर श्रीकृष्ण ने कहा: 'तुम हमें वेश के अनुसार स्नातक-ब्राह्मण समझ सकते हो, परन्तु स्नातक तो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्गों के लोग हो सकते हैं। स्नातकों में कुछ विशेष नियम का पालन करने वाले होते हैं और कुछ साधारण।.........हम अपने कार्य से तुम्हारे समक्ष उपस्थित हुये हैं अतः शत्रु से पूजा नहीं ग्रहण कर सकते।' (२. २१)।" "जरासन्ध ने जब यह कहा कि उन लोगों के साथ उसे किसी वैर का स्मरण नहीं है

तब श्रीकृष्ण ने उससे कहा : 'तुमने अनेक क्षत्रियों को वन्दी बना रक्खा है। अतः ऐसे अपराध का आयोजन करके भी तुम अपने को निरपराध कैसे मानते हो ?' तदनन्तर श्रीकृष्ण ने अपना तथा भीम और अर्जुन का परिचय देने के पश्चात् जरासन्ध को युद्ध के लिए ललकारा। उन्होंने कहा : 'देवता की पूजा के लिए मनुष्यों का वध कभी नहीं देखा गया। अतः तुम कल्याणकारी देवता शिव की पूजा में वन्दी राजाओं को बलि कैसे कर सकते हो ? तुम भी उसी वर्ण के हो जिस वर्ण के वे राजा लोग। क्या तुम अपने ही वर्ण के लोगों को पशु मानकर उनकी हत्या करोगे ?…… दम्भोद्भव, कार्तवीर्य अर्जुन, उत्तर तथा बृहद्रथ, ये सभी नरेश अपने से बड़ों का अपमान करके अपनी सेना सहित नष्ट हो गये हैं। अतः या तो तुम समस्त राजाओं को छोड़ दो अथवा यम-लोक की राह लो।' श्रीकृष्ण की बात सुनकर जरासन्ध ने उन तीनों में से किसी एक से अथवा एक-एक करके प्रत्येक से युद्ध करने का प्रस्ताव किया। ऐसा कहकर राजा जरासन्ध ने अपने पुत्र, सहदेव, के राज्याभिषेक की आज्ञा दे दी। तदनन्तर उसने अपने सेनापति कौशिक और चित्रसेन का स्मरण किया जो पूर्व समय में हंस और डिम्भक के नाम से विख्यात थे। श्रीकृष्ण ने दिव्यदृष्टि से यह बात जान ली थी कि जरासन्ध को युद्ध में दूसरे वीर का भाग नियत किया गया है। यदुवंशियों में से किसी के हाथ से उसकी मृत्यु नहीं हो सकती थी अतः ब्रह्मा के आदेश की रक्षा करने के लिए उन्होंने स्वयं उसका वध करने की इच्छा नहीं की (२. २२)।" "जरासन्ध ने भीमसेन के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। जरासन्ध को युद्ध के लिए उत्सुक देखकर उसके पुरोहित गोरोचन, माला, अन्यान्य मांगलिक वस्तुयें तथा उत्तम ओषधियाँ लेकर उसके पास आये। यशस्वी ब्राह्मण के द्वारा स्वस्ति वाचन संपन्न हो जाने के पश्चात् जरासन्ध युद्ध के लिये संनद्ध हुआ। भीमसेन भी श्रीकृष्ण से परामर्श लेकर स्वस्तिवाचन के अनन्तर युद्ध की इच्छा से जरासन्ध के पास आ गये। दोनों का युद्ध आरम्भ हुआ जिसमें दोनों ने केवल अपनी भुजाओं का ही आयुध के रूप में प्रयोग किया। दोनों ही मल्ल-युद्ध की शिक्षा में प्रवीण थे और इसलिए विभिन्न प्रकार के दावों का आश्रय लेकर दोनों ने भयंकर युद्ध आरम्भ किया। दोनों का युद्ध कार्तिक मास के प्रथम दिन आरम्भ हुआ और अविराम गति से त्रयोदशी तक चलता रहा। चतुर्दशी की रात्रि में मगध-नरेश जरासन्ध क्लेश से थककर युद्ध से निवृत्त सा होने लगा। उसकी दशा को देखकर श्रीकृष्ण ने भीम से कहा : 'शत्रु यदि थक गया हो तो उसे युद्ध में अधिक पीड़ा देना उचित नहीं है और यदि उसे पूर्णतः पीड़ा दी जाय तो वह अपने प्राण त्याग देगा।' श्रीकृष्ण के ऐसा कहने पर भीमसेन ने जरासन्ध को थका हुआ जानकर उसके वध का विचार किया (३. २३)।" "श्रीकृष्ण के कहने पर भीम ने जरासन्ध को उठाकर आकाश में वेग से घुमाना आरम्भ किया। तब श्रीकृष्ण ने जरासन्ध का वध कराने की इच्छा से भीमसेन की ओर देखकर एक नरकट हाथ में ले लिया और उसे दो टुकड़ों में बीच से चीर डाला। यह जरासन्ध को मारने के लिए एक संकेत था। उस संकेत को समझ कर भीमसेन ने जरासन्ध को सौ वार घुमाकर भूमि पर पटक दिया और फिर उसकी पीठ को धनुष की तरह मोड़कर उसकी रीढ़ तोड़ डाला। तदनन्तर भीम ने जरासन्ध के एक पैर को पकड़कर और दूसरे पर अपना पैर रखकर उसे दो भागों में चीर डाला। उस समय जरासन्ध के दोनों टुकड़े पुनः आपस में जुड़ गये और जरासन्ध उठकर युद्ध करने लगा। तब श्रीकृष्ण ने पुनः संकेत किया जिसे समझकर भीम ने मगधराज को दो टुकड़ों में चीर डाला और उन दोनों को विपरीत दिशाओं में फेंक दिया। जरासन्ध का इस प्रकार वध करके भीम ने भीषण सिंहनाद किया जिसे सुनकर मगध निवासी भयभीत हो उठे। उस समय स्त्रियों के गर्भ तक गिर गये। तदनन्तर वे तीनों वीर जरासन्ध के शव को राजभवन के द्वार पर छोड़कर वहाँ से चल दिये। श्रीकृष्ण ने जरासन्ध के ध्वजा-पताकामंडित दिव्य रथ को संनद्ध कर लिया और उस पर भीम तथा अर्जुन को बैठाकर उस स्थान पर गये जहाँ उनके बान्धव-स्वरूप समस्त राजा बन्दी थे। राजाओं को मुक्त कराने के पश्चात् उन्हें लेकर श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीम जरासन्ध के दिव्य रथ पर बैठकर बाहर निकले। उस रथ का नाम सोदर्यवान था—विस्तृत वर्णन। यह वही रथ था जिस पर बैठकर इन्द्र ने निन्यानवे दानवों का वध किया था। इस रथ को राजा वसु ने इन्द्र से प्राप्त किया था और फिर क्रमशः यह वसु से बृहद्रथ को और बृहद्रथ से जरासन्ध को प्राप्त हुआ। श्रीकृष्ण ने गरुड़ का स्मरण किया जो अनेक भयंकर भूतों के साथ रथ की ध्वजा पर स्थित हो गये। मुक्त राजाओं ने आभार प्रकट करते हुए श्रीकृष्ण की स्तुति की। श्रीकृष्ण ने उन राजाओं को युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहायता करने के लिए कहा। जरासन्ध का पुत्र, सहदेव, भी उस समय पुरोहितों को आगे करके नगर से निकलकर श्रीकृष्ण की शरण में आया। श्रीकृष्ण ने सहदेव को मगध का राज्य सौंप दिया। तदनन्तर श्रीकृष्ण आदि इन्द्रप्रस्थ आये। वहाँ युधिष्ठिर से विदा लेकर उसी दिव्य रथ पर बैठकर श्रीकृष्ण अपने नगर के लिए प्रस्थित हुये। उस समय युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने श्रीकृष्ण की परिक्रमा की (२. २४)।"

जरासन्धसुत, जरासन्ध के पुत्र के लिये प्रयुक्त हुआ है जिसका द्रोणाचार्य ने वध किया (७. १२५, ४२)।

जरासन्धसुता, जरासन्ध की पुत्री के लिये प्रयुक्त हुआ है जिसका सहदेव (पाण्डव) के साथ विवाह हुआ था (१५. १, २४)।

जरासन्धात्मज (जरासन्ध का पुत्र) = सहदेव (२. २४, ४०. ४३)। तुकी० **जारासन्धि**।

जरिता, मन्दपाल की पत्नी, एक शार्ङ्गिका का नाम है : १. २२९, १६. १९; २३०, २. ३. १६; २३१, १. ५. ११; २३३, १३. १७. २१. २४।

जरितारि, पक्षिरूपधारी मन्दपाल ऋषि के द्वारा जरिता के गर्भ से उत्पन्न एक पक्षी मुनि का नाम है। इन्होंने खाण्डववन में अग्नि की स्तुति करके अभयदान प्राप्त किया था (१. २३०, ९; २३१, १८; २३२. १. ७; २३३, ६)।

जर्जरानना, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १९)।

जर्तिक, वाहीकों की एक जाति का नाम है जिसका चरित्र अत्यन्त निन्दित कहा गया है (८. ४४, १०)।

जल, जल-तत्त्व के अभिमानी देवता का नाम है जो ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहते हैं (२. ११, २०)।

जलचर = शिव (१,००० नाम)।

जलजकुसुमयोनि = ब्रह्मा (८. ९०, २४)। तुकी० पद्मयोनि।

जलद, शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम है, जिसके निकट कुमुदोत्तर वर्ष है (६. ११, २५)।

जलधार, शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम है (६. ११, १६. २५)।

जलन्धम, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ५७)।

जलप्रदानिक, से जलप्रदानिक पर्व का तात्पर्य है (१. २, ७३)।

जलप्रदानिकपर्वन्, महाभारत के ८५ वें अवान्तर पर्व का नाम है जो स्त्री पर्व के १–१५ अध्यायों तक आता है। "जनमेजय ने वैशम्पायन से पूछा कि दुर्योधन की मृत्यु के पश्चात् धृतराष्ट्र आदि ने क्या किया। वैशम्पायन ने बताया कि अपने सौ पुत्रों की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए धृतराष्ट्र की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। वे पुत्र शोक से संतप्त होकर घोर विलाप कर रहे थे। सञ्जय ने उनकी यह दशा देखकर सान्त्वना देते हुए उन्हें मृत बन्धु बान्धवों का प्रेतकर्म संपन्न कराने का आदेश दिया। इस पर भी धृतराष्ट्र विलाप करते ही रहे। उनकी यह दशा देखकर सञ्जय ने उन्हें पुनः सान्त्वना देने का प्रयास किया। सञ्जय ने धृतराष्ट्र की कटु शब्दों में भर्त्सना भी की क्योंकि उन्होंने ही अपने पुत्रों को कुमार्ग का अनुसरण करने से रोका नहीं (११. १)।" "विदुर ने राजा धृतराष्ट्र को समझाकर उनको शोक का परित्याग करने के लिए कहा (११. २)।" "विदुर ने शरीर की अनित्यता बताते हुए धृतराष्ट्र को शोक का परित्याग करने के लिए कहा। विदुर के उपदेशों पर मुग्ध होकर धृतराष्ट्र ने उनसे

मानव-जीवन को अनित्यता के सम्बन्ध में और विस्तार से बताने का निवेदन किया। विदुर ने धृतराष्ट्र की इच्छा पूर्ण करते हुए उन्हें तदनुसार उपदेश दिया (११. ३)।" "दुःखमय संसार के गहन स्वरूप का वर्णन करते हुए विदुर ने उससे मुक्त होने का उपाय बताया (११. ४)।" "गहन-वन के दृष्टान्त द्वारा विदुर ने संसार के भयङ्कर स्वरूप का वर्णन किया (११. ५)।" "विदुर ने मोक्ष-धर्म के साथ तुलना करते हुए संसार रूपी वन के स्वरूप का और अधिक स्पष्टीकरण किया (११. ६)।" "धृतराष्ट्र के निवेदन करने पर विदुर ने संसार-चक्र का वर्णन किया और रथ के रूपक से संयम तथा ज्ञान आदि को मुक्ति का उपाय बताया (११. ७)।" "विदुर के वचनों को सुनकर राजा धृतराष्ट्र पुत्र शोक से संतप्त एवं मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय महर्षि व्यास ने उन्हें सन्त्वना देते हुए संहार को अवश्यंभावी बताया और कहा : 'पूर्व-काल में एक समय मैं इन्द्र की सभा में गया। उस समय वहाँ नारद आदि समस्त देवर्षि भी उपस्थित थे। उसी समय पृथ्वी ने वहाँ एकत्र हुए देवताओं से अपना भार कम कराने का निवेदन किया। तब विष्णु ने पृथ्वी को आश्वासन देते हुए बताया कि दुर्योधन नामक व्यक्ति पृथ्वी पर जन्म लेकर पृथ्वी के कार्य को सिद्ध करेगा। उस दुर्योधन के लिए समस्त भूपाल कुरुक्षेत्र में एकत्र और एक दूसरे के साथ युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त होंगे।' इस प्रकार दुर्योधन आदि की मृत्यु को पूर्व निर्दिष्ट और अवश्यंभावी बताते हुए व्यास ने धृतराष्ट्र को सान्त्वना दी। व्यास के उपदेश को सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा : 'आपका यह वचन सुनकर कि सब कुछ देवताओं की प्रेरणा से हुआ है, मैं अपना प्राण धारण करूँगा और यथाशक्ति इस बात का भी प्रयास करूँगा कि मुझे शोक न हो।' धृतराष्ट्र का यह वचन सुनकर व्यास वहीं अन्तर्धान हो गये (११. ८)।" "जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने कहा : 'दुर्योधन तथा उसकी सम्पूर्ण सेना का वध हो जाने के पश्चात् सञ्जय की दिव्य-दृष्टि समाप्त हो गई और वे धृतराष्ट्र की सभा में उपस्थित हुए। उन्होंने युद्ध में मृत समस्त योद्धाओं का वर्णन करते हुए धृतराष्ट्र से उन सबका प्रेत कर्म कराने का निवेदन किया। उनकी बात सुनकर धृतराष्ट्र मूर्च्छित हो गये। तब विदुर ने उपस्थित होकर उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा : 'कालः कर्षति भूतानि सर्वाणि विविधानि च। न कालस्य प्रियः कश्चिन्न द्वेष्यः कुरुसत्तम ॥' विदुर ने और भी दृष्टान्त देते हुए धृतराष्ट्र को सान्त्वना दी (११. ९)।" "धृतराष्ट्र ने स्त्रियों तथा प्रजाजनों को साथ लेकर रणभूमि में जाने का निश्चय किया। तब समस्त स्त्रियों को रथ में बैठाकर तथा प्रजाजनों के साथ धृतराष्ट्र और विदुर आदि हस्तिनापुर से बाहर निकले (११. १०)।" "धृतराष्ट्र आदि अभी एक कोस की दूरी पर ही पहुँचे थे कि उन्हें अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा दिखाई पड़े। कृपाचार्य ने गान्धारी से कहा : 'आपके समस्त पुत्र निर्भय होकर और बहुसंख्यक शत्रुओं का संहार करते हुये मृत्यु को प्राप्त हुये हैं। भीमसेन ने आपके पुत्र, दुर्योधन, को अधर्मपूर्वक मारा है। यह समाचार जानकर हम लोगों ने पाण्डव-शिविर पर रात्रि के समय आक्रमण कर पाण्डव-वीरों का संहार कर डाला।' तदनन्तर कृपाचार्य आदि ने पाण्डवों के क्रोध से अपने को बचा रखने के लिये धृतराष्ट्र से विदा माँगी और तत्काल ही गङ्गातट की ओर अपने घोड़े हाँक दिये। गङ्गातट पर तीनों महारथियों ने आपस में विदा ली। कृपाचार्य हस्तिनापुर चले गये; कृतवर्मा अपने देश की ओर चले गये; और अश्वत्थामा ने व्यास-आश्रम की राह ली। पाण्डवों का अपराध करके भय से पीड़ित ये तीनों वीर सूर्योदय के पूर्व ही अपने-अपने अभीष्ट स्थानों की ओर चले गये। तदनन्तर पाण्डवों ने द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के पास पहुँचकर उसे बलपूर्वक युद्ध में पराजित किया (११. ११)।" "श्रीकृष्ण को साथ ले कर युधिष्ठिर आदि पाण्डव धृतराष्ट्र से मिलने के लिये चले। मार्ग में ये लोग विलाप करती हुई कुरुकुल की स्त्रियों से मिले। तदनन्तर इन लोगों ने धृतराष्ट्र के सम्मुख उपस्थित होकर उनका अभिवादन किया। धृतराष्ट्र ने कुछ संकोचपूर्वक युधिष्ठिर का आलिङ्गन किया। इसके बाद धृतराष्ट्र ने भीमसेन से मिलने की इच्छा प्रगट की, परन्तु उनके मन के कुटिल भाव को जानकर श्रीकृष्ण ने भीमसेन की लौह मूर्ति ही धृतराष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत की। उस प्रतिमा को ही भीम समझकर धृतराष्ट्र ने उसका आलिङ्गन करते हुये उसे तोड़ दिया। धृतराष्ट्र के शरीर में दस हजार हाथियों का बल तो था, फिर भी, लोहमयी प्रतिमा को तोड़ने से उनका वक्षस्थल व्यथित हो उठा तथा उनके मुख से रक्त निकल गया जिससे वे मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। उस समय उनके सारथि, संजय, ने उन्हें सान्त्वना देकर उठाया। तदनन्तर अपने द्वारा भीम का वध हुआ जानकर धृतराष्ट्र पुनः शोक करने लगे। तब श्रीकृष्ण ने वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हुये उन्हें क्रोध का परित्याग करने का उपदेश दिया (११. १२)।" "श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र के कुकर्मों पर उनको भर्त्सना करते हुये उनके क्रोध को शान्त किया और बताया कि पाण्डव निर्दोष हैं। श्रीकृष्ण की बातों से आश्वस्त होकर धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को सस्नेह हृदय से लगाया (११. १३)।" "धृतराष्ट्र की आज्ञा से श्रीकृष्ण को साथ लेकर पाण्डवगण गान्धारी के दर्शन के लिये उपस्थित हुये। उस समय जब गान्धारी युधिष्ठिर आदि को शाप देने के लिये उद्यत हुईं तब महर्षि व्यास ने उनकी इस दुर्भावना को जान लिया। महर्षि व्यास दिव्य दृष्टि से अपने मन को समस्त प्राणियों के साथ एकाग्र करके उनके आन्तरिक भाव को समझ लेते थे। फलस्वरूप गान्धारी के पापपूर्ण संकल्प को जानकर मन के समान वेगशाली व्यास ने गङ्गा के जल से आचमन किया और तदनन्तर गान्धारी के समक्ष उपस्थित हो गये। व्यास ने गान्धारी को क्रोध से विरत होने के लिये समझाते हुये कहा : 'गत अट्ठारह दिनों में विजय की अभिलाषा रखनेवाला तुम्हारा पुत्र प्रतिदिन तुमसे जब आशीर्वाद लेने के लिये आता था तब तुम कहती थीं कि 'यतो धर्मस्ततो जयः', अर्थात् जहाँ धर्म है वहीं विजय है।' व्यास की बातों को सुनकर गान्धारी ने यह स्वीकार किया कि पाण्डवों की रक्षा करना ही अब उनका तथा धृतराष्ट्र का कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा : 'कुन्ती के ये पुत्र जिस प्रकार कुन्ती के द्वारा रक्षणीय हैं उसी प्रकार मुझे भी इनकी रक्षा करनी चाहिये। महाराज धृतराष्ट्र का भी कर्त्तव्य है कि इनकी रक्षा ही करें। कुल का संहार तो दुर्योधन, शकुनि और दुःशासन के अपराध के ही कारण हुआ है। परन्तु भीमसेन ने गदायुद्ध की मर्यादा का उल्लङ्घन करके दुर्योधन को मारा है। अतः उनका यह व्यवहार मेरे क्रोध को उद्दीप्त कर रहा है।' (११. १४)।" "भीमसेन ने अपने अमर्यादित युद्ध के लिये गान्धारी से क्षमायाचना की। उन्होंने कहा : 'आपके उस महाबली पुत्र को कोई भी धर्मानुकूल युद्ध करके मार नहीं सकता था, इसीलिये मैंने विषमतापूर्ण व्यवहार किया। पहले उसने भी अधर्म से ही राजा युधिष्ठिर को जीता था; इसलिये मैंने भी उसके साथ विषम व्यवहार किया।' भीम की बातें सुनकर गान्धारी ने उनसे कहा : 'वृषसेन ने जब नकुल के घोड़ों को मारकर उसे रथहीन कर दिया था तो उस समय तुमने युद्ध में दुःशासन को मार कर उसका जो रक्तपान किया वह सत्पुरुषों द्वारा निन्दित और नीच पुरुषों द्वारा सेवित घोर क्रूरतापूर्ण कर्म है।' भीमसेन ने दुःशासन के रक्तपान करने के तथ्य को अस्वीकार करते हुये कहा : 'दुःशासन का रक्त मेरे दाँतों और ओठों को लाँघकर आगे नहीं जा सका था। इस बात को सूर्यपुत्र यमराज जानते हैं कि केवल मेरे दोनों हाथ रक्त से रंजित थे। वृषसेन के द्वारा नकुल के अश्वों को मारा गया देखकर जो दुःशासन के समस्त भ्राता हर्ष से उल्लसित हो उठे थे उन्हीं के मन में त्रास उत्पन्न करने के लिये मैंने वह दुष्कर्म किया। द्यूतक्रीड़ा के समय जब द्रौपदी का केश खींचा गया तो उस समय क्रोध में भरकर मैंने जो प्रतिज्ञा की थी उसी की स्मृति मेरे, मन में सदैव बनी रहती थी। यदि मैं उस प्रतिज्ञा को पूर्ण न करता तो मैं क्षत्रिय-धर्म से च्युत हो जाता, इसलिये मैंने दुःशासन का वध किया।' भीम की बातें सुनकर पुत्र-पौत्रों के वध से पीड़ित गान्धारी ने युधिष्ठिर के सम्बन्ध में पूछा। युधिष्ठिर ने उपस्थित होकर विनम्रतापूर्वक कहा : 'देवि ! आप के पुत्रों का संहार करानेवाला क्रूरकर्मा युधिष्ठिर मैं ही हूँ। मैं आपके शाप के योग्य हूँ अतः आप मुझे शाप दीजिये।' इस प्रकार क्षमायाचना

करते हुये युधिष्ठिर ने गान्धारी का चरण-स्पर्श करना चाहा। इतने ही में गान्धारी ने अपने नेत्रों पर बँधी पट्टी के भीतर से ही युधिष्ठिर के पैरों के नखों को देख लिया जिससे उनके नख भस्म हो गये। उनकी यह अवस्था देखकर अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण के पीछे छिप गये। पाण्डवों को इस प्रकार भयभीत देखकर गान्धारी का क्रोध शान्त हो गया। तदनन्तर पाण्डव अपनी माता कुन्ती के पास आये। कुन्ती ने अपने पुत्रों के शरीर पर घावों के चिह्न आदि देखकर विलाप किया। द्रौपदी ने अपने पुत्रों तथा अभिमन्यु के लिये विलाप किया। उस समय विदुर की भविष्यवाणियों का उल्लेख करते हुये कुन्ती और गान्धारी ने द्रौपदी को सान्त्वना दी (११. १५)।"

१. जलसन्ध, एक मगध राजा का नाम है (१. २, २६३)। यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. ८६, १२)। इसने दुर्योधन का पक्ष ग्रहण किया (३. ३६, ९; ५. ६, ७)। दुर्योधन की सेना में इसकी उपस्थिति (५. १६७, १४; ७. ८७, २६; ९५, २१)। भीमसेन ने इस पर आक्रमण किया (७. ९७, २)। ७. ११४, १५; ११५, ३०. ३६. ३७. ३९. ४१. ४३. ४६. ५०. ५१. ५४. ५५. ५८; ११९, ४; १२०, ९; १४१, २४; १४७, ५८; १५८, ६५ (मृत योद्धाओं के अन्तर्गत इसका उल्लेख); ८. ५, ४५; ९. २, २० (इसने दुर्योधन का पक्ष ग्रहण किया था); २४, २६; ६४, ३२; ११. २६, ३७ (इसका शवदाह किया गया); १५. ३२, १० (उन मृत योद्धाओं में एक यह भी था जो व्यास के आवाहन पर गङ्गा से प्रगट हुये)। तुकी० **मगध**।

२. जलसन्ध, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९४; ११७, २; १३८, ६)। धृतराष्ट्र के उन चौदह पुत्रों में एक यह भी था जिन्होंने भीमसेन पर आक्रमण किया (६. ६४, २८)। भीमसेन ने इसका वध किया (६. ६४, ३३)। भीमसेन पर आक्रमण करनेवाले धृतराष्ट्र के बीस पुत्रों में एक यह भी था (८. ५१, ८)।

जला, यमुना की पार्श्ववर्तिनी एक नदी का नाम है जहाँ उशीनर ने यज्ञ करके इन्द्र से भी उच्च पद प्राप्त किया था (३. १३०, २१)।

जलाधिप = वरुण (देखिये वस्था०)।

जलेयु, पूरु-पुत्र रौद्राश्व द्वारा मिश्रकेशी नामक अप्सरा से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है (१. ९४, १०)।

जलेला, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १६)।

जलेशय = शिव (१,००० नाम)।

१. जलेश्वर = वरुण (देखिये वस्था०)।

२. जलेश्वर = शिव (१,००० नाम)।

जलेश्वरी, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १३)।

जलोद्भव = शिव (१,००० नाम)।

जल्प, एक प्रकार के वाद का नाम है (२. ३६, ३)।

जवन, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७५)।

१. जह्नु, अजमीढ द्वारा केशिनी के गर्भ से उत्पन्न एक प्राचीन राजा का नाम है जिनके वंशज कुशिक के नाम से प्रसिद्ध हुये (१. ९४, ३२. ३३)। ये अज के पिता हुये—इनकी वंश-परम्परा का वर्णन (१२. ४९, ३; १३. ४, ३)। 'जाह्नविसेवितः', (१३. १६५, ५४)।

२. जह्नु = विष्णु (१,००० नाम)।

जह्नुकन्या = गङ्गा (१३. १४, ५५)।

जह्नुसुता = गङ्गा (१. ९८, १८)।

जागुड = एक भारतीय जनपद का नाम है जहाँ के राजा, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित हुए थे (३. ५१, २५)।

जाङ्गल, एक जाति का नाम है (५. ५४, ७; ६. ९, ३९. ५६)। तुकी० बहु० कुरुजाङ्गल।

जाजलि, एक प्राचीन ऋषि का नाम है : १२. २६१, १. २. ९. ११. १२. १४. २५. २७. ३२, ३३. ३५. ३७. ३८. ४१. ४२; २६२, १. २. ५. ६. ९. १०. १२. २१. ३३. ३५. ४६. ५०. ५२. ५३; २६३, १. ४. ७. २०. २८. ३०. ३५. ३६. ४१. ४२; २६४, ४. ५. १९।

जटासुरि (जटासुर का पुत्र) = अलम्बुष (७. १७४, १२. २२. २४. २६)।

१. जाठर, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६२)।

२. जाठर = सूर्य (३. ३, १९)।

जातवेदस = अग्नि (देखिये वस्था०)।

जातवेदसी = दुर्गा (उमा) : ६. २३. १०।

जातिस्मर, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से मनुष्य के शरीर एवं मन की शुद्धि हो जाती है (३. ८४, १२८)।

जातिस्मरकीट, एक कीड़े का नाम है जिसे, शुभ कर्मों के प्रभाव से, अपने पूर्वजन्मों की वार्तो का स्मरण बना रहा। व्यासजी की कृपा से इसकी उन्नति और मुक्ति हुई (१३. ११७–११९)।

जातिस्मरह्रद, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से मनुष्य को पूर्वजन्मों की स्मृति प्राप्त होती है (३. ८५, ३८)।

जातूकर्ण्य, एक जितेन्द्रिय मुनि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित होते थे (२. ४, १४)।

जानकि, एक राजा का नाम है जो चन्द्रविनाशन असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ३९)। पाण्डवों की ओर से इसे रण-निमन्त्रण भेजा गया (५. ४, २०)।

जानकी = सीता (देखिये वस्था०)।

जानपदी, एक अप्सरा का नाम है जो इन्द्र की आज्ञा से शरद्वान् की तपस्या में विघ्न उत्पन्न करने के लिये उपस्थित हुई (१. १३०, ६)।

जानुजङ्घ, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३६; १३. १६५, ५९)।

जापकोपाख्यानम्—"युधिष्ठिर ने भीष्म से यह जानने की इच्छा प्रगट की कि जप करनेवालों को फल की प्राप्ति कैसे होती है। तब भीष्म ने जप तथा ध्यान की महिमा और उसके फल का वर्णन किया (१२. १९६)।" "भीष्म ने जापक में दोष आने के कारण उसे नरक की प्राप्ति के सम्बन्ध में उपदेश दिया (१२. १९७)।" "भीष्म ने यह प्रतिपादित किया कि परमधाम के अधिकारी जापक के लिए देवलोक भी नरक तुल्य है (१२. १९८)।" "युधिष्ठिर के पूछने पर काल, मृत्यु, यम, इक्ष्वाकु और ब्राह्मण के विवाद के प्रसङ्ग की चर्चा करते हुए भीष्म ने कहा : हिमालय पर्वत की निकटवर्ती पहाड़ियों पर एक महायशस्वी और धर्मात्मा ब्राह्मण निवास करता था। यह ब्राह्मण वेद के छहों अङ्गों का ज्ञाता, परम बुद्धिमान्, जप में तत्पर रहनेवाला और कौशिक के वंश में उत्पन्न पिप्पलाद का पुत्र था। इन्द्रियों को संयम में रखकर नियमपूर्वक जप-तप करते हुए इस ब्राह्मण को एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो गये। ब्राह्मण के जप से प्रसन्न होकर देवी सावित्री ने उसे दर्शन दिया। जब सावित्री ने उसे वर देने की इच्छा प्रकट की तब ब्राह्मण ने कहा : 'शुभे ! इस मन्त्र (गायत्री मन्त्र) के जप में मेरी इच्छा बराबर बढ़ती रहे तथा मेरे मन की एकाग्रता में भी प्रतिदिन वृद्धि हो।' सावित्री ने तब ब्राह्मण से इस प्रकार कहा : 'तुमने मुझसे जो प्रार्थना की है वह पूर्ण होगी। तुम नियमपूर्वक एकाग्रचित्त होकर जप करो। धर्म स्वयं तुम्हारी सेवा में उपस्थित होगा। काल, मृत्यु और यम भी तुम्हारे निकट पधारेंगे; तुम्हारा उन सबके साथ यहाँ धर्मानुकूल वाद-विवाद भी होगा।' तदन्तर वह ब्राह्मण शत-दिव्यवर्षों तक पूर्ववत् जप में संलग्न रहा। बुद्धिमान् ब्राह्मण का वह नियम पूर्ण होने पर साक्षात् धर्म ने उसे दर्शन देकर कहा : 'तुमने दिव्य और मानुष सभी लोकों पर विजय प्राप्त कर ली है। अब तुम अपने प्राणों का परित्याग करो और अभीष्ट लोकों में जाओ। ब्राह्मण ने उत्तर दिया : 'इस शरीर के साथ मैंने अनेक दुःख और सुख उठाये हैं, अतः मैं इसका त्याग नहीं कर सकता।' तब धर्म ने कहा कि शरीर का त्याग आवश्यक है। ब्राह्मण के यह पूछने पर कि क्या वह सशरीर स्वर्ग नहीं जा सकता, धर्म ने कहा : 'यदि तुम शरीर नहीं छोड़ना चाहते तो देखो, ये काल, मृत्यु, और यम तुम्हारे पास आये हैं।' तदनन्तर वैवस्वत यम, काल, और मृत्यु, तीनों

ने ब्राह्मण से कहा कि वे सब उसे स्वर्ग ले जाने के लिए आये हैं। ब्राह्मण ने अर्घ्य और पाद्य देकर सबका स्वागत किया। इसी समय तीर्थयात्रा के लिये आये हुये राजा इक्ष्वाकु भी उस स्थान पर उपस्थित हुए। ब्राह्मण ने इक्ष्वाकु का भी अर्घ्य और पाद्य से स्वागत किया। इसके पश्चात् ब्राह्मण ने अपनी शक्ति के अनुसार इन आगन्तुकों की सेवा करने की इच्छा प्रकट की। इक्ष्वाकु ने कहा : 'मैं क्षत्रिय हूँ और आप ब्राह्मण, अतः मैं आपको कुछ धन देना चाहता हूँ। मैं केवल 'युद्ध' ही माँग सकता हूँ, अन्य कुछ नहीं। फिर भी, आप अपने जप का फल मुझे दे दीजिये।' जब ब्राह्मण ने जप का फल देने की अनुमति दी तब राजा ने पूछा कि जप का फल क्या मिलेगा। ब्राह्मण ने कहा : 'जप का फल क्या मिलेगा यह मैं नहीं जानता; परन्तु मैंने जो कुछ जप किया था वह सब आपको दे दिया।' जब राजा ने अज्ञात तथा सन्दिग्ध फल लेना अस्वीकार कर दिया तब ब्राह्मण ने बताया कि उसने जप करते समय कभी किसी फल की कामना नहीं की अतः वह नहीं जानता कि क्या फल मिलेगा। तदनन्तर ब्राह्मण ने सत्य की प्रकृति तथा महत्त्व पर उपदेश देते हुए जप के फल को स्वीकार करने का राजा से आग्रह किया। उसने कहा : 'जो पहले देने की प्रतिज्ञा करके फिर देना नहीं चाहता, तथा जो याचना तो करता है किन्तु मिलने पर उसे लेना नहीं चाहता, वह मिथ्यावादी होता है। अतः आप अपनी तथा मेरी बात मिथ्या न कीजिये।' तब धर्म ने हस्तक्षेप करते हुए कहा : 'ब्राह्मण देवता दान के फल से युक्त हो जायँ तथा राजा भी सत्य के फल से सम्पन्न हों।' स्वर्ग ने भी धर्म की बातों का अनुमोदन किया। तब राजा ने अपने समस्त पुण्यकर्मों का फल ब्राह्मण को देना चाहा और कहा : 'यदि आपने अपने जप का उत्तम फल मुझे दे ही दिया तो ऐसा कीजिये कि हम दोनों के जो भी पुण्यफल हों उन्हें एकत्र करके हम दोनों साथ ही उपभोग करें—हम दोनों का उन पर समान अधिकार रहे।' इसी समय वहाँ विकराल वेषधारी दो पुरुष उपस्थित हुये जिनमें से एक का नाम विरूप तथा दूसरे का विकृत था। विरूप बोला : 'मैं विकृत के एक गोदान का फल ऋण के रूप में अपने पास रखता रहा हूँ। आज उस ऋण को वापस देने पर विकृत उसे ग्रहण नहीं कर रहा है।' इस पर विकृत ने कहा कि उसका विरूप पर कोई ऋण नहीं है। इक्ष्वाकु के पूछने पर विरूप ने कहा : 'विकृत ने धर्म की प्राप्ति के लिए एक तपस्वी ब्राह्मण को एक दूध देने वाली उत्तम गाय दी थी। मैंने इसके घर जा कर उसी गोदान का फल इससे माँगा था और इसने शुद्ध हृदय से मुझे वह दे दिया था। तदनन्तर मैंने भी अपनी शुद्धि के लिये दो अधिक दूध देनेवाली कपिला गौएँ, जिनके साथ उनके बछड़े भी थे, एक उञ्छवृत्ति वाले ब्राह्मण को दान कर दिया। उसी गोदान का फल मैं पुनः इसे वापस करना चाहता हूँ।' इस पर विकृत ने कहा कि विरूप उसका ऋणी नहीं है। विवाद के निर्णय के लिए दोनों ने इक्ष्वाकु से निवेदन किया। राजा अभी कोई निर्णय नहीं दे सके थे कि ब्राह्मण ने उनसे कहा : 'जो वस्तु आपने मुझसे माँगी थी उसे शीघ्र ले लें अन्यथा मैं शाप दे दूँगा।' तब राजा ने ब्राह्मण से कहा : 'मेरे हाथ पर यह संकल्प का जल है। मेरा और आपका समस्त पुण्य हम दोनों के लिये समान हो, इस उद्देश्य से आप मेरा दिया हुआ यह दान भी ग्रहण करें।' राजा की बात सुनकर विरूप तथा विकृत ने अपने को क्रमशः काम तथा क्रोध बताया। विरूप ने कहा : 'यह मेरा साथी कुछ भी धारण नहीं करता और मुझ पर भी इसका कोई ऋण नहीं है। यह सब आयोजन आपकी परीक्षा के लिये किया गया था। काल, धर्म, मृत्यु, काम, क्रोध तथा आप दोनों—सब के सब एक दूसरे की कसौटी पर कसे गये हैं। अब आप अपने कर्म से जीते हुये लोकों में जाइये।' भीष्म ने कहा : 'संहिता का स्वाध्याय करनेवाला द्विज ब्रह्मा को प्राप्त होता है, अथवा अग्नि या सूर्य में समा जाता है। यदि जापक तैजस शरीर से इन लोकों में रमण करता है तो राग से मोहित होकर इनके गुणों को भी धारण कर लेता है। इसी प्रकार जप करनेवाला पुरुष रागयुक्त होने पर सोम, वायु, भूमि तथा अन्तरिक्ष लोकों के योग्य शरीर धारण करके वहाँ निवास करता है। यदि जापक वहाँ से विरक्त हो जाय तो वह उत्कृष्ट एवं अविनाशी मोक्ष की इच्छा रखता हुआ परमेष्ठी ब्रह्मा में प्रवेश कर जाता है। अन्य लोकों की अपेक्षा परमेष्ठिभाव की प्राप्ति अमृत-रूप है। उससे भी उत्कृष्ट कैवल्यरूपी अमृत को प्राप्त होकर शान्त, अहङ्कारशून्य, निर्द्वन्द्व, सुखी, शान्तिपरायण, तथा रोग-शोक से रहित ब्रह्म-स्वरूप हो जाता है (१२. १९९)।" "भीष्म ने कहा : तब 'बहुत अच्छा' कहकर ब्राह्मण ने धर्म, यम, काल, मृत्यु, तथा स्वर्ग का पूजन किया और कहा कि वह पुनः जप में संलग्न हो जायेगा। इक्ष्वाकु के पूछने पर ब्राह्मण ने उनके साथ समान फल का भागी होना स्वीकार कर लिया। उस समय साध्यों, विश्वेदेवों, मरुतों, देवताओं, और लोकपालों आदि के साथ इन्द्र ने उपस्थित हो कर कहा कि ब्राह्मण तथा इक्ष्वाकु दोनों ही सिद्ध हो गये। तदनन्तर ब्राह्मण और राजा, दोनों ने एक साथ ही अपने मन को विषयों की ओर से हटा लिया तथा प्राण, अपान, उदान, समान, और व्यान संज्ञक पञ्चप्राणवायुओं को हृदय में स्थापित किया। दोनों ने मन को प्राण और अपान के साथ मिला लिया—वर्णन। इसी समय ब्राह्मण के ब्रह्म-रन्ध्र का भेदन करके एक ज्वाला निकली और स्वर्ग की ओर चली गई। ब्रह्मा ने उस तेजोमय पुरुष का स्वागत करते हुये कहा : 'योगियों को जो फल मिलता है वही फल जापक को भी प्राप्त होता है। किन्तु जापकों को योगियों से भी श्रेष्ठ फल मिलता है यही सूचित करने के लिये मैंने उठकर तुम्हारा स्वागत किया है। तुम सुखपूर्वक मेरे भीतर निवास करो।' इतना कहकर ब्रह्मा ने उसे पुनः तत्त्वज्ञान प्रदान किया। आज्ञा पाकर वह ब्राह्मण-तेज ब्रह्मा के मुख में प्रविष्ट हो गया। राजा इक्ष्वाकु भी ब्राह्मण की ही भाँति ब्रह्मा के मुख में प्रविष्ट हुये। देवताओं ने जापक की सद्गति पर हर्ष प्रगट किया। ब्रह्मा ने देवताओं से कहा : 'जो महास्मृति तथा अनुस्मृति का पाठ करता है वह भी इसी विधि से मेरा सालोक्य प्राप्त कर लेता है। जो योग का भक्त है वह भी देहत्याग के पश्चात् इसी विधि से मेरा लोक प्राप्त करता है।' ऐसा कहकर ब्रह्मा वहीं अन्तर्धान हो गये। देवता भी अपने-अपने स्थानों को चले गये (१२. २००)।"

जाबालि, विश्वामित्र के पुत्र, एक ऋषि का नाम है (३. ८५, १२१)। विश्वामित्र के पुत्रों के अन्तर्गत इनकी गणना (१३. ४, ५५)।

जामदग्नि, एक ऋषि का नाम है। यह भी उन ऋषियों में एक थे जो बाण-शय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े हुये (१३. २६, ८)।

१. जामदग्न्य = राम (देखिये वस्था०)।

२. जामदग्न्य = रुमण्वत् (३. ११६, १०)।

जामदग्न्यम् उपाख्यानम्, पर्वसंग्रह के अन्तर्गत रामजामदग्न्य के आख्यान के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. २, ६२)।

जाम्बवत्, रीछों के राजा का नाम है (३. २८०, २३)। ये दस खरब काले रीछों की सेना लेकर श्रीराम के पास उपस्थित हुये (३. २८३, ८)। ३. २८९, १३; २९०, ३।

जाम्बवती, श्रीकृष्ण की पत्नी तथा शाम्ब की माता का नाम है (१३. १४, २८)। श्रीकृष्ण के परमधाम चले जाने के पश्चात् ये भी सती हो गईं (१६. ७, ७३)।

जाम्बवतीसुत = शाम्ब (३. १२०, १३)।

जाम्बवत्याः सुतः = शाम्ब (३. १६, १२)।

जाम्बूनद, पूरुवंशी महाराज कुरु के पौत्र एवं जनमेजय के पाँचवें पुत्र का नाम है (१. ९४, ५६)।

जाम्बूनदपर्वत, एक पर्वत (= मेरु : नीलकण्ठी) का नाम है (३. १३९, १६)।

जाम्बूनदं सरस्, उशीरबीज नामक स्थान पर स्थित एक सरोवर का नाम है (५. १११, २३)।

जाम्बूनदी, भारतवर्ष की एक नदी का नाम है (६. ९, ३०)।

जाया—'आत्मा हि जायते तस्यां तस्माज्जाया भवत्युत। भर्ता च भार्यया रक्ष्यः कथं जायान्ममोदरे ॥', (३. १२, ७०)।

जारासन्धि (जरासन्ध का पुत्र) = सहदेव अथवा जयत्सेन। सहदेव

का राजा के पद पर अभिषेक किया गया (२. १४, ४४)। अपनी दिग्विजय के समय भीमसेन ने सहदेव को पराजित किया (२. ३०, १८)। जयत्सेन ने युधिष्ठिर का पक्ष ग्रहण किया (५. १९, ८)। 'जारासन्धिः सहदेवो जयत्सेनश्च तावुभौ', (५. ५०, ४८)। 'जारासन्धिर्मागधश्च', (५. ५७, ८)। द्रोण ने इनका वध किया (७. १२५, ४५)। अभिमन्यु ने जयत्सेन का वध किया (८. ५, ३१)। दुर्योधन की सेना में इसकी उपस्थिति (८. ७, १८)। उन मृत योद्धाओं में एक यह भी था जो व्यास के आवाहन पर गङ्गा से प्रगट हुये (१५. ३२, १०)। तुकी० **जरासन्धसुत, जरासन्धात्मज**।

जारुधि, एक प्राचीन देश का नाम है (गीता. प्रेसं. में २. ३८, ३९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

जारूथी, एक नगर का नाम है जहाँ श्रीकृष्ण ने आहुति, क्राथ, शिशुपाल, जरासन्ध, शैव्य, तथा शतधन्वा को परास्त किया था (३. १२, ३०)।

जाल, एक दिव्यास्त्र का नाम है जिसका अर्जुन ने प्रयोग किया (३. १६७, ३३)।

जालय = शिव (१,००० नाम)।

जाह्नवी (जह्नु की पुत्री) = गङ्गा : १. ९९, ३. ४; ३. १, ४१; ५, १; ८५, ६९. ७३; ३०९, १. ४; ५. ११७, १०; १७८, ६७; ६. ३४, ३१; ७. ९५, ८; १३. २६, ५४. ५५. ९३; ८४, १२; ८५, ६०; १०३, १०; १०७, ६८; १६५, ५४; १५. ३३, १९. २०; ३९, ५।

जाह्नवीधृक् = शिव (१,००० नाम)।

जाह्नवीपुत्र = भीष्म (देखिये वस्था०)।

जाह्नवीय (वि०)—१३. २६, ९९।

जाह्नवीसुत = भीष्म (देखिये वस्था०)।

१. जित = शिव (१,००० नाम)।

२. जित = विष्णु (१,००० नाम)।

जितकाम = शिव (१,००० नाम)।

जितक्रोध = विष्णु (१,००० नाम)।

जितमन्यु = विष्णु (१,००० नाम)।

जितवती, राजर्षि उशीनर की सुन्दरी पुत्री का नाम है जो द्यौ नामक वसु की पत्नी की सखी थी (१. ९९, २२)।

जितात्मन्, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३१)

जितामित्र = विष्णु (१,००० नाम)।

जितारि, पूरुवंशी महाराज कुरु के पौत्र एवं अविक्षित् के पुत्र का नाम है (१. ९४, ५३)।

जितेन्द्रिय = शिव (१,००० नाम)।

जिल्लिक, दक्षिण की एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५९)।

१. जिष्णु = अर्जुन (देखिये वस्था०)।

२. जिष्णु = विष्णु (कृष्ण) : ५. ७०, १३; ६. ५०, ४२; ७. ८३, १८; १२. ४३, ५; ४७, १५; १३. १५०, २८; १४. ४०, २।

३. जिष्णु, पाण्डवपक्षीय चेदि देश के एक योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ५६, ४८)।

जिष्णुकर्मन्, चेदि देश के एक पाण्डवपक्षीय योद्धा का नाम है (८. ५६, ४८)।

१. जीमूत = सूर्य (३. ३, २२)।

२. जीमूत = एक मल्ल का नाम है जिसका मल्लयुद्ध में भीमसेन ने वध कर दिया (४. १३, २३)।

३. जीमूत, एक ब्रह्मर्षि का नाम है जिनके सामने हिमालय की वह निधि प्रगट हुई जिसे जैमूत कहते हैं (५. १११, २३)।

जीर्णदंष्ट्र = शिव (१,००० नाम)।

१. जीव = शिव (१,००० नाम)।

२. जीव = विष्णु (१,००० नाम)।

१. जीवन = सूर्य (३. ३, २२)।

२. जीवन = शिव (१,००० नाम)।

३. जीवन = विष्णु (१,००० नाम)।

जीवजीवक, एक पक्षिविशेष का नाम है (१२. १३९, ६)।

जीवल, अयोध्या नरेश ऋतुपर्ण के सारथि का नाम है जिसने बाहुकवेशी राजा नल के साथ वार्तालाप किया (३. ६७, ७. ८. ११)।

जृम्भक (बहु० °काः), एक प्रकार के प्राणियों का नाम है जिन्होंने रुद्र का अनुसरण किया (३. २३१, ३४)।

जृम्भिका, जंभाई का नाम है जिसे देवताओं ने वृत्रासुर के मुख से इन्द्र को निकालने के लिये उत्पन्न किया (५. ९, ५३. ५४)।

जृम्भित = शिव (१,००० नाम)।

जेता रिपूणां = स्कन्द (३. २३२. १७)।

जेतृ = विष्णु (१,००० नाम)।

जैगीषव्य, एक मुनि का नाम है : २. ११, २४; ९. ५०, ६. ७. ९. १६. २०. २३. २५–२७. २९. ३६. ३८. ३९. ४२–४४. ४६. ४८. ५०. ५२–५४. ६५–६८। असित देवल के साथ इनका संवाद (१२. २२९, ३. ४. ७)। इन्होंने विश्वावसु को उपदेश दिया (१२. ३१८, ५९)। शिव ने इन्हें अष्टाङ्ग शक्ति प्रदान की (१३. १८, ३७)।

१. जैत्र, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसका भीमसेन ने वध किया (९. २६, ४. १४)।

२. जैत्र एक रथविशेष का नाम है : २. १२, १२; २४, १८; ६१, ५; ३. २९०, १३; ५. १०४, ३; ७. ७२, ३; ८. ७०, ३५।

जैमिनि, एक ब्रह्मर्षि का नाम है जो व्यास के शिष्य थे। ये जनमेजय के सर्पसत्र के समय उद्गातृ बने (१. ५३, ६)। व्यास ने इन्हें वेदों की शिक्षा दी (१. ६३, ८९)। युधिष्ठिर की सेवा करनेवाले मुनियों के अन्तर्गत इनकी गणना (२. ४, ११)। बाण-शय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े होनेवाले मुनियों में एक यह भी थे (१२. ४७, ६)। १२. ३१८, २०; ३२७, २७; ३४०, १९; ३४९, ११।

ज्ञानगम्य = विष्णु (१,००० नाम)।

ज्ञानपावन, एक प्राचीन तीर्थ का नाम है जिसके सेवन से मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है (३. ८४, ३)।

ज्ञानं उत्तमम् = विष्णु (१,००० नाम)।

ज्ञानात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ७७)।

ज्ञेयात्मन् = कृष्ण (१२. ४७. ४०)।

१. ज्येष्ठ, सामवेद के पारङ्गत एक प्राचीन ऋषि का नाम है जिन्होंने बर्हिषद नामक ऋषियों से सात्वत धर्म का उपदेश प्राप्त किया था (१२. ३४८, ४६. ४७)।

२. ज्येष्ठ = शिव (१,००० नाम)।

३. ज्येष्ठ = विष्णु (१,००० नाम)।

ज्येष्ठपुष्कर, एक तीर्थ का नाम है (३. २००, ६६; १३. १३०, ७. ३२)। तुकी० **पुष्कर**।

ज्येष्ठसामन्, एक साम का नाम है जिसकी उपासना का ज्येष्ठ मुनि ने व्रत लिया था (१२. ३४८, ४६; १३. १४, २८३; ९०, २७)।

ज्येष्ठस्थान, एक तीर्थ का नाम है जहाँ महादेव का दर्शन-पूजन करने से मनुष्य चन्द्रमा के समान प्रकाशित होता है (३. ८५, ६२)।

ज्येष्ठा, एक नक्षत्र का नाम है। 'कृत्वा चाङ्गारको वक्रं ज्येष्ठायाम्', (५. १४३, ९)। 'श्वेतो ग्रहः प्रज्वलितः सधूम इव पावकः। ऐन्द्रं तेजस्वि नक्षत्रं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥', (६. ३, १६)। इस नक्षत्र में दान का महत्त्व (१३. ६४, २३)। इस नक्षत्र में श्राद्ध करने का महत्त्व (१३. ८९, ९)। 'मध्याह्नमारूढे ज्येष्ठामूले दिवाकरे', (१३. ९५, ९)। 'ज्येष्ठामूलं तु यो मासमेकं', (१३. १०६, २५)। चान्द्रव्रत का वर्णन (१३. ११०, ७)। तुकी० **ऐन्द्र**।

ज्येष्ठिल, एक तीर्थ का नाम है जहाँ एक रात्रि निवास करने से मानव सहस्र गोदान का फल प्राप्त करता है (३. ८४, १३४)।

ज्येष्ठिला, एक नदी का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित होती है (२. ९, २१)।

ज्यैष्ठ, एक मास का नाम है (१३. १०९, ९)।

ज्योतिक, एक नाग का नाम है (१. ३५, १३)। तुकी० **ज्योतिष्क**।

ज्योतिरथा, भारतवर्ष की एक प्रमुख नदी का नाम है (६. ९, २६)।

ज्योतिरथ्या, एक नदी का नाम है जिसका शोणभद्र से सङ्गम हुआ है। इस सङ्गम पर स्नान करने से मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञ का फल पाता है (३. ८५, ८)।

ज्योतिषाम् अयनम् = शिव (१,००० नाम)।

ज्योतिषां निधिः = शिव (१,००० नाम)।

१. ज्योतिष्क, एक नाग का नाम है (५. १०३, १५)।

२. ज्योतिष्क, एक आयुध का नाम है जिसके द्वारा अर्जुन ने अन्धकार का विसर्जन किया (७. ३०, २४)।

३. ज्योतिष्क, मेरु पर्वत के एक शिखर का नाम है (१२. २८३, ५)।

१. ज्योतिस्, अहः नामक वसु के पुत्र का नाम है (१. ६६, २३)।

२. ज्योतिस्, अग्नि द्वारा स्कन्द को प्रदत्त दो पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३३)।

३. ज्योतिस् = कृष्ण (१२. ४७, ५४)।

४. ज्योतिस् = विष्णु (१,००० नाम)।

५. ज्योतिस् (बहु०)—३. १९०, ७७; ६. ३४, २१; ९. ३७, १५; ४५, ११; ४९, १८; १२२, ४६. ४७; ३४७, ८६; १३. ९८, ५४; १४. ४३, ८।

ज्योत्स्नाकाली, सोम की द्वितीय पुत्री का नाम है जो सूर्य की भार्या बनी (५. ९८, १३)।

ज्वर, रोगविशेष का नाम है। भगवान् शङ्कर के स्वेद से इसकी उत्पत्ति के प्रकारों का वर्णन (१२. २८३, ४७. ५१. ५४. ५६. ५७, ६२)।

ज्वरोत्पत्तिः—"युधिष्ठिर द्वारा ज्वरोत्पत्ति के सम्बन्ध में जानने की इच्छा प्रगट करने पर भीष्म ने कहा : 'पूर्वकाल में मेरु पर्वत का ज्योतिषक नामक एक शिखर था जिसे सविता से सम्बद्ध होने के कारण सावित्र भी कहते थे। उस शिखर पर पार्वती-सहित शिव विराजमान होते थे । देवता, वसुगण, अश्विनीकुमार, शङ्खनिधि, पद्मनिधि, शुक्राचार्य, तथा ऋद्धि और गुह्यकों से घिरे हुये कुबेर, ये सभी शिव की सेवा करते थे—शिव की सेवा-उपासना करनेवाले अन्य लोगों का वर्णन। कुछ काल के अनन्तर प्रजापति दक्ष ने यज्ञ आरम्भ किया। इन्द्र आदि समस्त देवता शिव की आज्ञा से अपने-अपने विमानों पर बैठकर गङ्गाद्वार आये। देवताओं को प्रस्थित हुआ देख कर पार्वती ने शिव से पूछा : 'हे महादेव ! इस दक्ष के यज्ञ में आप क्यों नहीं पधार रहें हैं ?' महादेव ने उत्तर दिया : 'देवताओं ने ही पहले ऐसा निश्चय किया था कि मेरे लिये किसी भी यज्ञ में कोई भी भाग निश्चित नहीं होगा। इसी नियम के अनुसार देवगण मुझे यज्ञभाग अर्पित नहीं करते।' शिव की बात सुनकर पार्वती ने कहा : 'यज्ञ में जो इस प्रकार आपको भाग देने का निषेध किया गया है उससे मुझे अत्यन्त दुःख हुआ है। इस अपमान से मेरा समस्त शरीर काँप रहा है।' पार्वती के क्रोध को समझ कर शिव ने नन्दी को वहीं खड़े रहने की आज्ञा दी। तदनन्तर शिव ने योगबल का आश्रय ले अपने भयानक सेवकों द्वारा उस दक्ष-यज्ञ को सहसा नष्ट करा दिया : यज्ञ के विध्वंस का वर्णन। तब वह यज्ञ मृग का रूप धारण करके आकाश की ओर भाग चला, परन्तु शिव ने भी धनुष हाथ में लेकर उसका पीछा किया। उस समय शिव के ललाट से एक स्वेदबिन्दु पृथिवी पर गिरा जिससे अग्निपुञ्ज का प्रादुर्भाव हुआ। उस अग्नि से एक नाटा-सा पुरुष उत्पन्न हुआ जो अत्यन्त भयंकर था। इस पुरुष ने यज्ञ को दग्ध करने के पश्चात् देवताओं तथा ऋषियों पर आक्रमण किया। उसे देखकर सब देवता भयभीत हो दसों दिशाओं में भाग गये, और जगत में हाहाकार मच गया। तब ब्रह्मा ने शिव को प्रसन्न करके उनके लिये यज्ञ भाग निश्चित कर दिया। ब्रह्मा ने कहा : 'आपके स्वेद से जो यह पुरुष प्रगट हुआ है उसका नाम होगा ज्वर। यह ज्वर जबतक एक रूप में रहेगा तब तक पृथिवी इसे धारण करने में समर्थ नहीं हो सकेगी। अतः इसे अनेक रूपों में विभक्त कर दीजिये।' ब्रह्मा की स्तुति सुनकर शिव ने ज्वर को अनेक रूपों में विभक्त कर दिया—वितरण और विभाजन का वर्णन। जो ज्वरोत्पत्ति की इस कथा को सदैव पढ़ता है वह रोगमुक्त, सुखी एवं प्रसन्न होकर कामनाओं को प्राप्त कर लेता है (१२. २८३)।"

ज्वलन = अग्नि (देखिये वस्था०)।

ज्वलनसूनु = स्कन्द (९. ४५, ५२)।

ज्वलनात्मज = स्कन्द (९. ४४, १०; १३. ८६, १७)।

ज्वलनास्त्र, एक आग्नेयास्त्र का नाम है जिसका अर्जुन ने प्रयोग किया (८. ८९, १९)।

ज्वलिन् = शिव (१,००० नाम)।

ज्वाला, तक्षक नाग की पुत्री का नाम है जो ऋक्ष की पत्नी तथा मतिनार की माता थी (१. ९५, २५)।

१. ज्वालाजिह्व, अग्नि द्वारा स्कन्द को दिये गये दो पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३२)।

२. ज्वालाजिह्व, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ६१)

झ

झर्झरिन् = शिव (१,००० नाम)।

झल्लि, एक वृष्णिवंशी यादव का नाम है जो द्वारका के सात मुख्य मन्त्रियों में से एक था (गोप्रे. सं. में २. १४, ६० के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

१. झिल्लिन्, एक वृष्णिवंशी योद्धा का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. १८६, २०)। यह सुभद्रा के लिये दहेज लेकर खाण्डवप्रस्थ आया (१. २२१, ३२)। धृतराष्ट्र द्वारा इसके पराक्रम का वर्णन (७. ११, २८)।

२. झिल्लिन्, एक कीट—झिल्लिका—का नाम है (३. ६४, १)।

ट

टिट्टिभ, एक दैत्य या दानव का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित होता था (२. ९, १५)।

ड

डम्बर, धाता द्वारा स्कन्द को दिये गये दो पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३९)।

डिण्डिक, बिडालोपाख्यान में आनेवाले एक चूहे का नाम है (५. १६०, ३४)।

डिम्भक, जरासन्ध के एक मन्त्री का नाम है जो हंस का भ्राता था (२. १४, १३. ३७. ४१)। हंस की मृत्यु का एक मिथ्या समाचार सुनकर इसने आत्महत्या कर ली (२. १४, ४२. ४३)। यह जरासन्ध का अनुगामी था (२. १९, २६)। २. २०, १; २२, ३३।

डुण्डुभ, एक सर्प का नाम है जिनका रुरु के साथ संवाद हुआ (१. ९, ६१ से १. १०, ७ तक)। ब्राह्मण मित्र के शाप से इनके सर्प होने की कथा (१. ११, १–९)। महर्षि रुरु के दर्शन से इनका सर्पयोनि से मुक्त होना (१. ११, १२)। इन्होंने अहिंसा-धर्म की श्रेष्ठता का रुरु को उपदेश दिया (१. ११, १३–१९)।

त

तंसु, एक पूरुवंशी राजा का नाम है जो मतिनार के पुत्र थे (१. ९४, १४–१६)। इनके पुत्र का नाम ईलिन था (१. ९५, २६)।

तक्षक, एक श्रेष्ठ नाग का नाम है (१. ३, १११. ११२. १२९. १३०. १४० (यस्य वासः कुरुक्षेत्रे खाण्डवे चाभवत्पुरा ॥ तं नागराजमस्तौषं कुण्डलार्थाय तक्षकम् । तक्षकश्चाश्वसेनश्च नित्यं सहचरावुभौ ॥). १४१. १५३. १६१. १७०. १७८. १८१. १८६ (एक भिक्षुक के रूप में इसने उत्तङ्क से उनके कुण्डल ले लिये परन्तु बाद में पुनः लौटाने के लिये बाध्य हुआ); ३५, ५; ४१, १३. १८; ४२, २०. ३४. ३६. ३८. ४०; ४३, १. ११. १८. २०. २१. २४. २५. ३३. ३५. ३६ (शृङ्गी ऋषि के शाप के अनुसार इसने परिक्षित् को काटने का निश्चय किया, परन्तु काटने के पहले इसने कश्यप को परिक्षित् की सहायता करने से विरत कर दिया); ४४, ३. ५; ५०, १०. १५–१७. १९. २१. २२. २४. २५. २७. ३४. ३६. ४३. ४८. ५३ (परिक्षित् के पुत्र, जनमेजय, ने इससे प्रतिशोध लेने का निश्चय किया); ५१, ३. ५. ८ (जनमेजय ने सर्पसत्र का आयोजन किया); ५३, १४. १६; ५६, २. ३. ४. ५. १०–१५. १८. २० (मन्त्रों की शक्ति द्वारा यह यज्ञाग्नि के निकट आ गया); ५७, ८ (सर्प-सत्र में दग्ध हुये इसके वंश के नागों की गणना). १०; ५८, ३. ४ (आस्तीक ने रुकने के लिये तीन बार कहा और यह पृथिवी और आकाश के बीच में ही रुक गया); ६५, ४१ (कद्रू की सन्तान के रूप में इसका उल्लेख); ९५, २५; २२३, ७ (यह इन्द्र का सखा और खाण्डववन में निवास करता था); २२७, ४. ५; २२८, १६. ३९; २. ९, ८ (वरुण की सभा में); ३. ८२, ९० (काश्मीरेष्वेव नागस्य भवनं तक्षकस्य वितस्ताख्यम्); ५. १०३, ९; १०९, २०; ६. १०७, १५; ७. ६९, २२ (जब नागों ने पृथिवी का दोहन किया तो यह बछड़ा बना); १७४, ३०; २०२, ७३ (यह शिव के रथ का अवनाह बना); ८. ८७, ४३; १५. ३५, १४; १६. ४, १५। तुकी० **नाग, नागराज, नागेन्द्र, पन्नग, पन्नगेश्वर, पन्नगेन्द्र**।

तक्षकपुत्र = अश्वसेन (८. ८९, ९०)।

तक्षशिला, एक नगर का नाम है जिसे जनमेजय ने विजित किया (१. ३, २०. १७२)। सर्पसत्र के पश्चात् जनमेजय यहाँ से हस्तिनापुर लौट आये (१८. ५, ३४)

तङ्गण (बहु० °णाः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, ३)। ये भी युधिष्ठिर के राजसूय के समय उपस्थित हुये (३. ५१, २५)। 'किराततङ्गणाकीर्णम्', (३. १४०, २५)। 'तङ्गणाः परतङ्गणाः', (६. ९, ६४)। युधिष्ठिर की सेना में इनकी उपस्थिति (६. ५०, ५१)। दुर्योधन की सेना में (७. १२१, १४. ४२)। कर्ण ने इन्हें पराजित किया था (८. ८, १८)। अर्जुन ने इन्हें पराजित किया (८. ७३, १९)। राजसूय का अश्व इनके देश में भी गया (१४. ८३, ४)।

तट, तटानां पति, तव्य = शिव (१,००० नाम)।

तडित्प्रभा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १७)।

तण्डि, एक ऋषि का नाम है जिन्होंने शिव-सहस्रनाम का स्तवन किया (१३. १४, १९)। इन्होंने कृतयुग में शिव की उपासना की (१३. १६, १)। १३. १६. १२. ६६. ६७. ७४. ७६ (इन्होंने उपमन्यु को शिव-सहस्रनाम का उपदेश किया); १७, ३. २३ (इन्होंने स्वर्गलोक से शिव-सहस्रनाम को प्राप्त किया था). २४. १७० (इन्होंने शिव-सहस्रनाम द्वारा शिव का स्तवन किया). १७६. १७७ (इन्होंने शुक्र को सहस्रनाम का उपदेश किया)। तुकी० **ब्राह्मयोनि**।

तण्डुलिकाश्रम, एक तीर्थ का नाम है (३. ८२, ४३)।

तत्त्व, तत्त्वविद्, तद् (अथवा यत्-तद्) = विष्णु (१,००० नाम)।

तनबाल, दक्षिण की एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६३)।

तनय (बहु० °याः), एक जाति के लोगों का नाम है जो दक्षिण में निवास करते थे (६. ९, ६४)।

तनु, एक प्राचीन ऋषि का नाम है, जिन्होंने राजा वीरद्युम्न को उनके पुत्र के विषय में बताया था (१२. १२७, ६. १२. १८)। तनु के रूप में धर्म ने वीरद्युम्न की परीक्षा ली (१२. १२८, २१)। तुकी० **देवर्षि**।

तनुवासस् = शिव (१०. ७, ९)।

तन्तिपाल, विराटनगर में निवास करने के समय सहदेव का नाम है (४. ३, ९; १०, १०)।

तन्तु, विश्वामित्र के एक ब्रह्मवादी पुत्र का नाम है (१३. ४, ५५)।

तन्तुवर्धन = विष्णु (१,००० नाम)।

तप—"काश्यप, वसिष्ठ, प्राणक, च्यवन, तथा त्रिवर्चा नामक पाँच मुनियों की तपस्या से प्रगट हुये एक तेजस्वी पुत्र का नाम है जो पाँच रंगों से युक्त होने के कारण पाञ्चजन्य नाम से विख्यात हुये। यही पाञ्चजन्य नामक अग्नि उक्त पाँचों ऋषियों के वंश प्रवर्तक हुये। घोर तपस्या के कारण इनका नाम तप पड़ा। ये बृहदुक्थ, रथन्तर आदि के पिता हुये (३. २२०, ११–१३. १९)।" ये पाँच अग्नियों के पिता हुये (३. २२१, ३. ६. ८)। ये उन पाँच कुमारियों के पिता थे जो मातृकायें बनीं (३.२२८,६)।

तपतां गति = शिव (१०. ७, ७)।

तपती, सूर्य की पुत्री और संवर्ण की पत्नी का नाम है। यह कुरु की माता बनी (१. ९४, ४८; ९५, ३८)। १. १७१, २. ६. १५. २०; १७२, ४. २०. २६; १७३, १५. २२. २५. २६. २७. २९. ३३. ४५. ४८. ४९ (संवर्ण द्वारा इसे पत्नी के रूप में प्राप्त करने की कथा)। तुकी० **सौरी, सावित्र्यवरजा, वैवस्वती**।

१. तपन = सूर्य : १. २३, १६ (गरुड़ का सूर्य के साथ समीकरण); १११, १८; १७१, २०; १७३, २६; ३. ३, ६२; ८५, ७४; ३०८, १३; ५. १४५, ४।

२. तपन, एक नाग का नाम है (१. ३२, १८)।

३. तपन, एक पाञ्चाल योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ४८, १५)।

४. तपन = शिव (१,००० नाम)।

१. तपस् = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

२. तपस् = शिव (१,००० नाम)।

३. तपस् = कृष्ण (विष्णु) : १२. ३४२, १३।

तपस्विन् = शिव (१,००० नाम)।

तपःसक्त = शिव (१,००० नाम)।

तपःसुत = युधिष्ठिर (३. ३१३, १९)।

तपिष्णु = सूर्य (१२. ३१८, ३)।

तपोदान = एक तीर्थ का नाम है (१३. १६५, २४)।

तपोनित्य = शिव (१,००० नाम)।

तपोनिधि = शिव (१,००० नाम)।

तपोनिष्ठ = शिव (१०. ७, ७)।

तपोमय = शिव (१,००० नाम)।

तपोरत = शिव (८. ३३, ५९)।

तप्ततपस् = शिव (१४. ८, २५)।

तप्य = शिव (१,००० नाम)।

१. तमस्, एक ब्राह्मण का नाम है जो श्रुवा के पुत्र और प्रकाश के पिता थे (१३. ३०, ६३)।

२. तमस् = शिव (१,००० नाम)।

तमसा, एक नदी का नाम है। यह भी अग्नि की माताओं में से एक है (३. २२२, २४; ६. ९, ३१)।

तमसी, एक नदी का नाम है (६. ९, ३२)।

तमोघ्न = सूर्य (३. ३, ६३; ७. १४६, १४४)।

तमोनुद = सूर्य (३. ३, २२; १६४, १०; ३०७, २; ६. १२१, ४)।

तमोन्तकृत, स्कन्द के एक योद्धा का नाम है (९. ४५, ५८)।

तरन्तुक, एक द्वारपाल तथा उसी के एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, १५. २०८; ९. ५३, २४)।

तरङ्गविद्, तरङ्गाङ्कितकेश = शिव (१,००० नाम)।

तरल (बहु० °लाः), एक जाति के लोगों का नाम है (८. ८, २०)।

१. तरु = शिव (१,००० नाम)।

२. तरु = विष्णु (१,००० नाम)।

तरुण, एक गन्धर्व का नाम है जो इन्द्र की सभा में उपस्थित रहता था (२. ७, २२)।

तरुणक, धृतराष्ट्रकुल में उत्पन्न एक नाग का नाम है जो सर्पसत्र की अग्नि में भस्म हुआ (१. ५७, १९)।

तर्कशास्त्र, स्वनामधन्य शास्त्र का नाम है (१२.२४६, १८; २६९, ४३)।

तल = शिव (१,००० नाम)।

तस्थुषां पतिः = श्रीकृष्ण (१२. ४७, ३७)।

ताडकायन, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम है (१३. ४, ५६)।

ताण्ड्य, एकाधिक ऋषियों का नाम है। इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, १२; १२. २४४, १७)। ये उपरिचर वसु के यज्ञ में सदस्य थे (१२. २९६, १४; ३३६, ७)।

१. तापत्य (बहु०), तपती के वंशजों के लिये प्रयुक्त हुआ है (१. १७१, १. २)।

२. तापत्य = अर्जुन (१. १७०, ७४. ७९; १७३, ४८–५०)।

३. तापत्य (वि०) : १. २, ११७।

तापत्य-उपाख्यानम्—"तपतीनन्दन के रूप में संबोधित किये जाने पर अर्जुन ने चित्ररथ से इसका कारण पूछा। तब चित्ररथ ने कहा : सूर्य के एक तपती नामक पुत्री हुई जो सावित्री की छोटी बहन थी। वह तपस्या में संलग्न रहने के कारण तपती नाम से विख्यात हुई। तपती के बड़े होने पर जब सूर्यदेव उसके विवाह के सम्बन्ध में विचार कर रहे थे, तब उन्हीं दिनों ऋक्ष के पुत्र, राजा संवरण ने सूर्य की आराधना आरम्भ की। संवरण अत्यन्त कृतज्ञ और धर्मज्ञ थे, अतः सूर्यदेव ने उन्हें तपती के लिये योग्य वर माना। एक दिन संवरण जब वन में पशुओं का आखेट कर रहे थे तो उसी समय भूख-प्यास से पीड़ित होकर उनका अश्व मृत्यु को प्राप्त हुआ। संवरण पैदल ही विचरते हुये एक स्थान पर आये जहाँ उन्होंने तपती को सर्वथा अकेले देखा। तपती के अद्वितीत सौन्दर्य—वर्णन—को देखकर संवरण ने उसके सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रगट की। संवरण की बातें सुनकर भी तपती कुछ बोली नहीं और वहीं अन्तर्धान हो गई। संवरण उसकी खोज में समस्त वन में इधर-उधर घूमने लगे परन्तु उसे न पाकर अन्ततः विलाप करते हुये मूर्च्छित हो गये (१. १७१)।" "तपती के अदृश्य हो जाने पर संवरण अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े। राजा की इस दशा को देख कर तपती पुनः वहाँ प्रगट हो गई और उन्हें समझाने लगी। राजा ने तपती से गान्धर्व-विवाह करने का आग्रह किया। तपती ने राजा के प्रति अपना प्रेम प्रगट करते हुये अपने पिता की स्वीकृत लेने का आग्रह किया और कहा : 'आप यथासमय नमस्कार, तपस्या, तथा नियम के द्वारा मेरे पिता आदित्य को प्रसन्न करके उनसे मुझे माँग लीजिये।' (१. १७२)।" "इस प्रकार कह कर तपती ऊपर आकाश में चली गई, और संवरण वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़े। इधर राजा के मन्त्री, सेना और अनुचरों के साथ, उस स्थान पर आये जहाँ राजा मूर्च्छित पड़े थे। उन सब ने राजा के मुख पर जल का छींटा दिया जिससे उनकी मूर्च्छा दूर हुई। चेतना लौटने पर संवरण ने एकमात्र अपने मन्त्री के अतिरिक्त अपनी समस्त सेना आदि को लौटा दिया और वहीं पर्वत-शिखर पर बैठकर सूर्य की आराधना करने लगे। उस समय उन्होंने अपने पुरोहित, वसिष्ठ का भी मने ही मन स्मरण किया। रात-दिन एक ही स्थान पर खड़े होकर राजा संवरण तपस्या में लगे रहे। बारहवें दिन विप्रर्षि वसिष्ठ वहाँ उपस्थित हुये। वसिष्ठ ने दिव्यज्ञान से पहले ही राजा की मनोदशा को जान लिया था। वहाँ उपस्थित होने के पश्चात् वसिष्ठ ऊपर सूर्य से मिलने के लिये चले गये। अपना परिचय देने के पश्चात् उन्होंने सूर्य से कहा कि वे अपनी कन्या, तपती, का संवरण से विवाह कर दें। सूर्य ने वसिष्ठ का प्रस्ताव स्वीकार करके तपती को उन्हें अर्पित कर दिया। कन्या को लेकर वसिष्ठ पुनः उसी स्थान पर आये जहाँ संवरण तपस्या कर रहे थे। तदनन्तर संवरण ने देवताओं और गन्धर्वों से सेवित उस उत्तम पर्वत के शिखर पर विधिपूर्वक तपती का पाणिग्रहण किया। इसके बाद वसिष्ठ की आज्ञा लेकर संवरण ने उसी पर्वत पर अपनी पत्नी के साथ विहार करने की इच्छा की। वसिष्ठ के चले जाने पर राजा अपनी पत्नी सहित उसी स्थान पर बारह वर्षों तक रमण करते रहे। उन दिनों संवरण के राज्य और नगर में इन्द्र ने बारह वर्ष तक वर्षा नहीं की। उस अनावृष्टि से समस्त प्रजा अत्यन्त त्रस्त हो उठी। ऐसी दुरवस्था देखकर वसिष्ठ ने राज्य में वर्षा की और तपती-सहित राजा संवरण को नगर में वापस लाये। राजा के नगर में प्रवेश करते ही इन्द्र ने वर्षा आरम्भ कर दी। तदनन्तर तपती के साथ महाराज संवरण ने बारह वर्षों तक यज्ञ किया। संवरण ने तपती के गर्भ से कुरु को उत्पन्न किया जो अर्जुन के पूर्वज थे। चित्ररथ ने कहा कि इसी कारण उन्होंने अर्जुन को तपतीनन्दन के रूप में सम्बोधित किया था (१. १७३)।"

तापत्यवर्धन = अर्जुन (१. १७०, ७०)।

तापसारण्य, एक तीर्थ का नाम है (३. ८७, २०)।

ताम्रचूड, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४६, ५१)।

ताम्रचूडा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १८)।

ताम्रद्वीप, एक दक्षिणभारतीय जनपद का नाम है जिसे सहदेव ने जीता था (२. ३१, ६८)।

१. ताम्रपर्णी, दक्षिण के एक तीर्थ का नाम है (३. ८८, १४)।

२. ताम्रपर्णी, एक पर्वत (= मलय) का नाम है (६. ६, ५६)।

१. ताम्रलिप्त, एक प्राचीन राजा का नाम है जिसे सहदेव ने पूर्व-दिग्विजय के समय परास्त किया था (२. ३०, २४)।

२. ताम्रलिप्त (बहु० °प्ताः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १८)।

३. ताम्रलिप्त, एक राजा का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुये (१. १८६, १३)।

ताम्रलिप्तक (बहु० °काः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५७; ७. ७०, १२; ११९, १५. २१; ८. २२, २. २१)।

ताम्रवती, अग्नियों के उत्पत्ति की स्थानभूता एक नदी का नाम है (३. २२२, २३)।

१. ताम्रा, कश्यप की पत्नी का काम है जो काकी, श्येनी, भासी, धृतराष्ट्री, और शुकी नामक पाँच कन्याओं की माता हुई (१. ६६, ५६)।

२. ताम्रा, एक श्रेष्ठ नदी का नाम है। मार्कण्डेय ने इसे भी नारायण के उदर में देखा (३. १८८, १०४; ६. ९, २८)।

ताम्रारुण, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १५४)।

ताम्रारुणा, एक नदी का नाम है (१३. १६५, २१)।

ताम्राह्वय, दक्षिण के एक द्वीप का नाम है जिसे सहदेव ने विजित किया था (२. ३१, ६८)।

ताम्रोष्ठ = शिव (१,००० नाम)।

ताम्रौष्ठ, कुबेर की सभा में उपस्थित रहनेवाले एक यक्ष का नाम है (२. १०, १६)।

१. तार, एक वानर-योद्धा का नाम है जिसने निखर्वट से युद्ध किया (३. २८५, ९; २८७, ७; २८९, ४)।

२. तार = विष्णु (१,००० नाम)।

१. तारक, एक असुर का नाम है (६. ९५, १८; ७. १५५, ३६; १७३, ६२)। ८. ३३, ४ (यह ताराक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली का पिता था); ५३, २६; ९. ३१, १३; ४३, ४८; ४६, ७३ (इसका स्कन्द ने वध किया था); १३. ८४, ७९; ८५, १. ३. १४. ५१ (इसने देवताओं को दग्ध करना आरम्भ किया जिससे इसका वध करने के लिये अग्नि से स्कन्द की उत्पत्ति हुई); ८६, २. ४. २७–२९ (स्कन्द ने इसका वध किया था)। तुकी० **असुर, दैतेय, दैत्य, दैत्यसत्तम, दैत्येन्द्र, दानव**।

२. तारक = शिव (१,००० नाम)।

३. तारक (बहु०), तारक के पुत्रों के लिये प्रयुक्त हुआ है (८. ३४, ९७)।

तारकवधोपाख्यान—"युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने बताया : जब गङ्गा ने अग्नि द्वारा स्थापित किये हुये गर्भ को त्याग दिया तब देवताओं और ऋषियों ने बना-बनाया काम बिगड़ता देखकर छः कृत्तिकाओं को उस गर्भ को धारण करने के लिये प्रेरित किया क्योंकि देवाङ्गनाओं में अन्य कोई स्त्री अग्नि एवं रुद्र के उस तेज को धारण करने में समर्थ नहीं थी। कृत्तिकाओं द्वारा उस तेज के धारण कर लेने पर अग्निदेव उन पर प्रसन्न हुये। अग्नि का वह समस्त तेज छः मार्गों से उनके भीतर स्थापित हुआ। प्रसवकाल उपस्थित होने पर उन छहों कृत्तिकाओं ने एक साथ ही उस गर्भ को उत्पन्न किया। छः अधिष्ठानों में पला हुआ वह गर्भ जब उत्पन्न होकर एकत्व को प्राप्त हो गया तब सुवर्ण के समीप स्थित हुये उस बालक को पृथिवी ने ग्रहण किया। वह कान्तिमान शिशु अग्नि के समान प्रकाशित हो रहा था और दिव्य सरकण्डे के वन में जन्म ग्रहण करके दिनोंदिन बढ़ने लगा। कृत्तिकायें अपना स्तनपान कराकर उसका पोषण करने लगीं, और इसी कारण वह कार्तिकेय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्कन्दन के कारण वह 'स्कन्द', तथा गुहा में वास करने के कारण 'गुह' नाम से भी विख्यात हुआ। तदनन्तर तैंतीस देवता, दसों दिशायें, दिक्पाल, रुद्र, धाता, विष्णु, यम, पूषा, अर्यमा, भग, अंश, मित्र, साध्य, वसु, वासव, अश्विनीकुमार, वरुण, वायु, चन्द्रमा, आकाश, तथा नक्षत्र आदि सभी उस अद्भुत कुमार के दर्शन के लिये उपस्थित हुये। ऋषियों ने स्तुति की और गन्धर्वों ने उसका यश गाया। उस कुमार के छः मुख, बारह नेत्र, बारह भुजायें, तथा कान्ति सूर्य के समान थी। सभी देवताओं ने उस कुमार को उसकी प्रिय वस्तुयें भेंट दीं। राक्षसों और असुरों का समुदाय उस शक्तिशाली कुमार का अनुगामी हो गया। कुमार को बढ़ता हुआ देखकर तारकासुर ने उसे युद्ध के लिये ललकारा, परन्तु अनेक उपाय करके भी वह प्रभावशाली कुमार को मारने में सफल नहीं हो सका। देवताओं ने कुमार की पूजा करके उसका अपने सेनापति के पद पर अभिषेक किया। महापराक्रमी इन देवसेनापति ने वृद्धि को प्राप्त होकर अपनी अमोघ शक्ति से तारकासुर का वध कर डाला। खेल-खेल में ही उन कुमार ने जब तारकासुर का वध कर दिया तो देवेन्द्र पुनः देवताओं के राज्य पर प्रतिष्ठित किये गये। प्रतापी कुमार स्कन्द सेनापति के पद पर ही रहकर देवताओं के ईश्वर तथा संरक्षक थे और भगवान शंकर का सदा ही हित किया करते थे। सुवर्ण भी कार्तिकेय जी के साथ ही उत्पन्न हुआ और अग्नि का उत्कृष्ट तेज माना गया है। इस प्रकार पूर्वकाल में वसिष्ठ ने परशुराम जी को यह सारा प्रसंग एवं सुवर्ण की उत्पत्ति और माहात्म्य सुनाया था। परशुराम जी सुवर्ण का दान करके समस्त पापों से मुक्त हो गये और स्वर्ग में उस महान् स्थान को प्राप्त हुये जो दूसरे मनुष्यों के लिये सर्वथा दुर्लभ है (१३. ८६)।"

तारकाक्ष, एक असुर का नाम है (७. २०२, ६५)। यह सुवर्णमयपुर का अधिपति था (८. ३३, २१)।

तारकाक्षसुत = तारकाक्ष का पुत्र, हरि (८. ३३, २७. २९)।

१. तारकामय—'शक्रविष्णू हि संग्रामे चेरतुस्तारकामये' (२. २४, १७)। 'तारकामयसंकाशः', (२. २७, २६)। 'संग्रामे तारकामये', (३. ४१, ३०)। 'अस्तुवन् मुनयो वाग्भिर्यथेन्द्रं तारकामये', (३. १६९, २४)। 'यथावज्रधरः पूर्वं संग्रामे तारकामये', (६. ८३, २६)। 'सहांवुपतिमित्राभ्यां यथेन्द्रस्तारकामये', (७. ८४, २१)। 'यथा च ब्रह्मणा बद्धं संग्रामे तारकामये', (७. ९४, ७१)। 'यथेन्द्रभयवित्रस्ता दानवास्तारकामये', (७. १६८, २९)। 'देवैरिव यथा स्कन्दः संग्रामे तारकामये', (८. १०,५६)। 'संग्रामस्तारकामयः', (८. ३३, ३)। 'संग्रामस्तारकामया', (९. ५१, १)।

२. तारकामय = शिव (१,००० नाम)।

तारकाराज = सोम (चन्द्रमा) : ३. ४१, १४।

१. तारण = शिव (१,००० नाम)।

२. तारण = विष्णु (१,००० नाम)।

१. तारा, वानरराज वालिन् की पत्नी का नाम है (३. २८०, १६. १८. २०. २६. ३८. ३९)।

२. तारा, बृहस्पति की माता का नाम है (५. ११७, १३)।

ताराक्ष = तारकाक्ष (८. ३३, ५)।

ताराधिप, सोम (१. ६७, ३१. १२५; ३. २८०, १८. २०; ११. १९, १७; १२. ३०२, ६०; १३. १२३, ४)।

तारापति = सोम (३. २८०, ३८; २९३, २२; ३०८, १; ६. १०६, ७५; ७. ४३, ४)।

तारामृग—'अन्वधावन्मृगं रामा रुद्रस्तारामृगं यथा', (३. २७८, २०)।

तारिणि = दुर्गा (उमा) : ६. २३, ५।

१. तार्क्ष्य, एकाधिक ऋषियों, विशेषतः = अरिष्टनेमि, का नाम है : १. २, १९२ ('संवादश्च सरस्वत्यास्तार्क्ष्यर्षेः सुमहात्मनः'; ६५, ४०; १२३, ७३; २. ७, १८ (इन्द्र की सभा में); ३. १८४, ८. १३; १८६, १. २. ४. १६. १७. २१. २३. २६ (सरस्वती और तार्क्ष्य का संवाद); १२. २८८, ४।

२. तार्क्ष्य = गरुड : १. ३०, २२. ३१; १५१, ५ (वेगेन तार्क्ष्यमाहतरंहसः); २. २, १४ (रथमास्थाय तार्क्ष्यकेतनमाशुगम्); ४५, ६१ (रथं दृष्ट्वा तार्क्ष्यप्रवरकेतनम्); ५. १०५, १८; ११२, १; ११५, ३. ५; ७. १४, ६० (तार्क्ष्यस्तं नागमिव चाक्षिपत्); ९९, १० (तार्क्ष्यमाहतरंहोभिः); ८. २०, ४७; २५, ३५ (तार्क्ष्यतुल्यपराक्रमः); २७, ६ (आगच्छन् विलयं सर्वे तार्क्ष्यं दृष्ट्वेव पन्नगाः); ८९, २६ (तार्क्ष्यत्रस्ता भूमिमिवोरगास्ते); १२. ४६, ३४ (तार्क्ष्यध्वजिनं पताकिनम्); १३. १४, ४३ (प्राप्यानुज्ञां गुरुजनादहं तार्क्ष्यमचिन्तयम्)।

३. तार्क्ष्य = शिव (१,००० नाम)।

तार्क्ष्य (बहु० र्याः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १५)।

तार्क्ष्यकपिध्वज (द्वि०), से श्रीकृष्ण और अर्जुन के ध्वजों का तात्पर्य है (८. ४०, १४)।

तार्क्ष्यकेतन = कृष्ण (१२. ४८, १५)।

तार्क्ष्यलक्षण = कृष्ण (१२. ४३, ८)।

१. ताल = शिव (१,००० नाम)।

२. ताल—'तालध्वजरथव्रजाः', (११. २५, १६)। 'तालः सुपर्णश्च महाध्वजौ', (१६. ३, ६)।

१. तालकेतु, एक असुरराज का नाम है जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था (गीप्रे. सं. में २. ३८, में दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ८२४; ३. १२, ३४)।

२. तालकेतु = बलराम (९. ४१, ४०)।

३. तालकेतु = भीष्म (५. १५०, ५; ६. ४७, ९)।

तालचर (बहु० °राः) एक जाति के लोगों का नाम है (५. १४०, २६)।

१. तालजङ्घ, एक असुर का नाम है जो ब्रह्मदण्ड से ही मारा गया (३. ३०३, १७)। यह और हैहय, दोनों वत्स के पुत्र थे (१३. ३०, ७)। 'तालजङ्घं महाक्षत्रमौर्वेणैकेन नाशितम्', (१३. १५३, ११)।

२. तालजङ्घ (बहु० ॅङ्घाः), एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें सगर ने पराजित किया था (३. १०६, ८)। 'बहुलस्तालजङ्घानाम्', (५. ७४, १३)। भृगुओं ने इन्हें पराजित किया था (१३. ३४, १७; तुकी० १३. १५३, ११ भी)।

१. तालवन (बहु० ॅनाः) एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय परास्त किया था (२. ३१, ७१)।

२. तालवन, द्वारका के समीपवर्ती लतावेष्ट पर्वत के चारों ओर सुशोभित होनेवाले तीन वनों में से एक का नाम है (गीप्रे. सं. २. ३८ में दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ८१३)।

तालाकर, दक्षिण के एक भारतीय जनपद का नाम है जिसे सहदेव ने जीता था (२. ३१, ६५)।

तालिन् = शिव (१,००० नाम)।

तिग्मतेजस् = शिव (१,००० नाम)।

तिग्ममन्यु = शिव (१,००० नाम)।

१. तिग्मांशु = सूर्य (१. २, १४५; ३. ३०२, ५; ३०७, २८; १५. ३०, १२)।

२. तिग्मांशु = अग्नि (देखिये वस्था०)।

१. तित्तिर, एक प्रकार के पक्षियों का नाम है जो मृत त्रिशिरा के भयानक मुख से उत्पन्न हुये (५. ९, ४१)।

२. तित्तिर (बहु० ॅराः), एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित हुये (६. ५०, ५१; ९०, ५)।

१. तित्तिरि, अश्वों की एक जाति का नाम है जो तीतरों की भाँति चितकबरी होती है (२. २८, ६. १९; ५१, ४; ६१, २२; ३. ८०, २५; ७. २३, ९; १२. १२४, १२)।

२. तित्तिरि, कश्यप और कद्रू से उत्पन्न एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, १५; ५. १०३, १३)।

३. तित्तिरि, वैशम्पायन के भ्राता, एक ऋषि, का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, १२)। वसु उपरिचर के यज्ञ में ये भी एक सदस्य थे (१२. ३३६, ९)।

तिमि, सागर में उत्पन्न होनेवाले एक जलजन्तु का नाम है (गीप्रे. सं० २. ३८, २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ)।

तिमिङ्गिल, दक्षिणभारत के एक राजा का नाम है जिसे सहदेव ने पराजित किया था (२. ३१, ६९)।

तिलभार, एक पूर्वोत्तर भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५३)।

तिलोत्तमा, एक अप्सरा का नाम है जो प्राधा की पुत्री थी (१. ६५, ४९)। इसने अर्जुन के जन्मोत्सव के समय नृत्य किया (१. १२३, ६२)। 'तिलोत्तमायास्तौ', (१. २०८, २०)। 'अप्सरा देवकन्या···तिलोत्तमा', (१. २०८, २३)। "जब सुन्द और उपसुन्द के अत्याचारों से देवतागण अत्यन्त त्रस्त हो गये तब उन सब ने ब्रह्मा की शरण ली। ब्रह्मा ने एक सुन्दर स्त्री का निर्माण करने के लिये कहा। देवताओं ने तदनुसार एक रूपवती कन्या का निर्माण किया। उत्तम रत्नों का तिल-तिल भर अंश लेकर उसके अंगों का निर्माण हुआ इसी से ब्रह्मा ने उसका नाम तिलोत्तमा रक्खा। ब्रह्मा ने उसे सुन्द और उपसुन्द को मोहित करने की आज्ञा दी। ब्रह्मा की आज्ञा शिरोधार्य करके तिलोत्तमा ने उन्हें नमस्कार किया और फिर देवमण्डल की परिक्रमा करने लगी। ब्रह्मा के दक्षिण भाग में विराजमान महेश्वर पूर्वाभिमुख होकर बैठे थे; उत्तर भाग में देवता लोग थे, और ऋषि-मुनि ब्रह्मा के चारों ओर बैठे थे। तिलोत्तमा ने जब देवमण्डल की प्रदक्षिणा आरम्भ की तब इन्द्र और शङ्कर धैर्यपूर्वक अपने स्थान पर बैठे रहे। जब वह दक्षिण पार्श्व की ओर गई तब शङ्कर ने उसे देखने के लिये एक मुख और प्रगट कर लिया। जब तिलोत्तमा शङ्कर के पृष्ठभाग की ओर गई तब शिव के एक और मुख का प्रादुर्भाव हुआ। इसी प्रकार इन्द्र के भी आगे-पीछे और पार्श्व भाग में सहस्रों विशाल नेत्र प्रगट हो गये। इस प्रकार शिव के चार मुख प्रगट हुये और इन्द्र के सहस्र नेत्र उत्पन्न हो गये। तिलोत्तमा के चले जाने पर ब्रह्मा ने देवताओं और महर्षियों को विदा किया (१. २११)।" "सम्पूर्ण त्रिलोकी पर विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् सुन्द-उपसुन्द भोगविलास में लिप्त हो गये। एक दिन जब ये दोनों विन्ध्यपर्वत के एक शिखर पर विचरण कर रहे थे तब वहाँ तिलोत्तमा उपस्थित हुई। उसे देखकर दोनों दैत्य उस पर मोहित हो गये। दोनों ने उसे अपनी-अपनी पत्नी बनाना चाहा। फलस्वरूप दोनों में परस्पर युद्ध छिड़ गया जिसमें आहत होकर दोनों भूमि पर गिर पड़े। इन दैत्यों की मृत्यु हो जाने पर दैत्यों का समुदाय विषाद और भय से कम्पित होकर पाताल में चला गया। ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को यह वर दिया कि वह जहाँ तक सूर्य की गति है वहाँ तक इच्छानुसार विचरण कर सकेगी (१. २१२, १–२४)।" 'तिलोत्तमा नाम पुराब्रह्मणा योषिदुत्तमा। तिलं तिलं समुद्धृत्य रत्नानां निर्मिता शुभा॥', (१३. १४१, १)। अप्सराओं की गणना के अन्तर्गत इसका उल्लेख (१. १६५, १५)।

१. तिष्य, एक नक्षत्र का नाम है (३. १९०, ९०)।

२. तिष्य, चतुर्थयुग, कलियुग, का नाम है (६. १०, ३. ४. ७. १३. १४)। १२. २१८, ३९; ३४०, ८६; ३४१, ४४ (तिष्ये संप्राप्ते कुरवो नाम भारताः···भविष्यन्ति)।

तीक्ष्ण = शिव (१४. ८, २२)।

तीक्ष्णताप = शिव (१,००० नाम)।

तीक्ष्णदंष्ट्र = शिव (१४. ८, २२)।

तीरग्रह (बहु० ॅहाः), एक पूर्वोत्तर भारतीय जाति का नाम है (६. ९, ५२)।

तीर्थ (बहु० ॅर्थानि), मूर्तिमान तीर्थों के लिये प्रयुक्त हुआ है जो स्कन्द के अभिषेक के समय उपस्थित हुये (९. ४५, १२)।

तीर्थकर = विष्णु (१,००० नाम)।

तीर्थकोटि, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से पुण्डरीक यज्ञ का फल मिलता है (३. ८४, १२१)।

तीर्थदेव = शिव (१,००० नाम)।

तीर्थमहाह्रद, एक तीर्थ का नाम है (१३. १६५, २८)।

तीर्थयात्रा, से तीर्थयात्रा तथा तीर्थयात्रापर्व का तात्पर्य है (१. २, ५२. १६५; ११. २६, १९)।

तीर्थयात्रापर्वन्, महाभारत के ३६वें अवान्तरपर्व का नाम है जो वनपर्व के ८०–१५६ अध्यायों तक आता है। अर्जुन के काम्यकवन से चले जाने पर द्रौपदी, भीमसेन, नकुल और सहदेव शोक करने लगे। सहदेव ने काम्यक-वन छोड़कर अन्यत्र चलने का परामर्श दिया (३. ८०)।" "द्रौपदी सहित अपने भ्राताओं की बात सुनकर युधिष्ठिर भी मन ही मन उदास हो गये। इतने ही में देवर्षि नारद वहाँ पधारे। देवर्षि का पूजन करने के बाद युधिष्ठिर ने उनसे पूछा: 'जो मनुष्य तीर्थयात्रा में तत्पर होकर पृथिवी की परिक्रमा करता है उसे क्या फल मिलता है ?' तब नारद ने कहा: 'भीष्म ने महर्षि पुलस्त्य के मुख से इस सम्बन्ध में जो बातें सुनी थीं वह सब मैं तुम्हें बताता हूँ। पूर्व समय में गङ्गाद्वार में भीष्म पितृसम्बन्धी व्रत का आश्रय लेकर महर्षियों के साथ रहते थे। कुछ समय के बाद भीष्म ने अद्भुत तेजस्वी मुनि श्रेष्ठ पुलस्त्य को देखा और उनका पूजन किया जिससे मुनि मन ही मन प्रसन्न हुये।' (३. ८१)।" "भीष्म के पूछने पर पुलस्त्य ने उन्हें विभिन्न तीर्थों की यात्रा का माहात्म्य बताते हुये कहा: 'राजा लोग अथवा कुछ समृद्धिशाली मनुष्य ही यज्ञों का अनुष्ठान कर सकते हैं। जिनके पास धनाभाव है वे यज्ञों का अनुष्ठान नहीं कर पाते। परन्तु तीर्थयात्रा एक ऐसा सत्कर्म है जिसे दरिद्र भी कर सकते हैं, और यह यज्ञों से भी श्रेष्ठ कर्म है।' तदनन्तर पुलस्त्य ने पुष्कर तीर्थ का और उसके पश्चात् अन्यान्य तीर्थों तथा उनकी यात्रा के फलों आदि का वर्णन किया (३. ८२)।" "तीर्थों का वर्णन करते हुये पुलस्त्य ने कुरुक्षेत्र की सीमा में स्थित अनेक तीर्थों, जैसे रामह्रद, मङ्कणक, पृथूदक आदि, के महात्म्य का वर्णन किया (३. ८३)।" "पुलस्त्य ने अनेक अन्य तीर्थों की

महिमा का वर्णन किया (३, ८४)।" "तीर्थों का वर्णन करते हुये पुलस्त्य ने प्रयागतीर्थ का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि गङ्गा में कहीं भी स्नान करना कुरुक्षेत्र के बराबर है, परन्तु कनखल और प्रयाग में स्नान विशेष महत्त्व रखता है। प्रयाग में गङ्गा स्नान से सौ पाप धुल जाते हैं। सत्ययुग में सब तीर्थ पवित्र होते थे; त्रेतायुग में केवल पुष्कर ही पवित्र रह गया। इसी प्रकार द्वापर में कुरुक्षेत्र, और कलियुग में केवल गङ्गा को ही पवित्र कहा गया है। पुष्कर में तप तथा महालय में दान करना चाहिये। मलय पर्वत में अग्नि पर आरूढ़ होना तथा भृगुतुङ्ग में उपवास करना चाहिये। पुष्कर में, कुरुक्षेत्र में, गङ्गा में तथा प्रयाग आदि मध्यवर्ती तीर्थों में स्नान करके मनुष्य अपने आगे-पीछे की सात-सात पीढ़ियों का उद्धार कर देता है। मनुष्य को अस्थि जब तक गङ्गा के जल का स्पर्श करती है तब तक व्यक्ति स्वर्गलोग में पूजित होता है। ब्रह्मा का कथन है कि गङ्गा के समान कोई तीर्थ नहीं, विष्णु से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं, और ब्राह्मण से उत्तम कोई वर्ण नहीं। इस सत्य सिद्धान्त को ब्राह्मण आदि द्विजों, साधु पुरुषों, पुत्रों, सुहृदों, शिष्यवर्ग तथा अपने अनुगत मनुष्यों के कान में कहना चाहिये। वसुगण, साध्यगण, आदित्यगण, मरुद्गण, अश्विनीकुमार तथा देवोपम महर्षियों ने भी पुण्य-लाभ की इच्छा से तीर्थों में स्नान किया है। जो ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का पालन नहीं करता, जिसने अपने चित्त को वश में नहीं किया है, जो अपवित्र आचार-विचार वाला और चोर है, जिसकी बुद्धि वक्र है, वह मनुष्य श्रद्धा न होने के कारण तीर्थों में स्नान नहीं करता। इस प्रकार तीर्थों के माहात्म्य का वर्णन करके भीष्म की अनुमति ले पुलस्त्य वहीं अन्तर्धान हो गये। नारद ने कहा कि तब शास्त्र के तात्त्विक अर्थों के ज्ञाता भीष्म ने पृथिवी की परिक्रमा की। इसी प्रकार यह सब पापों को दूर करने वाली महापुण्यमयी तीर्थयात्रा प्रतिष्ठानपुर (प्रयाग) में प्रतिष्ठित है। जो इस विधि से तीर्थयात्रा करता हुआ सम्पूर्ण पृथिवी की परिक्रमा करेगा वह सौ अश्वमेध यज्ञों से भी उत्तम पुण्यफल प्राप्त करेगा। तदनन्तर नारद जी ने युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुये कहा: 'भीष्म ने जिस प्रकार तीर्थयात्राजनित पुण्य प्राप्त किया था, उससे भी आठ गुने उत्तम धर्म की उपलब्धि तुम्हें होगी। इन सभी तीर्थों में राक्षसों के समुदाय फैले हुये हैं। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य नरेशों ने इनकी यात्रा नहीं की है। अनेक महर्षि–वाल्मीकि, कश्यप, आत्रेय, कुण्डजठर, विश्वामित्र, गौतम, असित, देवल, मार्कण्डेय, गालव, भरद्वाज, वसिष्ठ, उद्दालक, शौनक, व्यास, दुर्वासा और जाबालि—तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम इन सब के साथ उक्त तीर्थों की यात्रा करो। महर्षि लोमश भी तुम्हारे पास आनेवाले हैं, जिन्हें साथ लेकर यात्रा करो। इस यात्रा में मैं भी तुम्हारा साथ दूँगा।' इस प्रकार उपदेश करके नारद अन्तर्धान हो गये और युधिष्ठिर ने अपने पास रहनेवाले महर्षियों से तीर्थयात्रा सम्बन्धी महान् पुण्य के विषय में निवेदन किया (३. ८५)।" "युधिष्ठिर ने धौम्यमुनि से पुण्य तपोवन, आश्रम, एवं नदी आदि के विषय में पूछा (३. ८६)। धौम्य ने पूर्व दिशा के तीर्थों का वर्णन किया (३. ८७)। धौम्य ने दक्षिण दिशावर्ती तीर्थों का वर्णन किया (३. ८८)। धौम्य ने पश्चिम दिशा के तीर्थों का वर्णन किया (३. ८९)। धौम्य ने उत्तर दिशा के तीर्थों का वर्णन किया (३. ९०)। जब धौम्य इस प्रकार तीर्थकथन कर रहे थे, उसी समय लोमश ने वहाँ उपस्थित होकर युधिष्ठिर से अर्जुन के पाशुपत आदि दिव्यास्त्रों की प्राप्ति का वर्णन किया और इन्द्र का संदेश सुनाया (३. ९१)। "लोमश ने कहा: 'जब मैं स्वर्गलोक से आने लगा तब अर्जुन ने मुझसे कहा कि मैं आपको तीर्थयात्राजनित पुण्यों से सम्पन्न कराऊँ।' उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि जैसे दधीच ने देवराज इन्द्र की और महर्षि अंगिरा ने सूर्य की रक्षा की उसी प्रकार मैं राक्षसों से आप लोगों की रक्षा करूँ। 'इस प्रकार मैं इन्द्र के कथन और अर्जुन के अनुरोध से सब प्रकार के भयों से तुम्हारी रक्षा करते हुये तुम्हारे साथ-साथ तीर्थों में विचरण करूँगा। पहले मैं दो बार सब तीर्थों के दर्शन कर चुका हूँ। अब तीसरी बार तुम्हारे साथ उनका दर्शन करूँगा।' तदनन्तर लोमश के आदेशानुसार युधिष्ठिर ने ऐसे ब्राह्मणों, संन्यासियों तथा प्रजाजनों को वापस कर दिया जो भूख-प्यास, परिश्रम-थकावट, और शीत आदि सहन नहीं कर सकते थे। युधिष्ठिर के निवेदन करने पर अनेक नागरिक, ब्राह्मण, और यति मानसिक दुःख के गहन भार से पीड़ित हो हस्तिनापुर चले गये जहाँ राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर के स्नेहवश उन सबको तृप्त किया। तदनन्तर युधिष्ठिर थोड़े से ब्राह्मणों और लोमश को साथ ले कर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक तीन रात तक काम्यक वन में ही रुके रहे (३. ९२)।" "युधिष्ठिर को तीर्थयात्रा के लिये उद्यत देख कर काम्यकवन के निवासी ब्राह्मणों ने भी उपस्थित होकर तीर्थयात्रा के लिये चलने का आग्रह किया जिसे युधिष्ठिर ने स्वीकार कर लिया। तदनन्तर युधिष्ठिर आदि ने तीर्थों की यात्रा का ज्योंही निश्चय किया कि वहाँ व्यास, पर्वत, और नारद आदि मनीषि उपस्थित हुये और बोले: 'युधिष्ठिर, भीम, नकुल, और सहदेव! तुम लोग तीर्थों के प्रति मन से श्रद्धापूर्वक सरल भाव रक्खो। मन से शुद्धि का सम्पादन करके शुद्धचित्त हो तीर्थों में जाओ। सब प्राणियों के प्रति मैत्री-बुद्धि का आश्रय ले शुद्धभाव से तीर्थों का दर्शन करो।' महर्षियों के ऐसा कहने पर द्रौपदी सहित पाण्डवों ने तदनुसार प्रतिज्ञा की और फिर उन दिव्य और मानव महर्षियों का चरणस्पर्श किया। इसके पश्चात् ब्राह्मणों, पुरोहित धौम्य, और लोमश आदि के साथ वीर पाण्डव तीर्थयात्रा के लिये निकले। उन्होंने यह यात्रा मार्गशीर्ष की पूर्णिमा व्यतीत होने पर पुष्य नक्षत्र में आरम्भ की। उन सब ने चीर-जटा आदि धारण कर लिया। उनके अङ्ग अभेद्य कवचों से ढके थे। इस प्रकार पाण्डव आवश्यक अस्त्र-शस्त्र लेकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके वहाँ से प्रस्थित हुये (३. ९३)।" "युधिष्ठिर ने लोमश से कहा: 'मैं अपने को सात्त्विक गुणों से हीन नहीं मानता, तो भी दुःख से इतना संतप्त रहता हूँ। इसके विपरीत, दुर्योधनादि शत्रुओं को सात्त्विक गुणों से रहित समझता हूँ, किन्तु वे सब इस लोक में उत्तरोत्तर समृद्धिशाली होते जा रहे हैं। कृपया आप बतायें कि इसका क्या कारण है?' लोमश ने कहा: 'पहले अधर्म द्वारा मनुष्य वृद्धि को प्राप्त कर सकता है, फिर अपने मनोनुकूल सुख-सम्पत्ति-रूप अभ्युदय को देख सकता है; तत्पश्चात् वह शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकता है, किन्तु अन्त में जड़मूल सहित नष्ट हो जाता है। मैंने दैत्यों, और दानवों को अधर्म के द्वारा बढ़ते और नष्ट होते देखा है। मैंने देखा कि देवताओं ने धर्म के प्रति अनुराग किया और असुरों ने धर्म का परित्याग। देवताओं ने तीर्थों का सेवन किया, परन्तु असुर उनमें नहीं गये क्योंकि अधर्मजनित दर्प असुरों में पहले ही समा गया था। दर्प से मान हुआ तथा मान से क्रोध उत्पन्न हुआ। क्रोध से निर्लज्जता आई और निर्लज्जता ने उनके सदाचार को नष्ट कर दिया। इस प्रकार लज्जा, संकोच और सदाचार से हीन एवं निष्फल व्रत का आचरण करनेवाले उन असुरों को क्षमा, लक्ष्मी, और स्वधर्म ने शीघ्र त्याग दिया। उस दशा में उन दैत्यों और दानवों में कलि का भी प्रवेश हो गया। इसके पश्चात् शीघ्र ही उनका विनाश हो गया; किन्तु धर्मशील देवताओं ने तीर्थयात्रा, तपस्या और यज्ञ आदि किये जिससे वे सब कल्याण के भागी हुये। जैसे राजा नृग, उशीनरपुत्र शिवि, भगीरथ, वसुमना, गय, पूरु, तथा पुरूरवा आदि नरेशों ने तीर्थयात्रा करके प्रचुर धन प्राप्त किया उसी प्रकार तुम भी सम्पत्ति प्राप्त करोगे। इसके विपरीत धृतराष्ट्र के पुत्र पाप और मोह के वशीभूत होने के कारण दैत्यों की ही भाँति शीघ्र नष्ट हो जायँगे।' (३. ९४)।" "पाण्डव आदि नैमिषारण्य आदि तीर्थों में गये और वहाँ से प्रयाग होते हुये गया तीर्थ में आये। यहाँ उन लोगों ने राजा गय के महान यज्ञों की महिमा का श्रवण किया (३. ९५)।" "इल्वल और वातापि का वर्णन; महर्षि अगस्त्य का पितरों के उद्धार के लिये विवाह करने का विचार तथा विदर्भराज का महर्षि अगस्त्य से एक कन्या प्राप्त करना (३. ९६)।" महर्षि अगस्त्य का लोपामुद्रा से विवाह, गङ्गाद्वार में तपस्या, एवं पत्नी की इच्छा से धनसंग्रह के लिये प्रस्थान (३. ९७)। धन प्राप्त करने के लिये अगस्त्य का श्रुतर्वा, ब्रध्नश्व, और त्रसदस्यु आदि के पास जाना (३. ९८)। अगस्त्य का इल्वल के यहाँ धन के लिये जाना; वातापि तथा इल्वल का वध; लोपामुद्रा

को पुत्र-प्राप्ति; तथा श्रीराम के द्वारा हरे गये तेज की परशुराम को तीर्थस्नान द्वारा पुनः प्राप्ति (३. ९९)। वृत्रासुर से त्रस्त देवताओं को महर्षि दधीच का अस्थिदान एवं वज्र का निर्माण (३. १००)। वृत्रासुर का वध और असुरों को भयंकर मन्त्रणा (३. १०१)। कालेयों द्वारा तपस्वियों, मुनियों, ब्रह्मचारियों आदि का संहार तथा देवताओं द्वारा विष्णु की स्तुति (३. १०२)। विष्णु के आदेश से देवताओं का महर्षि अगस्त्य के आश्रम पर जाकर उनकी स्तुति करना (३. १०३)। अगस्त्य का विन्ध्यपर्वत को बढ़ने से रोकना और देवताओं के साथ सागर-तट पर जाना (३. १०४)। अगस्त्य द्वारा समुद्रपान और देवताओं का कालेय दैत्यों का वध करके ब्रह्मा से समुद्र को पुनः भरने का उपाय पूछना (३. १०५)। सगर द्वारा संतान के लिये तपस्या और शिव से वरदान की प्राप्ति (३. १०६)। सगर-पुत्रों की उत्पत्ति; साठ हजार सगर-पुत्रों का कपिल की क्रोधाग्नि से भस्म होना, असमञ्ज का परित्याग; अंशुमान के प्रयत्न से सगर के यज्ञ की पूर्ति; अंशुमान से दिलीप को और दिलीप से भगीरथ को राज्य-प्राप्ति (३. १०७)। भगीरथ का हिमालय पर तपस्या द्वारा गङ्गा और महादेव को प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त करना (३. १०८)। पृथिवी पर गङ्गा के उतरने और समुद्र को जल से भरने का विवरण, एवं सगर-पुत्रों का उद्धार (३. १०९)। नन्दा तथा कौशिकी का माहात्म्य, ऋष्यशृङ्ग मुनि का उपाख्यान और उनको अपने राज्य में लाने के लिये राजा लोमपाद का प्रयास (३. ११०)। वेश्या का ऋष्यशृङ्ग को मोहित करना और विभाण्डक मुनि का आश्रम पर आकर अपने पुत्र की चिन्ता का कारण पूछना (३. १११)। ऋष्यशृङ्ग का पिता को अपनी चिन्ता का कारण बताते हुये ब्रह्मचारी-रूपधारी वेश्या के स्वरूप और आचरण का वर्णन (३. ११२)। ऋष्यशृङ्ग का अङ्गराज लोमपाद के यहाँ जाना; राजा को उन्हें अपनी कन्या देना; राजा द्वारा विभाण्डक मुनि का सत्कार और उन पर मुनि का प्रसन्न होना (३. ११३)। कौशिकी, गङ्गासागर एवं वैतरणी नदी से होते हुये युधिष्ठिर महेन्द्र पर्वत पर आये और रात्रि के समय वहीं रहे (३. ११४)। अकृतव्रण ने युधिष्ठिर से परशुराम के उपाख्यान के प्रसंग में ऋचीक मुनि का गाधिकन्या के साथ विवाह और भृगु ऋषि की कृपा से जमदग्नि की उत्पत्ति का वर्णन किया (३. ११५)। "पिता की आज्ञा से परशुराम ने अपनी माता का मस्तक काट दिया और फिर पिता के वरदान से ही माता को जीवित किया। तदनन्तर परशुराम ने कार्तवीर्य अर्जुन का वध किया, परन्तु अर्जुन के पुत्रों ने जमदग्नि की ही हत्या कर दी (३. ११६)।" "परशुराम ने पिता के लिये विलाप और पृथिवी को इक्कीस बार क्षत्रियविहीन किया। युधिष्ठिर ने परशुराम का पूजन किया (३. ११७)।" विभिन्न तीर्थों से होते हुये युधिष्ठिर आदि प्रभासक्षेत्र में आकर तपस्या में प्रवृत्त हुये, और यहीं यादवगण आकर पाण्डवों से मिले (३. ११८)। प्रभासतीर्थ में बलराम ने पाण्डवों के प्रति सहानुभूति-सूचक उद्गार प्रगट किये (३. ११९)। "सात्यकि ने कौरवों से प्रतिशोध लेने का परामर्श देते हुये शौर्यपूर्ण उद्गार प्रगट किये और कहा कि राम, कृष्ण, प्रद्युम्न, शाम्ब, अनिरुद्ध, गद, उल्मुक, बाहुक, भानु, नीथ, निशठ, और चारुदेष्ण आदि के नेतृत्व में वृष्णियों, भोजों, अन्धकों, सात्वतों तथा शूरों की सम्मिलित सेना का गठन करके कौरवों पर आक्रमण कर देना चाहिये। सात्यकि ने यह भी परामर्श दिया कि कौरवों को पराजित करके उस समय तक अभिमन्यु ही राज्य-कार्य का संचालन करते रहें जब तक युधिष्ठिर अपना व्रत पूर्ण नहीं कर लेते। युधिष्ठिर ने सात्यकि के उद्गारों की प्रशंसा करते हुये कहा : 'मेरे लिये सत्य की रक्षा ही प्रधान है, राज्य की प्राप्ति नहीं। अतः अभी आप सब यदुवंशी वीर द्वारका लौट जाँय। मैं पुनः आप सब मित्रों को एकत्र हुआ देखूँगा।' इस प्रकार यादवों को विदा करने के पश्चात् युधिष्ठिर सदल पयोष्णी नदी के तट पर गये (३. १२०)।" "लोमश ने बताया कि पयोष्णी नदी के तट पर राजा नृग ने यज्ञ करके सोमरस द्वारा इन्द्र को तृप्त किया था। तदनन्तर लोमश ने पयोष्णी के तट पर किये गये विभिन्न यज्ञों आदि का वर्णन किया। पयोष्णी में स्नान करने के पश्चात् पाण्डव वैदूर्यपर्वत तथा नर्मदा क्षेत्र में आये। लोमश ने इस क्षेत्र का माहात्म्य बताया और पाण्डवों ने भी इस क्षेत्र के समस्त तीर्थों का भ्रमण और ब्राह्मणों को दान आदि किया। तदनन्तर लोमश जी ने च्यवन-सुकन्या के चरित्र का वर्णन आरम्भ किया (३. १२१)।" महर्षि च्यवन को सुकन्या की प्राप्ति का वर्णन (३. १२२)। अश्विनीकुमारों की कृपा से महर्षि च्यवन को सुन्दर रूप और युवावस्था की प्राप्ति (३. १२३)। शर्याति के यज्ञ में च्यवन का इन्द्र पर कोप करके वज्र को स्तम्भित और इन्द्र को मारने के लिये मदासुर को उत्पन्न करना (३. १२४)। अश्विनीकुमारों का यज्ञ में भाग स्वीकार कर लेने पर इन्द्र के संकट-मुक्त होने का वर्णन करने के पश्चात् लोमश ने अन्यान्य तीर्थों का वर्णन किया (३. १२५)। राजा मान्धाता की उत्पत्ति और उनके संक्षिप्त चरित्र का वर्णन (३. १२६)। युधिष्ठिर के पूछने पर लोमश ने सोमक और जन्तु का उपाख्यान सुनाया (३. १२७)। सोमक को सौ पुत्रों की प्राप्ति तथा सोमक और पुरोहित का समान रूप से नरक और पुण्यलोकों का उपभोग करना (३. १२८)। लोमश ने कुरुक्षेत्र के द्वारभूत, प्लक्षप्रस्रवण नामक यमुना तीर्थ एवं सरस्वती तीर्थ की महिमा का वर्णन किया (३. १२९)। विभिन्न तीर्थों की महिमा का वर्णन करते हुये लोमश ने उशीनर की कथा का आरम्भ किया (३. १३०)। राजा उशीनर द्वारा बाज़ पक्षी को अपने शरीर का मांस दे कर शरणागत कपोत के प्राणों की रक्षा करना (३. १३१)। अष्टावक्र के जन्म का वृत्तान्त और उनका राजा जनक के दरबार में जाना (३. १३२)। अष्टावक्र का राजा जनक के द्वारपाल तथा उसके बाद स्वयं राजा जनक से वार्तालाप (३. १३३)। बन्दी और अष्टावक्र का शास्त्रार्थ, बन्दी की पराजय, तथा समङ्गा में स्नान से अष्टावक्र के अङ्गों का सीधा होना (३. १३४)। कर्दमिक्षेत्र आदि तीर्थों की महिमा; रैभ्य एवं भरद्वाजपुत्र यवक्रीत मुनि की कथा; तथा ऋषियों का अनिष्ट करने के कारण मेधावी की मृत्यु (३. १३५)। यवक्रीत का रैभ्य मुनि की पुत्रवधू के साथ व्यभिचार और रैभ्य के क्रोध से उत्पन्न राक्षस के द्वारा यवक्रीत की मृत्यु (३. १३६)। भरद्वाज का पुत्रशोक से विलाप और रैभ्य मुनि को शाप देने के पश्चात् स्वयं अग्नि में प्रवेश (३. १३७)। अर्वावसु की तपस्या के प्रभाव से परावसु का ब्रह्महत्या से मुक्त होना और रैभ्य, भरद्वाज, तथा यवक्रीत आदि का पुनर्जीवित होना (३. १३८)। पाण्डवों की उत्तराखण्ड यात्रा तथा लोमश द्वारा उसकी दुर्गमता का वर्णन (३. १३९)। "उत्तराखण्ड की दुर्गमता और द्रौपदी आदि की कोमलता का ध्यान करके जब युधिष्ठिर चिन्तित हो उठे तब भीमसेन ने उत्साहपूर्वक कहा कि वे सबको अपने कन्धे पर बैठा कर ले चलेंगे। तदनन्तर सभी पाण्डवों ने कुलिन्दराज सुबाहु के राज्य से होते हुये गन्धमादन और हिमालय पर्वत के लिये प्रस्थान किया (३. १४०)।" "युधिष्ठिर ने अर्जुन को न देखने के कारण भीमसेन से मानसिक चिन्ता व्यक्त की। तदनन्तर अर्जुन के गुणों का स्मरण करते हुये उन्होंने गन्धमादन पर्वत पर जाने का दृढ़ निश्चय व्यक्त किया (३. १४१)।" "पाण्डवों ने गङ्गा की वन्दना की। लोमश ने नरकासुर के वध तथा वाराह द्वारा वसुधा के उद्धार की कथा का वर्णन किया (३. १४२)।" गन्धमादन की यात्रा करते समय पाण्डवों को आँधी-पानी का सामना करना पड़ा (३. १४३)। "गन्धमादन के मार्ग की दुर्गमता के कारण द्रौपदी मूर्च्छित हो गईं। पाण्डवों तथा महर्षियों की सेवा से उनकी चेतना लौट आई। युधिष्ठिर के आग्रह करने पर भीमसेन ने घटोत्कच का स्मरण किया जिससे वह अपने कन्धे पर उठा कर पाण्डवों को ले चले (३. १४४)।" "भीमसेन के स्मरण करने पर अपने साथियों सहित घटोत्कच वहाँ उपस्थित हुआ। वह और उसके साथी पाण्डवों तथा उनके साथ के ऋषियों आदि को अपने कन्धों पर उठा कर गन्धमादन क्षेत्र में लाये। पाण्डवों ने बदरिकाश्रम में प्रवेश किया तथा लोमश ने बदरी वृक्ष, और गङ्गा के माहात्म्य का वर्णन किया (३. १४५)।" "द्रौपदी के आग्रह पर भीमसेन सौगन्धिक कमल लाने के लिये गये। कदलीवन में भीमसेन की हनुमान् से भेंट हुई (३. १४६)।" श्रीहनुमान् और भीमसेन का संवाद (३. १४७)।

हनुमान् ने संक्षेप में भीमसेन को श्रीराम का चरित्र सुनाया (३. १४८)। हनुमान् ने चारों युगों के धर्मों का वर्णन किया (३. १४९)। हनुमान् ने भीमसेन को अपने विशाल रूप का दर्शन कराने के पश्चात् चारों वर्णों के धर्मों का प्रतिपादन किया (३. १५०)। भीमसेन को आश्वासन और विदा देकर हनुमान् अन्तर्धान हो गये (३. १५१)। भीमसेन का सौगन्धिक वन में पदार्पण (३. १५२)। क्रोधवश नामक राक्षसों ने भीमसेन से सौगन्धिक सरोवर के निकट आने का कारण पूछा (३. १५३)। भीमसेन ने क्रोधवश नामक राक्षसों को पराजित करके द्रौपदी के लिये सौगन्धिक कमल-पुष्पों का संग्रह किया (३. १५४)। प्रकृति में भयंकर उत्पात देख कर युधिष्ठिर आदि को भीमसेन के लिये चिन्ता होने लगी जिससे वे सब के सब गन्धमादनपर्वत पर सौगन्धिक वन में भीमसेन के पास आये (३. १५५)। पाण्डव आकाशवाणी के आदेश से पुनः नरनारायणाश्रम में लौट आये और वहीं निवास करने लगे (३. १५६)।"

तीर्थसेनि, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ७)।

तुङ्गक, एक पवित्र वन का नाम है, जहाँ पूर्वसमय में वेदों के नष्ट हो जाने के समय सारस्वत मुनि ने अन्य ऋषियों को वेदाध्ययन कराया था (३. ८५, ४६)। "एक समय ऋषियों को सारा वेद विस्मृत हो गया। इस प्रकार वेदों के नष्ट होने पर अङ्गिरा मुनि के पुत्र ऋषियों के उत्तरीय वस्त्रों में छिपकर बैठ गये और विधिपूर्वक ॐकार का उच्चारण करने लगे। ॐकार का ठीक-ठीक उच्चारण होने पर ऋषियों को वेद का स्मरण हो आया। उस समय वहाँ बहुत से ऋषि, देवता, वरुण, अग्नि, प्रजापति, नारायण और महादेव भी उपस्थित हुये। ब्रह्मा ने देवताओं के साथ आकर भृगु को यज्ञ कराने के काम पर नियुक्त किया। भृगु ने तब इस तुङ्गकारण्य में भलीभाँति अग्निस्थापन कराया। उस समय आज्यभाग के द्वारा विधिपूर्वक अग्नि को तृप्त करके सब देवता और ऋषि क्रमशः अपने-अपने स्थानों को चले गये। इस तुङ्गकारण्य में प्रवेश करते ही स्त्री या पुरुष सब के पाप नष्ट हो जाते हैं (३. ८५, ४७-५३)।"

तुङ्गवेणा, एक नदी का नाम है। यह भी अग्नि की माताओं में से एक है (६. ९, २७)।

१. तुण्ड, एक राक्षस का नाम है जिसने वानर-सेनापति नल के साथ युद्ध किया था (३. २८५, ९)।

२. तुण्ड, एक राजा का नाम है जिन्हें पाण्डवों की ओर से रणनिमन्त्रण भेजा गया (५. ४, २१)।

१. तुण्डिकेर (बहु० °राः), एक जाति के लोगों का नाम है जिनका अर्जुन ने वध किया था (८. ५, ४९)।

२. तुण्डिकेर, तुण्डिकेरों के राजा का नाम है (७. १७, १९)।

तुम्बवीण = शिव (१,००० नाम)।

तुम्बवीणाप्रिय = शिव (१,००० नाम)।

१. तुम्बुरु, एक गन्धर्व का नाम है जो कश्यप और प्राधा के पुत्र थे (१. ६५, ५१)। इन्होंने अर्जुन के जन्मोत्सव के समय गायन किया (१. १२३, ५४)। २. ४, ३६; ७, १४ (इन्द्र की सभा में); १०, २६ (कुबेर की सभा के प्रधान गन्धर्व थे); ५२, २४) इन्होंने युधिष्ठिर को सौ घोड़े भेंट किये); ३. ४३, १४ (इन्द्रलोक में अर्जुन के स्वागत के समय ये भी उपस्थित थे); १५९, २९ (पर्वसंधि के समय गन्धमादन पर्वत पर कुबेर की सभा में हो रहे इनके सामगान का स्वर स्पष्ट सुन पड़ता है); ४. ५६, १२ (गोग्रहण के अवसर पर कौरवों के साथ अर्जुन के युद्ध को देखने के लिये ये भी उपस्थित हुये); ५. ११७, १६; ६. ६, २०; ७. २३, २०; ४५, २२; ८. ८७, ५२; १२. २८४, ५; ३२४, १५; १३. १६५, १४; १४. ८८, ३९ (युधिष्ठिर के अश्वमेध में ये भी उपस्थित हुये); १५. २९, ९। तुक० **गन्धर्व**।

२. तुम्बरु, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जो शर-शय्या पर पड़े भीष्म को देखने के लिये उपस्थित हुये (१२. ४७, ८)।

तुरग (बहु० °गाः)—'देवी लक्ष्मीः पद्मगृहा शुभा। तस्यास्तु मानसाः पुत्रास्तुरगा व्योमचरिणः; (१. ६६, ५१)।

तुर्वसु, ययाति के द्वारा देवयानी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है (१. ७५, ३५)। १. ७५, ३७; ८३, ९ (ये ययाति द्वारा उत्पन्न देवयानी के द्वितीय पुत्र थे); ८४, १०-११ (इन्होंने ययाति को अपनी युवावस्था देना स्वीकार नहीं किया जिस पर ययाति ने इन्हें शाप दिया). १३. १६; ८५, २१. २६. ३४ (यवन इनके वंशज हैं); ९५, ९ (ययाति के पुत्रों की गणना के अन्तर्गत इनका उल्लेख)।

तुलाधार, एक काशीनिवासी वैश्य का नाम है (१२. २६१, १. ८. ९. ११. ४२-४५; २६२, १. ४. ५; २७३, ४. ३८. ४२; २६४, १. २०. २१. २३)।

तुलाधार-जाजलि-संवादः—"भीष्म ने कहा : प्राचीनकाल में जाजलि नाम से विख्यात एक ब्राह्मण थे जो वन में ही रहते तथा विचरण करते थे। इन जाजलि ने समुद्र-तट पर जाकर अत्यन्त महान तप आरम्भ किया और नियमित भोजन करते हुए वल्कल, मृगचर्म, एवं जटा धारण करके अनेक वर्षों तक तप करते रहे। फिर किसी समय सम्पूर्ण लोकों को देखने के लिये मन के समान गति से विचरण करने लगे। वन और काननों सहित समुद्र-पर्यन्त पृथिवी का निरीक्षण करके समुद्रवर्ती सजल प्रदेश में निवास करते समय जाजलि के मन में यह विचार आया कि 'इस चराचर जगत् में मेरे अतिरिक्त कोई अन्य मनुष्य ऐसा नहीं जो मेरे साथ जल में विचरने और आकाश में भ्रमण करने की शक्ति रखता हो।' उनकी बातें सुनकर अदृश्य पिशाचों ने कहा : 'काशी में तुलाधार रहते हैं जो वणिक्-धर्म का पालन करते हैं; किन्तु वे भी ऐसी बातें नहीं कह सकते जैसी आप कह रहे हैं।' पिशाचों की बात को सुनकर जाजलि ने तुलाधार का दर्शन करने की इच्छा प्रगट की। तब उन महर्षि को समुद्रतटवर्ती जल प्रदेश से बाहर निकालकर राक्षसों ने उन्हें काशी का मार्ग दिखा दिया। उस मार्ग से काशी पहुँच कर जाजलि ने तुलाधार का दर्शन करने के पश्चात् उनसे प्रश्न किया। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने जाजलि के दुष्कर पूर्वकर्मों का वर्णन करते हुये बताया कि जाजलि महान तपस्वी थे और प्रतिदिन प्रातः सायं सन्ध्योपासना, अग्नि-होत्र तथा वेदाध्ययन में तत्पर रहते थे। एक समय की बात है, वे महातपस्वी जाजलि निराहार रहकर वायु-भक्षण करते हुये काष्ठवत् खड़े हो गये। चेष्टाशून्य होने के कारण वे किसी ठूँठ वृक्ष के समान प्रतीत होते थे। उस समय उनके सर पर गौरैया पक्षी के एक जोड़े ने अपना घोसला बना लिया। कुछ समय के पश्चात् उन पक्षियों ने उसी घोंसले में अण्डे दिये। इस बात को जानकर भी जाजलि विचलित नहीं हुये। अण्डों के पुष्ट होने पर उनसे बच्चे बाहर निकले और वहीं बढ़ने लगे। कुछ समय के पश्चात् उन बच्चों के पर निकल आये और वे अपने चारे आदि चुगने के लिये बाहर जाने लगे। एक समय वे पक्षी उड़ जाने के पश्चात् एक मास तक लौटकर नहीं आये। तब जाजलि मुनि वहाँ से अन्यत्र चले गये। जप करने वालों में श्रेष्ठ जाजलि अपने मस्तक पर पक्षियों के उत्पन्न होने और बढ़ने की बात को स्मरण करके अपने को महान धर्मात्मा समझने लगे और आकाश में ताल ठोंकते हुए स्पष्ट वाणी में बोले : 'मैंने धर्म को प्राप्त कर लिया है।' इतने में ही एक आकाशवाणी ने कहा : 'जाजले ! तुम धर्म में तुलाधार के समान नहीं हो। फिर भी वे तुलाधार वैसी बातें नहीं कहते जैसी तुम कह रहे हो।' इस आकाशवाणी को सुनकर जाजलि अमर्ष के वशीभूत हो गये और तुलाधार को देखने के लिये पृथिवी पर विचरण करने लगे। जहाँ संध्या हो जाती वहीं वे मुनि टिक जाते थे। इस प्रकार दीर्घकाल के पश्चात् वे वाराणसी पुरी में आये और तुलाधार को सौदा बेचते देखा। मुनि को देख कर तुलाधार ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। तुलाधार ने जाजलि के पूर्व-कर्मों तथा उनके मस्तक पर पक्षियों के घोंसला बना लेने आदि का भी उल्लेख किया। तुलाधार ने आकाशवाणी तथा मुनि के अमर्ष का भी उल्लेख किया (१२. २६१)।" "जाजलि के आग्रह पर तुलाधार ने उनसे धर्म के विषय पर संवाद किया। धर्म की व्याख्या करते हुए तुलाधार ने कहा : 'पाँच इन्द्रियोंवाले समस्त प्राणियों में सूर्य, चन्द्र, वायु, ब्रह्मा, प्राण, यज्ञ और यमराज, इन सब देवताओं का निवास है।

अतः जो इन्हें जीते-जी वेचकर जीविका चलाते हैं, उन्हें अधर्म की प्राप्ति होती है। फिर मृत जीवों का विक्रय करनेवालों के विषय में तो कहा ही क्या जाय? बकरा अग्नि का, भेड़ वरुण का, घोड़ा सूर्य का, और पृथिवी विराट का रूप है; तथा गाय और बछड़े चन्द्रमा के स्वरूप हैं: इनको वेचने से कल्याण की प्राप्ति नहीं होती।... एक समय की बात है, ऋषियों और यतियों ने नहुष की भर्त्सना की क्योंकि उसने माता स्वरूप गौ और प्रजापति वृषभ का वध किया था। फिर भी, नहुष के अज्ञानवश हुये उस पाप के कारण ऋषि और यति शान्त हो गये तथा नहुष के पाप को एक सौ रोगों के रूप में परिणत करके समस्त प्राणियों पर वितरित कर दिया। उन लोगों ने स्वयं नहुष को भ्रूणहत्यारा बताकर उसके यज्ञ में हविष्य की आहुति देना अस्वीकार कर दिया।' तदन्तर तुलाधार ने अपने विषय में निवेदन किया (१२. २६२)।" "तुलाधार की बात सुनकर जाजलि ने कहा: 'तुम तो नास्तिकता की भी बाते करते हो। यदि पशुओं के कष्ट का ध्यान करके कृषि आदि वृत्तियों का त्याग कर दिया जाय तो इस संसार का जीवन ही समाप्त हो जायगा।' तुलाधार ने जाजलि के आक्षेप को अस्वीकार करते हुये यज्ञ के यथार्थ स्वरूप का निरूपण किया। उसने कहा: 'ब्राह्मणों के लिये जिस यज्ञ का विधान है उसे मैं नमस्कार करता हूँ, परन्तु खेद है कि इस समय ब्राह्मण लोग अपने यज्ञ का परित्याग करके क्षत्रियोचित यज्ञों के अनुष्ठान में प्रवृत्त हैं।... किसी देवता के लिये घृत आदि द्रव्य समर्पित करने के लिये श्रद्धा को ही पत्नी बनाये और यज्ञ को ही देवता के समान आराध्य बनाकर यथावत् रूप से यज्ञपुरुष विष्णु को प्राप्त करे।... सब नदियाँ सरस्वती का रूप हैं, और समस्त पर्वत ही पुण्यमय प्रदेश हैं। यह आत्मा ही प्रधान तीर्थ है। आप तीर्थ सेवन के लिये देश-देश मत भटकिये। जो यहाँ मेरे बताये अहिंसाप्रधान धर्मों का आचरण और धर्म का अनुसंधान करता है वह कल्याणकारी लोकों को प्राप्त होता है।' भीष्म ने कहा कि इस प्रकार हिंसारहित, युक्तिसंगत तथा श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा सेवित धर्मों की ही तुलाधार ने सदैव प्रशंसा की थी (१२. २६३)।" "तुलधार ने जाजलि को उन पक्षियों को बुलाने के लिये कहा जो उन्हीं के मस्तक पर उत्पन्न हुये थे। जाजलि के बुलाने पर उन पक्षियों ने वहाँ आकर मनुष्यों के समान वाणी में इस प्रकार उपदेश दिया: 'अहिंसा और दया आदि भावों से प्रेरित होकर किया गया कर्म इहलोक और परलोक में भी उत्तम फल देनेवाला होता है।... श्रद्धा सूर्य की पुत्री है, इसलिये उसे वैवस्वती, सावित्री, और प्रसवित्री भी कहते हैं। वाणी और मन भी श्रद्धा की अपेक्षा बहिरंग हैं।... इस विषय में ब्रह्मा की एक गाथा का वर्णन किया जाता है जो इस प्रकार है: पहले देवता लोग श्रद्धाहीन पवित्र और पवित्रतारहित श्रद्धालु के द्रव्य को यज्ञकर्म के लिये एक सा ही मानते थे। इसी प्रकार वे कृपण वेदवेत्ता एवं महादानी सूदखोर के अन्न में भी कोई अन्तर नही मानते थे। देवताओं ने खूब सोच-विचार कर दोनों प्रकार के अन्नों को समान निश्चित किया था। परन्तु एकबार प्रजापति ने देवताओं के इस व्यवहार को देखकर कहा कि वास्तव में उदार का अन्न उसकी श्रद्धा के कारण पवित्र होता है और कृपण का अश्रद्धा के कारण अपवित्र एवं नष्टप्राप्त समझा जाता है। अश्रद्धा सबसे बड़ा पाप है, और श्रद्धा पाप से मुक्ति दिलाता है।' भीष्म ने बताया कि जाजलि और तुलाधार के इस संवाद के थोड़े समय के बाद दोनों ही व्यक्ति परमधाम में जाकर अपने-अपने शुभ कर्मों के कारण सुखपूर्वक विहार करने लगे। तुलाधार ने जो उपदेश दिया था वह बहुजनसम्मत अर्थ से युक्त था। उसे सुनकर जाजलि को परम शान्ति प्राप्त हुई (१२. २६४)।"

तुषार (बहु० °राः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५१, ३०)। ये युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित हुये (३. ५१, २५. २६)। गन्धमादन से द्वैतवन की ओर जाते हुये पाण्डव तुषार-देश को पार करके राजा सुबाहु के नगर में पहुँचे थे (३. १७७, १२)। ये भीष्मनिर्मित क्रौञ्चव्यूह के दाहिने पक्ष का आश्रय लेकर स्थित हुये (६. ७५, २१)। अर्जुन ने युद्ध में इन्हें परास्त किया था (८. ७३, १९)। इन्हें एक निम्न और बर्बर जाति कहा गया है (१२. ६५, १३)।

तुषारगिरि = हिमवत् (१३. १४, २४४)।

१. तुषित = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

२. तुषित (बहु० °ताः), देवों के एक वर्ग का नाम है (१३. १८, ७४)।

तुष्ट = विष्णु (१,००० नाम)।

तुष्टाज्यपा = शिव (१,००० नाम)।

तुहर, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७१)।

तुहार, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७१)।

१. तुहुण्ड, एक असुर का नाम है जो दनु का पुत्र था (१. ६५, २५)। यह सेनाबिन्दु नामक राजा हुआ (१. ६७, १९–२०)।

२. तुहुण्ड, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, ३)।

३. तुहुण्ड (बहु० °ण्डाः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ५०, ५२)।

तृणक, एक प्राचीन राजर्षि का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित होते थे (२. ८, १७)।

तृणप, एक देवगन्धर्व का नाम है जो अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित हुये (१. १२३, ५६)।

तृणबिन्दु, काम्यकवन में निवास करनेवाले एक ऋषि का नाम है जिनकी आज्ञा से पाण्डवों ने द्रौपदी को आश्रम में छोड़ कर आखेट के लिये प्रस्थान किया (३. २६४, ५)। ४. १३, ३; ९. ६१, ४६; १२. ४७, ९ (ये भी उन ऋषियों में एक थे जो शर शय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े हुये)।

तृणबिन्दुसरस्, काम्यकवन में स्थित एक सरोवर का नाम है (३. २५८, १३)।

तृणसोमाङ्गिरस्, दक्षिण दिशा का आश्रय लेकर रहने वाले एक ऋषि का नाम है (१३. १५०, ३४)।

तृणानि (बहु०) = शिव (१,००० नाम)।

तृतीया, एक नदी की नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित होती थी (२. ९, २१)।

तृप्तातृप्तविचारिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. तेजस्, मूर्तिमान तेज का नाम है जो ब्रह्मा की सभा में उपस्थित होता है (२. ११, २०)।

२. तेजस् = सूर्य (३. ३, १७)।

३. तेजस् = शिव (१,००० नाम)।

४. तेजस् = विष्णु (१,००० नाम)।

तेजसां पतिः = सूर्य (३. ३, १९)।

तेजस्करोनिधिः = शिव (१,००० नाम)।

१. तेजस्विन्, पाँच इन्द्रों में से एक का नाम है (१. १९७, २८. २९)।

२. तेजस्विन् = शिव (१,००० नाम)।

तेजेयु, पुरुपुत्र रौद्राश्व के द्वारा मिश्रकेशी अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है (१. ९४, ११)।

तेजोपहारिन् = शिव (१,००० नाम)।

तैजस, वरुण से सम्बन्धित एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, १६४)। यहीं जलाधिपति के रूप में वरुण का अभिषेक हुआ था (९. ४६, १०५)।

तैत्तिरि, वसु उपरिचर के यज्ञ में सम्मिलित हुये सोलह सदस्यों में से एक का नाम है (१२. ३३६, ९)।

तोमर (बहु० °राः) एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६९)।

१. तोयात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ६०)।

२. तोयात्मन् = शिव (१,००० नाम)।

तोरण = शिव (१,००० नाम)।

तोरणस्फाटिका, धृतराष्ट्र द्वारा बनवाये गये उस सभाभवन का नाम है जिसमें द्यूतक्रीड़ा का आयोजन किया गया था (२. ५६, १८)।

त्यागशास्त्र—'अत्र सम्यग्वधो नाम त्यागशास्त्रमनुत्तमम् । शृणु यत्तव मोक्षाय भाष्यमाणं भविष्यति ॥', (१२. २१९, १६) ।

त्रसदस्यु, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ८, ९) । अगस्त्य ने इनसे धन की याचना की (३. ९८, १२) । प्रातः-सायं स्मरण किये जाने वाले नरेशों में ये भी एक हैं (१३. १६५, ५५) ।

त्रयी, विद्या और धर्म के लिये प्रयुक्त हुआ है : १. १००, ६७ (विद्या). ६९ (पुराणानाम्); २. ५, ९७ (°मूले); ३. १५०, ३१ (वार्ता). ३२ (धर्म); २०७, २४ (विद्या); ३१३, ७६ (धर्मः); ६. ३३, २१ (धर्मम्); १२. ८, २७; १८, ३३; २६, २४; ५६, २०; ५९, ३३; ६३, २८; ६८, २१; ८९, ७ (विद्या); ९१, ८ (विद्या); १२३, २० (विद्या); १३४, १२ (विद्याम्); २३५, १ (विद्याम्); ३४०, ८३ ।

त्रासन = शिव (१,००० नाम) ।

१. त्रिककुद् = शिव (१,००० नाम) ।

२. त्रिककुद् = कृष्ण (विष्णु) : १२. ४३, १० ।

त्रिककुब्धाम = विष्णु (१,००० नाम) ।

त्रिकर्मरत = शिव (१,००० नाम) ।

त्रिकालधृक् = शिव (१,००० नाम) ।

१. त्रिकूट, एक पर्वत का नाम है जो उत्तर में स्थित है (२. ४२, ११) ।

२. त्रिकूट, लङ्का के निकट स्थित एक पर्वत का नाम है । लङ्का से गोकर्ण जाते समय रावण ने इसे पार किया था (३. २७७, ५४) । 'रावणो विदितो मह्यं लङ्का चास्य महापुरी । दृष्टा पारे समुद्रस्य त्रिकूटगिरिकन्दरे ॥', (३. २८२, ५६) ।

त्रिकूटवान् , एक पर्वत का नाम है (१४. ४३, ४) । तुकी० **त्रिकूट** ।

त्रिगङ्ग, एक तीर्थ का नाम है जहाँ पितरों और देवताओं का तर्पण करने से मनुष्य पुण्यलोक में प्रतिष्ठित होता है (३. ८४, २९) 'सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च इन्द्रमार्गे च तर्पयन्', (१३. २५, १६) ।

१. त्रिगर्त, एक प्राचीन राजा का नाम है जो यम की सभा में विराजते थे (२. ८, २०) ।

२. त्रिगर्त, त्रिगर्त्तराज क्षेमङ्कर के लिये प्रयुक्त हुआ है (३. २७१, १२) ।

३. त्रिगर्त = सुशर्मा : ४. ३३, १०. ४१; ५. १९५, ९; ६. ८७, १०. ११; १०२, २२; ७. १७, १९ । तुकी० **१. त्रैगर्त** ।

त्रिगर्त (बहु० °र्ताः), एक जाति के लोगों, विशेषतः उन पाँच त्रिगर्त राजकुमारों, के लिये प्रयुक्त हुआ है जो परस्पर भ्राता थे : १. २, २१० (गोग्रहश्च विराटस्य त्रिगर्तैः प्रथमं कृतः); १५६, २ (पाण्डव इनके देश में आये थे); २. २७, १८ (अर्जुन ने दिग्विजय के समय इन्हें पराजित किया था); ३२, ७ (नकुल ने दिग्विजय के समय इन्हें पराजित किया था); ५२, १४ (ये युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये); ३. २७१, २८; ४. २५, ८. २०; ३०, १. ११. २१; ३१, ८; ३२, १.२. १९. २१. २३. २५ (राजा त्रिगर्तानां सुशर्मा युद्धदुर्मदः); ३३, १०, ३१. ३६. ५०; ३५, १; ३८, १७; ४७, ९; ६८, २. १०. ११; ५. २३, २५ (नकुल ने इन्हें पराजित किया था); ३०, २३ (ये दुर्योधन की सेना में सम्मिलित हुये); ५७, १८; १६४, ८. १६६, ९ (त्रिगर्ता भ्रातरः पञ्च रथोदारा); ६. ९, ६१; २०, १५ (त्रिगर्ताश्च शूराः); ५१, ७; ५६, ४ (ये भीष्म के गारुडव्यूह के मस्तक में स्थित हुये); ६१, १२ (इन लोगों ने अर्जुन और अभिमन्यु पर आक्रमण किया); ७२, ७; ८२, १३; ९९, ६; १०२, १८ (अर्जुन ने इनके विरुद्ध वायव्यास्त्र का प्रयोग किया); ११४, ९; ११७, ३४; ११९, ८२; ७. ४, ८ (पूर्वसमय में कर्ण ने इन्हें पराजित किया था); ७. ७, १५; ११, १७ (पूर्वसमय में श्रीकृष्ण ने इन्हें पराजित किया था); १७, १६ (सत्यरथ आदि पाँच त्रिगर्त भ्राताओं ने अर्जुन का वध करने या अपनी जान दे देने की शपथ ली). ४७; १८, ७; १९, १६; २७, ११ (दशैव तु सहस्राणि त्रिगर्तानां महारथाः); ७०, १२ (पूर्व समय में राम जामदग्न्य ने इनका वध किया था); ९४, ७३; १०७, २९ (इनके राजकुमार, निरमित्र, का वध); ११५, १७ (त्रिगर्तानां रथोदाराः). १९; १२३, १२. १३. ३५; १४१, २. ८; १५७, २८ (युधिष्ठिर ने इनका वध किया); १६४, २२; ८. ८, १८; ११, १८; २८, ४८; ६१, ४४; ९. ८, २५; १४, १; २७, ३७; ११. २६, ३६; १४. ७४, १ (राजसूय यज्ञ के घोड़े का अनुसरण करते हुये अर्जुन ने इन्हें पराजित किया) । तुकी० **त्रैगर्त** (बहु०), **त्रैगर्तक** ।

त्रिगर्तराज् = सुशर्मा (६. १०२, १०; ७. १८, २७) ।

त्रिगर्तराज = क्षेमङ्कर (३. २६५, ७) । = सुशर्मा (४. ३३, ४७; ६. ८१, ३. ३६; ८५, ४. ८; १०२, १३; १०८, ५९; ७. १०७, २७; ८. २७, ४) । = सुरथ (३. २७१, १८) ।

१. त्रिगर्तराजन् = सुशर्मा (६. ८५, १०) ।

२. त्रिगर्तराजन् = सूर्यवर्मा (१४, ७४, ९) ।

त्रिगर्ताधिपति = सुशर्मा (४. ३३, ७; ६. १०४, १०; ७. १७, ११; २८, ६. ८; ९. २, १८; २७, १७) ।

त्रिगुण = महापुरुष (महापुरुषस्तव) ।

त्रिचक्षुस् = कृष्ण (१२. ४३, ७) ।

त्रिजट = शिव (१,००० नाम) ।

त्रिजटा, एक राक्षसी का नाम है जिसने लङ्का में रावण द्वारा बन्दी सीता को सान्त्वना दी । श्रीराम ने इसका सत्कार किया किया : ३. २८०, ५४. ७३. ७४; २८१, ३१; २९१, ४१ । तुकी० **राक्षसी** ।

त्रिजटिन् = शिव (१३. १७, ४७) ।

त्रिणयन = शिव (देखिये वस्था०) ।

त्रिणाचिकेत = 'ज्ञेयास्ते''' त्रिणाचिकेतः; (१३. ९०, २६) । = महापुरुष (महापुरुषस्तव) ।

त्रिणेत्र = शिव (१,००० नाम) ।

त्रित, एक ऋषि का नाम है जो एकत और द्वित के भ्राता थे : 'और्वत्रिताभ्यामसि तुल्यतेजा', (१. ५५, १६) । 'उदपान यशस्विनः त्रितस्य', (९. ३६, १) । 'त्रितः''' सुमहातपाः'', (९. ३६, ३) । 'त्रितो ब्राह्मणसत्तमः', (९. ३६, ४) । 'आसन् पूर्वयुगे राजन्मुनयो भ्रातरस्त्रयः ॥ एकतश्च द्वितश्चैव त्रितश्चादित्यसन्निभाः', (९. ३६, ७. ८) । 'त्रितः स श्रेष्ठता', (९. ३६, १३) । "एक दिन की बात है कि त्रित के दोनों भ्राता, एकत और द्वित, यह विचार करने लगे कि त्रित को साथ लेकर यजमानों का यज्ञ सम्पन्न करायें और प्रचुर दक्षिणा प्राप्त करें । तदनुसार यज्ञ कराकर तीनों ने प्रचुर संख्या में पशु प्राप्त किये । लौटते समय त्रित आगे-आगे चल रहे थे और उनके दो अन्य भ्राता पीछे-पीछे पशुओं को हाँकते आ रहे थे । दोनों भ्राताओं ने इस बात पर परामर्श किया कि त्रित को उस पशुधन से किस प्रकार वंचित कर दिया जाय । चलते-चलते जब रात्रि हो गई, तब एक स्थान पर सामने भेड़िये को खड़ा देखकर त्रित भागे परन्तु पास ही एक कूयें में गिर गये । यद्यपि त्रित ने जोर से आर्तनाद किया तथापि उनके भ्राता उन्हें वहीं छोड़कर चले गये । तदनन्तर त्रित ने उस कूयें में ही यज्ञ आरम्भ किया जिससे सम्पूर्ण स्वर्गलोक उद्विग्न हो उठा । बृहस्पति के परामर्श पर सब देवता वहाँ त्रित के पास आये । त्रित ने देवताओं को यज्ञ-भाग प्रदान किया और देवताओं ने भी उन्हें वर देकर कूयें से बाहर निकाल दिया । तदनन्तर त्रित ने घर लौट कर अपने दोनों भ्राताओं को शाप देते हुये कहा : तुम लोग भेड़िये का शरीर धारण करके इधर-उधर विचरण करोगे । तुम्हारी सन्तान के रूप में गोलांगूल, रीछ और वानर आदि पशुओं की उत्पत्ति होगी ।' (९. ३६,१४–५३) ।" ये पश्चिम दिशा के ऋषि थे (१२. २०८, ३१) । 'प्रजापतिसुताश्चात्र सदस्याश्चाभवंस्त्रयः । एकतश्च द्वितश्चैव त्रितश्चैव महर्षयः ॥', (१२. ३३६, ६) । 'एकतद्वितत्रिताश्चोचुस्ततश्चित्रशिखण्डिनः', (१२. ३३६, २०) । 'द्वितत्रितमतेन', (१२. ३३६, ६०) । 'एकतश्च द्वितश्चैव महर्षयः', (१२. ३३९, १२) । 'त्रितोपधाताद्', (१२. ३३९, ८६) । 'त्रितं कूपनिपातितम्''' पृश्निगर्भे त्रितं पाहीत्येकतद्वितपातितम्', (१२. ३४१, ४६) । उन महर्षियों में एक यह भी थे जो भीष्म के दर्शन के लिये उपस्थित हुये (१३. २६, ६) । 'एकतश्च द्वितश्चैव त्रितश्चा-

दित्यसन्निभाः', (१३. १५०, ३६)। 'एकतश्च द्वितश्चैव त्रितश्चैव महानृषिः', (१३. १६५, ४२)।

त्रिदण्डधृक् = शिव (१,००० नाम)।

१. त्रिदश (वहु० °शाः) (देवगण) : १. ६६, २८ (त्रिदशानां च वर्धकिः). २९ (त्रिदशाना चकार); ७४, ८३; ७६, ७२; ७७, १; ७८, ३; ८७, १; १२३, २७; २०७, २५; २२४, १०; २२७, २९; २. १४, ५६; ३. ३९, ४०. ४२, १२; ४६, ३६; ८४, १११; ८५, २०; ८८, २०; १००, ५; १०१, ६. ७. १८; १०२, १७; १०४, १७. १९; १०५, ६. ८. ९. १०. १३. १९; १०७, ६. ८; १०९, १७; १२३, १; १२५, १७; १६१, ११; २०२, २०; २०४, ३४; २२७, ८. १८; २३१, ७२. १०३; २४०, २२; २७२, ७६; २८९, ३१; २९०, ३१; २९१, ३; २९७, ६०; ३०६, २१; ४. २, २३; ६, १५; ६८, ३४; ७०, ६; ५. १०, १४; १८, ९; २८, ८; १०७, १४; १३१, ५; १३३, ४४; १५६, १४; १६०, २५. १०२; १६१, २०; ६. ५७, ३४; ९७, २४; ९८, ४६; १०७, २७. ३९; ११७, २९; ११९, ४१; ७. १, ४७; ३३, १४; ३४, २३; ५९, ७; ७२, ३७; ९४, २९; १३३, २; १६४, २४; १८० २९; २०२, ६२; ९. ४६, ६०; ५६, ४०; ११. २०, १५; १२. ५०, २७; ९७, ११; २२८, ८५. ८७; ३३७, २; ३५५, ३; १३. ६, १४. २१. २६; १४, ८७. ३३४. ३३५; १९, ९१; ६६, २५; १२५, ११. २२. ५८; १२६, ४१; १६०, २२; १४. ५४, ८; ८९, ३०।

२. त्रिदश (एक० °शम्) अर्थात् स्वर्ग : ८. ३७, ३४।

त्रिदशद्विष् (वहु० °षाः) = असुर (वहु०) : ८. ३४, ७४; ९. ५१, २८; १२. २०९, २६; १३. ८५, ८।

त्रिदशपति = इन्द्र (८. ९०, २४)।

त्रिदशपुङ्गव = शिव (१२. २८९, ३०)।

त्रिदशर्षि (वहु०) = देवर्षि (वहु०) : ३. ८७, ८।

त्रिदशावरात्मज (इन्द्र के पुत्र) = अर्जुन (७. २, १६)।

त्रिदशवरावरज (इन्द्र के अनुज) = विष्णु (८. ३०, ९)।

त्रिदशशार्दूल = इन्द्र (१३. १२, ४२)।

त्रिदशश्रेष्ठ = शिव (१३. १२, ४१)।

त्रिदशाधिप = इन्द (देखिये वस्था०)।

त्रिदशाधिपति = इन्द्र (९. ४८, ६)।

त्रिदशाध्यक्ष = विष्णु (१,००० नाम)।

त्रिदशारि (वहु०) असुर = (वहु०) : ८. ३४, ६५।

त्रिदशेन्द्र = इन्द्र (देखिये वस्था०)।

१. त्रिदशेश = ब्रह्मा (३. १४२, ५२)।

२. त्रिदशेश = इन्द्र (१. ७७, २१; ३. ४८, १४; १७३, १७; २८१, १५)।

३. त्रिदशेश = कृष्ण (१२. ४७, ८०)।

१. त्रिदशेश्वर = इन्द्र (१. ३४, १५; ३. १३५, ३९; १६५, ९; १६८, २४; १९३, १६; ३१४, ३; ८. ८७, ६८. ७१; ९. ४३, ४५; ११. २३, २७; १२. २००, ९; २६६, ५०; १३. ८३, ३५; १४. ९२, ३७।

२. त्रिदशेश्वर = शिव (३. १६७, ४३; १३. १४, ३७८. ४०३)।

३. त्रिदशेश्वर = कृष्ण (७. १८२, २८)।

४. त्रिदशेश्वर (वहु० °राः) = इन्द्र आदि (३. ५६, ३१; १३. १५०, १९)।

त्रिदिव (स्वर्ग)—१. १, १६३ (त्रिदिवस्थं धनञ्जयम्); २३, २५; ३४, २०. २६; ३८, १७; ६९, १६; ७४, ११५ (त्रिदिवौकसाम्); १०४, १० (त्रिदिवौकसाम्); २३४, १४; ३. ४०, २७ (त्रिदिवनिवासिनाम्); ४५, ६. १०; ४६, ६३; ५७, ३९; १००, २५; १०३, ४; १०७, ५६. ६४. ७०; १०८, २; १४२, ४९. ५५; १६२, ५; १६६, १५; १६८, २३; १७१, २५; १८१, ४४; १९३, ३७; २१९, २३; २२७, २; २३०, ११; २३१, ४३; २९४, ३३; ३०१, २; ४. ६, १४; ५. ९, ४३. ५०; १०, ४; २८, ८; ५९, २५; १००, १७; १२४, ५७; १३५, २३; १६०, १२५; १६१, ४३; ७. ३४, ३; ८. ३४, ७५. ९५; ४६, ७९; ९. ३१, १४; ३६, ३८. ४८; ४०, ९. १६; ४३, ४५; ४८, ३१. ६०; ५२, ५; ५३, ४. ७. १५; १०. १०, २४; ११. ९, १७; १२. ११, २६; ३३, २७; ३८, ११; ४३, १०; ८१, ४; २००, २०; ३४०, १५. ९१; ३४२, १३५; ३५४, १३; ३६३, ३; १३. १२, ५४; २६, ८६; ५७, २६; ६६, १९; ७६, ९; ९९, ५. ६. ८; १०६, ६७; १३७, १८; १३८, १; १४१, ५३; १५०, ६६; १५५, २५; १४. ९, २८; ३८, १२; १५. १०, ३८. ४०; १७. ३, ३५; १८. ३, ४० (त्रिदिवालयैः)।

त्रिदिवा, भारतवर्ष की एक प्रमुख नदी का नाम है (६. ९, १७. १८; १३. १६५, २८)।

त्रिदिवेश (स्वर्ग के अधिपति)—८. ३४, ७४।

त्रिदिवेश्वर = इन्द्र (देखिये वस्था)। वहु० °**रा**—२. ६८, ८३; ५. ९, ५२; ११, १।

त्रिधातु = कृष्ण (विष्णु) : १२. ३४२, ८७।

त्रिधात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ५३)।

त्रिधामन् = कृष्ण (१२. ४३, १०)।

त्रिपथगा = गङ्गा : २. ४२, ११; ३. १०७, ५६; १०९, १९; ६. ६, ४७; १२. ३७, ८; १३. २६, ७७; १४. ४४, १४।

त्रिपथगामिनी = गङ्गा (१. ९८, ८)।

त्रिपद = विष्णु (१,००० नाम)।

त्रिपाद, एक दैत्य का नाम है जिसका स्कन्द ने वध किया था (९. ४६, ७५)।

त्रिपुर, असुरों की तीन पुरियों का नाम है : 'त्रिपुरस्य निपातनम्', (१. २, २७१)। 'महेश्वरशरोद्धूतं पपात त्रिपुरं यथा', (३. २२, ३५)। 'शङ्करेण त्रिपुरं निहतं यदा', (३. ४१, ३९)। 'पुरेव त्रिपुरं दग्ध्वा दिवि देवो महेश्वरः', (७. १५६, १३५; १७५, ८९)। "पूर्वकाल में परम पराक्रमी तीन असुरों के आकाश में तीन नगर थे जिनमें से कमलाक्ष नामक असुर का नगर सोने का, तारकाक्ष का चाँदी का, तथा विद्युन्माली का लोहे का बना था। सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करके भी इन्द्र इन नगरों का भेदन नहीं कर सके। तब पीड़ित हुये सब देवता शङ्कर की शरण में आये। देवताअ सहित इन्द्र के निवेदन पर शिव ने 'तथास्तु' कहकर उनके हित की इच्छा से गन्धमादन और विन्ध्य पर्वतों को अपने रथ के दो पार्श्ववर्ती ध्वज बनाये। फिर समुद्र और पृथिवी को रथ बनाकर शेषनाग को उसका धुरा बनाया। चन्द्रमा और सूर्य को उस रथ के दो चक्र बनाये; एकपत्र के पुत्र पुष्पदन्त को जूये की कीलें बनाया; मलयाचल को यूप, और तक्षक नाग को जूआ बाँधने की रस्सी बनाया; चारों वेदों को रथ के चार घोड़े बनाया; और उपवेदों को वल्गा बनाकर गायत्री तथा सावित्री को प्रग्रह बनाया। इसी प्रकार ओंकार को चाबुक, ब्रह्मा को सारथि, मन्दराचल को गाण्डीव धनुष, वासुकि नाग को उसकी प्रत्यञ्चा, विष्णु को बाण, अग्नि को बाण का फल, वायु को बाण का पंख, तथा वैवस्वत यम को उसकी पूँछ बनाया। फिर विद्युत को उस बाण की तीक्ष्ण धार बनाकर मेरु पर्वत को प्रधान ध्वज के स्थान पर रक्खा। इस प्रकार दिव्य रथ तैयार करके शिव त्रिपुरवध के लिये उस पर आरूढ़ हुये। उस समय सम्पूर्ण देवता और महर्षि भगवान् शङ्कर की स्तुति करने लगे। अपने दिव्य रथ का निर्माण करके शिव उस पर १,००० वर्षों तक स्थिर भाव से खड़े रहे। जब वे तीनों पुर आकाश में एकत्र हुये तब शिव ने तीन गाँठ और तीन फल वाले बाण से उन तीनों पुरों को विदीर्ण कर डाला। उस समय दानव उन नगरों की ओर और कालाग्नि से संयुक्त एवं विष्णु तथा सोम की शक्ति से सम्पन्न उस बाण की ओर भी आँख उठा कर देख नहीं सके। जिस सयय वे तीनों पुर दग्ध होने लगे उस समय पार्वती भी उन्हें देखने के लिये एक पाँच शिखावाले बालक को गोद में लेकर वहाँ आईं। जब पार्वती ने देवताओं से पूछा कि उनका बालक कौन है, तब क्रोध में आकर इन्द्र ने उस बालक पर वज्र से प्रहार करना चाहा परन्तु उसी समय शङ्कर ने हँस कर वज्र सहित इन्द्र की भुजा को स्तम्भित कर दिया। तब स्तम्भित हुई भुजा के साथ ही देवताओं को

लेकर इन्द्र तत्काल ब्रह्मा के पास गये और पार्वती की गोद के अद्भुत बालक की चर्चा की। ब्रह्मा ने ध्यान करके अमित तेजस्वी बालरूपधारी शङ्कर को पहचान लिया और तत्काल वहाँ आकर शङ्कर की स्तुति की। तब प्रसन्न होकर शङ्कर ने इन्द्र की भुजा को ठीक कर दिया (७. २०२, ६४-१००)।" ८. ३३, २५. २६; ३४, ९६. १०७. १०८. ११०. ११२. ११४; १३. १४, २०७. २६२ (येन तत्त्रिपुरं दग्ध्वा क्षणाद्भस्मीकृतं पुरा। शरेणैकेन गोविन्द महादेवेन लीलया)। तुकी० १३. १६०, २५ और बाद।

त्रिपुरघातिन्, त्रिपुरघ्न, त्रिपुरनाशन, त्रिपुरमर्दन = शिव (देखिये वस्था०)।

त्रिपुरवासिन (वहु० °नाः), से त्रिपुरों में निवास करनेवाले असुरों का तात्पर्य है (७. २०२, ६७)।

त्रिपुरहर्त्त = शिव (देखिये वस्था०)।

त्रिपुरा, एक भारतीय जनपद का नाम है जिसे कर्ण ने विजित किया था (३. २५४, १०)। कोसल नरेश बृहद्बल त्रिपुरा के सैनिकों के साथ थे (६. ८७, ९)।

त्रिपुराख्यान—"दुर्योधन ने कहा : देवताओं और असुरों में परस्पर विजय पाने की इच्छा से सर्वप्रथम तारकामय संग्राम हुआ। उस समय देवताओं ने दैत्यों को परास्त कर दिया। तब तारकासुर के तीन पुत्र, ताराक्ष, कमलाक्ष, तथा विद्युन्माली, उग्र तपस्या करने लगे। इन तीनों ने तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न करके एक साथ ही वर माँगते हुये कहा : 'हम लोग इच्छानुसार चलने वाले नगराकार विमान बना कर उनमें निवास करना चाहते हैं। हमारा वह पुर देवताओं तथा दानवों के लिये अवध्य हो। राक्षस, यक्ष, नाग तथा नाना जाति के अन्य प्राणियों द्वारा भी नष्ट न हो। हम तीनों अपने-अपने पुरों में रहकर ही विचरण करेंगे और एक सहस्रवर्ष व्यतीत होने पर एक दूसरे से मिलेंगे। ये तीनों पुर जब एकत्र होकर एकीभाव को प्राप्त हों तो उसी समय जो एक ही बाण द्वारा तीनों को नष्ट कर सके, वही देवेश्वर हमारी मृत्यु का कारण हो।' ब्रह्मा के तदनुसार वरदान देने पर उन असुरों ने मयासुर को पुरों का निर्माण करने के लिये वरण किया। मयासुर ने तीनों पुरों का निर्माण किया जो क्रमशः सोने, चाँदी, तथा लोहे के थे। सोने का बना पुर स्वर्ग में स्थित हुआ, चाँदी का अन्तरिक्ष में, तथा लोहे वाला भूलोक में। सोने का पुर तारकाक्ष के, चाँदी का कमलाक्ष के, और लोहे का विद्युन्माली के अधिकार में रहा। इन त्रिपुरों में असुर सुखपूर्वक निवास करने लगे। तीनों दैत्यों ने देवताओं, पितरों और ऋषियों आदि को स्थानच्युत कर दिया। जब सम्पूर्ण लोक के प्राणी पीड़ित होने लगे तब देवता सहित इन्द्र इन तीनों पुरों के साथ युद्ध करने लगे परन्तु इनका भेदन नहीं कर सके। तब वे भयभीत होकर ब्रह्मा की शरण में गये। ब्रह्मा ने बताया कि तीनों पुरों को एक ही बाण द्वारा ध्वस्त करने की क्षमता केवल शिव में ही है, अतः उन्होंने देवों को शिव की शरण में-जाने के लिये कहा। तदनन्तर देवताओं ने शिव के पास आकर उन्हें प्रसन्न किया। जो नाना प्रकार की विशेष तपस्याओं द्वारा मन की सम्पूर्ण वृत्तियों के निरोध का उपाय जानते हैं, जिन्हें अपनी ज्ञानस्वरूपता का बोध नित्य बना रहता है, जिनका अन्तःकरण सदा अपने वश में रहता है, जगत में जिनकी कहीं भी तुलना नहीं है, उन निष्पाप, तेजोराशि, महेश्वर भगवान् उमापति का देवताओं ने दर्शन किया। देवताओं की स्तुति सुन कर शङ्कर ने उनके उपस्थित होने का कारण पूछा (८. ३३)।" "जब शिव ने देवताओं, पितरों, तथा ऋषियों के समुदाय को अभयदान दिया तब ब्रह्मा ने उनसे कहा : 'आपके आदेश से मैंने दानवों को एक महान् वर दे दिया है जिसे पाकर वे मर्यादा का उल्लङ्घन कर रहे हैं। आपके अतिरिक्त अन्य कोई उन दानवों का वध नहीं कर सकता। अतः हम आपकी शरण में आये हैं।' तब शिव ने कहा : 'मेरा ऐसा विचार है कि तुम्हारे शत्रुओं का वध किया जाय, परन्तु मैं अकेला ही सबको नहीं मार सकता क्योंकि वे देवद्रोही दैत्य अत्यन्त बलवान् हैं। अतः तुम सब लोग एक साथ संघबद्ध होकर मेरे आधे तेज से पुष्ट हो युद्ध में उन शत्रुओं को पराजित करो।' जब देवताओं ने बताया कि उन सब के पास दानवों की अपेक्षा केवल आधा ही बल है, तब शिव ने कहा : 'मैं तुम लोगों के आधे तेज से परिपुष्ट हो इन दैत्यों का वध करूँगा।' तदनन्तर देवताओं की स्वीकृति मिलते ही उन सबके आधे तेज को लेकर शिव और अधिक तेजस्वी हो गये। इस प्रकार देव-बल के द्वारा सर्वाधिक बलशाली हो जाने के कारण शङ्कर का उसी समय से 'महादेव' नाम विख्यात हो गया। महादेव ने कहा : 'मैं धनुष-बाण धारण करके रथारूढ़ हो शत्रुओं का वध करूँगा, अतः तुम लोग मेरे लिये रथ और धनुष बाण की खोज करो।' तदनन्तर देवसंघों ने विश्वकर्मा से रथ का निर्माण कराया, और विष्णु, चन्द्रमा तथा अग्नि को उनका बाण बनाया। उस बाण के शृङ्ग अग्नि हुये, उसका भल्ल चन्द्रमा बने, और उसके अग्रभाग में विष्णु स्थित हुये। देवताओं ने पृथिवी को रथ बनाया, और मन्दराचल को उसका धुरा। गङ्गा धुरे का आश्रय, और दिशायें तथा विदिशायें रथ का आवरण बनीं। नक्षत्रों का समूह ईषादण्ड हुआ और कृतयुग ने जूए का रूप धारण किया। वासुकि उस रथ का कूबर बन गये। हिमालय पर्वत अपस्कर तथा विन्ध्य पर्वत उसके आधार-काष्ठ बने। उदयाचल तथा अस्ताचल दोनों को देवताओं ने पहियों का आधारभूत काष्ठ बनाया। समुद्र बन्धन-रज्जु और सप्तर्षि रथ के परिस्कर बने। गङ्गा, सरस्वती, तथा सिन्धु, इन तीन नदियों के साथ आकाश त्रिवेणकाष्ठयुक्त धुरे का भाग हुआ। उस रथ के बन्धन आदि की सामग्री जल तथा सम्पूर्ण नदियाँ थीं। दिन, रात, कला, काष्ठा, और छहों ऋतुयें उस रथ का अनुकर्ष बन गईं। उस रथ में सूर्य और चन्द्रमा को दोनों पहिया बनाकर रात्रि और दिन को पूर्वपक्ष और अपरपक्ष के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। धृतराष्ट्र आदि दस नागप्रमुखों ने ईषादण्ड में स्थान ग्रहण किया। द्युलोक को जूए में स्थान मिला। प्रलयकाल के मेघ युगचर्म बने। कालपृष्ठ, नहुष, कर्कोटक, धनञ्जय, तथा अन्य नाग घोड़ों के सर बाँधने की रज्जु बनाये गये। सन्ध्या, धृति, मेधा, स्थिति और संतति सहित आकाश को चर्म बनाया गया। इन्द्र, वरुण, यम तथा कुबेर उस रथ के घोड़े बने। सिनीवाली, अनुमति, कुहू, तथा राका को घोड़ों के जोते का रूप दिया। धर्म, सत्य, तप और अर्थ को वल्गा बनाया गया। रथ की आधारभूमि मन हुआ और सरस्वती देवी रथ के आगे बढ़ने का मार्ग थीं। नाना रंगों की विचित्र पताकायें उस रथ की शोभावृद्धि करने लगीं। वषट्कार घोड़ों का चाबुक हुआ और गायत्री रथ के ऊपरी भाग की बन्धन रज्जु बनीं। महादेव के लिये एक दिव्य कवच तैयार किया गया। मेरुपर्वत रथ के ध्वज का दण्ड बना था। वह रथ क्या था, सम्पूर्ण जगत के तेज का एकीभूत पुञ्ज था। इस प्रकार रथ निर्मित हो जाने पर शङ्कर ने उस पर अपने प्रमुख अस्त्र-शस्त्र रक्खे और ध्वजा पर नन्दी को स्थापित कर दिया। तदनन्तर ब्रह्मदण्ड, कालदण्ड, रुद्रदण्ड, तथा ज्वर—ये चारों रथ के पार्श्वरक्षक बनकर चारों ओर खड़े हो गये। अथर्वा और अङ्गिरा रथ के चक्र की रक्षा करने लगे। ऋग्वेद, सामवेद और समस्त पुराण रथ के आगे-आगे चलने वाले योद्धा हुये। इतिहास और यजुर्वेद पृष्ठरक्षक बने तथा दिव्यवाणी, और विद्यायें पार्श्ववर्ती बन कर खड़ी हो गईं। स्तोत्र-कवच आदि, वषट्कार तथा ओंकार मुख भाग में स्थित होकर शोभावृद्धि करने लगे। छहों ऋतुओं से युक्त संवत्सर को विचित्र धनुष बना कर अपनी छाया को महादेव ने धनुष की प्रत्यञ्चा बनाया। भगवान् रुद्र ही काल हैं, अतः काल का अवयवभूत संवत्सर ही उनका धनुष हुआ। कालरात्रि भी रुद्र का ही अंश है, अतः उसी को उन्होंने अपने धनुष की अटूट प्रत्यञ्चा बना लिया। विष्णु, अग्नि और चन्द्रमा, ये तीनों बाण बने क्योंकि सम्पूर्ण जगत अग्नि तथा सोम का स्वरूप और वैष्णव (विष्णुमय) है। भगवान् शङ्कर के आत्मा विष्णु हैं, अतः वे दैत्य शिव के धनुष की प्रत्यञ्चा एवं बाण का स्पर्श सहन नहीं कर सके। महेश्वर ने उस बाण में अपने असह्य और प्रचण्ड कोप को, तथा भृगु और अङ्गिरा के रोष से उत्पन्न क्रोधाग्नि को भी स्थापित कर दिया। आयुधों से घिरे और उस दिव्य रथ में आरूढ़ शिव अत्यन्त सुशोभित होने लगे। उनके पञ्चभूतस्वरूप अङ्गों का आश्रय लेकर ही यह

अद्भुत दिखाई पड़नेवाला चराचर जगत् स्थित एवं सुशोभित है। रथ को सन्नद्ध देख शङ्कर कवच तथा धनुष से युक्त हो चन्द्रमा, विष्णु और अग्नि से प्रगट हुये दिव्य बाण को लेकर युद्ध के लिये उद्यत हुये। उस समय देवताओं ने वायु को हवा करने के कार्य पर नियुक्त किया। जब महादेव रथ पर आरूढ़ होने लगे तब देवताओं, महर्षियों, गन्धर्वों तथा अप्सराओं ने उनकी स्तुति की। जब महादेव ने देवताओं से पूछा कि सारथि कौन होगा, तब देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर उनसे महादेव के उस दिव्य रथ का सारथि बनने के लिये निवेदन किया। ब्रह्मा ने तदनुसार शिव का सारथि बनना स्वीकार कर लिया। ब्रह्मा ने रथ पर बैठ कर घोड़ों को अपने वश में करने के पश्चात् शिव को भी रथारूढ़ होने के लिये कहा। तब विष्णु, चन्द्रमा, और अग्नि से उत्पन्न दिव्य बाण हाथ में लेकर, महादेव रथ पर आरूढ़ हुये। उस समय देवों आदि ने उनकी स्तुति की। रथ पर आरूढ़ होकर जब महादेव त्रिपुर की ओर प्रस्थित हुये तब नन्दी वृषभ ने भीषण सिंहनाद किया जिसे सुनकर बहुत से तारक नाम वाले दैत्यगण वहीं विनष्ट हो गये। जो दैत्य वहाँ खड़े रह गये वे महादेव से युद्ध के लिये सामने आये। उन्हें देखकर महादेव क्रोध से आतुर हो उठे। फिर तो समस्त प्राणी भयभीत हो उठे। त्रिलोकी और भूमि काँपने लगी। जब वे वहाँ धनुष पर बाण का संधान करने लगे तब उसमें चन्द्रमा, अग्नि, विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र के क्षोभ से अत्यन्त भयंकर निमित्त प्रगट हुये। नारायण ने उस बाण के एक भाग से निकल कर वृषभ का रूप धारण करके शिव के विशाल रथ को ऊपर उठाया। जब रथ शिथिल होने लगा और शत्रु गर्जना करने लगे तब शिव ने भी सिंहनाद किया। उस समय महादेव वृषभ के मस्तक और घोड़ों की पीठ पर खड़े थे। इस प्रकार रुद्र ने दानवों के नगरों को देखा। तब उन्होंने वृषभ के खुरों को चीरकर उन्हें दो भागों में विभक्त कर दिया तथा घोड़ों के स्तन भी काट डाले। तभी से बैलों के दो खुर हो गये और घोड़ों के स्तन नहीं उगते। तदनन्तर भगवान् रुद्र ने धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ा कर उस पर पूर्वोक्त बाण रक्खा और उसे पाशुपतास्त्र से संयुक्त करके तीनों पुरों के एकत्र होने का चिन्तन किया। जब काल की प्रेरणा से तीनों पुर एकत्र हुये तब देवता महेश्वर की स्तुति करने लगे। फिर तो सम्पूर्ण जगत् के स्वामी, भगवान रुद्र ने अपने उस दिव्य धनुष को खींच कर उस पर चढ़े त्रिलोकी के सारभूत बाण को त्रिपुर पर छोड़ दिया। उस श्रेष्ठ बाण के छूटते ही भूतल पर गिरते हुये उन तीनों पुरों का महान आर्तनाद प्रकट हुआ। भगवान ने उन असुरों को भस्म करके पश्चिमी समुद्र में डाल दिया। इस प्रकार तीनों लोकों का हित चाहनेवाले शिव ने तीनों पुरों तथा उनमें निवास करने वाले दानवों को दग्ध कर दिया। उनके क्रोध से जो अग्नि प्रगट हुई थीउसे भगवान त्रिलोचन ने 'हा-हा' कहकर रोक दिया और उससे कहा : 'तू सम्पूर्ण जगत को भस्म न कर।' तब समस्त देवताओं, महर्षियों तथा तीनों लोकों के प्राणियों ने शिव का स्तवन किया। तत्पश्चात् सब लोग यथास्थान चले गये (८. ३४, १–११८)।"

त्रिपुरान्तक, त्रिपुरान्तकर, त्रिपुरार्दन = शिव (देखिये वस्था०)।

त्रिभुवनविभु = शिव (८. ३७, ३५)।

त्रिभुवनश्रेष्ठ = विष्णु (५. १०, ४३)।

१. त्रिभुवनेश्वर = ब्रह्मा (१२. ५९, २५)।

२. त्रिभुवनेश्वर = इन्द्र (३. २६०, ७; ९. ४८, १०. २९; १३. ८३, ७)।

३. त्रिभुवनेश्वर = विष्णु (कृष्ण) : २. ६८, ४४; ५. १०७, १४; ; ३. १४७, ६।

४. त्रिभुवनेश्वर (द्वि० °रौ) = अरुण और गरुड (१. ३१, २६)। बहु० °राः = देवगण (१२. २०८, १४ 'देवांस्त्रिभुवनेश्वरान्')। १३. १५०, १३ (रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः)।

त्रिभुवनेश्वरी = दुर्गा (उमा) : ४. ६, १।

१. त्रियुग = कृष्ण : ३. ८६, ५ (द्वि० = कृष्ण और अर्जुन); ५. ६९, ३. ४; १२. ४३, ६।

२. त्रियुग = शिव (१,००० नाम)।

त्रिराव, गरुड की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, ११)।

त्रिर्व्यूह = विष्णु (१२. ३४८, ५७)।

त्रिलोककृत् = ब्रह्मा (१२. १९०, १०; २८२, ४८।

त्रिलोकगा = गङ्गा (१. ९६, १९; १८. ३, ३९)।

त्रिलोकधृक् = विष्णु (१,००० नाम)।

त्रिलोकपथगा = गङ्गा (१२. २९, ६९)।

त्रिलोकराज = इन्द्र (५. ९७, १२)।

त्रिलोकात्मन् = विष्णु (१,००० नाम)।

१. त्रिलोकेश = ब्रह्मा (८. ३४, ७४; १२. २८२, ४०)।

२. त्रिलोकेश = शिव (१४. ८, २८)।

३. त्रिलोकेश = इन्द्र (५. १०४, १९; १२. २२८, १६; २६६, ४७)।

४. त्रिलोकेश = विष्णु (३. ८४, १२५; १३. १४९, ८२ : १,००० नाम)।

१. त्रिलोकेश्वर = विष्णु (१३. ११, ४)।

२. त्रिलोकेश्वर = इन्द्र (१२. ४९, ४)।

त्रिलोचन = शिव (देखिये वस्था०)।

त्रिवर्गमुख्य = धर्म (३. ११९, २१)।

त्रिवर्चक (त्रिवर्चस.), अङ्गिरा के पुत्र, एक ऋषि का नाम है जिन्होंने चार अन्य ऋषियों के साथ तपस्या करके पाञ्चजन्य नामक अग्निस्वरूप पुत्र को जन्म दिया था (३. २२०, १–५)।

त्रिवर्त्मन् = विष्णु (३. १८९, ३४)।

१. त्रिविक्रम = विष्णु (कृष्ण) : १३. १०९, ९; १४७, १०; १४८, २३; १४९, ६९ (विष्णु सहस्रनाम); १६७, ३७।

२. त्रिविक्रम = शिव (१,००० नाम)।

त्रिविक्रमगति = विष्णु (कृष्ण) : ६. ६६, १७।

१. त्रिविष्टप = इन्द्रलोक : १. ३१, ३३; २०७, ३६; २१०, ६; २. ३३, ५३; ६०, ४; ३. ९, ७; २४, २१; ८३, ४. २०५; १००, १८; १०९, ५; १३१, ३३; १३८, २७; ५. ११, ५. ६. ९. १०; १७, १९; ४२, २८; १०२, १५; ६. ८१, १९; ९. ५, ३७. ३८; ४६, १०२; ५३, २१; १२. ६८, ६०; १०५, १९; २२७, ११९; २९८, १४; ३२१, ७९; ३५४, ९; १३. ८६, ३५; ९३, ४४; १४. ३३, ४; १८. १, १. ३. ४।

२. त्रिविष्टप, कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम हैं, जहाँ पापनाशिनी वैतरणी में स्नान करके शिव की पूजा करने से मनुष्य परम गति को प्राप्त होता है (३. ८३, ८४. ८५)।

३. त्रिविष्टप = सूर्य (३. ३, २६)।

४. त्रिविष्टप = शिव (१,००० नाम)।

१. त्रिशङ्कु, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. ७१, ३४)। "ये इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न अयोध्या के राजा थे। इनका विश्वामित्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। इनकी पत्नी का नाम सत्यवती तथा पुत्र का नाम हरिश्चन्द्र था (२. १२. १० के बाद गीप्रे० सं० में दाक्षिणात्य पाठ)। 'त्रिशङ्कुर्बन्धुभिर्मुक्त ऐक्ष्वाकः प्रीतिपूर्वकम्। आवाक्शिरा दिवं नीतो दक्षिणामाश्रितो दिशम्'' (१३. ३, ९)। तुकी० **१. मतङ्ग।**

२. त्रिशङ्कु = शिव (१,००० नाम)।

त्रिशिरस = विश्वरूप, जो त्वष्टा के पुत्र थे : ५. ९, ३. ८. १०. १५. २१. २३. ३८. ४२; ९. ३१, १३ (इनका वध)।

त्रिशीर्ष = शिव (१,००० नाम)।

त्रिशुक्ल = शिव (१,००० नाम)।

त्रिशूलखात, एक तीर्थ का नाम है जहाँ स्नान करने से मनुष्य देहत्याग के पश्चात् गणपतिपद प्राप्त करता है। (३. ८४, ११–१२)।

त्रिशूलपाणि = शिव (७. २०२, ४२)।

त्रिशूलपाणेः स्थानम्, एक तीर्थ का नाम है (

त्रिशूलवरपाणि = शिव (१,००० नाम)।

त्रिशूलहस्त = शिव (१४. ८, २७)।

त्रिशृङ्ग, एक पर्वत का नाम है (८. १५, ८; ९. १०, १६)।

त्रिपत्रण, एक महर्षि का नाम है जिन्होंने, दूत के रूप में हस्तिनापुर जाते हुए श्रीकृष्ण की परिक्रमा की थी (५. ८३, ६४ के बाद गीताप्रे० सं० में दाक्षिणात्यपाठ)।

त्रिसुवर्चक, एक अग्नि का नाम है (३. २२०, १)।

त्रिसामन् = विष्णु (१,००० नाम)।

त्रिसुपर्ण (वि)—'पञ्चाग्निस्त्रिसुपर्णः षडंगवित् ; (१३. ९०, २६)।

त्रिसौपर्ण (वि०) :— 'सुपर्णे नाम तमृषिः प्राप्तवान्पुरुषोत्तमात्। तपसा वै सुतप्तेन दमेन नियमेन च ॥ त्रिःपरिक्रान्तवानेतत्सुपर्णो धर्ममुत्तमम्। यस्मात्त स्मादव्रतंह्येतित्त्रिसौपर्णमिहोच्यते ॥', (१२. ३४८, २०. २१)।

त्रिसौवर्ण (म्) = शिव (१,००० नाम)।

त्रिस्थान, एक माहेश्वर तीर्थ का नाम है (१३. २५, १५)।

त्रिस्रोतसी, वरुण की सभा में उपस्थित होने वाली एक नदी का नाम है (२. ९, २३)।

त्रुटि, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, १७)।

१. **त्रेता**, सत्ययुग के बाद आनेवाले द्वितीय युग का नाम है : १. २, ३; ३. ८५, ९० (सर्वं कृतयुगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम); १२१, २० (सन्धिरेष नरश्रेष्ठ त्रेताया द्वापरस्य च); १२५, १४ (सन्धिर्द्वयोर्नरश्रेष्ठ त्रेताया द्वापरस्य च); १४९, ७. २३. २५; १९०, १०; १९१, १४; ५. १३२, १७; १४२, ७. ९. ११. १३. १५; ६. १०, ३. ६. ११; १२. ६९, ८७. ९८. ९९; ९१, ६; १४१, १०. १३ (त्रेताद्वापरयोः सन्धौ तदा दैवविधिक्रमात्। अनावृष्टिरभूद्घोरा लोके द्वादश वार्षिकी). १४; २०७, ४५; २३१, २७ (अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरेऽपरं). २८ (तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुत्तमम); २३२, ३४. ३५; २३८, ७. १४; २६०, ८; ३३९, ८५ (सन्ध्यांशे समनुप्राप्ते त्रेतायाम्); १३. १५८, १० (त्रेताकाले ज्ञानमनुप्रपन्नः)। तुकी० **त्रेतायुग**।

२. **त्रेता** = सूर्य (३. ३, २०)।

त्रेतायुग = द्वितीय युग (= त्रेता) : ३. १४९, २६; १८८, २३; १८९, ३ (नारायण का वर्ण पीला होता है); ६. १०, ४; १२. २०७, ३९ (ततस्त्रेतायुगे काले संस्पर्शाज्जायते प्रजा); २३१, १९. २५; २३२, ३२; २६७, ३३ (पादोनेनापि धर्मेण गच्छेत्त्रेतायुगे); ३३६, ५६; ३३९,८४ (त्रेतायुगे भविष्यामि रामो भृगुकुलोद्वहः); ३४०, ८३ (ततस्त्रेतायुगं नामत्रयी यत्र भविष्यति); ३४८, ३८; १४. ४, १७ (कारन्धमः पुत्रस्त्रेतायुगमुखेऽभवत्)। तुकी० **त्रेता**।

१. **त्रैगर्त** (त्रिगर्तों का राजा) = सुशर्मा : ४. ३३, ४. ४३; ६. ८७, १०. ११; १०४, ८; ११३, ५२ (प्रस्थलाधिपः); ९. २, ३८ (इसका वध)।

२. **त्रैगर्त** (वि०)—'अभज्यत बलं सर्वं त्रैगर्तं तद्भयातुरम्', (४. ३३,५०)।

३. **त्रैगर्त** (बहु० °र्ताः) एक जाति के लोगों = त्रिगर्त (बहु०) का नाम है : ६. १८, १३; ७१, १४; ७. १८, ६. २५; १०७, १८।

त्रैगर्तक (वि०) : ७. १८, ५; १४. ७४, २७. ३१।

त्रैगर्ति (त्रिगर्तराज की पुत्री) = यशोधरा (१. ९५, ३५))

१. **त्रैपुर**, त्रिपुरा के राजा के लिये प्रयुक्त हुआ है। सहदेव ने इन्हें पराजित किया था (२. ३१, ६०)।

२. **त्रैपुर** (बहु० राः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ८७,९)।

त्रैबलि, एक ऋषि का नाम है जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित रहते थे (२. ४, १३)।

त्रैयम्बक (वि०) : ७. ७, १; ७९, ४ (त्रैयम्बकं बलिम्)।

१. **त्रैलोक्यकर्तृ** = ब्रह्मा (१२. २८२, २५)।

२. **त्रैलोक्यकर्तृ** = शिव (५. १८९, ५)।

त्रैलोक्यगोप्तृ = शिव (१,००० नाम)।

त्रैलोक्यनाथ = कृष्ण (३. ४९, २०)।

त्रैलोक्यपति = इन्द्र (१२. २२२, ३७)।

त्रैलोक्यराज—इन्द्र (५. १०५, ९)।

त्रैलोक्येश = इन्द्र (३. २०४, ३३)।

१. **त्रैविद्य** (तीन वेद) : ३. २०७, ७९ (त्रैविद्य वृद्धाः); १२. १८, ११ (त्रैविद्यवृद्धानाम्); २२६, १४ (त्रैविद्यवृद्धांश्च); २७०, १५ (त्रैविद्यवृद्धाः); १३. १०४, १५४ (त्रैविद्यवृद्धेभ्यः)

२. **त्रैविद्य** (वि०) : ६. ३३, २०; १२. ६५, ८; ६६, १८; १६१, ९; १३. १४१, ६६।

त्रैशीर्ष (वि०)—'त्रैशीर्षयाऽभिभूतश्च स पूर्वं ब्रह्महत्यया', (५. १०, ४४)।

१. **त्र्यक्ष** = शिव (देखिये वस्था० भी) : १०. ७, ८; १२. २८१, २५; २८४, ७०. ७५ (सहस्रनाम); १३. १७, १३९ (सहस्रनाम); १४२, ३७; १४३, १।

२. **त्र्यक्ष**, एक जनपद के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये परन्तु द्वार पर ही रोक दिये जाने के कारण रुके रहे (२. ५१, १७)। देखिये १. १९७, ४० भी।

त्र्यक्षन् = शिव (१४. ८, १४)।

१. **त्र्यम्बक** = शिव (देखिये वस्था०)।

२. **त्र्यम्बक** = एक रुद्र (१२. २०८, १९; १३. १५०, १२)।

३. **त्र्यम्बक** = कृष्ण (१२. ४७, ८०)।

त्र्यम्बिकाम्बिकनाथ = शिव (१, ००० नाम)।

त्वष्टाधर, शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम है (१. ६५, ३७)।

१. **त्वष्टृ**, अदिति देवताओं में से ग्यारहवें का नाम है (१. ६५, १६)। इनको दसवाँ आदित्य भी कहा गया है (१. १२३, ६७)। इन्होंने कृष्ण और अर्जुन से युद्ध किया (१. २२७, ३४)। इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, १४)। इन्होंने इन्द्र के वज्र का निर्माण किया (३. १००, २३. २५)। अर्जुन ने इनका अस्त्र, त्वाष्ट्र, प्राप्त किया (३. १६४, १९)। 'त्वष्टुर्देवस्य तनयो बलवान् विश्वकर्मणः', (३. २८३, ४१)। सुदेष्णा ने द्रौपदी से पूछा कि कहीं वह त्वष्टा की पत्नी तो नहीं हैं (४. ९, १६)। 'त्वष्टा प्रजापतिः', (५. ९, ३. ४४)। 'त्वष्टोवाच', (५. ९, ४५)। इन्द्र ने जब त्रिशिरा का वध कर दिया तब इन्होंने वृत्र का सृजन किया (५. ९, ५७. ५८)। इन्होंने अर्जुन की ध्वजा को अलंकृत किया (५. ५६, ७,)। अर्जुन त्वष्ट्रास्त्र के भी ज्ञाता थे (६. १२१, ४१)। 'त्वष्टुः सुदुर्धरं तेजो येन वृत्रो विनिर्मितः ॥ त्वष्ट्रापुरा तपस्तप्त्वा वर्षायुतशतं तदा।', (७. ९४, ५३. ५४)। 'त्वष्टेवाद्भुतकर्मकृत', (७. ९९, ६२)। 'संदधे त्वाष्ट्रमस्त्रं स स्वयं त्वष्टेव मारुतिः', (७. १०८, ३९)। इन्होंने अर्जुन के रथ का निर्माण किया था (८. ६८, २५)। इन्होंने ही ईशान (शिव) के लिये एक अस्त्र का निर्माण किया था जिससे युधिष्ठिर ने शल्य पर प्रहार किया (९. १७, ४५. ४६)। इन्होंने स्कन्द को दो पार्षद, चक्र और अनुचक्र, प्रदान किये (९. ४५, ४०)। 'त्वष्ट्रेव विहितं यंत्रम्', (१२. ३३, २२)। ये नवें आदित्य थे (१२. २०८, १६)। 'त्वष्टुश्चैवात्मजः श्रीमान् विश्वरूपो महायशाः', (१२. २०८, १८)। 'नहुषः पूर्वमालेभे त्वष्टुर्गामिति नः श्रुतम्', (१२. २६८, ६)। शिव को इनके साथ समीकृत किया गया है (१३. १४, ४०८)। ये नवें आदित्य थे (१३. १५०, १५)। 'त्वष्टाधिराजो रूपाणाम्', (१४. ४३, ९)। तुकी० **प्रजापति, विश्वकर्मा**।

२. **त्वष्टृ** = सूर्य (३. ३, १६)।

३. **त्वष्टृ** = शिव (१,००० नाम)।

४. **त्वष्टृ** = विष्णु (१,००० नाम)।

त्वष्टृपुत्र = विश्वरूप (५. ९, ९)।

१. **त्वाष्ट्र** = विश्वरूप (५. १६, २०; १२. ३४२, २८. २९. ३३. ४१)।

२. **त्वाष्ट्र** = वृत्र (५. १६, २८)।

३. **त्वाष्ट्र** (वि०) : ७. १९, ११; १०८, ३९; १५७, ३४; १८८, ३१; २०१, ७३।

त्वाष्ट्री (त्वष्टा की पुत्री)—'त्वाष्ट्री तु सवितुर्भार्या वडवारूपधारिणी। असूयत महाभागा सान्तरिक्षेऽश्विनावुभौ', (१. ६६, ३५)।

द

दंश, अलर्क नामक कीड़े की योनि में पड़े हुये एक राक्षस का नाम है जो परशुराम की दृष्टि पड़ते ही कीट-योनि से मुक्त हो गया (१२. ३, १९)।

दंष्ट्रिन = शिव : १२. २८४, ९७ (१,००० नाम); १४. ८, २६ ।

१. दक्ष (प्राचेतस), एक प्रजापति का नाम है (१. १, ३३)। अदिति इत्यादि इनकी तेरह कन्याओं का कश्यप के साथ विवाह हुआ (१. ६५, ११)। "ये ब्रह्मा के दाहिने अँगूठे से और इनकी पत्नी ब्रह्मा के बायें अँगूठे से उत्पन्न हुईं। इन्होंने अपनी पत्नी से पचास पुत्रियाँ उत्पन्न कीं जिन्हें इन्होंने पुत्रिकायें बना लिया। इन पुत्रियों में से दस का धर्म से, सत्ताइस का इन्दु (चन्द्रमा) से, और तेरह का कश्यप से विवाह हुआ (१. ६६, १०-१३)।" 'प्रजापतेस्तु दक्षस्य मनोर्वैवस्वतस्य च', (१. ७५, १)। "प्रचेता के दस पुत्र थे जिनमें से मारिषा के गर्भ से प्राचेतस दक्ष का जन्म हुआ। इन्हीं दक्ष से ये समस्त प्रजायें उत्पन्न हुईं। प्राचेतस दक्ष ने वीरिणी से अपने समान गुणवाले १,००० पुत्र उत्पन्न किये जो सब के सब कठोर व्रत का पालन करनेवाले हुये। इन एक सहस्र दक्ष पुत्रों को नारद ने मोक्षशास्त्र का अध्ययन कराया और परम उत्तम सांख्य-ज्ञान का उपदेश किया। जब ये सब पुत्र विरक्त होकर घर से निकल गये तब दक्ष ने पचास कन्यायें उत्पन्न कीं। इन कन्याओं को दक्ष ने पुत्रिकायें बनाया और इनमें से दस धर्म को, तेरह कश्यप को, तथा सत्ताइस चन्द्रमा को ब्याह दीं (१. ७५, ५-९)।" १. ९५, ७ (ये अदिति के पिता थे); ९९, ८ (दक्षस्य दुहिता···सुरभी); १२३, ५२ (ये अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित हुये); २. ११, १८ (ब्रह्मा की सभा में); ३. १३०, २ (इन्होंने सरस्वती के तट पर यज्ञ किया और उस स्थान के लिये यह वर दिया कि वहाँ मरनेवाला स्वर्ग प्राप्त करेगा); १६३, १४ (ये ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में सातवें हैं); २२४, ३९ (स्वाहा इनकी पुत्री थी); २३१, ३ (दक्षस्याहं प्रिया कन्या स्वाहा); ५. १०५, १०; ६. ६८, ६ (श्रीकृष्ण को इनके साथ समीकृत किया गया है); ७. २०२, ५२ (शिव ने इनके यज्ञ का विध्वंस किया); ९. ३५, ४५ (इन्होंने अपनी सत्ताइस पुत्रियों का चन्द्रमा से विवाह किया). ५२. ५३. ५७. ५८. ६८. ८०; ३८, २८ (इन्होंने गङ्गाद्वार में यज्ञ किया); ४५, १०; १०. १७, १६; १२. २३, १६. ४५; ४७, १० (उन महर्षियों में एक यह भी थे जो बाणशय्या पर पड़े भीष्म को घेर कर खड़े हुये); १६६, १७-१८ (इन्होंने साठ कन्यायें उत्पन्न कीं जिन्हें ब्रह्मर्षियों ने पत्नियों के रूप में प्राप्त किया। इन्हीं कन्याओं से सम्पूर्ण प्रजा—मनुष्य, राक्षस, पशु-पक्षी, आदि—उत्पन्न हुये); २०७, १७ (ये ब्रह्मा के सातवें मानसपुत्र थे). १९ (ये ब्रह्मा के अँगूठे से उत्पन्न हुये). २२ (इनकी सन्तानों का वर्णन); २०८, ७ (इनका एक नाम 'क' भी है); २२७, ५० (पृथिवी के प्राचीन शासकों के अन्तर्गत इनका उल्लेख); २८३, २४; २८४, १. २. ३. ४. २०. २२. ३०. ३१. ३६. ५०. ५६. ५८. ६६. ७१ (इन्होंने शिव की स्तुति की). ७२. १८६. १८७. १९०. १९५. १९६. १९७; ३२८, ५१ (यं समासाद्य वेगेन दिशोऽन्तं प्रतिपेदिरे। दक्षस्य दशपुत्राणां सहस्राणि प्रजापतेः); ३३४, ३५ (इक्कीस प्रजापतियों के अन्तर्गत इनकी गणना); ३४२, २५. १०८. १०९. ११०; ३४८, ४९. ५०; १३. १४, ३९७ (शिवलोक में); ७७, ११; ८३, २८ (दक्षस्य दुहिता देवी सुरभी); १४७, २५ (प्राचेतसस्तथादक्षो भवितेह प्रजापतिः); १६०, ११ (शिव ने इनके यज्ञ का विध्वंस किया); १४. ५, ३ (असुराश्चैव देवाश्च दक्षस्यासन्प्रजापतेः); ८८, ३१ (शुशुभे चयनं तच्च दक्षस्येव प्रजापतेः)। तुकी० प्रजापति, प्रचेतस ।

२. दक्ष, गरुड की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, १२)।

३. दक्ष = शिव (१,००० नाम)।

४. दक्ष, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३५)।

५. दक्ष = विष्णु (१,००० नाम)।

६. दक्ष, एक राजा, सम्भवतः १. दक्ष, का ही नाम है (१३. १६५, ५३)।

दक्षकन्या = कद्रू (१. ६५, १३)।

दक्षक्रतुहर (दक्षयज्ञ के विध्वंसक) : १०. ७, ३; १२. ३४१, २१; १३. १४३, १ ।

दक्षदुहितृ = स्वाहा (३. २२४, ३९)।

दक्षप्रोक्त-शिवसहस्रनामस्तोत्र—दक्ष ने १००८ नामों से शिव का स्तवन करते हुये शिव की अन्य प्रकार से भी स्तुति की। प्रसन्न होकर शिव ने दक्ष को वरदान दिया और वहीं अन्तर्धान हो गये (१२. २८४, ६९-१८०)। दक्षप्रोक्त-शिव-सहस्रनाम के श्रवण का फल (१२. २८४, १९७)।

दक्षयज्ञनिबर्हण = शिव (७. २०२, ३८)।

दक्षयज्ञविनाश = शिव (३. ३९, ७७)।

दक्षयज्ञविनाशः—"वैशम्पायन ने कहा : प्राचीन काल में दक्ष ने हिमालय के पार्श्ववर्ती गङ्गाद्वार में एक यज्ञ का आयोजन किया। यह स्थान ऋषियों और सिद्धों का निवास और देवताओं, दानवों, गन्धर्वों, पिशाचों, नागों, राक्षसों, आदि से सेवित था। दक्ष के यज्ञ में सभी देवता तथा चतुर्विध प्राणि समुदाय उपस्थित हुये। उस समय महर्षि दधीचि ने देखा कि देवता-दानव आदि तो यज्ञ में उपस्थित हैं परन्तु उनमें शिव नहीं हैं। तब दधीचि ने क्रोधपूर्वक कहा : जिस यज्ञ में भगवान् रुद्र (शिव) का पूजन नहीं होता वह न यज्ञ है और न धर्म। यह यज्ञ भी शिव के बिना यज्ञ कहे जाने के योग्य नहीं है। इसका आयोजन करनेवाले वध तथा बन्धन की दुर्दशा में पड़नेवाले हैं। इस महायज्ञ में अत्यन्त घोर विनाश उपस्थित होने वाला है, किन्तु मोहवश कोई समझ नहीं रहा है।' इस प्रकार उद्गार प्रगट करने के पश्चात् ध्यान लगा कर जब दधीचि ने देखा तो उन्हें भगवान् शङ्कर और पार्वती का दर्शन हुआ। महर्षि नारद भी शिव के पास ही विराजमान थे। तब महर्षि दधीचि को निश्चय हो गया कि सब देवताओं ने एकमत होकर ही शिव को आमन्त्रित नहीं किया है। ऐसा ध्यान आते ही दधीचि यज्ञ से पृथक् हो गये। तब दक्ष ने कहा : 'हाथों में शूल और मस्तक पर जटा-जूट धारण करनेवाले बहुत से रुद्र हमारे यहाँ रहते हैं। वे ग्यारह हैं और ग्यारह स्थानों में निवास करते हैं। उनके अतिरिक्त दूसरे किसी महेश्वर को मैं नहीं जानता।' दक्ष का वचन सुनकर दधीचि ने पुनः यज्ञ के विध्वंस हो जाने की चेतावनी दी। तब दक्ष ने कहा : 'समस्त हवि यज्ञेश्वर विष्णु को समर्पित है। विष्णु की कहीं समता नहीं है। मैं उन्हीं को हविष्य का यह भाग समर्पित करूँगा क्योंकि विष्णु ही सर्वसमर्थ, व्यापक और यज्ञभाग अर्पित करने योग्य हैं।' इधर कैलास पर्वत पर देवी उमा अपने पति के यज्ञ में उपेक्षित कर दिये जाने पर अत्यन्त चिन्तित हो उठीं। तब शिव ने उमा को सान्त्वना देते हुये ये कहा : 'तू मुझे नहीं जानती, मैं सम्पूर्ण यज्ञों का ईश्वर हूँ।······यज्ञ में प्रस्तोता लोग मेरी स्तुति करते हैं। सामगान करनेवाले ब्राह्मण रथन्तर साम के रूप में मेरी ही महिमा का गायन करते हैं। वेदवेत्ता विप्र मेरा ही यजन और ऋत्विज यज्ञ में मुझे ही भाग अर्पित करते हैं।' तदनन्तर अपना प्रभाव दिखाने के लिये शिव ने दक्ष-यज्ञ को विनष्ट करने के उद्देश्य से अपने मुख से एक भयंकर और अद्भुत प्राणी को प्रगट किया—वर्णन। शिव ने उस प्राणी को दक्षयज्ञ का विध्वंस करने की आज्ञा दी। उस समय भवानी के क्रोध से प्रगट हुई अत्यन्त भयंकर रूपवाली महाकाली महेश्वरी ने भी अपना पराक्रम दिखाने के लिये सेवकों सहित उस वीर के साथ प्रस्थान किया। शिव के मुख से प्रगट हुआ वह भयंकर और वीर प्राणी शिव के क्रोध का ही मूर्तिमान स्वरूप था। उस वीर के बल, वीर्य, शक्ति, और पुरुषार्थ की कोई सीमा नहीं थी। वह पुरुष वीरभद्र के नाम से विख्यात हुआ।

वीरभद्र ने अपने रोमकूपों से रौम्य नामक गणेश्वरों को प्रगट किया जो रुद्र के समान होने के कारण रौद्रगण कहलाये। ये भयंकर रुद्रगण सहस्रों की संख्या में दक्ष-यज्ञ का विध्वंस करने लगे—वर्णन। उस समय सूर्य का प्रकाश फीका पड़ गया। ग्रह-नक्षत्र, और चन्द्रमा भी निस्तेज हो गये। वीरभद्र ने यज्ञ का सर काट कर अत्यन्त भीषण सिंहनाद किया। तब ब्रह्मा आदि देवता तथा प्रजापति दक्ष ने करबद्ध होकर वीरभद्र से पूछा कि वह कौन हैं। वीरभद्र ने कहा : 'मैं न तो रुद्र हूँ और न देवी ! तुम्हारा यह यज्ञ देवी पार्वती के रोष का कारण बन गया है, ऐसा जानकर भगवान् शिव कुपित हो उठे हैं।···मेरा नाम वीरभद्र है। रुद्रदेव के क्रोध से मेरा प्राकट्य हुआ है। यह नारी भद्रकाली है जो पार्वती के कोप से प्रगट हुई है। महादेव ने ही हम लोगों को यहाँ यज्ञ का विध्वंस करने के लिये भेजा है। अब तुम लोग भगवान शिव की शरण में जाओ क्योंकि अन्य किसी से प्राप्त वरदान मङ्गलकारक नहीं होता।' वीरभद्र की बात सुनकर दक्ष ने शिव के उद्देश्य से प्रणाम करके इस स्तोत्र से उनकी स्तुति की : 'प्रपद्ये देवमीशानं शाश्वतं ध्रुवमव्ययम्। महादेवं महात्मानं विश्वस्य जगतः पतिम्॥' दक्ष की स्तुति सुनकर महादेव सहसा अग्निकुण्ड से निकल पड़े। और दक्ष को वरदान देने की इच्छा प्रगट की। तब भयभीत दक्ष ने यह वरदान माँगा : 'मैंने दीर्घकाल से महान प्रयत्न करके जो ऐसा यज्ञ-सम्भार एकत्र कर रक्खा था उसमें से जो भस्म या नष्ट कर दिया गया है वह सब मेरे लिये व्यर्थ न हो।' शिव ने दक्ष को तदनुसार वर दिया। तदनन्तर वर पाने के पश्चात् दक्ष ने पृथिवी पर घुटने टेककर शिव को प्रणाम किया और एक हजार आठ नामों द्वारा उन भगवान वृषभध्वज शिव का स्तवन किया (१२. २८४, १-७१)।" देखिये **दक्षप्रोक्त-शिव-सहस्रनामस्तोत्र**।

दक्षयज्ञविनाशन = शिव (७. ९४, ५६; २०२, १०१)।

दक्षयागापहारिन् = शिव (१,००० नाम)।

१. दक्षिण = शिव (१,००० नाम)।

२. दक्षिण = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दक्षिणापथ, दक्षिणी भारत के लिये प्रयुक्त हुआ है : २. ३१, १७; ३. ६१, २१. २३; ५. १९, २४; १२. २०७, ४२।

२. दक्षिणापथ (बहु० °थाः), दक्षिणापथ के निवासियों के लिये प्रयुक्त हुआ है, जो दुर्योधन की सेना में सम्मिलित हुये (६. १५, १७)। देखिये बहु० **दाक्षिणात्य**।

दक्षिणायनमृत्यु, सूर्य के दक्षिणायन होने पर मृत्यु के लिये प्रयुक्त हुआ है (२. ८, ३१)।

दग्धरथ = चित्ररथ (१. १७०, ४०)।

१. दण्ड, मगधराज दण्डधार के भ्राता का नाम है (१. २, २७३)। यह क्रोधहन्ता नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ४५)। यह अपने पिता, विदण्ड, के साथ द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ था (१. १८६, १२)। दिग्विजय के समय भीमसेन ने इसे परास्त किया था (२. ३०, १७)। इसका तथा इसके भ्राता, दण्डधार, का अर्जुन ने वध किया (८. १८, १६-१९)।

२. दण्ड, सूर्य के एक अनुचर का नाम है (३. ३, ६८)।

३. दण्ड, एक पाण्डवपक्षीय योद्धा का नाम है जिसका कर्ण ने वध किया (८. ५६, ४९)।

४. दण्ड = शिव (१,००० नाम)।

५. दण्ड = विष्णु (१,००० नाम)।

६. दण्ड, यमराज के दिव्यास्त्र का नाम है जिसका वेग कहीं भी कुण्ठित नहीं होता। इसे यमराज ने अर्जुन को प्रदान किया (३. ४१, २५)।

७. दण्ड, चम्पा के निकट स्थित एक तीर्थ का नाम है जहाँ गङ्गास्नान द्वारा सहस्र गोदान का फल मिलता है (३. ८५, १५)।

१. दण्डक (बहु० °काः), दक्षिणी की एक जाति के लोगों का नाम हैं जिन्हें दिग्विजय के समय सहदेव ने परास्त किया था (२. ३१, ६६)। एक ब्राह्मण ने दण्डकों के विशाल राज्य को नष्ट कर दिया था (१३. १५३, ११)।

२. दण्डक, एक तीर्थ और वन का नाम है जहाँ स्नान से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है (३. ८५, ४१)। ३. १४७, ३२; २०६, २७; २७७, ४१; २७९, २६; ९. ३९, ९; १३. १५१, १७।

दण्डकारण्य—देखिये **२. दण्डक**।

दण्डकेतु, पाण्डवपक्ष के एक योद्धा का नाम है : इसके रथ के घोड़ों का वर्णन (७. २३, ६८)।

दण्डगौरी, एक अप्सरा का नाम है जिसने इन्द्र की सभा में अर्जुन के स्वागतार्थ नृत्य किया था (३. ४३, २९)।

१. दण्डधार, मगध के निवासी एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो क्रोधवर्धन नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ४६)। यह द्रौपदी के स्वयंवर के समय उपस्थित हुआ (१. १८६, ७)। दिग्विजय के समय भीमसेन ने इसे और दण्ड को परास्त किया था (२. ३०, १७)। ५. ४, २१; ५. १६६, १७; ८. १८, १. ४. १० (यह मगध का राजा और दण्ड का भ्राता था : अर्जुन ने इसका वध किया)।

२. दण्डधार, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०३)। इसने दुर्योधन की रक्षा की (८. ५६, ३६)। उन दस धार्तराष्ट्रों में एक यह भी था जिनका भीमसेन ने वध किया (८. ८४, २)।

३. दण्डधार, पाण्डवों के सहायक एक राजा का नाम है (१. १८६, ७)। पाण्डवों की ओर से इन्हें रणनिमन्त्रण भेजा गया (५. ४, २१), द्रोणाचार्य ने इनका वध किया (८. ६, १३)

४. दण्डधार, एक पाञ्चाल योद्धा का नाम है : इसके घोड़ों का वर्णन (७. २३, ५३)। यह युधिष्ठिर का चक्ररक्षक था और कर्ण ने इसका वध किया (८. ४९, २७)।

५. दण्डधार = शिव (१,००० नाम)।

दण्डनीति = ब्रह्मा द्वारा निर्मित नीतिशास्त्र में वर्णित दण्डविधान विषयक नीतिविद्या (१२. ५९, ७६-७९)। दण्डनीति के गुणों का वर्णन (१२. ६९, ७५-१०५)।

१. दण्डपाणि = अन्तक (५. १६७, १०; ६. ४८, ९०)।

२. दण्डपाणि = शिव (७. २०१, ६५)।

दण्डबाहु, स्कन्द के एक सैनिक का नाम है (९. ४५, ७३)।

दण्डाख्य, एक तीर्थ का नाम है जो चम्पा क्षेत्र में स्थित था (३. ८५, १५)। देखिये **७. दण्ड** भी।

दण्डार्त, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, १६३)।

१. दण्डिन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०३)।

२. दण्डिन् = यम (१. १८९, १७)।

३. दण्डिन् = शिव : १२. २८४, ८४ (सहस्रनाम). १४५ (सहस्रनाम). १७०; १३. १७, १३१ (सहस्रनाम); १४. ८, २५।

दण्डिमुण्ड = शिव (१,००० नाम)।

१. दत्त, एक ऋषि का नाम है जिन्होंने तपस्या द्वारा महर्षि पद प्राप्त किया था (१२. २९६, १५)।

२. दत्त, एक प्रकार के पुत्र की संज्ञा है जिसे जन्मदाता माता-पिता स्वयं अन्य व्यक्ति को सौंप देते हैं। यह छः प्रकार के अबन्धु-दायादों में से एक है (१. १२०. ३४)

दत्तात्मन्, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३४)।

दत्तात्रेय, एक ऋषि का नाम है जो विष्णु के अवतार माने गये हैं। सहस्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन ने इनकी आराधना करके इनसे एक दिव्य कांचन-विमान प्राप्त किया था (३. ११५, १२)। कार्तवीर्य अर्जुन ने इनसे चार दुर्लभ वरदान प्राप्त किये थे (गीता. प्रे० सं० में २. ३८, २९ के बाद दाक्षिणात्य पाठ, पृ० ७९१)। इन्होंने साध्यों को उपदेश दिया (५. ३६, ४-२१)। कार्तवीर्य अर्जुन ने इनकी कृपा से १,००० भुजायें प्राप्त की थीं (१२. ४९, ३६)। ये निमि के पिता और श्रीमत् के पितामह थे (१३.

९१, ४. ५)। इन्होंने कार्तवीर्य अर्जुन को चार वरदान दिये (१३. १५२, ५)। 'दत्तात्रेयप्रसादेन', (१३. १५३, १२)। 'दत्तात्रेयप्रसादाच्च', (१३. १५७, २५)।

दत्तामित्र, सौवीर देश के राजा सुमित्र का नाम है जिनका अर्जुन ने दमन किया था (१. १३९, २३)।

दधिमण्डोदक, एक समुद्र का नाम जो घृतोद सागर के बाद आता है (६. १२, २)।

१. दधिमुख, एक प्रमुख नाग का नाम है (१. ३५, ८; ५. १०३, १२)।

२. दधिमुख, एक वानर का नाम है जो वानरों की एक विशाल सेना लेकर श्रीराम के पास आया (३. २८३, ७)।

दधिवाहनपौत्र—'दधिवाहनपौत्रस्तु पुत्रो दिविरथस्य च। गुप्तः स गौतमेनासीद्गङ्गाकूलेऽभिरक्षितः ॥', (१२. ४९, ८०)।

दधीच, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जिन्होंने इन्द्र के वज्र के निर्माणार्थ अपनी अस्थियाँ प्रदान कीं (१. १३७, १२)। 'धर्मज्ञ दधीचस्य महात्मनः,' (३. ८३, १८६)। 'दधीच इव देवेन्द्रम्', (३. ९२, ६)। 'दधीच इति विख्यातो महानृषिरुदारधीः', (३. १००, ७)। 'दधीचस्याश्रमम्', (३. १००, १३. १८)। 'पश्यन्दधीचं ते दिवाकरसमद्युतिम्', (३. १००, १९)। 'दधीच परमप्रतीतः सुरोत्तमांस्तानिदमभ्युवाच', (३. १००, २१)। अलम्बुषा नामक अप्सरा को देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया जिससे सरस्वती नदी से इन्हें सारस्वत नामक पुत्र प्राप्त हुआ (९. ५१, ५ और बाद)। 'ऋतेऽस्थिभिर्दधीचस्य निहन्तुं त्रिदशाद्विषः। तस्माद्गत्वा ऋषि श्रेष्ठो याच्यतां सुरसत्तमाः ॥. दधीचास्थीनि देहीति तैर्वधिष्यामहे रिपून् ।', (९. ५१, २८. २९)। "ब्रह्मा के पुत्र महर्षि भृगु ने तीव्र तपस्या से भरे हुये लोकमङ्गलकारी विशालकाय एवं तेजस्वी दधीच को उत्पन्न किया था। ऐसा प्रतीत होता था मानों सम्पूर्ण जगत् के सार तत्त्व से इनका निर्माण हुआ है। ये पर्वत के समान विशाल और ऊँचे थे। इन्द्र इनके तेज से सदा उद्विग्न रहते थे (९. ५१, ३२–३४)।" दक्षयज्ञ में शिव का भाग न देख कर ये कुपित हो उठे और दक्ष आदि को चेतावनी दी (१२. २८४, १२–२१)। देवताओं के निवेदन पर इन्होंने वज्र-निर्माण के लिये अपनी अस्थियाँ प्रदान कीं जिससे धाता ने वज्र बनाया (१२. ३४२, ३६–४०)। तुकी० **दधीचि।**

दधीचि = दधीच : १२. २८४, ११. १६. २१ (दक्षयज्ञ में जब इन्होंने देखा कि शिव को आमन्त्रित नहीं किया गया है तब इन्होंने दिव्य दृष्टि से यज्ञ के विनाश की सम्भावना को देख कर सब को इसकी चेतावनी दी)। 'दधीचिवचनाद्दक्षयज्ञमपाहरत्', (१२. ३४२, १०९)। तुकी० **दधीच।**

दनायुस्, दक्ष प्रजापति की पुत्री का नाम है (१. ६५. १२)। इसने विक्षर आदि चार पुत्रों को उत्पन्न किया (१. ६५, ३३)। इसके पुत्रों ने पृथिवी पर विभिन्न राजाओं आदि के रूपों में अवतार लिये (१. ६७, ४१)।

दनु, दक्ष प्रजापति की पुत्री का नाम है जो कश्यप की पत्नी और दानवों की माता हुई (१. ६४, ३२)। यह दक्ष की पुत्री और कश्यप की पत्नी थी (१. ६५, १२)। यह चालीस पुत्रों की माता बनी (१. ६५, २१ : केवल ३२ पुत्रों को ही आगे के श्लोकों में गणना कराई गई है)। 'दनोर्वंशे दानवाः परिकीर्तिताः', (१. ६५, २६) 'दनुपुत्रा महाराज दश दानववंशजाः (१. ६५, २८)। यह ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहती थी (२. ११, ३९)। 'दनोः पुत्रा महाबलाः', (३. ४७, १७)। 'दनोः पुत्रान्', (१२. ९८, ५०)। 'विप्रचित्तिप्रधानांश्च दानवानसृजद्दनुः', (१२. २०७, २८)।

दनुज (बहु ॰जाः) = बहु० दानव (१. १९, २३)।

दनुपुत्र (दनु के पुत्र) = बहु० दानव (१. ६५, २८)।

१. दन्त, विदर्भराज भीम के एक पुत्र का नाम है (३. ५३, ९ : 'दान्तं दमनं च)।

२. दन्त = शिव (१,००० नाम)।

दन्तकूर, एक स्थान का नाम है (५. २३, २४ : 'दन्तकूरे कूरमन्नं दन्ताः क्रोधावेशात् कूरवच्चर्व्यन्तेऽस्मिन्निति दन्तकूरः सङ्ग्रामः तस्मिन् अस्वन् क्षिपन्', नीलकण्ठी)। 'कलिङ्गान् दन्तकूरेममर्द', (५. ४८, ७६)।

दन्तक्रूर—'दन्तक्रूरं जघान ह', (७. ७०, ५)।

दन्तवक्त्र, एक क्षत्रिय राजा का नाम है जो क्रोधवश संज्ञक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ६२)। यह करूष देश का अधिपति था (२. १४, १३)। दिग्विजय के समय सहदेव ने इसे पराजित किया था (२. ३१, ३)। २. ४४, १९; ५. ४, १६।

दन्तवक्र—देखिये **दन्तवक्त्र।**

दन्ता, कुवेर की सभा में नृत्य करनेवाली एक अप्सरा का नाम है (१३. १९, ४५)।

दन्तिन्, कुवेर की एक सभा में उपस्थित एक व्यक्ति का नाम है (२. १०, ३५)(

दन्तोलूखलिकाः, एक प्रकार के तपस्वियों का नाम है (९. ३७, ४८. ६४; १२. १७, ११; २४४, १२; १३. १४, ५७)।

१. दम, विदर्भराज भीम के पुत्र और दमयन्ती के भ्राता का नाम है (३. ५३, ९)।

२. दम, एक महर्षि का नाम है जो अन्य महर्षियों के साथ भीष्म को देखने आये और कथा-वार्ता सुनकर अन्तर्धान हो गये (१३. २६, ५)।

३. दम = विष्णु (१,००० नाम)।

दमघोषसुत—देखिये **शिशुपाल।**

दमघोषात्मज—देखिये **शिशुपाल।**

१. दमन, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २२६)।

२. दमन, एक ब्रह्मर्षि का नाम है जिन्होंने विदर्भराज भीम से प्रसन्न होकर उन्हें तीन पुत्र तथा एक पुत्री होने का वरदान दिया (३. ५३, ६. ८)।

३. दमन, विदर्भराज भीम के एक पुत्र का नाम है (३. ५३, ९)।

४. दमन, एक कौरव-योद्धा का नाम है जिसका धृष्टद्युम्न ने वध किया (६. ६१, २०)।

५. दमन = शिव (१,००० नाम)।

६. दमन = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दमयन्ती, विदर्भराज भीम की पुत्री, राजा नल की पत्नी, और इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना की माता का नाम है : १. २, १६१; १९९, ५; ३. ५३, ९ (दमन ऋषि के वरदान के फलस्वरूप इसका जन्म हुआ था). १०. १६. २१. २३. २६. ३१; ५४, १. २. ५. ६. ८. १०. २१. २७; ५५, ३. ५. ११. १९; ५६, १३. १८. २४. २५; ५७, २. ८. २२. ३०. ३३. ४०. ४१. ४६ (नल की पत्नी और इन्द्रसेन तथा इन्द्रसेना की माता); ५८, ३. ७; ५९, १२; ६०, १. ८. ११. २१; ६१, ३. ७. ११. १७. २४. २५. ३०. ३२; ६२, ३. ६. ७. ८. १३. १५. २०; ६३, १. ३१. ३५. ३७; ६४, १३. २५. ३३ (विदर्भराजतनयां). ४३. ६०. ६७. ८४. ९१. ९७ (वीरसेननृपस्नुषा). १००. १०५. १११. १२२; ६५, १९. २९. ४३. ५२. ६७. ७५. ७६; ६६, १; ६७, १९; ६८, २. ४. ३१. ३९; ६९, १. ३. ४. ११. १६. १७. २६. २९, ३२. ३५. ५०; ७०, २. १४. २२. २४; ७१, २. ४; ७३, ४. ८. ३२. ३६; ७४, ५. ६. ८. ३१; ७५, १. ६. ७. ८. १८. २२; ७६, १. २. ७. ८. १५. २५. २६. ३७. ४१. ४७. ४८. ५२; ७७, २. ४. ९; ७८, ५. १२. १५; ७९, १. २. १०; ३. ११३, २३ (यथा...नलस्य वै दमयन्ती); ५. ८, ५१; ११७, १५। तुकी० **नलोपाख्यानम्, भैमी, भीमनन्दिनी, भीमपुत्रिका, भीमसुता,** (३. ६०, २. ७; ६३, १९; ६४, १००. ११०; ७६, ४३), **वैदर्भी, विदर्भाधिपतिनन्दिनी, विदर्भराजतनया, विदर्भतनया।**

दमयितृ = विष्णु (१,००० नाम)।

दमिन्, एक तीर्थ का नाम है जहाँ ब्रह्मा आदि देवता भगवान् महेश्वर की उपासना करते हैं (३. ८२, ७२)।

दम्भ = शिव (१,००० नाम)।

दम्भोद्भव, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३४)। 'दम्भोद्भवस्य चाख्यानम्', (१. २, २३३)। 'दम्भोद्भवेनासि समोवलेन', (१. ५५, १६)। 'दम्भोद्भवः···श्रेयसो ह्यवमन्येह विनेशुः', (२. २२, २४)। ५. ९६, ५. २५. २७. २९।

दम्भोद्भवोपाख्यानम्—"पूर्वकाल की बात है, दम्भोद्भव नाम से प्रसिद्ध एक सार्वभौम सम्राट इस सम्पूर्ण अखण्ड भूमण्डल के राज्य का उपभोग करते थे। वह प्रतिदिन प्रातःकाल ब्राह्मणों और क्षत्रियों से पूछा करते थे कि क्या युद्ध में उनसे (दम्भोद्भव से) भी श्रेष्ठ या उनके समान ही कोई और व्यक्ति है। उस समय कुछ ब्राह्मणों ने बार-बार आत्मप्रशंसा करने वाले उन नरेश को मना किया। फिर भी, जब वे प्रतिदिन प्रातःकाल ऐसा ही प्रश्न पूछते रहे तो कुछ ब्राह्मणों ने क्रोध में भर कर उनसे कहा : 'दो ऐसे पुरुषरत्न हैं जिन्होंने युद्ध में अनेक योद्धाओं पर विजय प्राप्त की है, और जिनकी आप समता नहीं कर सकते। उनका नाम नर और नारायण है। वे दोनों महापुरुष गन्धमादन पर्वत पर ऐसी घोर तपस्या कर रहे हैं जिसका वाणी द्वारा वर्णन असम्भव है।' ब्राह्मणों की बात सुनकर राजा दम्भोद्भव उस स्थान पर आये जहाँ नर और नारायण तपस्या कर रहे थे। उन्होंने देखा कि वे दोनों महात्मा भूख और प्यास से दुर्बल हो गये हैं। उनके समस्त अंगों की नस-नाडियाँ उभर कर स्पष्ट लक्षित हो रही हैं और वे अत्यन्त कृशकाय हो गये हैं। राजा ने दोनों महात्माओं से युद्ध करने की इच्छा प्रगट की परन्तु उन महात्माओं ने अस्वीकार कर दिया। फिर भी, जब राजा दम्भोद्भव युद्ध करने का आग्रह करते ही रहे तो नर ने हाथ में एक मुट्ठी सींक लेकर कहा : 'युद्ध चाहनेवाले क्षत्रिय ! आ युद्ध कर। अपने सारे अस्त्र-शस्त्र ले ले और सेना को भी तैयार कर ले।' राजा ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया और सैनिकों सहित नर पर वाण-वर्षा आरम्भ कर दी। परन्तु नर ने ऐषीकास्त्र के प्रयोग द्वारा राजा के अस्त्र-शस्त्रों का निवारण करते हुये सींक के बाणों से ही दम्भोद्भव के सैनिकों की आखों, कानों और नासिकाओं को बींध डाला। दम्भोद्भव सींकों से भरे समस्त आकाश को देख कर मुनि के चरणों में गिर पड़े और बोले : 'भगवन् ! मेरा कल्याण हो।' तब नर ने उनसे कहा : 'आज से तुम ब्राह्मणहितैषी और महात्मा बनो। फिर कभी ऐसा दुःसाहस मत करना।' तदनन्तर राजा दम्भोद्भव उन दोनों महात्माओं के चरणों में प्रणाम करके राजधानी लौट आये और विशेष रूप से धर्म का आचरण करने लगे (५. ९६, ५–३९)।"

दयावास = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

१. दरद, बाह्लीक देश के एक राजा का नाम है जो सूर्य नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ५८)। दरदं स्तुहि बाह्लीकमिमम्', (२. ४४, ८)।

२. दरद (बहु॰ ॅदाः), एक देश और वहाँ के निवासियों का नाम है जिन्हें अर्जुन ने अपनी दिग्विजय के समय परास्त किया था (२. २७, २३)। ये लोग राजा युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १३)। ये युधिष्ठिर के राजसूय के समय उपस्थित हुये (३. ५१, २४)। वनवास के समय सुबाहु की राजधानी में जाते समय पाण्डवगण दरद देश में हो कर गये थे (३. १७७, १२)। पाण्डवों की ओर से जिन्हें रण-निमन्त्रण भेजना था उनमें दरदराज का नाम भी था (५. ४, १५)। यह पूर्वोत्तर दिशा में स्थित देश है (६. ९, ६७)। दरद देश के योद्धा दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (६. ५१, १६)। इन लोगों ने अर्जुन पर आक्रमण किया (६. ११७, ३३)। श्रीकृष्ण ने भी पहले इस देश को जीता था (७. ११, १७)। राम जामदग्न्य ने इनका संहार किया था (७. ७०, ११)। इन लोगों ने अर्जुन पर आक्रमण किया (७. ९३, ४४)। इन लोगों ने सात्यकि पर आक्रमण किया परन्तु सात्यकि ने भी इनका संहार किया (७. ११९, १५. २१; १२१, ४२)। दुर्योधन के सहायकों के रूप में इनका उल्लेख (८. ७३, १९)। ये लोग पहले क्षत्रिय थे परन्तु ब्राह्मणों के साथ ईर्ष्या रखने के कारण शूद्र हो गये (१३. ३५, १७–१८)।

दरि, एक पर्वत का नाम है जिसके अधिष्ठाता देवता कुबेर की सभा में उपस्थित रहते हैं (२. १०, ३२)। मलय और दर्दुर पर्वतों के बहुमूल्य पदार्थ युधिष्ठिर के लिये उपस्थित किये गये (२. ५२, ३४)। यह दक्षिण में स्थित है (३. २८२, ४३)। इसका उल्लेख (१३. १६५, ३२)।

दर्प, अधर्म और श्री के पुत्र का नाम है : 'दर्पो नाम श्रियः पुत्रो जज्ञेऽधर्माद्', (१२. ९०, २६)।

दर्पण = शिव (१, ००० नाम)।

दर्पण = विष्णु (१, ००० नाम)।

दर्पहन् = विष्णु (१, ००० नाम),

दर्भिन्, एक प्राचीन ऋषि का नाम है जिन्होंने कुरुक्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत अर्धकील नामक तीर्थ प्रगट किया था। ये इसी तीर्थ में चार समुद्र भी लाये थे (३. ८३, ५४. ५६)।

दर्व (बहु॰ ॅर्वाः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, १३)। ६. ९, ५४।

दर्वी, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५४)।

दर्वीसंक्रमण, एक तीर्थ का नाम है जहाँ की यात्रा करने से अश्वमेध का फल मिलता है (३. ८४, ४५)।

दर्शक, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५३)।

दर्शप (बहु॰ ॅपाः) देवों के एक वर्ग का नाम है (१३. १८, ७५)।

दल, इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित के पुत्र का नाम है जिनकी माता मण्डूकराज की पुत्री सुशोभना थी (३. १९२, ३८. ५८. ५९. ६०. ६४)।

दशकन्धर = रावण (देखिये वस्था॰)।

दशग्रीव = रावण (देखिये वस्था॰)। यह वरुण की सभा में विराजमान होता था (२. ९, १४)।

दशज्योतिस्, सुभ्राट के तीन पुत्रों में से एक का नाम है (१. १, ४४)।

दशपार्श्व (बहु॰ ॅर्श्वाः), एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ५६)।

दशबाहु = शिव (१,००० नाम)।

दशभुज = शिव (१४. ८, ३०)।

दशमालिक (बहु॰ ॅकाः) एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६६)।

दशरथ, इक्ष्वाकुवंशीय महाराज अज के पुत्र और श्रीराम के पिता का नाम है (३. ९९, ४०. ४२. ४४)। 'लोमपादः···सखा दशरथस्य', (३. ११०, ४१)। इनके पिता का नाम अज और माता का इलविला था (३. २७४, ६)। इनकी तीन रानियाँ थीं जिनमें से कौसल्या के गर्भ से श्रीराम, कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न नामक चार पुत्रों का जन्म हुआ (३. २७४, ७. ८)। "श्रीराम के राज्याभिषेक के समय इनकी पत्नी, कैकेयी, ने श्रीराम के लिये वनवास तथा अपने पुत्र भरत के लिये राज्य माँगा। यह वरदान देने के कुछ समय बाद इनकी मृत्यु हो गई (३. २७७, ३. ५. १३. ३०. ३२)।" 'सखा दशरथस्यासीज्जटायुररुणात्मजः', (३. २७९, १)। 'सखा दशरथस्य वै', (३. २७९, २०)। इन्होंने प्रगट होकर सीता की पवित्रता की पुष्टि की और उनसे सीता सहित अयोध्या लौटकर राज्य करने के लिये कहा (३. २९१, १९)। 'विष्णुना-वसता चापि गृहे दशरथस्य वै। दशग्रीवो हतच्छन्नं संयुगे भीमकर्मणा ॥', (३. ३१५, २०)। 'दशरथायाह रामायाह-पिता', (१३. ७४, ११)। 'रघुर्नरवरश्चैव तथा दशरथो नृपः,' (१३. १६५, ५१)।

दशरथात्मज = राम (देखिये वस्था॰)।

दशलक्षणसंयुक्त = शिव (१,००० नाम)।

दशशतनयन, दशशताक्ष, दशशतेक्षण = इन्द्र (देखिये वस्था॰)।

दशानन = रावण (देखिये वस्था॰)

१. दशार्ण = हेमवर्मन् : ५. १९२, ७. ३३

२. दशार्ण (बहु० ॰र्णाः), एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें पाण्डु ने अपनी दिग्विजय के समय पराजित किया था (१. ११३, २५)। पश्चिम की इस जाति को भीमसेन ने अपनी दिग्विजय के समय पराजित किया था (२. २९, ५)। इन्हें नकुल ने दिग्विजय के समय पराजित किया (२. ३२, ७)। 'त्वं तु जाता मया दृष्टा दशार्णेषु पितुर्गृहे,' (३. ६९, १५)। 'दशार्णा नवराष्ट्राश्च', (४. १, १३)। 'उत्तरेण दशार्णास्ते पञ्चालान् दक्षिणेन च', (४. ५, ३)। 'राजा दशार्णेषु महानासीत् सुदुर्जयः', (५. १८९, ११)। 'उत्तमाश्वदशार्णाश्च', (६. ९, ४१)। दुर्योधन की सेना में ये सैनिक भी थे (६. ५१, १२)। इन लोगों ने भगदत्त पर आक्रमण किया (७. २६, ३५)। इन लोगों ने पाञ्चालों पर आक्रमण किया (८. २२, ३)। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के समय इनके राजा चित्राङ्गद थे, जिन्हें अर्जुन ने परास्त किया (१४. ८३, ५. ६)।

दशार्णनृप = दशार्णों के राजा : ५. १९२, १७।

दशार्णपति = दशार्णों के राजा : ५. १९१, ८; १९२, २३।

दशार्णराज = दशार्णों के राजा : ५. १८९, २१।

१. दशार्णाधिपति = सुदामन् : ३. ६९, १४।

२. दशार्णाधिपति = हिरण्यवर्मन : ५. १८९, ८. १६; १८१, ४. २७; १९२, १२. १४. २६।

३. दशार्णाधिपति = महाभारत के समय के दशार्णों के अधिपति : ६. ९५, २४. ४०; ७. २६, ३८।

दशार्धहविरात्मक = कृष्ण : १२. ४७, ४२।

१. दशार्ह (बहु० ॰र्हाः), एक जाति का नाम है : ३. १२०, ५ (सेना); १८३, ३२ (॰योधाः). ३५ (॰योधैः)। तुकी० बहु० दाशार्ह।

२. दशार्ह = विष्णु (१,००० नाम)।

दर्शार्हनाथ = कृष्ण : ८. १७, २०।

दर्शार्हभर्तृ = कृष्ण : ३. १८३, २३।

दशार्हसिंह = कृष्ण : ३. १८३, २२।

दशार्हाधिपति = कृष्ण : ३. २३, १।

दशावर, एक असुर का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित रहता था (२. ९, १४)।

दशाश्व, इक्ष्वाकु के दसवें पुत्र का नाम है जो महिष्मती पुरी में राज्य करते थे। इनके पुत्र का नाम मदिराश्व था (१३. २, ६. ७)।

दशाश्वमेध, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, १४)।

दशाश्वमेधिक, एक तीर्थ का नाम है (३. ८३, ६४)।

दशास्य = रावण (देखिये वस्था०)।

दशेयी=सत्यवती (१. १००, ५०; ५. १७४, १)।

दशेरक (बहु० ॰काः), एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें श्रीकृष्ण ने पराजित किया था (७. ११, १६)। दुर्योधन की सेना में (७. २०, ६)। तुकी० दाशेरक (बहु०)।

दस्यु (बहु० ॰वयः) : १. ७५, २८; ८५, ४; १०७, ४. ५. ८. ११; १०९, ५; २. २७, १६. २४; ३. १०, १७; १९१, ५; ४. ६, २१; १६, ३१; ५. ४८, ६५. ८२; ७. ७०, १९ (निर्दस्युं पृथिवीं कृत्वा); ११९, ४७; १२१, २१; १५६, २; ८. ६९, ४८; १२. १२, २९; २४, ११. २६; २६, २२; ६०, १४. १७; ६५, १५. १७. १८. २१. २३; ६७, २; ६८, २०; ७३, ८. १०; ७५, ५; ७८, १८. ३५. ३६. ३९; ८६, २८; ८७, २८; ८८, २४; ८९, ८; ९१, ३४; ९७, ८; १००, ३; १०३, ३९; १३२, १; १३३, ११. १२. १५. १७. १९; १३५, १. ३. ९. १०. ११. २२. २४; १३६, २; १४०, १; १४१, ६; १४२, १. २९; १६८, ३१. ३४. ३७. ३८. ४१. ४२. ४६; १७२, ९. २०. २३. २४; १७६, १२; १७७, ३६; ११५, १४. १५; २६७, ५. १०. २१; २९७, २५; ३४२, १९; १३. ४७, ४४; ६०, ४; १६. ४, ४; ७, ४६. ४९. ६०. ६२।

दस्र, अश्विनद्वय का नाम है : 'नासत्यदस्रौ', (१. ३, ५८)। ('नासत्यश्चैव दस्रश्च स्मृतौ द्वावश्विनावपि,' (१२. २०८, १७)। 'नासत्यं चैव दस्रं च भिषजौ', (१२. ३३९, ५३)। 'नासत्यश्चापि दत्तश्च स्मृतौ द्वावश्विनावपि', (१३. १५०, १७ : यहाँ 'दस्र' नहीं वरन् 'दत्त' है)।

दहति, अंश द्वारा स्कन्द को दिये गये पाँच पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३४)।

दहदहा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २०)।

१. दहन, ग्यारह रुद्रों में से एक नाम है जो स्थाणु के पुत्र और ब्रह्मा के पौत्र हैं (१. ६६, ३)। ये अर्जुन के जन्म के समय उपस्थित हुये (१. १२३, ६९)।

२. दहन=अग्नि (देखिये वस्था०)।

३. दहन, अंश द्वारा स्कन्द को प्रदत्त पाँच पार्षदों में से एक का नाम है (९. ४५, ३४)।

१. दाक्षायणी (दक्षपुत्र)=अदिति : १. ७५, १०। यह इन्द्र की माता है (२. २२४, ५)।

२. दाक्षायणी=सुरभि : १२. १७३, ३।

३. दाक्षायणी=विनता : १. ३१, २४।

४. दाक्षायणी=राजधर्मन् की माता : १२. १७०, २।

५. दाक्षायणी (द्विव०)=कद्रू और विनता : १. २२, ५।

६. दाक्षायणी (बहु०) : ५. १०८, ६; १२. २२७, ६२ (दाक्षायणीपुत्राः प्राजापत्याः)।

दाक्षायण्य=आदित्य : १३. १४७, २६।

१. दाक्षिणात्य (बहु० त्याः) दक्षिण भारत के निवासियों के लिये प्रयुक्त हुआ है। इनके राजा का नाम रुक्मिण था (३. २५४, १२)। भीमसेन को इनसे युद्ध करने के लिये कहा गया (५. ५७, १४)। दुर्योधन की सेना में (५. १६०, १०३; १६१, २१)। इन लोगों ने भीष्म का अनुसरण किया (६. ८७, ६)। कर्ण का अनुसरण किया (७. ७, १६)। श्रीकृष्ण ने इन्हें पूर्वसमय में पराजित किया था (७. ११, १६)। 'दाक्षिणात्याश्च वहवः सूतपुत्रपुरोगमाः,' (७. ११३, ४१)। अर्जुन ने इनका वध किया था (८. ५, ४९)। पाण्ड्यराज ने इनका वध किया (८. २०, ११)। इन्होंने पाञ्चालों पर आक्रमण किया (८. २२, २)। 'वृषला दाक्षिणात्याः', (८. ४५, २८)। इनके वध का उल्लेख (८. ७०, २०. ३३; ९. १, २८)। 'दाक्षिणात्याऽसिपाणयः', (१२. १०१, ५)। देखिये अगला शब्द भी।

२. दाक्षिणात्य (वि०) १. १२१, १२; ३. ११९, १८; २३७, ३; ५. ३०, २४; १९५, ६; ७. ९३, ३२; १११, २९; ११३, ३७। ऊपर वाला शब्द भी देखिये।

३. दाक्षिणात्य=दाक्षिणात्यों के राजा : २. ५३, ७।

दाक्षिणात्यपति=भीष्मक (५. १५८, २)।

दानपति=अक्रूर (१. २२१, २९)।

१. दानव (बहु० ॰वाः), देवशत्रुओं के एक वर्ग का नाम है : १. १८, १४ (इन लोगों ने समुद्रमन्थन में भाग लिया). ३०. ३९. ४४. ४६ (दानवदैतेयाः); १९, १ (इन लोगों ने अमृत के लिये देवों से युद्ध किया). २. १०. २० (शक्रं विष्णुर्दानवसूदनम्); ३०, १३ (अजेयं च देवदानवराक्षसैः); ६४, ३८; ६५, ५. ६. ७. २६. २७. २८ (इन्द्रपुत्रा महाराज दशदानव वंशजाः). ३४; ६७, १. ३. ५६. ६२ (विभिन्न दानवों ने पृथिवी पर अंशावतार ग्रहण किया); ६८, १ (देवदानवरक्षसाम्); ७६, ७. १४. २७. ३८. ४१. ७०. ७१; ८०, २७ (सर्वदानवैः); १३५, ३२; १३७, १२ (वज्रं कृतं दानवसूदनम्); १६७, ४७ (देवदानवयक्षाणामीप्सितां देवरूपिणीम्); १७०, ६१ (इन्हें कुरुवंश का इतिहास ज्ञात था); २२५, ९. १३ (सोम ने इन्हें पराजित किया था); २२७, २७ (खाण्डवदाह के समय युद्ध में श्रीकृष्ण ने इनका वध किया था); २२८, १. ७; २. १, ६ (विश्वकर्मा वै दानवानां); ३, २ (इन्होंने विन्दु सरोवर में एक यज्ञ किया था); ९, १२. १५; ११, ४९; १८, ३ (दानवानां विनाशाय स्थापिता दिव्यरूपिणी); २४, १९ (शक्रो दानवानां जघान नवतीर्नव); ३. १२, १९ (श्रीकृष्ण ने इनका वध किया था); १४, २१; १७, १९; १८, १०;

२०, २८. ३०; २२, ४. ६. २९ (आसेयमखं···दानवान्त वरम्). ३०. ३८; २७, २६ (पूजितं देवदानवैः); ४०, ३. ११. २४; ४१, २० (दानवाश्च महावीर्या ये मनुष्यत्वमागताः). २१ (निवातकवचाश्चैव दानवाः). २२ (अंशाश्च क्षितिसंप्राप्ता देवदानवरक्षसाम्); ४२, १६; ५६, ११ (दैत्यदानवमर्दनम्); ९४, ५. ११ (दानवांश्चैव कलिरप्याविशत्ततः। तान लक्ष्मीसमाविष्टान्दानवान्कलिना हतान्); १००, ३ (दानवा··· कालकेयाः); १०१, ३; १०२, ६. १५; १०५, ७. ९. १३ (कालेय दानवों को देवों ने परास्त किया); १४९, १३ (देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः। नासन्कृतयुगे तात तदान क्रयविक्रयः); १५४, २३; १५९, २८; १६१, ६ (निहत्य समरे सर्वान् दानवान् मघवानिव); १६३, १९; १६७, ५६; १६८, ७१ (निवातकवचा नाम दानवा). ८४. ८६; १६९, ७. ९. ११. १९. २१; १७०, ३. २८; १७१, ९. ११. २०. ३०; १७२, ४. ८. १६. १७. ३४. ३५ (निवातकवच दानवों का अर्जुन ने वध किया था); १७३, १२ (ये हिरण्यपुर में निवास करते थे). २०. २२. ४५. ५४. ५५. ६१. ७४ (हिरण्यपुर को अर्जुन ने नष्ट किया); १७५, २; १८६, १४; १८८, ४. ७०. १३७; १९३, २३; २०१, ३; २०४, ३; २२३, ३. ५ (इन्होंने देवों को पराजित किया); २२४, ८; २२९, २२ (दानवानां विनाशाय); २३१, ६६. ६९. ७०. ७२. ७९–८१. ८५. ९९. १०१. १०६. १०७. ११२ (देवों के साथ इनका युद्ध); २५१, २१. २९ (इन लोगों ने दुर्योधन को अपने पास बुलाया); २५२, १. १० (अनेक दानव पृथिवी पर अंशावतार ले चुके थे). १३. २७. ३६; २७६, ८ (अनेक देवों, दानवों, और गन्धर्वों आदि ने रावण के वध के लिये पृथिवी पर अवतार लिया); २८१, ३. १०; २९०, १३. २८; २९१, ३१; ३१०, ३६; ४. २३, २७ (वज्री दानवानिव); ३६, ७ (वित्रासयित्वा संग्रामें दानवानिव वज्रभृत); ४३, ४ (देवदानवगन्धर्वैः पूजितम्, अर्थात गाण्डीव); ४४, १७; ४५, ३७; ४९, १०. २३; ५. ७, २२ (पुरतो देवदानवयोरपि); ११, ७; १४, १८; १५, १८; १६, १७; ४९, १३ (शक्रो विजिग्ये दैत्यदानवान्); ५१. ४२; ९९, १ (पातालोमिति···दैत्यदानवसेवितम्); १००, १ (हिरण्यपुरमित्येतत ख्यातं पुरवरं महत। दैत्यानां दानवानां च मायाशतविचारिणाम्). ३. ७. १८. १९; १२८, ४३. ४५. ४६. ४७ (तान् बध्वा धर्मपाशैश्च स्वैश्च पाशैर्जलेश्वरः। वरुणः सागरे यत्तो नित्यं रक्षति दानवान्); १३०, ४३; १३८, ८ (दानवा घोरकर्मणो निवातकवचाः); १५८, २९. ३०; १६५, २६; १६९, २२ (दानवानां सहस्राणि हिरण्यपुरवासिनाम्); १७२, ४; १७३, १९, ६. १४, २८. ४२; २३, १४; ३४, १४; ५७, ३४ (त्रिदशा दानवानिव); ५८, ६; ५९, ६९ (भीष्मो नाशयेद्देवदानवान्); ६६, ९; ६७, १६; ६९, ३४; ७७, १२ (यथा देवासुरे युद्धे महेन्द्रं प्राप्य दानवान्). ३१; ८३, २८; ९२, १; ९७, ३८; १०२, १८; १०७, ३९; ११९, २३. ५७; ७. ३, २४; ६, ८ (जहीन्द्रो दानवानिव); ७, ४७. ५२; १६, १२. १६; २१, ६५; ५२. ११; ७५, २२ (दानवानां सहस्राणि हिरण्यपुरवासिनाम्); ७९, २४; ८०, ४५; ११९, २७; १२२, ५० (पेतुः·········पुरायुद्धे यथा दैतेयदानवाः); १२४, २; १४४, २२; १४७, ५५; १४८, ५७ (शतक्रतौ चापि च देवसत्तमे महाहवे जघ्नुषि दैत्यदानवान्); १५१, ८; १५९, ३४ (यथा देवासुरे युद्धे शक्रस्य सह दानवैः). ९०; १६८, २९ (यथेन्द्रभयवित्रस्ता दानवास्तारकामये); १८१, १९; १८५, १८; १८६, २७; १९०, १; १९६, ५; २०२, ८२. १४७; ८. १०, ३४. ३५; १८, ६; १९, १६; ३३, १६. २३. ३६; ३४, २. ४. २३. ६९. ९४. ११४ (शिव ने त्रिपुर का विध्वंस किया). १४५.१४७. १५० (रामजामदग्न्य ने इनका वध किया था); ३५, ३३; ५०, ४९; ५६, ६८ (यादृक्पुरा वृत्तं देवानां दानवैः सह). १०७; ७३, ५७ (पुरा विष्णुरिव हत्वा दैतेयदानवान्); ८७, ३७. ५४. ८८ (ये कर्ण और अर्जुन के युद्ध के समय उपस्थित हुये); ९. ६, ३०; १३, ४६; २५, १५; ३१, ८. १५; ३९, ७; ४३, ४८; ४४, ३०. ४२; ४६, ६७; ४९, १४; ५१, २५. ३६ (दैत्यदानववीराणां जघान नवतीर्नव); १०. ३, २८; ४, १६; १२, १७. ३७; १४, १५; १५, २९; ११. २५, ४९; १२. २, १८; २९, ९७; ३३, २८; ४७, २०. ७४; ६४, ११; १६६, २६. २८. ५४. ५५. ५९. ६२. ६३. ६५ (इन लोगों ने देवताओं से युद्ध किया परन्तु शिव ने खड्ग से इनका वध किया); १८८, ३; २०७, १६. २७. २८; २०९, ७. ८. ९. १०. १२. १४. १९. २०. २२. २५. ३०. ३१ (वराहावतार लेकर विष्णु ने इनका विनाश किया); २२४, ४०; २२७, ७ (देवासुरे युद्धे दैत्यदानवसंक्षये). ५४. ५५; २२८, २८. ४९. ६२. ८१; २८४, ७४. १९२; २८९, ३ (नित्यं वैरनिवद्धाश्च दानवाः सुरसत्तमैः); २९०, १३; ३०२, ३०; ३२७, २२; ३३१, ५९; ३३६, ६०; ३३९, ९० (कृष्णावतार लेकर नारायण इनका वध करेंगे); ३४३, ६२; ३४७, ३०; ३४९, ३० (दैत्यदानवगन्धर्वरक्षोगणसमाकुला). ३१; १३. १४, १४३ (यक्षराक्षससर्पाणां दैत्यदानवयोरपि। वपुर्धारयते देवो भूयश्च विलवासिनाम). २०५. २०७; १७, १८१ (नास्यं विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः); १८, ७६; ४०, १७; ८२, १५; ८५, ९; ९८, ४३; १०७, ५४; १४८, ३०; १५०, ७९; १५५, ३. ६. ८. १३ (अगस्त्य ने इन्हें भस्म किया). १७. १८; १५६, २. ३; १५७, १९; १४. ३, ७ (देवाः क्रियावन्तो दान्वानभ्यधर्षयन); ९, ३० (अपाकर्षन्दानवान्तरिक्षात); २६, ११; ४३, १४; ४४, १५; ५९, १८ (कृत्वा नसुकरं कर्म दानवेष्विव वासवः); १५. ३१, ७ (इन लोगों ने अंशावतार लिया था और इसीलिये महाभारत युद्ध में इनका वध हुआ)। तुकी० बहु० **असुर**; बहु० **दैतेय**; बहु० **दैत्य**; बहु० **दानवेय**; बहु० **दनुज**; बहु० **दनुपुत्र**।

२. दानव (एक०) : ३. १५७. ५७ (सङ्ख्ये देवदानवयोरिव); ४. २३, ३; ५८, ५१; ६. १०१. ११; ७. ११, ४ (दानवं घोरकर्माणं गवां मृत्युमिवोत्थितम्। (वृषरूपधरं बाल्ये भुजाभ्यां निजघानह); १३५, १४ (महेन्द्रस्य दानवः); १३९, ८२ (सङ्ख्ये देवदानवयोरिव); ८. ६०, ४८।

तुकी० अलग-अलग दानवों के नाम :—

* **इल्वल** : ३. ९८, १९. २०।
* **कैटभ** : १२. २२७, ५३।
* **तारक** : १३. ८६, २८।
* **दीर्घजिह्व** : १. ६५, ३०।
* **दुर्जय** : १. ६५, २३; ६७, ६२।
* **नरक** : १२. ३३९, ९२।
* **पीठ** : १२. ३३९, ९२।
* **पुलोमन्** : १. ५, ३१. ३२।
* **बलि** : १२. २२३, १३; ३३९, ९४।
* **मद** : १४. ९, ३३।
* **मय** : १. २२९, २; २३४, १८; २. ४८, ९।
* **महिष** : ३. २३१, ९५
* **राहु** : १. १९, ४. ९।
* **विप्रचित्ति** : ६. ९४, ३१
* **विविन्ध्य** : ३. १६, २२।
* **वृत्त** : १२. २७९, १३;
* **शाल्व** : ३. २२, २. २१. २२. २३. ३६. ३७. ४१।
* **हर** : १. ६७, २३।
* **हिरण्यकशिपु** : १३. १४, ७३।

३. दानव (द्वि० 'वौः) = मधु-कैटभ : ३. १२, ३९; २०३, १६. २२; १२. ३४७, ३३. ६०. ७४।

४. दानव (वि०) : ३. १७३, २४; २३१, ७६; ८. ८७, ७०।

दानवघ्न = इन्द्र (१४. ९, ३६)

दानवनन्दन = पुलोमन् (१. ५, ३१)।

दानवपति = बलि (३. २७२, ६७)।

दानवपुङ्गव = अर्क (१. ६७, ३२)।

दानवपुर = हिरण्यपुर (३. १७३, ६५)।

१. दानवर्षभ = दीर्घजिह्व (१. ६७, ३९)।

२. दानवर्षभ = विप्रचित्ति (१. ६७, ४)।

दानवर्षि = (बहु०) : ३. १६९, २३।

दानवसूदन = इन्द्र (१. ३४, १४; ३. २२४, २३; ३०२, १३)।

दानवारि = इन्द्र (१२. २८२, १०)।

दानवी (दानवी स्त्री)—शान्तनु ने गङ्गा से पूछा कि वे कोई दानवी तो नहीं (१. ९७, ३१)। कोटिक ने द्रौपदी से पूछा कि कहीं वह दानवी तो नहीं (३. २६५, २)।

१. दानवेन्द्र = वलि (३. २७२, ६४)।

२. दानवेन्द्र = शम्बर (१३. ३६, १९)।

३. दानवेन्द्र = धुन्धु (३. २०२, १७)।

४. दानवेन्द्र = वृषपर्वन् (१. ८१, १०; ८३, ३२)।

५. दानवेन्द्र = वृत्र (१२. २८०, ५. ६. ३४)।

६. दानवेन्द्र (द्वि० °न्द्रौ) = मधु-कैटभ (१२. ३४७, ६५)।

दानवेन्द्रान्तकरण = कृष्ण (१२. ४७, ७३)।

दानवेय (बहु० °याः) = बहु० दानव : ८. ७३, ५८

दानवेश्वर = वलि (१२. २२३, २१)।

दान्त, विदर्भनरेश भीम के पुत्र और दमयन्ती के भ्राता का नाम है (३. ५३, ९)।

दान्ता, अलकापुरी की एक अप्सरा का नाम है जिसने अष्टावक्र के स्वागत में नृत्य किया था (१३. १९, ४५)।

दामग्रन्थि, विराटनगर में अज्ञातवास के समय धारण किया गया नकुल का नाम है (४. १९, ४३; ३१, २१)। तुकी० **ग्रन्थिक**।

दामचन्द्र, एक पाण्डव योद्धा का नाम है (७. १५८, ४०)।

दामा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, ५)।

१. दामोदर = कृष्ण (देखिये वस्था०)।

२. दामोदर = विष्णु (१,००० नाम)।

दामोष्णीष, युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक मुनि का नाम है (२. ४, १३)। इन्होंने हस्तिनापुर जाते हुये श्रीकृष्ण से भेंट की थी (५. ८३, ६४ के बाद गीप्रे० सं० में दाक्षिणात्य पाठ)।

दारद (बहु० °दाः), एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित हुये (६. ५०, ५०)।

दारुक, श्रीकृष्ण के सारथि का नाम है : २. २, १६. ३०; ४५, ६०; ३. १९, ६. १३; २०, २३. २४; २१, ४. ५; २२, २८; ४. ४५, १९; ५. ८३, ५९; ८४, २२; ९४, १२; १३१, २९; १३७, ३१; ७. ७९, ७. २१. २२. २७. ३०. ३९. ४१. ४३; ८२, १; ११२, ६०; १४७, ४१. ४५. ४६. ५४. ७९. ८१. ८६; ८. ७२, ५. ६. ७; ९. ६२, ४४; ६३, ३१. ७६; १२. ४६, ३२. ३५; ५३, २१. २२; १४. ५२, १. ५७; १६. ३, ५. ४७; ४, १-४; ५, १. ४; ७, ६। तुकी० **दारुकि** भी।

दारुकनन्दन=दारुकि (३. १८, ३०)।

दारुकात्मज=दारुकि (३. १८, १२. ३३)।

दारुकि, दारुक के पुत्र का नाम है जो प्रद्युम्न के सारथि थे (३. १८, ३. १५; १९, १०)।

१. दारुण, गरुड की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, ९)।

२. दारुण (बहु० °णाः) एक जाति के लोगों का नाम है (६. ९, ६५)।

३. दारुण=विष्णु (१,००० नाम)

दार्व (बहु० °र्वाः), एक जाति के लोगों का नाम है जिन्हें दिग्विजय के समय अर्जुन ने पराजित किया था (२. २७, १८)। इन लोगों ने अर्जुन पर आक्रमण किया (७. ९३, ४४)। अर्जुन ने युद्ध में इन्हें परास्त किया (८. ७३, १९)। ये पहले क्षत्रिय थे परन्तु बाद में शूद्र हो गये (१३. ३५, १७)।

दार्वातिसार, एक म्लेच्छ जाति का नाम है (७. ९३, ४४)।

दार्वी, एक भारतीय जनपद का नाम है (६. ९, ५४)।

१. दाल्भ्य=वक : २. ४, ११ (बको दाल्भ्यः); ३. २६, ५. २१; २९८, १७; ९. ४०, ३३; ४१, १. ५. ८. १३।

२. दाल्भ्य, उत्तराखण्ड के एक तीर्थ का नाम है (३. ९०, १२)।

३. दाल्भ्य, एक महर्षि का नाम है जिनका वक के साथ उल्लेख है (३. १९३, ४ : 'वकदाल्भ्यौ)।

दाल्भ्यघोष, उत्तराखण्ड के एक तीर्थ का नाम है (३. ९०, १२)।

दाशरथ (वि०) : १२. ८, ३७ : 'दाशरथः पन्था'।

१. दाशरथि=राम (देखिये वस्था०)

२. दाशरथि (द्वि०)=राम लक्ष्मण (३. २७७, २)।

दाशराज, सत्यवती के पालक पिता, एक निषाद का नाम है (१. १००, ४९. ५१)।

१. दाशार्ण=हिरण्यवर्मन : ५. १९०, १२; १९१, १२।

२. दाशार्ण=महाभारत युद्ध के समय के दाशार्ण राजा जिन्होंने भगदत्त के साथ युद्ध किया (६. ९५, ४६)।

दाशार्णक (वि०) : २. २९, ५; ५. १८९, ९. १० (हिरण्यवर्मेति तयो योऽसौ दाशार्णकः स्मृतः). १९; १९०, २१; १९१, ६; १९२, १३।

दाशार्णराज=हिरण्यवर्मा (५. १९२, २९)।

दाशार्णिक (वि०) : ५. १८९, १५।

१. दाशार्ह=कृष्ण (देखिये वस्था०)।

२. दाशार्ह = सात्यकि (देखिये वस्था०)।

३. दाशार्ह (बहु० °र्हाः) एक जाति (= दशार्ह बहु०) के लोगों का नाम है। ये श्रीकृष्ण के अनुगामी थे (१. २०५, २६)। 'दाशार्हनगरी', (२. १२, ३२)। ये श्रीकृष्ण का अनुसरण करते हैं (५. ७, ३९)। 'दाशार्हाः परिवारास्ते दाशार्णाश्च विशाम्पते', (५. १४०, २४)। 'न हि शैनेय दशार्हा रणे रक्षन्ति जीवितम्', (७. ११०, ९८)। 'भीरूणामसतां मार्गो नैष दाशार्हसेवितः', (७. ११०, ९९)। 'सर्वदाशार्हमुख्यः,' (८. ६५, १४)। 'दाशार्हीं जातमन्यवः', (७. १५९, ३१)।

४. दाशार्ह (वि०)—'दाशार्हो सुधर्मा,' (२. ३, २७)।

दाशार्हकुलवर्धन = कृष्ण (१२. ५२, ९)।

दाशार्हनन्दन = कृष्ण (१. १२२, २७)।

दाशार्हवीर = कृष्ण (५. ९२, २६)।

१. दाशार्ही (दाशार्हराज की पुत्री) = विजया, जो भुमन्यु की पत्नी थी (१. ९५, ३३)।

२. दाशार्ही = सुदेवा जो विकुण्ठन की पत्नी थी (१. ९५, ३६)।

३. दाशार्ही = शुभाङ्गी, जो कुरु की पत्नी थी (१. ९५, ३९)।

दाशेरक (बहु० °काः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर की सेना में उपस्थित थे (६. ५०, ४७)। दुर्योधन की सेना में इनकी उपस्थिति (६. ५६, ८ : 'दासेरकगणैः')। इन लोगों ने अर्जुन पर आक्रमण किया (६. ११७, ३२ : 'दासेरकगणाश्च')।

दासनीय—'गोवासना ब्राह्मणाश्च दासनीयाश्च सर्वशः', (२. ५१, ५)। देखिये इस श्लोक पर नीलकण्ठी भी।

दासमीय (बहु०), एक जाति का नाम है 'व्रात्यानां दासमीयानां वाह्मीकानामभज्वनाम् ॥ न देवाप्रतिगृह्णन्तिपितरो ब्राह्मणास्तथा।', (८. ४४, ३३. ३४)। व्रात्यानां दासमीयानामन्नं देवा न भुञ्जते,' (८. ४४, ४६)। 'व्रात्यानां दासमीयानां कृतेष्यशुभकर्मणाम्', (८. ४५, २०)। 'गोवास-दासमीयानां वसातीनां च भारत', (८. ७३, १७)। देखिये **दासनीय** भी।

दासार्ह = देखिये **दाशार्ह**

दासी, एक नदी का नाम है (६. ९, ३१)।

दासेयी—देखिये **दाशेयी**।

दासेरक—देखिये दाशेरक।

दाहो जतुगृहस्य : १. २, ४३।

दिक्पति = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

दिग्गज (बहु० °जाः), दिशागजों के लिये प्रयुक्त हुआ है (१३. १३२, ७)।

दिग्भानु = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

दिग्वासस् = शिव (१३. १४, १०५. १६२. २१७. ३०६; १७, ४२ : सहस्रनाम)।

१. दिग्विजय—'पर्व दिग्विजयम्', (१. २, ४७. ४८)। 'दिग्विजयोऽत्रैव पाण्डवानाम', (१. २, १३४)।

दिग्विजयपर्वन्, महाभारत के २४ वें अवान्तरपर्व का नाम है जो सभापर्व के २५-३२ अध्यायों के अन्तर्गत आता है। "धनुष आदि प्राप्त कर लेने के पश्चात् अर्जुन ने युधिष्ठिर से उत्तर दिशा पर विजय प्राप्त करने की आज्ञा ली। तदनन्तर अग्नि से प्राप्त दिव्य रथ पर बैठ कर अर्जुन ने उत्तर दिशा पर विजय प्राप्त की। इसी प्रकार भीमसेन ने पूर्व दिशा, सहदेव ने दक्षिण दिशा, और नकुल ने पश्चिम दिशा को विजित किया। युधिष्ठिर इस अवधि में खाण्डवप्रस्थ में ही रहे (२. २५)।" अर्जुन द्वारा उत्तर दिशा को विजित करने का विस्तृत वर्णन (२. २६-२८)। भीम द्वारा पूर्व दिशा को विजित करने का विस्तृत वर्णन (२. २९-३०); सहदेव द्वारा दक्षिण विजय का विस्तृत वर्णन (२. ३१)। नकुल द्वारा पश्चिम विजय का विस्तृत वर्णन (२. ३२)।

दिति, प्रजापति दक्ष की पुत्री, कश्यप की पत्नी और दैत्यों की माता का नाम है : १. ६४, ३२; ६५, १२. १७ (दितेः पुत्रो हिरण्यकशिपु स्मृतः); ६७, ५; १९३, ३; २. ११, ३९ (ब्रह्मा की सभा में); ३. ३, २५; १४२, १९; १६५, ७ (सप्त जघान पुगान् दितेः सुतानां नमुचेर्निहन्ता); १६९, १६; ५. ११०, ८ (अत्र देवीं दितिं सुष्टामात्मप्रसवधारिणीम्। विगर्भामकरोच्छक्रो यत्र जातो मरुद्गणः); ७. ७३, ४९; ८. ६८, १४ (तव कुन्तिपुत्रो जातोऽदितेर्विष्णुरिवारिहन्ता); १२. २०७, २० (प्रजापतेर्दुहितरस्तासां ज्येष्ठाऽभवद्दितिः). २८; ३२८, ५३ (एवमेतेऽदितेः पुत्रामारुताः परमाद्भुताः); १३. १, ५५; १४, २०५।

१. दितिज (बहु० °जाः) = दैत्य (बहु०): १. १९, २३ (नारायण ने दितिजों को पराजित किया); ६७, ३१; ३. ४०, २७; ८२, ९५; ५. ३५, ८; ९७, १८; ७. ६, ७; १२. २०९, १६; १३. १४, ३७८।

२. दितिज = हिरण्यकशिपु (३. २७२, ५९)।

३. दितिज = वृत्र (१२. २८१, ३९)।

दितिजान्तक = स्कन्द (३. २३२, १७)।

१. दितिनन्दन = हिरण्यकशिपु (३. २७२, ५७; १२. ३३९, ७८)।

२. दितिनन्दन = वातापि (३. ९६, ५)।

१. दिलीप, एक प्राचीन राजा का नाम है जो भगीरथ के पिता थे। 'खट्वाङ्गनाभागदिलीपकल्प', (१. ५५, १३)। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, १४)। 'राजर्षयश्च बहवो दिलीपप्रमुखा नृपाः', (३. ४३, १४)। ये अंशुमान के पुत्र और भागीरथ के पिता थे (३. १०७, ६५. ६६. ६९)। 'दिलीपस्य', (५. ९०, १९)। 'दिलीपस्याश्रमे', (५. १८६, २८)। 'दुर्धर्षं दिलीपस्य', (६. ९, ८)। "इन्होंने १०० यज्ञ किये थे। इनके यज्ञों में सोने की सड़कें बनायी गई थीं। इन्द्र आदि देवता इनके यहाँ पधारते थे। समस्त प्राणी इन्हें सत्यवादी मानते थे। जब युद्ध करते हुये ये जल में भी चले जाते थे तो इनके रथ के पहिये वहाँ डूबते नहीं थे। जो लोग इनका दर्शन करते थे वे मनुष्य भी स्वर्गलोक के अधिकारी हो जाते थे (७. ६१)।" १२.८, ३३; २९, ७१. ७७. ७८; १३. ७६, २७; ९४, ५. २३; ११५, ६८; १६५, ४९। तुकी० **ऐलविल, खट्वाङ्ग**

२. दिलीप, एक कश्यपवंशी नाग का नाम है (५. १०३, १५)।

दिलीपाश्रम, एक तीर्थ का नाम है जहाँ काशिराज की कन्या, अम्बा, ने कठोर तपस्या की थी (५. १८६, २८)।

दिवःपुत्र, विवस्वान् के बोधक या स्वरूपभूत बारह सूर्यों में से एक का नाम है (१. १, ४२)।

दिवस्पति = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

१. दिवस्पृश् = कृष्ण (१२. ४३, १३)।

२. दिवस्पृश् = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दिवाकर, गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, १४)।

२. दिवाकर = सूर्य (देखिये वस्था०)।

१. दिविरथ, सम्राट् भरत के पौत्र एवं भुमन्यु के पुत्र का नाम है (१. ९४, २४)।

२. दिविरथ, दधिवाहन के पुत्र, एक राजा का नाम है जिसके पुत्र को गौतम ने परशुराम के क्षत्रियसंहार से बचा लिया था (१२. ४९, ८१)।

दिवोदास, काशी के राजा का नाम है जो सुदेव अथवा भीमसेन के पुत्र थे। यम की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ८, १२)। ५. ११६, २२; ११७, १ (महावीर्यो महीपालः काशीनामीश्वरः प्रभुः। दिवोदास इति ख्यातो भैमसेनिर्नराधिपः). ४. १८ (इन्होंने माधवी से प्रतर्दन को उत्पन्न किया). १९. २१; १२. ९६, २१ (अग्निहोत्राग्निशेषं च हविर्भाजनमेव च। आजह्रुत् दिवोदासस्ततो विप्रकृतोऽभवत्); १३. ३०, १०. १५. १६. २०. २२. २४. ४६; १६५, ५७। तुकी० **भैमसेनि, काशीश, सौदेव, सुदेवतनय।**

दिवोदासात्मज = प्रतर्दन (१३. ३०, ४६)।

दिवौकसां पुष्करिणी, एक तीर्थ का नाम है (३. ८४, ११८)।

दिव्य = कृष्ण (१२. ४७, ४६)।

दिव्यकर, पश्चिम दिशा के एक नगर का नाम है जिसे नकुल ने दिग्विजय के समय अपने अधिकार में कर लिया था (२. ३२, ११)।

दिव्यकर्मकृत्, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३५)।

दिव्यगोवृषभध्वज = शिव (१४. ८, ३०)।

दिव्यसानु, एक विश्वेदेव का नाम (१३. ९१, ३०)।

दिव्यात्मन् = कृष्ण (१२. ४७, ७८)।

दिश्, एक नदी का नाम है (६. ९, १९)।

दिशा, मूर्तिमान उत्तर दिशा के लिये प्रयुक्त हुआ है (१३. १९, १०)।

दिशाचक्षु, गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, १०)।

दिशां गजः = महापुरुष (महापुरुषस्तव)।

दिशां पतिः = शिव (१४. ८, १९. २२)।

१. दिशः = स्कन्द (३. २३२, १२)।

२. दिशः = विष्णु (१,००० नाम)।

दीनकृत् = सूर्य (३. ३, ६२)।

दीनसाधक = शिव (१,००० नाम)।

दीपक, गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक का नाम है (५. १०१, ११)

दीप्त = शिव (१४. ८, २३)।

दीप्तकीर्ति = स्कन्द (३. २३२, ३)।

दीप्तकेतु, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३७)।

दीप्तमूर्ति = विष्णु (१,००० नाम)

दीप्तरोमन्, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३१)।

दीप्तवर्ण = स्कन्द (३. २३२, ४)।

दीप्तशक्ति = स्कन्द (३. २३२, ५)।

दीप्तसूर्याग्निजटिल = शिव (१, ००० नाम)।

१. दीप्ताक्ष (बहु० °क्षाः), एक जाति के लोगों का नाम है (५. ७४, १५)।

२. दीप्ताक्ष = शिव (१४. ८, २३)।

दीप्तांशु = सूर्य (१. १७१, १७; ३. ३, १८)।

दीप्ति, एक विश्वेदेव का नाम है (१३. ९१, ३४)।

दीप्तोद, एक तीर्थ नाम है जहाँ देवयुग में भृगु ने तपस्या की थी (३. ९९, ६९)।

१. दीर्घ, मगध के एक राजा का नाम है जिसका राजगृह में पाण्डु ने वध किया था (१. ११३, २७)।

२. दीर्घ = शिव (१,००० नाम)।

दीर्घजिह्व, कश्यप द्वारा दनु के गर्भ से उत्पन्न एक दानव का नाम है (१. ६५, ३०)। इसने काशिराज के रूप में अंशावतार लिया (१. ६७, ३९)।

१. दीर्घजिह्वा, एक राक्षसी का नाम है जिसका इन्द्र ने वध किया (३. २९२, ४)।

२. दीर्घजिह्वा, स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका का नाम है (९. ४६, २३)।

दीर्घतमस्, एक ऋषि का नाम है। भीष्म ने कहा : "महर्षि उतथ्य की पत्नी का नाम ममता था। जब ममता उतथ्य के वीर्य से गर्भवती थी, और उसके गर्भ में एक ऐसा शिशु था जो गर्भावस्था में ही वेद और उसके छः अंगों का अध्यन कर चुका था, तब उतथ्य के छोटे भ्राता, देवगुरु बृहस्पति ममता के पास समागम के लिए आये। उस समय गर्भस्थ शिशु ने बृहस्पति को लात मारा जिससे उनका वीर्य भूमि पर स्खलित हो गया। इस पर क्रुद्ध हो कर बृहस्पति ने उस शिशु को शाप दिया जिसके कारण उसका अंधे के रूप में जन्म हुआ (तमोदीर्घं प्रवेक्ष्यसि)। दीर्घतमस की पत्नी प्रद्वेषी नाम की एक ब्राह्मणी थी जिससे उन्होंने गौतम तथा अन्य पुत्रों को उत्पन्न किया। अंगों सहित वेदों के ज्ञाता दीर्घतमस ने सौरभेय से गोधर्म का ज्ञान प्राप्त करके उसका पालन आरम्भ किया। इसके फलस्वरूप आश्रम के मुनियों ने इनका परित्याग कर दिया। इनकी पत्नी प्रद्वेषी ने भी इनकी तीव्र भर्त्सना करते हुये कहा कि वह इनका तथा इनके पुत्रों का और अधिक पालन नहीं करेगी। उस समय क्रुद्ध हो कर दीर्घतमस् ने इस मर्यादा की स्थापना की कि पत्नी को यावज्जीवन एक ही पति के प्रति निष्ठा रखनी होगी चाहे वह पति जीवित हो या मृत : 'अद्यप्रभृति मर्यादा मया लोके प्रतिष्ठिता ॥ एक एव पतिर्नार्या यावज्जीवं परायणम्। मृते जीवति वा तस्मिन्नापरं प्राप्नुयान्नरम् ॥' तब प्रद्वेषी ने अपने पुत्रों द्वारा दीर्घतमस् को बँधवा कर गङ्गा में फेंकवा दिया। दीर्घतमस् अनेक राजाओं के क्षेत्र से बहते हुये बलि के देश में पहुँचे, जहां बलि ने इन्हें नदी से बाहर निकाला और इनसे अपनी रानी से पुत्र उत्पन्न करने का निवेदन किया। बलि की पत्नी सुदेष्णा ने इन्हें नेत्रहीन देख कर अपने स्थान पर अपनी एक शूद्रा दासी को इनके पास भेज दिया। उस दासी से इन्होंने काक्षीवत् आदि ग्यारह पुत्र उत्पन्न किये। यतः ये पुत्र स्वयं दीर्घतमस् के थे उनके नहीं, अतः उन्होंने अपने पुत्र के लिये सुदेष्णा को पुनः इनके पास भेजा। उस समय इन्होंने सुदेष्णा का स्पर्श कर के ही कहा कि उसे अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, पुण्ड्र, और सुह्म नामक पाँच पुत्र होंगे। इन पुत्रोंके राज्य इन्हीं पुत्रों के नाम से विख्यात हुये (१. १०४)।" इन्द्र की सभा में इनकी उपस्थिति (२. ७, ११)। अन्वेषण के कारण पहले इनका नाम दीर्घतमस् था पर जब इन्होंने केशव के रूप में नारायण की स्तुति कर के पुनः नेत्र प्राप्त कर लिये तब ये गोतम के नाम से विख्यात हुए (१२. ३४१, ५४)। ये पश्चिम दिशा का आश्रय लेकर निवास करने वाले ऋषि हैं (१३. १६५, ४२)। देखिये **औतथ्य, गोतम, उतथ्यपुत्र** भी।

दीर्घनेत्र = दीर्घलोचन, जिसका भीमसेन ने वध किया था (७. १२७, ६०)।

दीर्घप्रज्ञ, वृषपर्वन नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न एक क्षत्रिय नरेश का नाम है (१. ६७, १६)। उन राजाओं में एक यह भी था जिन्हें पाण्डवों ने रण-निमन्त्रण भेजने का निश्चय किया (५. ४, १२)।

दीर्घबाहु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०५; ११७, १४)। धृतराष्ट्र के उन पुत्रों में एक यह भी था जिनका भीमसेन ने वध किया (६. ९६, २७)। उन धृतराष्ट्र पुत्रों में एक यह भी था जिन्होंने भीमसेन को घेर लिया (७. १२७, ३४)। 'दुर्धर्ष दीर्घबाहुम्', (७. १६४, २०)।

दीर्घयज्ञ, अयोध्या के एक राजा का नाम है जिन्हें भीमसेन ने दिग्विजय के समय वशीभूत कर लिया था (२. ३०, २)।

दीर्घरोम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १३)।

दीर्घलोचन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०४; १३८, १९)। धृतराष्ट्र के उन पुत्रों में एक यह भी था जिनका भीमसेन ने वध किया? (६. ९६, २६-२७)। अभिमन्यु द्वारा इसका वध (७. ३७, २६. ३०)। भीमसेन द्वारा इसका वध (७. १२७, ६०)। तुकी० **दीर्घनेत्र** भी।

दीर्घवेणु (बहु० °णवः) एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये भेंट लाये (२. ५२, ३)।

दीर्घसत्र, एक तीर्थ का नाम है जहाँ की यात्रा करनेमात्र से व्यक्ति राजसूय और अश्वमेध का फल प्राप्त कर लेता है (३. ८२, १०८. ११०)।

दीर्घायुस्, कलिङ्गराज श्रुतायु के भ्राता और अच्युतायु के पुत्र का नाम है जिसका अर्जुन ने वध किया (७. ९३, २७)।

दुःशल, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९३; ११७, २)। भीमसेन पर आक्रमण करनेवाले धार्तराष्ट्रों में एक यह भी था (७. १२७, ३३)। दुर्योधन के पक्ष के अवशिष्ट योद्धाओं में एक यह भी था (८. ७, १९)।

दुःशला, धृतराष्ट्र और गान्धारी की पुत्री का नाम है (१. ६७, १०५)। इसका सिन्धुराज जयद्रथ से विवाह हुआ (१. ६७, १०९)। इसका जन्म (१. ११६, ५. १८)। इसका जयद्रथ के साथ विवाह हुआ (१. ११७, १४. १८)। युधिष्ठिर ने इसका ध्यान करके ही जयद्रथ को बचाने की आज्ञा दी (३. २७१, ४३; २७२, ६)। ९. ६४, ३६; ११. २२, १३. १६; १४. ७८, २३. २८. ४१. ४५; ८०, ३५ (इसका अल्पायु पौत्र सिन्धुओं का राजा हुआ)।

दुःशलोत्पत्ति—इसके जन्म की कथा। यह जान कर कि गान्धारी को एक पुत्री की भी इच्छा है, व्यास ने मांसपिण्ड को विभाजित करते समय सौ से एक अधिक भाग में विभक्त किया जो सौ पुत्रों के अतिरिक्त एक पुत्री हुआ (१. ११६)।

दुःशासन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. १, ११०. १५८)। भीमसेन ने इसका रक्तपान किया (१. १, २०४)। १. १, २०६; २, २७६; ६१, १७; ६३, ११९; ६७, ९० (दुर्योधन को छोड़कर दुःशासनादि सब धृतराष्ट्र पुत्र पौलस्त्यों के अंशावतार थे). ९३ (धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों की गणना); ९५, ५७ (धृतराष्ट्र के चार प्रमुख पुत्रों के अन्तर्गत इसकी गणना); ११७, २ (धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों की गणना); १३८, ६. २०; १४१, १; १४२, ३; १८६, १ (यह द्रौपदी के स्वयंवर में आया); २००, १०; २०४, १०; २. ३५, ५ (युधिष्ठिर के राजसूय के समय इसने भोजन-वितरण की व्यवस्था की); ५८, २५; ६५, ४४; ६६, १०; ६७, २५. २९. ३१. ३४. ३५. ४४. ४५. ५३ (दुर्योधन की आज्ञा पाकर इसने द्रौपदी को सभा में घसीटा); ६८, ३८. ४०. ५५ (इसने द्रौपदी को वस्त्र विहीन करने के लिये उसकी साड़ी खींचा, और भीमसेन ने उसी समय इसका रक्तपान करने की प्रतिज्ञा की). ८९. ९० (इसने द्रौपदी को घसीटा); ७४, २. ४; ७७, २. १९. २०. २९. ४१ (जब कपटद्यूत में पराजित होकर पाण्डव वन जाने लगे तब इसने उन लोगों पर व्यंग किया, और भीमसेन ने भी इसका रक्तपान करने की एक बार और प्रतिज्ञा की); ८०, ३७; ३. १, १४; ४, १६; ७, २. ११. १५; ११, १७ (दुःशासनकरोत्सृष्टविप्रकीर्णशिरोरुहा); १२, ५; २७, ८; ३६, २५; ४४, १०; ४९, ३; ५१, ३०; १२०, १२; २३६, १७. २१; २३८, १३; २३९, २४; २४१, १८; २४२, ७. १२; २४९; १२. २२. २८. ३५; २५१, १०. ११ (जब घोषयात्रा के समय दुर्योधन आदि को गन्धर्वों ने बन्दी बना लिया और पाण्डवों ने उन्हें मुक्त कराया, तब खिन्न दुर्योधन को इसने सान्त्वना दी); २५२, ५०; २५३, १२; २५६, ७ (इसने दुर्योधन के यज्ञ में पाण्डवों को आमन्त्रित करने की आज्ञा दी); २६२, ४. ६. १८; २६३, १६; ४. २१, ७; २६, १३; ३०, २० (विराट् के गोहरण के समय इसने दुर्योधन की सेना को

व्यूहबद्ध किया); ३५, २; ५५, ३७; ६१, ३७. ३८ (अर्जुन से युद्ध किया); ६३, १ (अर्जुन ने इसे पराजित किया); ६६, ५ (इसने दुर्योधन की रक्षा की); ५. २६, १८; २९, ३९. ४५. ५२; ३०, १८; ३१, १६; ३३, १५ (४); ३५, ७६; ४७, ८; ४९, २८; ५५, ६४; ५७, १९. ५९; ५८, ९; ६३, ५; ६६, ५; ७३, १८; ७९, ८; ८२, ३६. ३९; ८६, १९; ९०, ८२; ९१, ५; ९४, ४७; १२४, ४५; १२८, १०. १२. २२. ४८; १२९, ४८; १३०, ३. ३३; १३७, २२; १४१, ४७ (भीमसेन इसका रक्तपान करेंगे); १४२, १०; १४३, ३; १४४, ६; १५३, ८; १५४, १२; १६०, ३. ५. ६७ (दुःशासनस्य रुधिरं पीयताम्). १२३; १६१, १०; १६२, २७ (दुःशासनस्य रुधिरं पाता). ६२ (दुःशासनस्य रुधिरं पीतमद्यावधारय); १६३, १५. ३३. ५४; १६५, १९; १६६, १४; ६. १४, ७०; १५, ११. १२. २०; १८, १० (इसने भीष्म की रक्षा की); ४४, २. १५; ४५, २१; ४८, ११७; ४९, १२; ५१, ३. ८; ६२, १६. २७; ७१, १५; ७६, १८; ७७, ७; ७८, २५ (पाँच केकय राजकुमारों से युद्ध किया); ९५, १४ (भ्रातरः श्रेष्ठा दुःशासनपुरोगमाः); ९७, १. १४. १९; ९८, ३०. ३१. ४९; १०५, २. ७; ११०, १९. २५. २८. ३१. ३२. ३४ (अर्जुन से युद्ध); १११, ५७; ११५, २४; ११७, १३. १५ (अर्जुन ने इसे पराजित किया). ४२. ४६ (अर्जुन ने इसके सारथि और घोड़ों का वध कर दिया); ११८, ६; ११९, ५५, ५९; १२०, २३. २५; ७. ७, १३; १२, ५; ३४, २०; ३७, १६; ३९, १५. २१. २७. २९ (अभिमन्यु से इसका युद्ध); ४०, १. १०. १४. २३ (अभिमन्यु ने इसे पराजित किया); ५१, ६; ७४, ७. १७; ८५, २६. ४४ ५२; ८७, २१; ९०, ५ (इसने अर्जुन पर आक्रमण किया). ७. ३३. ३४ (अर्जुन ने इसे सेनासहित परास्त किया); ९१, १; ९५, ४० (इसने सात्यकि पर आक्रमण किया); ९६, १४; ९८, ५५; ११२, २३; ११६, ४; १२०, १०. ३३. ३८. ३९ (सात्यकि से युद्ध); १२१, १९. २९. ३०. ५८ (सात्यकि ने इसे सेनासहित पराजित किया); १२२, १. २. ५; १२३, १. ६. ७. १०. ११. २१. २४. २५. ३०. ३७ (सात्यकि ने इसे एक बार फिर पराजित किया); १२७, ५८ (भीमसेन पर आक्रमण किया); १३२, १५; १३५, १८. १९; १४०, २२. २४; १४१, १; १४५, २१; १४७, ७१; १५१, २०. ३१; १५६, १२१; १५८, ६०; १६५, ११ (प्रतिविन्ध्य से युद्ध किया); १६८, ३४. ३६. ३८; १७०, १६. ६३; १७४, २; १८२, २०. ३५; १८५, २२. ३३; १८७, २७. ३४; १८८, १. ३. ४ (सहदेव ने इसे पराजित किया); १८९, १. २. ४. ५ (धृष्टद्युम्न ने इसे पराजित किया); १९३, १५; २००, ५२; ८. १, ५; ४, १६ (भीमसेन ने इसका वध किया था); ५, १९; ६, १३; ९, २२. ७०. ७२; १३, १०; २३, १. ५. ८. १६ (सहदेव ने इसे पराजित किया); ३१, २२; ४६, २०. ३५; ४८, ३०. ४५. ५०; ६१, ११. २६. २७. ३३ (धृष्टद्युम्न से युद्ध किया). ६१; ७५, १२; ७८, २. ६१; ८०, २६; ८३ १. ९. १०. ११. १३. १४. १७. १८. २१. २७. ३२. ४१. ५०; ८४, १. ११; ८८, ३१; ९१, २. ७; ९. २, ५१; ४, ३१; ५, १७. ४०; १९, २१; २४, २९; ६०, ४५; ६१, १२ (दुःशासनस्य रुधिरं दिष्ट्यापीतं त्वया); ६४, ३३ (दुःशासनपुरोगांश्च भ्रातॄन्); ६५, १५; १०. १६, ३१ (दुःशासनस्य रुधिरं पतीम् विस्फुरतो मया); ११. १, १६ (दुःशासनवधं). २७; १४, १६; १५, १३ (अपिबः शोणितं संख्ये दुःशासनशरीरजम्); १८, १९ (एष दुःशासनः शेते शूरेणमित्रघातिना । पीतशोणितसर्वाङ्गो युधि भीमेन पातितः ॥). २७ (दुःशासनः शेते विक्षिप्य विपुलौ भुजौ । निहतो भीमसेनेन सिंहेनेव महागजः). २८ (दुःशासनस्य यत्क्रुद्धोऽपिबच्छोणितमाहवे); १२. ४४, ८ (इसका महल अर्जुन को दिया गया); १३. १४८, ६१; १५. ३, ६; १७, ११. १३; ३१, १०; ३२, ९ (उन मृत योद्धाओं में एक यह भी था जो व्यास के आवाहन पर गङ्गा से प्रगट हुये)। तुकी० **भारत, भरतश्रेष्ठ, भारतापसद, धृतराष्ट्रज, कौरव, कौरव्य, कुरुशार्दूल**।

१. दुःसह, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है। यह धृतराष्ट्र के उन ग्यारह पुत्रों में से एक था जो महारथी कहे जाते थे (१. ६३, ११९) दुर्योधन को छोड़ कर यह तथा इसके अन्य भ्राता पौलस्त्यों के अंशावतार थे (१. ६७, ९०)। धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों की गणना के अन्तर्गत इसका उल्लेख (१. ६७, ९३)। १. ११७, २; ४. ५५, ३६; ६१, ३७ (अर्जुन ने इसे पराजित किया); ५. ४७, ९; ५५, ६४; ६६, ७; ६. १८, १०; ६२, १६. २६; ७२, ४; ७७, ७; ७. ३७, १५; ११६, २. ७ (युयुधान से युद्ध); १२०, ११. ३७. ३९; १२७, ३४; १३५, ३० (भीमसेन ने जिन पांच धृतराष्ट्रपुत्रों का वध किया उनमें एक यह भी था); ८. ५, ३२; ११. १९, १९. २०. २१ (गतासुरपि दुःसह)।

२. दुःसह = शिव (१,००० नाम)।

दुःस्वप्ननाशन = विष्णु (१,००० नाम)।

१ दुन्दुभि = कृष्ण (१२. ४३, १३)

२. दुन्दुभि, एक राक्षस का नाम है जिसे भगवान् शङ्कर ने वर दिया। शङ्कर ही इसके विनाश के कारण भी हुए (१३. १४, २१४)।

दुन्दुभिस्वन, क्रौञ्चद्वीप के एक क्षेत्र का नाम है (६. १२, २३)।

दुन्दुभी, एक गन्धर्वी का नाम है जो मन्थरा नामक कुब्जा दासी के रूप में उत्पन्न हुई थी (३. २७६, ९. १०)।

१. दुरतिक्रम = शिव (१,००० नाम)।

२. दुरतिक्रम = विष्णु (१,००० नाम)।

दुराधन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०१)। देखिये **दुराधर**।

दुराधर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १०)।

दुराधर्ष = विष्णु (१,००० नाम)।

दुरारिहन् = विष्णु (१,००० नाम)।

दुरावास = विष्णु (१,००० नाम)।

दुरासद, एक राजा का नाम है जिसका केतुमान् ने वध किया (७. १०, ४४)।

१. दुर्ग = विष्णु (१,००० नाम)।

२. दुर्ग = किला या गढ़। दुर्ग छः प्रकार के होते हैं जिसमें मनुष्य दुर्ग को ही सर्वाधिक दुस्तर कहा गया है (१२. ५६, ३५)।

दुर्गम = विष्णु (१,००० नाम)।

दुर्गशैल, शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम है (६. ११, २३)।

१. दुर्गा, एक देवी का नाम है (देखिये उमा)। युधिष्ठिर ने देवी दुर्गा की स्तुति की (४. ६, १—२६)। 'देवी दुर्गा त्रिभुवनेश्वरीम्। यशोदागर्भसंभूतां नारायणवरप्रियाम्; (४. ६, १. २)। 'दुर्गात् तारयसे दुर्गे तत् त्वं दुर्गा स्मृता जनैः', (४. ६, २०)। 'शरणं भव मे दुर्गे शरण्ये भक्तवत्सले', (४. ६, २६)। देवी ने युधिष्ठिर को दर्शन देकर उनकी विजय का आश्वासन दिया (४. ६, २७—३५)। 'दुर्गास्तोत्रम्', (६. २३, २)। अर्जुन ने दुर्गा की स्तुति की (६. २३, ४–१६)। देवी ने अर्जुन को दर्शन देकर उनकी विजय का आशीर्वाद दिया (६. २३, १८–२८) उक्त सभी स्थानों पर आये दुर्गा देवी के पर्याय 'उमा' के अन्तर्गत दिये गये हैं।

२. दुर्गा, एक नदी का नाम है (६. ९, ३०. ३३)।

दुर्गाल (बहु० °लाः), एक जाति का नाम है (६. ९, ५२)।

१. दुर्जय, महर्षि कश्यप द्वारा दनु के गर्भ से उत्पन्न एक दानव का नाम है (१. ६५, २३)। यह दन्तवक्र के रूप में अवतीर्ण हुआ (१. ६७, ६२)।

२. दुर्जय, शारदण्डायनी के पुत्र का नाम है (१. १२०, ४०)

३. दुर्जय, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसे गन्धर्वों ने बन्दी बनाया (३. २४२, १२)। इसने पाँच केकय राजकुमारों से युद्ध किया (६. ७९, ५५)। ७. २५, ४५; १३३, ३८. ४२ (भीमसेन ने इसका वध किया); ८. ५, ३३। तुकी० **कुरुवर्धन**।

४. दुर्जय, एक राजा का नाम है जिसे रणनिमन्त्रण भेजने के लिये पाण्डवों को द्रुपद ने परामर्श दिया (५. ४, १६)।

५. दुर्जय = शिव (१,००० नाम)।

६. दुर्जय = सुदुर्जय (१३. २, ११. १२)।

७. दुर्जय = विष्णु (१,००० नाम)।

दुर्जया, एक स्थान का नाम है (३. ९६, १)। नीलकण्ठी के अनुसार यह वातापि की मणिमती नगरी का ही दूसरा नाम है।

दुर्दान्त = शिव (१,००० नाम)।

१. दुर्धर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसका भीमसेन ने वध किया (७. १३५, ३०)। भीमसेन पर आक्रमण करने वाले अनेक धार्तराष्ट्रों में एक यह भी था (८. ५१, ७)।

२. दुर्धर = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दुर्धर्ष, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९४; ११७, ३; ७. १६४, २०)। तुकी० दुर्धर्षण

२. दुर्धर्ष = शिव (१,००० नाम)।

दुर्धर्षण, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (७. १२०, ११)।

दुर्निवारण = शिव (१०. ७, ६)।

दुर्मद, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९६; ११७, ५; ६. ७७, ७; ७. १३५, ३०; १५५, ३४. ३५. ३७. ३९. ४०)। भीमसेन पर आक्रमण करनेवाले अनेक धार्तराष्ट्रों में एक यह भी था (८. ५१, ८)।

१. दुर्मर्षण, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जो ग्यारह महारथी धार्तराष्ट्रों में से एक था (१. ६३, ११९)। १. ६७, ९५; ११७, ३; ५. १६०, १२३; १६१, ४१; ६. ४४, १५; ५९, १३६; ६०, २; ६२, १६. २६; ७९, ५५; ८१, २८; ८४, ४०; ११३, २. ७. ११. २३ (भीमसेन के साथ युद्ध); ११४, ३; ७. २५, ५; ८७, २०; ८८, १०; ८९, १. २ (अर्जुन से युद्ध). ११६, २. ८ (सात्यकि ने इसे वाण से बींध दिया); १३५, ३० (भीमसेन ने इसका वध किया); ८. ५, ३३; ९, ७३; ९, ७३; ९. २६, ४. ९; १२. ४४, १० (इसका महल नकुल को दिया गया)।

२. दुर्मर्षण = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दुर्मुख, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जो दुर्योधन को छोड़कर अन्य भ्राताओं सहित पौलस्त्यों का अवतार था (१. ६७, ९०), १. ६७, ९३. ९५; ११७, ३; १८६, १ (यह द्रौपदी के स्वयंवर में आया); ३. २४२, १२ (गन्धर्वों ने इसे बन्दी बनाया); ४. ३५, ३; ५. ४७, ९; ५५, ६४; ६६, ४; ६. १८, १०; ४४, १५; ४५, २५. २६ (नकुल से युद्ध किया); ४७, २. १२ (अभिमन्यु से युद्ध किया); ६२, १६. २६; ६४, २९ (भीमसेन पर आक्रमण करनेवाले चौदह धार्तराष्ट्रों में एक यह भी था); ७९, ३५. ३८ (श्रुतकर्मा से युद्ध). ५५; १०४, २३; ११०, १४ (घटोत्कच पर आक्रमण किया); १११, ३७. ३८; ७. २०, २७. २८ (धृष्टद्युम्न से युद्ध किया); २५, ४०. ४१ (पुरुजित् से युद्ध किया); ७४, १६; ८५, ११; १०६, १३ (सहदेव से युद्ध किया); १०७, १९. २०. २१. २२ (सहदेव ने इसे पराजित किया); ११६, ४; १२०, ४०; १२७, ३४; १३४, १६. १७. १८. २०. २१. २२ (भीमसेन ने इसका वध किया); १३५, ६; १४७, ९१ (भीमसेन ने जिन ३१ धार्तराष्ट्रों का वध किया उनमें एक यह भी था); १५८, ५९; ८. ५, ३२; ६, २० (इसने जनमेजय पार्वतीय का वध किया था); ११. १९, ७. १०; १२. ४४, १२ (इसका भवन सहदेव को दिया गया) तुकी० कौरव, कुरुमुख्य।

२. दुर्मुख, एक राजा का नाम है जो युधिष्ठिर के सभा-भवन में प्रवेश के समय उपस्थित था (२. ४, २१)।

३. दुर्मुख, एक असुर का नाम है जो वरुण की सभा में उपस्थित रहता था (२. ९, १३)।

४. दुर्मुख, एक पाण्डव योद्धा का नाम है (८. ७३, १०४)।

५. दुर्मुख = शिव (१,००० नाम)।

६. दुर्मुख, एक सर्प का नाम है जो स्वधाम को पधारते समय बलराम के स्वागतार्थ उपस्थित हुआ था (१६. ४, १६)।

१. दुर्योधन, धृतराष्ट्र और गान्धारी के ज्येष्ठ पुत्र का नाम है (१. १, ११०. १३२. १४१. १४५. १७६. २०९; २, १०२. १३६. १३९. १४७. २०९. २१८. २२१. २३२. २३५. २५५. २८७; ६१, ८. ९. ४९. ५२)। इसकी माता का नाम गान्धारी था (१. ६३, ११२)। यह धृतराष्ट्र का सबसे ज्येष्ठ पुत्र था (१. ६३, ११८)। यह कलि के अंश से उत्पन्न हुआ था (१. ६७, ८७)। इसे छोड़कर अन्य धृतराष्ट्र पुत्र पौलस्त्यों के अंशावतार थे (१. ६७, ९१)। धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों की गणना के अन्तर्गत इसका उल्लेख (१. ६७, ९३)। १. ६७, १५०; ९५, ५७. ६८; ११५, २५. २६ (इसका जन्म भी उसी दिन हुआ जब भीमसेन का; जन्म लेते ही यह गधे के स्वर में रोने लगा जिस पर विदुर ने धृतराष्ट्र को इसका परित्याग कर देने का परामर्श दिया किन्तु धृतराष्ट्र सहमत नहीं हुये); ११७, २ (धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों की गणना); १२३, १९ (भीमसेन का भी जन्म उसी दिन हुआ जब इसका); १२६, १७ (धृतराष्ट्रस्य दायादा दुर्योधनपुरोगमाः); १२८, ३०. ३५. ४५. ४८. ५४; १२९, ३. १५. ३२. ४० (इसने भीमसेन को भोजन में विष दिया); १३२, १२ (यह द्रोणाचार्य का शिष्य था; कर्ण और यह पाण्डवों की उपेक्षा करते थे). ६१ (भीमसेन तथा यह गदा चलाने में अत्यन्त निपुण हो गये और एक दूसरे से ईर्ष्या करने लगे). ७८; १३५, ४. ३१ (इसके और भीमसेन के बीच गदायुद्ध की प्रतिस्पर्धा); १३६, ११. १३. १४. १६. २२ (इसने कर्ण का अङ्गराज के रूप में अभिषेक किया); १३७, ९. २०. २४ (इसने पाण्डवों के विरुद्ध कर्ण का पक्ष लिया); १३८, ६. १९. २१ (अपने अर्जुन और दुर्योधन आदि शिष्यों की सहायता से द्रोणाचार्य ने द्रुपद को पराजित किया); १४१, १. २०. ३२; १४२, २. ३. ५. १२. २०; १४३, १; १४४, १. १९; १४८, १४; १४९, ९; १५०, ३ (इसने पुरोचन से वार्णावत नगर में लाक्षागृह बनाकर उसमें पाण्डवों को भस्म कर देने की आज्ञा दी); १६२, ८; १८५, १३ (यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ); १८६, १; १८७, १५; १८८, १९; १९०, ९. ३३. ३५; २००, ९. १९. २०. २७; २०१, ४; २०२, १; २०३, ३. ५; २०४, ५; २०५, ११. २९. ३०; २. ३४, ६ (युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में आया); ३५, २. ९; ३७, १२; ४५, ६८; ४६, १२ (दुर्योधनापराधेन). ३३; ४७, १. १४. १६. १८. २०. २१. २२; ४८, १. १३. १८. २२. २३; ४९, २. ३. ४. ६. १२. ४१. ४५. ४७. ५०; ५०, ६. १७ (यह युधिष्ठिर के सभाभवन में भ्रमित होकर त्रुटियाँ करता है और पाण्डवों के वैभव पर उनसे ईर्ष्या करने लगता है; शकुनि इसे पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिये आमन्त्रित करने का परामर्श देता है जिसकी धृतराष्ट्र स्वीकृति देते हैं); ५१, १; ५२, १; ५३, १; ५५, १; ५६, ५. ७. १३; ५८, २४; ५९, २०; ६०, ८; ६२, ३. ४; ६३, १. २. ३. ५; ६४, १ (इसके साथ द्यूतक्रीड़ा में युधिष्ठिर भ्राताओं और पत्नी सहित अपने को भी हार जाते हैं); ६६, १; ६७, २. ४. १२. १३. १८. २३. २५. २७ (यह द्रौपदी को सभाभवन में लाने की आज्ञा देता है); ७०, ३; ७१, ८. २०. २५; ७३, १२ (भीमसेन इसकी जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं); ७४, ३. ५. ७ (यह युधिष्ठिर को एक बार फिर द्यूतक्रीड़ा के लिये आमन्त्रित करने का आग्रह करता है); ७५, २; ७७, २३. २६ (भीमसेन इसके वध की प्रतिज्ञा करते हैं). ३१. ३६. ४३; ८०, ३४. ३६. ३७; ८१, ७. १७. २५; ३. १, १४. १६. १७; ४, १४. १५. २०; ७, १२. १४; ८, २; ९, ३. २३; १०, ३. ५. १८. १९. २९. ३१. ३९ (यह मैत्रेय की उपेक्षा करता है जो भीमसेन द्वारा इसके ऊरुभङ्ग का उल्लेख करते हुये इसे शाप देते हैं); ११, ५५; १२, ५. ७८. १३४ (भीमसेन इसका वध करेंगे); १३, २; २७, ८; ३३, ३. ८१; ३६, १०. १२. १४. १९. २५; ३७, ८; ४९, १. १०; ५०, २; ५१, १४. २९. ३६; ५२, १८. २६ (भीमसेन इसका वध करेंगे); ९९, ३६; ११९, ६. ७. २२; १२०, १०; १४६, ३१; १५१, ११; २३६, २१. ३१; २३७, १; २३८, १. १८; २३९, ५. २२. २९; २४०, १. १८. २३. २६; २४१, १. ४. १७. २७; २४२, २. ४. ६. १३. १४; २४३, ५; २४६, ३. ६. २१. २४; २४७, ३. ९. १६; २४८, १. ६; २४९, १; २५०, १३; २५१, १. १३ (घोषयात्रा के समय दुर्योधन तथा उसके भ्राताओं को गन्धर्वों ने बन्दी

बना लिया, किन्तु जब पाण्डवों ने सब को मुक्त करा दिया तब दुर्योधन अत्यन्त लज्जित होकर प्राणत्याग करने के लिये उद्यत हुआ). २२. ३०; २५२, ३१ (दैत्यों और दानवों ने इसे अपने पास बुला कर बताया कि पूर्व समय में असुरों आदि ने तपस्या द्वारा शिव को प्रसन्न करके अंशावतार लेने का वरदान प्राप्त किया था। वे सब असुर अब अंशावतार ले चुके हैं और युद्ध में इसकी सहायता करेंगे); २५२, ३८ (हस्तिनापुर लौटता है); २५३, १७ (कर्ण दिग्विजय करके समस्त भूमण्डल को इसका करद बनाता है); २५५, १. २; २५६, ९; २५७, १९ (यह वैष्णव यज्ञ करता है); २५८, १; २६२, ३ (धार्तराष्ट्रदुरात्मानः सर्वे दुर्योधनादयः). ६. ९. ११. २४. २८ (यह दुर्वासा मुनि को प्रसन्न करके उन्हें पाण्डवों को त्रस्त करने के लिये भेजता है); ३०९, १७; ३१३, २२; ४. १, १; २२, ३४; २५, ८; २६, १; ३०, ३. १९; ३५, १; ३६, ६; ३८, ८. १४; ३९, १४. १५; ४७, १. २०; ४८, २१; ४९, २१; ५१, १६. १७. १९. २२; ५२, १५; ५३, १९; ५४, १. २. ५; ५५, १; ६३, १; ६५, ५. ११. १४. १७. १८; ६६, ३. ४. ५. २३. २४. २७; ६८, ८. ४१. ७४; ६९, ५ (जब इसने विराट की गायों का हरण किया तब अर्जुन ने इसे पराजित किया); ५. १, १३. २३; २, १. ४. १३; ४, १. ५. ९. २६; ५, १०; ७, ११. २३. २४. २९. ३४ (इसने अपने लिये नारायणी सेना का वरण किया); ८, ७. ८. ११. १५. १६. १८. २०. २२. २३. ३९. ४० (इसने शल्य को सेना सहित अपनी ओर सम्मिलित कर लिया); १८, १४. १८. २५; १९, १७. १८. २७ (इसने ग्यारह अक्षौहिणी सेना एकत्र की); २०, १३; २१, ८. १०. १२. १४; २२, ७. ८. ३४; २६, २३; २७, २५; २९, ५१; ३१, १२; ३३, १५ (४); ३५, ७६; ३६, ७०. ७४; ३८, ४६; ३९, ५. ३१; ४०, ३१; ४७, ९; ४८, २. ६२. ९४; ४९, १. २४. ३२; ५१, ११; ५२, १४; ५४, १६; ५५, १. ३४. ४०; ५६, १. ६; ५७, १४. १९. ३६. ५७. ५९; ५८, २. १०. १९; ६०, ४. ५; ६२, १४. १८; ६३, १; ६४, २३; ६५, १; ६७, १; ६९, ६. ७; ७२, ८३; ७३, २३. २९. ३५. ४२; ७४, २. ८. १०. १८. २०; ७५, १३; ८१, ५; ८२, ८. ३१; ८३. १३; ८५, २. १२. १७; ८६, १४. १९. २१; ८७, १६; ८८, १. १२. १७; ८९, ३; ९०, ६०. ८२. १०५; ९१, १. ६. ११. १२. ३३; ९२, २२. २४. २६; ९३, ९. १४; ९४, ७. १७. ३४. ४८; ९५, ९; ९७, १ (कण्व ने इसे मातलीयोपाख्यान सुनाया); १०५, ३८; १२४, ३. ६. ७. ८; १२५, १. ९. १८. १९. २२. २३. २६; १२६, १; १२७, १; १२८, १. २२. ४८. ५०; १२९, ५. १६. १९. २०; १३०, ३. ३२. ३३. ४०. ४१; १३१, १; १३७, २८; १३८, १; १४१, १३. १५. २२. ४९; १४२, २०; १४३, ३. ५. ३८; १४७, ७. १६; १४८, १. १९. २१. २८. ३१; १४९, १. २; १५३, ३. ८; १५४, ३; १५५, १. २९. ३०; १५७, २९. ३३ (यह बलराम का शिष्य रह चुका था); १५८, ३६; १५९, ६. ८; १६०, २. ४ (इसने उलूक को पाण्डवों के पास भेजा); १६१, २; १६२, २०. ४८; १६३, १; १६४, ५; १६५, १ (मे मन्दाः पुत्रा दुर्योधनादयः). ६. १२; १६८, १२. १९ (भीष्म ने इसे दोनों सेनाओं के रथियों और महारथियों का परिचय बताया); १७३, १. ३ (भीष्म ने इसे अम्बा की कथा सुनाया); १८८, १ (भीष्म ने इसे शिखण्डी की कथा सुनाया); १९२, ७० (कौरव्यो राजा दुर्योधनस्तदा); १९३, १५; १९४, ३; १९५, १. ९. १२. १७; ६. १, १५; ९, १. ३; १२, ४९; १४, २३. ३३. ६३. ६९. ७६; १५, १. ११; १६, १८. २०; १७, २६ (इसकी ध्वजा पर एक मणिमय गज स्थित था); १९, १०; २०, ७; २५, २; ४३, ९२; ४४, १५; ४५, १९; ४८, ३८. ४५. ६०; ४९, ११. २१. २२; ५०, १; ५१, १५; ५२, ३. १३. १४. २५. ३४. ४०; ५३, ३७; ५५, १४; ५६, ६; ५७, ३७; ५८, १४. १६. १७ (इसने घटोत्कच और भीमसेन से युद्ध किया जिसमें भीमसेन के प्रहार से आहत होकर मूर्च्छित हो गया). २८. २९; ५९, ११०. १११. १३२; ६०, २. २३; ६२, ५. १६. २५. ३२. ३४; ६३, १; ६४, ३. ५. ७. १६. २६. ८६; ६५, १२. २९. ३१; ६७, १ (भीष्म ने इसे श्रीकृष्ण की महिमा बताया); ६९, १७; ७०, २८; ७१, २२; ७२, ४; ७३, १७; ७४, ५. ३४; ७५, १८. २८; ७६, २४; ७७, १. ६. ६७; ७८, १. ५. ७. ८. १९. २६; ७९, १. १७. १८. १९; ८०, ७. १२; ८१, १९. २६; ८२, ३; ८४, १८; ८५, ११. १७; ८६, ४०. ४१. ४८. ४९; ८७, ३. १२. १३; ८८, ११. ३१. ३६; ८९, ६. १९; ९०, ४८; ९१, ९. १३. १८. २०. २४. २५. ३१ (घटोत्कच से युद्ध करता है); ९२, ८. १३. १९. २५. २८; ९३, १; ९४, १. ११. २०. ४४; ९५, १. ९. ८२; ९६, ७; ९७, १. ३. १४. ४३; ९८, ४. २८. ३०. ४३. ४७; ९९, ६; १००, १. २३; १०२, ९. २३. ३९; १०३, ३९. ४२; १०४, ९; १०५, २. ११. २५; १०७, ४६; १०९, १५. २५; १११, १५; ११३, ५०; ११४, ३०; ११५, २७; ११६, २. ३ (अभिमन्यु से युद्ध करता है); ११९, ११२; १२०, २१. ५९; १२१, ३७. ३८. ३९; १२२, २४. २६; ७. १, ३९; ४, ७. ९. १०. ११. १२. १४. १७; ५, १. ५. २१; ६, १. २. १३; ७, ६ (द्रोणाचार्य को अपनी सेना का सेनापति बनाया); १०, १०. १९. ६१; ११, ४०; १२, ५. ९. ३१; १३, ७; १६, ५०; १७, २; २०, ५; २२, ५. १०. ११. २९; २४, ८. १२. १३; २५, ३; २६, १०. १४; ३०, ३१; ३२, ४. ५. ६९; ३३, ५; ३४, १९; ३७, १. ७. १८. २६; ३९, ५. १५. २१; ४०, २३; ४५, १८. २८. २९; ४६, ३. ६. ९. १८ (इसके पुत्र, लक्ष्मण, का अभिमन्यु ने वध किया); ४८, १६; ५१, २०; ७४, ७. १३. २१; ७९, २२; ८५, ५. २२. २३. ४३. ४५. ५२; ८६, ६. ९; ८७, २६; ९३, ३२; ९४, २७ (द्रोणाचार्य ने इसे एक दुर्जेय कवच पहनाया); ९५, १; १००, २६. ३५; १०१, ३७. ४०. ४२; १०२, १. २८. ३४; १०३, ९. १६. २५. ३१; १०४, १६. २२; १०५, ३४; ११२, ३२. ३८; ११४, २९. ५४; ११५, १६; ११६, ५. २०. २४; ११९, ३१. ३५; १२०, १०. ३१. ३७. ४०; १२१, ११. १३; १२४, २५. २६. ३०; १२५, ७६; १२८, ४७. ५१. ५२. ५३. ५४; १३०, २५. २९. ३२. ३६. ३८ (युधामन्यु और उत्तमौजा से युद्ध करता है); १३१, १२; १३२, ३; १३३, ९. ३७; १३४, १६. १७; १३५, ३. ४. ६; १३६, १८; १३७, १७. २०. ४१; १४१, २४; १४५, ९. ११. २५. ४२. ५५. ७९; १४६, ७५; १४७, ६९; १४८, २२; १५०, १२; १५१, २. ६. १३. ४०; १५२, १. २; १५३, ११. ३० (युधिष्ठिर ने इसे पराजित किया); १५४, १. ३४; १५५, २. ४. २०. ३८; १५६, २२. ११६. ११८; १५८, १. ३३. ५९. ६८. ७०; १५९, १०. १३. २६. ४१. ६७. ८३. ८६; १६०, १. १७; १६१, २; १६३, १२; १६४, १२. १९. ३१; १६५, ८; १६६, ४२. ४३. ४५. ४७–४९. ५६ (भीमसेन ने पराजित किया); १७०, १६ ४५; १७१, १४. १५. १६. २४ (सात्यकि ने पराजित किया). १७४, ६. ३९. ४१; १७६, ६. ११; १७७, २. ८; १७८, ३६. ३७; १८१, ३; १८२, २०. ३५; १८३, १. १६; १८४, ११. ३०; १८५, १. २. ९. १०; १८६, ५. १४. ४८; १८७, २७. ३३. ३४. ३५. ५०. ५३ (नकुल से युद्ध किया); १८९, १९. २२. २८. ३७. ४४. ४६ (सात्यकि से युद्ध); १९२, १. ४. ४३; १९३, १७. २८. ३३; १९५, ३; २००, २४. ३०. ३२. ५१; ८. १, १. ६. १९; २, २०; ३, ६; ४, १३; ५, ९; ७, १५; ८, १३. १७. २१; ९, २०. २४. ३४. ७३. ७६, ७७; १०, ८. २०. २१. ४२. ४४; ११, १६; १३, ८; १९, २८. ५४; २३, २१; २८, १. ४; २९, ६. १२. १४. २२. २७. २९ (युधिष्ठिर से युद्ध); ३०, १८. २०(अर्जुन से युद्ध); ३१, ५. १४. १६. २१. २२. २४. ३४. ४८. ७१; ३२, ३०; ३३, १ (इसने शल्य को त्रिपुराख्यान सुनाया); ३४, १; ३५, १. ३२. ३४. ३६. ४०; ३६, १. ४. १७. २७; ३८, २३; ४२, ३०. ३३; ४६, २०; ४७, १९; ५०, १. १०; ५१, २. ३; ५६, ७ (नकुल और सहदेव से युद्ध किया). ३२ (धृष्टद्युम्न ने इसे पराजित किया). ३५ (तपनीयाङ्गदं चित्रं नागं मणिमयं शुभम् ॥ ध्वजं कुरुपतेश्छिन्नं ददृशुः सर्वपार्थिवाः। दुर्योधनं तु विरथं छिन्नवर्मायुधं रणे ॥). ७६; ५७, १. ५. ६; ५८, १०; ६०, ४ (दुर्योधनः‥‥‥राजा सर्वस्व लोकस्य). १०. १२. १३. ४९; ६१, ६२;

६२, ३. १२. १५. ३४; ६३, ६. २९ (भीमसेन ने पराजित किया); ६४, ४०. ४३; ६६, ६. ३६; ७४, ९. १३. ३४; ७५, ८; ७७, २९. ४७. ७३; ७८, १. ५१; ७९, ८; ८३, ५१; ८४, १०. १२; ८५, ३. ३१. ३४. ३५; ८८, १४. २१; ८९, ९४; ९२, २. ९. १५ (कर्ण का वध तो जाने पर यह अत्यन्त खिन्न हो गया); ९३, १५. ४६. ४८; ९४, १. २३. २४. ६३; ९५, ४. १०; ९. १, ११. २१ (दुर्योधनो हतो राजा). ३९; २, ५०. ५२. ६१. ६७; ३, १६. ४६. ४८. ५०. ६१; ४, ६. ७; ५, ४८; ६, ७. २३. २७; ७, १. २. ६ (शल्य को कौरव सेना का सेनापति नियुक्त किया); ८, १. १५. २७; ११, ३९; १२, २९. ३० (इसने चेकितान का वध किया). ३६ (धृष्टद्युम्न से युद्ध किया); १३, ३१; १५, १. ४; १६, ३९ (भीमसेन ने इसे पराजित किया). ६०; १७, ११. ८०. ८२; १८, २. ३. १७. १९. २१. ४०; १९, १५. २१. ३२. ५४. ५७; २१, ३१. ३२. ३६; २२, ६. ७. १२. ३२; २३, ९. २९; २४, ८. ९. ४५. ४९; २५, २३. ३९. ४०. ४४. ६२; २६, ३; २७, १. २. ५. ६. ७. १९. २५. २८. २९. ३५; २८, २१. ५२; २९, ६. १६. १९. २१. २४. २७ (अपने पक्ष के सभी प्रमुख वीरों की मृत्यु हो जाने पर यह भयभीत होकर द्वैपायन सरोवर में छिप गया). ३५. ४२. ५१. ५८. ५९. ७०. ७९. ८३. ९२; ३०, २. ६. १२. १४. २५. ३१. ३२. ३६. ३८. ४१. ४४. ५१. ५५. ५८. ६३; ३१, १. ३८. ४४. ५४; ३२, २७. ४५. ४७. ४८. ५२. ६५ (यह किसी भी एक पाण्डव से गदायुद्ध के लिये प्रस्तुत हुआ); ३३, १. १२. २६. ४१. ४२. ५२. ५७ (भीमसेन इसे गदायुद्ध करेंगे); ३४, ५. ७; ३५, १४; ५४, ३०; ५५, ३. १२. २०. २४. २६. ४२. ४३. ४६; ५६, २९. ४०. ४४ (भीम और दुर्योधन का गदायुद्ध आरम्भ हुआ); ५७, १. १०. २७. ४७. ४८. ५६; ५८, ३५. ४०. ४२. ४७ (भीमसेन ने गदा से इसकी जाँघ तोड़ा). ६०; ५९, ३. १२. २१ (भीमसेन ने इसके सर में ठोकर मारी); ६०, २८ (दुर्योधनोऽपि धर्मात्मागतिं यास्यति शाश्वतीम् । ऋजुयोधी हतो राजा धार्तराष्ट्रो नराधिपः). ३४; ६१, १. २. ९. ११ (दुर्योधनशिरो दिष्ट्या पादेन मृदितं त्वया). १४. १६. २३. २७. ५०. ५८. ७१ (दुर्योधनं दृष्ट्वा निहतं); ६२, ४. ६; ६३, ३. ८ (हतं दुर्योधनं दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे व्युत्क्रम्य समयं राजन् धार्तराष्ट्रं महाबलम्). २२. ६२; ६५, १. ११. ४५; (इसने अश्वत्थामा को सेनापति बनाने के लिये कृपाचार्य को आदेश दिया); १०. १, १६. ५९; २, २५; ३, ३३; ५, २३; ८, ३; ९, १. १०. २६. २९, ३२. ५३. ५८; १६, ३१; ११. १, १. १६; ८, २६ (धृतराष्ट्रस्य पुत्राणां यस्तु ज्येष्ठः शतस्य वै । दुर्योधन इति ख्यातः); ९, ४; ११, ४; १३, ८; १४, १६. १९; १५, ११; १६, ३०; १७, १. २. १२. १७. १९. २५ (सुश्रोणीं दुर्योधनशुभाङ्गाम् । रुक्मवेदीनिभां पश्य कृष्ण लक्ष्मणमातरम्). २८; १८, २३; २५, २७ (यह लक्ष्मण का पिता था). ३१; २६, २. ३१ (इसका शवदाह); २७, १०; १२. १, २८. ४१; २, ८; ३, ३३; ४, १. ४. १२. १६. २१; ५, ७; ७, ३३; १४, ९; १६, २८; ३८, २३. ३३ (दुर्योधनसखा चार्वाको नाम राक्षसः); ३९, ८; ४४, ६ (इसका भवन भीमसेन को दिया गया). ८; १२४, ४. ६. ७. ११. १८. ६३; १३. १, १०. ८२; १४८, २९. ६०. ६१; १६७, ४०; १४. १, १२. १८; ३, १५. १६; ५२, १९; १५. २, २७; ३, ६. १०. १८. ५१; ८, २१; ९, ४; १०, १६. २०. २६. २७; ११, ८. १९; १४, ६; ३१, १० (कलिं दुर्योधनम् विद्धि); ३२, ९ (उन मृत योद्धाओं में यह भी था जो महर्षि व्यास के आवाहन पर गङ्गा से प्रगट हुये); ३६, १९ (दुर्योधनप्रभृतयो दृष्टा लोकान्तरं गताः); १८. १, ४. ६. ७. १२. १३. १८. २०; ५, २८ (दुर्योधनसहायाश्च राक्षसाः परिकीर्तिताः)।

तुकी० दुर्योधन के निम्नलिखित पर्याय भी :—

* आजमीढ—देखिये वस्था० ।

* **कुरु, कुरुकुलश्रेष्ठ, कुरुकुलाधम, कुरुनन्दन, कुरुपति, कुरुपुङ्गव, कुरुप्रवीर, कुरुमुख्य, कुरुराज, कुरुवर्धन, कुरुश्रेष्ठ, कुरुसत्तम, कुरुसिंह, कुरूत्तम, कुरूद्वह, कौरव, कौरवनन्दन, कौरवश्रेष्ठ, कौरवात्मज, कौरवेन्द्र, कौरव्य**—देखिये वस्था० ।

गान्धारि (गान्धारी का पुत्र) : ३. २३९, २३; २४७, १०; २५६, ४; ५. ८, १९; ४८, ३०; ८५, १०; १०५, ३३; १२३, २१; १४९, १०; १६५, १७; १६७, ३७; ६. ७९, ५; ९८, १७. २३; ७. ९४, ४९; १५१, १६; १५९. ८४; १८५, ३७; ८. १०, ४०; ३२, ३२. ३९. ५१. ६३; ३५, २८. ४१; ९. ३२, ३३. ३४; ६१, ३९; १०. ९, ३२ ।

* **गान्धारीपुत्र** (गान्धारी का पुत्र) : २. ४९, १ ।

* **धार्तराष्ट्र, धृतराष्ट्रज, धृतराष्ट्रपुत्र, धृतराष्ट्रसुत, धृतराष्ट्रसूनु, धृतराष्ट्रात्मज**—देखिये वस्था० ।

* **भरतशार्दूल, भरतश्रेष्ठ, भरतर्षभ, भरतसत्तम, भारत, भारतसत्तम, भारताग्र्य**—देखिये वस्था० ।

***सुयोधन** : १. २, १९५. २२२; १३४, ३२; १३६, ४०; १३७, २५; १४६, १७. २३. २६. २८; १४७, १२; १५४, ३५; २०१, ३; २. ४७, ७; ६२, ९; ७७, २८ (सुयोधनमिमं पापं हन्तास्मि गदयायुधि । शिरः पादेन चास्याहमधिष्ठास्यामि भूतले); ३. २२, ४२; २९, १६. ५१; ३०, ४०; ३४, ३. १४; ३७, २६; ५२, २८. ३४. ३७. ३९; १२०, २८; १४१, १७; १७६, ८. ११. १८३, ३४; २४०, २८; २४३, ७. १०. १४. १६. १७; २४४, १२. १९; २४६, २. ९; २४७, ५; २४९, ३५; २५१, २८; २५२, १. ३३. ३७. ४४. ४९; २५३, ३; २५६, १३. १७; २६२, १७. २३. २४; ३१३, ५; ३१५, ६; ४. २१, ६; ५३, १४; ५५, ४९; ७०, २६; ५. ७, ८. १६; १९, २५; २३, १३; २६, १२. २२. २५. २९; २९, ५२; ३०, १७; ३१, १८; ४९, ३६; ५७, ५०; ६६, १. ९; ७२, १२. ८२. ९२; ७७, १५; ७९, ९. २०; ८०, ११. १७; ८१, ३; ८२, ९. १०; ८३, ३. ३९; ९०, ६२; ९७, ९; १०७, २; १२८, २५; १३०, ३०; १३१, २. ३४; १३२, ३; १४२, १२; १४४, २; १४७, १४; १५०, १०. १२; १५४, १०; १६२, ६. २१. ४३. ५२. ५७; १६३, ९. १४. १६. १९. २२. २४. ३१. ३४. ३६. ३७. ३९. ४६. ५१; ६. ५८, ३३; ६२, ३५; ६४, ६३; ७९, १०; ९६, ८; ९८, १६; १०८, ५७; १२२, २७; ७. २०, १; १०२, १९; ११०, ६८; १११, ७; ११९, १३. १६. २८. २९. ३३. ३४; १२२, १२. २२. २३; १२८, ५५; १३३, ५; १४२, ४; १४६, ९५; १४७, १४; १४९, ४७; १५०, १; १५२, २३; १५९, ८५; १६२, ४९; १६६, ६२; १८१, ५. ३१; १८३, ३८. ४८; ८. १, ५; ४, १; ९, ६३; २९, १०; ४६, ३४; ५६, १९; ६६, ३४. ४३; ६८, १६; ७२, ३७; ७३, १४. २१. ३६. ६४. ६५. ८३. १०१; ८३, १६. १८; ९१, २; ९. १, २. ४; २४, २१. ३२. ४४; २७, ९; ३०, २८; ३१, ८. १८. १९. २९. ३०. ३३. ४२. ५६; ३२, २३. ३३. ५५; ३३, ८. १३. १८. २२. ३३. ३५; ५६, १६. १७; ५७, ३२. ३३; ५८, ४. ७. १३. १७. १८; ६०, १७. २७; १२. ७, ३०; १२५, ३; १३. १४८, ३२; १४. १, १३; १५, १५; ६०, ३४; १५. ३, ५०; १८. १, ६. १०; २, ४५ ।

२. **दुर्योधन**, सुदुर्जय के पुत्र और महिष्मती के राजा का नाम है (१३. २, १३)। इन्होंने अपनी पुत्री, सुदर्शना, को अग्निदेव को दिया (१३. २, ३४)।

दुर्योधनपितृ (दुर्योधन के पिता) = धृतराष्ट्र (३. १०, ३७; १५. ३, १)।

दुर्योधन-यज्ञः—"दिग्विजय से लौटने के पश्चात् कर्ण ने दुर्योधन की युधिष्ठिर के ही समान एक राजसूययज्ञ करने की इच्छा का समर्थन किया। दुर्योधन ने कर्ण का अनुमोदन प्राप्त करने के बाद अपने पुरोहितों के समक्ष तदनुसार प्रस्ताव रक्खा, परन्तु पुरोहितों ने कहा : 'राजन्! राजा युधिष्ठिर तथा धृतराष्ट्र के जीवित रहते आप के लिये राजसूय यज्ञ करना अनुकूल नहीं है। एक अन्य महान् यज्ञ भी है जो राजसूय की समानता रखता है। ये जो सब भूपाल आप को कर देते हैं उन्हें आज्ञा दीजिये कि वे आपको सुवर्ण के बने आभूषण और सुवर्ण कर के रूप में अर्पित करें। उसी सुवर्ण से आप एक हल तैयार कराइये और उस हल से आपके यज्ञमण्डप की भूमि जोती जाय। उस जोती हुई भूमि में ही उत्तम संस्कार से सम्पन्न, प्रचुर अन्नपान से युक्त और सब के किये खुला यज्ञ यथोचित रूप से

प्रारम्भ किया जाय। इस यज्ञ का नाम वैष्णव-यज्ञ है, जिसका अनुष्ठान सत्पुरुषों के लिये सर्वथा उचित है। पुरातन पुरुष भगवान् विष्णु के अतिरिक्त अन्य किसी ने इस यज्ञ का अनुष्ठान नहीं किया है। यह महान् यज्ञ राजसूय के ही समान है।' पुरोहितों की बात को स्वीकार करके दुर्योधन ने वैष्णव यज्ञ की तैयारी आरम्भ करने के लिये विभिन्न लोगों को विविध कार्य सौंप दिये (३. २५५)।" "जब विदुर ने दुर्योधन को यज्ञ की तैयारी पूर्ण हो जाने की सूचना दी तब यज्ञ में आमन्त्रित करने के लिये समस्त भूपालों तथा ब्राह्मणों के पास दूत भेजे गये। दुःशासन ने पाण्डवों के पास भी एक दूत भेजा परन्तु वनवास के तेरह वर्ष -पूर्ण होने के पूर्व आना युधिष्ठिर ने स्वीकार नहीं किया। उस समय दूत से भीम ने कहा: 'तुम दुर्योधन से कहना कि युधिष्ठिर तेरह वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् उस समय वहाँ पधारेंगे जब कि रणयज्ञ में अस्त्र-शस्त्रों द्वारा प्रज्वलित की हुई रोषाग्नि में वे तुम्हारी (दुर्योधन की) आहुति देंगे।' भीम के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों ने कुछ नहीं कहा। दुर्योधन के यज्ञ में विदुर को अतिथियों को भोजन आदि वितरित करने का कार्य सौंपा गया। यज्ञ की समाप्ति तथा अतिथि भूपालों के विदा हो जाने के पश्चात् अपने भ्राताओं तथा कर्ण और शकुनि सहित दुर्योधन ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया (३. २५६)।" "नगर में लोगों ने दुर्योधन की अत्यन्त प्रशंसा की। दुर्योधन के सुहृदों ने ययाति, नहुष, मान्धाता और भरत के साथ दुर्योधन की तुलना करते हुये कहा कि इसी यज्ञ को सम्पन्न करके उक्त पूर्ववर्ती भूपालों ने स्वर्ग प्राप्त किया था। कर्ण ने दुर्योधन से कहा: 'जब युद्ध में पाण्डवों का वध हो जायगा, उस समय तुम्हारे द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ की समाप्ति पर मैं पुनः तुम्हारा इसी प्रकार अभिनन्दन करूँगा।' तदनन्तर कर्ण ने दुर्योधन के समक्ष प्रतिज्ञा करते हुये कहा: 'जब तक मैं अर्जुन का वध नहीं कर लेता तब तक मैं दूसरों से अपना पाद-प्रक्षालन नहीं कराऊँगा; केवल जल से उत्पन्न पदार्थों का ही भोजन करूँगा; आसुर व्रत नहीं धारण करूँगा; और किसी के भी कुछ माँगने पर 'नहीं है', ऐसा वचन नहीं कहूँगा [नीलकण्ठी में आसुर व्रत की इस प्रकार व्याख्या है: 'असुरं सुरारहितं च व्रतं स्वनियमं करिष्ये मद्यं मासं च त्यक्ष्ये इत्यर्थः', ३. २५७, १७ पर नीलकण्ठी]। (३. २५७)।"

१. दुर्योधन-सुत = लक्ष्मण (८. ५, १३; ६, ११)।

२. दुर्योधन-सुत (बहु० °ताः) = दुर्योधन के पुत्र (१८. ५, २)।

दुर्योधनसुता = सुदर्शना (१३. २, २०. २८)।

दुर्योधनावर = विकर्ण (२. ६८, ३०)।

दुर्लभ = विष्णु (१,००० नाम)।

१. दुर्वारण = शिव: ८. ३३, ५८; १२. २८४, १५७ (१,००० नाम)।

२. दुर्वारण, काम्बोज सैनिकों का नाम है, जिनका सात्यकि ने वध किया (७. ११२, ४३)।

१. दुर्वासस्, एक महर्षि का नाम है (१. २, १९८)। इन्होंने कुन्ती को एक मन्त्र की शिक्षा दी (१. ६७, १३३)। १. १११, ५. १३; १२२, ३४; १२३, २; २२३, ५३ (यह स्वयं शिव के एक अंश थे). ५७. ६० (इन्होंने श्वेतकि का यज्ञ पूर्ण कराया); २. ७, १० (इन्द्र की सभा में उपस्थित होनेवाले महर्षियों में एक यह भी थे); ११, २३ (ब्रह्मा की सभा में); ३. ८२, ६४ (इन्होंने विष्णु को एक वर दिया था); ८५, १२१; २६०, ११ (दुर्वासा··· दिग्वासाः). २१. ३० (इन्होंने मुद्गल को परीक्षा ली); २६२, ८. १६. २४. २७; २६३, १. २८. ३०. ३२. ४३ (दुर्योधन पर अनुग्रह करने की दृष्टि से अपने दस हज़ार शिष्यों को लेकर यह उस समय पाण्डवों के पास भोजन के लिये उपस्थित हुए जब उनका भोजन समाप्त हो चुका था; परन्तु श्रीकृष्ण की कृपा से पाण्डव इनका आतिथ्य करने में सफल हो गये); ५. १४४, १९; ७. ११. ९ (इन्होंने श्रीकृष्ण को वर दिये थे); १३. २६, ६ (बाणशय्या पर पड़े भीष्म के दर्शन के लिए उपस्थित महर्षियों में एक यह भी थे); १५०, ४५; १५८, २९। "प्रद्युम्न को ब्राह्मणों की महिमा बताते हुए श्रीकृष्ण ने कहा: पहले की बात है, मेरे घर में एक हरित पिङ्गल वर्णवाले ब्राह्मण ने निवास किया था। वह चिथड़े पहनता और बेल का डण्डा हाथ में लिए रहता था। उसकी मूँछें और दाढ़ियाँ बढ़ी हुई थीं। वह शरीर से दुबला और कद में भूतल के सब मनुष्यों से लम्बा था। वह दिव्य तथा मानव लोकों में विचरण करता हुआ इस श्लोक का गायन करता था: 'दुर्वाससं वासयेत्को ब्राह्मणं सत्कृतं गृहे ॥ रोषणः सर्वभूतानां सूक्ष्मेऽप्यपकृते कृते। परिभाषां च मे श्रुत्वा को नु दद्यात्प्रतिश्रयम्। यो मां कश्चिद्वासयीत न स मां कोपयेदिति।' यतः किसी ने भी उस दुर्वासा का आदर नहीं किया अतः मैंने उन्हें अपने घर में ठहराया। वह कभी तो एक ही समय में इतना भोजन कर लेते थे जितने में कई सहस्र मनुष्य तृप्त हो सकते थे, और कभी अत्यन्त थोड़ा ही भोजन कर के घर से निकल जाते थे। उस दिन वे फिर घर नहीं लौटते थे। वे अकस्मात जोर-जोर से हँसने अथवा अचानक फूट-फूट कर रोने लगते थे। उस समय पृथ्वी पर उनका कोई समनवस्क नहीं था। एक दिन अपने ठहरने के स्थान पर जा कर उन्होंने वहाँ बिछी शय्याओं, बिछौनों, तथा वस्त्राभूषणों से अलंकृत कन्याओं को जलाकर भस्म कर दिया और फिर वहाँ से चले गये। इसके बाद तत्काल ही मेरे पास जाकर उन्होंने शीघ्र ही खीर खाने की इच्छा की। मैं उनके मन की बात जानता था अतः सब प्रकार के भक्ष्य पदार्थ मैंने पहले ही तैयार रखने की आज्ञा दे रक्खी थी। मैंने तुरन्त ही मुनि को गरम खीर भोजन के लिये प्रस्तुत की जिसमें से थोड़ा खा-कर उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि मैं उस खीर को अपने सम्पूर्ण अंग में लगा लूँ। मैंने मुनि की आज्ञा का पालन करते हुये वह खीर अपने अङ्गों में पोत ली। उनकी आज्ञा से मैंने रुक्मिणी के अङ्गों में भी बची हुई खीर लगा दी। तदनन्तर मुनि ने खीर से वेष्टित अङ्गोंवाली रुक्मिणी को रथ में जोत दिया और स्वयं उस रथ पर बैठ कर मेरे घर से निकले। उन्होंने रथ के घोड़ों की ही भाँति रुक्मिणी पर भी कोड़ों से प्रहार किया। इस महान् आश्चर्य की बात को देख कर दशार्हवंशी यादवों को अत्यन्त क्रोध हुआ। उन दुर्धर्ष दुर्वासा के इस प्रकार रथ से यात्रा करते समय रुक्मिणी मार्ग में लड़खड़ा कर गिर पड़ीं। दुर्वासा इस बात को सहन नहीं कर सके और रथ से कूद कर बिना मार्ग के ही दक्षिण दिशा की ओर पैदल चल पड़े। मैं भी उनके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ उनसे प्रसन्न होने का निवेदन करने लगा। मेरे अनुरोध पर प्रसन्न होकर ऋषि ने मुझसे कहा: 'तुमने क्रोध को जीत लिया है। मेरे प्रसन्न होने का जो भावी फल है उसे सुनो। जब तक देवताओं और मनुष्यों का अन्न में प्रेम रहेगा, तब तक जैसा अन्न के प्रति उनका भाव या आकर्षण होगा वैसा ही तुम्हारे प्रति भी बना रहेगा। तुम सब लोगों के परम प्रिय बनोगे। तुम्हारी जो वस्तुयें मैंने तोड़ी या नष्ट की हैं वे सब तुम्हें पूर्ववत् या उससे भी अच्छी दशा में सुरक्षित मिलेंगी। तुमने अपने समस्त अङ्गों में जहाँ तक खीर लगा ली है वहाँ तक के अङ्गों में चोट लगने से तुम्हें मृत्यु का भय नहीं रहेगा। तुम जब तक चाहोगे अमर बने रहोगे। परन्तु तुमने अपने पैर के तलवों में खीर नहीं लगाई। तुम्हारा यह कार्य मुझे प्रिय नहीं लगा।' मुनि का वचन सुनकर मैंने अपने शरीर को अद्भुत कान्ति से सम्पन्न देखा। मुनि ने रुक्मिणी को वरदान देते हुये उनसे कहा: 'शोभने! तुम सम्पूर्ण स्त्रियों में उत्तम यश और लोक में सर्वोत्तम कीर्ति प्राप्त करोगी। तुम जरा, व्याधि और कान्तिहीनता से मुक्त रहोगी। पवित्र सुगन्ध से सुवासित होकर तुम श्रीकृष्ण की १६,००० रानियों में सबसे श्रेष्ठ होकर पति के सालोक्य की अधिकारिणी होओगी।' तदनन्तर ब्राह्मणों के प्रति सदैव आदर-दृष्टि रखने का उपदेश करके मुनि वहीं अन्तर्धान हो गये। मैंने तथा रुक्मिणी ने ब्राह्मणों की सदा सेवा करने की प्रतिज्ञा की। तदनन्तर घर में प्रवेश करके देखा कि उन ब्राह्मण ने जो कुछ तोड़ा या नष्ट किया था वह सब नूतन रूप में प्रस्तुत है। उस दिन से मैं सदैव ब्राह्मणों का पूजन करता हूँ (१३. १५९)।" १३. १६०, १. ३७; १५. ३०, २; १६. ४, १९। तुकी० अत्रेय (१६. ४, २०)।

२. दुर्वासस् = शिव (१,००० नाम)।

दुर्वासःसंवाद--'प्रादुर्भावश्च दुर्वासःसंवादश्चैव मायया', (१. २, ७७)।

दुर्विगाह, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ५)।

दुर्विभाग (बहु० °गाः), एक जाति के लोगों का नाम है जो युधिष्ठिर के लिये उपहार लाये (२. ५२, १३)।

दुर्विमोचन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ६)। भीमसेन ने इसका वध किया (७. १२७, ३५. ६२)। ९. २६, ५. १६। तुकी० अगला शब्द।

दुर्विरोचन, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९७)। तुकी० ऊपर वाला शब्द।

दुर्विष = शिव (१.००० नाम)।

१. **दुर्विषह**, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में आया (१. १८६, १)। गन्धर्वों ने इसे भी बन्दी बनाया (३. २४२, १२)। ५. १२४, ४५; ६. १८, १०; ७७, ७; ७. १७०, ६३; ८. ५, ३३; ९. २६, ५. २० (भीमसेन ने इसका वध किया था)।

२. **दुर्विषह** = शिव (१,००० नाम)।

दुलिदुह, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३३)।

दुष्कर्ण, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९५; ११७, ३; ६. ७७, ८)। इसने शतानीक से युद्ध किया जिसमें शतानीक ने इसका वध कर दिया (६. ७९, ४६. ४८. ५१. ५२)। दुर्मद को साथ लेकर इसने भीमसेन से युद्ध किया (७. १५५, ३५. ३७. ३९. ४०)।

दुष्काल = शिव (१,००० नाम)।

दुष्कृतिहन् = विष्णु (१,००० नाम)।

दुष्पराजय, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, ९)।

दुष्प्रकम्प = शिव (१,००० नाम)।

दुष्प्रधर्ष, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसने अन्य तेरह भ्राताओं के साथ भीमसेन पर आक्रमण किया (६. ६४, २९)। ८. ५१, ८; ९. २६, ५ (भीमसेन पर आक्रमण किया). १८ (भीमसेन ने उसका वध किया)। तुकी० अगला शब्द।

दुष्प्रधर्षण, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९४; ११७, ३)। यह द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. १८६, १)। 'सुबाहुर्दुःप्रधर्षणः', (७. १७०, ६३)। तुकी० अगला शब्द भी।

दुष्प्रहर्ष, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९६)।

दुष्मन्त—देखिये दुष्यन्त।

१. **दुष्यन्त**, एक प्राचीन राजा का नाम है जो शकुन्तला के पति और भरत के पिता थे (१. २, ९६)। "ये पूरुवंश के राजा थे। ये महान् पराक्रमी और चारों समुद्रों से घिरी सम्पूर्ण पृथिवी के पालक थे। यहाँ तक कि म्लेच्छों का देश भी इनके अधीन था—इनके राज्यशासन की क्षमता तथा प्रजा के सुख-वैभव आदि का वर्णन। ये अपने दोनों हाथों द्वारा उपवनों और काननों सहित मन्दराचल पर्वत को उठाकर ले जाने की शक्ति रखते थे। ये गदायुद्ध तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रों के पूर्ण ज्ञाता थे (१. ६८)।" इनका आखेट के लिये जाना (१. ६९)। आखेट करते हुये ये मालिनी के तट पर स्थित कण्व ऋषि के आश्रम में आये जो चारणों, गन्धर्वों, अप्सराओं, बालखिल्यों आदि से सेवित था (१. ७०)। उक्त अध्यायों तथा अन्य स्थानों पर यह शब्द निम्नस्थलों पर आता है: १. ६८, ३ (पौरवाणां वंशकरो दुष्यन्तो नाम वीर्यवान्); ६९, २. २०. २१; ७१, ४. १५. १६; ७३, १. ६. १७. २८. ३२. ३४; ७४ १४. ३६. ७३. ८३. १०८. १०९. १११. ११३. १२१. १२५. १२६ (इन्होंने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया और सहवास के बाद राजधानी लौट आये। शकुन्तला इनके वीर्य से उत्पन्न अपने पुत्र, भरत, को लेकर इनके पास आई परन्तु पहले उन्होंने उसे नहीं पहचाना। तदनन्तर आकाशवाणी द्वारा शकुन्तला के वचन की सत्यता प्रमाणित होने पर उसे ग्रहण कर लिया); ९४, १७ (ये ईलिन के पुत्र थे). १८. १९ (ये भरत के पिता थे); ९५, २८ (ईलिन के पुत्र). २९ (शकुन्तला के पति). ३० (भरत के पिता); २. ८, १५ (यम की सभा में); ५. ११७, १५; १३. ११५, ७३ (उन राजाओं में एक यह भी थे जो कार्त्तिक मास में मांस-भक्षण नहीं करते थे); १६५, ५० (दुष्यन्तो भरतश्चैव चक्रवर्ती महायशाः)।

२. **दुष्यन्त**, अजमीढ के पुत्र का नाम है। पाञ्चालगण इनके तथा इनके भ्राता, परमेष्ठिन्, को संतान हैं (१. ९४, ३३)।

दुष्वन्त—देखिये १. दुष्यन्त।

दूषण, एक राक्षस का नाम है जिसका रामदाशरथि ने वध किया था (३. २७७, ४४. ५२)।

दूषणानुज (द्वि० °जौ) = वज्रवेग और प्रमाथिन् (३. २८६, २९; २८७, २१. २३)।

१. **दूषणावरज** = प्रमाथिन् (३. २८७, २७))

२. **दूषणावरज** (द्वि० °जौ) = वज्रवेग और प्रमाथिन् (३. २८६, २७)।

१. **दृढ**, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है जिसका भीमसेन ने वध किया था (७. १३७, ३०)। इसने अपने नौ अन्य भ्राताओं के साथ भीमसेन पर आक्रमण किया था (७. १५७, १८)। तुकी० **दृढहस्त, दृढक्षत्र, दृढसन्ध, दृढवर्मन्, दृढायुध**।

२. **दृढ** = विष्णु (१,००० नाम)।

दृढक्षत्र, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (२. ६७, ९९; ११७, ८)। तुकी० दृढ भी।

दृढधन्वन्, एक राजा का नाम है जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित हुआ (१. १८६, १५)।

१. **दृढरथ**, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०४) भीमसेन ने इसका वध किया (७. १५७, १७)। तुकी० **दृढरथाश्रय**।

२. **दृढरथ**, एक प्राचीन राजा का नाम है (१३. १६५, ५२)।

दृढरथाश्रय, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ११७, १२)। तुकी० **दृढरथ**।

दृढवर्मन्, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९९; ११७, ८)।

दृढव्य, एक महर्षि का नाम है जो दक्षिण दिशा का आश्रय लेकर निवास करनेवाले सात धर्मराज-ऋत्विजों में से एक हैं (१३. १५०, ३४)।

दृढव्रत, दक्षिण दिशा का आश्रय लेकर निवास करनेवाले एक ब्रह्मर्षि का नाम है (१२. २०८, २९)। तुकी० **दृढव्य, दृढायु**।

दृढसन्ध, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १००; ११७, ९)। तुकी० दृढ।

दृढसेन, एक पाण्डव योद्धा का नाम है जिसका द्रोणाचार्य ने वध किया (७. २१, ५२)।

दृढस्यु, महर्षि अगस्त्य द्वारा लोपामुद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जिन्हें 'इध्मवाह' भी कहते हैं (३. ९९, २५)।

दृढहस्त, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, १०२; ११७, १०)।

दृढायुध, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम है (१. ६७, ९९)।

१. **दृढायुस्**, एक राजा का नाम है जिन्हें पाण्डवों ने रण-निमन्त्रण भेजने का निश्चय किया (५. ४, २३)।

२. **दृढायुस्**, पुरूरवा द्वारा उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है (१. ७५, २५)।

३. **दृढायुस्**, दक्षिण दिशा का आश्रय लेकर निवास करनेवाले एक ऋषि का नाम है (१३. १६५, ४०)।

दृढाश्व, इक्ष्वाकुवंशीय राजा कुवलाश्व के पुत्र का नाम है (३. २०४, ४०)।

दृढेयु, पश्चिम दिशा के एक ऋषि का नाम है (१३. १५०, ३६)।

दृढपुधि, एक प्राचीन राजा का नाम है (१. १, २३८)।

१. **दृप्त** = शिव (१०. ७, ४)।

२. **दृप्त** = विष्णु (१००० नाम)।

दृप्तारमन् = कृष्ण (१२. ४७, ७३)।

दृषद्वत्, एक राजा का नाम है जो वराङ्गी के पिता थे (१. ९५, १४)।

